

র বি – র শ্মি বিভীয় খণ্ড

রবি-রখি

পশ্চিম ভাগে [ক্ষণিকা হইভে জাসের দেশ পর্যন্ত]

কলিকাতা ও চাকা ইউনিভার্নিটির উপাধ্যার, বিবিধ-গ্রন্থ-প্রণেতা চারুচনুদ্র বিন্দ্যোপাধ্যার, এম্ এ কর্তৃক বিশ্লেষিত



প্ৰকাশক

क्रिकाममध्यम गृद्धाभाषाम

>, কলেজ কোরার :: কলিকাতা

প্রচ্ছদ পট ও. সি. গার্গী

65. 68>

দিভীয় খণ্ড

ভূতীর সংস্করণ

ৰ্ণ্য সাত টাকা ১ ৯ ৯ . ৩.১

মুৱাকর—উনেসেপ্রনাথ হাজরা ব্রুস ত্যেস কুনু জ্ঞানাশ বিশ্ব কোন, কবিকাজা

দিতীয় **৭ণ্ডে**র ভূমিকা

রবি-রশ্মির হিতীয় খণ্ড প্রকাশিত হইল। কিন্তু আক্ষেপের বিষয় এই যে গ্রন্থকার ইচা দেখিয়া যাইতে পারেন নাই। বিগত স্থা পৌষ তিনি সাহিত্য-সেবার মধ্যেই নয়র জগৎ হইতে বিদায় লইরাছেন। প্রথম খণ্ডের ভূমিকায় তিনি বলিয়াছিলেন, "সকলের চেটা ও সাহায্য সল্পেও পাঁচ বৎসরে মাত্র অর্থেক বই ছাপা হইল। বাকী অর্থেক আমার জীবদ্দশায় ছাপা হইবে কি না বিধাতাই জানেন।" কে জানিত যে তাঁহার সেই কথা এমন নির্মন্থ ভাবে সত্য হইবে ?

চাক্লচন্দ্রের ও আমার সাহিত্য-জীবন প্রার সমকালেই আরক্ক হইরাছিল।
আজ তাঁহার পুত্রের অসুরোধে এই বিতীয় খণ্ডের ভূমিকা লিখিবার ভার গ্রহণ
করিরাছি অত্যন্ত গ্রংথের সহিত। আমার বলিবার বিলেম বিছুই নাই।
বন্ধ্বরের অক্লান্ত সাধনার ফল তাঁহার অবর্তমানে শ্রহার সহিত সাহিত্যামোদীর
করে তুলিয়া দিবার উপলক্ষ্যে গ্রই-একটি কথা মাত্র বলিব।

রবি-রশি Browning Encyclopaedia শ্রেণীর এছ। রবীক্সনাথের প্রার ৬০ থানি কাব্য ও গীতিনাট্য এবং ৩৬০টি কবিতার ব্যাথা। ইহাত্তে আছে। কবির প্রায় সকল বিখ্যাত কাব্য ও কবিতার ব্যাথা। ও বিশ্লেষণ রবি-রশ্মিতে হইরাছে। রবীক্রনাথের কাব্য বন্দসাহিত্যের এক মৃল্যবান্ সম্পাদ্। এত বিভিন্ন ক্ষেত্রে কবি ওাহার প্রতিভা নিরোগ করিয়াছেন যে রবীক্রনাথকে ভালরপে আনিতে হইলে ওাহার কাব্য ও ভাবধারার উৎস অক্সন্ধান করা আবশুক। ওাহার কাব্য ও কবিতার পারস্পর্য—তাহার চিত্ত-বিভালের তারগুলি ব্রবার পক্ষে রবি-রুশ্মি অনেক সহারতা করিবে বিশ্বা আমি বিশ্বাস করি। চাক্ষচন্ত্র বে ভাবে রবীক্র-সাহিত্যের বিশ্লেষণ, রবীক্র-কাব্যের আখাদন করিয়াছেন, তাহা তাহার অনভ্যসাধারণ কাব্যাক্সরাগের কল । ডিনি একাধারে কবি, রুমক্র ও সমালোচক ছিলেন । কাক্সেই রবীক্র-কাব্যের অভিন ব্যাবার এবং মুরাইয়ার বোগাতা ওাহার বেঘন ছিল ভেনন আছে অধিক গোকের নাই। তিনি বে প্রণালীতে এই ছক্সং কার্য সম্পাদ্ধ ক্ষিক্রাছের, ভাহা অন্ত অনেকের পক্ষে পদ্ধগ্রহণ্ড হইবে।, মুরীক্রসাহের ক্ষিক্রয় বিশ্লের সাহিত্য

ষ্টিট পরিচর থাকার তাঁহার আরও ছবোস হইরাছিল কবির নিকট হইতে আনেক বিবর বাচাই করিয়া লইবার। কাজেই রবি-রখিকে নানা দিক্
হইতে প্রাথানিক মনে করা, বোধ, হর অক্সার, হইবে না; কারণ আসর।
আনি বে গ্রন্থকার বে অবোগ লাভ করিয়াছিলেন, অপরের পক্ষে ভাষা
স্থাক নহে। চাক্ষচজ বিশ্বত বন্ধু, সহবোগী সাহিত্য-সেবী এবং অক্সানী
ভক্ত-হিসাবে রবীজনাথের সাহচর্য লাভ করিতে পারিয়াছিলেন।

রবীজনাথের সাহচর্য ব্যতীভঞ্জ জিনি বহু সাহিত্যিকের রচনা হইতে জাহার প্রন্থের মাল-মশলা সংগ্রহ করিরাছিলেন। তিনি একস্থলে ব্রিয়াছেনঃ—

শুরীজনাধের কবিতার ব্যাখা বহু লোকে বহু বিভিন্ন ভাবে করিয়াছেন।
আদি তাঁহালেরই পদায় অনুসরণ করিয়া সকলেন উক্তির সার-সংগ্রহ
করিয়াছি এবং অনেক স্থলে কবির নিজের অভিমতের দারা দাচাই করিয়া
বিশেষ প্রদা ও বিনয়ের সহিত আমার বক্তবা বনিতে চেটা করিয়াছি।"

কোনও কোনও কবিভার ব্যাখ্যার ভাঁহার সহিত মতভেদ হওরা বিচিত্র নহে। এমন কি কবির সহিতও ভাঁহার কবিভার ব্যাখ্যা লইরা মতভেদ লক্ষ্য করিরাছি। কিন্ত ইহা অনংকোচে বলিতে পারি যে রবীন্ত্র-কাব্য-প্রতিভার অনুশীলনে চাক্চক্র যে নির্বাস সাধনার পরিচর দিয়াছেন, তাহা সাহিত্যের ইডিছার ইইতে অচিরকালে মুছিরা বাইবে না।

প্রিশেবে বলা আবশুক যে গ্রন্থলার রবি-রণ্মির পাঙ্লিপি সম্পূর্ণ করিয়া দিরাছিলেন। পরিশিটের আলোচনাগুলি তাঁহার স্থবোগ্য পুত্র জীমান্ কৃমক ব্যুল্যাপাধ্যার, এমৃ. এ. কর্তৃ ক সংগৃহীত হইয়া গ্রন্থলৈ মুদ্রিত ক্ষুদ্রাছে।

कृतिकाका विषयिकालक >२ देवनाचे ५५५७

श्रीषरगद्धानाथ जिल

রবি-রশ্মি:: বর্ণচ্চুত্র

| ग्रह िन्द े | > | পা রল | 84 |
|-----------------------------|---------------|------------------------------------|-------------|
| উ द्धा शन | ₹ | ऋष्य ्र | 8-9 |
| মাতা ল | 6 | এবাসী | 36 |
| ্য াভান | 9 | ₹(\$ | 84 |
| ভীকতা | 9 | বিশ্বদেব | 86 |
| দেকলৈ | 6 | আবর্তন | 24 |
| गळी | ે ર | অতী ত | ۥ |
| অভিথি | >< | কড কি যে আদে, কড | |
| 'আষাচ' ও 'নববৰী' | >8 | ৰু যে যাব | 45 |
| ন্থৰ্থা | 28 | মরণ-দোলা | 45 |
| আবিৰ্ভাৰ | > <i>9</i> | মরণ | 44 |
| कन्मांगी | ን৮ | हिमा खि | ¢4 ¢3 |
| নৈবে ত্য | २५ | প্রক্র | 63 |
| म् ख्यि | २२ | ছল চেমা | 4. |
| ভক্ত করিছে প্রভুর চরণে | | প্রসাদ | •• |
| জীবন সমর্পণ | ২৬ | নব বেশ | *** |
| नीका नोका | રહ | क्या ७ घरन | . 47 |
| ত্যারদ ্ ত | २१ | ३७ नष्य-जाज मत्म स | |
| শৃগৰ বিশে | २१ | স্কলেরি যাবে তোষার্ক্টেই | |
| Mast | २ १ | ভালোবেসেছি | 4 > |
| 'গুগান্তর' ও 'স্বার্থের | | ৪০ নম্বৰ—আবোকে আৰিয়া | |
| সমাপ্তি' | ₹ > | जरा नीना करत गाँउ | 45 |
| প্রার্থনা | ર⊭ | ৪৬ নম্বর-সাস হয়েছে রশ | Cite |
| শ্মব্ধ | २३ | ১৫ स ब्य श्राकान-निवृत्यादव | |
| মৃত্যুমাধুরী | そ る | এক ঠাই | 40 |
| চিঠি | 93 | ২+ নৰত ম্বারে ভোশার ভী | |
| লি শু | তহ | ক'ৰে যাত্ৰা আছে | 84 |
| मिलनीना | 4 | ३५ नवर- छापाँव वीगाव | |
| स्त्रक्षा | 96 | কত কৰে আছে | 42 |
| (कम मधुन | 20 | es अवद्रम्मन्द्रश्य न्द्रिक | ن المعادد |
| भूटकाहुबि छ विभाव | 40 | कटबर्ड अस्तित्र | - |
| SC FIE | 48 | ३ जन्म-(करन कर सामन | فمريا |
| 4487 | p 3 | -IN VIEW | No. |
| ""来"声神明" 人 | | | |

রবি-রশ্মি

| ভেৎস্প —ক্ মাগত | | আমার নম্ম-ভুলান এলে | ১০৩ |
|-----------------------------|--------------|---------------------------|-------|
| আঁধার আসিতে রজনীর দীপ | t | ৰূপৎ কুড়ে উদার স্থরে | |
| জেলেছিফু যতগুলি— | 44 | व्यक्तिगान वाटक | > 8 |
| ৬ নম্বর—ভোমার চিনি ব'ণে | | পান্ধি ৰড়ের রাতে তোমার | |
| আমি করেছি গরব | 66 | অ ভিদার | > o & |
| ১৯ নম্বর—হে বাজন্ তুমি | | ভূমি কেমন ক'রে গান করে। | |
| আমারে বাঁশী বাজাবার | | ८६ श्वनी | >•€ |
| দিয়েছ যে ভার | ৬৭ | ২৪, ২৫, ২৬ নম্বর গান | > ~ @ |
| চিটি | ৬৮ | প্ৰভু, ভোমা লাগি' জাঁথি | |
| েখ হা | 15 | জাগে | >06 |
| শেষ খেরা | 90 | ধনে জনে আছি জড়ায়ে হায় | 200 |
| ওভক্ষণ ও তাাগ | 99 | দাও হে আমার ভয় ভেঙে | |
| আগমন | 96 | गां छ | 200 |
| नान | 95 | আবার এরা বিরেছে | |
| বালিকা বধ্ | ⊳ • | মোর মন | > 0 4 |
| ক্রপণ | ۶, | আমার মিলন লাগি' ভূমি | |
| ক্ষার ধারে | 80 | আশ্ছ কবে থেকে | >=9 |
| অনাবগ্রক | b | এন হে এন সজল ঘন, বাদল | |
| ফুল ফোটানো | 6 ط | বরিষণে | 306 |
| দিন শেষ | FC | জগতে আনন্দযজ্ঞে আমার | |
| मीचि | ₽ € | নিম্প্রণ | 704 |
| প্রতীক্ষা | P-90 | ভূমি এবার আমায় লহ তে | |
| প্রচন্দ্র | ৮৬ | नाथ लह | `. ob |
| সব-পেয়েছির দেশ | " b-9 | এবার নীরব ক'রে দাও ছে | |
| শারদোৎসব | FÞ | ভোমার মুধর কবিরে | 406 |
| প্রায়শ্চিত্ত | ۶٩ | বিষ যথন নিদ্রাগমন, গগন | |
| গীতাঞ্চলি | >₽ | অন্ধকার | 202 |
| আমার মাধা নত ক'রে | | কোন্ আলোতে প্রাণের প্রদীপ | |
| मां एक | >0> | জালিয়ে তুমি ধরায় আস | 205 |
| কত অজানারে জানাইলে | | কবে আমি বাহির হলেম | • |
| জুমি ু | 205 | তোমারি গান গেমে | \$50 |
| विशाम बौद्धि बच्चा कट्डा, | | ভোষার প্রেম যে বইতে পারি | |
| अ नामु द्यात आर्थना | 205 | ध्यम माथा नाहे | >>• |
| क्षांत्र व्यापि गाति शस | | বজে তোমার বাজে বাঁশী | 25* |
| चारमहिक भूगरक | ५०५ | ৰখা ছিল এক ভদ্নীতে কেবল | |
| स्वि नक मन तर्ग क्षत्र खारन | 204 | कृषि काषि | >>> |
| • | | | |

| | বৰ্ণচ্ছ | ত্ত্ | 1e)• |
|--|---|--|----------------|
| চাই গো আমি তোমারে | | গীতিমা ল ্য | \$. 00 |
| हाई एशा जारि एका सका वि | >>> | আত্মবিক্রন্থ | >0 • |
| দেবতা জেনে দ্রে রই | | গী তাঙ্গি | ५७२ |
| দ্বাভারে | >>> | याजाटनय | >0£ |
| হে মোর দেবতা, ভরিয়া | | ফান্ধনী | >01 |
| এ দেহ প্ৰাণ | ১১২ | বলাকা | 200 |
| এই মোর সাধ যেন এ | | 🗸 नवीन | >80 |
| জীবন-মাঝে | >>< | ্ৰবাৰ যে ঐ এলো | |
| একলা আমি বাহির হলেম | | সর্বনেশে গো | 289 |
| তোমার অভিসাবে | 220 | অামরা চলি সম্থ পানে | >89 |
| ভারততীর্থ | 220 | শ্ব | 589 |
| অপ্যান | >>8 | পাড়ি | 284 |
| ভক্কন-পূজন সাধন আরাধনা | | | 242 |
| সমস্ত থাক পড়ে | 224 | ् भाकाशन | >4.5 |
| সীমার মাঝে অসীম তুমি | | े हकना | >60 |
| বা জা ও আপন স্থ্র | 226 | ১০ নম্বর—হে প্রির আজি | |
| তাই তোমার আনন্দ | | এ প্রাতে | ५७€ ४७४ |
| আমার 'পর | 110 | বিচার | 7 4 A |
| আমার এ গান ছেড়েছে তার | | প্রতীক্ষা | |
| স্কল অলভার | >>9 | ১৩ নম্বর—পউষের পাতা- | 1KP |
| আমার মাঝে তোমার লীলা | | ভপোবনে ২১ নম্বর—ওরে ভোদের ' | |
| হবে | >>9 | স্তেনা আর | 7 9 5 |
| গান দিয়ে যে তোমায় খ্ঁজি | 228 | গ্রেমা আম ৩৪ নম্বর—আমার মনের | • |
| ভোমায় থোঁ জা শেষ হবে | ~ ~ ~ ~ | ७४ भेरत—जामात्र नदगर कानगांठि जांब | >9= |
| না মোর | 224 | ৩৫ ম হর—আন্ত প্রভাতে | |
| ষেন শেষ গালে মোর সব | 326 | | ১৭২ |
| রাগিণী প্রে আমার চিদ্ধ তোমায় নিভ্য | • | ৩৬ নম্বর | 590 |
| হবে, সত্য হবে | >>6 | | |
| মনকে আমার কারাকে | 775 | | >99 |
| নামটা যেদিন সূচ্বে নাথ | 222 | | কুগতা |
| | • | কি বল্ভে চার বাণী | 498 |
| জীবনে যত পূ জা হলো না সারা | >> | C >Gr | ল |
| শেষের মধ্যে অশেষ আছে | 357 | C. C C Com | পারে ১৮০ |
| | 3.2 | | |
| ক্ষাজা অচলায়তশ | 32 | | >₩-₹ |
| ভাক্তার ভাক্তার | > 51 | and the second s | 725 |

| ** | | _ | |
|----------------------------------|--------------|----------------------------|----------------|
| ৪৩ নম্বর—তোশারে কি | | প্রাহিনী | 252 |
| বারবার করেছিয় অপমান | シ ト・ | চিবস্তুন | 455 |
| 8¢ नश्रद—ভाবना निष्ट मित्रम् | | পূরবী | 300 |
| কেন কেপে | 747 | , তপোভঙ্গ | 2 96 |
| ৪৬ নম্বরনববর্ষ | >44 | ভাঙা মৃশির | ₹ <i>9</i> ৮ |
| ১৪ নম্বর —কভ লক্ষ বববের | | আগমনী | 50F |
| তপস্থার ফলে | > | , नौनामित्रनी | द७ ६ |
| ১৬ নম্বরবিখের বিপুল | | বেঠিক পথের পৃথিক | > 8 o |
| বন্ধরাশি | 2 P-8 | , বকুল-বনেব পাথী | \$82 |
| ১৭ নম্বর—হে ভূবন আমি | | , সাবিত্রী | ₹8 ₹ |
| যতক্ষণ | ১৮৬ | , আহ্বান | 489 |
| ১৮ নম্ব—যতক্ষণ শ্বির | | ् निशि | \$ 6 3 |
| হ'য়ে থাকি | 3 69 | বাতাস | > 69 |
| ১৯ নম্বর—আমি যে বেদেছি | | পদধ্বনি | > (9 |
| ভালো এই ব্লগতেবে | 646 | দোসব | २৫९ २৫९ |
| ब्रहे नाती | ७५ ८ | কু <u>তজ্ঞ</u> | > C b |
| ত নম্বৰ—এই দেহটির ভেলা | | মৃত্যুর আহ্বান | <i>€</i> 3 € |
| नित्र | ٠,٥ | দান | สภร |
| २৮ तन्त्र — भाशीत्व मिर्छ | | প্রভাত | 250 |
| গান, গায় সেই গান | 3 o R | অন্ত হিতা | 2 40 o |
| ২৯ নম্বর—্যে দিন তুমি | | প্রভাতী | 2 %5 |
| আপনি ছিলে একা | २०৮ | ভৃতীয়া ও বিব <i>হি</i> নী | 245 |
| ৩১ নম্বর—নিতা তোমার | | कक्ष ि | \$ % \$ |
| পারের কাছে | \$22 | অন্ধকাব | २७० |
| ত্য নশ্বর—আজ এই দিনের | | ৰসম্ভেব দান | ર હ ખ ર હ ખ |
| | २ऽ२ | শিবাজী-উংগব | ર ૫ ૭ |
| শেৰে | | ন্মস্বার | 3 8 9 |
| ৩৩ নম্বর—জানি আমার | २५७ | নটীর পূজা | ,,,, |
| পারের শব্দ | | # 호 ·중<73 @ | २ |
| ac नश्रद—सोबन | ₹>€ | শ তু-র ঞ | 292 |
| পলাতকা | 229 | রক্তকরবী | 2 935 |
| মৃ ক্তি | २५४ | ভেল্ডা ন্স | २ <i>१</i> - |
| টা কি | さつか | ম্ভুরা | ₹ †° |
| মিকৃতি | 2 2 • | | シャネ |
| হারিছে- কাওয়া | #20 | . • | メチン |
| পিও ভোলাশাৰ | 222 | | 5 P-3 |
| मुख्यां हा | 273 | , সাগরিকা | 494 |
| w-1 | | | |

রবি-রপ্মি

ক্ষণিকা

রবীন্দ্রনাথের 'ক্ষণিকা' কাব্যের কবিতাগুলি শিলাইদহে রচিত। কাব্য-থানি বাংলা ১৩০৭ সালে প্রকাশিত হইয়াছিল।

সন্ধ্যাসঙ্গীতে কবি নিজের প্রতিভার স্বরূপের সাক্ষাৎ পাইয়াছিলেন।
ক্ষণিকায় কবি তাঁহাব নিজস্ব ভাষার সন্ধান পাইলেন, ইহার পূর্বে তিনি বেন
অপবের নিকটে ধার-কবা কৃত্রিম ভাষার মনের ভাব প্রকাশ করিতেছিলেন।
মানসী কাব্যে কবি প্রথম যুক্তাক্ষবকে হুই মাত্রা গণনা করিতে আরম্ভ করেন।
ক্ষণিকাতে তিনি প্রথম হসন্তবহুল চল্তি কথার সৌন্দর্য ও ধ্বনিমাধুর্য ধরিতে
পাবিলেন। লিরিকের যাহা বাহ্য উপাদান—ছন্দ, সহজ্ব ভাষা ও অলঙ্কার—
তাহা এই কাব্যেব কবিতাগুলিব মধ্যে বিচিত্রক্রপে ব্যবহৃত হুইরাছে।
ইহাব ছন্দে ভাবে প্রকাশভঙ্গীতে কবির স্বক্ত্ন স্বাধীন অবলীলাক্রম বলমল
কবিত্রেছে, সর্বত্র আনন্দের লঘু নৃত্য টলমল করিতেছে। নিছক গীতিক্রিতা হিসাবে 'ক্ষণিকা' কবির এক অনবন্ত অপূর্ব সৃষ্টি, কবির অন্তত্তম
শ্রেষ্ঠ সৃষ্টি।

রবীন্দ্রনাথ ক্রমাগত ন্তন ন্তন বরণেব, ন্তন ন্তন প্রকাশভঙ্গীতে কাব্য রচনা করিরা আদিয়াছেন, এক একথানি কাব্য বেন তাঁহার কাব্যপ্রতিভার প্রকাশভঙ্গিমার এক একটি ন্তন পর্যায়। তাঁহাব কাব্যধারায় বিবর্তন অধিক। একথা কবি নিজেও শীকার করিয়াছেন—

শ্বান্তকাল বে সকল কবিত। লিবছি ত। ছবি ও গান থেকে এত ভঞ্চাৎ বে আমি ভাবি আমার লেধার আর কোষাও পরিণতি হচ্ছে কি না ক্রমাগতই পরিবতন চলেছে। আমি বেশ অনুভব কবতে পাবৃছি, আমি বেন আর একটা অপরিবর্তনের সন্ধিছলে আসর অবস্থার দাঁডিবে আছি। এরকম আর কভকাল চলুবে তাই ভাবি। তাবিশ্রাম পরিবর্তন শেশুলে জন্ম হয়।

थाई क्रिका कवित्र कावात्रक्रमात्र फक्षीत अक्षी त्यक्षे श्र प्रत्माक शतिवर्जन ।

ক্ষণিকায় কৰি জীবনের প্রিয় বস্ত হারাইরা যাওয়ার ও অভিলবিত
বস্ত না পাওয়ার ক্ষতি ও ব্যর্থতাকে হাসি-ভাষাশা হারা ঠাট্টা করিয়া উড়াইয়া
দিতে চাহিরাছেন। হৃদয়ের দারণ বেদনাকেও তিনি হাসির আলোক দিয়া
বরণ করিয়া লইতে প্রয়াদ পাইয়াছেন এই ক্ষণিকার কবিতাগুলির মধ্যে।
কবি নিজেই তাঁহার মানসী জীবনদেবতাকে সংঘাধন করিয়া বলিয়াছেন—

ঠাটা ক'রে ওড়াই সবি
নিজের কথাটাই।
হাকা ভূমি করো পাছে
হাকা করি তাই
আপন ব্যথাটাই।

চটুল জ্ঞলীতে বলা সরল কথাগুলিও একটি গভীর বেদনাময় অনুভৃতি ও অনুভাব হইতে উৎসারিত। এখানে ওমর থৈয়ামের সহিত রবীন্দ্রনাথেব তুলনা করা থাইতে পারে। সত্যকে সব বাহুল্যের আবর্জনা হইতে মুক্ত করিয়া সহজ্জরপে প্রকাশ করিবার যে ক্ষমতার আভাস কবি কণিকায় দিয়াছিলেন, সেই ক্ষমতারই কবিত্বময় সৃষ্টি এই ক্ষণিকা। কবি জীবনকে সহজ্জাবে সত্যরূপে গ্রহণ করিতে উৎস্ক্ত—

> মনেরে আন্ত কহ যে ভালো মন্দ যাহাই আস্থক সতে,রে লও সহজে।– বোঝাপড়া।

তাঁছার "চিত্ত-ত্বার মৃক্ত দেখে সাধু-বৃদ্ধি বহির্গতা"। এই কবিই পরে ফান্তনীতে বলিরাছেন—"ভালোমামুষ নইরে মোরা ভালোমামুষ নই।" কবির বরস তারুণ্য-বেঁদা হইলেও, "পাড়ার যত ছেলে এবং বৃড়ো, সবার আমি এক-বরসী জেনো।"

উদ্বোধন

(2006)

বে দিন হইতে মাছৰ ভাবিতে শিথিয়াছে, সেই দিন হইতে আৰু পর্যন্ত সৈ একটি কঠিন সমভার সমাধান করিতে চেটা কবিতেছে, কিন্তু পারিছা উঠিতেছে না। সেই সমভাটি হইতেছে—এই বিশাশ অগতে তাহার স্থান কোনায়, ভাষার জীবনেয় উত্তেভি কি, এবং আহা কেই বা ব্যাহা দিয়ে। আর প্রতি মৃহতে যে বেদনার ভার চারিদিক হইতে আদিরা তাহাকে বিরিয়া ধরিতেছে, তাহার তত্ত্বই বা সে কোথার খুঁজিরা পাইবে? এই পৃথিবীকে মাহ্যের মনে হর বড় হঃখনর, এখানে প্রতিক্ষণে বছদিনের সবদ্ধাবিত আশার হত্ত্ব ছিঁড়িয়া যাওয়ার আশকা, প্রতিপদে মৃত্যু ও বিচ্ছেদের হাহাকার। ইহার মাঝখানে পড়িয়া মান্ত্র পথ খুঁজিয়া পার না।

কিন্ত জীবনের এই বিমর্থ মৃতি রবীজ্ঞনাথের ভালো লাগে না। উপনিষদের ঋষিরা বলিয়া গিয়াছেন যে, জীবনের উৎপত্তি স্থিতি ও লয় আনন্দেই হইয়া থাকে। রবীক্রনাথ দেই চিরন্তন আনন্দ-মন্ত্রের উপাসক। ছঃথ-বেদনাকে, নিরাশার আঘাতকে জগতের একমাত্র শ্বরূপ বলিয়া মানিতে তাঁছার মন চায় না। তাঁছার মনে হয়, এ ত্র'থ যেন সংসারের উপরের কঠিন গুৰু খোলা মাত্র; উহাব দিকে বিলুমাত্র মনোযোগের অপব্যব না করিয়া, তাহার অন্তন্তলে যে গোপন আনন্দের উৎস আছে ভাছারই রসাস্বাদন কবিবার জন্ম তিনি ব্যগ্র হইয়া উঠিয়াছেন। ওয়ার্ড সওয়ার্থ যেমন তাঁহার প্রিয়াকে a traveller between life and death দেখিয়া-ছিলেন, এবং সংসারেব কোনো কিছু আবিলতা তাঁহাকে স্পর্ন করে নাই, ও করিতে পাবে না বলিয়া তাঁছাকে অভিনন্দন করিয়াছিলেন; রবীক্রনাখও তেমনই এমন একটি মুক্ত স্থব্যর জীবন পাইতে চাহিতেছেন, যাহা পৃথিবীর তৃঃথ দৈল্য নিরাশা নিক্ষণতার ঘারা একটুকুও অভিভূত না হইয়া পৃথিবীর ममल जानन्त्रम निः (भारत शीन कतित्रा याहेरत ; जमल कमल रामन अरलत কোলে সহজ আনন্দে ফুটিয়া উঠে, পঙ্ক হইয়াও সে বেমন পদ্ধিতাকে পরিহার করিয়া শোভায় স্থমায় চলচল করে, তেমনি করিয়া এই অপরূপ মানক-জীবন-সংসাবেব মধ্যে কবির জীবনও অনাসক্তভাবে কাটিয়া যাইবে। জীবনের কোথাও এতটুকু বাঁখন পড়িবে না যে, শেষের দিনে ডাক আদিলে সাড়া দিতে **डांश्रेत कानक्रभ कहें ९ विधा इटेंट्ड भारत। स्ट्रें बंछ भवीन-बीवान**क्र উদ্বোধন সন্ধীত কবির কঠে উদেবাধিত হইতেছে। যাহা বাইবার ভাষাকে (कह कारनामिन धतिवा वाधिए भारत मा। याहा भाहेरात नरह, छाइ।ब জন্ত সমন্ত জগৎ থুজিয়া ফিরিলেও কোনো লাভ নাই। কিছ ৰাছুৰ চিরদিন এই সহল সরণ সতাকে উপেকা করিয়া আসিজেছে। স্বৃতির সঞ্চরে ও নিরাশ হদরের দীর্ঘধানে তাহার চারিদিকে বে ছালের পৃথ্য প্রজাইরা ধরিতেছে, ভাগ গৈ নিজেই স্থায়ী করিতেছে। সেই 'শৃত্রন ^সদ্ধিয়

কবিতে না পারিলে তাহার ভাগ্যে আনন্দ লাভ কবা অসম্ভব। অর্থ হণ মান প্রভৃতি সব ভূলিরা মাহুব বদি সৌন্দর্য-পিপাস্থ হইরা মৃগ্ধ-হৃদরে প্রমরের মতো বিশাল জগতের মর্যকোষে বাস করিতে পারে এবং কল্যাণমর সৌন্দর্য-শতদলের শোভা দেখিতে ও রস আস্বাদন কবিতে শিথে, তবে তাহার জীবন আনন্দে ঝলমল অমল শুন্দর হইবে, সামান্ত হঃথ-কালিমা তাহাকে স্পর্শ করিতে পারিবে না।

তাই কবি বলিতেছেন যে, অতীতের প্রতি কোনো মমতা না করিয়া ও তবিয়তের কোনো আশা না রাখিয়া কেবল বর্তমানকেই আমাদের কর্মে প্রারেগ করিতে হইবে। মামুবের জীবন তো কতকগুলি বর্তমান মূহর্তেব সমষ্টি। অতএব বর্তমানকে সার্থক করিয়া তোলাই হইতেছে জীবনের সাধনা। বর্তমানই জীবনেব একমাত্র লক্ষা। অতীত তো গত, তাহার কথা স্মরণ করিয়া আমাদের কণস্থায়ী বর্তমানকে বিনই করা উচিত নয়। আবাব ভবিয়্বৎ তো অনাগত, তাহার সম্বন্ধে আমাদের কোন অভিজ্ঞতা নাই, তাহাব সহিত আমাদের কোন সম্পর্ক নাও ঘটিতে পারে। অতএব বর্তমানই আমাদের একমাত্র উপাস্ত। অতীত তো অতীত, মাথা কুটিলেও তাহাকে তো আর পাওয়া যাইবে না, গতত শোচনা নান্তি। আবার পবকালের ভরদায় সকল স্থাসজ্যোগ ত্যাগ করিয়া এ জীবনকে বিফল করিয়াও কোনো লাভ নাই। আনন্দের কোনো কারণ না থাকিলেও সর্বদা কেবল আনন্দেই মগ্র থাকিতে হইবে। সামাত্র কয়েক দিনের জন্ম আমরা ইহজগতে আসিয়াছি। স্থতরাং বিরস মুথে বিদ্যা থাকিয়া জীবনকে পশু না করিয়া এই জীবনের সকল প্রকার স্থণ আত্মাদ করা বাঞ্চনীয়।

কবি বলিতেছেন যে, অনস্ত মহাকাল যেমন চিরদিন অতীতকে বহন করিরা বেডার না, অতীতকে ক্রমাগত পিছনে ফেলিরা কেবল বর্ডমানকে বুকে করিরা অনবরত ভবিশ্বতের দিকে অগ্রসর হয়, সেইরপ আমাদেরও অতীতের অসুশোচনা পরিত্যাগ করিরা, ভবিশ্বতের প্রত্যাশা না রাখিরা, কেবল গে ক্রিন-বর্তমান আমাদের সমূপে সমুপন্থিত তাহারই প্রত্যেক ক্রণটকে আমাদের কর্মের হার্মা সকল ও সার্থক করিরা তুলিতে হইবে। অতীতকে টানিরা আনিয়া বর্তমানের আহলা ভ্রিরা কোনো লাভ নাই। যে ক্রণিক-বর্তমান আমাদের কর্মেন সমূপত্যিত ভাহাকে বরণ করিরা লও, তাহাকে লইরাই আন্ধিকার ক্রিনিকার আনক্রমান পাও, ক্রণিক-বিদের উৎসবে মন্ন হও। গৃহকোণে

বিদিয়া ক্ষণিক বর্তমানকে অতীতের চিস্তায় ভাবনায় ভারাক্রান্ত করিয়া জীবনকে মৃত্যুপুরী করিয়া তুলিয়ে। না। জীবনের বর্তমানকে যদি আনন্দ-উৎসবে সার্থক করিয়া তুলিতে পারো, তাহা হইলে তোমার অতীত আনন্দময় হইবে এবং ভবিশ্বংও আনন্দিত হইবে। তাহা হইলে এই বর্তমান ক্ষণগুলি সারাজীবনের কণ্ঠে আনন্দের মালা হইয়া ছলিবে।

কবি উদ্দেশ্যমূলক কর্ম হইতে বিরত হইরা প্রক্রতির সৌন্দর্যের সঙ্গে যোগে আনন্দের আবেগে পাগল হইয়া উঠিতে চাহিতেছেন। তিনি বলিতেছেন—
বিষ্ণাম্থ পতেকের মতো জগতে সকল আনন্দে ঝাঁপ দিয়া পড়িতে হইবে।

"সকল সংস্থার ও প্রথার বন্ধন হইতে প্রস্তুত হইর। স্বাধীনভাবে নিজেকে উপলব্ধি করিবার বাগ্রত। স্থা কবিদের ও ইইট্মানের কবিতার পাওরা যায়। ইহারা বলেন- প্রকৃতি ও মানবকে লইঘাই এই জগও। সমস্ত মানব-পরিবার দেশে কালে লগও ও শাস্বত। শাস্বত সতোর উপর আপনাকে প্রতিষ্ঠিত করিতে না পারিলে, আপনাকে অবও মানব-পরিবারের অন্তর্গত বলিরা উপলব্ধি কবিতে পারা যায় না। যিনি নিজেকে শাস্বত সতো প্রতিষ্ঠিত কবিতে পারেন তিনি সকলের প্রমান্ধীয় হন।

'বাধা বিবেচনা সমস্তা সন্ধান- সব সরাইবা কেলিয়া ক্ষণ-প্রকাশের বুকে মৃহুর্তে মৃহুর্তে বে অমৃত কপ ফুটিবা উঠিত হছে, কবি তাহাই চোথ ভরিয়া দেপিতেছেন এবং প্রাণ ভরিয়া উপজ্ঞার করিতেছেন। জীবনের সব জটিলতা জুভাবনা সরাইয়া দিয়া জদবাবেগের সহজ্ঞ পথে চলার তুনিবার আকাজ্জাব কবি বলিতে চাহেন স্কদবের আবেগ ভুচ্ছ নয়, সৌন্দ্রের উপলব্ধি কোনো মহৎ ভর্ত্বের চেবে অসচ। নয়।"

"সরল চটুল ভক্সিতে কবি কথা গলিবাছেন; মথচ তাহারই গৈকে গাঁকে কবি-জন্মরের অনুস্তরের চাহিরা দেখিবার স্থাগ আমাদের বধনই ঘটতেছে, ভগনই দেখিতে পাওরা বাইতেছে কী গভীরতা হইতে তাহাব কথা উৎসাধিত হইতেছে, আর মনেক সময়ে কেমন বেদনা-ভরা সেই গভীরতা।"

তুলনীয়

ক্ষা-সম্পদ্ ইয়ং সূত্র্নভা প্রতিলক্ষা পুরুষার্থসাধনী। যদি নাত্র বিচিন্তাতে হিতং পুনর্ অপ্যের সমাধ্যমঃ কৃতঃ।।

ক্ষণ-স্বোগের ওভাশীবাঁদ না করা স্মূর্লভ, প্রতিলব্ধ হইলে তাহা মানব জীবনের শ্রেষ্ঠ কাম্য দান করে। যদি এই বর্তমানে হিত-চিস্তা না করা যার, তবে এই বর্তমানের পুনরাগমন তো আর কথনোই স্টবে না।

> তিস্সে যুক্তস্স ধক্ষেহি খনো তম্ মা উপচ্চসা। থনাতীতা হি সোচন্তি নিয়নং হি সমন্ত্রিতা।

রবি-রশ্মি

স্থেতিস্বা, ভূমি ধর্মে মনোনিবেশ করো, জুমি ক্ষণকে পরিত্যাগ্য করিলো না। যাহারা ক্ষণাতীত, ক্ষমিং ক্ষণকে ক্ষতীত হইতে দেয়, তাহারা শোকপ্রস্ত হর এব নরকের হুঃথ ভোগ করে।

-- बृक्तत्परवत्र छेशरम् ।

গৃহীত ইব কেলেবু মৃত্যুদা ধর্ম আচরেও।

- जानका ॥

পাত্র ভরো, পাত্র ভরো,
পুন: পুন: কী কাজ বলায় ?
কতই দ্রুত বাচ্ছে সময়
গভিয়ে মোদের পায়ের তলায।
অসুৎপন্ন আগামী কাল,
লব্ধ মরণ বিগত দিন,
কাজ কি তাদের ভাব্না ভাবায়
অস্ত্র যদি বর্ণ কলায়।

ওমৰ খেয়াম কাশ্তিচন্ত্ৰ ঘোৰেব অসুবাদ।

এক লহমার খুশীর ভুকান,

এই তো জীবন। — ভাবনা কিনের ?

হাকিজ কাজী নজকল ইস্লামেব অনুবাদ।

Take therefore no thought for the morrow, for the morrow shall take thought for the things of itself. Sufficient unto the day is the evil thereof

—St Matthew, 6. 34.

Trust no Future, howe er pleasant,

Let the dead Past bury its dead.

Act—act in the living Present,

Heart within, and God o'erhead.

—Longfellow, Psalm of Life.

One hour of glorious life
Is worth an age without a name

মাতাল

কবি বিৰেচনা অপেক্ষা অবিবেচনাকে প্রশংসা করিয়াছেন অনেক স্থানে। ক্বেল বিচার-বিতর্কে কাজের অবসর পাওয়া যায় না, গুডক্ষণ উত্তীর্ণ হইয়া যায়। বাহারা কেবল পাঁজি দেখিয়া দিন-ক্ষণ খুঁজিয়া কর্ম করিতে চার, তাহাদের আরু কর্ম ক্ষরাই হর না। তাই কবি বলিতেছেন উদ্ধাম আগ্রহে যাহারা বিপদের ভর না করিয়া সকল কুমংস্থার পরিহার করিতে পারে এবং কোনো কর্মে প্রবন্ত হইরা তাহার শেব দেবিরা তবে ছাড়ে, কবি তাহাদের দলেই ভিড়িতে চাহিতেছেন। কর্মে মন্ততা এবং সেই কর্মের তলা পর্বস্ত ভূবিরা দেখার মধ্যে যে যৌবনের বেগ আছে, কবি তাহাই কামনা করিতেছেন। বিবেচকদের দলে ভিডিরা পঙ্গু হইরা থাকিতে তিনি চাহেন না। বাধা দল্ভরের রাস্তা ছাড়িয়া যে দিকে পথ নাই সে দিকে ন্তন পথ খুলিবার ব্রভ লইয়া বিপথে ধাবমান হইবার আনন্দে জীবন উৎসর্গ করিতে কবি ব্যক্ত। যে মায়্ম্যের বা যে আতির হঃথ স্বীকারে ভয়, ন্তনের সন্ধানে রত হইতে জড়তা, যেখানে পদে পদে নিষেধ মানা, যেখানে কেবল সাবধানতা, সেথানে লক্ষ্মী দয়া করেন না। লক্ষ্মীছাড়া হইয়া ছুটয়া বাহির হইতে পাবিলেই লক্ষ্মীকে জয় করিয়া আনিতে পারা যায়।

দ্রষ্টব্য-তাদের দেশ। বলাকায় নবীন, যৌবন নামক কবিতা।

যথাস্থান

(3000)

এই কবিতাটি কবির বিরুজ-সমালোচকদের সমালোচনার জবাব এবং কবির যথার্থ উপযুক্ত সমঝ্লার নির্ণয়।

ভীকতা

(১৩.৬)

ভালোবাস। আপনাকে প্রকাশ করিবার বাাক্লভায় কেবল সভাকে নহে অলীককে, সঙ্গভাক নহে অসঙ্গভকে আশ্রয় করিবা থাকে। কেহ আদর করিবা ফল্মর মূথকে পোড়ার-মুখা বলে মা আদর করিবা ছেলেকে ছুটু বলিব। মারে, ছলনাপূর্বক ভর্থ সনা কবে। ফ্লমরকে ফ্লমব বলির। বেন আকাজ্জার ভূপ্তি হয় না ভালোবাসার ধনকে ভালোবাসি বলিলে যেন ভাষায় কুলাইয়া উঠে না। সেইজন্ত সভাকে সভা কথার দ্বাবা প্রকাশ করা সম্বন্ধে একেবারে হাল ছাড়িয়া দিয়া ঠিক ভাষার বিপরীত পথ অবলম্বন করিতে হয়, তথন বেদনার অশ্রুকে হাল্লজ্জটার, গভাঁর কথাকে কোতুক পরিহাসে এবং আদরকে কলহে পরিণত করিতে ইছেন করে।"

—রবীক্রনাথ ঠাকুর, মোহিতচক্র সেনের সম্পাদিত প্রহাবলার ভূমিকার উদ্ধৃত।

সেকাল

(3000)

কবি রবীন্দ্রনাথ কালিদাদের স্থদ্র অতীত কালে কর্নায় প্রবেশ করিয়া কালিদাদের কাব্যে বণিত দেকালের আচার-ব্যবহার বেশভ্যা ইত্যাদির বর্ণনার সমাবেশ করিয়া এই কবিভাটিতে কালিদাদের কালের একটি পরিবেশ ও আবহাওয়া আনিয়া দিয়াছেন। কালিদাদের কালের সৌন্দর্যমালা এই কবিতার মধ্যে গাঁথিয়া কবি তাঁহার কালের পাঠকদের উপহার দিয়াছেন। কাল ও দেশের ব্যবধান দে-দেশের ও সে-কালের কোনো সৌন্দর্যকে এ কালের কবিচিন্ত হইতে দ্রে রাখিতে পারে নাই। কালিদাদের বর্ণিত তাঁহার সময়ের চিত্রপরম্পরা আমাদের অতি নিপ্রভাব সহিত নিজের কবিতার মধ্যে গ্রথিত করিয়া তুলিয়াছেন। পদে পদে তাঁহার বর্ণনা কালিদাদের কাব্যের বিবিধ বর্ণনা শ্বরণ করাইয়া দেয়। এই কবিতার সহিত মেঘদ্ত, স্বপ্ন প্রভৃতি কবিতা তুলনীয়।

۵

কালিদাসের আশ্রয়দাতা রাজা বিক্রমাদিত্যের সভায় নয়জন বিদ্বান কবি ছিলেন, তাঁহারা নবরত্ব নামে বিখ্যাত হইয়াছিলেন। সেই সময়ে ববীন্দ্রনাথের মতন কবি জন্মগ্রহণ করিলে তিনি নিশ্চয় সেই নবরত্বের সঙ্গে দশম-রত্বরূপে যুক্ত হইতেন। বাস্তবিক তিনি কবি-কালিদাসের কবিত্ব-প্রতিভার শ্রেট উত্তবাধি-কারী। এই কবিতায় কবির সেই আত্মপ্রতার প্রকাশ পাইয়াছে।

বিক্রমাদিত্যের রাজধানী উজ্জবিনী রেবা বা নিপ্রা নদীর তীরে অবস্থিত ছিল। সে-কালের উদ্যানে ক্লব্রিম শৈল নির্মিত হটত, তাহাকে ক্রীডালৈল বলিত।

--- जीफ्रारेननः कनक-कमनी-विष्टेन (श्राक्षणीवः ।-- स्पवन्तः, উত্তর ১৬। क्रीफ्रारेनन विष চ विश्वतः भाषातात्वः स्वीती ।-- स्पवन्तः, পূর্ব ৬১ মেবানুন্ত কাব্য মন্দাক্রান্তা ছন্দে রচিত।

₹

বতুসংহার কাব্য হর সর্গে হর ঝতুর প্রকৃতি-বর্ণনা। মেঘদ্ত কাব্য আবাচ্ছ প্রথম বিবসের ঘটনা দাইরা দেখা।

ø

সংস্কৃত কবিদেব মধ্যে একটা ধারণা প্রচলিত ছিল যে স্থল্দরীর পদাঘাত না পাইলে অশোক প্রস্কৃটিত হয় না, আব স্থল্দরীর মৃথমদের কুলকুচা না পাইলে বকুলফুল ফুটে না। এই কবিপ্রসিদ্ধি কালিদাসের বহু কাব্যে দেখিতে পাওয়া যায়—

> সেথাৰ কুৰুবকে ঘিরিছে মাধবীর ছুইটি পাছ কুঞ্চ, তারি পালে অশোক তকার্য কাঁপাযে কিশলর, বকুল মনোবম কৰে বি**ব্লাজ**। আমাৰ সাথে মোর প্রিয়াব নাম পদ— আশাক চাষ, --হাড়ন পেতে সেই দোহৰ ছলে চাহে বৰুল কুতৃহলে প্ৰিয়াৰ বদৰেন মদধারায।। মেঘদূত উত্তর ১৭।

মালবিকাগ্নিমিত্রম নাটকম ৩য় অস্ক কুমাবসম্ভবম ৩৷২৬ কর্পুবযঞ্জরী নাটক প্রভৃতিও দ্রষ্টব্য।

Ь

মেঘদ্ত উত্তব মেঘের দিতীয় শ্লোকে সেকালের রমণীদের বেশ-বিস্তাসের স্থলার বর্ণনা আছে---

হত্তে লালাকমলন অলকে বালকুন্দাসুবিদ্ধা নীতা লোপ্রপ্রসব বজদা পাঙ্কান আননে প্রীঃ। চূডাপাশে নবকুরবক চাককর্ণে শিরীদ দীমস্তে চ তদ উপসমজ যত্ত্র নীপ বর্নান।।

কুমারসম্ভব কাব্যের ৩।৫৫ স্লোকে কেশরদামকাঞ্চীর উল্লেখ আছে—

প্রস্তা॰ নিতম্বাদ অবলম্বমানা পুনঃ পুনঃ কেলরদ।মকাঞ্চীম।

যন্ত্রাধাবা বা ধারাযন্ত্রের উল্লেখ পাওয়া যার বছ কাব্যে—

তত্রাবশুং বলর কুলিশোন্যট্রনোন্সীর্ণ-তোরং
নেয়ন্তি তা' স্থবধুবতবো যন্ত্রধারাগৃহত্ব। — মেঘনুত, পূর্ব ৬২।
মেঘনুত পূর্ব ৪৯, রঘুবংশম্ ১৬।৪৯, কুমারসম্ভবম্ ৬।৪১ ইত্যাদি স্কট্রবা।

সে-কালের রমণীরা কেশে ধৃপেব ধোঁয়া দিয়া কেশ সংস্থার করিত-

অগুৰু স্থৰতি ধুপামোদিতং কেশপাশন।

--- अकुमरहात्र, निनित्र, ১२।

अक्टेबा—त्रधूव भन् ३ ७।००, चषुत्रश्चात वर्षा २३, क्यावमख्यम् १।३८।

সে-কালের রমণীরা এ-কালের রমণীদের মতনই মূথে পাউডার মাথিত,
কিন্তু সে পাউডার এ-কালের মতন ক্লিম স্থানীকত থড়ির খাঁড়া বা চালের
শুড়া নহে, তাহা হইত সহজ্ব-স্থরতি লোগ্র-মূলের রেণু বা কেরামূলের রেণু।
—মেঘদূত, উত্তব ২, কুমারসন্তবম্ ৭।৯;

এবং কালাগুরুর গদ্ধে বসন স্থর্যন্তিত করিত—

প্রকাম-কালাগুক-ধূপ-বাদিতং বিশক্তি শব্যাগৃহম্ উৎস্কাঃ গ্রিয়:।

--- ঋতুসংহার, শিশির ८।

ज्ञेरा—च्रुमरशत, द्वाख ८, कुमात्रमञ्जवम् १।১८।

¢

সে-কালের রমণীরা কপোলে বক্ষে চলন কুন্ধুম কল্পরী দিয়া চিত্র-রচনা করিত--

> প্রিরন্থ কালীয়ক ক্রুমাক্ত স্তনের্ গে রের বিলাসিনীভি:। আলিপাতে চন্দনম অঞ্চনাভি: মদালমাভিব মৃগনাভি যুক্তন।। ক্ষুদ্রংহার, বসস্থ ১২।

উষ্টবা- ঋতুসংহার শিশির ৯, কুমাবসন্তবন্ ৯।২২ ইত্যাদি।

বিবাহের সময়ে বধ্ যে বস্ত্র পরিধান করিত, তাহার আঁচলের কোণে একটি হংস-মিখুনের ছবি আঁকা থাকিত—

> আমুক্তাভরণঃ প্রশ্বী হংস চিহ্ন ছ্কলবনে। আসীদ্ অতিশর-প্রেক্ষ্যঃ স রাজ্যশী বধু বরঃ। —রব্বংশম ১৭।২৫।

प्रष्टेरा—कृषायमञ्जरम १।७२ ।

বিরহিণীর চিত্র মেঘদ্তের পূর্ব ১০ ও উত্তরের ২৫, ২৬ শ্লোক হইতে এথানে অন্ধিত হইরাছে।

সে-কালের রমণীদের পায়ে নৃপ্র থাকিত—র ব্বংশম্ ১৬।১২, ঋতুসংছার— গ্রীম ৫, শরৎ ২০ জটব্য।

5

সে-কালের রমণীরা শুক, সারিকা, কণোত, ময়ুর প্রভৃতি পাখী পুষিত।——
মেখদ্ত উত্তর ১৮, ২৪, পর্ব ৩৮; বিক্রমোর্বশী নাটক, ৩র অক্ষ।

তপোবন-তর্কণীরা সহকার-তর্জর আলবালে জলসেচন করিত---আলবাল-পরিপ্রণে নিযুক্তা শকুরলা। অভিজ্ঞান-শকুরলন্, ১ম অহ। ٩

কালিদাসের মালবিকাথিমিত্রম্ নাটক বসস্তোৎসবের সময়ে অভিনীত হর— মালবিকাথিমিত্রম্ ১ম অন্ধ ।—-জ্রীকালিদাস-গ্রাথিত-বস্তু মালবিকাথিমিত্রং নাম নাটকম্ অস্থিন্ বসস্তোৎসবে প্রযোজবাম্ ইতি।

রাজা অধিমিত্র চিত্রশালায় রাণীর চিত্রপটের মধ্যে পরিচারিকার্রপিণী মালবিকার ছবি দেখিয়া মুগ্ধ হন, এবং সেই চিত্রশালায় তাহার সহিত সাক্ষাৎ করেন।—মালবিকাগিমিত্রমৃ ১ম অন্ধ।

মৃগ্ধা তরুণীরা ছল করিয়া আঁচল বা মালা গাছের ডালে আট্কাইয়া প্রণয়ীদের দেখিয়া লইত।—অভিজ্ঞান-শকুন্তলম্, ১ম আছ; বিক্রমোবনী ১ম আছ।

তথনকার কালের তরুণ-তরুণীরা যৌবনের নবীন নেশার প্রমন্ত হইত।— মেঘদূত, পূর্ব ২৫।

व्वित्व, नागरतत्र स्थाय त्योवन

হয়েছে উদ্দাম ছনিবার।—প্যারীমোহন সেনগুপ্তের অনুবাদ।

ь

কালিদাদের আবির্ভাবকাল লইয়া পণ্ডিতদিগের মতভেদ ও বিবাদ এখনও মিটে নাই। তবে অনেকে এখন মনে করেন যে কালিদাস ৬ গ্ন শতাব্দীতে চক্রপ্তপ্ত বিক্রমাদিত্যের সভার ভাের ই ছিলেন।

निभू निका मानविकाधिमिक नाउँ एक महाजानी उनीनजी ज नामी ज नाम।

2

আধুনিক রমণীরা ইংরাজী শিথিয়া বিদেশীভাবাপলা ও বিদেশীভাষিণী হইয়াছে, তাহারই প্রতি কবির ঈষৎ শ্লেষ। তথাপি তাহারা যে চিরস্তনী নারী তাহার সাক্ষ্য তাহাদের হাবভাবে প্রকাশিত হয়!

20

কালিদাসের কাব্য, নাটক পাঠ করিয়া কবি রবীন্দ্রনাথ তো কালিদাসের সে-কালের আভাস পাইতেছেন, কিন্তু কবি কালিদাস তো কবি রবীন্দ্রনাথের এ-কালের কোনই আভাস পাইতে পারেন নাই। তাই কবি বলিতেছেন বে, কালিদাস আগে জন্মিয়া ঠকিয়া গিয়াছেন।

যাত্ৰী

(>00%)

জীবন্যাত্রার পথে অনেক দঙ্গীর সঞ্চে মিলন ঘটে; তাহাদের কেই বা বছদূর পথের সহযাত্রী, কেই বা কেবল থেয়া-পারাপারের সময়টুকুর সাথী। যে থেয়ার সাথী, সেও তাহার সম্পদ্ লইয়া চলিয়াছে ফুলর ও চিরস্তনের উদ্দেশে—যাহার গোলাতে সে তাহার জীবনেব ফসল জমা করিয়া দিয়া নিশ্চিস্ত হইবে। সে যদিও আমার পথেই বরাবর যাইবে না, তবু তাহাবও আমাব সহিত একই থেয়ানোকায় চডিতে ইতক্তওঃ করিবার কারণ নাই; তাহার ও তাহার সম্পদেব স্থান এই নৌকাতে হইবে, আমি তাহাদের কাহাকেও আত্মসাৎ করিব না, আমি কেবল তাহাব থেয়ানোকার সাথী হইয়া তাহাদেব গন্তব্যের দিকেই উত্তীর্ণ করিয়া দিব। তাহার মনের কথা তাহারই থাকুক, সে তাহা গোপন রাখুক, আমি কেবল তাহার সহিত সাক্ষাতের সৌভাগ্যের কথাই ভাবিব—এই ক্ষণিক স্বল্প সম্বন্ধটুকুই আমার পক্ষে যথেষ্ট হইবে। এই রক্ষা তো আগেও অনেক বাব হইয়াছে—কত যাত্রী আমাব জীবন-তবীতে কেবল খেয়া পাব হইয়া গিয়াছে, তাহার ধানের আঁটি অলক্ষণের জন্ম আমাব তরীতে বাথিয়া তাহার স্থামী কণম্য-স্থানের দিকে উত্তীর্ণ কবিয়া লইয়া গিয়াছে।

সৌন্দর্য্যের সঙ্গে কেবল সাক্ষাৎ ও সংস্পর্ণ করিয়াই হাদয় পূর্ণ করিয়া লইতে হাইবে, সৌন্দর্য্যকে কেহ কথনো নিঃশেষে আপন করিয়া লইতে পারে না, তাহা ত্ররাপনা অ-ধরা চিরাপস্রিয়মানা জী, তাহা স্থর্গেও চিরস্থায়ী নয়। তাই কবি যাত্রীকে কেবল থেয়া পার করিয়া দিয়াই সম্ভষ্ট। তাহাকে তিনি একান্ত নিজন্ম করিয়া পাইতে তো চাহেনই না, তাহাব গন্তব্য হানের ঠিকানা জানিবার জন্তও তাঁহার কোনো উৎস্কর্য নাই।

অতিথি

(2004)

স্করকে অন্তরের মধ্যে উপলব্ধি করিবার বাসনা মানব-মনে বিরহিণী রূপে
নিরন্তর বিশ্বাক্ষ করিতেছে; তাই মাসুৰ কিছতেই তৃপ্তি পায় না , অ্থচ
যাহাকে সে চার দে অনিবঁচনীয় অবাক্ষ অনায়ত্ত অগ্রমা ও ধারণাতীত ৷

'আমি কহিলাম- কারে ভূমি চাও,

अरना वित्रशिनी नाती।

সে কহিল—আমি বারে চাই তার নাম না কহিতে পারি।' —উৎসর্গ।

(महे जलाना जिल्ली किंद्ध প্রাণের কপাটে निकन नार्छ।

মানব জীবন 'পাইনি' ও 'পেবেছি দিরে গঠিত। ঘর বলে —পেরেছি, পথ বলে পাইনি।
মামুবের কাছে পেবেছিরও একটা ডাক আছে আর পাইনিরও ডাক প্রবল। ঘর আর পথ
নিরেই মামুব। শুরু ঘর অ'ছে, পথ নেই সেও যেমন মামুবের বন্ধন, শুরু পথ আছে, ঘর
নেই সেও তেমনি মামুবের শান্তি। শুরু 'পেরেছি' বন্ধ গুহা শুরু 'পাইনি' অসীম মঞ্জুমি।
—রবীক্রনাথ।

বব্ একেবারে অন্তরের, এবং অতিথি একেবারে বাহিরের। বাহিরের অতিথি আসিয়া অন্সরের বব্র কান্ধ ভোলায়। আন্ধ অতিথির সহিত গোপন অভিসাবে মিলিত হইয়া ঘরের কান্ধ ভূলিবার পরম কণ উপস্থিত হইয়াছে। পূণিমা রাত্রে প্রকাশ্রে যদি হে বধু, ভোমার অভিসারে বাহির হইতে ভয় বা সঙ্কোচ হয়, তবে না হয় ঘরের মধ্যে গোপন থাকার মতন ঘোমটার আবরণ টানিয়া মৃথ ঢাকিয়া চলো, আব ঘবেরই প্রদীপ হাতে লও। প্রকাশ্রে যদি তাহাকে সম্পূর্ণ গ্রহণ করিতে না পাবো, তবে না হয় লুকাইয়াই গোপনে অসম্পূর্ণভাবেই তাহাকে লইও, কিন্তু তাহাকে একেবারে প্রত্যাখ্যান করিয়ো না। তুমি অস্তরুঃ এইটুকু জানো যে সে আসিয়াছে। তাহাকে পূর্ণভাবে অভ্যর্থনা করিবার আয়োল্ধন কি এখনো তোমাব সাবা হয় নাই ? তাহাকে কি এখনো অপেক্ষা করাইয়া বাহিবে, না তাহাকে অভ্যর্থনা করিয়া গ্রহণ

মানব-মনে ও মানব-জীবনে অতর্কিতে মহৎ তাবেব ও মহৎ কর্মের প্রেরণাব আবির্ভাব হয়। সেই অতিথিব আগমনেব প্রতীক্ষার বাসকসজ্জা করিয়া প্রস্তুত বাকিতে হইবে, যেন সেই অতিথি গৃহধারে আদিলেই তাঁহাকে বরণ করিয়া গ্রহণ করিতে পাবি। এই আহ্বান যেন রাধার কাছে শ্রামের বাঁশীর আহ্বান, ইহাকে বার্থ হইতে দিলে সারা-জীবন হতাশ হইয়া হায় হায় করিয়া বাঁদিরা কাটাইতে হইবে।

कविद्व १

যে-কোনো দেশে যথনই কোনো মহৎ আদর্শের নব অভ্যাদর হইয়াছে, তথনই কতক লোকে তাহাকে সমাদরে স্বীকার করিয়া লইয়াছে, কতক লোকে স্কাইয়া সেই আদর্শকে মনে মনে স্বীকার করিয়াছে। কিন্তু প্রকাশ্যে তাহাকে বরণ করিতে সাহস পার নাই, এবং কেহ কেহ তাহাকে একেবারে শ্বীকার করিয়া জীবনকে ব্যর্থ নিজল করিয়া ফেলিরাছে। যেমন ক্রাইটের বা মহম্মদের বা বৃদ্ধদেবের ধর্মপ্রচার, অথবা আমাদের দেশে বা অস্তান্ত অনেক দেশে স্থাদেশের স্বাধীনতার জন্ত আত্মত্যাগের ও স্থাদেশীত্রত পালনের আছ্বান কতক লোকে স্বীকার করিয়াছে, কতক লোকে পারে নাই, আর কতক লোকে করে নাই।

তুলনীয়—থেয়া পৃত্তকের 'আগমন' কবিতা, ও 'ছই পাধী'।

'আঘাঢ়' ও 'নববৰ্ষা'

"বর্তমান সভ্যতার যুগে মানব জীবনে প্রকৃতির স্থান বড আর। তাই ইচাকে জাবনে পাইবার আকাজ্জন বড বেলি। চিরঙ্গগ্ন যেমন বাস্থ্য কামনা কবে, মুর্দ্ যেমন জীবনের প্রতি লোলুপ দৃষ্টিতে ফিবিয়া তাকায়, তেমনি তৃষিত ব্যাকুলতায় আজ মানবের অন্তর্গত্ত প্রকৃতিকে চাহিতেছে। এই ভাষাহীন প্রার্থনায মানব ক্লম্ম বাধিত হইমা উটিতেছে বালবাহ আজ প্রকৃতিব কবিতা এমন করিয়া হলবকে শেলা দেয়। মানব জীবনের মুর্লত ও প্রাপ্ত হ আকাজ্জাত্তিনি যথন কবির হত্তে রূপ গ্রহণ করিয়া, ছন্দে নাচিমা, সন্মুধে আসিষা ওপান্তত হয়, তথন এমনই করিয়া ইহাবা ক্লম্মকে মুগ্ধ করে।"

— বিশ্বপ্রকৃতি ও ববীন্দ্রনাথ উত্তবা, জ্যৈষ্ঠ ১৩৩৪ সাল।

আষাদ্ধ নববর্ষা প্রভৃতি বর্ষার যে-কোনো কবিতা কবির অসামান্ত অনুভবের আনন্দ প্রকাশ করিয়াছে। ইহাদেব শব্দ-সঙ্গীত, ভাবব্যঞ্জক শব্দবিক্তাস ও অনুপ্রাস এবং মধুর তান-লয়-মান ও চিত্র-পরম্পরা কবিতাগুলিকে পরম মনোরম করিয়াছে। এই ছুইটি কবিতার সহিত কবির 'বর্ষামঙ্গল' কবিতা এবং 'আবার এসেছে আষাচ গগন ছেম্বে' প্রভৃতি গান তুলনীয়।

নৰবৰ্ষা

>

হৃদর আমার নাচে রে আজিকে-তুলনীর

"My head aches, being too happy in thine happiness.

—Keats, Ode to a Nightingale

মর্রের মতো নাচে রে—কবি সামান্ত কবির স্থায় বলিলেন না বধার মেবলপনে মর্র কলাণ বিভাব করিয়া নৃষ্ঠ্য করিতেছে—ভিনি নিজের সদরকেই ময়ুরস্থানীর করিয়া উপস্থিত করিয়া বাহ্যপ্রকৃতিকে ও অন্তঃপ্রকৃতিকে মিলাইয়া দিরাছেন।

গুরু গুরু মেঘ ইত্যাদি—মেবগর্জনধ্বনি ভাষার ও অনুপ্রাদে প্রকাশ করিতেছে।

₹

ধেয়ে চ'লে আদে বাদলের ধারা—তুলনীয়—উৎসা—অব্ধগরা উত।—
অথর্ববেদ, ৪।১৪। ব্রলধারা না অব্ধগর সর্প।

দাছরি—উপ প্রবদ মণ্ডু কি বর্ষম্ আবদ তাছরি। অথববেদ, ৪।১৫। হে ভেক, বর্ষাকে তোমরা আবাহন করো। ঋগ্বেদ, ৭।১০। বিভাপতির কাব্যেও বর্ষাকালে ভেকের রবের বর্ণনা আছে।

9

কবি নিজের মনের আনন্দ বাছিরে প্রক্ষেপ করিয়া সমস্ত কিছু স্থানর দেখিতেছেন। ওয়ার্ড সওয়ার্থ যেমন প্রিমরোক্ত ফুলকে কেবল ফুলকণে দেখেন নাই, তাছাতে আরও অতিরিক্ত কিছু দেখিয়াছিলেন, রবীক্তনাখণ্ড তেমনি বাহা সৌন্দর্যকে নিজের মনের আনন্দে অতিধিক্ত দেখিতেছেন। প্রকৃতির মধ্যে যে আনন্দের নিতালীলা চলিতেছে, তাছার সঙ্গে মানব-মনের আনন্দের যোগের কথাই এখানে বলা হইয়ছে। নুবতুপদল স্থামলতার সরস্তায় চারিদিক আচ্ছর করিয়াছে, তাছা থেন ক্রিরই ফ্লয়ের হর্ষবিস্তার; কদমক্ল ফুটিয়া পুলকিত হইয়া উঠিয়াছে, তাছা ক্রিরই আনন্দ-জাগ্রত প্রাণের বিকাশ।

8

উধ্ব আকাশে বর্ষার নব মেঘভাব দেখিয়া কবির মনে হইতেছে যেন কোনো নীলবসনা রূপসী তাহার দীর্ঘ কেশকলাপ আলুলারিত করিয়া দিয়া উচ্চ প্রাসাদচ্ডায় দাঁড়াইয়া আছে। তড়িৎশিধার চকিত আলোক যেন সেই রূপসীর রূপপ্রভা, সেই রূপসীর নীলাম্বরীর রূপালী জরির কুটিল কুঞ্চিত পাড়। এখানেও শদে ও অফুপ্রাসে তড়িংক্ষুবল চমৎকারভাবে চিত্রিত হইরাছে।

¢

বর্ষার সমস্ত বিষপ্রাকৃতি ধৌত হইরা নিম'ল হইরাছে, দেই জ্বন্ত কবি তাহার বসন অমল বলিয়াছেন; আবার বর্ষার আগমনে সমস্ত উদ্ভিদ স্থানল হইয়া উঠিয়াছে, দেই জন্ম তাহার আমল বদন প্রামণ বলিয়াছেন।
স্থাদরী বর্বা যেন সজোধোত প্রামণ বদন পরিধান করিয়া সজ্জিতা হইয়াছে।

সে উন্মনা বিরহ-বিধুরা বধুর ভাষ যেন কাহার প্রতীক্ষা করিতেছে ।

ঘট-ক্লপ পানা তৃণ প্রভৃতি ঘাট ছাড়াইরা ভাসিয়া যাইতেছে বলিরা কবি জলস্রোতের গতির ইঙ্গিত করিয়াছেন। কবি এই কবিতাতেই লেম কলিতে বলিয়াছেন—

তীর ছাপি' নদী কলকল্লোলে এলো পল্লীর কাছে রে।

নবমাণতী কুল বর্ষার আগমনে ফুটতেছে, ও ঝরিতেছে, যেন কোনো স্থান্দরী তক্ণী আন্মনে ফুলগুলি তুলিয়া তুলিয়া দাঁতে কাটিয়া কেলিয়া দিতেছে।

'n

বর্ধাকালে বকুলফুল ফোটে। তাই কবি বলিতেছেন, সেই বকুলগাছে বর্ধাস্থলরী যেন দোলা বাঁধিয়া দোল খাইতেছে—বাদল-বায়ে বকুলশাখা ছলিতেছে ও বকুলফুল ঝরিয়া ঝরিয়া পভিতেছে। এথানেও শব্দ ও অনুপ্রাস শাখার ঘন আন্দোলন ও বকুলফুলেব ঝবিয়া-পভা চমংকারভাবে প্রকাশ করিয়াছে। বর্ধামঙ্গল কবিতায় কবি বলিয়াছেন—

নীপশাথে সথি ফুলডোরে বাঁধে ঝুলনা।

9

বর্ধা যেন সৌন্দর্যের ভরা লইরা তরণী সাঞ্জাইরা আসিরা কেতকীবনে তাহার তরুণ তরণী ভিডাইরাছে। কেয়ার ঝাড় ফুটিরা উঠিয়াছে, এবং কেয়া- ফুলের পাপ্ডিগুলি নৌকার ডোঙার মতন খুলিরা খুলিয়া পড়িতেছে। চারিদিকে শৈবানদল পুঞ্জিত হইরাছে, যেন বর্ধাস্থলারী অঞ্চলে ভরিয়া সঞ্জ করিতেছে।

আবির্ভাব

এই ক্লবিতাটির তাৎপর্য সম্বন্ধে শ্বরং কবি যে পত্র লিখিয়াছিলেন ভাষা এই—

"কাব্যের একটা বিভাগ আছে যা গানের মংকাতীয়। সেধানে কাষা কোনো নির্দিষ্ট আর্থ জ্ঞাপন করে না, একটা মায়া রচনা করে, যে-মায়া কান্তুম মানের স্থিত হাওছার, যে-মায়া সামুং- ৰভুতে সুধান্তকালের মেবপুল্লে। মনকৈ রাছিরে ডোলে; এমন কোনো কথা বলে না ছাকে বিরেশে করা সম্ভব।

"ক্ষণিকার 'আবির্জন' কবিতার একটা কোনো অন্তর্গূচ্যানে থাকৃতে পারে; কিন্ত সেটা গৌণ; সমগ্র জাবে কবিতাটার একটা স্বরূপ আছে; সেটা যদি মনোহর হ'লে থাকে তা হ'লে আর কিছু বন্বার নেই।

'তবু 'আবির্ভাব' কবিতার কেবল হার নয়, একটা কোনো কথা বলা হরেছে; সেটা হছেছ এই বে—এক সময়ে মনপ্রাণ ছিল কান্তন মাসের স্বপতে, তথন জীবনের কেন্দ্রন্থলে একটি ক্লপ দেশা দিয়েছে আপন বর্ণগন্ধান নিয়ে, সে বসন্তের ক্লপ, যৌবনের আবির্ভাব—ভার আশা-আকাজ্যায় একটি বিশেষ বাণী ছিল। তার পরে জীবনের অভিজ্ঞতা প্রশন্ততর হ'য়ে এল; তথন সেই প্রথম-যৌবনের বাসপ্তী রভের আকাশে ঘনিরে এল বর্বার সজল স্থাম সমারোহ—জীবনে বাণীর বন্ধল হলো, বাণায় আর-এক হার বাঁধ্তে হবে; সেদিন ঘাকে দেখেছিল্ম এক বেলে এক ভাবে, আজ তাকে দেবছি আর-এক মৃতিতে, খুঁজে বেডাচ্ছি তারি অভার্থনার নৃতন আরোজন। জীবনের গড়তে গতুতে বার নৃতন প্রকাশ সে এক হ'লেও তার জল্ঞে একই আসন মানায় না।"—৪ঠা তারীবর, ১৯৩৩।

"সাহিত্যের উদ্দেশ্য 'কি" (ভারতী, ১১৯৪ বৈশাথ, ২২-২৩ পৃষ্ঠা) নামক এক প্রবন্ধে ববীস্ত্রনাথ বহুকাল পূর্বে লিখিয়াছিলেন---

"লিখতে জ্বলৈ যে বিষয় চাইই এমন কোনো কথা নাই। বিষয় বিশ্বদ্ধ সাহিত্যের প্রাণ নহে। বিশ্বদ্ধ সাহিত্যের মধ্যে উদ্দেশ্য বলিবা যাহা হাতে ঠেকে ভাহা আমুবঙ্গিক এবং ভাহা অপশ্বদ্ধি

বাওবিক এই কবিভাটিতে বিষয়বস্ত হইয়াছে গৌণ; উহার ভাষা ছল স্থুর লালিত্য অফুপ্রাস মিলিয়া কবির মনের একটি বিশেষ মুহুর্তের যে উল্লাস ও অফুভাব প্রকাশ করিয়াছে, ভাহাতেই ইহা একটি উৎকৃষ্ট লিরিক কবিভা হইয়া উঠিয়াছে। ইহা শব্দের ইন্দ্রজাল ব্নিয়া পাঠকেব বা শ্রোভার মনে যে মান্না রচনা করে, সেইটিভেই এই কবিভার বাহাছরি এবং ইহার মহামূল্যভা।

এই কবিতার সপ্তম কলিতে আছে—বনবেতসের বাঁলিতে পছুক তব নরনের পরসাদ!" বেতস মানে বেত, তাহা নিরেট, তাহাতে বাঁলি হটতে পারে না। 'বনের বেণুর বাঁলিতে পছুক তব নরনের পরসাদ' বলিলে অমুপ্রাস ও অর্থ চুইই রক্ষিত হটতে পারিত। এই কথা কবির গোচর করিলে তিনি আমাকে এক পত্রে লিথিরাছিলেন—

"কোৰো ভালো অভিধান দেখো ভো, বেচন বল্তে বাশও হয় এমন সাক্ষ্য পেক্লেই। কবিভা ধৰন লিখেছিলেম তথন থাগুড়ায় কথা ভেবেছি—শংক্তুত বে ডক্লেয়কম বাঁশি হয় তা सह, কিন্ত ওর বর্ষাদের কাঁকটুকুতে নিংখান সঞ্চার ক'রে হর বের করা বার ব'লে বিধাস করি। কিন্তু বংল থেখা গেল বেতস বল্তে শর বোঝার না এবং অর্থনালার সর্বপ্রান্তে বেণু কথাটা পাওরা গেল তথন বাগর্থের বন্দ বিট্ল রেখে নিশ্চিত্ত হরেছি। তুমি কোন্ কুপণ অভিধানের বোচাই বিত্তে আবার বগড়া তুলতে চাও।"

ইহার উত্তরে আমি তাঁহাকে নিখিরাছিলাম যে—অভিধানে বেতস মানে বেণু বা বাঁল নাই। না থাকুক। ইহার পরে যত অভিধান রচিত হইবে ভাহাতে বেতস মানে বেণু বা বাঁল নিখিতে হইবে। দাও রার কোদও শব্দ কোদাল অর্থে ব্যবহার করিয়াছিলেন, তাহাতে নবঘীপের পণ্ডিতেরা বলিয়াছিলেন যে আত্ত হইতে কোদও মানে কোদালও হইবে। সেক্সপীয়ার প্রভৃতি কবিরা কত কত শব্দ নিজেদের মনগড়া অর্থে ব্যবহার করিয়া গিয়াছেন। অভিধানকারগণ তাহা পরে অভিধানে সরিবেশিত করিয়াছেন। এমনি করিয়াই তো এক শব্দের বিভিন্ন নানা অর্থ হইরা থাকে।

কল্যাণী

কবির বীণার কত স্থর কত রাগিণী সৌন্দর্যকে ঘিরিয়া কালে । বাহাকিছু স্থানর তাহাকে স্থরের জালে বন্দী করিয়া কবি আনন্দ লাভ করেন।
কবি সৌন্দর্যের ও উদার্যের, ত্রীর ও কল্যাণের উপাসক।

নারীর রূপ কাব্যজ্ঞগতে বড় আদরের সামগ্রী। সহস্র কবির বীণার সহস্র রূপে রমণীর রূপের ও সৌন্দর্ধের গুতি বাজিয়াছে। রবীজ্রনাথ কেবলমাত্র রমণীর রূপের পূজারী নহেন; তাঁহার ঋষিম্বলভ অন্তর্গৃষ্টি তাঁহাকে ডোগ হইতে ত্যাগের পথে, বিলাস হইতে সংযমের পথে আকর্ষণ করিয়াছে। তরুণ কবি প্রথমে 'বিষের কামনা-রাজ্যে রাণী' যে রমণী, যাহার অঞ্চলচ্যুত বসন্তরাগ্রক্ত কিংকুক গোলাপ পৃথিবীকে পাগল করিয়া দের, সেই দীপ্রন্থিভা-ছর্মাপার রমণীমৃতিকে নানা তাবে নানা রূপে বন্দনা কবিয়াছিলেন। কিন্তু তাঁহার কাব্যস্থানা যত অগ্রসর হইতে লাগিল, তত্তই তাঁহার কামনা সংঘমের কাছে পরাভূত হইল, এবা তাঁহার দিবাল্ট খুলিয়া গেল। অবশেষে তিনি দেখিলেন এ বিশের সমস্ত মন্তর্গ, সমস্ত কল্যাণ যিনি আপনার পদতলে সঞ্চিত করিয়া রাখিয়া এ-জগংকে প্রতি পদে নিয়ন্ত্রিত করিভান্তমে, তিনি সিন্ধ-শাত্ত-মৃতি শেষী সমস্থাকে প্রতি পদে নিয়ন্ত্রিত করিভান্তম, তিনি সিন্ধ-শাত্ত-মৃতি শেষী সমস্থাকি।

ত্যাগের প্রতিষ্টি, তাঁহার মধ্যে ভোগের চিক্ন মাত্র নাই। অন্নপূর্ণার পূর্ণতা প্রকাশ করিবার জন্মই শিব নিজেকে ভিথারী বলিয়া স্বীকার করেন, একং ইহাতে তাঁহার একট্ও লজ্জা নাই।

কবি দেখিতেছেন রমণী সংসারের সমস্ত ভোগস্পৃহা বর্জন করিয়া শুটিস্থান্দর স্থিত মৃতিতে গৃহকার্যে রত আছেন, চাবিদিকের ঝড়-ঝঞা ব্দ্রাবাতের
মধ্যেও তিনি তাঁহার কল্যাণমন্তিত গৃহথানি অটুট বাখেন। সেই নিবিড
শান্তির অন্তরে বিরাজমান তাঁহার গৃহথানি যৌবন চাঞ্চল্যহীন। গৃহথানির
চারিদিকে পুল্পিতা লতা বেষ্টন করিয়া উহাকে সৌন্দর্যের মন্দিরে পরিণত
করিয়াছে, তাহাকে বিরিয়া শিশুদেব আনন্দধ্যনি উথিত হইতেছে। তপোবনস্থান্ত পবিত্রতার মধ্যে কল্যাণী রমণীর এই তবনথানি কবি কীট্দের বণিত
সাইকীর Bower এর কথা মনে করাইয়া দের। কিন্তু কল্যাণী রমণীর মন্দিরে
যে মাদকতাশৃত্য শুল্লী প্রতিষ্ঠিত তাহাব সন্ধান কীট্দ্ পান নাই। এই অচঞ্চল
শান্তি ও ভোগবিরতির মধ্যে কল্যাণী আপনার কল্যাণব্রতে নিবতা। উরা
ও সন্ধ্যা তাঁহার কাছে আদিয়া পূজাবিণীরূপে তাঁহাকে পূজা করে। কর্মনান্ত
ক্ষতবিক্ষত-হদম হতভাগ্য মনুয়ের জন্ত তিনি নির্জনে অপরূপ শান্তিমন্তিত
মন্দিরে হদয়ের স্থাপাত্র উজাড কবিয়া ঢালিয়া দিবার জন্ত পরিপূর্ণ করিয়া
রাথেন। তাঁহাব মিগ্র স্পর্শে আশাহীন উত্তমহীন জীবন হেমন্তের হেমকান্তি
সফল শান্তির পূর্ণতার' ভরিয়া উতে।

অপ্ব-মিশ্বজ্ঞা তিঃশালিনী এই মহীয়সী নারীম্তি দেখিয়া কবি উচ্ছুসিতক্ষম হইয়া গাহিয়াছেন—ওগো লক্ষী, ওগো কল্যানী, তোমার এই মাত্ম্তিই .
নারীছের চবম পবিণতি। তুমি স্থগের অপ্সরী নও, তুমি স্থর্গের ঈশ্বরী।
তুমি কেবল ভোগবাসনা-পবিচপ্তির উপকরণ মাত্র নও, তুমি অনস্তেব প্রারুষ মিলিরে সদম্বকে লইয়া গিয়া একটি অনাবিল শান্তির মানুষে তাহাকে পূর্ণ করিয়া দাও। তোমাব কলানী-মৃতির নিকটে রমনীর রূপ, বমনীর জ্ঞান,
সকলই তুছে। অক্র শান্তির মধ্যে তুমি যথন আপন গৃহকর্মে ব্যাপ্তা থাকো,
তথন সমস্ত আকাশ জুড়িয়া শবহীন মাঙ্গল্য-শত্র বাজিয়া বাজিয়া তোমার
কার্যকে অভিনন্দিত করে ও ওত-জ্রীতে মন্তিত করিয়া তুলে। পৃথিবীতে
সকল কিছুই পরিবর্তনশীল কালের অধীন, কিন্ত তোমার স্থামিয় হলয়থানি
চিরকাল একই প্রকার থাকিয়া যায়। শীত যায়, বসস্ত আসে, আবার বসস্তেজ
বিদায় শয়, কিন্ত তুমি যে কল্যানী সেই কল্যানীই থাকো। জয়া-যৌবরের

পরিবর্তন সেই কল্যাণীমৃতির কোনো পরিবর্তন ঘটাইতে পারে না। তরুণী ও বুদার হার্বরে তুমি হে কল্যাণী একই ভাবে জ্বাগন্ধক হইরা থাকো। নদীর মতো তুমি তোমার পার্যন্থিত সকল-কিছুকে কল্যাণ বিতরণ করিয়া জীবনের শেষ পরিপূর্ণতার দিকে অগ্রদর হইরা চলিরাছ। তুমি আছ বলিরা সংসার আছে, নহিলে সংসার কবে ছিন্ন-ভিন্ন হইরা ঘাইত। আমি কবি, আমি সহস্রুক্তর বন্দনা গাহিরা ফিরি। কিন্তু সকল-কিছুর বন্দনাগান শেষ করিয়া আমার কবিছের চরম পরিণতির যে গান, আমার প্রতিভার যাহা শ্রেষ্ঠ অর্থা, জামার প্রদার শ্রেষ্ঠ অঞ্চলি আমি তোমারই জ্ব্যু রাধিরাছি।

এই কবিডাটি সৌল্দর্যের কল্যাণীমৃতির বন্দনা, ভোগবিরতির শাস্তিব আরতি।

ভুননীয়—'রাত্রে ও প্রভাতে' এবং 'গুই নাবী' প্রভৃতি কবিতা।

নৈবেত্য

(আষাত, ১৩০৮)

কবীক্স রবীক্সনাথের কাব্যরচনার বিভিন্ন পর্যায়ের মধ্যে নৈবেন্ত একটি অপরূপ অনবত্য অভিনব সৃষ্টি। এতদিন কবি বিশ্বপ্রকৃতি ও মানবপ্রকৃতি অবলয়ন করিয়া কবিতা লিখিতেছিলেন। তাহাব পরে মধ্যে 'ব্রহ্মসনীত' রচনা কবিয়া সার্বজ্ঞনীন উপাসনার পথনির্দেশ করিতেছিলেন। মহবি দেবেক্সনাথ ঠাকুর তাঁহার পরিবাবেব মধ্যে ও দেশের সম্থুথে যে ধর্মপ্রাণতা আধ্যাত্মিকতা ও সত্য-তপস্থার দৃষ্টান্ত স্থাপন কবিয়াছিলেন, তাহারই প্রভাষ ববীক্রনাথের মনের উপবে বাল্যাবিধি পড়িতেছিল। সেই সর্বসংস্কারম্ক সত্যধর্মের উপলব্ধির প্রকাশ এই নৈবেন্ত পৃস্তকেব কবিতাগুলি। কিন্তু এই উপলব্ধি তাঁহার বৃদ্ধির উপলব্ধি, জ্ঞানেব উপলব্ধি। ভগবানেব সরিধি লাভ কবিবাব বাসনা ও সত্যপথে চলিবাব প্রার্থনা এই কবিতাগুলির মধ্যে প্রকাশ পাইয়াছে। কিন্তু এই বাসনা ও প্রার্থনাৰ মধ্যে এমন একটি বলিষ্ঠ তেজবিতা ও কঠোর সংখ্য আছে, যাহা মহর্ষির পুত্রকে ঋষিত্বেব উত্তরাধিকারী করিয়ছে। স্বদেশের ধর্মসাধনাব মধ্যে যাহা ভ্রেষ্ঠ তাহার সহিত সর্বদেশের সর্বকালের যে সত্যধর্ম তাহাবই বোধ এই কবিতাগুলির মধ্যে আত্মপ্রকাশ করিয়াছে।

সাধক রবীশ্রনাথ ভগবানের নিকটে প্রার্থনা ও আবাধনাব নৈবেত সাজাইরা বব চাহিতেছেন পূর্ণ মনুষ্য — নিজের জন্ম ও সংদেশবাসীর জন্ম। সত্যের পথে, ধর্মের পথে চলা কঠিন হংগজনক বলিয়া কবি জানেন, অথচ তাহাবই প্রতি তাঁহার লোভ। তিনি হংগ বরণ করিবাব জন্ম ব্যাকুল হংগা হংগ বহন করিবার শক্তি প্রার্থনা কবিতেছেন। কবি এথানে যোগী—পরম মঙ্গলমন্বের প্রতি তাঁহার চিত্ত সভত উন্মৃক্ত, সত্যম্বরূপের সন্মুখীন এবং ব্রুক্তে যোগাযুক্ত। এই পরমসমাহিত অবস্থার এমন অনেক কথা তাঁহার কঠে উচ্চারিত হইরাছে যাহা ঋষিদৃষ্ট সক্তেরই মতন পূর্ণ ও অগ্নিগর্ভ। ভারত-সহন্ধে যে-সমন্ত কবিতা নৈবেতে আছে, সে সমন্তও পূর্ণ, আর বীর্ষবান্ মৃক্ত দর্শনের আলোকে ভারব। কাব্যের উৎকর্ষ স্মৃষ্টিতে, দকবির বীর্ষবান্ আত্মা সেই স্কৃষ্টিমহিমা লাভ করিয়াছে এই কাব্যে। এই কাব্যে কবি প্রকৃতিক প্রান্থনা করিয়া প্রকৃতির ও মানবের অধীশ্বরের সন্মুখে উপনীত ইয়াছেন।—(কাজী আবহল ওহল বিরচিত রবীক্ত-কাব্যপাঠ ক্রইব্য।)

রবীজ্ঞনাথ প্রাচীন ভারতের সত্য ও শ্রেষ্ঠ আদর্শের প্রতিষ্ঠাভূমিতে চিত্তকে ছাপিত করিরা সমগ্র পৃথিবী ও সম্বস্ত মানবকে তালবাসিরা ব্রহ্মসাক্ষাৎকার ও ব্রন্ধবিহার লাভ করিতে চাহিতেছেন। ববীজ্ঞনাথের পরিবারে ও তাহার জীবনে উপনিষদের শিক্ষার যে প্রভাব ছিল, তাহাই প্রকাশ পাইরাছে নৈবেন্তে'র কবিতার। কবির আধ্যাত্মিক জীবন উন্মেষ লাভ করিবার আকৃতি প্রকাশ করিয়া ব্রন্ধের সম্মুধে নৈবেন্ত নিবেদন করিয়াছে। সঙ্গে সঙ্গে অদেশের জন্তও কবি সত্যবোধ সত্যধর্ম সত্যনিষ্ঠা বল ও বীর্য প্রার্থনা করিতেছেন। কবি ব্যদেশকে তাহার প্রাচীন আদর্শের উপরই পুনঃপ্রতিষ্ঠিত দেখিতে চাহিতেছেন।

মুক্তি

(>009)

সকল দেশের মধাব্গের কবি দার্শনিক ও ধর্মপ্রবর্তকদের এই ধারণা ছিল বে, এই মর্ড্যে কেবল হংখ, এবং বৈবাগ্যের দ্বাবা সংসারে অনাসক্ত হইতে পারিলেই আডান্তিকী হংখনিবৃত্তি হইয়া যাইবে, এবং সেই হংখনিবৃত্তির নামই মৃক্তি। বৈক্ষব দার্শনিকেরা আমাদের দেশে প্রথমে মৃক্তির বিক্লম্বে প্রতিবাদ-ঘোষণা করেন। চৈতক্সচরিতামৃতে দেখিতে পাই—

অজ্ঞান তাৰেব নাম কহিবে কে এব।
ধর্ম অর্থ কাম বাঞ্ছা আদি এই সব।
তার মধে নোক বাঞ্ছা কে এব প্রধান।
বাহা কেতে কুঞ্চুন্তি হয় অপ্রধান।

বাস্থদেব সার্বভৌম চৈতন্তদেবকে বলিয়াছিলেন-

मुक्तिनम करिएड मान शत श्रा वान । कक्तिनम कशिएड मान श्राड केनान ।

রবীজনাথ আধুনিক ধারণার অগ্রন্ত হইবা সংসারকেই ধর্মসাধনার পরস তীর্থ বলিয়া এছণ করিয়ছেন। মাছ্য স্থ্য-ছংগ ও পাপ-পুল্যের ভিতর দিয়া জনশঃ পবিত্র ও উন্নত হইবা উঠে। কবির লৃষ্টিতে এই জগৎ নারা মাত্র নহে, ইয়া ক্রজেরই প্রকাশক্ষেত্র ও নীলা ক্ষেত্র—

সীনার মাঝে অসীর স্কুমি বাজাও আপন হয়। আমার মধ্যে ভোমার প্রকাশ তাই এত মবুর ॥

যে বিশ্ব আমাদের চেতনার ভিতরে, বাসনার ভিতরে, বেদনার ভিতরে, কর্মের ভিতরে, সর্ব অক্মভবের ভিতরে স্পন্দিত হয়, তাহা তো মান্নামন্ব মোহমন্ন মিখ্যা অথবা ক্ষতিকারক হইতে পারে না।

এইজ্ঞ কবি বলিয়াছেন—

"হলদের বৃত্তি, ইংরাজিতে যাহাকে emotion বলে, তাহা আমাদের হলদের আ-বেগ, অর্থাৎ গতি , তাহার সহিত বিশ্ব কম্পনের একটা মহা ঐক্য আছে। আলোকের সহিত, বর্দের ব্যানির সহিত, তাপের সহিত তাহার একটা ম্পাননের যোগ, একটা স্বরের মিল আছে। বিশ্বপ্রকৃতির সৌন্দর্য মাত্রই—একটা অনির্দেশ্য আবেগে আমাদের প্রাণকে পূর্ব করিয়া দেয়। মন উদাস হইযা গায়। অনেক কবি এই অপরূপ তাবকে অনস্তের ক্ষন্ত আকারকা বিলিয়া নাম দিয়। থাকেন। সঙ্গীত ও সন্ধ্যাকাশের স্থান্তচ্চটা কতবার আমার অন্তরের মধ্যে অনস্ত বিশ্বস্কাতের সদম্পন্দন সঞ্চারিত করিয়া দিঘাছে , যে একটি অনির্বচনীয় বৃহৎ সঙ্গীত ধ্বনিত করিয়াছে তার্বার সহিত আমার প্রতিদিনের হথ ত্বথের কোনো যোগ নাই, তাহা বিশেষরের মন্দির প্রকৃত্বিক করিয়াছে করিছে কবিতে কবিতে নিথিল চরাচরের সামগান। কেবন সঙ্গীত ও স্বান্ত কেন, যথন কোনো প্রেম আমাদের সমস্য অন্তিন্থকে বিচলিত কবিল। ভোলে তথন তাহাও আমাদিরকে সংসারের ক্ষ্মে বন্ধন হউতে বিচ্ছিয় করিয়া অনত্বের মহিত যুক্ত করিয়া দেয়। তাহা একটা বৃহৎ উপাসনার আকার ধাবণ করে, দেশ কালেন শিলামুখ বিদার্থ কির্বা উৎসের মতো অনস্তের দিকে উৎসারিত হউতে থাকে।

এইরূপে প্রবল পাদ্দনে আমাদিগকে বিশ্ব পাদ্দনের সহিত যুক্ত করির। দের। বৃহৎ সৈপ্ত বেমন পরপারের নিকট হটতে ভাবের উন্মন্ততা আক্ষণ করিয়। লইয়। একপ্রান ভইয়া উঠে তেমনি বিশের কম্পন সোন্দায যোগে যথন আমাদের হৃদয়ের মধ্যে সঞ্চারিত হয় তথম আমর। সমস্ত জগতেব সহিত একতালে পা ফেলিতে থাকি, নিধিলের প্রত্যেক কম্পানন পরমাণুর সহিত একদশে মানিধা অনিবার্থ আবেশে অনত্তেব দিকে ধাবিত হই।"
—পঞ্চভূত, স্বাভ ও পাভ ।

কবি 'প্রকৃতির প্রতিশোধ' নাটকেও এই কথাই বলিয়াছেন—রবিরশ্মি, পুর্বভাগ দ্রষ্টবা।

মালিনী নাটকের মধ্যেও কবি বলিয়াছেন যে—দূর হইতে নিকটের মধ্যে, জনিদিট হইতে নিদিষ্টের মধ্যে, করনা হইতে প্রত্যক্ষ্যের মধ্যেই ধর্মকে ভালোকরিয়া উপলব্ধি করা যায়।

কবি অন্তত্ত লিখিয়াছেন---

"প্রকৃতি তাহার ক্লপ-রন-বর্ণ-গল লইয়া, মামুষ তাহার বৃদ্ধি-মন, তাহার ক্লেছ-প্রেম শইরা জামাকে মুদ্ধ করিয়াছে—সেই মোহকে জামি অবিখান করি না, সেই মোহকে জামি দিলা করি না। তাহা আমাকে বন্ধ করিতেছে না, তাহা আমাকে মুক্তই করিতেছে, তাহা আমাকে আমার বাহিরেই ব্যাপ্ত করিতেছে। নৌকার গুণ নৌকাকে বাঁধিরা রাখে নাই, নৌকাকে টানিবা টানিরা লইরা চলিরাছে। অগতের সমস্ত আফর্বণ-পাশ আমাদিগকে তেমনি কপ্রসর করিতেছে। প্রেম কেনের বিবরকে অতিক্রম করিরাও বাগও হর , বে জিনিসটাকে সন্ধান করিতেছি, দীপালোক কেবলমাত্র সেই জিনিসটাকে প্রকাশ করে তাহা নহে, সমস্ত প্রকে আলোকিত করে। জগতের সৌন্দর্গের মধ্য দিয়া, প্রিয়জনের মাধুর্যের মধ্য দিয়া ওগবানই আমাদিগকে টানিতেছেন—আর কাহারও টানিবাব ক্ষমতা নাই। পৃথিবীর প্রেমের মধ্য দিয়াই সেই ভূমানন্দের পরিচ্ছ গাঙ্গা, জগতের এই রূপের মধ্যে সেই অপরপকে সাক্ষাৎ প্রত্যক্ষ করা, ইহাকেই তা আমি মুক্তির সাধ্যা বলি। জগতের সধ্যে আমি মুক্ত, সেই মোহেই আমার মুক্তির রেনের আধান্দন।"

---বঙ্গভাষাব লেখক, ৯৮০ ৮২ পৃষ্ঠা।

অতএব দেখা বাইতেছে যে, এই কবিতার ভাবার্থ এই সংসার ও এই মানবন্ধীবন মিথ্যা মরীচিকা মাত্র অথবা ভগবং-প্রাপ্তির অন্তরণর নহে। প্রাক্ত-পক্ষে ভগবান সংসারের এই বিচিত্রতা ও জীবনের এই নানা সম্বন্ধের মধ্য দিয়াই আপনাকে ব্যক্ত করিতেছেন। স্নতরাং মৃক্তি-লাভের জন্ম ইহ-সংসারকে বর্জন করিয়া-পবলোকাপেক্ষী সাধনা করিবার কোনো প্রয়োজন নাই। সংসারে থাকিয়াই, আপনার কর্তব্য করিয়াই ভগবানকে লাভ করা যায়।

আমাদের দেশের বৈরাগ্যবাদী উদাসীনতা ও সাংসারিক বিধরে অলস নিশ্চেষ্টতা এক দিকে, এবং পাশ্চাত্যদেশের বৈষয়িক সম্ভোগ-লোলুপ উদ্দামতা অন্ত দিকে,—এই উভ্রেরই প্রতিবাদ করিয়া কবি বাবংবার বলিয়াছেন— মৃক্তি ও বন্ধনের সমন্ত্র কবিতে হইবে, স্ব-অধীন হইরা স্বাধীনতার সাধনা করিতে হইবে, আত্ম-উপলব্ধি করিয়া বিশ্বের সহিত সংযুক্ত হইতে হইবে। ইন্দ্রিয়ামুভৃতিই উচ্চতর আধ্যাত্মিক উপলব্ধির সোপান।

এইরূপ কথা তিনি নৈবেম্বর নানা কবিতার মধ্যে বলিয়াছেন-

সংসারে বঞ্চিত করি' তব পূজা নতে।

বিশ্ব যদি চ'লে বায় কাদিতে কাদিতে, আমি একা ব'লে বব, মুক্তি আরাধিতে ? লেখাছি বে মর্ডালোকে দুণা করি' তারে দুটিব না বর্ণে আর মুক্তি খুঁজিবারে।

এই কবিভার কবি বলিরাছেন বে আমি জগৎ-ছাড়া নই, আর জগৎ আমি-ছাড়া নর: অভএব আমি ও জগতের মধ্যে কোনো বন্ধনই নাই। যদি বা থাকে, তবে তাছা ছেদন করিবার কোনো উপারও নাই। মাফ্র সমস্তকে লইয়াই সম্পূর্ণ। প্রেমেই মৃ্জি, প্রেমে সকল স্বার্থপরতার গণ্ডী স্ছিয়া যায়, প্রেমে সব আসজির মৃত্যু ঘটে। তিনিই প্রেম যিনি কোনো প্রয়োজন নাই তব্ আমাদের জ্ঞা নিরন্তর সমস্তই ত্যাগ করিতেছেন। যিনি প্রেমম্বরূপ, তিনি তো কাহাকেও পরিত্যাগ করেন না। এইজ্ঞা কবি

> আমি যে সব নিতে চাই, সব নিতে ধাই রে, আপনাকে ভাই মেল্ব যে বাইরে। —শীতবিতান।

যুক্ত করো হে সবার সঙ্গে, মুক্ত করো হে বন্ধ।

বাবে বারে তুমি আপনার হাতে স্বাদে গল্পে ও গানে বাহিব হইতে পরশ কবেছ অস্তর-মাঝগানে।

প্রদীপের মতো ইত্যাদি—জগতের প্রত্যেকটি পদার্থ এক-একটি দীপ-বর্তিকার মতো বিশ্বেখরের মহিমা প্রকাশ করিতেছে।

ইন্দ্রিয়ের দার ইত্যাদি—ইন্দ্রিয়ের দারা বিশ্বসৌন্দর্যেব অমুভ্তিই উচ্চতর আধ্যাত্মিক উন্নতির সোপান।

মোহ—বিশ্বজ্ঞগংকে সত্য বলিয়া অনুমান করিয়া তাহাকে ভালোবাসার নাম মোহ বা মারা।

প্রেম মোর ভক্তিরূপে বহিবে ফলিয়া—তুলনীর—

আমি

যারে বলে ভালোবাদা তারে বলে পূজা। — চৈতালি, পুণ্যের হিদাব। আনন্দই উপাদনা আনন্দমযের। —-চৈতালি, অভব।

কবি বলিতেছেন যে প্রকৃতি বিশ্বরাজের শক্তির ক্ষেত্র, আর জীবাজা তাঁহার প্রেমের ক্ষেত্র। প্রকৃতির আবেশ-বিহ্নগতা, জীবনের মোহ ও বন্ধন, অন্তরের আনন্দ ও মৃ্জির তৃক্ষা—সমন্তই বিশ্ববিমোহনের চরণতলে একজ্ঞ হইনা আছে।

বৈঞ্চবদের যে আশা ও আকাজ্ঞা বৈকুণ্ঠের জন্ত সঞ্চিত থাকে, ছেগেল ভাষা সংসারেই মিটাইন্ডে চাছেন। কবির মত আনেকটা ছেগেলের মডের অনুসামী—ইয়া Ideal Realism of Hegelian Philosophy। তুলনীয়---

He prayeth best who loveth best.

-Coleridge, Ancient Mariner.

For Love is Heaven, and Heaven is Love.

-Scott, Lays of the Last Ministrel.

Leigh Hunt-43 Abu Ben Adhem; Browning-43 Saul, Rabbi Ben Ezra.

ভক্ত করিছে প্রভুর চরণে জীবন সমর্পণ

এই কবিতাটি কবি তাঁহার পিতা মহবি দেবেক্সনাথ ঠাকুর মহাশন্ত্রক উপাসনার ভগবানের প্রেমে তন্মর হইরা যাইতে দেখিরা মৃগ্ধ অন্তরের আনন্দের সহিত লিখিরাছিলেন বলিরা অন্তমান হয়। মহবি বোলপুর শান্তিনিকেতনে ব্রহ্মজ্ঞানে কিরপে নিমগ্র হইরা তপস্থা করিতেন তাহার পরিচর রবীক্সনাথ ইহার পরে দিয়াছেন—

"এই জাকাশে এই আলোকে দেখেছি সকালে বিকালে পিতৃদেবের পূজার নিঃশব্দ নিবেদন, তার গভার গাজায়।" আত্মবিকালযের সূচনা, প্রবাসী ১৩৪০ আছিন, ৭৪২ পৃষ্ঠা।

দীকা

বিরোধ-বিপ্লবের ভিতর দিয়া মাসুব একটি ঐক্যকে থোঁজে—সেটি শিবম্।
মঙ্গণের মধ্যেই ছন্দ্—অঙ্কুর এইখানে হইভাগ হইরা বাড়িতে চলিরাছে;
মঙ্গণের মধ্যেই স্থ-হৃঃথ ভালো-মন্দ। মাটির মধ্যে যে বীজটি ছিল সেটি
এক, সেটি শাস্ত, সেথানে আলো-আধারের লড়াই ছিল না; লড়াই বাধিল
শিবকে জানিতে গিরা—শিবকে জানার বেদনা বড় তীর, এইখানে মহদভয়ঃ
বক্সম্ উন্থতম। কিন্তু এই বড় বেদনার মধ্যেই আমাদের ধর্মবোধের যথার্থ
জন্ম ও পরীকা। বিশ্বপ্রকৃতির বৃহৎ শান্তির মধ্যে তাহার গর্ভবাস। কবি
ভগবানের নির্দ্দেশ অন্থারী সভ্যের, স্থারের, ধর্মের সংগ্রামে প্রবৃত্ত হইতে
চাহিতেছেন। বাঙালীর ভাববিজ্ঞানতা হইতে অব্যাহতি লাভের অন্ধ কবি
কহ কবিতার প্রার্থনা করিয়াছেন।

স্থায়দণ্ড

কবি মঞ্চনমন্ন পরমেশ্বরকে অন্তরে অন্তরে অমূভব করিয়াই ক্ষান্ত হইতেছেন না ; তাঁহাকেই নিজের চিত্ত-মন্দিরে পূর্ণ গৌরবে প্রতিষ্ঠিত করিয়া তাঁহারই সৈনিকরূপে এই সংসার-বক্ষে দৃঢ-পদক্ষেপে বিচরণ করিতে চাহিতেছেন।

শৃণস্ত বিশ্বে

কবি ভারতের অতীত গৌরবের সহিত বর্তমানের অধঃপতন তুলনা করিয়া পুনবার সেই অতীতের মহিমার স্বদেশকে প্রতিষ্ঠিত দেখিতে চাহিতেছেন। শ্বেতাশ্বতর-উপনিষদের ২া৫ ৪ ৩৮ বাণী দুইটিকে কবি এই কবিতার মধ্যে সন্ধিবিষ্ট করিয়া প্রাচীন-ভারতেব আদর্শ আমাদের সন্মুখে উপস্থাপিত করিয়াছেন।

শিকা

কবি প্রাচীন ভারতের যে-সব পরিচয় কাব্যে ও শাস্ত্রে পাইয়াছেন, সেই আদর্শ অন্নধাবন করিয়া এই সনেটটি লিখিয়াছেন।

নৃপতিরে শিথায়েছ তুমি তাজিতে মৃক্ট দণ্ড সিংহাসন ভূমি ইত্যাদি—
ইহাব পবিচয় আমরা পাই কালিদাসেব রঘ্বংশ কাবো—বার্ধ কো মৃনিবৃত্তীনাম্।—রঘুবংশ, ১ম সর্গ।

ক্ষমিতে অরিরে—প্রাচীন ভারতের যুদ্ধও ধর্মবৃদ্ধ ছিল, যুদ্ধের সময়েও ন্যায়-পথ হইতে ভ্রষ্ট হওয়া বীবেব পক্ষে মানি ও লক্ষার কারণ হইত। প্রাচীন ভারতের যুদ্ধের আদর্শ ছিল—

> বিরখং বিগতং বাখং বিবর্ণ বিনুপস্থিতন যু**জোৎ**সাহ সতং স্থা ব্রহার জাবতে নরং ৷

> > --- বহিপ্বাণ। মশুসংহিতা ৭ম অধ্যাব দ্রষ্টবা।

সবফল-স্পৃহা ব্রন্ধে দিতে উপহার---

कर्मरणायाधिकात्रम् (७, म। करलम् कषाठमः — 🕮 मञ्जगतक्तीष्ठः २,४० । मर्वः कर्मकलः जक्तार्भवम् यञ्च । — स्मृष्टि ।

গৃহীরে শিথালে গৃছ করিতে বিভার—প্রভ্যেক গৃহক্তের নিতা পঞ্চর্জ অষ্ঠান করিতে হইত—ভাষার মধ্যে নৃষক্ত এবং ভূত্যক্ত ছুইটি; অর্ধাৎ প্রতাহ ক্ষম্ভত: একটি অতিথির ও কোনো না কোনো প্রাণীর দেবা করিতে হইবে, তাহাাদিগকে অমপানীয় দিয়া পরিভৃপ্ত করিতে হইবে, তাহারাও গৃহত্বের পরিবারের অন্তর্ভুক্ত এই বোধ মনে রাধিতে হইবে।

নির্মল বৈরাগ্যে দৈন্ত করেছ উজ্জ্বল—দৈন্ত মান্থ্যের অক্ষমতার পবিচারক, এ জান্ত দৈন্ত লজ্জাজ্বনক; কিন্তু সক্ষমের স্বেজ্জাক্ত যে দৈন্ত ত্যাগের মহত্যে মণ্ডিত হয়, তাহাতে সেই দৈন্ত মাহাত্ম্যের প্রভায় উজ্জ্ব হইরা উঠে।

সংসার রাখিতে নিত্য ত্রন্ধের সমূখে---

ব্রন্ধনিঠো গৃহস্বঃ স্থাদ ব্রন্ধ জ্ঞান-পরাষণঃ। যদ যৎ কর্ম প্রক্ষীত তদ ব্রন্ধণি সমর্পবেৎ॥

—মহানির্বাণতন্ত্র, ৮ম উলাস।

ক্ষশা বাশুস্ ইদং সর্ব ঘৎ কিঞ্চ জগত্যাং জগৎ। তেন ত্যক্তেল ভূপ্তীখা মা গৃধঃ কন্তবিদ ধনম্॥

—উলোগনিবৎ ২ম ক্লাক।

যুগান্তব ও স্বার্থের সমাপ্তি

এ ছুইটি সনেট বোয়ার-যুদ্ধের সময়ে লেথা। ১৯০০ সাথে বোয়ার-যুদ্ধ হয়। সেই জ্বন্ত শতাজীব পর্যান্তের কথা বলা হইয়াছে। ইংরেজ ও ভারতীয়দের প্রতি ওলন্দাজ উপনিবেশী বোয়ারেরা অন্তায় অন্তাচার কবিতেছে এই অজুহাতে ইংলও যুদ্ধ ঘোষণা করিয়া পরে পররাজ্য কাড়িয়া লইবার চেষ্টা করিয়াছিল। ইহাকে কবি নিন্দা করিতেছেন।

কবিদল চীৎকারিছে—এই সময়ে কিপ্লিং প্রভৃতি কবিবা বোরার-বিধেষ কাগ্রত করিয়া তুলিবার জ্বন্ত কবিতা রচনা করিয়াছিলেন ৷

প্রার্থনা

কৰি মানব-জীবনকে ভাগবাদেন। তাই তিনি তাহার বিকাশের সম্পূর্ণ স্বাধীনতা চাহেন। আচার সংস্কার প্রথা রীতি যেথানে জীবনে শ্বজ্ঞ মহিমাকে ধর্ব করে সেধানে কবি তাহাকে নির্ময় আধাত করেন। এই কবিতার কবি বে প্রার্থনা করিয়াছেন তাহা সর্বসংশ্বারম্ক বলিষ্ঠ আত্মার প্রার্থনা, সম্পূর্ণ মন্ত্রমুক্তে প্রতিষ্ঠিত হইবার জন্ত সত্যসন্ধ বিগতভীঃ সমদ্শী ভারতবর্বের বাণীমৃতির প্রার্থনা।

স্মরণ

১৩০৯ সালের ৭ই অগ্রহারণ কবিবরের পদ্মীবিরোগ হয়। দেই শোকে কবি যে কবিতাগুলি রচনা করিয়াছিলেন, সেগুলি শ্বরণ নামে মোহিতচন্দ্র সেন কর্তৃক সম্পাদিত কাব্যগ্রন্থাবলীর মধ্যে প্রকাশিত হয় ১৩১০ সালে।

এই কবিতাগুলি কবিবর ব্যক্তিগত ক্ষতির ক্ষতমূথ হইতে নির্গলিত হলম-শোণিতে অভিমিক্ত হইলেও ইহাদের মধ্যে একটি সার্বজ্ঞনীন বিরহব্যথা রূপ গ্রহণ করিয়াছে। কবি রবীজ্ঞনাথ কি ব্যক্তিগত জীবনে, কি পারিবারিক জীবনে, কি কবিজ্ঞীবনে, অথবা কি ধর্মজীবনে, কোথাও ভাবাবেগে বিহরল হওয়াকে প্রভ্রম দেন নাই, উদ্বেলিত উচ্ছাসকে তিনি সর্বক্ষেত্রে নিন্দা করিয়াছেন। এই জ্লান্ত এই বিষম ক্ষতির কবিতাগুলির মধ্যেও একটি অসামান্ত সংযম ও আত্মদমন আছে। এথানে কবির শোক হইয়াছে মিতবাক।

মৃত্যুমাধুরী

এই কবিতাটি ১৩০৯ সালের মাঘ মাসে বঙ্গদশনে ৫৬৭ পৃষ্ঠায় "সার্থকতা" নামে প্রথম প্রকাশিত হয়। স্মরণ সম্বন্ধীয় অনেক কবিতা ১৩০৯ সালের অগ্রহায়ণ মাস হইতে আরম্ভ করিয়া প্রতিমাসে নবপর্যায় বঙ্গদর্শনে প্রকাশিত হইয়াছিল।

কবি রবীক্সনাথ মৃত্যুকে কথনও ভয়ঙ্কব বা শোকাবহ মনে করেন নাই।
মৃত্যুসম্বন্ধে তাঁহাব ধারণা কি তাহা তিনি নিজেই লিথিয়াছেন—

"গগৎ রচনাকে যদি কাব্যসিনাবে দেখা বায় তবে মৃত্যুই তাহাব সেই প্রধান রম, মৃত্যুই তাহাবে যথার্থ কবিছ অর্পণ করিয়াছে। যদি মৃত্যু, না থাকিত, জগতের যেথানকার বাহা,—তাহা চিরকাল সেইথানেই অবিকৃতভাবে দাঁড়াইখা থাকিত, তবে জগওটা একটা চিরস্থানী সমাধি-মন্দিরের মতো অত্যন্ত সন্ধীর্ণ, অত্যন্ত কঠিন, অত্যন্ত বন্ধ হইয়া রহিত। এই অনপ্ত নিশ্চলতার চিরস্থানী তাব বহন করা প্রাণীদের পশেষ বড় হুরুহ হইত। মৃত্যু এই অন্তিহের ভীষণ ভারকে সর্বদা লঘু করিয়া রাধিয়াছে, এবং জগণতে বিচরণ করিবার অসীম ক্ষেত্র দিয়াছে। যে দিকে মৃত্যু সেই দিকেই জগতের অসীমতা। সেই অনন্ত রহস্তভ্যির দিকেই মান্দ্রের সমস্ত কবিতা, সমস্ত স্কাত, সমস্ত ভ্রিইন বাসনা সম্ক্রপারগানী পন্ধীর মতো নীড় অধ্যেবন্ধ উড়িয়া চলিয়াছে।—একে যাহা প্রভান্ধ, ঘাহা বর্তমান, তাহা আমাদের পক্ষে অভ্যন্ত শ্রবক,—

জাবার ভাহাই যদি চিরছারী হইত ভবে ত'হার একেম্বর দৌরান্ধ্যের জার শেব থাকিত দা—
তবে তাহার উপরে আর আশীল চলিত কোখায় ? ভবে কে নির্দেশ করিবা দিত ইহার
বাহিরেও জনীমতা আছে ? অনস্তের ভার এ লগং কেমন করিবা বহন করিত মৃত্যু যদি
নেই অনস্তকে আপনার চিরপ্রবাতে নিতাকাল ভাসমান করিবা না রাধিত ?

মরিতে না হইলে বাঁচিরা থাকিবার কোন মর্যাদাই থাকিত না। এখন জগৎগুদ্ধ লোকে যাহাকে অবজ্ঞা করে দেও মৃত্যু আছে বলিয়াই জীবনের গৌরবে গৌরবেছিত।

জগতের মধ্যে মৃত্যুই কেবল চিরস্থাযী—সেই জস্ত আমাদের সমস্ত চিরস্থায়ী আশা ও বাসনাকে সেই মৃত্যুর মধ্যে প্রতিষ্ঠিত করিয়াছি। আমাদের বর্গ, আমাদের পূণা, আমাদের অমরতা সব সেইখানে। বে-সব জিনিস আমাদের এক প্রির বে কর্থনও তাহাদের বিনাশ কল্পনাও করিতে গারি না, সেগুনিকে মৃত্যুর হত্তে সমর্গণ করিয়া দিয়া জীবনাস্তকাল অপেকা করিবা থাকি। পূথিবীতে বিচার নাই, স্বিচার মৃত্যুর পরে; পৃথিবীতে প্রাণপণ বাসনা নিক্ষল হয়, সফলত। মৃত্যুর কল্পকেতালে। জগতের আব সকল দিকেই কঠিন স্থল বস্তুরাশি আমাদের মানস আদশকে প্রতিহত করে, আমাদের অমরতা-অসীমতাকে অপ্রমাণ করে—জগতের বে-সীমার মৃত্যু, বেগানে সমস্ত বস্তুর অবসান, সেইপানেই আমাদের প্রিরতম প্রবল্ভম বাসনাব, আমাদের শতিতম স্কল্পরতম কল্পনার কোন প্রতিবন্ধক নাই। আমাদের শিব খ্যানবাসী—আমাদের সবোচ্চ মন্ত্রের আদর্শ মৃত্যুনিকেতনে।

জগতের নম্বরতাই জগথকে স্থাব করিয়াছে। এই জন্ত মামুবের দেবলোকেও দুর্বে কলনা।" —পঞ্চ, অপূর্ব বামাখা।

কবি এই কবিতার বলিতেছেন যে বিচ্ছেদে মাহুষেব গুণের পরিচয স্থাপ্ত হর। প্রিরা-বিরহে প্রিয়ার মাধুর্য উপলব্ধি করিয়া কবি মনে করিতেছেন—
নৃত্যু তাঁহার নিকটে অমৃতরস বহন করিয়া আনিয়াছে। কবিব গুল্লানী এখন
বিশ্ব-লক্ষ্মীতে পরিণত হইয়াছে।

কবি বলিতেছেন বে তাঁহার প্রিয়া মরণের সিংহনার দিয়া বিজ্ঞারিনী-রূপে তাঁহার জীবনে পুন:প্রবেশ করিয়াছেন। এই মৃত্যু-ঘটনাকে সেই জন্ম কবি ছ:খজনক বোধ করিতেছেন না। কবির প্রেয়সী জন্ম-মরণের মাঝে দাড়াইয়া বহিয়াছেন, যেমন কবি ওরার্ডস্ওয়ার্থ তাঁহার প্রিয়াকে দেখিয়াছিলেন—A traveller between life and death।

কবি শ্বরণের মধ্যে প্রেমকে যেমন জীবনের অতিথি-রূপে দেখিরাছেন, তেমনি মরণকেও অন্ত অতিথি-রূপে দেখিরাছিলেন। কবি তাঁহার প্রিরাকে তাঁহার জীবনের মধ্যে জীবিত হেখিতেছেন। এই ভাবটি বলাকার ছবি' কবিতার স্পষ্ট হইয়াছে। এই কবিভাগুলির সঙ্গে কবি শেলীর Adonais তুলনীয়; এবং কবিরই নিজের লেখা অন্তান্ত মৃত্যু-সম্বন্ধীয় কবিভা তুলনীয়—মন্তব্য উৎসর্গ।

চিঠি

১৩০৯ সালের মাথ মাসের বঙ্গদর্শনে ৫৬৮ পৃষ্ঠার "সঞ্চয়" নামে ইহা প্রথম প্রকাশিত হয়।

কবি বলিতেছেন যে একটি চিঠি দেখিরা অতীত কালের কত কথাই মনে পড়ে; ঐ চিঠিটুকু অতীতকালের স্থৃতির ভাগুার হইয়া দাঁড়ার। ঐ চিঠির নিজম্ব কোনো মূল্য নাই, কেবল উহার মধ্যে আমার অতীত কাল প্রতিষ্ঠিত আছে বলিয়াই উহার এত সমাদর।

কবিবরের পত্নীবিয়োগ হইলে তিনি তাঁহার কনিষ্ঠ পুত্র শমীক্সকে ও পীড়িতা মধ্যমা কলা রাণীকে লইয়া আলমোড়া পাহাড়ে গিয়াছিলেন। সেথানে মাতৃহীন পুত্রকল্যাকে ও নিজেকেও প্রাচুর রাখিবার জ্বন্ত, নিজেকে শৈশবের আলোক আনন্দের মধ্যে লইয়া যাইবার জ্বন্ত, শিশুতোষণ কবিতা লিখিতে আরম্ভ করেন। এই শিশুতোষ কবিতাগুলি কবির নৃতন স্থাষ্ট নয়, তিনি কড়ি ও কোমল এবং সোনার ভরী পুস্তকের মধ্যে যে-সব শিশু সম্বন্ধীয় কবিতা লিখিয়াছিলেন, এগুলি যেন তাহাদেরই অন্তর্মন্তি ও প্রপৃতি। কবি যথনই কোনো তৃঃথ অন্তব করেন, তথনই তিনি সেই তৃঃথ হইতে নিছুতি লাভের জ্বন্ত শৈশবের সর্বভোলা আনন্দের মধ্যে ফিরিয়া যাইতে চাহেন। ইহার অল্পদিন পরে কবির এই কন্তার ও পুত্রের মৃত্যু হয়।

শিশুর ক্বিতাগুলি কবি থেমন থেমন লিখিতেছিলেন অমনি সেগুলিকে মোহিতচক্স সেন মহাশয়ের কাছে পাঠাইয়া দিভেছিলেন, মোহিতবাব তথন কবিবর কাব্যগ্রন্থাবলা সম্পাদনে ব্যাপ্ত ছিলেন। এই কবিতাগুলি সেই গ্রন্থাবলীর মধ্যেই ১৩১০ সালে প্রথম প্রকাশিত হয়।

শিশুর কবিতাগুলির মধ্যে কতকগুলি শিশুর মনের উপভোগ্য, নানা রক্ষভরা কল্পনাপ্রবণ শিশু-জ্বদরের স্থাত্যথের স্মৃতিতে পূর্ণ। এগুলি শিশু-জ্বীবনের আনন্দ-লোককে উদ্বাটিত করিয়াছে। আর কতকগুলি কবির দার্শনিকতায় ভরা; দেগুলি শিশু কেন, শিশুর অনেক ঠাকুরদাদার মনের পক্ষেও গুরুপাক। কিন্তু সব কবিতাই যে স্ক্রাত্ত গ্রুরস তাহাতে আর কোনো সন্দেহ নাই। সেই-সব কবিতার অন্তর্নিহিত ভাব সম্পূর্ণ হৃদক্ষম করিতে না পারিলেও পাঠক ও শ্রোতা কবিতার ভাষা ও ছন্দের ঝলারে মুগ্ধ হইরা বান। যেখানে কবি কথা দিরা ছবির পর ছবি আঁকিয়া বা রক্ষভঙ্গ করিয়া চলিয়াছেন সেখানে শিশুরা অত্যন্ত আনন্দ উপভোগ করে। কিন্তু যেখানে কবি নিগৃত্ব দার্শনিক তন্ত্ব উপন্থিত করিয়াছেন সেখানে শিশুর মন কোনো সাড়া দেব না, শিশুর পিতামাতার মন্ত্র যে সমস্রে সাড়া দিতে পারে ভাষা মনে হয় না। কবি ধেমন এক দিকে শিশুনিকের তন্ত্ব উপন্থিত করিয়াছেন, অপর দিকে ভেমনি শিশুর শিশুনিতার মনকর্পত্ত ধরিয়া কেথাইয়াছেন। এই ক্ষমতার তিনি

বিশ্বসাহিত্যে অপ্রতিষণী। দেশবিদেশের কোনো কবি এমন নিপুণতার সহিত শিশুর মনস্তব চিত্রিত করিতে পারেন নাই। অস্ত কবিরা বয়৳ লোকে শিশুকে কেমন চোথে দেখে তাহাই প্রকাশ করিয়াছেন। আর রবীজ্রনাথ প্রকাশ করিয়াছেন শিশুর চোথে বিশ্ব-সংসার কেমন লাগে। যোগী কবির কাছে শিশু বিরাট্ অনস্ত রহস্তময় বিধাতারই বেন এক একটি রহস্ত-কণা। বৈষ্ণব সাধকদের মতো আমাদের কবিও বাংসল্য রসের ভিতর জাগংশিতার সহিত মানবের সম্বন্ধের মধুরত্বের সন্ধান পাইয়াছেন। এইসব কারণে শিশুকাব্য রবীজ্রনাথের এক অপূর্ব্ধ সৃষ্টি।

জ্ঞষ্টব্য--শিশু সাহিত্য-শান্তা দেবী, উদযন, ভাজ ১৩৪০। শিশু ও রবীক্রনাথ-স্থামরী দেবী, শান্তিনিকেতন-পত্রিকা। আর্নেই বীস্ প্রণাত রবীক্রনাথ।

শিশুলীলা

মোহিতচন্দ্র সেনের সম্পাদিত কাব্যগ্রস্থাবলীতে 'শিশু' বিভাগের প্রবেশক কবিতা।

কবি রবীশ্রনাথ ছেলেভ্লানো ছড়া-সম্বন্ধে যে কথা লিথিয়াছিলেন সে কথার দারাই ভাঁহার নিজের শিশু-সম্পর্কায় কবিতাগুলিকে ব্রিবার স্থাবিধা হুইতে পারে মনে করিয়া এখানে কিছু উদ্ধার করিতেছি।

"বালকের প্রকৃতিতে মনের প্রতাপ অনেকটা কাণ। জগৎ সংসার এবং তারার নিজের কল্পনাগুলি তাহাকে বিচ্ছিন্নভাবে আঘাত করে, একটার পর আর একটা আসিয়া উপস্থিত হয়। মনের বন্ধন তাহার পক্ষে পীড়াজনক। স্থানলের কাম-কারণ-স্ত্র ধরিয়া জিনিসকে প্রথম হইতে কোর পায়ায় অম্পরণ করা তাহাব পক্ষে ছ,লাধা। বহিছগতে সম্প্রতীরে বলিয়া বালক বালির বর রচনা করে, মানস-জগতের সিল্পতীরেও সে আনন্দে বসিয়া বালির বর বাধিতে থাকে। বালিতে বালিতে আড়া লাগে না, তাহা স্থায়ী হয় না—কিন্তু বালুকার মধ্যে এই ঘোজনশীলতার অভাব-বশতংই বাল্য-স্থাপতের পক্ষে তাহা স্থায়ী হয় না—কিন্তু বালুকার মধ্যে এই ঘোজনশীলতার অভাব-বশতংই বাল্য-স্থাপতের পক্ষে তাহা স্থায়ী হয় না—কিন্তু বালুকার মধ্যে এই ঘোজনশীলতার অভাব-বশতংই বাল্য-স্থাপতের পক্ষে তাহা স্থায়ী হয় না—কিন্তু বালুকার মধ্যে এই বাল্য-স্থামানে ভাহাকে সংশোধন করা সহজ এবং আস্থি বোধ হইলেই তৎক্ষণাৎ পরাঘাতে তাহাকে সমভূম করিয়া বিশ্বা লীলাময় স্থলনকর্তা লম্পুলয়ে বাড়ী কিরিতে পারে। কিন্তু বেখালে সাঁখিয়া সাঁখিয়া কাম্ব্রের আরভ্রক সেখানে কর্তাকেও অবিলবে কাজের নিয়ম মানিয়া চলিতে হয়। বালক বিয়ম আনিয়া চলিতে গারে বা—নে সম্প্রতি মায়ে নিয়মহীন ইচ্ছাম্মর বর্গলোক হইতে আনিয়াছে। আয়াকের মতো স্থামীকাল নিয়মের স্থামার সাম্বান্ত হয় লাই, এই ক্ষম্ব সে পুরু বাভি অসুসারে আয়াকের মতো স্থামান নিয়মের সামের স্থামার ব্যাহার হয় লাই, এই ক্ষম্ব সে পুরু বাভি অসুসারে

সমুক্তির বালির খন এবং মনের মধ্যে ছড়ার ছবি ক্রেছামতো রচনা করিরা মর্ডালোকে ক্রেডার ক্রমনীলার অস্থুকরণ করে।

"জালো করিরা দেখিতে গেলে শিশুর মতো প্রাতন আর কিছুই বাই। দেশ কাল শিক্ষা আবা অনুসারে বরক মানবের কড ন্তন পরিবর্তন হইরাছে; কিন্ত শিশু শত সহত্র বংসর পূর্বে ধেনল ছিল আন্তও তেমনি আছে, সেই অপরিবর্তনীর পুরাতন বারকার মানবের বরে শিশুমৃতি ধরিবা অন্তর্গ্রহণ করিতেছে, অথচ সর্বপ্রথম দিন সে বেমন দবীন বেমন স্কুমার বেমন মৃদ্ বেমন মধুর ছিল আন্তও ঠিক তেমনি আছে; এই দবীন চিরত্বের কারণ এই যে, শিশু প্রকৃতির সঞ্জন; কিন্তু বরক মানুব বছল পরিমাণে মানুবের নিজকুত রচনা।"—ছেলেডুলানো ছড়া।

শিশু চিরপুরাতন অথচ চিরন্তন। এই জন্ম সে পবিবর্তনকে অর্থাৎ মৃত্যুকে অগ্রাহ্ম করিয়া চলে।

তুলনীয়-

John Earle তাঁহার Microcosmographie পুস্তকে 'The Eternal Child" সম্বন্ধ লিখিয়াছেন—

"We laugh at his foolish sports, but his game is our earnest; and his drums, rattles, and hobby hoises are but the emblems and mockings of men's business."

"Hence in a season of calm weather,

Though inland far we be,

Our souls have sight of that immortal sea

which brought us hither,

Can in a moment travel thither,

And see the children sport upon the shore,

And hear the mighty waters rolling ever more."

-Wordsworth, Ode on Immortality

ওরার্ড্স্ওরার্থ এই ভাবটি কবি ভখ্যানের (Vaughan) প্রসিদ্ধ কবিভা "The Retreat" হইতে পাইরাছিলেন এমন অন্নমান অনেকে করেম।

মেটারলিকের স্কু বার্ড্ নাটকে কবি দেখাইয়াছেন বে অনজের মধ্যে লিগুরা পৃথিবীতে ক্ষমগ্রহণ করিবার কল্প অপেকা করিবা থাকে।

ক্লান্নিৰ ট্ৰ্যন্ত্ ভাৰাৰ Daisy and Poppy, Hound of Heaven ক্ৰিয়াতে শিল্প নৰে দেবভাৰ বীকাৰ কৰিয়াতেন।

জন্মকথ।

কবি বলিতেছেন যে যে-শিশুটি জান্ম সে আকস্মিক নয়। বিশ্বের সমস্ত বহস্তের মধ্য হইতে শিশুর আবির্ভাব হয়। শিশু যে বংশে জন্মগ্রহণ করে সেই বংশের সকলের আজীবনের তপস্তার ধন সে! ভগবানই প্রত্যেক সন্তানকে ভালার পিতৃপিতামহের ও মাতৃমাতামহের সঙ্গে এক প্রে বাঁধিয়া সংসারে প্রেরণ করেন, তিনিই সন্তানের মধ্যে ভালার পিতৃপুরুষের সমস্ত সাধনাকে মৃক্তি ও সিদ্ধি দানের পথ পরিষ্কার কবিয়া দেন। মানব কেইই বিচ্ছিন্ন নয়, সহন্তে নয়, সকলেই ভালার পূর্বপুরুষ ও উত্তরপুরুষের সহিত্ত সংযুক্ত। মানবের কোনো সম্পর্কই আকস্মিক বিচ্ছিন্ন স্বত্তর নহে, ভালার সহিত সমস্ত বিশ্বের সম্পর্ক আছে। ভালার কোনো সম্পর্কই কেবল মাত্র প্রাক্তনের সম্বন্ধ বা সীমাবদ্ধ সম্বন্ধ নয়, সেই সম্বন্ধ অনাদি কালের ও জন্মজন্মান্তরের। তাই সমস্ত সম্বন্ধই প্রমাদ্বতার বহস্তসমন্ধকেই প্রকাশ করে।

এই কবিতাব মধ্যে কবি তিনটি পত একত বুনিয়াছেন—কবিত্ব, বৈজ্ঞানিক বংশাস্ক্রমবাদ বা হেরেডিটি, এবং আত্মার অমরতা ও জন্মান্তরবাদ। কবি বলিতেছেন যে শিশু অনস্ত অসীম হইতে আবিভূতি হয় এবং দেশ কাল এবং বংশের সমস্ত বাহা ও মান্সিক প্রভাব তাহাব স্বভাবকে গঠন করে।

এই কবিতাটির সহিত কবি টেনিসনের 'ডি প্রোফাণ্ডিস' কবিতাটি বিশেষ ভাবে তুলনীয়।

যাস্ক তাঁহার নিকজের মধ্যে পূত্র-সম্বন্ধে খৃষ্টপূর্ব চতুর্ব শতাব্দীতেই বলিয়া
গিয়াছিলেন---

অকাৎ অকাৎ সম্ভবসি, হৃদয়াদ্ অধিজাষসে। আত্মা ব পুত্ৰ নামাসি, স জীব শবদঃ শত্ৰ ।

ঐ কথাটিকেই কবি রবীশ্রনাথ আধুনিক বৈজ্ঞানিক তবের সঙ্গে অসামান্ত কৰিও মিলাইয়া প্রকাশ করিয়াছেন। এই কবিতাটি রবীশ্রনাথের একটি অত্যুক্তম রচনা।

কেন মধুর

বিখের আনন্দ-উৎস বাংগলা-রসের ভিতর দিয়া মাভার নিকটে আপনাকে প্রকাশ করে। শিশুর হাতে রদীন খেলনা দিলে শিশুর হলরে ও মুখে/কে আনন্দ-হান্ত কৃটিরা উঠে তাহা দেখিরা মনে হয় এই আনন্দের স্থবের সঙ্গে বিশেষ আনন্দধারার অথপ্ত সংযোগ আছে; ছেনের মূখের হাসি তথ্ন মেঘের রং অনের রং, স্নের রং প্রভৃতির সঙ্গে এক পঙ জিতে বসিরা যায়—ছেতের হাসি দেখিরাই ব্রিতে পাবি বিশ্বসৌন্দর্য কোথার কোথার কি কি রূপে আপনাকে প্রকাশ করিতেছে। শিশু-স্বরের আনন্দধারার সহিত বিশ্বপ্রকৃতির মিল আছে বিলিয়াই শিশুর আনন্দের সহিত বিশ্বপ্রকৃতির আনন্দের কর্মকীরার মাতাব নয়নে মৃত্ত হইরা উঠে। শিশুর নৃত্য বিশ্বছন্তের অস ; ভাহার নৃত্যের সঙ্গে বিশ্বসঙ্গীত স্থর দের ও বিশ্বছন্ত্র আনিয়া। বিশ্বসঙ্গীত যেন শিশুর আনন্দের প্রতিহ্বনি, অথবা বিশ্বসঙ্গীতেরই প্রতিহ্বনি শিশুর আনন্দ-কাকরী।

শিশু যে ভোজনানন্দ উপভোগ কবে তাহা দেখিয়াই উপলব্ধি হয় বিশ্বের উপভোগ্য পদার্থ কত মধুর। পুত্র-স্পর্শ-ম্থ বিশ্বের আলোক-বাতাদের স্পর্শের আনন্দ হৃদরে স্কল্পষ্ট করিয়া দের। মাতা সন্তান-বাংসলোর ভিতর দিয়া ব্দগৎ-শোভার অর্থ উপলব্ধি করেন, আপনাব অন্তরের আনন্দ-ভাতিতে ব্দগতের শোভার আনন্দমন্বের ও স্কুলরের সন্তা সুন্দান করেন। মাস্থবেব মনে প্রেম ও আনন্দ উদয় হইলে সে সমস্ত-কিছুকে স্কুলব দেখে।

শিশুই খ্রীলোককে মাতৃত্বে আনন্দ অমূভব করায়। খ্রীলোক মা কুইলেই বিশ্বপ্রকৃতি তাহার কাছে নৃতন রূপে প্রতিভাত হয়। শিশুব আনন্দ মাতৃহদয়ও আনন্দিত হয়। কাহারো অন্তরে আনন্দ না থাকিলে প্রাকৃতিক আনন্দ উপলব্ধি কবিতে পারে না, এবং অন্তরে আনন্দ থাকিলে সেই আনন্দেব হারাই স্করে স্থানরতর রূপে উপলব্ধ হয়।

মাতা অপত্যন্তেহ ছারা আনন্দমন্ত্রী বিশ্বমাতার বেহ উপল্পি করেন। এই জন্ত কবি অন্তত্ত্ব বলিরাছেন—

"বাতাকে আমরা ভালবাসি কেবল তাহারই মথে। আমরা অনপ্রের পরিচর পাই।
একল কি জীবের মথ্যে জনস্তাকে অমুভব করারই অক্স নাম ভালবাসা। · · · বৈকবধর্ম
পৃথিবীর সমস্ত প্রেম-সম্পর্কের মধ্যে ঈর্ণরকে অমুভব করিতে চেপ্তা করিছাছে। ব্ধন
প্রেমিয়ে যা আপনার সন্তাকের মধ্যে জানন্দের আর অবধি পার না, সমস্ত ফ্রান্থানি মুকুতে
মুকুতে ভাঁতে ভাঁতের খ্লুলিয়া এ কুল মানবাস্থ্যটিকে সম্পূর্ণ বেপ্তম করিয়া শেব করিতে পারে
না, তবন আপনার সন্তাকের মধ্যে আসাদার করিয়াকে উপায়না করিয়াছে।" স্প্রক্রুত, মন্ত্রুত

এই কথা পোঁরা উপভাদের। মধ্যে হরিবোটিনীর মুখ দিরা ক্রি মুম্বাইসাছেন--- "ও আমার গোপীবলত, আমার জীবননাথ, আমার গোপাল, আমার নীলমণি। বাবা ভোষার কাছে বন্তে আমার লক্ষা মেই, এ ছটিকে—রাধারাণী আর সভীশকে পাওলার পর থেকে ঠাকুরের পূজো আমি মনের সঙ্গে করতে পেরেছি—এরা যদি যায় তবে আমার ঠাকুর তথনি কটিন পাথর হ'লে যাবে।"

কৰি বলিতেছেন যে ভালবাসাই স্বৰ্গ ভালবাসায় পূৰ্ণ। শুশুদের
মূথে স্বৰ্গের ছবি, তাহাদের স্বৰণ আনন্দে জগবানের আনন্দম্ভি প্রতিক্ষিত
হয়—শিশুর হাসিতে ভগবানের প্রশান্ত সৌন্দর্য বিকশিত হইয়া উঠে।
মাতা সন্তানের স্নেহে তাহার সৌন্দর্য ও সারলতা দেখিতে পান এবং মুগ্র হইয়া
সেই তাবে বিশ্বকেও উপলব্ধি করিতে চেটা করেন। যথন শিশু হাসে তথন
মা মনে করেন প্রকৃতিও হাসিতেছে—এবং শিশুর হাসির ছ্টাতেই স্বর্ধ
কিরণশালী। শিশুর হাতের রত্তীন খেলনাই বিশ্বে বর্ণ-বৈচিত্তোর কারণ
এবং শিশুর ভোজনানন্দই বিশ্বসামগ্রীকে জননীর কাছে স্বাহ্নতা দান করে।
মায়ের ইন্দ্রিয়ক্ষ উপলব্ধি সমন্তই তাঁহার সন্তানের স্বেহ্ন্লক।

যিনি দান করেন তিনি যেমন হব্দ পাইয়া থাকেন, তেমনি হ্রথ পাইয়া থাকেন যিনি দান গ্রহণ করেন। মাতা যথন সন্তানকে রঙীন থেলনা দেন, তথন শিশু আনন্দিত হয়, আবাব মাতা সন্তানেব আনন্দে আনন্দ অহুত্ব করিয়া থাকেন। তথনই মাতা বুঝিতে পারেন যে আমরাও বথন প্রকৃতিন্যাতাব প্রতিপাল্য তথন প্রকৃতিও আমাদের হ্রথের জন্তই এবং নিজেরও হ্রথেব জন্তই এত বর্ণ বৈচিত্যের স্থাষ্ট করিয়া থাকেন। আবার মাতা যথন আপন সন্তানকে মিষ্ট কিছু থাইতে দেন, তথন তিনিও আনন্দিত হন—এথানেও দাতা ও গ্রহীতা উভয়েই হ্রথী। প্রিয়কে কিছু দান করিয়া যেমন হ্রখ, প্রিয়কে স্পর্ণ করিয়াও সেইরূপ হ্রথাযুত্তব করা যায়—এই ব্যাপারেও স্পৃষ্ট ও স্পর্ণক উভয়েই স্থা। স্বতরাং দ্বির বা প্রকৃতি আমাদের ভালবাসেন বিশিষ্ট আমাদের কাছে প্রকৃতি এত হ্রদ্র ও মধ্র রূপে প্রতিভাক্ত করা

"নিজের শিশু কস্তাকে যখন ভাল লাগে তথন সে বিবের মূল বহস্ত মূল সৌক্রাহের অন্তর্বতী হ'বে পড়ে—এবং সেহ উচ্ছাস উপাসকের মতো হ'বে 'আইল। আমার বিবাস আমারের অীতি নাজাই রহস্তমরের পূজা; কেবল সেটা আমারা অচেতর্মভাবে করি। ভালবাসা লাজাই আমানের জিতর গিরে বিবের অন্তর্গতম একটি শ্রেক্তির সজাগ আবির্ভাব,—বে 'নিটা আমান নিধিল ক্রাত্তর মূলৈ সেই আমানের ক্রমিক উপালারি।"

[—] ছিল্পতা, শিলাইলা, ১৩ই আৰক্ষ্ট ১৮৯ছ।

অনন্ত মৃহতে আপনার অপন্ধপ প্রকাশ সমন্ত সৌন্দর্যকে ও মানব-সম্বন্ধকে রন্ধু করিরা মানবের মানস-গোচর করেন। প্রেমের আবেগে মাছ্য বে পরিমাণে নিজেকে ভূলিতে পারে সেই পরিমাণে ভাহার কাছে অনন্ত প্রকাশিত হন। এই প্রেম-সাধনার কথাই বৈক্তব দার্শনিকেরা বলিরাছেন।

বৈক্ষব কবিতার বালক ক্লক্ষের নবনীত ভক্ষণ করা ও রঙীন খেলনা লইয়া খেলা করা দেখিয়া মাতা বশোলার আনন্দ-প্রকাশের কথা আছে—

অঙ্গুণ অধ্য উরে

नवनी लाशिशाष्ट्र द्र

মরি মরি বাছান কানাই।

হেরি ধশোমতি

প্রেমেতে পুরিত আঁথি

आप्र काटन वनिश्ती गरे।---वकाड

রাণী দিল পুরি' কর

বাইতে রক্সিমাধর

অতি স্থৰোভিত ভেল বায়।

খাইতে খাইতে দাচে কটিতে কিন্ধিণী বাঞে

হেরি' হর্ষিত ভেল মার ।--বনরাম দাস।

কুফান্তে কন হাতে

থাইতে খাইতে পথে

আসি' নিজ গুহে উপনীত।

ফল দেখি যশোমতি আনন্দে না জানে কতি

বাওরাইরা প্রেম ফুখে ভাসে ।-- খনরাম দাস।

রাঙা লাঠি দিব হাতে. ধেলাইও শ্রীদামের সাথে

ঘরে গোলে দিব জীর ননী।—নরসিংহ দাস।

এই কবিতাটির মধ্যে চারিটি কলিতে মাতা দর্শনেন্দ্রির প্রবণেন্দ্রির রুসনেন্দ্রির এবং ম্পর্লেন্দ্রির হারা নিজের আনন্দাহ্ভব প্রকাশ করিয়াছেন। তুলনীয়—

Womanliness means only motherhood.

All love begins and ends there, roams through But, having run the circle, rests at home

-Robert Browning, The Inn Album.

He (Rabineleanath) knows that the figurative delight of the child points the mode of representing the wonder of the earth that philosophy finds it so hard to reduce to order ...

Herbert Spencer saw in the appetites of the child only the insatiable hunger of the beast-meate at a lower stage. Rabindranath has learnt to divise in them the first putting forth of the desires, which, being repeated

in the other plane of intelligence, seek out the path to heaven itself. He has, in truth, known how to see the child with the mother's eyes and the mother with the child's;

-Ernest Rhys.

The poet, a grown up man, looks at the child with the same wonder and sense of new discovery as a child experiences in its daily life. The child's ways are so innocent and mysterious, so foolish and wise, so preposterous and lovable. The poet shows in these poems a regard, at once joyous and tender, for the changing mood and wayward desires of a child. Every poem gives us a picture touched in with the fond life-like detail of a sympathetic child-lover.

-Ernest Rhys.

লুকোচুরি ও বিদায়

প্রপঞ্চ রূপী থোকা পঞ্চভূতে বিশয় প্রাপ্ত হইণেও তাহার একেবারে বিনাপ বটে না, সে ভাব-রূপে পরিণত হয়। অতএব পোকার মৃত্যু একেবারে তাহার নির্বাণ নহে, তাহা তাহার রূপান্তব-প্রাপ্তি ও সর্বেত্ত-ব্যাপ্তি। থোকা হওরা অল আলোক ফুল হইয়া মাকে স্পর্ণ করিতে আসিবে, এবং ভাবরূপে স্বপ্ন হইয়া সে মাতার মনের মধ্যেও আসা-যাওয়া করিবে।

তুশনীয়-সাঞ্চাহান কবিতা। এবং---

He is made one with Nature There is heard
His voice in all her music, from the moan
Of thunder to the song of night's sweet bird.
He is a presence to be felt and known
In darkness and in light, from herb and stone;
Spreading itself where'er that Power may move
Which has withdrawn his being to its own
Which wields the world with never-wearied love,
Sustains it from beneath, and kindles it above
He is a portion of the loveliness
Which once he made lovely.

-Shelley, Adonais,

Where art thou, my gentle child?

Let me think thy spirit feeds,

With its life' intense and mild,

The love of living leaves and weeds

Among these tombs and ruins wild,

Let me think that through low seeds

Of the sweet flowers and sunny grass

Into their hues and scents pass

A portion

-Shelley, To William Shelley.

Three years she grew in sun and shower
Then Nature said, "A lovely flower
On Earth was never sown;
This child I to myself will take;
She shall be mine, and I will make
A lady of my own

* * *

She shall be sportive as the fawn,
That wild with glee across the lawn
On up the mountain springs
And hers shall be the breathing balm,
And hers the silence and the calm
Of mute insensate things.

-Wordsworth, A Mimory

You will bury me my mother lust beneath the hiwthorn shade, And you'll come sometimes And see me where I am lowly laid I shall not forget you mother, I shall hear you when you pass, With your feet above my head In the long and pleasant grass. If I can I'll come again, mother From out my resting place. The you'll not see me mother, I shall look upon your face: Tho' I cannot speak a word, I shall harken what you say. And be often, with you. When you think I'm far away,

-Tennyson, New Year's Esc.

উৎসর্গ

মোহিতচক্র সেন মহাশম কবিবরের কবিতাগুলিকে বিষয়-অঞ্সারে বিভাগ করিয়া একটি সংশ্বরণ প্রকাশ করেন ১৩১০ সালে। সেই বিভাগগুলির নাম हिन-गांजा, क्रमतावना, निकासन, विश्व, त्मानात छत्री, त्माकानन, नात्री, कन्नना, দীলা, কৌতুক, যৌবনস্বপ্ন, প্রেম, কবিকখা, প্রক্রতিগাখা, হতভাগ্য, সংক্র चरमन, ज्ञानक, काहिनी, कथा, किनका, मजन, देनदश्च, क्षीवनस्मरका, अन्त्रन, শিশু, গান, নাট্য। এই প্রত্যেক বিভাগের কবিতাগুলির মোট তাৎপর্ব বুঝাইবার জন্ম প্রত্যেক বিভাগের প্রথমে এক-একটি প্রবেশক কবিতা কবি রচনা করিয়া দিরাছিলেন। পরে বর্থন এই কাব্য-সংস্করণের আর পুনমুদ্রন हरेन नां, उथन कवित्र कविछाश्चनि श्रथम य य शृष्टक य ভाবে श्रथम প্রকাশিত হইয়াছিল, সেই প্রকারে ভিন্ন ভিন্ন পুস্তকে সমিবেশিত হইনা প্রকাশিত হইতে লাগিল। তথন এই প্রবেশক কবিতাগুলি নিরাশ্রয় হইয়া পডিল, এবং এইগুলিকে একখানি নৃতন পৃষ্ণকের মধ্যে স্থান দেওয়া আৰম্ভক হইল। যথন এই কবিতাগুলি ছাপার করনা হইতেছিল তথন এক দিন কৰি এই কবিতা-সংগ্রহের কি নাম বাধা যায় তাহার আলোচনা আমার সহিত করিয়াছিলেন। আমি ঐ পুস্তকের নাম রাখিতে বলিলাম—উঞ্জিতা। ঐ নাম কবির মনঃপৃত হইল না, ভিনি বলিলেন—ঐ নামের সঞ্চেও উঞ্চর্ত্তি এবং বাংলা ওঁছা শব্দের গন্ধ অভাইয়া থাকিবে। তিনি বলিলেন-নামটা ঠিক হইত উচ্ছিট, কিন্তু তাহাও বাংলায় কদর্থ ধারণ করিয়াছে। আমি বলিলাযু-তাহা हरेल मिक विष्णा कतियां **छे९ मिडे वाथिल इत्र । कवि अन्नक्ष्म छा**विश विक-লেন--না, নাম থাক উৎসর্গ-- ইহার মধ্যে অবশিষ্টতার ভাবও থাকিল একং নিবেদনের ধ্বনিও বহিল।

উৎসর্ণের কবিভাশুলি কবির বিশেষ বিশেষ ভাবপর্যান্তের কবিভার ম্থবন্ধ বা উপক্রমণিকা, অথবা ব্যাখ্যা-শ্বন্ধপ বলিরা কবিভাগুলি গভীর ভাবে সমৃদ্ধ এবং সরস কবিভা ছিসাবেও অত্যুক্তম। ইহার অনেকগুলির মধ্যে জীবনদেবভার ভাব আছে; এবং কবিভাগুলি কবিব পরিণত প্রতিভার ছাপ ধারণ করিয়া মহামূল্যবান্ হবরা উঠিয়াছে।

व्यहें कारचात्र कविलाश्वनि ५७०५ बहेर्ड ५७५० मालाव मामा विक्रि ।

রবি-রশ্বি

অপরাপ

এই কবিতাটি 'নোনার তরী' বিভাগের প্লবেশক কবিতা। উৎসর্গ পুস্তকের ৬ নম্বর।

ধিনি কবির জীবনদ্বেতা ও অন্তর্যামী, তিনিই আবার বিশ্বপ্রকৃতির সকল সৌলবর্ষে ভিতর দিয়া উহার বৃদ্ধি চিন্তা হ্বর ধর্ম স্পর্ণ করেন। ধিনি ভূতৃ বঃ বঃ প্রসব করেন, তিনিই আবার আমাদের ধীশক্তিকে প্রেরণ ও উদ্রেক করিয়া খাকেন। সেই বিনি অরূপ হইরাও ব্রুরপ, বিনি রূপং রূপং ব্রুরপং বিভাতি, তিনিই অপরূপ। তিনিই অনিব্রুনীয়, অবাঙ্ মনসোগোচর:। তাই উহাকে চিনি বলাও যার না, চিনি না বলাও যার না। এই জন্ত উপনিষ্দ্ ব্রিয়াছেন—

নাহং মত্তে স্থবেদেতি নো ন বেৰেতি বেদে চ। যো নসু তদু বেদ তদ বেদ, নো ন বেদেতি বেদ চ।

আমি মনে করি না যে আমি ব্রশ্ধকে স্থলরক্ষপে জানিরাছি, আমি যে তাঁহাকে জানি না এমন ও নহে। 'আমি যে তাঁহাকে জানি না এমন নহে, জানি যে এমনও নহে'—এই বাক্যের অর্থ আমাদিগের মধ্যে যিনি জানিয়াছেন, তিনিই তাঁহাকে জানেন।

বস্তামতং তক্ত মত', মতং বস্তু ন বেদ সং। অবিজ্ঞাতং বিজ্ঞানতাং, বিজ্ঞাতম অবিজ্ঞান তাম।

যিনি মনে করেন আমি ব্রশ্ধকে জানিতে পারি নাই, তিনি তাঁহাকে জানিরাছেন, এবং বিনি মনে করেন আমি ব্রশ্ধকে জানিরাছি, তিনি ব্রশ্ধকে জানেন না। উত্তম জ্ঞানবান্ ব্যক্তিদের নিকটে ব্রশ্ধ অবিজ্ঞাত, অর্থাৎ তাঁহাদের এই চেতনা আছে যে তাঁহারা ব্রশ্ধকে সম্পূর্ণ জ্ঞানিতে পারেন নাই, কিছ অসম্যাগ্ দর্শী ব্যক্তিদিগের নিকটে তিনি বিজ্ঞাত, অর্থাৎ ভাহারা ক্রান্তিবলতঃ মনে করে যে তাহারা ব্রশ্ধকে সম্পূর্ণক্রপেই জ্ঞানিতে পারিয়াছে।

পাগল

এই কৰিডাট "বৌৰন-স্থপ্ন" পৰ্যায়ের কবিডার প্রবেশক। মঞ্চরিতা পুত্তকে কবি ইয়ার নাম রাখিয়াছেন 'মরীচিকা'। উৎসর্থ পুত্তকের ৭ নম্বর কবিডা।

উৎসর্গ----স্থানুর

বিস্তহীন ও শক্তিহীন পরহংশকাতর কোনো মহাপ্রাণ ব্যক্তি কোনো হভিক্ষপীড়িত দেশে গেলে যেমন নিজের অক্ষমতার ও অপরের ব্যথার পাগল হইরা উঠেন, তেমনি কবিও যথন স্থীর অন্তরনোকের সৌন্দর্য প্রকাশ করার উপযোগী ভাষা ও স্থার খুঁজিরা না পান তথন তিনিও পাগল হইরা উঠেন। কবির সব তেরে বড় ব্যথাই তাঁহার অন্তরনোকের ভাবসন্তার প্রকাশ করার ব্যথা—সে যেন গভিনীর প্রসব-বেদনা, যতক্ষণ পর্যন্ত না সন্তান গর্ভ ছাড়িরা বাহিরে আসে ততক্ষণ প্রস্তির স্থিতি নাই। অন্তরের ভাবসম্পদ্কে সকলের পোচর করার উপযোগী কথা খোঁজাই কবিজীবনের সাধনা।

কবি নিজের শক্তি ও মাধুর্যের আভাস মাত্র উপলব্ধি করিতেছেন, কিন্ত সম্পূর্ণ উপলব্ধি করিতে পারিতেছেন না, সেই জ্বন্ত নিজের নাভিগন্ধে পাগল কন্তরীমূগের সহিত কবি নিজের ভূলনা করিয়াছেন।

মানুষ অনুক্ষণ মিখ্যা প্রলোভনে বিভ্রাপ্ত হয়, স্থন্দর মনে করিয়া অস্থন্দরকে ধরিয়া ভূপ করে। তাই কবি বলিয়াছেন—

> ৰাহা চাই ভাহা ভূল ক'রে চাই, যাহা পাই ভাহা চাই না।

ঠিক এমনি কথাই কবি শেলী বলিয়াছেন—

We look before and after,

And pine for what is not:

Our sincerest laughter

With some pain is fraught;

Our sweetest songs are those that tell of saddest thought.

—Shelley, Skylark

স্থূর

এই কবিতাটি "বিশ্ব" নামক কবিতা-পর্যায়েব প্রবেশক। সঞ্চয়িতা পৃস্তকে কবি ইহার শিরোনামা রাথিয়াছেন 'আমি চঞ্চল ছে'। এটি উৎসর্গ পৃস্তকের ৮ নম্বর কবিতা।

অনন্তের উপলব্ধির আকাজ্ঞা, ক্রমাগত সীমাকে উত্তীর্ণ হইরা অসীমের অভিমূথে যাত্রা করিবার উদগ্র বাসনা এই কবিতার প্রকাশ পাইরাছে। "পরিগৃত্তবাদ জগতের পশ্চাতে একটা অনুশ্ব শক্তি—বাহাকে জীবনী-শক্তি বলা যার— ক্রিয়া, করিতেছে। এই জীবনী-শক্তি—বাহাকে কবি 'শুদূর' আখ্যা দিয়াছেন, সর্বদাই জগৎটাকে ওলট-পালট করিয়া নুক্তন ভাবে গড়িতেছে। ইহাকে

unendlichkeitedrang (endless urgency, impulse অথবা impetus) বলা বাইডে পারে—অসীবের একটা আকর্বণ। সেটে ইহাকে

das ewig Weibliche (the eternal feminine)

বলিরাছেন। এইক্লপ একটি শক্তি জগতের গতির মূল কারণ। বিজ্ঞান এই শক্তিকে দেখিতে পাছ না। সেই অস্তুই বিজ্ঞান কেবল নিরমের রাজ্য বোবণা করে। কিন্তু বিজ্ঞান-ক্রিড নিরমের জালকে ভাঙিরা এই শক্তি নিজেকে প্রকাশ করে।

—ভাক্তার শিশিরকমার মৈত্র রক্তকরবী, উত্তরা, অগ্রহারণ ১৩০৪।

কবি অসীমে নিজেকে প্রসারিত করিতে চাহিতেছেন, কারণ তাঁহার মন করনা অসীম-প্রসারী, এমন কি জীব মাত্রই অন্তরের অসীমের অংশ মাত্র। সেই জন্ত কবি নিজেকে প্রবাসী বলিতেছেন। এই যে স্থানে কালে এবং বিশেষ দেহে আবদ্ধ আত্মা ও মন তাহাই মাহুষের প্রকৃত অবস্থান নহে। মন উধাও হইরা উড়িতে চার, কিন্তু দেহ ও সংস্কার মানুষকে আবদ্ধ করিয়া রাখে। কবির মহাপ্রাণ ইহার জন্ত ব্যথা অন্তর্ভব করিতেছে।

এই কবিতার সহিত কবির 'মানসভ্রমণ', বা 'বহুদ্ধরা' এবং 'স্থান্ধর' কবিতা ভূলনীর।

কৰি নিজেকে যেমন প্ৰবাসী বলিয়াছেন, তেমনি কবি ওয়ার্ডস্ওয়ার্থও বলিয়াছেন—

The soul that rises with us, our life's stor

Hath had elsewhere its setting,

And cometh from afar;

Not in entire forgetfulness,

And not in utter nakedness,

But trailing clouds of glory do we come

From God, who is our home,

Wordsworth Ode on Intimations of

-Wordsworth, Ode on Intimations of Immortality from Recollections of Early Childhood.

তুলনীয়---

Ever let the Fancy roam, Pleasure never is at home, Keats, Fancy I cannot rest from travel: I will drink
Life to the lees: —Tennyson, Ulysses
I am a part of all that I have met;
Yet all experience is an arch wherethro'
Gleams that untravell'd world, whose margin fades
For ever and for ever when I move—Tennyson, Ulysses.

প্রবাসী

মোহিত সেনের কাব্য-দংস্করণের 'বিশ্ব' নামক বিভাগের প্রথম কবিতা। উৎসর্গ পুস্তকেব ১৪ নম্বর কবিতা।

এই জন্ম ইহার সহিত ঐ বিভাগের প্রবেশক কবিতা স্থদ্রের ভাগবত সাদৃশ্য রহিয়াছে; সোনার তরীর 'বস্থবা' কবিতাটির সহিতও ইহার কিছু মিল আছে।

এই কবিতার মর্মকথা হইতেছে কবি জল-স্থল-আকাশের সহিত একাত্মভাব অমুভব করিভেছেন, সর্বামুভ্তির জন্ম তিনি নিজের সন্ধীর্ণ পরিবেশকে প্রবাস-স্থরূপ মনে করিতেছেন। কবি দেশ-কালাতীত হইয়া সর্বদেশে ও সর্বমানবে—এমন কি সর্বজীবে সর্ব-পদার্থে নিজেকে পরিব্যাপ্ত দেখিতেছেন। ইহা বৈদান্তিক আইডিয়াব সহিত নিও প্লেটোনিক ডক্ট্রনের সংমিশ্রণ বলা বাইতে পারে। কবি যে জড় উদ্ভিদ এবং নানা জীবেব ভিতর দিয়া উদ্ভিম্ন ও অভিবাক্ত হইতে হইতে এই বর্তমান শরীর লাভ করিয়া মহাকবির মননশক্তি লাভ করিয়াছেন, তাহা তিনি 'বস্ত্দ্ররা' ও 'সম্দ্রের প্রতি' কবিভায় প্রেই বলিয়াছেন।

ভূগে পুলকিত মাটির ধরা দেখিয়া কবি যে পুলকিত, তাহা কবি অস্ত কবিতাতেও প্রকাশ করিয়াছেন।—

তৃণ-রোমাঞ্চ ধরণীর পালে
আবিলে নব আলোকে
চেয়ে দেখি যবে আপনার মনে
প্রাণ ভবি' উঠে পুলকে।—উৎসর্গ ১৩ নম্বর।

পৃথিবীকে মাতা-ক্লণে সংখ্যাধন অতি প্রাচীন—
মাতা ভূমিঃ, পুজো অহন পৃথিব্যাঃ। ছাভি নিবীদেম ভূমে।

--- व्यथर्वद्यम्, ४२।১३

কুঁড়ি

উৎসর্গ পুস্তকের ৯ নম্বর কবিতা। মোহিত-সংস্করণ কাব্যগ্রন্থাবলীর "ক্ষয়-অরণ্য" বিভাগের প্রবেশক।

ক্ষুদ্র জীবনের কারাগারে বন্দী হইরা থাকার বেদনা এই কবিতার প্রকাশ পাইয়াছে। কবির বিরাট্ আত্মা সংসারে পরিবাধে ইইবার জভ ব্যাকুল হইরা উঠিয়াছে। কবি যে একলা নিজের মনে রস-সন্তোগ করিতেন সেই জীবনেরও একটা মোহ আছে, সেই মোহ কাটাইতেও তাঁহার মনে ব্যথা বাজিতেছে, অথচ কর্মজীবনে বাঁপাইরা পড়িবার আকাজ্ঞাও যথেষ্ট প্রবল। না-কোটার কারাগারে রুদ্ধ থাকাতে কুস্ক্ষের যে আনন্দ-বিবাদ তাহার উত্তরই কবি-চিত্ত অমুভব করিতেছে।

জগতে কিছুই গুণা ও নিক্ষণ নয়, প্রত্যেক পদার্থের একটা-না-একটা উদ্দেশ্য সাধন করিবার আদেশ আছে, এবং সেই উদ্দেশ্য তথনই সংসাধিত হয় যথন সেঁ জগতের সমস্ত পদার্থের সহিত সামঞ্জপ্ত করিবা নিজেকে পরিচালিত করিতে পারে।

যে অফুট মন বিশ্বকর্মের জন্য প্রস্তুত হইয়া উঠিতে পাবে নাই, যে আত্মা বিশ্বমৈত্রী ও বিশ্বমিলনের জন্য নিজেকে প্রস্তুত করিয়া তুলিতে পারে নাই, তাহারই বিলাপে কবি তাহাকে সাস্তুনা দিতেছেন যে সকলকেই পূর্ণ পরিণতি লাভ করিতেই হইবে, এবং কাল ও দেশ অনস্তু অসীম বলিয়া কাহারও অসম্পূর্ণতার জন্য আক্ষেপ করিবার আবশ্যক মাই, একদিন না একদিন সে পূর্ণ পরিণতি লাভ করিয়া ধন্য হইবেই!

অনেক সমরে মামুধ নিজের জীবনের উদ্দেশ্য নির্ণয় করিতে না পারিরা ব্যাকুল হইরা উঠে, এবং জগতের নশ্বরতা দেখিরা নিজের স্বরকালস্থারী জীবনের অক্ষমতা ও বিফলতার জন্ম বিলাপ করে। কিন্তু কবি-প্রতিভা বখন নিজের উদ্দেশ্য ধূঁ জিয়া না পাইরা ব্যাকুল হইরা উঠিতেছে, তখন তাঁহারই মন হইতে এই অভ্যাবাণী উচ্চারিত হইতেছে— জগতের সহিত মিলিত হইরা জগৎ-প্রোত্ত ভাসিরা চলিতে পারিলেই তাঁহার জীবন ও প্রতিভা সার্ধক হইবে—অতথ্যব—

सर्गर-एनाटन त्वरत्र हरना त्व त्वचा मार्रहा काहे। --- अनानमहीन, त्यान ।

এখনও যাহা পূর্ণভাবে প্রকৃষ্টিত হয় নাই, শুধু ফুটিবার আগ্রহে দিন কাটাইতেছে, ভাহাব নানা ধরণের অধীরতা ও ছন্চিস্তা কবি এই কবিভার তিনটি শুবকে ব্যক্ত করিয়াছেন।

প্রথম শুবকে কুঁড়ি বলিতেছে যে ফান্তন অর্থাৎ স্থসময় চলিয়া যাইতেছে, কিন্তু তাহার ফোটা হইল না। কবি বলিতেছেন যে—হে অক্ট কুঁড়ি, তুমি বাস্ত হইও না, ফাল্ডন অর্থাৎ স্থসময় কখনো একেবারে চলিয়া বার না, সকল সময়ই স্থসময়।

দিতীয় শুবকে কুঁড়ি বলিতেছে,—তাহার গদ্ধ তাহার অন্ধবের কারাগারে বন্দী হইরা আছে, দেই গদ্ধ কেমন করিয়া বহির্জগতে আত্মপ্রকাশ করিবে ও তাহার পরিণতিই বা কী হইবে তাহা না জানিতে পারিয়া দে ছঃথিত বিচঞ্চল। কবি বলিতেছেন,—হে কুঁডি, ব্যস্ত হইও না, তোমার অভ্যন্তরে যে গদ্ধ বন্দী হইয়া আছে তাহা একদিন না একদিন বহির্জগতে নিজেকে পরিব্যাপ্ত করিবে ও আপনাকে সার্থকতা দান করিবে। জ্বগৎ-বিধান এমনই বে তাহার কলে তুমি যথনই চাহিবে, তথনই দেখিবে তোমাকে সার্থক করিবার আয়োজন ও স্থযোগ জ্বগতে পূর্ব হইতেই পূর্ণমাত্রায় উপস্থিত রহিয়াছে।

তৃতীয় শুবকে কুঁড়ি বলিতেছে,—তাহার সার্থকতার পথ বে কি তাহা দে লানে না, এবং সেইজন্ম তাহার মন অত্যন্ত উদ্বিগ্ন ও চঞ্চল। কবি বলিতেছেন,—জগতে সকলের সার্থকতান যে পথ, কুঁডিরও সেই পথ। এ জগতে যাহা একাকী, আপনাতে আপনি সম্পূর্ণতা লাভ করিতে ইচ্ছুক, তাহা অনর্থক, ভাহা ব্যর্থ, এ জগতে তাহাই সার্থক যাহা জগতের অস্তান্থ বস্তু বা ব্যক্তির সহিত সংযুক্ত, অর্থাৎ কুঁডি যদি আপনাব সৌন্দর্থ সৌরভ ও মাধুর্যের গর্ব দেখাইবার জন্মই কেবল প্রস্কৃতিত হইতে চায়, ভাহা হইলে সে ব্যর্থ ইইবে। কিন্তু সে যদি তাহার সৌন্দর্যে সৌবভে মাধুর্যে জগৎকে স্থানর পরিতৃষ্ট ও পরিতৃপ্ত করিতে চেষ্টা করে, তবেই সে দেখিবে তাহার জন্ম ও জীবন সার্থক হইয়া উঠিয়াছে।

রবীজ্রনাথ আশাবাদী কবি, জন্ম ও জীবন ক্রমাগত সার্থকতার পথে চলিতেছে, ইহাই তাঁহার বিশ্বাস। এখানে তাঁহার সেই মনোভাবই পরিব্যক্ত হুইরাছে। ওমর থৈয়াম প্রভৃতি নৈরাশুবাদী কবিদের উক্তিতে বৃক্তি । বৃদ্ধির পরিচর থাকিলেও তাহা জীবনের উন্নতির জ্বন্ত অবলয়নেব যোগ্য নহে।

বিশ্বদেব

এই কবিতাটি মোহিত-দংশ্বরণ গ্রন্থাবলীর 'স্বদেশ' বিভাগের প্রবেশক-রূপে লিখিত হইন্নাছিল এবং ১৩০৯ সালের পৌষ মাসের বঙ্গদর্শন পত্রে ৪৫৭ পৃষ্ঠান্ন "স্বদেশ" নামে প্রথম প্রকাশিত হয়। ইহা উৎসর্গ পুস্তকের ১৬ নম্বর কবিতা।

এই কবিতার কবি ভারতবর্ষের মধ্যে বিশ্ববাসীর মিশনস্থান এবং বিশ্বধর্মের বিশ্ববাধের বিকাশ দেখিরা শ্বরং বিশ্বনেবকেই নিজের শ্বদেশের মধ্যে আবিভূতি দেখিতেছেন। বে একের ও বিশ্বমৈত্রীর মন্ত্র ভারতের তপোবনে উদ্গীত হইরাছিল, সেই গারত্রী-গাথাই বিশ্বতাপের মহামন্ত্র। কবি খ্যান-নেত্রে দেখিতেছেন বে শ্বদ্র ভবিদ্যাতে এই ভাবতের শিক্ষার ফলে দিগ্বিজ্বী পরদেশ-লোল্প বোদ্ধান রণ-ছকার অথবা অর্থগৃগ্ধু বণিকের পরদেশ-লুঠন বন্ধ হইরা গিরাছে, এবং বিশ্ববাসী সকলে ভারতের উপদেশ হাদরশ্বম করিয়াছে—

ইবা বাস্তম্ ইদং দৰ্বং যৎ কিঞ্চ লগতাাং জগৎ। তেন ত্যক্তেন ভূঞ্জীখা সা গৃধঃ কন্তব্ৰুদ্ ধনম্।

ভারতের পবিত্র নির্মাণ হাদি-শতদলে ভারতের ভারতা অধিষ্টিত ইইরা অপূর্ব্ব মহাবাণী ঘোষণা কবিতেছেন। ইহাকেই ভূদেব মুথোপানোর মহাশর ভাঁহার কবিকণ্ঠহার পুত্তকে 'অধিভারতী' নাম দিয়া বন্দনা করিয়াছিলেন। কবির মনে স্বদেশপ্রীতি বিশ্বনৈট্রিত পরিণত ইইয়াছে।

আবর্তন

এই ক্বিডাটি মোহিত-সংশ্বরণ কাব্যগ্রন্থাবলীর 'রূপক' বিভাগের প্রবেশক-রূপে এবং আমার সম্পাদিত প্রথম প্রকাশিত চয়নিকার মধ্যে ক্বীপ্রের সমগ্র কাব্যের প্রবেশক-রূপে ছাপা হইরাছিল। ইহা ১০০৯ সালের পৌষ মাসে প্রকাশিত হয়। ইহা উৎসর্গ পুস্তকের ১৭ নম্বর কবিডা।

বিশ্ব-কাথ্যের বিনি অনাদি-কবি তাঁহার সৃষ্টি-লীলার আমর। দেখিতে পাই তিনি অ-ধরাকে ধরার মধ্যে,ethoreal-কে tangible-এর মধ্যে, আগতে অড়ের মধ্যে, spirit-কে matter-এর মধ্যে, অলীম্ভে সীমার মধ্যে ধরিয়া প্রকাশ করিভেছেন। প্রেষ্ঠ ক্ষির কাব্যেও আমরা নেই বিশ্বকাব্যেরই প্রতিধ্বনি ত্তনিতে পাই ও প্রতিদ্ধৃত্বি দেখিতে কাই। অসীম অনন্ত এবং সসীম সাস্ত পরস্পারের বন্ধনের মাঝে মৃক্তি থুঁ জিরা স্টির সার্থকতা সম্পাদন করিতেছে। অব্যক্ত অব্যর নিজেকে পলে পলে ভাব হুইতে রূপে এবং রূপ হুইতে ভাবে ব্যক্ত করিতেছেন।

অদীম অনম্ভ এবং সদীম সাম্ভ পরস্পারকে অবদম্বন করিয়া আত্মপ্রকাশ করিতে পারে, নতুবা তাহাদের প্রকাশই সম্ভব হয় না। তাই কবি পরে বলিয়াছেন—

> দীমার মাঝে অদীম তুমি বাজাও আপন হুর। আমার মধ্যে তোমার প্রকাশ তাই এত মধুব।

ইহারও অনেক আগে কবির প্রথম মৌবনে কবি এই তর্টি প্রকাশ করিয়াছিলেন—

এ জগৎ মিথা নর বৃঝি সতা তবে

অসাম হতেছে ব্যক্ত—দীমা রূপ ধরি ।

যাহা কিছু কুজ কুজ অনস্ত সকলি,

বাল্কাব কণা—সেও অসীম অপার—

তাবি মবে বাঁধা আছে অনস্ত আকাশ—

কে আছে কে পাবে তারে আযত্ত করিতে।

বড ছোট কিছু নাই সকলি মহৎ।
ভাঁপি শুদ জগতেরে বাহিরে ফেলিরা

অসীমের অহেবণে কোথা গিরেছিমু ।

সীমা তো কোথাও নাই—সীমা সে তো অম।

—প্রকৃতির প্রতিশোধ, সম্মানীর উক্তি।

রবীক্সনাথেব আবর্তন কবিতাটিব হব**হ অহুরূপ একটি কবিতা আছে** ভক্তকবি দাহ্য—

বাস কহে হয় ফুল কো পাঁট,
ফুল কহে হয় বাস।
ভাষ কহে হয় সত কো পাঁট
সত কহে হয় ভাষ॥
রূপ কহে হয় ভাষ-কো পাঁউ,
ভাষ কহে হয় রূপ।
আপস্মে কট পূজন চাহে—
পূজা অপাধ অনুপ॥

Tage

হণক বলে—আমি ফুলকে না পাইলে তো আমার প্রকাশের কোনো সন্তাবনাই নাই; আমি স্কা, ছল ফুলকে পাইলেই তবে আমি আপনাকে ব্যক্ত করিতে পারি। আবার ফুল বলিতেছে—আমি হুল, আমি বদি গদ্ধকে না পাই তবে আমার জীবন নিরপ্রক হয়। ভাষা বলে—আমি বদি সত্যকে না পাই তবে আমি মিখা। আবার সত্য বলে—আমি বদি ভাষাকে না পাই তবে আমার প্রকাশই অসম্ভব। রূপ বলে—আমি ভাবকে যদি না পাই তবে তো আমার প্রকাশই অসম্ভব। রূপ বলে—আমি ভাবকে যদি না পাই তবে তো আমি জড় মাত্র। আবাব ভাব বলে যে—আমি রূপকে না পাইলে কেবল মাত্র ফাকা হাওয়া। অতএব স্কা ও ছুল উভয়ে উভয়কে পূজা কবিতে একং পাইতে চাইতেছে, এবং এই পূজার রহস্ত অগাধ এবং অন্তপম।

অভীত

"কথা কন্ত কথা কণ্ড"

মোহিত-সংশ্বরণের কাব্যগ্রন্থাবলীর কথা বিভাগের প্রবেশক কবিতা। ইহা উৎদর্গ পুস্তকের ৩৫ নম্বর কবিতা।

কৰি অতীত ঐতিহ্ন অবলয়ন করিয়া কবিতা রচনা করিবেন, তাই তিনি অতীতকৈ সম্বোধন কৰিয়া বলিতেছেন—অতীতকাল তো অনাদি অনক, তাহা রাত্রির মতন রহস্তান্ধকারে অজ্ঞানার দ্বারা আবৃত। বৃগ-বৃগাদ ধবিয়া কত কত ঘটনা ঘটিয়া যাইতেছে, তাহার কতটুকু ভগ্নাশ ইতিহাস জীবনচবিত কিংবদন্তী জনশ্রুতি ধরিয়া জীবিত রাখিতে পারে। অধিকাংশই অতীতের গর্ভে হারাইয়া গোপন হইয়া যায়, সে-সব সংবাদ আব পবিব্যক্ত হয় না। ছে অতীত, তুমি আপনাকে কবির কাছে প্রকাশিত করো।

কিছ অতীত কালপ্রবাহে বিদীন ইইলেও তাহাব পলি পড়িয়া মন উর্বর ইইরা উঠে। জগতের সমস্ত কাহিনী ঘটনা অতীতের কুক্ষিতে ল্কারিত হইয়া গেলেও, ভাষা ল্কারিত মাত্র হয়, বিনষ্ট হয় না। প্রভূমিদের কর্ম ও জীবনের প্রভাব বর্তমানের উপর পড়িয়া বর্তমানকে গঠন করে।

এই কবিতার সহিত তুলনীর—কাহিনী বিভাগের প্রবেশক কবিতা— "কত কি বে আসে কত কি বে যায় বাছিয়া চেতনা-বাহিনী।" Thou hoary giant Time,
Render thou up the half devoured babes,
And from the cradles of eternity,
Where millions he half do their portioned sleep
By the deep murmuring stream of passing things,
Tear thou up that gloomy shroud
—Shelley, The Daemon of the World

কত কি যে আদে, কত কি যে যায়

এই কবিতাটি মোহিত-সংস্কবণ কাব্যগ্রন্থাবলীর 'কাহিনী' বিভাগের প্রবেশক। ইছা উৎসর্গ পুস্তকেব ৩৪ নম্বর কবিতা।

চেতনা-স্রোতে প্রবাহিত হইয়া বোধেব বা জ্ঞানেব ক্ষেত্রে কত কি যে আদে যায় তাহা নির্ণয় করা কঠিন। সেই-সব আগন্তুক ভাবাবলীৰ ভগাংশ-খণ্ড মগ্ন হৈতত্ত্বের মধ্যে পডিয়া থাকে, মন সেই-দব টুকরা একত্র- সংগ্রহ করিয়া কত কাহিনী রচনা কবে। সেই মন একমনা অর্থাৎ একাগ্র, সে অদর্শন, সে কেবলমাত্র স্মৃতি-সমাশ্রিত। মন হৃদয়েব সঙ্গী, ভাহাব ভাণ্ডাবে সব-কিছুই সঞ্চিত হইরা থাকে , সেই সঞ্চিত নানা উপকরণ একতা করিয়া মন ও হাদর মিলিয়া নানা অপর্ব সৃষ্টি করে। সেই সৃষ্টি-কর্ম গোপনে অন্তরের অন্তবালে শুতিৰ সাহায্যে হয়, কেহ ভাহাকে দেখিতে পায় না যতক্ষণ না সেই স্থাষ্ট শেষ হট্টয়া বাহিরে প্রকাশ পায়। এই যে মন তাহা তো কেবল ইছ-**জন্মের** অভিজ্ঞতা লইয়াই কাজ করে না. মন কেবল তাহার নিজের অভিজ্ঞতার দঞ্চয়েই পূর্ণ থাকে না, পূর্বপুক্ষদেব পিতৃপিতামহদের সমস্ত মননশক্তি ও অভিজ্ঞতাৰ এবং নিজেবও জন্ম-জনাম্বরের অভিজ্ঞতাৰ উত্তৰাধিকারী সে। যে প্রাণ বিন্দু মাতা-পিতার কাছ হইতে দীপ হইতে দীপান্তরে অগ্নিনিধা-সংক্রমণের মতন ভ্রণ-রূপে পবিণত হয়, সে তো তাহার দেহকোষে. মনোময়কোষে ও প্রাণময়কোষে পৈতৃক ও মাতৃক সমস্ত অভিজ্ঞতা সঞ্য করিয়া লইয়াই শিশুরূপে ভূমির্চ হয় এবং আপনার পরিবেশের সমস্ত অভিজ্ঞতা সংগ্রহ করিতে করিতে দে মানুষ হইয়া উঠে। দেই-সমন্ত আপাত-বিশ্বত কাহিনী তাছার শ্বতির মধ্যে মধ-চৈতজ্ঞের মধ্যে স্বপ্ত চৈতছের মধ্যে subliminal self-এব মধ্যে সঞ্চিত থাকে; যথন দরকার পড়ে তথন মহাজন মন তাহাব ভাণ্ডারী ব্যান্ধারের কাছে চেক্ কাটে ছণ্ডী পাঠার আর গড়িত আমানত্ধন স্থতিব থাজনাথানা হইতে আদার করিয়া আনে।

মর্ণ-দোলা

এই কবিভাটি ১৩০৯ সালেব পৌষ মাদেব বঙ্গদর্শনে ৪৭৭ পৃষ্ঠায়
"বিখদোল" নামে প্রকাশিত হয়।

ইহা মোহিত-সংস্করণ কাব্যগন্ধাবলীব 'মরণ' বিভাগের প্রবেশক কবিতা। উৎসর্গ পুস্তকের ৪১ নম্বব কবিতা।

কবি জীবন ও মৃত্যুকে দোলাব সহিত তুলনা করিয়াছেন। কোনো জন্ধকার ঘরেব দরজার চৌকাতে যদি দোলা টাঙাইরা কেউ দোল খায়, তবে দে একবার বাহিরের আলোকে ছলিয়া আদে, এবং পরক্ষণেই অন্ধকার ঘরেব মধ্যে চলিয়া দৃষ্টির অন্ধরাল হইয়া যায়। অন্ধকারে তাহাকে দেখিতে পাওয়া যায় না বলিয়া এ কথা বেমন বলা সঙ্গত নয় যে দেই দোল-খাওয়া লোকটি আর নাই। তেমনি মৃত্যুর অন্ধকাবে প্রাণী আরত হইলে বলা সঙ্গত নয় যে সেই প্রাণী আর নাই। মামুষ একই জীবনে একই চেতনার মধ্যে ও একই অভিজ্ঞ তার মধ্যে জাগ্রত অবস্থা হইতে ঘুমাইয়া পড়ে এবং পুনবার জাগরিত হয়, সেই জন্ত কেছ নিদ্রাকে ভয়ন্বব মনে করে না। কিন্তু মৃত্যুর পরে জন্মান্তব লাভ করিলে মানুষের পূর্বজন্মের কথা শ্বরণ থাকে না, তাহাব মৃত্যু ও নবজন্ম একই অভিজ্ঞতার ক্ষেত্রে থাকে না বলিয়াই মানুষ মৃত্যুকে ভয় করে, মনে করে এই বৃঝি সব-শেষ। কিন্তু কবিরা মৃত্যুকে নিদ্রাব সহোদৰ বলিয়াই জানিয়াছেন—

How wonderful is Death Death and his brother Sleep!

-Shelley, Queen Mab

আনেক কবি মৃত্যুকে নিদ্রার সহিত তুলনা করিয়াছেন—মৃত্যুর এক নাম মহানিদ্রা।

To die, to sleep;
To sleep;
To sleep: p-rchance to dream ah there's the rub
---Hamlet's Solitony

মানুষ অজ্ঞাতকে ভন্ন করে, তাই চিরপবিচিত জীবনের অভিজ্ঞতা ছাড়িয়া অজ্ঞাত "মৃত্যু-মাধুরী" উপলব্ধি করিতে পারে না।

কিন্তু রবীক্রনাথ বারংবার বলিয়াছেন-- মৃত্যু নবঞ্জীবনের ছার---

কেবলই এই তুষাবটুকু পার হ'তে সংশয। জয অজানাব জয।

মৃত্যু জীবনেরই পবিণতি। মৃত্যু বিশ্বজননীব কোল, সেথানে কিছুই নষ্ট হয় না, কেহই হঃথ পায় না।

ন্তন হ'তে তুলে নিলে শিশু কাঁছে ডবে।
মূহতে আখাস পায গিলে ন্তনান্তরে।

· · · · · · দে যে মান্তুপাণি
ন্তন হ'তে ন্তনান্তরে স্টতেছে টানি'। — নিবেল্প।

কবি রবীক্রনাথ জীবন ও মৃত্যুকে পাশাথেলার সহিত তুলনা করিয়াছেন।
ইহাকে তিনি বল খেলার সঙ্গেও তুলনা করিয়াছেন। বল-লোফালুফি খেলার
সঙ্গে সিদ্ধুদেশের ভক্ত কবি বেকস জন্ম ও মৃত্যুকে তুলনা করিয়াছেন। বেকস
অষ্টাদল শতাকীর শেষ ভাগে সিদ্ধুদেশে আবিভূতি হইয়াছিলেন, এবং তিনি
মাত্র ২২ বংসর বয়সে মাবা যান। তাঁহাব মৃত্যু আসন্ন দেখিনা তাঁহার
মাতা খেদ করিতেছিলেন। তাহা দেখিয়া কবি বেকস মাকে সাস্থনা দিয়া
বলিয়াছিলেন—জগজ্জননী ও পার্থিব জননী এই উভয়ের মধ্যে বল-লোফালুফির
খেলা চলে—এবজন ছুডিয়া ফেলিয়া দেন এবং অপবে লুফিয়া ধরিয়া লন;
সেইক্রপেই তো আমার জন্ম আরম্ভ হইয়াছিল—জগজ্জননী আমার জীবনক
ছুড়িয়া তোমার কোলে ফেলিয়া দিয়াছিলেন, এখন আবাব আমাকে ছুড়িয়া
তাহার কোলে ফেলিয়া দিয়াছিলেন, এখন আবাব আমাকে ছুড়িয়া
তাহার কোলে ফেলিয়া দিয়া ভূমি খেলা শেষ করে।—

উভয মাতু বীচ পেল চলে—
গৌদ জাঁ মোকে। দেল নেই ॥
তেই তো জনম মোকে। ফ্ক ⁷হ.
পেলু আজ মোকু দেল ॥

কবীক্স রবীক্সনাথ যেমন জন্ম-মৃত্যুকে দোলাব সঙ্গে তুলনা করিয়াছেন, ভক্ত কবি কবীরও তেমনি ঝুলনের সঙ্গে তুলনা করিয়াছেন, এবং তিনিও বলিয়াছেন যে জন্ম-মরণ যেন বিধাতার দক্ষিণ ও বাম হাতে অদল-বদলের থেলা— জমম-মরপ-বীচ দেখো অস্তর নহী--পচছ উর বাম মুঁ এক আহী।
জনম-মরণ জঁহা তারী পড়ত হৈ
কোত জানন্দ তই পগন গালৈ।
উঠত ঝনকার তই নাদ জনহদ ঘরৈ,
তিরলোক-মহলকে প্রেম বাজৈ।
চক্র তপন কোটি দীপ বরত ১৯,
তুর বাজৈ তই। দত্ত ঝুলৈ।
পার ঝনকার তই, নুর বরষত রহৈ,
রদ পীবৈ তই ভক্ত ভুলৈ।
করীর।

গগন দেখা মগন দলা নবীন চির আনন্দে জন্ম আর মরণ, তার বাজিছে তালি ডুই হাতে ; রাগিণী উঠে ঝঙ্কারিশা কী মচ্ছনা কী ছন্দে।

ত্রিলোক হ'তে রদের ধারা মিলিভে আসি' দিন রাতে। কুর শলী লক্ষ কোটি প্রদীপ সেধা সম্জ্ঞান,

বাজিচে তুরী ভূবন শুরি', গ্রেমিক ছুলে হিন্দোলে ; পিরীতি সেখা মর্মরিছে, শরিছে আলো অনর্গল,

আপনা ভুলি' ভকত চিঘা অমৃত পিরে বিহ্নলে জুলা আর মরণে কোনো তকাৎ নাই—নাই তকাৎ-–

নাই তফাৎ যেমনতর দক্ষিণে ও বামে গো;

কবীর করে সেধানা ঘেবা হয় সে বোলা অকল্মাৎ—

কোবান-বেদ স্বতীত বাণী—সভল দেখা নামে গো।

--সত্যেশ্রনাথ দত্ত, মণিমপুরা

जुननीय-

Our life is a succession of deaths and resurrection; we die, Christo pher, to be born again.—Romain Rolland.

and still depart

From death to death thro' life and life, and find Nearer and ever nearest Him, who wrought Not matter, nor the finite-infinite,

-Robert Browing.

Earth knows no desolation.

She smells regeneration

In the moist breath of decay.

-Meredith.

মরণ

এই কবিতাটি ১৩০৯ সালের ভাদ্র মাসের বঙ্গদর্শনে ২৫৫ পৃষ্ঠার প্রকাশিত হইরাছিল। সঞ্চয়িতা পুস্তকে কবি ইহার শিরোনামা রাথিয়াছেন 'মরণ-মিলন'। ইহা উৎসর্গ পুস্তকের ৪৮ নম্বর কবিতা।

জীবনকে সত্য বলিরা জানিতে হইলে মৃত্যুর মধ্য দিরাই তাহার পরিচর পাওরা চাই। বে মানুষ ভয় পাইরা মৃত্যুকে এডাইয়া জীবনকে জাঁব্জাইয়া রহিয়াছে, জীবনের উপরে তাহার য়থার্থ শ্রদ্ধা নাই বলিরা সে জীবনকে পায় নাই। তাই সে জীবনের মধ্যে বাস করিয়াও মৃত্যুর বিভীষিকায় প্রতিদিন মরে। যে লোক নিজে আগাইয়া গিয়া মৃত্যুকে বন্দী করিতে ছুটয়াছে সে দেখিতে পায়—যাহাকে সে ধরিয়াছে সে মৃত্যুই নয়,—সে জীবন। 'ফাস্কনী' নাট্যকাব্যের অস্তরেব কথা ইহাই।

যাহাদের অন্ধরের মিল হইয়া যায় তাহারা আর বাহিরের রূপ দেখিরা লান্ত হয় না। তাই কদ্রবেশী প্রিয়তমকে দেখিরাও প্রণায়িনীর আঁথি স্বথে ছলছল করে। যাহারা অন্তবেব পবিচয় পায় না, তাহারাই বাহ্য কদাকার ফৃতিকে সমাদর করিতে পারে না। তুলনীয়—কবির নৃতন নাট্যকাব্য 'শাপ মোচন', এবং পুন্দত 'পুশুকে' শাপমোচন কবিতা।

তুলনীয়—

যতটুকু বৰ্তমান

তারেই কি বলো প্রাণ

দে তে। শুৰু পলক নিমেৰ। মৃত্যু রে তরিয়া কেন কাঁদি।---জীবন তো মৃত্যু র সমাধি।

—প্রভাত সঙ্গীত, অনন্ত মবণ।

ববীক্সনাথ মৃত্যুকে আরও অন্ত স্থলে বর বলিয়াছেন, এবং জীবন তাহার বরু।

> মিলন হবে তোমাব সাণে একটি শুভ দৃষ্টিপাতে, জীবন বৰু হবে তোমার নিড্য অমুগতা। মরণ, আমার মরণ, ভূমি কণ্ড আমারে কথা॥

বরণ-মালা গাঁখা আছে

থামার চিত্ত মাঝে।

কবে নীরব হাস্তমুখে

থাসুবে বরের সাজে!

সে দিন আমার রবে না ঘর,
কেই বা খাপন কেই বা অপব,
বিজন রাতে পতির সাথে

মিশ্বে পতিব্রতা।
মরণ আমার মরণ, তুমি

কণ্ড আমারে কণা।

- গীতাঞ্চলি।

"আমাদের ওই ক্ষ্যাপা দেবতার আবির্ভাব যে ক্ষণে ক্ষণে, তাহা নহে—স্ষ্টির মধ্যে ইহার পাগ্লামী অহরহ লাগিয়াই আছে—আমরা ক্ষণে ক্ষণে তাহাব পরিচয় পাই মাত্র। অহরহই জীবনকে মৃত্যু নবীন করিতেছে, ভালোকে মন্দ উচ্ছল করিতেছে, তুছ্ককে অনির্বচনীয় মৃল্যবান্ কবিতেছে। যথন পরিচয় পাই, তথনই ক্ষপের মধ্যে অপরূপ, বন্ধনের মধ্যে মৃক্তির প্রকাশ আমাদের কাছে জাগিয়া উঠে। তেলীবনে এই তুঃখ-বিপদ-বিরোধ-মৃত্যুর বেশে অসীমের আবির্ভাব।"—রবীশ্রনাথ, আমার ধর্ম, প্রবাসী ১৩২৪ পৌষ, ২৯৬ পূর্চা।

ভক্ত কবি কবীর মৃত্যুকে জীবনের সহিত জীবন-স্বামীর বিবাহ-মিলন বলিরা বর্ণনা করিয়াছেন—হে গারিকারা, তোমরা বধ্ এবং বিবাহের মঙ্গলাচার গান করো, আমার গৃহে আমার স্বামী রাজা আনন্দময় আসিয়াছেন। কবীর বলেন, আমি এক অবিনালী পুরুষের সহিত বিবাহ-বন্ধনে আবদ্ধ হইতে চলিয়াছি।

গাউ গাউরী ওলহনী মঙ্গলচারা। মেরে গৃহ আরে রাজা রাম ভতারা। কতি কবীর, তম্বা্হ চলে তৈ পুরুষ এক অবিনাদী।

তুলনীয়-

There is no Death! What seems so is transition;
The life of mortal breath
Is but a suburb of the life elysian,
Whose portal we call death.

-Longfellow.

We should be colonists, not home dwellers in the world, perpetually dreaming of the voyage home

-Emerson, Essay on Over-Soul

It is at the Life's door that Death knocks—Maeterlinck, The Princess Maleine, মেটরলিকের Intruder এবং Less Avengles ও ইহার সভিত তুলনীব।

The fear of Death is universal among mankind, and depends not only on the pain that often accompanies dissolution, but also on the consequences affecting the survivors, i.e., the cessation of all old familiar relations between them and the decomposition of the body

The ordinary process of Death is the separation of the soul from the body as in dreams, the only difference being that in the latter case the separation is for the time being, but in the former it is permanent and final

The belief in continued life has undergone various stages of evolution which glide imperceptibly one into another

-Immortal Man by C E Vulliamy

হিমাজি

এই কবিতাটি 'হিমালয়' নামে ১৩১০ সালের শ্রাবণ মাসেব বঙ্গদর্শনে প্রকাশিত হয়। উৎসর্গ পৃস্তকে ২৪ নম্বর হইতে ২৯ নম্বর পর্যন্ত হিমালয়-সম্বন্ধীয় কবিতাগুলি একত্র পঠিতবা। শিলালিপি, তপোমৃর্টি প্রভৃতি কবিতাও বঙ্গদর্শনে ঐ মাসে প্রকাশিত হয়।

'সঙ্গীতের প্রধানতঃ ছুইটি অংশ আছে—একটি অংশ তাহাব হব বা তান, এবং দিতীয় বংশ তাহার বাণী বা ভাষা। গায়ক ধ্বন তান ধরেন, তগন চাহাতে কোনো ভাষা ধাকে না, কিন্ত তাহা ক্রথনও উদান্ত ক্রথনও অমুদান্ত এবং ক্রথনও বা স্বরিত হয় এবং সমন্ত স্থরটি উচ্চাসুচ্চতা হেতু যেন তর্রজনত হইরা চলিয়াছে মনে হয়। ত্রক্ষায়িত দেহ হিমালয়ও যেন এইবাপ একটি প্রিয়ে সাম গীতের স্বর প্রবিদিক হইতে পশ্চিমদিকে বাণীর সন্ধানে ছটিযাছে।

"আবার কোন গাবকের হার খৃব উচ্চ প্রামে উঠিথা আরও উঠিতে অক্সম হইলে বেমন ইটাৎ থামিরা যায়, এবং তথন গায়ক কেবল হাঁ করিয়া নিশ্চনভাবে থাকে ও তাহাব চোপ বিধা জল পড়ে, সেইন্নপ হিমানবেষও হার যেন অতি উচ্চে উঠিবা শব্দহাবা হইবা গিবাছে, এবং প্রংখে তাহার চোথ দিয়া প্রশ্রকণ-রূপ অঞ্পধারা পড়িতেছে।

"প্রকৃত পক্ষে, এক শ্রেণীব পর্কাত আছে যাহাদের উৎপত্তি ইইয়ার্ছি পৃথিবীব অন্নাত্তাপের জন্তা। বে অন্নাত্তাপের বেগে হিমালয়ের হৃষ্টি ইইয়াছিল তাহার অবসান হওরায় হিমালয় আর উধ্বে বাড়িতে পারিতেছে না, এবং ভাহাব কৃষ্কি বন্ধ হওয়াতে সে সসীম পারাণ ইইয়া সীমাবিহীম আকাশের ভলে অন্ধ হইয়া আছে।

"কৰি হিমালরকে এমন এক পালকের সঙ্গে তুলনা করিতেছেন যিনি হার সংযুক্ত করিছা। আপনার কণ্ঠবর উচ্চ করিয়াছেন এবং তাহার সঙ্গে বীণা বাজাইতেছেন, অথচ কোন বিশিষ্ট গান এই হারে তিনি গাহিবেন তাহার ভাষা এখনও স্থির করিতে পারিতেছেন না।

"কৰি হিমালয়কে জিজাস। করিতেছেল যে, সে বিশ্বব-অভিত বিখবাদীর নিকট কোন্ মহতী বাণী—মেদেজ—প্রচার করিতে চাধিতেছে? তাহার এই অভ্রভেদী বিরাট্ আকারের মধ্যে কোন্সত্য বাক্ত হইতেছে?

"সঙ্গীতের গ্রাক্ অন্ধিত করিলে বাস্তবিক পর্বত-শৃঙ্গের তরঙ্গের স্থারই দেখায়।

"কবি হিমালরকৈ এক প্রশান্ত আব্দু-সমাহিত ধান-নিময় বৃদ্ধ তপৰী বলিয়া কলবা করিয়াছেন, যিনি বৌবনের ছর্দমনায় উৎনাহে ও আব্দু-জিতে অদীম বিশাদের বলে দমন্ত পৃথিবী জ্বয় করিছে চাহিরাছিলেন, কিন্ত কালক্রমে যৌবন-স্থান্ড মাদকতা অন্তর্গানের দক্ষে দক্ষেই আপনার শক্তির পরিসর সীমাবদ্ধ উপলব্ধি করিয়া শান্ত সমাহিত হইয়া ভগবানের নিকট আব্দু-সমর্পণ করিয়াছেন। মামুষ যতদিন পণ্ড আপনার শক্তির এই নির্দিষ্ট গণ্ডী বৃষিতে না পারে ততদিন পর্যন্ত আপনার আকাজ্জারও অন্ত পায় না, ততদিন পণ্ড তাহার আকুলি বিকুলিরও শেন হয় না। তাহার পরে যপন যৌবনের মত্তা চনিযা যায় তথন সে হানাহানি ছুটাছুটি করিয়া ক্রান্ত হইয়া পড়ে এবং বভাবতঃই সে সংসাবের প্রতি আন্সক্ত হইয়া পড়ে। তথন মানব-জীবনের অপূর্ণন্থ ও সদীমন্ত উপলব্ধি করিয়া পূর্ণাহেপূর্ণ অসীমের প্রতি আকৃষ্ট হয়। কবি সেই জন্ত বলিবাছেন—

তাই আজি মোব মৌন শাস্ত হিয়া সামাবিহীনের মাঝে আপনারে দিয়েছে ন'পিয়া।

"রবীক্রনাথ প্রকৃতির বাস দৃষ্টের বর্ণনা করেন না, তিনি প্রকৃতির রহস্ত ও তয়ধো বে বিষ চৈতক্ত অন্তর্গুত হইয়া আতে তাহারই বর্ণনা করেন। কোনো দৃষ্ঠ কবির মনে যে ভাবের উল্লেক করে, উহার মধে৷ তিনি যে সভ্যের সন্ধান পান, তাহাকেই ভাষার ও ছন্দের ভিতৰ দিয়া তিনি আকার দান করিতে চেটা করেন। সেই ভাষা ও ছন্দের মধ্যে সমুদ্র-পর্বত-অরণে।র আহ্বান আমাদের অন্তরে ধ্বনিত হইয়া উঠে, প্রকৃতির অন্তরাক্সা সজীব ও সজাপ হইয়া আমাদিগকে নিবিত প্রেমপাশে আবদ্ধ করে। হিমালরের গান্তবি মহন্ব ও বিরাটবের ছবি কবি উাহার ভাষাক্রপ ভাষার ও গন্তীর ছন্দের সাহায়ে আমাদের সন্মুখে আনিয়া ধরিয়াছেন।"

এই কবিতার সহিত শিলালিপি, তপোমূর্ত্তি প্রভৃত্তি কবিতা মিলাইরা একত্র পাঠ করিলে ইয়াদের সকলেরই অর্থ সম্পন্ত হইবে।

এই কৰিতায় প্ৰভাতের দার বলিতে কবি পূর্বাদিক ব্ঝাইয়াছেন। তুলনীয়—

> ক্তক্ল-সবী উধা বথদ খুলিবে পুৰ্বাপার হৈম্বার পশ্নকর দিয়া।

> > --- माहेटकम मधुष्टमन, त्यदनावनव, विजीव मर्ग ।

যবে ফুলফুল দণী হেমবতী উবা
মুক্তামর কুণ্ডল পরান ফুলকুলে,
লাগান অরুণে যবে উবা সাক্তাইতে
একচক্র রণ, ঝুলি' ক্ষমল করে
পূর্বাপার হৈমবার।
——তিলোপ্তমাদম্ভব কাবা।

প্রচচ্চন্ন

এই কবিতাটি মোহিত সংস্করণ কাব্যগ্রন্থাবলীর "কল্পনা" বিভাগের প্রবেশক ছিল উৎসর্গ পুস্তকের ও নম্বর কবিতা।

কবি বলিতেছেন যে—"মোর কিছু ধন আছে সংসাবে, বাকি সব ধন
স্থপনে।" অর্থাৎ কবিব জীবন-মনের যত কিছু অভিজ্ঞতা তাহার কতক অংশ
বাস্তব এক কতক অংশ কাল্পনিক, কবি সামাত্ত অভিজ্ঞতাকেও নিজের কল্পনা
ও মনন-শক্তির দ্বারা পূর্ণ কবিয়া অতীন্দ্রিয় ব্যাপারও প্রকাশ কবিতে পারেন।
সেই ইন্দ্রিয়াতীত অমুভৃতিকেই কবি আহ্বান কবিতেছেন।

58

"তোমাবে পাছে সহজে বৃঝি তাই কি এত লীলাব ছল ?" এই কবিতাকে প্রেমিক-প্রেমিকার পবস্পাবেব কাছেও সংগোপন-প্ররাসী প্রেমের লীলা বলা যাইতে পাবে। অথবা কবিব যে কবিত্ব-শক্তি, কবির জীবনদেবতা বা অন্তর্যামী, যিনি কবিকে দিয়া কথা বলাইতেছেন, তিনি কবিকে ধরা দিয়াও ধরা দেন, না, কবির মনের মধ্যে যে ভাব উদ্রেক করিয়া দেন ঠিক সেই রকম তাহাব প্রকাশ হয় না, তিনি ধবা দিতে আসিয়াও ধরা দেন না, এবং কবিকে দিয়া যাহা প্রকাশ করান তাহাতে বিশ্বাসী পবিতৃপ্ত হইয়া বাহবা দিশেও কবির নিজেব অন্তর্ম পবিতৃপ্ত হয় না।

এই কবিতাটি মোহিত-সংশ্বরণ কাব্যগ্রছাবলীর লীলা-নামক বিভাগের প্রবেশক। উৎসর্গ-পুস্তকের ৪ নম্বর কবিতা।

চেনা

"আপনারে তুমি করিবে গোপন কি করি'?" এই কবিতাটি মোহিত-সংস্করণ কাব্যগ্রহাবলীর কৌতুক-নামক বিভাগের প্রবেশক ছিল। উৎসর্গ-পুস্তকের ৫ নম্বর কবিতা। ইহার সহিত ছল কবিতাটির বিশেষ ভাব-সমতা আছে। বিশ্বপ্রকৃতি কবির কাছে কতক রহস্ত ও সৌন্দর্য প্রকাশ কবেন; কথনো তিনি আনন্দ দেন, আবার কথনো ছঃথও দেন; কিন্তু দেই ছঃখ যে বঙ্গ-রহস্থেরই কপান্তর তাহা কবি বুঝিয়া মনে সান্তনা অম্বভব করেন।

প্রসাদ

এই কবিতাটি মোহিত-সংস্কৃবণ কাব্যগ্রন্থাবলীর "কণিকা"-বিভাগেব প্রবেশক, এবং উৎসর্গের ১২ নম্বব। সঞ্চন্ধিতায় কবি ইহার নাম বাধিয়াছেন প্রসাদ"।

অসীম যিনি তিনি সীমার মধ্যেই প্রকাশ পান। তিনি যে বিরাট্ হইয়াও ক্লুদ্রেব মধ্যে নিজেকে ধরা দেন ইহা তাঁহার পরম প্রসাদ, বিশেষ অমুগ্রহ। কবির ভাব অসীম ব্যঞ্জনায় ভরা, কিন্তু ভাষা সীমাবদ্ধ; সেই সীমাবদ্ধ ভাষার মধ্যে ভাব বে ধরা দিয়া আত্মপ্রকাশ করে ইহা ভাবমন্নের লীলা। কণিকার কবিতাগুলি অতি ক্লুদ্র, কিন্তু ভাহার অর্থ গভীর, যেন শিশিবকণার বুকে স্থর্ষবিম্বের প্রতিষ্ণলন। সুর্য অমিততে জ, তাহাকে ধারণক্ষম একমাত্র আকাশ; কিন্তু সেই স্থ্য অতি ক্লুদ্র শিশিরবিন্দুর মধ্যে নিজেকে ধরা দেয়।

নব বেশ

ইহা উৎসর্গ-পুস্তকের ৪২ নম্বর কবিতা। ইহা মোহিত-সংস্করণ কাব্যগ্রন্থাবলীর সংকল নামক বিভাগের প্রবেশক ছিল।

কবি প্রথম জীবনে রসের চর্চা করিয়াছিলেন, তথন তাঁছার জীবনদেবতার ছাতে ছিল বাঁশী, তার স্থর ছিল মধুর ঘুম পাড়ানো, সেই স্থরে ফ্লন্মের রজ-ক্মলের স্থার ছলিয়া ছলিয়া উঠিছ। তথন কবির জীবনের বসস্তকাল। কিন্তু শেষ জীবনে কবি দেখিতেন যে জাঁছার সেই রসের পালা শেষ করিয়া ভবা ভাদ্রের খনবর্ষা নামিয়া আসিয়াছে, ছদিন বাদল ঘনাইয়া আসিয়াছে, এবং জীবনদেবতা এখন রুদ্রবেশে আসিয়া কবিকে হুন্ধর তপস্তায় প্রবুত্ত হইতে আহ্বান কবিতেছেন, তাঁহার বাঁশী এখন বিষাদে পরিণত হইয়াছে।

এই কবিতাটির সহিত "এবার ফিবাও মোবে" ও "আবির্ভাব" কবিতার ভাব-সাদৃশ্য আছে।

জন্ম ও মরণ

এই কবিতাটি মোহিত-সংস্কবণ কাব্যগ্রন্থাবলীব 'মরণ'-বিভাগে 'প্রবাসের প্রেম' নামে ছাপা হইয়াছিল। ইহা উৎদর্গ-পৃত্তকের ৪৯ নম্বর ও শেষ কবিতা। ইহা ছইটি সনেটের একত্র গ্রথনে গঠিত।

কবি জন্ম-জন্মান্তরবাদী। তিনি যেমন অনেক কবিতার আগে বলিয়া আসিয়াছেন যে তিনি কবি-রূপে মানব-রূপে প্রাণি-রূপে জন্ম হইতে জন্মান্তরে যাত্রা করিয়া বাহির হইয়াছেন—এই যাত্রা অনাদি ও অনস্ত। তিনি বূপ-রূপান্তব পরিগ্রহ করিতে করিতে লোক-লোকান্তবে বিচরণ করিয়া ফিবিতেছেন। তিনি এই জন্ম নিজেকে প্রবাসী বলিতেছেন, এই যে মর্ত্তান্য ইচা তো সামান্ত করেক বৎসরের জন্ম পান্তশালায় বাস, তাহার পরে মেয়াদ ফুবাইলে পরলোকে যাত্রা করিতে হইবে। যে লোকে যথনই তিনি থাকেন তথনই তিনি বিশ্বেশবের প্রেমে বাঁধা পডেন এবং যিনি পূর্ণাৎপূর্ণ তাঁহার প্রণায়ী হইয়া কবিও ক্রমশং পূর্ণ হইতে পূর্ণতর হইয়া উঠিবেন, এবং তাঁহাব সঙ্গীতও পূর্ণতাব স্থ্যে সমৃদ্ধতর হইতে হইতে লোক লোকান্তরে ধ্বনিত হইয়া চলিবে।

১৩ নম্বর

"আজ মনে হয় সকলেরি মাঝে ভোমারেই ভালোবেদেছি।"

এই কবিতাটি মোহিত-সংস্করণ কাব্যপ্রছাবলীর 'ব্দীবনদেবতা'-বিতাগের প্রবেশক। এই কবিতাটির সহিত অনস্ত প্রেম কবিতার বিশেষ ভাব-সাদৃশ্য আছে, তাছা আমরা পূর্বে দেখিয়া আদিয়াছি। এই কবিতা-সৰদ্ধে স্বয়ং কবি বলিয়াচেন—

"বিনি আমার সমন্ত ভালোমন্দ, আমার সমন্ত অমুক্ল ও প্রতিকূল উপকরণ লইয়া আমার জীবনকে বচনা কবিরা চলিবাছেন, তাঁহাকেই আমার কাব্যে আমি "জীবনদেবতা" নাম দিয়াছি। তিনি যে কেবল আমাব এই ইহজীবনের সমন্ত থণ্ডতাকে ঐক্যদান করিয়া, বিশ্বের সহিত তাহাতে সামল্রক্ত স্থাপন করিতেছেন, আমি তাতা মনে করি না—আমি জানি, অনাদি কাল ছইতে বিচিত্র বিশ্বত অবস্থার মধ্য দিয়া তিনি আমাকে আমার এই বর্তমান প্রকাশের মধ্যে উপনীত কবিরাছেন,— সেই বিশ্বের মধ্য দিয়া প্রবাহিত অভিস্থধাবাব বৃহৎস্কৃতি তাহাকে অবলম্বন কবিয়া আমাব অগোচরে আমার মধ্যে রহিরাছে। দেই জল্ল এই জগতের তকলতা পশ্বপন্ধীর সল্লে এমন একটা পুরাতন ঐক্য অমুচব কবিতে পারি—সেই জল্ল এত বড় বহল্ডময প্রকাণ্ড জগতেক অনাশ্বীয় ও ভীবণ বলিয়া মনে হয় না।'—বঙ্গভাষাব লেধক।

৪০ নম্ব

"আলোকে আসিয়া এরা লীলা করে যায়, আঁধারেতে চ'লে যায় বাছিবে।"

মহাকবি শেকসপীয়ার বলিয়াছেন যে---

All the world's a stage

And all the men and women merely players

They have their exits and entrances,

And one man in his time plays many parts,

His acts being seven ages

-As You Like It, Act II, Scene vii Merchant of Venue, Act, I, Scene 1

আমাদেব মহাকৰি রবীক্রনাথও বলিতেছেন যে এই বিশ্বসংসারে মানবের।
সব নট ও নটী মাত্র, বিশ্বসংসার তাহাদেব রক্তমঞ্চ, তাহারা বিধাতার বচিড
বিশ্বনাট্যের অভিনয় করিয়া চলিয়াছে। কবি নিক্ষেও একজন অভিনেতা।
যে তন্মর হইয়া অভিনয় করে সে অনেক সময়ে তুলিয়া যায় যে সে অভিনয়
করিতেছে, অভিনয় বিষয় ভাহার কাছে সত্য বলিয়া প্রভিভাত হয়। কিছ
যাহারা দর্শক মাত্র, যাহারা নির্লিগ্রভাবে কেবল অভিনয় দেখিতেছে তাহার।
সমস্ত অভিনয়কে অভিনয় বৃলিয়া বৃয়িতে পারে, এবং অভিসয়ের বিসয়ের
ভাৎপর্য এবং উদ্দেশ্যও হদয়লম্ম করিতে পারে। ভাই কবি নিজেকে সংসারে

নিশিশু হইশা সংসার-লীলা দেখিয়া বিশ্ববিধানের তাৎপর্য ও উদ্দেশ্য উপলব্ধি করিতে বলিতেছেন।

এই কবিতাটি মোহিত-সংস্করণ কাব্যগ্রন্থাবলীর নাট্য-বিভাগেব প্রবেশক ছিল।

৪৬ নম্বর

"সাঙ্গ হয়েছে রণ।"

ইহা মোহিত-সংশ্বরণের কাব্যগ্রন্থাবলীতে নারী-বিভাগের প্রবেশক ছিল।
কবি বলিতেছেন যে পুরুষ কেবল জীবন-সংগ্রামে ব্যাপৃত থাকিয়া অনেক
উপকরণ সংগ্রহ করে, বিদ্ধ সেই সব উপকবণকে যথাবিগ্রন্থ করিয়া স্থলর
শোভন করিতে পারে নারী, এবং পুক্ষের রণক্ষত নারীই নিজের কর্মণা-ধারায়
ধৌত কবিয়া পুক্ষেব রণকান্তি অপনোদন কবিতে পারে। নারীই পুরুষের
গৃহিণী, সেবিকা, কল্যাণদান্তিনী, প্রণয়িনী। নারী পবিত্র নির্মল মঙ্গলমন্ত্রী।
জীবন-নাট্যের শেষে পুরুষেব যথন সংসাব রক্ষমঞ্চ হইতে বিদায় লইবার সময়
আসে তথন নারীই তাহাকে চোখেব জলে অভিষিক্ত কবিয়া বিদায় দেয়,
এবং মবণাস্থকালেও সেই নারীই পুর দেব স্মৃতি বক্ষে বহন কবিয়া বিধবা-বেশে
আঞ্চারা সেচন কবিয়া পুরষেব তপণ কবে।

১৫ নম্বৰ

"আকাশ-সিদ্ধু মাঝে এক ঠাই কিদেব বাতাস লেগেছে,— জগৎ-ঘণী জেগেছে।"

মোহিত-সংস্করণ কাব্য গ্রন্থাবনীর 'প্রেম' নামক বিভাগের প্রবেশক কবিতা।
কবি বলিতেছেন যে জ্বগৎ গতিশীল, সমস্ত সৃষ্টি চক্রাবর্তে কুগুলী আকাবে
ঘূলিত হইয়া চলিম্মুছে, কিন্তু চক্রের নেমি ঘূরে, তাহার নাভি ও ধুরাব
মধ্যবিন্দু ছির ইইয়া থাকে, সেই মধা বিন্দু ইইতেছে জ্বগং-গন্ধী আসনশত্দল—বিনি সকল স্কুন্দরের সৌন্দর্যরূপিনী, যিমি উর্বলী, ভিনি অন্তপল

ব্দপরিবর্তনীয়, তাঁহার প্রকাশ প্রেমে। ব্দগতের সব কিছু অনিত্য, কেবল প্রেম নিত্য পদার্থ, তাহারই দারা অসীমের আভাস মনে সঞ্চারিত হয়। প্রেমে প্রশান্তি, প্রেমে কল্যাণ।

প্রেম যে অবিনাশী ভাহা কবি তাঁহার সাজাহান কবিতার বলিরাছেন, ইহা আমরা পরে দেখিতে পাইব।

২০ নম্বর

^{*} হয়ারে তোমার ভিড ক'রে যারা আ**ছে**।"

এই কবিতাটি মোহিত-সংস্করণ কাব্যগ্রন্থাবলীর 'কাব্যক্থা' বিভাগের প্রবেশক।

এই কবিতার কবি তাঁহার আরাধ্যা জীবনদেবতা বা সৌন্দর্যশন্ধীকে সম্বোধন করিয়া তাঁহার প্রসাদ প্রার্থনা করিতেছেন। বিশ্বপ্রকৃতিব কাছে কবি নিজেকে সমর্পণ করিয়া কেবল আনন্দের রসের সৌন্দর্যের সাধনা করিতে চাহেন। এই কবিতার সহিত চিত্রা-পৃত্তকের 'আবেদন' কবিতার ভাব-সাদৃশ্য আছে। আবেদন কবিতার ব্যাখ্যা দুষ্টব্য।

১৮ নম্বর

"তোমার বীণার কত তার আছে_।"

এই কবিতাটি মোহিত-সংস্করণের গ্রন্থাবলীতে 'প্রক্বতগাথা'-বিভাগের প্রবেশক ছিল।

কবি প্রকৃতির সৌন্দর্য মাধুর্য বৈচিত্রা হইতে নিজের কাব্যপ্রেরণা লাভ করেন, এবং প্রকৃতির স্থরের সঙ্গে নিজের স্থর মিলাইরা তুলিতে চেটা করেন। প্রকৃতি বেষন এক দিকে কবিকে অমুপ্রেরণা দান করেন, অপর দিকে কবি আবার প্রকৃতিকে নিজের বর্ণনার হারা স্থান্তরত্ব ও স্থান্তত্তর করিরা পরিবাক্ত করেন। কবি প্রকৃতিকে বলিতেছেন নৈ, তোমার বীশার সঙ্গে আবার মনোবীশার স্থর মিলাইরা লইব, এবং আবার মুদ্ধ-নীপ জালিয়া

আমি তোমার যে আরতি করিব সেই আলোকের দীপ্তি তোমার মুথে পড়িয়া তোমার মুখ উজ্জ্বল ও প্রাসন্ন করিয়া তুলিবে।

৪৪ নম্বর

"পথের পথিক করেছ আমার, সেই ভালো, ওগো দেই ভালো।"

মোহিত সংস্করণ কাব্যগ্রন্থাবলীর 'হতভাগা'-বিভাগের প্রবেশক কবিতা।

জগতে মামুষ পদে পদে নিরাশ হয়, আঘাত পায়, অপমান সহু করিতে বাধ্য হয়, প্রিরবিয়াগে ব্যথিত হয়, কত বিপদে পডে। কবি বলিতেছেন যে, যত বডই বিপদ ও লাজনা হোক না কেন, তাহার কাছে নত হইয়া পরাজ্য়য় স্বীকার কয়া মনুষ্যথের অপমান। অতএব 'হাস্তমুথে অদৃষ্টেরে কর্ব মোরা পরিহাদ।' মানুষকে বিধাতাব বিধান মঙ্গলময় বলিয়া মানিয়া লইয়া স্ব-শক্তিতে সকল আঘাত সহু করিয়া অজেয় ভাবে জীবনধাত্রায় অগ্রসর চইতে হহবে।

২ নম্বর

"কেবল তব মুখের পানে চাহিয়া"

মেভিত-সংস্করণ কাব্যগ্রস্থাবলীর প্রথম বিভাগ ছইতেছে 'বাত্রা'। এই কবিতাটি সেই 'বাত্রা'-বিভাগের প্রবেশক ছিল।

কবি তাঁহার কাব্যক্ষীবনে যাত্রা করিভেছেন। এই যাত্রার আরম্ভ অভ্যন্ত ভভ-স্টনা করিভেছে, কিন্তু চিরকাল যদি ইহা শুভকর নাও হর তথাপি তিনি সমন্ত নিরাশা ও অনাদর অগ্রাহ্য করিয়া কেবলমাত্র জীবনদেবতার নিদেশিঅমুসারে চলিবেন, এবং নিজের জীবনের বিফলতার জন্ত কাহারও কাছে
কোনো অভিযোগ করিবেন না।

"অ'াধার আসিতে রজনীব দীপ জ্বেলছিন্ন যতগুলি—"

এই কবিভাটি মোহিত-সংস্করণ কাব্যগ্রন্থাবলীর নিক্রমণ-বিভাগের প্রবেশক, কিন্তু ইহা উৎসর্গে স্থান পায় নাই কেন জানি না।

কবি অন্ধকার বন্ধনীতে ক্বল্লিম আলোক আলিয়া ক্ষুদ্র গৃহ উচ্ছল কবিতে প্রশ্নাস কবিয়াছিলেন, কিন্তু দিবসের আগমনে তিনি দেখিলেন যে বাহিরে আলোকের বন্ধাপ্রবাহ বহিয়া চলিতেছে। তাই তিনি রন্ধনীর দীপ নিভাইয়া বাহিরে বৃহৎ উন্মৃক্ত ক্ষেত্রে আসিতে চাহিতেছেন, নিজের সঙ্কীর্ণ মনঃক্ষেত্রে তিনি বে ছিন্নতন্ত্রী বীণা বাজাইবার চেষ্টা করিতেছিলেন তাহা ফেলিয়া সমস্ত বিশ্বচরাচবের স্করে স্থ্য মিলাইতে চাহিতেছেন।

৬ নম্বৰ

"তোমায় চিনি ব'লে আমি করেছি গরব লোকের মাঝে।"

এই কবিতাটি মোহিত-সংস্করণ কাব্যগ্রন্থাবলীর 'সোনাব তবী'-বিভাগেব প্রবেশক চিল।

ভূবন-স্থলর অথিল-রসামৃত-মৃতি যিনি তাঁহাকে কবি সম্বোধন কবিয়া বলিতেছেন—আমি আমার রচনাব মধ্য দিয়া ভোমাকে লোক-সমাজে প্রকাশ করিবার অনেক প্রয়াস কবিয়াছি। সেই জন্ম লোকে আসিয়া আমাকে জিজ্ঞাসা করে যে ভূমি যাহাকে প্রকাশ করিবার চেটা কবিতেছ সে কে? কিন্তু ভূমি তো অনির্বচনীয়, তোমার পরিচয় আমি কেমন কবিয়া দিব প্রমায় অক্ষমতা দেখিয়া লোকে আমাকে দোষী কবে, আর ভূমি তাহা দেখিয়া হাস্ত করো যে আমাব দোষ কি, আমি কেমন করিয়া ভূবন-স্থলরকে অধিল-রসামৃত-মৃত্তিকে লোকের সঙ্গে পরিচয় করাইয়া দিতে পারিব।

আমি তোমাকে প্রকাশ কবিবার জন্ম যত বার্থ প্রস্তাস করিয়াছি, তাহার দারা তোমার কতটুকু পরিচয় দিতে সমর্থ হইয়াছি, তোমার অসীম অনপ্র রপ্তক্তে তব্ধ নির্ণয় করিতে আমি তো পারি নাই। কাজেই আমার রচনাব মধ্যে একটি অস্পষ্ট আভাস মাত্র দিতে পারিয়াছি। গোকে তাহার স্পষ্ট অর্পাই আমাকে উপহাস করে। কিছু তুমি তো আমার প্রসাদের বুলা জানো, ভাই তুমি লোকের দূষণ দেখিয়া হান্ত করো।

তোমাকে চিনি বলাও যেমন যায় না, তেমনি তোমাকে চিনি নাই বলাও যায় না। তোমাকে তো আমি ক্ষণে ক্ষণে বিশ্বশোভার মধ্যে দেখিয়াছি, এক তোমার সেই অপরূপ আবির্ভাবকে কথাব বন্ধনে ও গানের হুরে ধরিবার প্রয়াস পাইয়াছি, কত নব নব হুন্দর হুন্দর ছন্দ রচনা করিয়া তোমাকে অলঙ্কারের বন্ধনে ধরিতে চাহিয়াছি। কিন্তু সংশয় কছুতে যুচে না যে তুমি আমাকে ধরা দিলে কি

প্ কিন্তু যে দ্রাপনা, যে অ-ধরা, তাহাকে ধরিব কেমন করিয়া, অতএব—

কাজ নাই, তুমি যা খুশা তা করো, ধবা নাত দাও, মোর মন হরো, চিনি বা না চিনি, প্রাণ উত্তে যেন পুসকিং।

১৯ নম্বর

'হে ব।জন্, তুমি আমারে বাঁশী বাজাবাব দিয়েছ যে ভার তোমার সিংহ-ছন্নারে—"

এই কবিতাটি মোহিত-সংস্করণ কাব্যগ্রন্থাবলীব 'লোকালয়'-বিভাগেব প্রবেশক।

বিষেশ্বর কবিকে তাঁহাব বিশ্বভবনেব সিংহছ্য়ারে বাঁশী বাজাইবাব ভার দিয়া পাঠাইয়াছেন। কবি সমস্ত মানব-সমাজের মুখপাত্র হইয়া সকলের মনের কথা প্রকাশ কবিবার ভাব পাইয়াছেন—বিশ্বভূবনেশ্ব তাঁহাকে আদেশ করিয়াছেন—

াহ দব মচ বান মক মৃপে

'দতে কৰে ভাষা।

কবিও সেই আদেশ স্থীকাব কবিয়া লইয়াছেন— নাজুক হৃদয় যে কথাটি নাচ কবে স্থরের ভিতবে লুকাইয়া কহি তাহারে।

যাহারা সাধারণ লোক, যাহারা সংসাব-হাটে কেবল বোঝা বহিয়া চলে, যাহারা বিশ্বশোভার দিকে দৃক্পাত করিবার মতন মন ও অবসর পার নাই, ভাছারা কবির বাঁশীর স্থর ভনিয়া বোঝা ফেলিয়া হাটের কথা ভূলিয়া সেই গান ভনিডে বলৈ, এবং তাহাদের ভখন চেতন। হয়—ভাহারা ভাবে আমাদের স্বস্তই তো সুল কুটিভেছে, পাধী গাহিতেছে, জগতে আনন্দ-মেলা বসিয়াছে।

কবি এই আনন্দ-বার্তা বহন করিয়া লোকালয়ের দ্বারে দ্বারে বিরাষবিহীন হুইয়া ভ্রমণ করিতে চাহেন, যাহারা নিঞ্জেরা নিজেদের মনোভাব পরিব্যক্ত করিতে পারে না, তাহাদের সকলের হুইয়া কবি স্থুও হুঃও আনন্দ সৌন্দর্যবোধ প্রণয়কথা প্রকাশ করিয়া চলিবেন। কবি হুইতেছেন সতা শিব স্থুন্দরের পর্গদ্বর—আনন্দ-দৃত্ত।

हिवी

"না জ্বানি কারে দেখিয়াছি, দেখেছি কার মৃথ। প্রভাতে আজ পেয়েছি তার চিঠি!"

এই কবিতাটি 'চিটি'-নামে ১০১০ সালের ভাদ্র মাসের বঙ্গদশনে ১১০ পৃষ্ঠার প্রকাশিত হয়। এই কবিতাটি কবির অত্যত্তম কবিতার অন্তম। ইছা উৎসর্গ-পুত্তকের ১১ নম্বব কবিতা।

ইহা মোহিত-সংশ্বরণ কাবাগ্রন্থাবলীর মধ্যে 'রূপক'-বিভাগে স্থান পাইরা ছিল। কিন্তু ইহাকে রূপক মনে না করিলা সাধারণ নর-নারীর প্রণরের দিক হইতেও দেখা যাইতে পারে। 'আবেদন' কবিতার মতন ইহাতে যে মফুশ্য-ছদরের রস-পরিচর পাওয়া যায় তাহা মহামূল্য।

মনে করা যাক—একটি নিরক্ষরা মুদ্ধা রমনী বহু দিনের প্রতীক্ষার পরে একদিন সকালে উঠিয়া তাহার প্রিয়তমের পত্র পাইয়াছে। সে তো পড়িতে জানে না, কোন্ পণ্ডিতের কাছে সেই চিঠি পড়াইতে যাইবে ? ইহাতে তো তাহার একান্ত আপনার হৃদয়পুরের গোপন প্রাণয়-সন্তামণ অপরের কাছে প্রকাশ হইয়া পড়িবে। আর সে তাহার প্রিয়তমের কথা যে-রকম ভাবে বৃষিতে পারিবে, সামান্ত কোনো কথার মধ্যে যে অনস্ত মাধুরী সে ধরিতে পারিবে, সেই পণ্ডিত তাহা কেমন করিয়া পারিবে, তাহার ভো প্রেমের দৃষ্টি নাই। প্রিয়তমের পত্র পাইয়াছি, এই বোধের আনন্দে তো ক্লগৎ মধুমার হইয়া সিয়াছে; এবং এই না-বোধা নিপি সে মাধ্যার কোলে বৃক্ষে লইয়া যে

অনির্বচনীয় অনমূভ্তপূর্ব আনন্দ বোধ করিবে, ভাষারই আভাস সে বিশ্বচরাচরে প্রতিফলিত দেখিয়া ভরপূর হইয়া থাকিবে। সে নিজেব মনের করনা ও মাধুরী মিলাইয়া এই লিপিতে যে ভাববস সঞ্চাব করিয়াছে, ভাষা যদি সেই লিপির মধ্যে বাত্তবিক না থাকে, তবে তো ভাষার স্থপপ্প নই হইয়া যাইবে। অতএব এই লিপি পডিয়া বৃথিবার কাজ কি? আমার প্রিয়তম আমাকে পত্র লিথিয়াছেন, এই লাভটুকুই আমার পরম ও চরম লাভ।

এই কবিতাকে রূপক মনে করিয়া ব্যাখ্যা করা ঘাইতে পাবে। বিশেষরের সৌন্দর্যলিপি আমাদেব কাছে নিত্য-নিবস্তর আসিতেছে, আমাদেব প্রত্যেকের বসামুভূতির মধ্যে তাহাব তাৎপর্য নিহিত রহিয়াছে। সেই সহজ অহভবকে আমরা যদি গুরু পুৰোহিত মোলা পয়গম্বব ইত্যাদির ব্যাখ্যা দিয়া এবং শাস্তের নিদেশ-অমুসারে বৃঝিতে চাই, তবে তো তাহা পরেব মুথে বসাম্বাদ করা হইল, তাহাতে আমার নিজেব পবিভৃপ্তি কোথায় সভতএব গুৰু মোলা, কোরান পুরাণ সব মাথায় থাকুন, আমাব সদক্ষেশ্বেব সহিত কেবল আমার পেমেব যোগাই যথেষ্ট।

এই দ্ধপক ব্যাখ্যা ভালো কৰিয়া বৃঝিতে হুইলে 'পূরবী' কাব্যেব "লিপি" নামক কবিতা এবং Robert Browning এব Fears and Scruples নামক কবিতা দুইবা।

এবং---

বত বন্ধ কৰ সাধা বলটা
পূশা ক স্থানত লা তেবী
গন্ধ ভব ভব ৰ'দে লগাবা,
'চত জগাবা নেরী।
বৃপন্ধে ২০কো কিবা উদ্ধানা,
কা পাড় দূৰ সমাবা।
গাবা গোক্ষা স্থান্ন মাববী
মরণ সা রৈন আবা।
কাগজ কালা হরক উজালা
ক্যা ভারী থড় পারা।
ইত্তী রৌশক ক্যোঁ রে বল্টা,
ভুনি রাম্ম ভুলাবা॥
বল্ক বল্ক নেঁ থড় 'চ'ক্লী,
মহাক্ষ হন্দ ক্মান।

---कानकान वर्षनी।

শ্বকালবেলা রখন আদিলে হে দৃত, পোশাক সোনালি তোমার। একটুকু
যথন গন্ধের নিংখাদ লাগাইলে, চিত্ত জাগাইরা তুলিলে আমার। রবি রশিতে
আমাকে করিল উদাদ, কী পীডা দৃর অন্তরে প্রবেশ করিল। গাছিল গেরুরা
স্বর—বৈরাগ্যের স্বব—পশ্চিম দিক্, মরণেব স্থায় রজনী আদিল। কাগজ
কালো, হরফ উজ্জন, কী স্থার লিপি পাইলাম। এত জাক্জমক কেন হে
দৃত, তুমিই যে শ্বতিবিভ্রম ঘটাইলে।" দৃত উত্তর দিতেছেন—"ভারী উজ্জন
সভা, বিরাট্ উৎসব, তুমিই একমাত্র নিমন্ত্রিত অতিথি। বিশ্বচবাচরে এই
লিপি প্রসাবিত হইরা রহিরাছে, গবিত আমি এই বার্ডবেহ বলিরা।"

পুত্তক-প্রকাশের তারিথ পুত্তকের পরিচরপত্তে নাই। কবি যে উৎসর্গ করিয়া কবিতা লিথিয়াছেন তাহাতে তারিথ আছে ১৮ই আষাঢ় ১৩১৩। ইহার অধিকাংশ কবিতাই শান্তিনিকেতনে কবির যে বাড়ী আমাদের কাছে 'টং' নামে পবিচিত ছিল ও এখন যাহার নাম হইয়াছে 'দেহলী' সেই ছোট বাড়ীতে বদিরা লেখা। কবিতাগুলি অন্ধ সময়ের মধ্যে লিখিত।

এই কাব্যখানির একটি কবিতা 'কোকিল' ছাড়া আর সমন্ত কবিতাই ভগবং-অফুভূতি অথবা ভগবং-ভক্তিব কথা। যে ভগবং-অফুভূতি নৈবেম্বের কবিতার মধ্যে বৃদ্ধির ক্ষেত্রে এবং জ্ঞানের ক্ষেত্রে ছিল, তাহা এই খেরার কবিতার সদয়ের ক্ষেত্রে এবং ভক্তির ক্ষেত্রে আসিয়া উপনীত হইয়ছে। ইহাব পরিণতি পবে দেখিতে পাওয়া যায় গীতাঞ্চলি, গীতিমাল্য ও গীতালির কবিতার ও গানে।

এই পুস্তকের সমালোচনা ১৩১৩ সালের অগ্রহারণ মাসের প্রবাসী পত্তে প্রকাশিত হয় ৷ তাহাতে সমালোচক এই বই-সম্বন্ধে নিথিয়াছিলেন—

''সমালোচ্য কবি ভাগুলি যে স্কলের কাছে তেমন স্পষ্ট হইবে না, কবি ভাহা নিজেই বুঝিবাছেন, এবং বুঝিবাছেন বলিয়াই উৎস্গপত্তে এই কাব্যকে লজ্জাবতা লভার সহিত তুলনা করিয়া বলিয়াছেন—

> যত্ন ভবে থুঁজে থুঁজে তোমাৰ নিতে হবে বুঝে, ভেডেঃ দিতে হবে বে তার নীবৰ বাৰুলতা!

ে তিক 'পারের ঘাটেব কিনারায' না আহ্বন, কিন্তু 'বরেও নতে, পারেও নতে, ঘে জন আছে মাঝখানে' অথবা 'দিনের আলো যাব ফুরানো, মাঝের আলো অকুদ না', উথের। এই কাবোব নদ বেশা অনুসন কবিতে পারিবেন। যাহাদের তবী অনেকেব তরীব দক্ষে একএছিল, এক বন্দরে অনেক কাল ছিল, তাহারা যথন খেখিবে যে এখন কত তরী অস্তাচলে তীরের তলে, ঘন গাছের কোল খেঁবে, ছাযার যেন ছাযার মতো ধার, তাহাদের প্রাণে একটু বেশী রক্ষ বাধিবে। যাহাদের 'শেব হ'রে গেছে জলভরা আজ', তাহারাই 'বাটের পণ' তাকাইরা কাদিবে।"

এই কাব্যের মধ্যে যে একটি বিশেষ রস আছে তাহা অতি মধুর, হৃদর-গ্রাহী। কবির ভক্তির মধ্যে কোনো উচ্ছাস বা আডিশযা নাই, অথচ অমুভূতি আছে গভীর। সেই জন্ত এই কবিতাগুলি মনকে মুগ্ধ করে। আধ্যাত্মিক রসবোধের প্রকাশ কবির যে যে কাব্যে ইইয়াছে ভাহাদের সকলের মধ্যে কবিত্ব-হিসাবে 'থেয়া' কাব্য শ্রেষ্ঠ। ইহার দিরিক রপটি অস্ত্র সমস্ত কাব্য হইতে ইহাকে স্বাতন্ত্র্য দান করিয়াছে। 'গীতাঞ্জলি' 'গীতিমালা' 'গীভালি' 'গান' 'নৈবেন্ত' ভত্ত, কিন্তু 'থেয়া' কবিতা এবং উচ্চশ্রেণীব কবিতা। ইহার মধোই কবির গূঢবাদ বা মিষ্টিসিক্তম্ প্রথম আত্মপ্রকাশ করিল। এই জন্ত অনেকের মতে—

"খেয়া এক অপূর্ব কাব্য। নৈবেছে ঘাছা তত্ত্ব ও ভাবরূপে অভিব্যক্ত ইইয়াছিল, দেই ভগবংপ্রেম ও ভগবানের সঙ্গে মিলনাকাজ্ঞা খেরার বিচিত্র রসমাধুর্যে পরিণত ছইরাছে। ক্ষণিকার দেখেছি কবির চিত্তে পরমন্ত্রন্দবেব প্রতি অফুরাগ জেগে উঠেছে। নৈবেছে দেখেছি, তিনি যে তাঁবই এ প্রত্যের কবিব ভিত্তবে দৃত হ'রে দেখা দিয়েছে। কিন্তু প্রকৃত ভক্ত ভাবে ববীন্দ্রনাথকে প্রথম দেখি খেরাতে। বৈষ্ণব কবিব রাধাব প্রতীক্ষার চাইতে কে ভিস্করে নিবিভত্তর এই খেরার প্রতীক্ষা।" —ববীক্রকাব্যপাঠ।

রবীক্রনাথ কর্মকে অতিক্রম করিয়া জীবনকে অনন্তের আনন্তময় বসসমুদ্রে বিলীন করিয়া দিবার জন্ত এই থেয়াব ঘাটে উপনীত হইয়াছেন। কবি 'সব পেয়েছিব দেশে' তাঁহাব কুটীর বাঁধিতে চলিয়াছেন। নেবেল্লে কবির নিকটে ভগবানের ঐর্যব্রপ প্রকাশিত—দেখানে ভগবান কবিব প্রভু দেবতা স্বামী। খেয়ায় ভগবান্ কবির কাছে বর, ভিখারী। এখন প্রকৃতি বিশেখবেব লীলার ক্ষেত্র, আর জীবান্মা-প্রমান্থার প্রেমের ক্ষেত্র।

রবীজ্ঞনাথ এই কাব্যথানি তাঁহার বন্ধু জগদীশচন্দ্র বস্থকে উৎসগ কবেন। জগদীশচন্দ্র লজ্জাবতী লতার গাবে তড়িৎ স্পর্ণ করাইয়া প্রমাণ কবেন যে আপাতপ্রতীরমান জড়ধর্মী উদ্ভিদের মধ্যে প্রাণচৈতত আছে। তাই কবি নিজের কবিতা-সম্বন্ধে লিখিয়াছিলেন—

বৰু, এ যে আমার লক্ষাবতী লতা /

বাত্তবিক প্রত্যেক কবির কাব্যই লজ্জাবতী লতাব মতন, বিশ্বায়ণ্ডবের ভিতর দিয়া কৃষি ধাহা চিত্তে আহরণ করেন তাহাই সেই লতার পত্তে পূপে রঙে গল্পে রসে বৈচিত্র্যে পরিণত হয়। যিনি পাঠক তিনি যদি দরদ দিরা উহার মর্বকথা বৃত্তিতে চেটা করেন তবেই উহার প্রক্রুত পরিচয় পাওয়া তাঁহার পক্ষে সপ্তব হয়। তাই কবি বন্ধ-পাঠককে বলিতেছেন— বন্ধ, আধান তোমার ভড়িৎ-পরশ, হরব দিয়ে দাও,— করুণ চকু মেলে ইহার মর্ম পানে চাও।

তুমি জ্ঞানো ক্ষুদ্র যাহা
ক্ষুদ্র তাতা নয,—
সতা সেধা কিছু আছে
বিশ্ব যেগা বয়।

খেরার কবিতাগুলিতে গুঢ়বাদ থাকাতে অনেকগুলি কবিতা ব্লপক হইরা উঠিয়াছে।

শেষ খেয়া

এই কবিতাটি ১০১২ সালের আষাঢ় মাসের বঙ্গদর্শনে ১৪২ পৃষ্ঠায় প্রথম প্রকাশিত হয়। ইহার অন্তর্নিহিত ভাব—

কবি ভগবানের চরণে তাঁহার আকৃল প্রার্থনা জানাইতেছেন—আমি এতদিন সংসারে যে-সব কাজের নেশায় মন্ত ছিলাম, আমার সে নেশা কাটিয়া গিয়াছে। হে ভগবান, আজ্ব আমি তোমার চরণে মিলিত হইবার জন্ম বাাকুল। কিন্তু ডোমাকে পাইতে হইলে আমাকে এই বাসনাসঙ্গল জীবনের পরপাবে ঘাইতে হইবে। কিন্তু হায়, আমি তো সে পথ চিনি না। ইহার আগে যে-সব মনীষী পরলোকের—বাসনার পরপারের— পথে অগ্রসব হইয়ছেন, তাঁহাদের কেহ যদি দয়া করিয়া আমার হাত ধরিয়া লইয়া যান, তাহা হইলে হয়তো আমি যাইতে পারি। কিন্তু তোমার দয়া ভিন্ন সেই উপায়ও পাওয়া হৃদ্ধর। সংসারের আশা উল্লম সব আমার স্কুরাইয়া গিয়াছে; এখন সংসার আমার কাছে একটা বিরাট্ট অন্ধ্রণার কারাগায় বলিয়া মনে হইতেছে; আমি আর এই অন্ধ্রকারে থাকিতে চাই না। আমার লইয়া চলো হে প্রভু, আমার চিন্ত-আলোকের রাজ্যে,—প্রভু, লইয়া চলো আমার হাত ধরিয়া।

প্রথম কলি

ঘুমের দেশ পরলোক। মাহ্য যথন ঘুমাইয়া পড়ে তথন তাহার মনে হিংসা ছেম প্রীতি অন্থবাগ বাসনা বৈরাগ্য প্রভৃতি কোনো চিন্তাই থাকে না, সাংসারিক কাজের ব্যস্ততা, সফলতার আনন্দ, বিফলতার ত্বংথ প্রভৃতি কোনো উদ্বেগ থাকে না, একটা শান্ত দ্বির নির্বিকার ভাবে হৃদর পূর্ণ থাকে, কবির করিত পরলোকও সেইরূপ—সেধানে কোনো চিন্তা নাই, শোক নাই, আনন্দ নাই, উদ্বেগ নাই, আছে কেবল অনাবিল শান্তি ও বিপুল বিবতি।

এথানে কবি তাঁহার হৃদয়ের পরলোক-বিষয়ক চিস্তাকে প্রাণ-মাতানো দঙ্গীতের দঙ্গে তুলনা করিয়ছেন। আমরা বখন মধুর কঠেব মধুরভাবপূর্ণ গান শুনি, তখন আমরা আত্মহারা হইয়া নিজের নিজের কঠ বাের কথা প্রায়ই ভ্লিয়া যাই। কবির মনে পবলোকের চিন্তা জাগিয়ছে, দেই চিস্তায় তাঁহার সমস্ত মন প্র্বিহয়া গিয়াছে, ইহলোকেব কাজ তাঁহার আমর ভালো লাগিতেছে না। তাই তিনি বলিতেছেন—আজ পরলোকের চিন্তা আমাকে আমাব আরক যাবতীয় সাংসারিক কাজ হইতে বিবত করিতেছে।

দিনেব শেষে কাজ-ভাঙানো গান—আমার জীবনের গণনা-কবা দিন কুরাইয়া আসিয়াছে। আজ কর্ম ব্যস্ত জগতেব কোলাইল ভেদ করিয়া শাস্ত স্থির এক সঙ্গীতের ধাবা পরলোক হইতে ভাসিয়া আসিতেছে এবং আমার শ্রবণ পরিতৃপ্ত করিতেছে। কী প্রাণস্পর্শী কা মধুর সেই সঙ্গীত। দেই সঙ্গীত শুনিয়া আমি সকল কাজ—বাহাতে এতদিন লিপ্ত ছিলাম সেই সব কাজ— ভুলিয়া গিয়াছি।

দ্বিতীয় কলি

আমি দেখিতেছি সংসাবের কর্তা বধাবথ সমাপন করিয়া জীবন-সায়াক্টে ছই-একজন করিয়া অনেক মহাপুরুষ পরলোকের পথে চলিয়াছেন। তাঁহাদের গতি কী ক্রত, কেমন বাগাহীন। এই মহাপুরুষগণের মধ্যে হয়তে। অনেকেই আমার স্থানেবাসী, এমন কি আমার আস্থীয়, আমার স্থান, এবং আমারই সমানধর্মা আছেন। কিন্তু আমি তো দ্র হইতে তাঁহাদের চিনিতে পারিতেছি না। তাঁহরো কোন্ পদ্ধতি অবলম্বন করিয়া এরপ সহজে স্থান্থেল অবাধ পতিতে অপ্রসর হইতেছেন ভাহাও তো আমার চিন্তার স্থান্থভাবে প্রতিভাত হইতেছে না। এসো হে জগবান, আমার জীবনের শেষ ক্ষণে ভূমি আমাকে তোমার ক্ষণার রাজ্যে লইয়া চলো।

তৃতীয় কলি

যে যাহার গন্তব্য স্থানে চলিয়া গিয়াছে। আমি পথের মাঝে পড়িয়া আছি। আমাকে কে আশ্রম দিবে ? আমি আমার ক্ষমতা প্রতিপত্তি রুথা নষ্ট করিয়াছি। এখন তাহার জন্ম হংথ করিতেও লজ্জা বোধ হইতেছে—নিজের দোষেই যাহা হারাইয়াছি তাহার জন্ম কাহার কাছে নালিশ করিব ? আমার আশা উপ্তম সব ফুরাইয়া গিয়াছে, কিন্তু হায়, শান্তি তো পাইলাম না। আজ্জ তাই নিরুপায় হইয়া পথে বিস্ঝা আছি। হে ভগবান্, আমাকে দয়া করিয়া তুমিই লইয়া চলো।

যাহাদের প্রাণে উত্তম, দেহে শক্তি এবং হৃদরে আশা আছে, তাহারা আনন্দে উৎসাহে সংসাবেব কাব্দে আপনাদিগকে লিপ্ত রাখিয়াছে, আর বাহারা ভগবানের করণাব দান, তাহাদেব শক্তি উত্তম প্রতিভা প্রভৃতিব সদ্ব্যবহার করিয়াছে, তাহাদের পরলোকগমনের পথ নিজ্টক; তাই তাহারা অবাধে জীবনেব পরপারে চলিয়া গিয়াছে। কিন্তু সংসারেব কন্টব্য সাধন করিবাব মতন যাহার সাহদ উত্তম ভরসা কিছুই নাই—ভগবানের কর্কণার দান যে অপচয় করিয়াছে—তাহাব সংসারে আর স্থান কোথায়? নিবিয়ে পরলোকে যাইবার মতো সম্বল্য তাহার কিছুই নাই। আমাব অবস্থা আছে সেই রকম হইয়াছে—আমি না পারিতেছি কেবলমাত্র সাংসারিকতা বৈষ্মিকতাকে আঁক্ডাইয়া ধরিয়া নিশ্চিম্ব মোহে আবিষ্ট হইয়া থাকিতে, আর না পারিতেছি পরলোকের উপযোগী আধ্যাত্মিক উন্নতি-সাধন করিতে—সংসার ও পরশোক এই উভয় লোক হইতেই আমি বঞ্চিত। হে ভগবান্, "তুমি ছাড়া আর কে আছে আমার!"—আমার কেহ নাই বা কিছুই সম্বল এবং অবলম্বনও নাই।

গাছে যথন ফুল ফুটে তথন গাছের এক অপরপ শোভা হয়। দেই শোভা দেথিয়া সকলের নয়ন পরিতৃপ্ত হয়। কিন্তু ফুলই গাছেব চরম পরিণতি নয়, ফলই বৃক্ষ-জীবনের সার্থকতা। যে গাছের ফুলগুলি বুথা ঝরিয়া পাড়য় না গিয়া গাছকে ফলসন্তারে পরিপূর্ণ ও গৌরবাম্বিত করে, সেই বৃক্ষের জীবন সার্থক। কবি এখানে নিজেকে ঝরা-ফুল ও ফলহীন গাছের সঙ্গে তুলনা করিতেছেন—তিনি বলিতেছেন—আমাতে যে-সব ফুল ফুটিয়াছিল, অর্থাৎ ভগবান দয়া করিয়া আমাতে যে-সব সন্তুণ সমিবেশিত করিয়াছিলেন, সেগুলি বুলা ঝরিয়া গিয়াছে, অর্থাৎ যে ভাবে সেই গুণগুলির পরিচালনা ও অফুলীলন করিলে আমার জীবন সফল ও সার্থক হইত তাহা না করিয়া বুণা কার্যে

শেগুলিকে নষ্ট করিয়াছি। কাজেই সাফল্যের গৌরৰ আমার নাই। তাই আল নিজের দোমে নিক্ষল জীবনের জন্ম কাঁদিতেও আমার লজ্জা হইতেছে। আমি মৃঢ়েব মতন নিজের পারে নিজেই কুঠারাঘাত করিয়াছি।

প্রভাতে যথন প্র্যালোকে জগৎ উদ্ভাসিত হইয়া উঠে তথন লোকের কর্মশক্তি বিকাশ পায়। আবার বাত্রে যথন জ্বগৎ অন্ধকাবে সমান্তর হয় তথন সেই শক্তি প্রিয়মাণ হইয়া পডে। তৎসন্ত্বেও লোকে রাত্রিতে আলো জালিয়া ক্রিমে উপায়ে শক্তিকে উজ্জীবিত কলিয়া ভাছাদের কর্তব্য সমাধান করে। ইহাই হইল জগতের সাধারণ নিয়ম। কবিগণ মানবেব বাল্য, যৌবন ও বাধক্যকে যথাক্রমে প্রভাত, মধ্যাহ্ন ও সন্ধ্যার সহিত তুলনা করিয়া থাকেন। বাল্যে ও যৌবনে মানবেব চিত্ত নানা আশায় নানা স্থপক্ব কল্পনায় পরিপূর্ণ হইয়া থাকে; সেই আশা ও কল্পনা হইতে মানবেব উৎসাহ-শক্তির বিকাশ হয়। তাই আশামুয়্ম মানব সোৎসাহে জ্বীবন-সংগ্রামে প্রন্তু হয়। কিন্তু দেই আশা-উৎসাহেব অবদান হয় বাধ কা উপনীত হটলে।

কিছু বার্ধক্যে উপনীত হইলেই সে সকলেই নিরাশ হইয়া পড়েন তাহা নহে। যাঁহারা ধর্মপ্রাণ, সাংসারিক জীবনে যাঁহাবা ধর্মপথে থাকিবা যথাযথ ভাবে কর্তব্য পালন করিয়াছেন, তাঁহাদের দৃষ্টিতে পরলোক স্থলব-রূপে প্রতিভাত হয়। তথন তাঁহারা পরলোকের স্থাধের আশায়, ভগবানেব চরণ-প্রান্তে উপনীত হইবার আনন্দে পূর্ণ হইয়া সংসারের অতীত স্থথ-ছঃথ আশা-নৈরাশ্যেব কথাকে ভুচ্ছ মনে করেন। বোধ হয়, সাংসারিক নৈরাশ্য তাঁহাদেব ক্লম্মে ছায়াপাত করিতে পাবে না।

কবি বার্ধ ক্যে উপনীত হইয়া ভাবিতেছেন এখন আর তাঁহার যৌবনের আশা-উৎসাহ নাই; তাঁহার দিনের আলো—অর্থাৎ জীবনের আশা-উৎসাহ
—ফুরাইল, সাঁঝেব আলো—অর্থাৎ পরলোকের সৌন্দর্য—তাঁহার জন্ম জলিল
না—অর্থাৎ তাঁহার দৃষ্টিগোচর হইতেছে না; ইহলোকের শক্তি আশা তিনি
হারাইয়াছেন, পরলোক হইতেও কোনো আগাত্মিক সমর্থন বা আশার
আলোক আসিয়া তাঁহার মনে লাগিতেছে না; তাই নিরাশ হইয়া ঘাটে—
জীবনের প্রান্তে—তিনি বসিয়া পড়িয়া আর্ডম্বরে আহ্বান করিতেছেন—

ওরে আয়— আমার নিয়ে বাবি কে বে দিনশেকের শেষ থেয়ায়।

প্ৰাভে ও জাগ

এই যুগা কবিতা ছইটি ১৬১২ সালের অগ্রহায়ণ মাসে বঙ্গুদর্শনের ৩৮৩, ৩৮৪ পৃষ্ঠায় প্রথম প্রকাশিত হয়।

যথন কোনো মহৎ কর্মের বা মহৎ ভাবের শুভ-আহ্বান আদিরা উপস্থিত হয় তথন তাহংকে বরণ করিয়া লওয়া একান্ত কর্তব্য; আমার যথাদাধ্য দাহাব্য ও সমর্থনের ঘারা উহাকে সংবর্ধনা করিতে হইবে। আমার দাহাব্য যদি দামান্ত ও নগণ্য হয়, আমার নাম যদি কেহ নাও জানিতে পারে, এবং ইতিহাদে যদি আমার নাম নাই থাকে, তথাপি সেই শুভক্ষণকে সমাদর করিতে অবহেলা করা আমার থকে উচিত হইবে না। আমার এই ফলাফল বিবেচনাহীন ত্যাগের জন্ম দাংসারিক বৃদ্ধিমান সাবধানী বিবেচক লোকে আশ্চর্য হইবে তো হউক, তথাপি কাহারও ম্থাপেকা না করিয়াই আমার কর্তব্য আমাকে করিয়া যাইতে হইবে।

রাজ্ঞার গুলালের যাত্রাপথে আমার বক্ষের মণিহার খুলির। উপহার দিতে হইবে। সেই চুনীর হার আমার বুকের রক্ত,বিন্দুগুলির মতো ধূলায় পড়িয়া থাকিবে এবং রাজ্ঞার গুলালের রথের চাকায় গুঁড়া হইয়া একটি রক্তরেখা আঁকিয়া দিবে, এবং কেহ হয়তো লক্ষ্যই করিবে না যে কে কী মহামূল্য নিধি ভাগি করিল এবং কাহার উদ্দেশ্যেই বা ভাগি করিল।

শ্বামাদের ক্ষণিক-জীবন এবং চির-জীবন দুটো একতা সংলগ্ন হ'বে আছে। আমাদের ক্ষণিক-জীবনই স্থ-ছুংথ ভোগ করে, আমাদের চির-জীবন সেই স্থ-ছুংখ নেব না, তার খেকে একটা তেজ সঞ্চল্ন করে। গাছের ক্ষণিক জীবন কেবল রৌজ ভোগ কর্ছে, স্থার গাছের চির-জীবন তার ভিতর থেকে দাস্থীন চির-অগ্নি কর্ছ।

"মামরা যখন খুব বড় রকমের একটা আছাবিদর্জন করি, তখন কেন করি ? একটা মহৎ আনেগে আমাদের ক্ষণিক-জীবনটা আমাদের থেকে বিচ্ছিন্ন হ'রে যায়, ভার স্থত্বঃখ আমাদের আর শর্প করতে পারে না। আমরা হঠাৎ দেখাতে পাই আমরা আমাদের
ক্ষ-ত্বংগর তেবে বড়, আমরা প্রতিদিনের তুচ্ছ বন্ধন থেকে মুক্ত। স্থানর চেটা এবং
ত্বংগের এই পরিহার, এই আমাদের ক্ষণিক-জীবনের প্রধান নিরম; কিন্তু আমাদের জীবনে
এমন একটা সমন্ন আমে বর্ষৰ আমরা আমাদের ক্ষণিক-জীবনটাকে পরাভূত ক'রেই আমন্দ
পাই, ত্বংথকে গলার হার ক'রে নিম্নেই মনে উলাস জন্মায়।"—ছিল্লগ্র, বোয়ালিলা ২৪।২৫
সেপ্টেশ্বর, ১৮৯৪ নাল। 'কুস্ব' কবিভার বাাখা। স্তারণ।

"ঘণদ আমরা নিছক হণ ভোগ করতে থাকি তথন আমাদের মনের একার্ধ অক্তার্থ থাকে, তথন একটা কিছুর অস্তে হৃঃও ভোগ এবং ত্যাপ স্বীকার করতে ইচ্চা করে, দইলে আপনাকে এযোগ্য ব'লে মনে হয়—এই কারণেই বে হ্রথের সঙ্গে হৃঃথ মিশ্রিত সেই হৃথই হৃণবী হৃগভীর তাতেই যথার্থ আমাদের সমস্ত প্রকৃতির চরিতার্থতা সাধন হয়।"
— ছিম্নপত্র (পতিসর, ৩০ এ মার্চ্চ ১৮৯৪), ২৫৬ পৃষ্ঠা।

যথন কবিব চিত্ত দেশের ছদ্দশার ছদিনে রাজনৈতিক সামাজিক ধর্ম সম্বন্ধীয় ছুর্গতিতে পীডিত হইতেছিল, তথন কর্ম ক্ষেত্রে ঝাঁপাইয়া পাডিবাব ডাক তাঁহার জীবনকে দোটানায় কেলিয়াছিল সেই সময়ের মনেব ভাব প্রকাশ পাইয়াছে এই ছুইটি কবিতায়।

তুলনীয-পুরবী কাবে। দান' কবিছা।

আগমন

প্রথম প্রকাশিত হয় ১৩১২ সালের আখিন মাদে।

সত্য-শিব-মুন্দর-রূপী ভগবানকে যদি আমরা স্বীকার না করি তবে তিনি রুদ্র-রূপে আবির্ভূত হইয়া তাঁহাকে স্বীকার করিতে বাধ্য করান। সত্য-শিব-সুন্দরের প্রকাশ নিরম্ভব হইতেছে, কিন্তু আমরা মোহ-বশত তাহ অস্বীকার কবি, অথবা লক্ষ্য না কবিয়া নিশ্চেতন থাকি।

ছঃখ-বাতেব বাজা যখন আদিলেন, তখন তাঁহাব অভার্থনার জন্ম কোনো আরোজনট হয় নাই আমার, দরিদ্র ঘরে যাহা সামান্ত কিছু ছিল তাহা দিয়াই তাঁহাকে অভার্থনা করিতে হইল। ইহা ভালোই হইল, ইহাতেই ভাগে সম্পূর্ণ হইয়া উঠিল,—ইহা তো ধনীর ভোগোদ্দ সামান্ত কিছু দান করা হইল না, ইহা দরিদ্রের সর্বস্থ-সমর্পণ হইল।

পেয়াতে আগমন'ৰ শে য কবিতা আছে সে কবিতাৰ যে মহারাজ এলেন তিনি ক প্রতিনি যে মাণাছি। সবাই রাজে ত্বার বন্ধ করে শান্তিতে ঘূমিয়ে ছিল, কেম্মনের কবেনি তিনি আস্বেন। যদিও থেকে থেকে ছারে আবাত লেগেছিল হানও মেথগক্ষমের মতে। কবেন কবেন তার রখচক্রের ঘর্ষরধানি বাহার মধ্যেও শোনা গিয়েছিল, তবু কেউ বিবাস করতে চাচিজ্যানা যে তিনি আস্ছেন, পাছে তাম্বের আরামের ব্যাঘাত ঘটে। কিন্তু ছার তেওে প্রক্ষান এলেন রাজা।

- सामान धर्म, इंदोलानाथ शिकूब, अवामी-- (भ व, २०२८, २७ भृष्ठा।

তুলনীয়-

বে রাতে মোর ছ্যার**ঙলি** ভাঙ ল কডে, জানি নাই তে। তুমি এনে আমাব দবে।

ঝড যে তোমার জন্মধ্বজা

তাই কি জানি /- গীতিমানা।

Watch ye therefore: for ye know not when the master of the house cometh, at even, or at midnight, or at the cock crowing, or in the morning:

Lest coming suddenly he finds you sleeping.

And what I say unto you I say unto all, ... Watch!

-The Bible, St. Mark, 18 35-37,

Be ye therefore ready also, for the Son of Man cometh at an hour when ye think not, —Ibid, St. Luke, 12. 40.

পুরবী চাবে। অওচিতা' কবিতা।

দান

প্রথম প্রকা^{ৰি}ত হয় ১৩১২ সাকেব অগ্রহায়ণ মাদে।

যাহাবা দীনাআ তাহাবা ভগবানেব কাছে কেবল প্রথ ভিন্ধা কবে, কিন্তু ভগবান তো কেবল স্থবদাতা নহেন, তিনি দিব বলিয়াই কদ্র; তিনি তো কেবল ভয়ত্রাতা নহেন, তিনি মহদভয় বক্সম্ উমত্র্য যাহাবা সত্যকে ও কল্যাণকে চাহিয়াছেন, তাঁহাবা রুদ্র রূপকে ভয় করেন নাই—বেমন সজেটিস, গ্যালিলিও, ক্রাইট্র, মহম্মদ, গান্ধী সভ্যের জ্ল্ম প্রাণ দিয়াছেন অথবা ছঃসহ ছঃথ ভোগ করিয়াছেন, তবু সতাস্বরূপ কল্যাণকে অস্বীকার করিতে পারেন নাই।

আমি চাহিয়াছিলাম প্রিরের গলার ফুলেব মালা, অর্থাৎ শাস্তি, কিন্তু সেই প্রিরের হাত হইতে পাইলাম ভীষণ তরবারি, অর্থাৎ দারুণ অশান্তি। শাস্তি যে বন্ধন ও জড়তা,—যদি সেই শাস্তি অশান্তির ভিতর দিয়া অর্জন কুবা না যায়, যদি হঃথের মূল্য দিয়া তাহাকে অর্জন কবা না যায়। কিন্তু এই অশান্তি ছইতেছে মাঝের কথা, ইহা চরম কথা নর, চরম কথাটা হইতেছে—শান্তম্ শিবম্ অহৈতম্। চরম ও পরম দত্য হইতেছে ক্লন্তের প্রসন্ন মুখ। কিন্তু দেই প্রসন্নতা পাইতে হইলে ক্লন্তের স্পর্শ পাইতে হইবে।

> আরাম হ'তে ছিন্ন ক'রে সেই গভীরে লও গো মোরে অশান্তিব অন্তবে যথা শান্তি স্বমহান্।

অতএব স্থকঠিন ত্যাগের সাধনাই জীবনে অবলম্বন করিতে হইবে। ভগবান্ ধে আমাদিগকে তুঃখ-বহনের অধিকার দান কবেন তাহা আমাদের পক্ষে মহা সন্ধান। সেই বেদনার মান বন্ধে বহন করিয়া ভাঁচার দানের ও দরার মর্যাদা রক্ষা করিতে হইবে।

তুলনীয়--

My bridegroom's bed is cold and hard
My bridegroom's kiss is ice and fire.
My bridegroom's clasp is iron barred,
I am consumed in His desire.
My bridegroom's touch is as a sword
That pieces every nerve and limb.
'Depart from me,' I moan, 'O Lord!
All the night long I spend with Him
—Harriet Eleanor Hamilton-King,
The Bride Reluctant

বালিকা বধ্

हैश প্রথম প্রকাশিত হয় ১৩১২ সালের মাঘ মাসের वक्क्पनता।

অনেক দেশের অনেক সাধক ও কবি মনে করিয়াছেণ যে ভগবান ভাঁছাদের স্থামী এবং তাঁহাবা ভগবানের বধ্। ভগবানকে বব-রূপে এবং মানবকে বধ্-রূপে বোধ করা বৈক্ষব ভাব। বৈক্ষবেরা মনে করেন যে বিশ্ববৃদ্ধাবনে এক মাত্র পুরুষ আছেন শ্রীরুক্ষ, আর সমস্ত জীব হইতেছে গোপী। (তুলনীয় মীরাবাঈ এবং জীব গোস্থামীর সাক্ষাভের কাহিনী।) বাইবেলের মধ্যে সলোমনের পান. ভেভিভের ছভি, এবং অক্সান্ত ক্রিকণান বিশ্বিক্ষের রচনা এবং মুসলমান স্থান বিৰ্বাহনৰ প্রাক্ত প্রতির রচনা এই ভাবে পরিপূর্ণ।

রবীশ্রনাথ অফুড়ব করিতেছেন যে বিরাট্ পুরুষের পার্ষে তাঁহার নিজের চিত্ত বালিকা-বধুরই মতো দাঁড়াইরা আছে; সেই পুরুষ যে কত বড়, কীযে তাঁহার মহিমা, অবোধ বালিকার মতনই কবি-হৃদর সেই তত্ত্বের সন্ধান প্রাপ্রি পান নাই। তবু তাঁহার সঙ্গে কবির যে একটি সহজ্ঞ অথচ নিবিড় রোগ স্থাপিত হইরাছে, এই বোধটি একদিন না একদিন তাঁহার সমস্ত জীবনের চেতনা আছের করিয়া ফেলিবে—এই আশাও কবি ত্যাগ করিতে পারিতেছেন না।

তুলনীয়---

কৃতান্ত: কান্যো বা সমন্ধনি ন ভেদঃ প্ৰথমতঃ,
ক্ৰমাদ্ দ্বি ত্ৰিব-মানৈৰ মন্থল ইতি জ্ঞাহ সদ্ধন্।
চত্ৰোগদো মংপ্ৰেঘান্ অহন্ অপিচ তম্ম প্ৰিয়তমা,
ক্ৰমাদ বৰ্ষে যাতে প্ৰিয়তমমবং জাতন্ অধিলম্॥ ——উদ্ভট

প্রথমত: বালিকা বধ্র মনে ক্নতান্ত ও কান্তের মধ্যে কোনো ভেদ বোধ হইত না, ক্রমে ছই-তিন মাসে তাহার মনে হইতে লাগিল যে ঐ ব্যক্তি মাম্য বটে। তাহার পরে তাহার উপলব্ধি হইল যে উনি আমার প্রির, আমিও উঁহার প্রিয়তমা। ক্রমে বংসর ঘুরিতে না ঘুরিতে সমস্ত অথিল ব্রহ্মাণ্ড প্রিয়তমময় হইরা উঠিল।

The bridegroom of my soul I seek,
Oh, when will he appear?—Cowper.

For me the Heavenly bridegroom waits.

-Tennyson, St. Augustine's Eve.

What if this happen to be—God?

—Robert Browing, Fears and Scruples.

কুপণ

ফলের আকাজ্ঞা ত্যাগ করিয়া নিদাম হইরা অহং ভূলিরা যাহা কিছু ভগবানকে সমর্পণ করা যায়, তাহার ফল শতগুণ হইরা দাতার নিকটে কিরিয়া আসে। সেই জন্ত হিন্দুশান্ত্রের উপদেশ—সর্বং কর্মকলং ব্রদ্ধার্পণম্ অন্ত, কর্মণোবাধিকারস্তে মা ফলের্ কদাচন। কোরান ও হাদিসেও এই প্রকারের কথা আছে—ভগবান এক্ষাত্র ধনী, আর সব ক্কীর; কে আছে আবাকে কণা মাত্র দান করিবে আমি তাহা শতগুণে বর্ষিত করিয়া পরিশোধ করিব ; তিনি অভাব-রহিত ও প্রশংসিত ; দানের ফলে একটি শশুকণা হইন্ডে যেন শতসহত্র শশু উৎপন্ন হয় ; জীবনে আরও পুণা অর্জন করি নাই কেন ?

ত্যাগেই বস্তব প্রাপ্তির পরিচয়। আবাব ফলাফল-বিবেচনাহীন ত্যাগই প্রেষ্ঠ ত্যাগ। আমার দিকে কিছুই রাখিলে চলিবে না—আমার কাজ, আমার দেশ, আমার কীতি, আমার সফলতা, আমার শক্তি—এইকপ আমার আমার বন্ধনের মধ্যে বিশ্বভ্বনের অধীশ্বরের প্রমৃক্ত আনন্দর্মণ পীড়িত হয়; সেই আমিডের বন্ধন ছিল্ল করিলেই জীবনের দেবতার আবির্ভাব সর্বত্র প্রত্যক্ষ হইয়া উঠে। আমার দিকে সঞ্চয়ে ভাব, তাঁহার দিকে সঞ্চয়ে মৃত্তি—এই বোধ যখন স্কুম্পাই হইয়া উঠে তখন চিত্ত অধীর হইয়া বলে—

এ বোঝা আমার নামাও বন্ধু নামাও ভাবেল বেগেতে টেলিলা চার্লেচ এ যাত্রা মোর খামাও। তেয়া ভাব।

তুলনীয়-

ওগো কাছাল, আমানে কাছাল কারছ আরো কি তোমান চাই ? ওগো ভিখারী, আমার ভিখাবী, চলেছ কী কাত্র গান গাই'।

হাব, আরো বদি চাও, মোরে কিছু দাও

ফিরে আমি দিব তাই।—কলনা।
মোব ফকিবওা মাণসি বাব

মোন ককিবঙা মাণসিবে,
বিল মাণসে কো দেব।—কবীব
কো হম ছাড় হিঁ হাধ তেঁ

গো তুম দিয়া পসার।
সো ব্য কোহম লেবহিঁ জীতি সো

সো বুম্ব দীয়া ভার দা—দাছ।

কুয়ার ধারে

আমাদের যাহা কিছু সঞ্চয় তাহা পাইবার জন্ত ভগবান্ তৃষ্ণার্ত হইয়া রহিয়াছেন। তাঁহার উদ্দেশে আমরা বাহা তাাগ করি, তাহা সামান্ত চইলেও বড় হইয়া উঠে। মানবের ও অপর জীবেব সেবাতে তাঁহারই সেবা করা হয়। ক্রিশ্টানদের ঠিক এই রক্মের একটি কাহিনী আছে—একটি স্থান্তর ছবিও আছে—করেকটি নারী কৃপ হইতে জল তুলিতেছে, এমন সমরে পথশ্রান্ত কাইট আসিয়া সেখানে তৃষ্ণার্ত হইয়া মাটিতে বসিয়া পড়িলেন। কত কত মেয়ে তো তাঁহার পাশ দিয়া জলভরা কল্স লইয়া চলিয়া পেল, কেহ তৃষ্ণার্তকে জল দিল না। অবশেবে একটি বমনী আসিয়া তাঁহাকে জল দিল, এবং সে পরম আত্মপ্রসাদ লাভ করিয়া ধন্ত হইয়া গেল। তৃঃ—
"গৃহহীনে গ্রহ দিলে আমি থাকি ঘরে।"— কৈতালি, দেবতার বিদায়।

For whosoever will save his life shall lose it, and whosoever will lose his life for my sake shall find it.

St. Matthew, 16. 25.

For I was an hungered, and ye gave me meat; I was thirsty, and ye gave me drink, I was a stranger, and ye took me in

-St. Matthew, 25, 35.

তুলনীয-Parable of The Good Samaritan. —St. Luke, 10. 30-85.

অনাবশ্যক

জগতে দেখা যায় যেখানে অভাব সেইখানেই যে তাহা মোচন করিবার
উপকরণ আদিয়া জুটে তাহা নহে—যাহার অনেক থাকে, তাহারই কাছে
আবও অনেক গিয়া জুটে, আর যাহার নাই তাহার অভাব কিছুতেই মিটিতে
চায় না। একজন পুক্ষ হয়তো কোনো রমণীর একট্ প্রীতি, একট্ ভালোবাদা
পাইলে ধল্ল হইয়া যায়, অথচ সেই রমণী তাহার প্রাণপূর্ণ প্রেম লইয়া
চলিয়াছে এমন একজন পুরুরের উদ্দেশে যে হয়তো তাহা গ্রাহ্টই কবিতেছে
না, সে হয়তো অপর কোনো রমণীর ভালোবাদা পাইবার জল্ল উৎস্কুক
হইয়া রহিয়াছে। বিশ্বপ্রকৃতির মধ্যেও দেখা যায় সরস ভূমিতে প্রচুর উদ্ভিদ্
জন্মে, কিন্তু বেচারী মক্লভূমি একটি গাছ পাইলে বভিয়া যায়, কিন্তু তাহার
ভাগ্যে ভাহা জুটে না; আকাশে শতকোটি জ্যোভিক জনে, কিন্তু যে
দ্বিক্র তাহার কুটীরে একটি মাটির প্রদীপও জলে না। ধেখানে আবশ্রক

নাই সেইথানেই বেন সব গিয়া জুটে। আকাশে কত জ্যোতিঙ্ক, সেথানেই জুলিয়া দেওয়া হইল আকাশ-প্রদীপ; দীপালিতে কত দীপের সমারোহ, সেইথানেই দেওয়া হইল আর একটি দীপ, রহিয়া গেল আমার বর অন্ধকার।

এই কবিতাটি-সম্বন্ধে স্বশ্নং কবি আমাকে যে পত্ৰ লিথিয়াছেন তাহার ধারা -ইহার তাৎপর্য স্কুস্পষ্ট হইবে।—

"বেয়ার 'অনাবশুক' কবিতার মধ্যে কোনে। প্রচন্তর অর্থ আছে ব'লে মনে করিনে।
আমানের কুনর জন্তে বা অত্যাবশুক, তার কত্রই অপ্রয়েজনে কেলাছড়া বার জীবনের
ভোজে, বে-ভোজ উদাসীনের উদ্দেশে। আমানের অনেক দান উৎসর্গ করি তার কাছে
বার তাতে দৃষ্টি নেই—সেই অনাবশুক নিবেদনে আনন্দও পেবে পাকি; অথচ ব্যক্তি
হয় সে, বে একান্ত আঞ্চ নিয়ে হাত পেতে মুণ চেবে দাঁড়িবে আছে। চার্মিকে
প্রতিদিন দেখতে পাচিচ সংসারে যেখানে অভাব সত্য সেখান থেকে নেবেল্ড প্রচ্ব পরিমানেই
বিশ্বিশ্ব হয় সেই দিকে যেখানে ভার জন্তে প্রভাগা। নেই কুখা নেই।"

—শান্তিনিকেতন,—৪ঠা অক্টোবর, ১৯৩৩।

ফুল ফোটানো

আমাদের যাহা শ্রেষ্ঠ প্রকাশ তাহা আমবা কেবল নিজেব ইচ্ছা-অন্তুসারে বটাইরা তুলিতে পারি না। আমরা দৈবক্রমে প্রকাশিত হই। আমাদের প্রকাশ ভগবৎ-কুপার উপর নির্ভর করে বলিয়াই মহম্মদ বলিয়াছেন—আমার নিজের কোনো ক্রতিত্ব নাই, আমি আলার রম্মল বা পরগদ্বর—মহম্মদ উর্ রম্মল্ আলাহ। আর ক্রাইট্ট নিজেকে বলিয়াছিলেন—আমি মানব-পুত্র, আমি ভগবানের পুত্র।

ডাইবা--গীতিমাল্য প্তকের 'আন্থবিক্রয়'-কবিতার ব্যাখ্যা: । তুলনীয়---

নিঠুর গরজী,
তুই কি মানস-মৃকুল ভাজ বি আগুনে।
তুই কুল ফুটাবি, বাস ছুটাবি, সব্র বিহনে।
কেব না আমার পরম গুরু সাই,
বে ব্গবুলাক্তে কুটার মুকুল, ভাড়াহড়া নাই।
ভার লোভ প্রচও,
ভাই ভরনা রও,

এর আছে কোন উপায় ? কব যে মন্দন, শোন নিবেদন, দিসনে বেদন সেই শ্রীগুক্ব মনে সহজ ধাবা আপন হাবা তাঁর বাঁশা শুনে।

--- अपन (त्रथ, वाष्ट्रेल।

দিন শেষ

এই কবিতাটির সহিত 'শেষ খেয়া' কবিতার ভাব-সাদৃশ্য আছে। আমার কাছে ভবসংদার অতিথিশালা মাত্র, এখানে হাটের লোক আসিয়া বিশ্রাম করে, তার পরে যে যাব ঘরে ফিরিয়া যায়। এই অতিথিশালায় কত লোক জীবনের সমস্ত মালিন্ত ধুইয়া শুদ্ধ পবিত্র হইয়া স্বগৃহে যাত্রা করিয়াছে, কত আশা কত আনন্দ তাহাদেব। কিন্তু আমাব পক্ষে এই সংসার নিবানন্দ অস্ক্কাব, এখানে আমাকে কে আশ্রম্ব দিবে ?

দীঘি

দীঘি যেমন স্থিয় শীতল জ্বলে পরিপূর্ণ, ভগবান তেমনি দয়া ও প্রেমে পরিপূর্ণ। বেলাশেষে তাঁহার কোলে ফিরিবাব জ্বন্ত মন বাাকুল হইয়া উঠিয়াছে, এখন আব সংসারের কাজ ভালো লাগে না। বধু যেমন অনুরাগে ও আ গ্রহে বাপের বাডীব দিকে চাহিয়া দেখে, তেমনি আগ্রহ জ্বাগিতেছে আমার মনে। কিন্তু এই পথ বড পিছিল, কিন্তু সেই শীতল অতলতার অবগাহন করিবার আনন্দে আমার দেহ-মন পরিপূর্ণ। জীবনের অবদানে পরলোকে ভগবানের কোলে যাইবার পথ নীরব সুগন্তীর মৃত্যু—তাঁহাব যে আলিঙ্গন তাহা মবণ-ভরা, তাহা সকল বন্ধন মোচন করিয়া হবণ কবিয়া লইয়া যায়। কিন্তু এই যে মহাযাত্রা ইহা একেবারে ভয়ন্ধর নহে, পথ দেখাইতে সাঁবের তারা জ্বিয়া উঠিল, পথে জ্বোনাকির আলোও আছে, এবং মঙ্গল ঘোষণা করিয়া শক্ষ্য ধ্বনিত হইতেছে। যিনি রন্ত, তিনিই শিব, যিনি মৃত্যু, তিনিই নবজীবন।

প্রভীক্ষা

আমি জীবন-সন্ধ্যার আমার সাংসারিকতা ছাড়িয়া বিষয়বাসনা বিশ্বত হইয়া তোমার জন্ত অপেক্ষা করিতেছি, হে ভগবান, তুমি আমাকে করণা করিয়া প্রহণ করো। আমার জীবনের যাহা স্থলর ও পবিত্র সঞ্চয় তাহা তোমাকে অর্থ্য দিবার জন্ত প্রস্তুত রাখিয়াছি, এবং তোমার আসমনের প্রতীক্ষা করিতেছি। তুমি প্রেমের প্রোতে জোয়ার বহাইয়া আমার হদয়ের ঘাটে আসিয়া তোমার করণা-তরুণী ভিডাইবে, এবং আমাকে তোমার বাছপাশে আলিঙ্গন করিয়া ধরিবে, এবং সেই মিলন-স্থগাবেশে আমাব দেহ মৃত্যুতে শিথিল শীতল হইয়া তোমার চরণমূলে লুটাইয়া পডিবে, সেই আশাতেই আমি বাসকদক্ষা করিয়া প্রতীক্ষা কবিতেছি।

প্রচ্ছন্ন

বিষেশ্বর আপনাকে বিশ্বের সকল বস্তুব পশ্চাতে অস্তরাল কবিয়া লুকাইয়া রাথিয়াছেন—তিনি সকল কিছুকে পথ ছাডিয়া দিয়া নিজের সকলের পিছনে সিরিয়া দাঁডাইয়াছেন। তাই লোকে স্ব কিছুকেই পাইতে চায় কেবল তাঁহাকে ছাডা। কবি তাঁহার প্রিয়তম জীবনদেবতার জন্য তাঁহার কাব্যকুষ্ম চয়ন করিয়া ডালি সাজান, সে ডালি হইতে কত লোকে ফুল তুলিয়া লইয়া বায় নিজেদের উপভোগের জন্য।

সমস্ত জীবন ব্যর্থ প্রতীক্ষায় কাটিল, কত কত সাধক প্রলোকের সম্বল লইয়া বরে কিরিল। আমি তোমার প্রতীক্ষায় যে বসিয়া আছি, কবে তুমি দয়া করিয়া আপনি আসিয়া আমাকে লইয়া যাইবে, ইহা অত্যস্ত ম্পর্ধার মতন শুনাইবে বলিয়া আমি নীরবে থাকি। আমি যে দীনা ভিথারিশীর মতন, আর তুমি রাজরাজেশ্বর।

তুমি এলো, হে প্রান্থ, তুমি আমাকে তোমার রথে তুমিরা লইরা আমার জীবনকে দার্থক করো, আমাকে বিনষ্ট হইতে নিয়ো না—ক্ষন্ত, যৎ তে দক্ষিণং মুখং তেন মাং পাহি নিতাম, মা মা হিংসী:।

সব-পেয়েছির দেশ

বিশ্ববন্ধাণ্ডে যাহা কিছু প্রকাশমান ভাছাই পরিপূর্ণ আনন্দ-স্বব্ধপ-জ্বগতের **क्लाधा ७ क्ला**टना अञान नारे, क्रियमीयी পतिजृ: अप्रमृत् यापाजपाठाशीन् ব্যদধাব্দাৰতীভ্যা সমাভ্যা। এই বস্থধা অমৃত-পাত্ৰ, সে স্বমহিমায় ঐশ্বৰ্যশালিনী। এই বোধ यमि মনে जालে, তাङा इटेल जात कारना जजाव वाध इटेल भारत ना। (मरे मरखावभूर्व मनरे मत-(भारतिहत एम) स्थापन मरखाव আছে, দেখানে কোনো লোভ বেষ হিংদা থাকিতে পারে না, পরের দৌভাগ্যে केंग्री इहेटि भारत ना। এই সব-পেয়েছির দেশে কোথাও কোনো বাছলা নাই, আড়ম্বর নাই, ক্লতিমতার লেশমাত্রও দেখানে স্থান পায় না , কোঠাবাড়ীর मछ प्रथात नारे, प्रथात राठीमालाम राठी नारे, पाजामालाम पाजा भाकात पाष्ट्रय नाहे। मय-(भारतिहत एक्टन वातावस्तरीन आएनत मत्रव আনন্দের প্রাচুর্য বিরাজ করিতেছে, প্রাণের সহজ আবেগে যাহা ফুটিয়া উঠে কেবল তাহারই স্থান আছে দেখানে। দেখানে কচি ঘাদ, কচি শ্রামলা লতা, মনোরম পুষ্প প্রাণের আনন্দে আত্মপ্রকাশ করে। সেথানকার কাজকর্ম সমস্ত কিছুই সকলে আনন্দের আবেগে করে, কর্তব্যের তাড়নায় নছে, লোভের বশে নছে-বিনা-বেতনের কর্ম শেষ কবিয়া দিনের শেষে সকলে হাসিতে হাসিতে দেখানে সকলের সঙ্গে সকলের অন্তরের নিবিড মিলনের পক্ষে कारना वाधावस नार्छ। मिथारन पर्वता व्यक्तिय व्यानन विद्रांक करत। দেখানে কিছুই আইন-কাত্ন দিয়া বাধ্য করিয়া করাইতে হয় না, কিছুই বাধ্যকর नियस्य अधीन नय,--- मव किड्ड अधर्स आधीन। स्म स्तर्भ मनागरवद निका কেনা-বেচার জন্ম ঘাটে ভিডে না, কাবণ কাহারও তো কোনো অভাব নাই, রাজাব সৈন্তসামন্তও দেখানে নিতান্ত নিম্প্রয়োজন। সব-পেরেছির দেশকে ৰাছভাবে বা লঘুভাবে দেখিলে তাহার কোনো তবই জানিতে পারা যায় না। উহার প্রাণের স্পন্দন ও অন্তবেব বহন্ত জানিতে হইলে ঐ দেশের অভাস্তবে প্রবেশ করিয়া উহার অধিবাসী হইতে চইবে—নিজেকে উহার সঙ্গে যোগযুক্ত कतिया উशायरे अन रहेया गारेट रहेटन ।

কবি এইরপ সব-পেরেছির দেশে নিজেকে স্থাপন করিতে চাহিতেছেন এইটিই তাঁহার কামনার স্বর্গ--এখানে তিনি নিজের সমস্ত খোঁজার্থ জির পালা শেষ করিয়া দিয়া সব পাওয়ার পরম সংস্থাব ও শান্তি মনের মধ্যে লইয়া নিজেকৈ প্রতিষ্ঠিত করিতে চাহিতেছেন এবং সেখানে বাস করিয়া তিনি নিজেকে পরিপূর্ণ পরিণতির দিকে—অসীমের পানে—পরিচালিত করিবেন। এখানে তাঁহার পুরস্কার বিনা-বেতনের কাজ—কর্মফলের আকাজ্ঞা ত্যাগ করিয়া নিকাম সাধনা। এখানে 'নাইকো পথে ঠেলাঠেলি, নাইকো হাটে গোল'—

Far from the madding crowd's ignoble strife এখানে পরমা শাস্তি ও বিপুলা বিরতি।

তুলনীয়—

My mind to me a kingdom is, Such perfect joy therein I find As far exceeds all earthly bliss The world affords.

-Dver. Contentment

Tennyson-এর Lotos-Eaters—নামক কবিতাটিও ইহার সহিত ত্লদীয় এবং Milton-এর Paradise Lost-এর—

There is nothing good or bad but thinking makes it so, The mind is its own place, and in itself Can make a heaven of hell, a hell of heaven.

-Paradise Lost, Bk. 1.

শারদোৎসব

এই অপরূপ স্থন্দর নাট্যকাব্যখানির রচনা শেষ হয় ৭ই ভাদ্র ১৩১৫ সালে। আমার সঙ্গে যখন রবীজ্ঞনাথের পরিচয় ছিল না, যখন আমি ছাত্র, তথনই আমি স্পর্দার সহিত কবিকে এক পত্র লিথিয়া করমাস করিয়াছিলাম বে আমাদের দেশের ছাত্র অথবা ছাত্রীদের অভিনয়ের উপযোগী নাটক নাটকা নাই, এর অভাব পূরণ করিতে পারেন একমাত্র তিনি; ছাত্রদের অভিনয়ের যোগ্য নাটকে কোনো স্ত্রী-চরিত্র থাকিবে না, এবং মেয়েদের অভিনয়ের যোগ্য नांग्रें क रकारना भूकर-हित्रव थाकिरव ना। आत्र এकिंग्रे नांग्रिका धमन कता कि যায় না যে কেবল মাত্র এক জন লোকের স্বগত উল্জিব ধারাই একটি কাহিনী বিবৃত হয় অথচ তাহার মধ্যে নাটকীয় ভাব বজার থাকে। আমার বিশ্বাস আমার সেই চিঠির ফলে কবি হাস্তকৌতুকে ও ব্যঙ্গকৌতুকে প্রকাশিত হেঁয়ালি-নাট্যগুলি রচনা করেন, অর্নিকেব স্বর্গপ্রাপ্তি এবং বিনিপয়সার ভোজ কেবলমাত্র স্থগতোজ্জিতে এথিত একক নাটিকা-রচনাও বোধ হয় আমারই পত্তের দাবীব ফলে হইয়া থাকিবে। 'লক্ষীর পরীক্ষা' নাটো পুরুষ-চরিত্র নাই। কেবলমাত্র পুরুষ-চরিত্র লইয়া শারদোৎসব নাটক বচনা করিলেন কবি এই প্রথম। আমি তথন কলিকাতার ইণ্ডিয়ান পাব্লিশিং হাউদের চার্জে ছিলাম, আমি এই পুত্তক প্রকাশ করি। ইহাকে লোচন-রোচন করিবার জ্বন্ত ইহার আকার করি একটু নৃতন ধরণের,—প্রাচীন পুঁথির আকারের, এবং আমি নিজে গিয়া অমুরোধ করিয়া প্রসিদ্ধ চিত্রকর যামিনীপ্রকাশ গঙ্গোপাধ্যায় মহাশয়কে দিয়া ইছার প্রচ্ছদের ও মৃথপাতের জন্ম হইথানি চিত্র আছিত করাইয়া লই। কবির হতাক্ষরের যে লেখা হইতে বই ছাপা হয়, তাহা আমার কাছে এথনো স্বত্নে সংরক্ষিত হইয়া আছে এবং বামিনীবাবুর অঙ্কিত ছবি ত্রথানিও আছে।

ইহা অভিনয় করা হয় আখিন মাসে পূজার ছুটির পূর্বে। ইহার অভিনয়-উপলক্ষে কবি বিধুশেধর শাস্ত্রীকে একটি সংস্কৃত নান্দী পাঠ করিতে অন্থরোধ করেন। তাহাতে আমি বলি যে—এই নাটক যে কবি রচনা করিয়াছেন, শেই কবির রচিত নান্দী পাঠ করা সঙ্গত। তাহাতে কবি বলিলেন—তোমরা যদি আমাকে আধ ঘণ্টার ছুটি দাও, তাহা হইলে আমি নান্দী লিখিবার চেটা করিয়া দেখিতে পারি। আমরা কবিকে ছুটি মছুর করিলাম। তিনি আধ ঘণ্টা পরে ফিবিয়া আদিলেন—ইহারই মধ্যে একটি কবিতা ও একটি গান রচনা করা ও হ্বর সংযোজনা হইয়া গিরাছে। যে কাগজে দেই ছুইটি কাটাকুটি করিয়া রচনা করা হইয়াছিল, এবং কবি পরে যে কাগজে পরিকার করিয়া লিখিয়া আমাকে ছাপিতে দিয়াছিলেন তাহা এখনো আমার কাছে আছে। সেই কবিতা ও গান ছুইটি নাটকেব অভিনয়ের হ্বচনা-পত্রে ছাপা হইয়াছিল। গানটি এখন গীতাঞ্জলির মধ্যে স্থান পাইয়াছে—(৭ নম্বর গান),—'তুমি নব নব ক্রেপে এস প্রাণে।' কিন্তু ঐ গানের নীচে যে তারিথ দেওয়া আছে (১৩১৪ অগ্রহারণ) তাহা ভুল মনে হয়, কারণ উহা শারদোৎসব রচনার পরে রচিত হয়। নান্দীর কবিতাটি অস্ত কোথাও আছে কি না জানি না, বোধ হয় কোথাও নাই। সেই জন্ম উহা আমি নিয়ে উরাবে কবিয়া দিতেছি—

नानी

শরতে ক্রেমন্তে শীতে বসন্তে নিদাগে বরধায়
অনস্ত সৌন্দর্যবারে বাঁহার আনন্দ বহি' যায
সেই অপক্রপ, সেই অরপ, রূপের নিকেতন
মব নব অতুবনে ভ'রে দিন স্বাকার মন ।
প্রফুল শেষালিকুল্লে বাঁর পাবে ঢালিতে অপ্ললি
কাশের মন্ত্রনীক্রাশি বাঁর পাবে উঠিছে চঞ্চলি',
ক্রিনিতি আখিনের নিশ্বহান্তে সেই রসময়
নির্মিত শার্মক্রপে কেডে নিন স্বার হুদর ॥

ভূমি নব নব রূপে এদ প্রাণে"—এই গানটর শেষের লাইনেব উপরের ত্নুইটি লাইন কবি প্রথমে নিম্নলিখিতরূপে বচনা করিয়াছিলেন—

> এন দব স্থাপে ছপে মর্মে, এন প্রতিদিবদের কর্মে।

किंद्ध भरत कांद्रिश मरानाथन कवित्रा विश्वित्राष्ट्रितन--

এস দ্বংগ হুগে এস মর্মে, এস নিত্য নিত্য সব করে।

এই গানটির আদিন রূপট আছে ছিল্লপত্রে, পতিসর হইতে ১০ই সেপ্টেম্বর ১৮৯৪ সালে লেখা এক চিঠিতে (২৯৪ পুরার)। নান্দী ও গানট একই কাগজের হুই পিঠে লেখা, নীল পেন্সিলে। নান্দীতে আখিন মাসের উল্লেখ আছে। অভএব গানটিও আখিন মাসে ১৩১৫ সালে লেখা।

ভারতবর্ষের এক কবির মনে "ঋতুসংহার" বিচিত্র রসমধুর ভাবেব উদ্রেক করিয়াছিল; তাঁহারই কবিত্বের শ্রেন্ন উত্তরাধিকারী এই কবির চিত্তকেও ষড় ঋতু নানা ভাবে স্পর্শ করিয়াছে। তাহারই প্রথম নাট্যরূপ এই শাবদোৎসব।

শাবদোৎসব নাট্যকাব্যেব মূল কথাটি কবি শ্বন্ধ ছই স্থানে ব্যাধ্যা করিয়া-ছেন, তাহা হইতে সার মর্ম উদ্ধার করিয়া দিতেছি—

'শারদোৎসব থেকে আরস্ত ক'বে ফাস্তুনী প্রযন্ত বতগুলি নাটক লিখেছি, মধন বিশেষ ক'রে মন দিয়ে দেখি তথন দেখতে পাই প্রতেকের ভিতরকার বুযোটা ঐ একই। রাজা বেবিষেচেন সকলের সঙ্গে মিলে শারণোৎসর কব্বাব জন্তে। তিনি পূঁজ ছেন তাঁব সাখী। পথে দেখ্লেন ভেলের শবং একৃতির আনন্দে যোগ দেবার জন্তে উৎসব কব্তে বেরিয়েছে। কিন্তু একটি ছেলে ছিল—উপনন্দ—সমন্ত ধেলাধ্বা ছেডে সে তার প্রভূব ঋণ শোধ কববাৰ জন্তে নিভূতে ৰ ফে এক মনে কাক্ত কৰছিল। বাক্তা ৰল্লেন, জাঁৰ সভাকাৰ সাথী মিলেছে, কেন না ঐ ছেলেটির সঙ্গেই শ্বংপ্রকৃতিৰ সভাকাৰ আনন্দের যোগ — ঐ ছেলেট ছঃখের সাধনা দিয়ে আনন্দের ঋণ শোধ কবছে –সের ছঃপেরই দ্বাপ মধ্রতম। বিশ্বত যে এই তুঃখ ৩পজ্ঞায়ে বত ;—অসীমের যে দান নে নিজের মধ্যে পেৰেছে, অশ্রান্ত প্রয়াদেব বেদনা দিয়ে সই দানের খণ সে শোৰ কবছে। প্রচেচক ঘাসটি নিরুস্স চেষ্টার বারা আপনাকে প্রকাশ কবছে, এই প্রকাশ কবতে গিয়েই দে আপন অন্তনিহিত সভোর ঋণ শোধ কব্ছে। এই নিয়প্তব বেদনাথ তাব আয়োৎনজন, এই ছুঃখই তো তার শ্রী, এই তো তার উৎসব এতেই তা শবংপ্রকৃতিকে ফুল্ব করেছে, আনন্দমৰ করেছে। বাইরে থেকে দেখুলে এ'কে খেলামনে হয়, কিন্তু এ তে স্থেলা নয়, এব মরে লেশ মাত্র বিরাম নাই। যেথানে অবপন সত্যের ঋণশোধে শেখিল। সেইখানেই প্রকাশে वाथा, मिन्नेशारन्हें कमर्वना, मिहेशारन्हें निवानन्त । आयाव अवान यानन्यम, এहे अस्त्रहें নে দুংথকে মৃত্যুকে শীকার কর্তে পারে—ভবে কিম্বা আলক্তো কম্বা সংশ্বে এই দৃংপের পথকে যে লোক এড়িয়ে চলে, জনতে দেই ই আনন্দ থেকে বঞ্চিত হয়। শারদোৎসবের ভিতরকার কথাটাই এই—ও তো গাছতলায় ব'সে ব'সে বাঁগার স্থর লোনাবায কথা নর।"

—জামার ধর্ম, প্রবাসী ২৩২৪ পে.ব, ২৯৭ পৃঃ।

"নাসুবের জন্ম তো কেবল লোকালবে নয়, এই বিশাল বিষে তার ভন্ম। বিশ্বজ্ঞাবের সক্ষে তার প্রাণের গভীর সম্বন্ধ আছে। বিশ্বপ্রকৃতির কাজ আমাণের প্রাণের মহতে আপনিই চল্ছে। কিন্তু মানুবের প্রধান শুজনের ক্ষেত্র তার চিত্তমহলে। এই মহতে বৃদ্দি ছার খুলে আমরা বিশ্বকে আহ্বান ক'রে না নিই, তবে বিরাটের সঙ্গে আমাদের পুশীনলন ঘটে না।·····হাররের মধ্যে প্রকৃতির প্রবেশের বাধা অপসারিত কর্লে তবেই প্রকৃতির সঙ্গে তার মিল সার্থক হর'·····

"সাম্বের সঙ্গে মাত্রবের মিলনের উৎসব ঘরে ঘরে বারে বারে বট্ছে। কিন্ত প্রকৃতির সভার ঋড়-উৎসবের নিমন্ত্রণ যথন প্রহণ করি তথন আমাদের মিলন আরো অনেক বড় হ'রে ওঠে।…তাই নব ঋড়ুর অভ্যুদ্ধে যখন সমস্ত জগৎ নৃতন রঙের উত্তরীর প'রে চারিদিক হতে সাড়া দিতে থাকে তখন মামুবের হুদ্ধকেও সে আহ্লান করে। সেই হুদ্ধে যদি কোনো রঙ্ না লাগে, কোনো গান না জেগে ওঠে তা হ'লে মানুব সমস্ত জগৎ থেকে বিচ্ছিন্ন হ'য়ে থাকে।

"সেই বিচ্ছেদ্ধ দূর কর্বার জন্ম আমাদের আশ্রমে আমরা প্রকৃতির ঋতু-উৎসবস্থালিকে নিজেদের মধ্যে স্বীকার ক'রে নিরেছি। শারদোৎসব সেই ঋতু-উৎসবেরই একটি নাটকের পালা। নাটকের পাত্রগণের মধ্যে এই উৎসবের বাধা কে? লক্ষের,—সেই বণিক্ আপনার স্বার্থ নিয়ে টাকা উপার্জন নিবে সকলকে সন্দেহ ক'রে ভয় ক'রে ট্র্যা ক'রে সকলের কাছ থেকে আপনার সমস্ত সম্পদ গোপন ক'রে বেড়াচেছ। এই উৎসবের প্রবাহিত কে? সেই রাজা ঘিনি আপনাকে ভুলে সকলের সঙ্গে মিল্তে বার হব্ছেন; লক্ষীর সৌন্ধর্যের শত্তক পত্মটিকে যিনি চান। সেই পত্ম যে চাব সোনাকে সে ডুছে কবে। লোভকে সে বিসর্জন দেয় ব'লেই লাভ সহজ্ঞ হ'রে ফলর হ'রে তার হাতে আপনি ধরা দেয়।

"কিন্ত এই যে স্থন্ধকে খোঁজ্বার কথা বলা হলো, সে কি গ সে কোথায় সে কি একটা পেলব সামশ্রী, একটা সৌধীন পদার্থ এই কথারই উত্তরটি এই নাটকের মাঝধানে রয়েছে।

"শারবোৎসবের ছুটির মাঝঝানে ব'সে উপলন্দ তার প্রভুর ঝণশোধ করছে। রাজ সন্মাসী এই প্রেম-ঝণ শোধের, এই অক্লান্ত আন্মোৎসর্গের সৌন্দর্গে দেখ্তে পেলেন। তার তথনি মনে হলো শারদোৎসবের মূল অর্থাট এই ঝণশোধের সৌন্দর্গ। · · · ·

"দেবতা আপনাকেই কি মানুবের মধ্যে দেন নি? সেই দানকে যখন মজান্ত তপস্থায় অকুপন ত্যাগের, হারা মানুব শোধ কর্তে থাকে, তথনি দেবতা তার মধ্য হ'তে আপনার দান অর্থাৎ আপনাকেই ন্তন আকারে দিরে পান, আর তথনি কি মনুসত্ব সম্পূর্ণ হ'বে ওঠে না? সেই প্রকাশ থতই বাধা কাটিরে উঠতে থাকে, ততই কি তা সুন্দর উজ্জ্ঞাল হর না? বাধা কোথার কাটে না? বেথানে আলস্তা, বেথানে বীইইনতা, বেথানে আল্লাবমাননা, বেখানে মানুব জ্ঞানে প্রেমে কর্মে দেবতা হ'রে উঠতে সর্বপ্রয়েত্ব প্রয়াস না পার, সেধানে নিজের মধ্যে দেবতের বপ সে অধীকার করে। বেখানে ধনকে সে আঁক্তে, থাকে, আর্থকেই চরম আশ্রাম ব'লে মনে করে, সেধানে দেবতার খণকে সে নিজের ভোগে লালিকে একেবারে ফুকে পদিতে চার—তাকে যে অমৃত দেওবা হরেছিল, সে বে অমৃতের উপলব্ধিতে মৃত্যুকে গুছত কর্তে পারে, কতিকে অবজ্ঞা কর্তে পারে, হংথকে গলার হার ক'রে নেয়, জীবনের প্রবাদের মধ্য দিরে সেই অমৃতকে তথন সে শোধ ক'রে দের না। বিশ্বপ্রকৃতিতে ওই অমৃতকে প্রক্রের প্রকাশকেই বলে সেনিকর, আমন্দর্ক্রপ্রয়ন্তর ।

"রাজসন্নাসী উপনন্দকে বলেছিলেন, এই ঋণশোধেই যথার্থ ছুটি, যথার্থ মুক্তি। নিজের মধ্যে অমৃতের প্রকাশ যতই সম্পূর্ণ হ'তে খাকে ততই বন্ধন মোচন হর —কর্মকে এডিয়ে তপস্থাব ফাঁকি দিয়ে পরিক্রাণ লাভ হয না। তাহ তিনি উপনন্দকে বলেছেন —ভুমি পঙ্জির পর পঙ্জি লিধ্ছ আর ছুটির পর ছুটি পাছছ।

'উপনন্দ তার প্রভূব নিকট হ'তে প্রেম পেয়েছিল ত্যাপদীকারের দ্বারা প্রতিদানের পথ বেবে দে বতই সেই প্রেমদানের দনান ক্ষেত্রে ওঠছে ততই দে মুক্তির আনন্দ উপলব্ধি করে। দ্বংগর তাকে এই আনন্দেব অধিকারী করে। দ্বংগর সঙ্গে দ্বংগণোধের বৈষ্মাই বন্ধন এবং তাই কুশীতা। —শারদোধনৰ বিচিত্রা—১২৩৬ আহিন, ৪৯১ পূঠা।

উপনন্দের ঋণশোধের কথা নিয়ে সন্ন্যাসীতে ও ঠাকুবদাদাতে যে কথাবার্তা হয়েছিল তাহা পাঠ করিলে কবির ব্যাখ্যা সহজবোধ্য হইবে।

কবি-দার্শনিক রবীশ্রনাথ তাহাব হুঃখ নামক প্রবন্ধে বলিয়াছেন-

'মামুষ সতাপদার্থ ধাহা কিছু পায় তাহা ত্বংবের দারাই পায় বলিবাই তাহার মমুক্ত । তাহার ক্ষমতা অল্প বটে কিন্ত প্রথম তাহাকে ভিষ্কুক করেন নাই। সে শুনু চাহিঘাই কিছু পার না ত্বংথ কবিঘা পায়। আর যত কিছু ধন সে তো তাহাব নহে কে সমস্তই বিবেশবেব। কিন্ত ত্বংথ যে তাহার নিতান্তই আপনার।"

এই জন্মই তো শারোদোৎসবে কবি বলিয়াছেন—

इः श्रं यामात्र घटत्रव क्रिनिम,

খাটি রতন তুই তে চিনিদ

তোর প্রসাদ দিযে তারে কিনিস

এ মোর অহন্ধার।

कति-मार्गिनक जःथ क्षावरह्मव मस्या आत्रख विविद्याहिन-

"ছু:থই জগতে একমাত্র সকল পদার্থের মূল্য। মানুষ বাহা কিছু নির্মাণ করিবাছে তাহা ছু:থ দিয়াই করিবাছে। ছু:থ দিয়া যাহা না কবিয়াছে তাহা তাহার সম্পূর্ণ আপন হয় না।"—সকলন অধবা ধর্ম।

এই শারদোৎসব নাটক পরে ১৩২৮ বা ইংরেজী ১৯২২ সালে ঋণশোধ নামে কিঞ্চিৎ পরিবর্তিত আকাবে প্রকাশিত হইয়াছে।

এই বইয়ের সম্বন্ধে কবি অস্ত এক স্থানে লিখিয়াছেন-

"মামুৰ বৰি কেবল মাত্ৰ মামুবের সধ্যেই জন্মগ্রহণ কর্ত; ভবে লোকালবই মামুবের গুৰুমাত্র মিলনের ক্ষেত্র হতো। কিন্তু মামুবের জন্ম তোকেবল লোকালবে নত্ত, এই বিশাল বিশ্বে তার জন্ম। বিশ্বজ্ঞাতের সঙ্গে তার প্রাণের গভীর সম্বন্ধ আছে। তার ইন্সিরবোধের ভাবে তারে প্রতি মুন্তর্ভে বিশের শাদান নানা রূপে রনে জেগে উঠ্ছে। "বিশ্বপ্রকৃতিব কাজ আমাদের প্রাণের মহলে আপনিই চল্ছে। কিন্ত মাসুবেব প্রধান স্কলমের ক্ষেত্র তার চিত্তমহলে। এই মহলেরই ছার খুলে বদি আমরা বিশ্বকে আহ্বান ক'বে না নিই, তবে বিরাটেব সক্ষে আমাদের পূর্ণ মিলন ঘটে না। বিশ্বপ্রকৃতিব সক্ষে আমাদের চিত্তেব মিলনেব অভাব আমাদেব মানব প্রকৃতির সক্ষে একটা প্রকাণ্ড অভাব।

'যে মাসুবের মধ্যে সেই মিলল বাধা পায়নি সেই মাসুবের জীবনের তারে তারে প্রকৃতির গান কেমন করে বাজে, ইংরেজ কবি ওযার্ড্সওযার্থ থি ইয়াস্ শা গুমামক কবিতায় অপূর্ব স্থলত ক'রে বলেছেন।"

প্রকৃতিব সহিত অবাধ মিলনে লুসিব দেহ-মন কি অপরূপ সৌন্দর্যে গ'ড়ে উঠুবে, তাবই বর্ণনা-উপলক্ষে কবি লিখ্ছেন—

"প্রকৃতির নির্বাক নিল্চেতন পদার্থের যে নিরাময় শান্তিও নিংশকত। তাই এক বানিকাব নধে। নিংখনিত হবে। ভাসেমান মেণ সকলের মাথেমা তারই জল্প এবং তারই জল্প ওকনো বৃক্ষের অবনস্রতা , কডের গতির মধ্যে যে একটি ছী তার কাছে প্রকাশিত তাবহ নীরব আয়ীযতা আপন অবাধ ভঙ্গতৈ এই কুমাবীয় দুংধানি গাড়ে তুলবে। নিশাধ রাজির তারাগুলি হবে তার ভালবাসায় ধন , আর যে সকল নিভ্ত নিম্যে নিমাধনীগুলি বাকে বাকে উচ্ছলিত ক'বে নেচে চলে সইখানে কান পেতে থাক্তে থাক্তে পাক্তে কলধ্যনির মাধ্যতি তার মুখ্থীর উপরে ধীরে সঞ্চারিত হ'তে থাক্তে।

"পূর্বেই বলেছি— যুল কল কসলের মধ্যে প্রকৃতিব স্প্তিকায় কেবলমাত একমহলা, মামুষ যদি তার ছই মহলেই আপন সঞ্চাকে পূর্ণ না কবে তবে সটা তার পক্ষে বড লাঙ নয়। ক্রপথের মধে। প্রকৃতির প্রবেশের বাধা অপসারিত কবলে তবেই গুকুতিব সঙ্গে তার মিলন সার্থক হয়, স্তরাং সেই মিলনেই তার প্রাণমন বিশেষ শক্তি বিশেষ প্রতালাভ কবে।

'এই নিয়ে সন্ন্যাসীতে আর ঠাকুবদাদাতে যে কথাবান্তা হয়েছে নীচে তা উদ্ধৃত কবশাম—
সন্ন্যাসা। আমি অনেক দিন ভেবেছি জগৎ এমন স্থান্ত কেন > আজ শান্ত দগতে
পাচ্ছি জগৎ আনন্দের খণশোধ কবছে। বড় সহজে কবছে না, নিজের সমস্ত দিয়ে কবছে।
কোপাও সাধনার এতটুকু বিশ্রাম নেই সেই জয়েই এত সৌন্দার।

"ঠাকুরদাদা। একদিকে অনস্ত ভাণ্ডার থেকে তিনি চেলে দিছেন আব একদিকে কঠিন হঃপে তার শোধ চল্ছে, এই ছঃধের ভোরেই পাণ্ডয়ার সঙ্গে দেণ্ডরাব ওজন সমান থেকে যাচেছ, মিলন কুন্দর হয়ে উঠছে।

"বেৰানে আলিন্ত, ধেগানে কুপণজা, বেধানেই ঋণুণোধ চিচে পড়্ছে, সেইধানেই সমত কুনী।

"ঠাকুরদালা। সেইখানেই এক পক্ষে কম প'ড়ে যায়, কান্ত পক্ষের সঙ্গে মিলন পুরো হ'তে পারে না। "সন্ন্যাসী। লক্ষ্মী মর্জ্যলোকে ছুঃথিনী-বেশেই আসেন। তাঁর সেই তপথিনী রূপেই জ্যাবান মুখ্য। শত ছুঃথের পলে তাঁর পন্ম সংসারে ফুটেছে।

"লক্ষ্মী সৌন্দর্ধ ও সম্পদের দেবী; গৌরী যেমন তপস্তা ক'রে শিবকে পেযেছিলেন, মর্জ্যলোকে লক্ষ্মীও তেমনি হুংথের সাধনার বারাই গুগবানের সঙ্গে মিলন লাভ করেন। যে মামুবের বা যে জাতির মধ্যে এই ত্যাগ নেই, তপস্তা নেই, হুংথবীকারে জ্বডতা, সেধানে লক্ষ্মী নেই, স্বতরাং সেধানে ভগবানের প্রেম আকৃষ্ট হব না।

"উপনন্দ তার প্রভুর নিকট হ'তে প্রেম পেরেছিল, ত্যাগ স্বীকারেব হাবা প্রতিদানের পথ বেরে সে বতই প্রেম দানের সমান ক্ষেত্রে উঠছে ততই সে মুক্তির আনন্দ উপলব্ধি কর্ছে। দুঃগই তাকে এই আনন্দের অধিকারী কবে। খণের সঙ্গে খণশোধেব বেম্মাই বন্ধন এবং তা-ই কুশ্রীতা।"—শার্দোৎসব, বিচিত্রা—১৩৩৬ আখিন, ৪৯১ পৃষ্ঠা।

শারোদৎসব নাটিকায় এক অপূর্ব সৃষ্টি ঠাকুরদাদাব চবিত্র। ইনি যেন রবীজ্মনাথেরই মনের রূপক। সৌন্দর্যের ভিতর দিয়া সত্যের সাধনা করা রবীজনাথের সমগ্র কাব্য-জীবনের ইতিহাস। রবীজনাথের অন্তর চিরনবীন। এই ঠাকুরদাদা লোকটিও ঠিক তেমনি সত্য-শিব-স্থন্দরের সন্ধানী চিরনবীন বসিক। তিনি কথনও বেতসিনী নদীব তীবে তীরে ছেলের দল লইয়া গান গাহিমা শারদোৎদব কবিয়া ফিরেন, কথনো বা অচলায়তনের বাহিবে অস্ত্যজ্ঞ অস্পুশ্র শোণপাংগুর দলে ভিড়িয়া যান, কথনো বা রুগ্ন অবরুদ্ধ অমলের শ্যার পার্স্থে রাজার ডাকঘরের চিঠির খবর লইয়া আসেন, আবাব তিনিই ভোল ফিরাইয়া গুরু বাউল-সর্দার রূপে ফাস্কুনী বদস্তোৎদবে মাতেন, তিনিই আবার ধনঞ্জয় বৈরাগী নাম এইরা অত্যাচারের অবিচারের বিক্তমে অহিংস প্রতিবোধ করেন, তিনি রাজঘারে নির্ভীক, দরিদ্র মৃক প্রজার ম্থপাত বন্ধু হইয়া অপরের পাপের প্রায়ন্চিত্ত করেন নিজে হৃঃথ ভোগ কবিয়া। তিনি শিণ্ডদেব থেলার সাথী, বিপদে সাহস ও সহায়, সদানন্দ সভাসন্ধ নির্ভীক বলিষ্ঠ সর্বংসহ। তাঁহার চরিত্র শরতের মেঘম্ক্ত আকাশের স্তায়ই নির্মল স্বচ্ছ স্থন্দর। এই ঠাকুরদাদাই রাজার সহিত মিলনে পথে অমতাপিনী মুদর্শনার সহযাত্রী, এবং ইনিই ছিলেন বৌ ঠাকুরাণীর হাটে এবং প্রায়শ্চিত্তে ও পরিত্রাণ নাটকে রাজা বদস্ত রাম্বের অস্তবে এবং বিভা স্থরমা ও উদয়াদিত্যের দঙ্গে রস-মধুব স্লেছ-সম্পর্কের মধ্যে। শোণপাংগুদের সঙ্গে আমরাও জানি—"এই একলা মোদের शकात्र मास्य मामाठीकृत।"

এই নাটক রচনা ও অভিনয় দেখিয়া মৃগ্ধ হইয়া আমি কবিকে অন্ধরোধ
করিয়াছিলাম এমনি করিয়া ছয় ঋতুর উৎসব লইয়া নাটক রচনা করিলে বেশ

হয়। কবি একটু ভাবিরা শিতম্থে বলিলেন—হাঁ। তা কর্লে মল হর না। কিন্তু আমাদের দেশের হেমন্তের কোনো বিশেষ রূপ নেই। অন্ত ঋতুগুলির নিজস্ব রূপ বা তাৎপর্য আছে, অন্তরের অর্থ আছে, হেমন্তের তেমন কিছু নেই।

এই কথাবার্তার পরের দিন কবি আমাকে বল্লেন—দেখ, হেমস্তেরও একটা তাৎপর্য পেরেছি—হেমস্তে দব শক্ত কাটা হ'রে বার, তথন মাঠ হর রিজ্ঞ, কিন্তু চাষী গৃহস্থের গৃহ হর পূর্ণ; বাহিরের রিজ্ঞতা অস্তরের পূর্ণতার সাক্ষ্য দেয়। এই ভাবটি নিয়ে একটা নাটক লেখা বেতে পারে।

আমি আশা করিয়াছিলাম কবি ছয় ঋতুর উপরেই নাটক লিখিবেন। ফান্ধনী ও রাজা বসংস্কর উৎসবেরই নাটক। আচলায়তনের মধ্যেও 'উত্তল ধারা বাদল ঝরে'। গ্রীশ্মও ছু-একটা কবিতা ভেট পাইয়াছে। কিন্তু হেমন্ত কাব্যের উপেক্ষিতই থাকিয়া গিয়াছে। বঙ্গের ঋতু-রঙ্গের মধ্যে কবি পরে যা একটু হেমন্ত-বর্ণনা করিয়া তাহার মান রক্ষা করিয়াছেন।

প্রায়শ্চিত্ত

ইহার ভূমিকার তারিথ হইতেছে ৩১এ বৈশাথ ১৩১৬ দাল। এই ভূমিকার কবি লিখিরাছেন—বৌ ঠাকুরাণীর হাট নামক উপস্থাস হইতে এই প্রায়শিন্ত গ্রন্থখানি নাটাীক্ষত হইল। মূল উপস্থাসখানির অনেক পরিবর্তন হওয়াতে এই নাটকটি প্রায় নৃতন গ্রন্থের মতোই হইয়াছে। এই নাটকের মধুর চরিত্র কবি বসস্ত রায়কে দেখিয়া মনে হয় যেন রবীক্রনাথ তাঁহার জীবনস্থতি হইতে এক সিংহকেই অন্ধিত করিয়াছেন।

এই নাটকের মধ্যে একটি ন্তন চরিত্র সৃষ্টি করা হইন্নাছে—ধনঞ্জয় বৈবাগী।
ইংরেজী ১৯০৮ সালের কাছাকাছি সময়ে মহাআ গান্ধী দক্ষিণ আফ্রিকার
নিক্রিম্ব প্রতিরোধ করিয়া অস্তারের বিরুদ্ধে অকুতোভরে সত্যক্ষায় অত্যাচারীলের সহিত্র সংগ্রাম করিতেছিলেন। এই সত্যাগ্রহ গান্ধীজীর
জীবনে পরে আবও স্পইতর হইরা প্রকাশ পাইয়াছে। করির সৃষ্টি এই ধনঞ্জয়
বৈবাগী যেন মহাআ গান্ধীর ভবিদ্যুৎ কর্মন্ত চরিত্রের সহিত ভাবপ্রবণ
করিববের স্থকীয় চরিত্রের সংমিশ্রণে গঠিত। যে মহাআ গান্ধী পরে
অসহযোগ আন্দোলন ও অস্তায় আইন অমাস্ত করিয়া জ্বপনান্ত ইইয়াছেন, এবং
যে করি জ্বালিয়ান্ওয়ালাবাগের অত্যাচারের বিক্ষে তীত্র প্রতিবাদ করিয়া
নিজ্যের সম্মানজনক থেতার পরিত্যাগ করিয়াছিলেন, সেই ত্বই মহনীয় চরিত্রের
সমাবেশে যেন এই ধনঞ্জয় বৈরাগীর চবিত্র সংগঠিত।

পবে ১৩৩৬ সালের জৈ চি মাসে এই নাটককে আরও কিছু পরিবর্তন করিয়া পরিত্রোণ' নামে ইহা প্রকাশ করেন। উহাতেও ধনঞ্জয় চরিত্র আছে। এখানেও রাজশক্তির অভারের বিরুদ্ধে অসহায় প্রজাদের পক্ষ হইয়া ধনঞ্জয় বৈরাগী, উদয়াদিতা রাজকুমার এবং স্থয়মা ব্বরাজমহিবী বিপদ্কে অগ্রাহ্ন করিয়া সত্য ও স্থারের নির্দেশ পালন করিয়া চলিয়াছেন, এবং পুন: পুন: কায়াবরণ ও মৃত্যু পর্যন্ত শীকার করিয়াছেন। এই নাটক ছইখানি প্রাচীন ঐতিহাসিক কাহিনী অবলম্বন করিয়া লেখা হইলেও ইহাদের মধ্যে আমাদের দেশের আধুনিক কালের রাজনৈতিক অবস্থার ছায়া পড়িয়াছে।

মৃক্তধারা নাটকথানিও এই পর্বাধের, তাহাতেও ধনঞ্জয় আছে। যে-সৰ জীক্ষ মৃক প্রজারা অত্যাচারের প্রতিবাদ করিতে পারে না, তাহাদের মৃথপাত্র ও বাণীমৃতি এই ধনঞ্জয় বৈরাগী—তিনি বৈরাগী বলিয়া সকলেই তাঁহার আপন এবং স্থার ও সতা তাঁহার ধর্ম।

গীতাঞ্জলি

গীতাঞ্চলিতে যে গানগুলি সংগৃহীত হইয়াছে তাহাদের বচনাব তাবিখ ছইতেছে ১৩১৩ হইতে ৩০এ প্রাবণ ১৩১৭ সাল পর্যন্ত। গানগুলি অধিকাংশই শাস্তিনিকেতনে, কতক কলিকাতায়, এবং কতক শিলাইদহে বচিত। এই-সব গান কবি যেমন যেমন রচনা করিয়াছেন আর অমনি আমাদেব ডাকিয়া গাহিয়া গাহিয়া ওনাইয়াছেন। এই জন্ত এই গানগুলিব সঙ্গে আমার অনেক মধুব শ্বতি জ্বডিত হইয়া আছে। গীতাঞ্জলিব ১৫৭টি গানেব ১০০টি বৈশাথ হুইতে প্রাবণ মাদের মধ্যে রচিত, শেষ গান ৩০এ শ্রাবণ ১৩১৭ তাবিধে ব্রচিত। পুস্তক প্রকাশিত হয় ভাদ মাসে। থেয়ার চাব বংসব পরে ^{নি}তাঞ্জলি ख्यारान्त्र डेरम्हा कवि निरामन कविशास्त्र । कविव ज्यावरायम गर्यन থেয়ার যুগের চেয়েও প্রগাত হইয়াছে, মিলনাকাক্ষা প্রবল হইয়াছে, এবং ভগবান্ এখন কবিব বন্ধু সধা প্রিয় দয়িত স্বামী হইয়াছেন। ভত্তেপ্রেমে বশীভূত হইয়া ভগবান ভজেব দহিত মিলনের জন্ম অভিদাব করেন, ভক্ত ও অভিসারিকার মতন আগ্রহান্বিত হইয়া অপেক্ষা কবিয়া থাকেন। উভয়ের বিরহব্যখা- বড গভীর, ক্ষণমিলনের আনন্দও অতি নিবিঙ। একবাব কবি বিশেষরকে বিশের মারেই পাইতে চাহিতেছেন, আবার একান্তে তাঁহাব সক্ষম্বৰ উপভোগ করিতে ব্যগ্র হইতেছেন। এই জন্মই কবি একবাব ভারততীর্থে মহামানবের মিলন দেখিতেছেন, গুভাগা দেশকে সকল বিচ্ছেদ দুর করিয়া অদ্বৈতের অধ্যাত্ত অমুভব কবিতে বলিতেছেন, আবাব কবি निष्यत्क त्थात्मत मृत्ना विकारेश निष्ठ চাर्टिटिह्न।

সচ্চিদানন্দময় ভগবান আপনার প্রেমের আনন অমূভব করিবার জন্ত ছিলা বিভক্ত হইবার যে এবণা অমূভব কবেন, তাহাই সৃষ্টির মূল। মুগল না হইলে প্রেম হয় না। একময় ব্রহ্মের রস-বিলাস-লালসাই সৃষ্টির কারণ। আনন্দ হইতেই বিশের জন্ম। যিনি এক শত্তা ছিলেন, তিনি বিশ্ব সৃষ্টি করিয়া ভদ্, এবাম্প্রাবিশৎ ভালাতে প্রবেশ করিলেন এবং সর্বগত হইলেন, বিনি ছিলেন অম্প তিনি ইইলেন বছরূপ ও অপরূপ—কপং রূপং বছরূপণ করুব।

রবীজ্ঞনাথ তাঁহার কাব্যের প্রেরণা পাইরাছেন প্রেমের ও আনন্দের অফুভৃতির মধ্যে। তাই তাঁহার সাধনা আনন্দকে প্রেমগীতের অঞ্জলি দিরা। অবাঙ্মানসগোচর যিনি, তিনি আনন্দের লীলাবিলাসে বিশ্বের সমগ্র সন্তাকে বহু করিয়াছেন; রবীজ্ঞনাথ সেই বিখাআকে প্রেমের বহু বিচিত্র অভিবাল্পনার মধ্যে বিকলিত দেখিয়াছেন। স্থে-ছঃথে মানে-অপমানে আপনার নিজস্ব অফুভৃতির সমগ্র বৈচিত্র্যে বিশ্বের আনন্দ-লিহরণে শক্ষ-ম্পর্ল রূপ-রস-গদ্ধের লীলায়িত তরজহিলোলে কবি বিশ্বক্রির সঙ্গে প্রেমানন্দের লিপি আদান-প্রদান করিয়াছেন।

গীতাঞ্জলিতে কবির অধ্যাত্মদাধনাব মূল তত্ত্ব এই-->। অহঙ্কার মিলনের বাধা। তাহাকে ধবংস করার দাধনা প্রথমেই অবলম্বনীয়। অহন্ধারে বিশ্ব প্রতিহত, আনন্দ সঙ্কীর্ণ, প্রেম স্মৃতিত হয়। ২। সংসারে ছঃথ আঘাত বেদনার একটি বিশেষ দার্থকতা আছে। ইহারা প্রেমময়েব দুতী। আমাদের অসাড চিত্তকে তিনি আঘাতের স্পর্ণ দিয়া জাগাইয়া তদভিম্থ করিয়া তুলেন। যেমন বপ দীপ দগ্ধ হইয়া গদ্ধ ও আলোক বিতরণ করে, যেমন চন্দন ঘুষ্ট হইয়া স্নিগ্নতা ও স্থান্ধ বিতৰণ করে, তেমনি মানৰ চিত্তও বেদনার আঘাতে পূজায় রত হয়। ৩। বিশ্বপ্রকৃতির ও নবসমাজের সর্বত্র ভগবানের সত্তা ও লীলা সাধক-কবি সন্দর্শন কবিতেছেন। ভূমাব সন্ধান পাইয়া তিনি বিশ্বচরাচরে ছোট-বড সকলেব মধ্যে পরমদেবতার সামগান শুনিতে পান। একই সত্তা বিশ্বচরাচরকে পরিবৃত করিয়া আছে—এই বিবাট সত্য স্থব-ছ:থের মধ্যে উত্থান-পত্তনের মধ্যে পাপ-পুণোর মধ্যে ক্দ্র-বৃহত্তের মধ্যে দর্বত্ত দর্বদা অমুস্যত হইরা বাহরাছে। এই জগতেব মধ্যে একটি শান্তিময় সামঞ্জশু আছে. যাহার প্রভাবে সকল বিরোধ সকল অভাব মালনতা অপর্ণতা পূর্ণের স্পর্ণে মহিমান্তিত ছইরা উঠে। ৪। অতএব সবার পিছে সবাব নীতে সব-ছাবাদের মাঝে স্থান লইয়া মৃত্যু-মাঝে হ'তে হবে চিতাভম্মে সবাব সমান।

এই কবিতাগুলিব মধ্যে এক দিকে কবির নিজেব আত্মনিবেদন আছে, অপর দিকে দেশের হুদশায় বেদনাবোধ আছে।

কবি ববীক্সনাথ গীতাঞ্জলির ৫০টি গানের ইংবেজী অমুবাদ ও গীতিমাল্য প্রভৃতি অন্যান্ত প্রুকের গান ও কবিতার অমুবাদ করিয়া লইয়া ১০১৯ সালের ১৪ই জ্যাষ্ঠ ১৯১২ সালের ২৭এ মে ইংলণ্ডে যাত্রা করেন। সেধানে এই অমুবাদ কবিতাগুলি কবি ইয়েট্ন্ প্রভৃতির প্রশংসা ও বিশ্বর আকর্ষণ করে। শীক্তাঞ্চলি নাম দিয়া সেই অন্দিত কবিতাগুলি ইণ্ডিয়া দোলাইটি হইতে প্রকাশিত হয়। তাহা মাত্র ২৫০ কপি ছাপা হইরা বন্ধুদের মধ্যে বিতরিত হইরাছিল, তাহার একথানি আমি উপহার পাইয়া গর্ব অমুভব করিয়াছিলাম। এই পুত্তকের দারা সমগ্র ইউরোপে কবির কবিত্বখ্যাতি বিভৃত হইরা পড়ে। ১৩২০ সালের ২৭এ কাত্তিক ১৯১৩ সালের ১৩ই নভেম্বর এ দেশে সংবাদ আসে যে কবি নোবেল পুরস্কার পাইয়াছেন। সত্যেন্দ্র দত্ত এই সংবাদ পাইয়া একথানি এম্পান্নার কাগজ কিনিয়া লইয়া আমাব কাছে আসেন, এবং সত্যেন্দ্র, মণিলাল গঙ্গোপাধ্যায় ও আমি তিনজনে মিলিয়া কবিকে সংবর্ধনা করিয়া আমাদের সানন্দ প্রণাম জ্বানাইয়া টেলিগ্রাম করি; কবির নিকটে তাঁহার জামাতা নগেন্দ্রনাথ গঙ্গোপাধ্যায়ের টেলিগ্রাম প্রথম পৌছিয়া সংবাদ দেয়, তাহার পরে আমাদের টেলিগ্রাম পৌছে। ইহাতে সত্যেন্দ্র অতাম্ব ক্র হইয়াছিলেন—তিনি বলিয়াছিলেন, আমি টেলিগ্রাম করিতে জানিলে আমার টেলিগ্রামই সর্বাত্রে পৌছিত।

এই নোবেল প্রাইজ্ব পাওরা উপলক্ষে বহু গণ্যমান্ত বাক্তি ও রবীক্ত সাহিত্যের ভক্ত স্পোশাল ট্রেনে শান্তিনিকেতনে যাইয়া ৭ই অগ্রহায়ণ ২৩এ নভেম্বর ১৯১৩ সালে কবিকে সংবর্ধনা করেন। আমিও সেই সঙ্গে ছিলাম।

রবীন্দ্রনাথের গীতাঞ্জলি পাঠ করিয়া ইউরোপে আমেরিকায় যে প্রশংসাব প্লাবন বহিয়াছিল, তাহার মধ্য হইতে একজ্বন মনস্বী কবির অভিমত আমি এখানে উদ্ধার করিয়া দিতেছি—

Je conside're certaines pages du Gitanjali la scule de ses œuvres que je connaisse comme less plus hautes, les plus profondes, les plus divinement humaines qu' on ait ecrites jusqu, a ce jour.

-Maeterlinck,

I consider certain pages of the Gitanjah—the only one of his works that I know—the highest, the most profound, the most divinely human that have been written to this day.

দ্রষ্টব্য—করাসী গীভাঞ্চলির ভূমিকা (অন্তবাদ)—ইন্দিরা দেবী।
—সবুস্পত্র, অগ্রহারণ ১৩২১, ৫৫৯ পৃষ্ঠা।

কবি ভগবানের চরণে মাথা নত করিয়া পড়িতে চাহিতেছেন কিন্তু এ অবনতি-স্বীকার বড় কঠিন সাধনা—কবি ইহাব তব্ব স্পষ্ট করিয়া বলিয়াছেন নৈবেপ্তের এক কবিতায়—

> হে রাজেন্দ্র, তব কাছে নত হ'তে গেলে যে উর্ধে উঠিতে হয়, দেখা বাছ মেলে' লহ ডাকি' সূত্র্গম বন্ধুর কঠিন শেলপথে।

এই হছর সাধনার প্রথম সোপান আপনার অহংভাব পরিত্যাগ করা; কারণ, অহঙ্কার মিলনের বাধা, পরিপূর্ণ দত্য উপলব্ধির বাধা। কোনো মাসুষ নিজের মধ্যে পূর্ণ নয়, সকলের দঙ্গে যোগের সত্যতাতেই সে সত্য। অহঙ্কার মানুষকে সেই সত্য হইতে বঞ্চিত করে।

মাত্র্য নিজের ছোট-আমিকে গৌবব দিতে গিয়া নিজের বড়-আমিকে অপমান করে, থর্ব ক্রুর করে। তাই কবি নৈবেতে বলিয়াছেন—

যাক আর স্ব

আপন গ্ৰেরবে রাখি তোমার গৌরব

কর্মযোগ-সাধনের যোগ্যতা লাভের জন্ম ভক্ত কবি প্রাণের আকৃতি প্রকাশ করিয়া বলিতেছেন—ধর্মপথের একটা প্রধান অন্তরায় ভগবানের নামে কর্মে প্রবৃত্ত হইয়া আপনাকে জাহির করিয়া তুলিবার বাসনা; সেই পাপ যেন আমাকে পাইয়া না বসে, আমি যেন আত্মপ্রতিষ্ঠার জন্ম ব্যগ্র না হই । প্রকৃতির প্রিয়্ব অমুচর ষড় রিপ্ স্বকীয় স্বাভাবিক বেশ পরিবর্তন করিয়া ধ্যমিকতার ছলাবেশে সাধককে প্রবঞ্চিত করিয়া পথভাই কবিতে চাছে । তাই ধশ্ব-প্রচারের ছলে আত্ম-প্রতিষ্ঠার চেষ্টা করিয়া বঞ্চিত হওয়ার দৃষ্টান্ত প্রচারক-সমাজে বিরল নছে ৷ অভ্যাব আমাকে রিপ্র হস্ত হইতে বক্ষা করে অবং আমি যেন বলিতে পারি—

তোমাৰ ইচছা ংটক পূৰ্ণ কৰুণামৰ স্বামী,

'মাহ-বন্ধ ছিন্ন করে। করুণ-কঠিন আঘাতে, অশ্রুসলিল-খৌড হৃদরে থাকে। দিবস্ঘামী।

জুলনীর—৪৭, ৫৪, ৮২, ৮৮, ১৪৪ নম্বর গান।

ক**ত অজানারে জানাইলে** তুমি।

প্রেমের আনন্দ-ক্রণে জগৎ মধুময় হয়; প্রেমের ধর্ম দ্রকে নিকট করা, আপনাকে ভূলিয়া পরের হাতে আঅ-সমর্পণ করা, প্রেমই আমিঘের অহঙ্কারের ক্ত গণ্ডি ঘ্চাইয়া দেয়। প্রেমন্থকপ এককে জানিলে আর কোনো বিভেদবৃদ্ধি থাকিতে পারে না। প্রেমে সকলের সঙ্গে মিলিত হইতে হইবে, কিন্তু কোথাও যেন আসন্তি প্রবল হইয়া সেই প্রেমকে বন্ধনে পবিণত না করে। সেই জয় কবি বন্ধন স্থীকার করিয়াও সেই বন্ধন মোচনের প্রার্থনা করিয়াছেন—

যুক্ত কৰো হে সনার সঙ্গে মুক্ত করো হে বন্ধ। — শেষব।

ষে নৃতনের সঙ্গে মিলন ছইবে, প্রেম-বন্ধন ছইবে, তাছারই মধ্যে দেখিতে হইবে যিনি পুরাতন শাখত চিরস্তন তিনিই বিরাজমান। তাহা হইবে আব প্রেম-সম্পর্ক বন্ধন হইতে পারিবে না।

৪ নম্বর গান

विशास स्थारत वका करता, ध नरह स्थाव आर्थन ।

ভক্ত কবির ভগবানের কাছে যাঞ্চা আছে কিন্তু বঞ্চন। নাই, দীনতা নয়তা আছে, কিন্তু ভীক্ষতা নাই; কারণ, তিনি জ্বানেন—নায়মাত্মা বলহীনেন শভাঃ।

তুলনীয়-১০, ১২ নম্বর গান

৬ নম্বর গান

প্রেমে প্রাণে গানে গরে জালোকে পুরকে:

রবীজনাথ ভূমাকে প্রেমের অঞ্জলি দিয়া অভিনন্দন ও বরণ করিয়াছেন বলিয়া তাঁহার কাছে সবই স্থন্ধর, সবই মধুষয়। তিনি সর্বস্থনরে পরম- সুক্ষরকে অন্থণ্ডব করিতেছেন। প্রাচীন ঋষিদের সহিত কণ্ঠ মিলাইয়া এই

ভেজো বৎ ভে রূপং কল্যাপত্তম॰ তৎ তে পশ্চামি।

त्वाश्मावरमी भूक्वः त्माश्श्मित्र ॥ — इत्नाशिविदः, ३७।

ভোমার যে অতি শোভন কল্যাণ্ডম রূপ, তাহা আমি তোমার প্রদাদে দর্বত্র দেখি। দেই পুরুষ যিনি, তিনি আমি।

এই বোধ যাহাতে মনের মধ্যে সর্বদা জাগ্রত থাকে এই জ্বন্ত কবি বলিতে-ছেন—'চেতন আমার কল্যাণরস-সরসে শতদল সম' প্রক্টিত হইয়া থাকুক।

৭ নম্বর গান

তুমি নৰ নৰ রূপে এস প্রালে।

কবি রবীক্সনাথ ভগবানেব অতৃল ঐশর্য ও অপাব মাহাস্মা উপলব্ধি করিতেছেন। রবীক্সনাথের ভগবান তথাকথিত নিরাকার নহেন, আবার সাকারও নহেন। তিনি অরূপ, অপব্দপ, এবং এই জন্মই তিনি বছব্দপ, অনস্থব্দ। তাই কবি সর্বত্র প্রত্যক্ষ করেন।

অপরাপে কত রূপ দরশন। ২২ নম্বর গান।

গীতাঞ্জলি পুস্তকে এই গানটিন বচনাব তারিথ দেওয়া হইরাছে অগ্রহারণ
১২১৪ সাল কিন্তু ইহা দল। ইহার বচনার তারিথ ৭ই ভাদ ১৩১৫
সালের পবের কোনও তাবিথ হইবে। শারদোৎসব নাটিকাব বিববণ
দেউবা।

১৩ নম্বৰ গান

আমাব নয়ন ভুলান এলে।

এটি শারদোৎসবের গান শাবদোৎসব নাটকার অনেকগুলি গান এই গীতাঞ্জলি পুস্তকে স্থান পাইয়াছে।

কবির প্রেমাস্পদ পরম স্থলর অভিদারে বাহির হইয়াছেন, যিনি নয়নভুলানে। তাঁহাকে কবি হৃদয় মেলিয়া দেখিতেছেন। এই স্থলরকে ভো কেবল
চোখে দেখিলে ভাঁহার পূর্ণ পবিচর লওয়া হইবে না, তাঁহাকে হৃদয় মেলিয়াও

দেখিতে হইবে, সর্বপ্রাণে অনুভব করিতে হইবে, ব্রিতে হইবে তিনি ভূতু বংশ্বর্লোকের সবিতা এবং তিনি আবার অন্তরে ধীশক্তিব প্রেরম্বিতা—ি যিনি বাছিরের ইন্সিরগ্রাফ্ বন্ধ প্রসব করেন, তিনিই মনেব মধ্যে ইন্সিয়বোধও উৎপাদন করেন।

১৬ নম্বর গান

জ্বাৎ জুডে উদার ফরে আনন্দ গান বাজে।

কবি আনন্দরপম্ অমৃতম বিশ্বে দেদীপ্যমান দেখিরা প্রার্থনা করিতেছেন সেই আনন্দ-রূপ তাঁহার জীবনে স্প্রতিষ্ঠিত হউক। ভূমাব আনন্দে ব্যক্তি বিশ্বচরাচবের মধ্যে ছডাইয়া যায়, প্রেমেব মন্দাকিনীধাবায় স্বার্থপবতার মলিনতা ধৌত হইরা যায়।

তুলনীয়---

দাতু ঘট মেঁ সুধ আনন্দ হৈ তব সব ঠাহর চোই।

যট মেঁ সুধ আনন্দ বিন সুধী ম দেখা কোই।

যে সব চরিত তুমহারে মাহন মোহে সব ব্রহ্ম'ড খংডা।
মোহে পবন পানী পরমেশ্ব সব মুনি মোহে ববি চ'ডা॥
সারর সপ্ত মোহে ধরণীধরা অন্তকুলা পববত মেক মোহে।

তিন লোক মোহে জগজীবন সকল ভবন তেরী সেব সোহে॥
মগন অগোচর অপব অপবংপার জো রহ তেরে চরিত ন জান্তি।

য়হ সোভা তুম্হকো সোহত শুন্দব বলি বলি জাউ দাতু ন জান্তি।

হে মোহন, এই যে সব ব্রহ্মাণ্ডথণ্ড, ইহা তোমারই লীলাচরিত, ইহারা সকলে আমাকে মৃগ্ধ করে। পবন বায় রবি চন্দ্র সবই আমাকে মোহিত করে হে পরমেশ্বর। সপ্ত সাগর অইকুলাচল পর্বত মেক সবই আমাকে মৃগ্ধ করে হে জগজ্জীবন। এই তিন লোক আমাকে মোহিত করে। সকল ভবনে তোমারই সেবা শোভা পাইতেছে। অগম্য অগোচর অপার অসীম যে এই তোমার চরিত তাহা তো আমি আনি না। এই শোভার তুমি শ্বশোভিত হে শ্বন্ধর, আমি দাছ তোমার বাহিরে ঘাইতেছে, তোমাকে তো আমি কিছুই জানিতে পারিলাম না!

২১ নম্বর ও ১৯ নম্বর গান

আজি বডের রাতে তোমার অভিসার।

কবির প্রেমাম্পদ তাঁহার জীবনে প্রেমাভিসারে আসিতেছেন রুদ্ররূপে।

২৩ নম্বর গান

তুমি কেমন ক'রে গান করে। যে গুণী।

যিনি কবির্মনীয়ী পরিভূ: স্বয়ন্তঃ তাঁহার কাব্যরচনা এই বিশ্বচরাচর। কবি রবীজ্মনাথ সেই বিশ্বকবির বিশ্বসঙ্গীত শুনিরা অবাক্ হইরাছেন এবং তিনি সেই বিশ্বস্থরের সঙ্গে নিজের স্থর মিলাইতে অজ্ঞ গান রচনা করিয়া চলিয়াছেন। তাই কবি পরে বিশ্বসঙ্গীতের সঙ্গে নিজের স্থর মিলাইবার কথা অন্ত একটি গানে বলিয়াছেন

আন্ধিকে এই সকালবেলাতে ব'সে আছি ভাষাৰ প্ৰাণের স্থরটি মেলাতে।

২৪, ২৫, ২৬ নম্বর গান

কবির মনে অন্থরাগ স্কনিরাছে বলিয়াই বিরহাশকা প্রবল ইইয়া উঠিরাছে।
আবার যথন বিরহ আসিরাছে তথন ধীরতা মধুরতা তন্ময়তা তাহার চিত্ত পূর্ণ
করিয়াছে। অংগতের সঙ্গে জগদীখরের মিলনের মধ্যে একটি চিরবিরহ আছে।
এই অসুই মিলন এত স্কলর মধুর হয়, এবং মিলনের জন্ম এত ব্যাকুলতা জাগ্রত
ইইয়া থাকে। সকল সৌন্দর্যের মধ্যে অনির্বচনীয়কে অন্থতা করিবার ব্যগ্রতা
এই বিরহ। কবি নিজের বিরহকে বিশ্বে পরিব্যাপ্ত করিয়া দেখিতেছেন।
ভজ্তের যে বিরহ, সেই বিরহ-ব্যথা ভগবানের মধ্যেও সঞ্চারিত হইতেছে।
তাই কবি বলিয়াছেন

তুমি আমায় রাধ্বে দুরে, ডাক্বে তাবে নানা ফ্রে, আপনারি বিরহ তোমার

জামার নিল কাবা।—গীভিমালা।

প্ৰভূ, ভোমা লাগি আঁথি জাগে।

কবি প্রিয়তমের জন্ম বাসকসজ্জা করিয়া পথ চাহিয়া প্রতীক্ষা করিতেছেন।

৩০ নম্বর গান

ध्या अपन आहि जड़ादा शय।

কবি অহং ত্যাগ করিয়া সর্বস্থ ত্রন্ধে সমর্পণ করিতে ব্যগ্র। থণ্ড ছাড়িরা অধণ্ডকে অবলম্বন করিতে অধণ্ডের মধ্যে ধণ্ডকেও পাওয়া হইয়া যাইবে। কবি অমুভব করিতে চাহিতেছেন যে

> দিশা বাস্তম্ ইদ' দৰ্বং যৎকিঞ্চ জগত্যাং জগৎ । তেন তাতেল ভুঞ্জীধাঃ মা গৃধঃ কন্তাবিদ্ ধনন্॥

৩৩ নম্বর গান

দাও হে আমার ভব ভেঙে দাও।

বরকে বধ্র ।মনতি—ি যিনি ছিলেন অনৃষ্টপূর্ব অপরিচিত তিনি হইবেন আৰু হৃদবেশর। তুলনীয় থেয়ার 'বালিকা বধু' কবিতা।

শাস্ব স্বর্ষি। সে নিজের বৃদ্ধি প্রয়োগ করিয়া যাহা নির্ণয় করিতে চেষ্টা করে তাহা প্রায়ই লান্ত হয়। অতএব যিনি সব-কিছুর শেষ পর্যান্ত দেখিতে পান সেই চিন্মর পরমেশ্বরের বিধানের উপর নির্ভর করিয়া জীবন যাপন করা শ্রেষ। ভাই কবি বলিতেছেন

> या वृक्षि मव जूल वृक्षि रह, या बृक्षि मव जूल वृक्षि रह।

এমন কথা তিনি আগেও একাধিক বার বলিয়া আসিয়াছেন বাহা চাই তাহা তুল ক'রে চাই,

ৰাহা পাই ভাহা চাই না।—উৎদৰ্গ, পাণল।

বুঁজিতে পিন্না হুখা বুঁজি, বুঝিতে পিন্না ভুল বুঝি, ঘুরিতে পিন্না কাছেরে করি দুর।

—উৎসর্গ, চিঠি।

৩৪ নম্বৰ গান

আবার এবা যিরেছে মোৰ মন।

এরা অর্থাৎ সামাতা তুচ্ছ ক্ষুদ্র যা কিছু। তাহাদের কবল হইতে উদ্ধার পাইবার উপায় একমাত্র—ভূমাকে নিতা নিরম্বর নিজেব চেতনার মধ্যে ক্লাগ্রং করিয়া রাখা।

নিষত মোব গেতন।' পবে রাপ আলোকে ভরা উপাব ত্রিভূবন।

৩৫ নম্বৰ গান

আমার মিলন লাগে' তুমি আসত কবে পেকে।

এই জগৎ যেমন বহমান চলমান, এই জগতের স্বামীও তেমনি নিতা নবনবারমান। লোক লোকান্তরেব ও জন্মজন্মান্তবের মধ্য দিয়া জ্বীব-অভিবান্তির যে যাত্রাপথ বাহিয়া আমাদেব প্রত্যেকের জ্বীবন পূর্ণ পূর্ণতর হইয়া চলিয়াছে, সেই পথেই—যিনি সকল পথের অবসান, যিনি পরম পরিণাম, তিনি সঙ্গি-রূপে পথিক-রূপে ক্ষণে ক্ষণে দেন। কবির জ্বীবনে জ্বীবনে লীলা করিবার জ্ব্যু তিনি যাত্রা করিয়া বাহিব হইয়াছেন। এই জ্ব্যুই তো এই পরিচিত জ্বাদ্যশ্রের মধ্যে সেই অদৃশ্যের জ্বী পড়ে; এবং সেই মিলনানন্দেব পরিচয় পাইয়া কবি বলিয়াছেন

রূপ-সাগবে ডুব দিযোঁছ অনুপ বতন আশ: কবি।

-- ४४ नवत् भान ।

এস হে এস সজল ঘন, বাদল বরিবণে।

নববর্ষার আগমনে

ু ব্যথিয়ে উঠে নীপের বন পুলক-ভরা ফুলে।

উছলি উঠে কলরোদন

নদীর কুলে কুলে।

এ কী আশ্চর্য বৈপরীত্যের একত্র সমাবেশ। যেথানে ব্যথা সেধানে পুলক, এবং সেথানেই আবার কলরোদন। ইহার কারণ

> আনন্দ আজ কিসের ছলে কাঁদিতে চার নরন-জলে, বিরহ আজ মধুর হ'য়ে

> > করেছে প্রাণ ভোব।

--- ৪৩ নম্বর গান।

৪৫ নম্বর গান

জগতে আন-দ যজে আমার নিমন্ত্রণ।

জগতের সমস্ত সৌন্দর্য ও আনন্দ প্রত্যেক ব্যক্তির উপভোগের জ্বন্ত যজ্ঞের আরোজন করিয়া নিমন্ত্রণ পাঠাইতেছেন।

তুলনীয়---

ভারী জল্স। আজ্ন্দাবত, ভূহি ইক মিহ্মান।

--- जानशाम वर्षामी।

৫৮ নম্বর গান

তুমি এবার আমায় লহ হে মাথ লহ

কবি ভগবানের কাছে প্রার্থনা করিতেছেন যে আমি তো নিজেকে ডোমার কাছে সম্প্রদান করিয়া দিজে পারিকাম না, তুমিই এখন আমাকে করণা করিয়া গ্রহণ করো। কিন্তু আমার মধ্যে কলুম্ব ও ফাঁকি আছে বলিয়া আমাকে সেই দোৰে পরিত্যাগ করিয়ো না। তুলনীয়—৭৬ নম্বর গান।

৬০ নম্বর গান

এবার নীরব ক'রে দাও হে ভোমার মুখর কবিরে।

রবীন্দ্রনাথ কবি হইরা যেমন কবিছ-বাঁশীকে নিজের দুৎকারে অফুপ্রাণিত করিরা জগৎ মোহিত করিতেছেন, তেমনি ভগবানের হাতে কবি শ্বরং যেন একটি বাঁশী, বিশ্বকবির ফুৎকারে এই মানব-কবির ছদর-রন্ধ্রে স্থবের ধারা নির্গত হইতেছে। কবি মাত্রেই যেন প্রমক্বির এক একটি জীবস্ত কবিতা।

তুলনীয়—

ধ**ন্ত আমি বাঁ**ণীতে তোর আপন মুখের ফু^{*}ক।---বাউল

৬১ নম্বর গান

विष यथन निकामगन, गगन अक्षकात ।

বিশ্ব যথন মোহস্থপ্তিতে নিমগ্ন, তথন কবির সদাজাগ্রত চিত্তে প্রমস্থন্দরের সাড়া লাগে। কিন্তু তাঁহাকে তো কেবল মাত্র ইন্দ্রিয় দিয়া উপলব্ধি করা যায় না, দীর্ঘ পথ অতিক্রম করিয়া অনন্তের ভিতর দিয়া তাঁহার ক্রমাগত আগমন।

সে যে আসে আসে আসে।—৬৩ নম্বর গান।

৬২ নম্বর গান

কোন্ আলোতে প্রাণের প্রদীপ জ্বালিয়ে তুমি ধরায় আস।

১৭ পৌষ, ১৩১৬ সালে রচিত হয় এবং ৬ই মাঘ মহর্ষির শ্রাদ্ধবাসরে গীত হয়। ইহা ভক্তকে, সাধককে উদ্দেশ করিয়া লিখিত।

কবে আমি বাহির হলেম তোমারি গান গেয়ে

মানবের জীব্যাত্রা তো অনাদি কালের কাহিনী।। মানব ক্রমাগত অগ্রসর হইরা চলিয়াছে যিনি পূর্ণতম তাঁহারই সহিত মিলনের জ্বন্ত —নিজেকে পূর্ণ হইতে পূর্ণতর করিয়া তুলিবার জ্বন্ত। যে জীবনে যেখানে মানব থাকে সেথানেই সে পূর্ণের সহিত মিলনের সাধনাই করে। যিনি নামরূপের অতীত, তাঁহাকে বহু নামে ডাকা এবং বহু রূপে দেখা সম্ভব। তাই কবি সেই অনাম ও অরূপকে বলিয়াছেন 'ভোমারেই যেন ভালোবাসিয়াছি শতরূপে শতবার।' কেবল একাকী থাকায় কোনো আনন্দ নাই, এইজ্বন্ত ভগবান নিজেকে বহুতে পরিণত করিয়াছেন—প্রেম দেওয়া ও লওয়ার খেলা খেলিবার জ্বন্ত, এবং কবিও বৃঝিয়াছেন—'আমরা ভূজনে ভাসিয়া এসেছি মৃগলপ্রেমের স্লোতে'। এবং এই 'মুগলপ্রেমে' ময় জীব 'পুরাতন প্রেমে নিত্য নৃতন সাজে' জন্ম জন্মান্দরের ভিতর দিয়া অগ্রসর হইয়া চলিয়াছে।

সমুদ্রের প্রতি, প্রবাসী, স্থদুর, ইত্যাদি কবিতা দ্রষ্টব্য।

৬৭ নম্বর গান

তোমার প্রেম যে বইতে পারি এমন সাধ্য নাই।

কারণ, আমি কৃদ্র, আর তুমি বিরাট্, তুমি ভূমা।

৭৫ নম্বর গান

ণ্বজ্রে তোমার বাজে বাঁশি।

চরম সত্য ও পরম সত্য হইতেছে রুদ্রের প্রদন্ন মৃথ। অশাস্তিকে অস্বীকার করিয়া যে শান্তি তাহা সতা নয়। ইহা বৃথিয়াই কবি বজ্রের বাঁশি আর ঝড়ের আনন্দ-বীণার ঝকার নিজের জীবনে সাধিয়া লইতে চাহিতেছেন। কবি ত্যাগের সাধনাকে ও বেদনা-বরণের সাধনাকে সকল সাধনার চেয়ে বড়

তুলনীয়-৭৮ নম্বর গান।

কথা ছিল এক তরীতে পেবল তুমি আমি

আধ্যাত্মিক জীবনযাত্রাকে নৌযাত্রার সঙ্গে তুলনা করিয়াছেন অনেক দেশের অনেক কবি—ফরাসী কবি বোদলেয়ার বলিয়াছেন 'হে মৃত্যু! বৃদ্ধ কাপ্তেন! এবার নোঙর তোলো।'

৮৯ নম্ব গান

চাই গো আমি তোমাবে চাই, গোমাব আমি চাই— এই কথাটি সদাই মনে বলতে যেন পাই।

মানব ভগবানকে চাহে, কিন্তু দেই বোধ সর্বাদ জাগ্রত থাকে না। কবি দচেতন ভাবে দেই সাধনা করিতে চাহিতেছেন। পিতা নোহসি—তৃষি আমাদের পিতা, ইহা তো সহা, কিন্তু পিতা বোধি:—তৃষি যে আমাদের পিতা, এই বোধ যদি সচেতন হইয়া মনে না জাগ্রত থাকে তবে তাহা আমার জীবনে সত্য হইয়াও সতা নয়।

৯৩ নম্বর গান

দেবতা ভাৰ নূবে বই দাঁডাবে, অপুপান জেনে আদৰ কবিনে।

বৈষ্ণবধর্ম মানবের সমস্ত প্রেম-সম্পর্কের মধ্যে ঈশ্বরকে অভুভব করিতে চেষ্টা করিয়াছে। কিন্তু কেবল মাত্র ঈশ্বরের ঐশ্বর্য দেখিয়া যে সন্ত্রমের ভাব, তাহাকে বৈষ্ণব সাধকেরা প্রেম-সাধনার প্রথম ও নিম্ন সোপান বলিয়া গণা করিয়াছেন। এইজ্বস্ত চৈতক্তদেব সনাতন গোস্বামীকে প্রেমতত্ব শিক্ষা দিতে গিয়া বলিয়াছিলেন

ঐব্যক্তান-প্রধানাতে সঙ্কৃতিত প্রতি॥
ক্বেল-শুক্কপ্রেম ভক্ত বৃষধ না জানে।
ঐব্য দেখিলে নিজ সম্বন্ধ না মানে॥
— চৈত্ত্ত বিভান্ত : ১শ পরিচেইদ। মধা, ৮ম শুরুবা।

অন্তএব ভগবানকে পিতা সধা ভাই প্রিন্ন বিন্ধা স্বীকার করির। সর্ব সম্পর্কের মাধ্র্য অনুভব করিতে হইবে এবং তিনি সর্ব মানবের মধ্যে বিরাক্তমান ইহাও স্থীকার করিতে হইবে। বিশ্বপ্রেমিক কবি সর্বভূতে সর্বভূতেশবের আবিন্তাব অনুভব করেন—তিনি অনুভব করেন সর্বং ধ্বিদং ব্রহ্ম। কবির এই বিশ্বাস্থভূতি ন্তন নহে, অতি শৈশব হইতে তিনি ইহা অনুভব করিয়া প্রকাশ করিয়া আসিয়াছেন—তুলনীয় প্রভাত-উৎসব, স্রোত, এবার ফিরাও মোরে, ইত্যাদি।

নিখিলের সুখ, নিখিলের দুখ, নিখিল প্রাণের **জী**তি। একটি প্রেমের মাঝারে মিশিছে সঞ্চল প্রেমের স্থৃতি॥

—জনস্ত প্রেম।

৯৫ নম্বর গান জন্তবা।

১০২ নম্বর গান

হে মোর দেবতা, ভরিষা এ দেহ প্রাণ

কবি যেমন নিজের সার্থকতা জীবনদেবতার মাঝে পাইয়াছেন, তেমনি ইহাও ব্ঝিয়াছেন যে জীবনদেবতাও প্রেমিকের মতন কবির গানের পাত্রে আপনার স্ঠির আনন্দ-সুধা পান করেন। কবি তাঁহার প্রেমে প্রমকবিকে সার্থক করেন, এবং নিজেও সার্থক হন। প্রেমে প্রেমের বিষয় ও প্রেমের আপ্রয় উভরেই ধন্ত হন।

১০৩ নম্বর গান

এই মোর সাধ যেন এ জীবন মাঝে

ভূমি বিরাট, ভোষার আকাশ অনস্ত, ভোষার আলোকধারা অকুরঙ, আর আষার চিত্ত কুদ্র, আমার প্রেম অর। আমার কুদ্র ধারণাশক্তি-বারা ভোষার বিরাট অনুভবকে আমি বেন কথনো থণ্ডিত না করি, ভোষার অসীমতাকে আমি বেন সকীর্শতার গণ্ডি টানিলা প্রতিষ্ঠ না করি।

একলা আমি বাহির হলেম তোমার অভিসারে।

আমি একাকী ভগবানের প্রেমাভিসারে যাতা করিয়া বাহির হইয়াছি, কিন্তু সলে সঙ্গে চলিয়াছে আমার আমিড, অহঙ্কার, ছোট-আমি। প্রেমাভি-সারে যে চলে, সে কি কাছারও সল্পুথে প্রিয়ের সহিত গিলিত হইডে পারে? আমার লজ্জা বোধ হইডেছে, কিন্তু আমার ছোট-আমি তো ছোট লোক, সেইহাতে লজ্জা অফুভব করে না, সঙ্গও ছাড়ে না, সে আমাদের মিলনে কেবল বাধা হইনাই থাকে।

তুলনীয়---

গাঁতম বুলাওত অনহর-কী পার-দে, কৌন বেশ্রম আজ তের সাথ জাট।—কবীর।

প্রিরতম ডাকিতেছেন অক্সকাবের পাব স্টতে, এমন কে নির্লচ্ছ আছে যে এই অভিসারের সঙ্গী হইবে ?

ভারততীর্থ

১০৭ নম্বর কবিতা

(রচনার তারিথ ১৮ই আষাঢ়, ১৩১৭)

কৰির কাছে তাঁহার অদেশ বিখদেবের প্রতিমৃতি, কাজেই এই সংদশ বিখেশরের মন্দির, তীর্থস্থান, বিখমানবের মিলন-ক্ষেত্র, জগরাথ-ক্ষেত্র। কেহ বিদেশী বা বিধমী বলিয়া কবির কাছে অবহেলিত বা অনাদৃত নতে, তাঁহার কাছে কেহ অস্তাজ অস্পৃশ্র ফ্লেছ নতে।

তুলনীয়---

তোমার নাগিয়া কারেও হে প্রভূ, পথ হেড়ে ছিতে বলিব না কভূ, বস্ত প্রোম আছে সব প্রোম সোরে ভোমা পানে র'বে টালিতে। সকলের প্রেমে র'বে তব প্রেম
আমার হলদগানিতে।
সবার সহিতে তোমার বাঁধন
হেরি বেন সদা—এ মোর সাধন,
সবার সঞ্জে পারি বেন মনে

তব জারাধনা জানিতে। সবার মিলনে তোমার মিলন জাগিবে হল্মধানিতে॥

---ेनटिका ।

ন্তন নাটিকা চণ্ডালিকা দ্রষ্টব্য। এবং তুলনীয়-

Better pursue a pilgrimage
Through ancient and through modern times
To many peoples, various climes,
Where I may see saint, savage, sage,
Fuse their respective creeds in one
Before the general Father's throne!

--Robert Browning, Christmas Eve.

Passage to India!

Lo, soul, seest thou not God's purpose from the first?

The earth to be spann'd, connected by net-work,

The races, neighbors, to marry and be given in marriage,

The oceans to be cross'd, the distant brought near,

The lands to be welded together

-Whitman, Passage to India,

অপমান

১০৯ নম্বর কবিতা

(রচনার তারিখ ২০ আষাঢ়, ১৩১৭)

জাতিতেদের ধারা, স্ত্রীলোকদের প্রতি অবজ্ঞার ধারা ভারতবর্ধ বছ বর্ধ ধরিরা বে পাপ সঞ্চয় করিয়াছে, ভাষারই ফলে আজ সে বিশ্বসভায় নিজে ঋপুশু অক্তাজ ঋপৃার্কু জেন্দ্র কইবা পঞ্জিলাছে—এই কথা কবি বছ ছানে বারংবার বিনাছেন। মানুবকে অপমান করার পাপে ভারতবর্ধ জগবানের স্তায়-বিচারে অপশান-রূপ শান্তিই প্রতিষ্ক্র-শক্ষণে প্রাপ্ত কইতেছে। কিছু জগবান্ প্রতিশাবন, তিনি কাষাক্রেক ক্রীন প্রতিষ্ঠ বুলিয়া অবহেলা করেন না।

ভুলনীয়---

You cannot do wrong without suffering wrong;. The exclusionist does not see that he shuts out the door of heaven on himself, in striving to shut out others.

-Emerson, Essay on Compensation.

জ্ঞানের অগন্য তুমি প্রেমেতে ভিধারা, প্রত্ন প্রেমের ভিধারী ।
দে যে এদেছে এদেছে কাঙালের স্ভার নাঝে এদেছে এদেছে !
কোখা রইল ছত্ত্ব দও, কোখা সিংহাসন,
কাঙালের সভার মাঝে পেতেছে আদন।
কোখা রইল ছত্ত্ব দও ধ্লাতে লুটার,
পাতকীর চরণ রেণু উড়ে পড়ে গার।
পতিতের চরণ-বেণু পোডে তেনার গার।
জ্ঞানের অগন্য, প্রেমে দাসের অমুদাস,
স্বার চরণভলে প্রভু তোমার বাস।
—্বাউল।

১২০ নম্বর গান

ভল্লন পূজন সাধন আরাধনা সমস্ত থাক প'ড়ে!

দন্দিরের মধ্যে সমন্ত মানব-সমাজ হইতে বিচ্ছিন্ন ইইয়া যে আরোধনা তাহা তো জগন্ধাথের আরোধনা নহে, জগতের একটি প্রাণীকে যে ঘুণা করিয়া দ্রে সন্নাইনা রাখে, তাহার প্রণাম তো বিশেষরের পান্নে গিয়া পৌছায় না, কারণ

বেধার থাকে স্বার অধ্য গীনের হ'তে গীন
সেইবানে যে চরণ চোমার রাজে—
স্বার পিছে, স্বার নীচে,
স্বহারাদের মাথে।
যখন ভোমার প্রণাম করি আমি,
প্রণাম আমার কোন্থানে যার থামি,
ভোমার চরণ বেধার নামে অপমানের তলে
সেবার আমার প্রণাম নামে না বে,
স্বার পিছে স্বার নীচে'
স্বহারাদের মাথে।

—১০৮ সম্বর গাঁব।

সমস্তকে শীকার করিলেই তবে অনস্ত অসীম প্রমেশরের সমাক ও সমগ্র উপলব্ধি হইবে, কিছুকে ত্যাগ করিয়া মৃক্তি নাই, শ্বয়ং ভগবান বলিয়া ফিরিতেছেন—

> ৰূপতে করিব্ৰব্ৰপে ফিরি করা তরে। গৃহতীনে গৃত দিলে আমি থাকি খরে॥

> > --- দৈজালি।

১২১ নম্বর গান

সীমার মাঝে অসীম তৃষি বাজাও আপন স্থর।

ভূমা এক দিকে বিশ্বাতীত, অন্ত দিকে বিশ্বমন্ত; এক দিকে নিশুল নেভিবাচক, অপর দিকে সগুল; তিনি এক হইয়াও বছত্বপূর্ণ জগতের আগাব। একই আপনাকে বছরপে বিভক্ত কবিয়া বছর মধ্যে অসুস্থাত থাকিয়া বছকে একস্থরে ধারণ করিয়া আছেন— পত্রে মণিগণা ইব। এই অনস্তের স্থর সাস্তেব মধ্যে বাজে বলিয়া আমরা অসুভব করিতে পাবি যে আমরা বদ্ধ জীব নই, আমাদেরও মৃক্তি আছে, আমরা অসুভস্থ পূত্রা: অ-মত। এই বৃহস্তর আনন্দেব দিকটা বাহাদের জীবনে যত বেশি প্রকাশ পাইয়াছে তাঁহার মানবজন্ম তত্ত বেশি সার্থক ইয়াছে। আমাদের কবি ঋষি তাঁহার জীবনে এই সার্থকতা লাভ কবিয়াছেন।

১২২ নম্বর গান

তাই তোমার আনন্দ আমার 'পর।

ুভাগ্যে জীব নিজেকে ঈশ্বর হইতে শ্বতন্ত্র দন্তা মনে করে, তাই তো উভন্নের বিরছ-মিশন এত আনন্দ। নহিলে ঈশ্বরের আপনাতে আপনি থাকাতেই বা কি আনন্দ, আর আমাদেরই বা ব্রন্ধনির্বাণে কি আনন্দ। এইজন্ত বৈশ্বৰ সাধকেরা বলিয়াছেন

> মুক্তি শব্দ কৰিতে মনে হয় যুগা জাস। ভক্তি শব্দ কৰিতে মনে হয় উল্লাস ॥

> > ---- ।

আমার এ গান ছেড়েছে তার সকল অলমার।

কবি পূর্কের অলঙ্কারবছল ভাষা ত্যাগ করিয়া এখন সহজ্ঞ সরল ভাষার প্রাণের আকৃতি ব্যক্ত করিতেছেন। নৈবেগ্ন পর্যাপ্ত কবির ভাষা ছিল অলঙ্কার-ভূমিষ্ঠা। পরের রচনার প্রদাদগুণই হইয়াছে অলঙ্কার।

১৩১ নম্বর গান

আমার মাঝে তোমার লীলা হবে।

ভগবান্ নিজের স্ষ্টিতে, নিজের স্ট জীবে নিজেকে উপলব্ধি করেন। কবি যেন পরমচৈতভ্রময়ের চেতনায় অনুপ্রাণিত হইতে পারেন, অথবা সেই চৈতভ্রই হইয়া উঠিতে পারেন, এই প্রার্থনা নিরন্তর করিয়াছেন। এই ভাবের দারা তাঁহার অনেক শ্রেষ্ঠ কবিতা ও গান অনুপ্রাণিত। কবি মায়ার আবরণ ভেদ করিয়া জ্ঞানের মর্মস্থলে প্রবেশ করিয়াছেন।

১৩৩ নম্বর গান

গান দিয়ে যে তোমায় খুঁজি।

আমাদের কবি কেবল কবি নহেন, তিনি গানের রাজা। তিনি গানের আঞ্চলি দিরা প্রিরতমের পূজা করেন। যথন মাসুষের ভাব গভীর হয় তথন আর গভে তাহা কুলার না, তথন সে পত্তের আশ্রম লয়; সেই ভাব আরও গাচ ও গৃচ হইলে তথন আর কবিতাতেও কুলায় না, তথন সে গানের স্থারের আশ্রম গ্রহণ করে। তাই কবি অক্সত্র বলিয়াছেন।

> মন দিয়ে বে নাগাল নাহি পাই, গান দিয়ে তাই চরণ ছুঁরে যাই, স্থারে যোরে আপনাকে যাই ভূলে, বন্ধু ব'লে ডাকি মোর প্রভূকে।

ভোমার খোঁজা শেষ হবে না মোর।

কারণ, তুমি অনস্ত, আর আমার জীবনবাত্রাও অনস্ত। আমি অনস্তপথযাত্রী।

১৩৫ নম্বর গান

যেন শেষ গানে সোধ সব রাগিণী পূরে।

ফরাসী কবি পান্ধাল তাঁহার মিন্তেয়ার গু জ্বেস্থস কবিতার যে ব্যাকুল স্পন্দনের কথা বলিয়াছেন, কবি বিশ্বপ্রাণেব সেই স্পন্দন অমুভব করিতে চাহিতেছেন, ইহা কেবল আনন্দের স্পন্দন। বিশ্বপ্রাণের অমুভৃতি এবং সেই প্রাণের সঙ্গে যুক্ত হওয়ার অমুভৃতি হইতে এই আনন্দ স্বতঃই উৎপন্ন হয়। তুলনীয়— .

এ আমার শরীরের শিরার শিরায বে প্রাণতরক্ষমালা রাত্রিদিন ধার, দেই প্রাণ ছুটিরাচে বিশ্ব দিগ্বিজ্ঞাে, দেই প্রাণ অপক্রপ ছন্দে তারে লযে নাচিছে তুবনে; · · ·

সেই বুগ-বুগান্তের বিরাট স্পদন আমার নাডীতে আজি করিছে নর্তন।—নৈবেজ।

১০৮ নম্বর গান

আমার চিত্ত তোমার নিতা হবে, সতা হবে।

সত্য কাশত্ররাবাধিত ভূত-ভবিশ্বং বর্তমানে অপরিবর্তিত, আবার সত্য সচল সক্রির । এই সভ্যে আত্মপ্রতিষ্ঠ হওয়ার সাধনাই সকল মনশী করিরা থাকেন।

মনকৈ আমার কায়াকে

কবি নিজের কুদ্র-আমিকে বিদর্জন দিয়া মায়ার পারে যাইতে চাহিতেছেন। এই যে আমি নিজেকে তাঁছা হইতে পূথক্ ভাবি ইহাই তো মায়া। ইহা দদি হয়, তবে

্ট্রি আমার অসুভাবে কোপাও নাহি বাধা পাবে, পূর্ণ একা দেবে দেখা। সরিয়ে দিবে মায়াকে, মনকে, আমার কাষাকে।

১৪৪ নম্বর গান

নামটা গেদিন গুচ্বে নাথ:

কবি নিজের অহঙ্কারের ক্ষুত্রতার গণ্ডী হইতে, আপন মন-গড়া সঙ্কীর্ণতা হইতে মৃক্তি প্রার্থনা করিতেছেন। উপাধি, থাতি, বংশ-মর্যাদা ইত্যাদি সমস্তই মানুষের সঙ্গে মানুষের এবং মানুষের সঙ্গে ভগবানের মিলনের বাধা।

১৪৭ নম্বর গান

জীবনে যত পূজা হলো না সারা।

কবির চক্ষে সকল অসম্পূর্ণতাই পূর্ণতারই অগ্রাদ্ত, বিফলতার সোপান দিরাই স্ফলতার উপনীত হওয়া যায়।

১৫৬ নম্বর গান

শেষের মধ্যে অশেষ আছে।

মৃত্যু যদি সকলের শেষ হয় তবে মৃত্যু ভরত্কর। কিন্তু আমাদের তো অধিষ্ঠান ভূমার মধ্যে—সেই ভূমা তো সত্য শাখত অমৃত। তাই জীবন-মরণ একই জীবন-প্রবাহের অবস্থান্তর মাত্র, মৃত্যু জীবনের সম্পূর্ণতা-লাভের সোপান বা বার । এই সীমাবদ্ধ জীবনে যাহা কিছু অপ্রাপ্ত থাকিরা যার, মরণের পরে বে অনস্ত জীবন আসে দেখানে সকল অভাবের সম্পুরণ হয়। জীবনের সকল বন্দ্ব বিরোধ মানি ও অসম্পূর্ণতা মরণের পৃতধারার ধৌত হইরা বার—তাহার পরে অনস্ত জীবন, অনস্ত শান্তি, অনস্ত আনন্দ !

ভুলনীয়-পূরবী কাব্যে 'শেষ' কবিতা।

ক্রন্তব্য-ক্রাব্যপরিক্রমা-অন্ধিতকুমার চক্রবর্তী। গীডাঞ্চলির বৈক্রবতাব-বিদ্নমচন্দ্র দাস, স্বর্গবিশিক সমাচার, আবাচ ১৩৩৫। গীডাঞ্চলি-নবেন্দ্র বস্কু, বিচিত্রা, পৌর ১৬১৫।

রাজা

ধে রূপক নাট্যের আরম্ভ হইয়ছিল শারদোৎসবে, তাহারই পর্বারভুক্ত এই রাজা নাটক। ইহা ১৯১০ সালের পৌষ মাসে প্রকাশিত হয়। ইহা বাংলা ১৩১৭ সাল। ১৩২৬ সালের মাঘ মাসে এই নাটককে অভিনয়যোগ্য সংক্ষিপ্ত ও পরিবর্তিত করিয়া কবি আর-একটি নাটিকা প্রকাশ করেন অরূপ রতন। সেই অরূপ রতন নাটকার ভূমিকায় কবি অয়ং এই নাটকম্বয়ের মর্মকথা বিবৃত করিয়াছেন—

"হারণানা রাজাকে বাহিরে খুঁজিয়।ছিল। বেধানে বস্তুকে চোথে প্রেপা বার, হাতে ছোঁওয়া বার, ভাঙারে সঞ্চয় করা বায, যেথানে ধন জন পাতি, সেইথানে সে বর্বমাল্য পাঠাইয়ছিল। বৃদ্ধির অভিমানে সে নিশ্চম স্থির করিবাছিল যে, বৃদ্ধির জোরে সে বাহিরেই জাবনের সার্থকি তা লাভ করিবে। তাহার সঙ্গিনী স্থরসমা তাহাকে নিষেধ করিবাছিল। বিলিয়াছিল, অস্তরের নিভ্ত ককে যেথানে প্রভু স্ববং আসিবা আহ্বান, করেন স্থানে তাহাকে চিনিয়া লইলে তবেই বাহিরে সর্বত্র তাহাকে চিনিয় লইতে তুল হইবে না, নহিলে বাহারা মায়ার খাবা চোথ ভোলায তাহাদিশকে রাজা বলিয়া ভুল হইবে। স্থলনা এ কথা মানিল না। সে স্থবর্ণের রূপ দেখিয়। তাহার কাছে মনে মনে আত্মসমর্পণ করিল। তথন কেমন করিয়া তাহার চারিদিকে আগুন লাগিল, অস্তরের রাজাকে ছাড়িতেই কেমন করিয়া তাহাকে লইয়া বাহিরের নানা বিশা। রাজার দলে লডাই বাধিয়া প্রেল,—সেই অগ্রিলাহের ভিতর দিয়া কেমন করিয়া আপন রাজার সহিত তাহার পরিচয় ঘটিল, কেমন করিয়া ত্বাহের আঘাতে তাহার অভিমান ক্ষ হইল এবং অবশেষে কেমন করিয়া হার মানিক আসাদ ছাড়িয়া পথে দাঁড়াইয়া তবে সে তাহাব সেই প্রভুর সঙ্গ লভে করিল, বে প্রভু কোনো বিশেষ রূপে, বিশেষ স্থানে, বিশেষ প্রবা, নাই, যে প্রভু সকল বেশে, সকল কালে, আপন অস্তরের আনন্দরমে বাহাকে উপলব্ধি করা বায়,—এ নাটকে তাহাই বর্ণিত হইয়াছে।"

কবি অগুত্র বলিয়াছেন---

—"রাজা নাটকে মুদর্শনা আপন অরপ রাজাকে বেব্তে চাইনে, রূপের মোহে মুদ্দ হ'রে ভুল রাজার গলায় দিলে মালা, ভার পরে সেই ভুলের মধ্য দিরে পালের মধ্য দিরে দেনে আরিছাহ বটালে, বে কিবম বৃদ্ধ বাদিবে দিলে, অরবে বাহিরে বে খোর অণান্তি জারিরে ভুল্বে, ভাতেই তো ভাকে সভ্য মিলনে পৌছিরে দিনে। প্রণারের মধ্যে দিরে স্টের পথ।

……আনাদের আন্তা যা স্টে কর্ছে ভাতে পদে পদে ব্যথা। কিন্তু ভাকে ধদি ব্যথাই বলি তবে শেষ কথা বলা হলো না, সেই ব্যথাতেই সে, শাব, ভাতেই আনন্দ।"

⁻⁻ जामात्र धर्म, श्रवामी, ३०२८ त्रीव, २৯१ शृक्षा ।

কবি অন্তত্ত বলিয়াছেন-

স্থার্শনা অন্ধকার ঘরের রাজাকে প্রথমে চিনিতে পারেন নাই, কিন্তু তাঁছাকে চিনিয়ছিলেন স্থান্তমা আর ঠাকুরদাদা। "আপনার অভিজ্ঞতার ভিতরে ভগবানকে না পাইলে কি আর পাওয়া!' পড়িয়া তো আছে শায়ের রাজপথ। কিন্তু 'অন্ধকারের স্থানী' চাহেন না আমরা সেই মজুর-থাটা, সরকারী পথ ধরিয়া তাঁছার মন্দিরে ঘাই। শাস্ত্রের আলোকে তিনি বিশেব করিয়া আমারই নহেন, সেথানে তিনি সবকারী। এই অন্ধকার কক্ষে তিনি আমার চেটার ঘারা, সাধনার ঘারা, প্রেম-নিম্নন্তিত সেবার ঘারা বিশেব করিয়া ব্যক্তি বিশেবের। তালেন ভালি রাজাকে সব স্থানেই দেখিয়া থাকেন—ভূল তাঁছার হয় না। ঠাকুরদাদা এই সাধনার উত্তীর্ণ হইয়াছেন, রাজাকে ভূল করিবার সন্তাবনা তাঁহার নাই। স্থনস্থানর পক্ষেও সেই কণা।"

"এই নাটকথানির একদিকে অন্ধানর গৃহচারিশী বাদী অস্তাদকে বসত্তের উৎসবে উন্নত্ত বছ জনাকীর্ণা নগরী। কবি নাটকটিকে চিত্তাকর্ষক করিতে একটি নাটকীয় ছল্পের dramatio contrast-এর সাণায়া লইয়াছেন। নাটকে এই রকম দৃষ্ঠগত্ত ছল্খ রচনা রবীক্রনাথের একটি বিশেষত্ব। 'ডাকঘরে' দেখিতে পাই পথপার্থে বাতায়নে একাকী রূপ্থ বালক অমল, সন্মুথেব পথে ক্ষীতকার সংসার ভাগের মোড়ল দইওয়ালা পাহারাওখালা কবিব ও ঠাকুরদার দল লইরা ছুটিয়াছে। শারদোৎসবে বেতসিনীতীরচাবী বালক উপানল ধণশোধে বান্তঃ; মষ্ট্রত্ত ছুটির ছানন্দে বালকের দল, ঠাকুরদারা, লক্ষেরর ও সমাট্ বিজ্ঞানিত্য। বক্তকরবীতেও একই দৃষ্ঠা। কৃদ্ধ ধনভাত্তারের দেওয়ালের বছ উদ্দেশ ছোটু একটি বাতারনের মতো এই হুণ্ণ সন্ধানী যক্ষপুরীর বুকের উপরে রঞ্জনের ভালোবাসার কাজল পরা নন্দিনী। এখানেও সেই একই পালা। অন্ধকার ঘরে বুদর্শনা। এই কক্ষটিতে রাজাকে তাঁহার উপলব্ধি করিতে হইবে প্রথমে; ভার পরেই দা ভাহার সাক্ষাৎ ঘটিবে বাহিরের আলোকে।" -রবীন্দ্রনাথের রাজ্য। নাটকের আলোচনা, শান্তি-বিক্তন, ২০০২ আবণ।

রানী স্থদর্শনা ভূল করিয়া স্থবর্ণের রূপে ভূলিরাছিলেন বলিয়া অপমানে অভিমানে রাজাকে ত্যাগ করিয়া পিত্রালয়ে চলিয়া পিয়াছিলেন। তাঁহাকে অনিকার করিবার জন্ত সাত রাজার মারামারি কাড়াকাড়ি পড়িয়া গেল। রাজা ইহাতে গুঁলী হইলেন। তিনি বুরিলেন যে এইবার এই আঘাতে স্থদর্শনার জন পুটিবে। ছরটা রাজা অন্ধনারের আসল রাজার কাছে দণ্ড পাইল, কিছু পুষুষার পাইল ভালীরাজ—বে হারিয়াও হারে নাই, বারে বারে

বীরের মতো রাজাকে আঘাত করিয়াছে। সত্যকে স্বীকার করো, অথবা আঘাত করো—মাঝামাঝি অন্ত কোনো পছা নাই।

"রাণী ভূল করিয়াছেন—কিন্ত তাঁহার মৃক্তির উপায় তাঁহার নিজের মধ্যেই ছিল। স্বর্গকে তিনি ভালোবাসিয়াছিলেন—কুম্মর বলিরাই। কুম্মরের প্রতি আসন্তিনতেই তাঁহার রক্ষার বীজ্ঞমন্ত্র। তিনি ঘণনই জানিতে পারিলেন এ সৌম্মর্য প্রকৃত নঙে—ইহার সহিত সত্যের যোগ নাই, তথন তিনি বিশ্বিত হইরা বলিলেন—'ভীক্ষ। ভীরা। অমন মনোমোহন রূপ—ভার ভিতরে মামূব নেই! এমন অপনার্থেব জন্তে নিজেকে এত বড় বঞ্চনা করেছি।' কিন্তু বঞ্চিত্র যাহা হইরাছে তাহা বাণীর চোখ, জন্ম নতে। … এতদিনে বাণীর ভূল ভাতিল, তোগের উপর বিশ্বাস টুটিল, চোখে যাহা কুম্মর লাগে ভাহাব চেযে গভারতর সৌম্মন্তর জন্ত্র আলোকন জাগিল—তাঁহার অক্ষকার যরের মাধনা পূর্ব হইলেন। এইবাব তিনি অস্কাকার যরের সাধনা পূর্ব হইলেন।" রাভা নাটকের আলোচনা।

রাজাকে পাইতে হইলে সকল অহজার ও অভিমান তাগে কবিয়া দীনবেশে পথেব ধ্লায় নামিতে হইবে—বিলাদে আরামে চাঁহাকে লাভ করা যায় না। তাঁহাকে তপস্তার দ্বারা জ্যুথের দ্বারা জয় করিয়া পাইতে হইবে। দিনি "আঁধার ঘরের রাজা" তিনিই যে "ছুঃথরাতের বাজা" (থেয়া, আগমন)।

"রবীলনাথের অস্তান্ত নাটকের মতো গোনিও তাবপ্রধান নাটক গটনাপ্রধান নহে। প্রধানতঃ ইহার মধ্যে যে সংস্থি তাহা সন্নাকে আশ্রয় কবিষা নহে—নায়ক নাটকের চিন্তাকে আশ্রয় করিয়া। সংস্থৃত ভাষায় নাটককে দৃষ্ঠ কাবা বলে। কিন্তু এই জাতীয় নাটকে কাবোর অনেকটাই অদৃষ্ঠা রহিয়া যায়। স্বটা দেখিতে হইলে দৃষ্টিব সহিত কল্পনাৰ সাহায়ং গাবগুক। স্তরাং এই শ্রেণীর নাটককে কল্পন্থকাবা বলিলে অস্থায় হয় না।'—বাল্পা নাটকের আলোচনা।

"'রাজা' নাটক রবীকুলাথের 'গীতাঞ্জানি' ও 'গীতিমালোব' মাঝঝান কিপিছ;
স্তরাং যে অধ্যান্ধ-আকৃতি ও আকাজ্জা আমবা এই সুদেব কাবোব মধে। পাই, 'বাজা'র
তাহাই ক্লপ পাইনাছে নাটকীয় ভাবে কাপকের মধ্যে, যেমন 'নবেছা ও গীতাঞ্জানি'র মধ্যে
পাইরাছিলাম 'খেমা'র কাপক কাবা। 'রাজা'কে আমরা lyrical drama বলিব, জর্গাৎ
ইহার বিষয়টি বাহিরের ঘটনার ছারা ভারানান্ত নহে; উচা অন্তরের আশা-আকার্কার
বিচিত্র অনুভূতির ক্লপ। সেইজান্ত আমরা ইহাকে কাপক-নাট্য বলিব না, ইহাকে lyrical
নাট্য বলিব।"—কাবাপরিক্রমা, ২র সংক্রবণ।

রাজা নাটকের নাট্যবন্ধটি একটি বৌদ্ধ গর হইতে লওয়া, কিন্তু কবির হাতে পড়িয়া ভাষা স্পাল্ডরিত হইয়া গিরাছে। এই 'রাজা' নাটকের পারিপার্টিক দৃশ্রে বসপ্ত ঋতুর আবির্ভাবকেই কবি আবাহন করিয়াছেন। শারদোৎসবের ন্তার ইহাও একধানি ঋতু-উৎসবের নাটক।

जोरा—God The Invisible King—H. G. Wells (1917).

আমার ধর্ম-রবীক্রনাথ ঠাকুর, প্রধাসী ১৩২৪ পেরি, ২৯৭ পৃষ্ঠা। কাব্যপরিক্রমাঅঞ্জিতকুমার চক্রবর্তা, দিতীর সংক্ষরণ। রূপকনাট্যের ভূমিকা-নীহাররঞ্জন রায়, ভারতবর্ব
১৩৩৬ প্রাবণ। অচলায়তন, অরূপরতন, ফান্তনী-সংখাময়ী দেবী, জয়ন্তী, ১৩৬৮ বৈশাব।

অচলায়তন

ইহা নাটক। ইহা ১৩১৮ সালের আখিন মাসের প্রবাসী পত্রে সমগ্র ছাপা হর। উৎসর্পের মধ্যে তারিথ ছিল ১৫ই আষাঢ় ১৩১৮। ইহা নাটক-রচনা শেষ হওয়ার তারিথ অফুমান করা যাইতে পারে। শিলাইদহে লেখা। ইহার পরে কবি প্রশাস্তিক্ত মহলানবিশের কর্মপ্রয়ালিস খ্রীটেব বাড়ীর ছাদে পাঠ করিয়া আমাদের শোনান।

১৩২৪ সালের ফাস্কন মাসে এই নাটককে সংক্ষিপ্ত করিয়া অভিনয়োপযোগী এক সংশ্বরণ প্রকাশ করেন, তাহার নাম রাথেন গুরু। প্রথমে যেদিন অচলায়তন নাটক পাঠ করেন, সেদিনই উহার নাম গুরু রাখিবার ইচ্ছা কবি প্রকাশ করিয়াছিলেন, কিন্তু আমরা অচলায়তন নামটিকেই অধিক সমর্থন করাতে তাহাই বহাল থাকিয়াছিল। এখন এই অচলায়তন শন্ধটি বাংলা ভাষায় একটি বিশেষ গূঢ়ার্থক মূল্যবান্ শন্ধ হইয়া উঠিয়াছে।

এই নাটকের ব্যাখ্যা কবি স্বয়ং এইরূপ দিয়াছেন-

"যে-বোধে আমাদের আন্ধা আপনাকে জানে দে-বোধের অভ্যুদ্ধ হর বিরোধ অতিক্রম ক'রে জামাদের অভাদের এবং আরামের প্রচীরকে ভেঙে ফেলে। যে বোধে আমাদের মুক্তি, তুর্বং পথস্ তৎ কবরো বছান্ত—তুঃপের তুর্গম পথ দিরে দে তার ভরভেরী বাজিরে আদে—আভক্ষে সে দিগুদিগন্ধ কাঁপিরে তোলে, তাকে শত্রু ব'লেই মনে করি—ভার সক্ষে লড়াই ক'রে তবে তাকে ধীকার করতে হয়, কেননা নায়মান্ধা বলহানেন লভাঃ। অচলারতনে এই কথাটাই আছে।

আমি তো মনে করি আন্ত যুরোপে বে-যুদ্ধ বেধেছে সে ট্র শুরু এসেছেন ব'লে।
উাকে অনেক দিনের টাকার প্রাচীর, মানের প্রাচীর, অহকারের প্রাচীর ভাঙ্তে হছে। তিনি
আস্বেন ব'লে কেউ প্রন্তুত ছিল না, কিন্তু তিনি যে সমারোহ ক'রে আস্বেন তার জন্তে
আরোজন অনেক দিন থেকে চল্ছিল। যুরোপের হলপানা যে মেকি রাজা হ্বর্ণের রূপ দেশে
ভাকেই আপান সামী ব'লে ভূল করেছিল—তাই তো হঠাৎ আগুন অল্ল, তাই তো সাত রাজার
লঙ্গাই বেধে গেল,—তাই তো বে ছিল রাণী তাকে রথ ছেড়ে, আপান সম্পদ ছেড়ে পথের
মুলোর উপার দিরে হেঁটে মিলনের পথে অভিসারে বেতে হচ্ছে। এই কথাটাই গীতানির
একটি সামে আছে—

এক হাতে ওর কুপাণ আছে, আরেক হাতে হার, ও যে ভেডেচে ভোর ছার !"

--- आमात्र सर्म, ध्वामी, > >२ । प्रीय, २०१ पृष्ठी ।

জগং সচল। এই সচলতার মধ্যে যে বা যাহা অচল হইরা থাকিতে চার, তাহাই একদিন অকস্বাৎ গুরুর আগমনে ভাঙিয়া ধূলিসাং হয়, এবং তথন অনভকে বাধা হইরা নড়িতে হয়। আমাদের ভারতবর্ষ একটি প্রকাণ্ড অচলায়তন, একজটা দেবীর কালনিক ভয়ে, য়াচি টিকটিকি পাজি পূঁথি গুরু পুরোহিত শাস্ত্র ইত্যাদি কত কিছুর নিষেধে দে হাজার বংসর ঘরের হয়ারই খুলে নাই। তাই মহাগুরু আসিয়াছেন দার ভাঙিয়া মৃদলমান আক্রমণের ভিতর দিয়া। তাহাতেও চৈতত্ত হয় নাই, তাহার পরে আসিয়াছেন নানা ইউরোপীয় জাতির আক্রমণের ভিতর দিয়া। এথনো কি চৈতত্ত হইয়াছে ? এই পাষাণপ্রাচীর যে ভাঙিয়াও ভাঙিতে চায় না। তবে 'থাচাথানা ছল্ছে মৃছ্ হাওয়ায়'। হয়তো পিঞ্জরের বিহঙ্ক একদিন মৃক্ত আকাশপ্রাঙ্গণে ভানা মেলিয়া উড়িবে। তথন দে নিষেধকে নিজে যাচাই করিয়া দেখিয়া মানা বা না-মানা স্থির করিবে।

भात्रादादम्य जात्र अवनात्रज्य कारा जीत्नादकत ज्यिका नाहे।

এই নাটকের কথাবস্তর পরিচন্দ-প্রসঙ্গে প্রভাতকুমার মুথোপাধ্যার লিথিয়াছেন—

"উপাধ্যানটির মধ্যে পঞ্চক ও মহাপঞ্চক ছইটি বিকল্প শক্তি—ইহারা পরশারের সহোদর আতা, হতরাং সম্বন্ধ ঘনিওঁ। অথচ একজন বিজ্ঞোহের প্রতিমূতি, অপর জন মৃতিমান নিঠা; পঞ্চক ঘাহা কিছু আচার, ঘাহা কিছু প্রচীন প্রথা যাহা কিছু নিষেধ তাহাকেই আঘাত করিবার জন্ত জনপ্রভাবে বাতা। তাহারই জ্যেষ্ঠ মহাপঞ্চক নিঠার নিঠার, আরতনের সকল প্রচীন প্রথার জাহার অচলা ভক্তি। মোটকথা, নিঠা ও নিজ্ঞমণের মধ্যে বিরোধ বাধিয়াছে। কিন্তু কবি এই বিরোধকেই চরম বলিয়া বীকার করিলেন না। গুরু আসিলেন, অচলায়তনের প্রাচীন ধ্বংস হইল, বাহিরের আকাশ দৃভ্যমান হইল, বাহিরের বাতাস আয়তনের প্রান্ধণে মহিল। অম্পুত্ম কর্তক শোণপাংশু সকলে আদিল। মনে হইল পঞ্চকের জর, বিজ্ঞোহেরই জয়। কিন্তু বংগিপাংশু সকলে আদিল। মনে হইল পঞ্চকের জর, বিজ্ঞোহেরই লয়। কিন্তু বংগিপাংশু সকলে আদিল। মনে হইল পঞ্চকের জর, বিজ্ঞোহেরই ল্লুক করিরা সামনার আর্মেজন হইল, নিঠার মধ্যেই সভ্যোর প্রত্যার আহ্বে। চঞ্চলতাই জীবনের একমাত্র লক্ষণ নহে, চঞ্চল বিল্লোহ্ সমাহিত ইইলে সৃত্যুক্ত অন্তর্যে পাইবার অবসম্ব হয়।

"রবীক্রনাথের এই সময়ের মনের মধ্যে যে কথাটি বিশেষ ভাবে জাগিতেছিল তাহারই রূপ পাই এই নাটকে। ধর্ম ও সমাজ-বিবের রবীক্রনাথ বিদ্রোহাঃ; তিনি চিরদিনই হিন্দুসমাজের জীর্ণ সংক্ষার ও মলিন আচারকে আঘাত করিয়াছেন। কিন্তু সামরিক হিন্দু রাক্ষ-বিতর্কে তিনি নিজেকে হিন্দু বালিয়া হিন্দুজাতির সংস্কৃতির মূল আদর্শকেই সর্বোচ্চ হান দিলেন। তিনি রাক্ষ-বটে, তবে তিনি হিন্দুঙা তিনি একাধারে পঞ্চকের বিদ্রোহ ও মহাপঞ্চকের নিষ্ঠা। হিন্দু সমাজের আচলায়তনের প্রাচীর ভাঙিলে যখন সর্ব জাতি সব মানব সেবানে প্রবেশাধিকার লাভ করিবে, সেই দিনই হিন্দু সার্থক। রবীক্রনাণ সেই হিন্দুছকে বিশ্বাস করেন যাহা প্রগতিকেও ত্যাপ করে না। এই সময়ের এই ছন্ম তাঁহার অবচেত্রন মনে এই নাটকীয় রূপ লইমাছিল।"

--- त्रवीख-खीवनी, ४२५-४२१ पृष्ठी ।

ডাকঘর

নাটকা। ১৯১২ সালের মাচ মাসে, ১০১৮ সালে প্রকাশিত হয়। ইহা জিন দিনে লেখা, শান্তিনিকেতনে কবির জ্যোড়াসাঁকোর বাড়ীতে ইহার অভিনর হয়। এই অভিনর দেখিতে মহাত্মা গান্ধী, লোকমান্ত টিলক, মাননীর মালবীয়জী, খাপাড়দে, লাজপৎ রায় প্রভৃতি বহু দেশ-দেবক সমবেত হইয়াছিলেন। অভিনয় অসাধারণ স্থানর হইয়াছিল। এই সময়ে কবি 'জনগণমন-অধিনায়ক জয় হে' গানটি রচনা করেন। সেই গান শুনিয়া মালবীয়জী বারংবার বলিয়াছিলেন—ঠিক হায়, ঠিক হায়, হম্লোক ছায়াডয়-চিকতম্ভ। রাজা অচলায়তন যেমন lyrical drama ইহাও তেমনি।

মাধ্ব সংসারী বৈষয়িক লোক। সে ধন সঞ্চয় করিয়াছে। কিন্তু ভাঙার সম্পত্তি যে ভোগ করিবে তাহার এমন কোনো নিকট আত্মীয় নাই ৷ সে পরের ছেলে অমলকে পোষ্য গ্রহণ করিয়াছে, অমল ভাহাকে পিসেমশায বলে। পরকে আপন করিয়া ধরিয়া বাখিবার জন্ম মাধবের সতত চেষ্টা, সে কবিরাজের সঙ্গে পরামর্শ করিয়া অমলকে বরে বন্দী করিয়া রাথিয়াছে, বাহিবে বাইতে দের কিন্তু জগতে সব কিছুই চলিফু-অমলের জানালার পাশ দিয়া দইওয়ালা যার, স্থা ফুল তুলিতে যার, দরে পাঁচমুড়া পাহাড়ের চূডা দেখা যার, রাঙা मांचित्र पथ निकल्पालय देक्षिष्ठ मिनिया मिगर्स शिक्षा मिनियार्छ। मध्माती বিষয়ী লোক দব ছাডিয়া নিজের হাতের তৈয়ারী গণ্ডির মধ্যে দব কিছু ভরিয়া ধরিয়া বাধিতে চায়, কিন্তু রাজার ডাক্বর হইতে অহরহ নিরস্তর চিঠি আসিতেছে গুরে চলিবার। যাহার মন আছে, দেখিবার মতন চোধ আছে, সে সেই চিঠি পডিয়া তাহার মর্ম গ্রহণ করে। অমলের কাছে বিজ্ঞ বিষয়ী ও সংসারী মোড়ল উপহাস করিয়া সাদা কাগজ দিয়া বলে-এই ভোমার রাজার চিঠি। কিছ সেই সাদা কাগজেই ঠাকুরদানা রাজার আহ্বান ও নিমন্ত্রণ দেখিতে পান। জগতে যত আলো রং গদ্ধ স্পর্ণ ভুর গান শব্দ ভালোবাসা স্বই তো সৈই রাজার ডাক্ষরের মোহর-মারা চিঠি-স্বই তো আমাদের ক্ষাগত ডাক দিতেছে বেধানে আছি সেধান হইতে বাহিন হইরা চুলিবার জন্ত न्छमान व्यवसाय व्यवसाय वर्ष विषय वर्षे वर् মাধব যতই কেন আগ্লাইয়া রাখুক না, একদিন রাজার ডাক-হরকরা মৃত্যুরূপে আসিরা হাজির হইল, তথন আর অমলকে দে নিজের কাছে কিছুতেই
ধরিয়া রাখিতে পারিল না, অভি-সাবধানী কবিরাজের ব্যবস্থা পশু হইল,
মোড়লের উপহাদ বার্থ হইল। সেই রাজার ডাককে অবহেলা করেন নাই
ঠাকুরলাদা। অমল চলিয়া গেল, কিন্তু দে রহিয়া গেল প্রেমের শ্বতির মধ্যে—
কুধা লেঘ কথা বলিয়া গেল—"তাকে বোলো যে সুধা তোমাকে ভোলেনি।"
প্রেমেই তো সুধা—অ-মৃত—প্রেম কিছু হারায় না, দে কিছু ভোলে না।

এই নাটিকাটিতে "স্থূদুরের পিয়াসী" রবীক্সনাথের ক্ষম জীবন হইতে বাহির হইয়া পড়িবার একটি করণ ব্যগ্রতা প্রকাশ পাইয়াছে।

স্তাইব্য—ডাকঘর, সজোবচন্দ্র মজুম্বার, শান্তিনিকেতন, ১৯৩০ ভাস্ত-আমিন।

গীতিমাল্য

১৩১৮ সালের চৈত্র মাস হইতে ১৩২১ সালের আধাঢ় মাস পর্যস্ত সময়ের রচনা গান ও কবিতা একত্র করিয়া এই গাঁতিমালা প্রকাশিত হয়। ইহা ইংরেজী ১৯১৪ সাল। ইহার গান ও কবিতাগুলি শান্তিনিকেতনে, শিলাইদহে, ইংলণ্ডে, জাহাজে ও রামগড় পাহাড়ে লেখা।

প্রেমমন্ত্রকে কবি ইহার আগে গানের অঞ্চলি দিয়াছেন। কিন্তু দূর হইতে কেবলমাত্র সন্ত্রমন্তরে গীতাঞ্চলি দিয়া ভক্ত কবিদ্দরের পরিভৃথি হইল না। কবি এবার প্রিরতমের গলায় পরাইলেন গীতিমাল্য। গীতিমাল্যের ভাববস্তু ন্তন নহে, তবে প্রকাশ ন্তন। জীবাআর তীর্থযাত্রা আরম্ভ হইয়ছিল সোনার তরীতে, পৃজা করিল নৈবেছে, পারে পৌছিয়ছিল থেয়তে, তাহার পরে তীর্থরাজ্বের চরণে সমর্পণ করিল গীতাঞ্জলি, এবং এই বারে তাঁহার কণ্ঠে অর্পণ করিল গীতিমাল্য। গীতাঞ্জলি-যুগের বিরহ্বাথা এখনো ঘুচে নাই। তব্ ইয়াহার বিরহে আমি কাতর তিনি যে আমারই, তিনিও যে আমার মিলনপ্রামানী এই বোধের ভৃথি গীতিমাল্যে উকি মারিয়ছে। ভাক্তের পূজা সঙ্গোপনের পৃজা—প্রিয়ের কাছে অভিসার তো সঙ্গোপনেরই ব্যাপার—কৌন বে-শরম তের সাথ যাই—এইটি গীতিমাল্যের মূল স্কর। কবি এখন ব্রিতে পারিয়াছেন যিনি অন্তর্রম তিনি নানা রূপের মধ্য দিয়া অন্তর্রক ক্ষর্ণ করিতে প্রয়ানী—বিষপ্রস্তিও তাঁহারই স্পর্ণের অঙ্গ।

ক্রন্থবা—কাবাপরিক্রমা—অ**জিভকু**মার চক্রবর্তী।

আত্মবিক্রয়

৩১ নম্বর

"আমাদের যাহা শ্রেষ্ঠ প্রকাশ তাহা আমরা কাহাকেও কেবল নিজের ইচ্ছা অনুসারে দিতে পারি না; তাহা আমাদের আরন্তের অতীত, তাহাতে আমাদের দান-বিক্ররের ক্ষমতা নাই। মূল্য বাইরা বিক্রের করিতে চেটা করিলেই ভাহার উপরকার আবরণটি মাত্র পাওরা যার, আসল জিনিসটি হাত হইতে সরিয়া যায়। আমরা দৈবক্রমে প্রকাশিত হই, ইচ্ছা করিলেই বা চেষ্টা করিলেই প্রকাশিত হইতে পারি না। কাহারো কাহারো এমন একটি অক্সত্রিম স্বভাব আছে যে, অন্তের ভিতরকার সত্যটিকে সে অত্যস্ত সহজেই টানিয়া বাহির করিয়া লইতে পারে।"

(ছিল্লপত্ত, কলিকাতা ৭ই অক্টোবর ১৮৯৪, ৩০৫ পৃ: দ্রষ্টবা)।
কবি নিজেকে সম্প্রদান করিতে চাহিতেছেন—বল লোভ কামনার
কাছে নয়,—আনন্দময় সবলতার হাতে, অহেতুকী প্রীতির কাছে। কিন্তু
তাঁহাকে আয়ন্ত করিবার জন্ত রাজার বল ব্যর্গ হইল, ধনীর লোভ-দেখানো
বার্থ হইল, স্থানরীর দ্ধানের প্রালোভনও বার্থ হইল। অবশেষে তাঁহাকে
থেলার স্থাথে বিনা মূল্যে জায় করিয়া লইল শিশু—জকারণ ও সরল ভালোবাসা
কবিব মনের উপর জায়ী হইল।

তুলনীয়---

And Jesus called a little child unto him, and set him in the midst of them (his disciples).

And said, Verily I say unto you, except ve be converted, and become as little children, ye shall not enter into the kingdom of heaven.—St. Mathew, 18-2-3.

দ্রষ্টব্য—ছিন্নপত্র, ৩০৪ পৃষ্ঠা।

গীতালি

এই পুস্তকথানিতে ১৩২১ দালের শ্রাবণ মাদ হইতে এরা কাতিক পর্যস্ত লেখা কবিতা ও গান স্থান পাইয়াছে। ইহা পুস্তকাকারে ছাপা হইয়া বাহির হয় অগ্রহারণ মাধে। ইংরেজি ১৯১৪ দালে।

এই বইধানির দঙ্গে আমার অনেক স্থকর স্থতি জড়িত হইয়া আছে।

ঐ সালের আখিন মাসে আমি কবির কাছে কিছুদিন যাপন করিবার জ্ঞা
প্রার ছুটি উপলক্ষে শান্তিনিকেতনে গিয়াছিলাম। একদিন কবি আমাকে
বলিলেন—চাঞ্চ, আমি যে থাতায় কবিতা লিথ্ছি দেই থাতাথানি রখী
আর বৌমা আমাকে দিরেছেন, তাঁরা আমার হস্তাকর রক্ষা কর্বেন ব'লে।
গানগুলি প্রেদে ছাপতে দিতে হবে, তুমি যদি এগুলি নকল করে প্রেদের
কলি তৈরি ক'রে দাও।

আমি ২১এ আখিন পর্যস্ত লেখা সমস্ত গান ও কবিতা নকল করিয়া কবিকে , দিলাম। তিনি আমাকে জ্বিজ্ঞাসা করিলেন—এগুলি কেমন হইয়াছে। আমি বলিলাম—একটা গানের স্বর্থ আদি বৃথিতে পারি নাই। অক্তপ্রেলি ভালই হইয়াছে।

কবি আমার কথা গুনিয়া চটিয়া গেলেন, আমাকে রুপ্ট স্বরে বলিলেন— ভূমি কিছু বোঝো না, এ ঠিক হয়েছে ।

আমি আমার বৃদ্ধির অলতা স্বীকার করিয়া লইলাম; এবং কবিকে গঞ্জীর দেখিয়া প্রণাম করিয়া বিদায় লইয়া চলিয়া আসিলাম। আমি আহারাদি করিয়া বেণ্কুলো ঘুমাইয়া পড়িয়াছি। রাত্রি তথন এগারোটা বাজিয়া গিয়াছে। হঠাৎ কবির আহ্বানে ঘুম ভাঙিয়া গেল—চারু, তুমি কি সুমিয়েছ ?

আৰি তাড়াতাড়ি উঠিয়া দশারির দড়ি ছিঁড়িয়া ফেলিলাম, এবং দশারি সরাইরা কবিকে আমার বিছানার বদাইলাম। তিনি বলিলেন— তুমি ঠিক বলেছ, ঐ কবিতাটার মানে আমিই ব্যুতে পারি না। দেখাতো বৰ্লে এনেছিঁ, এখন হয়েছে কি না ?

সেই পরে-লেখা কবিতাটি গীতালির মধ্যে ছাপা হইয়াছে—সেটি ২৩ নম্বরের গান—

যে থাকে পাক না দ্বাবে, যে যাবি যা না পারে।

কিন্তু পূর্বে যে গানটি লিখিয়াছিলেন, ভাহাও স্থলর হইয়াছিল, এখন আমি তাহা বৃঝিতেছি। কবি আমাকে যে তিরস্পার কবিয়াছিলেন তাহারই ক্ষোভ ভূলাইয়া দিবাব জন্ম গানটিকে বদল করিয়া আমাকে অত বাত্রে সাম্বনা দিতে আসিয়াছিলেন। পূবে বচিত ও পরিত্যক্ত গান্টি নিম্নে উদ্ধার করিয়া বাধিয়া দিলাম—

| কেন সার | মিথা আশা | বাবে । |
|-----------|-------------------------|--------------------|
| ওবে তোর | শত ধ'বে কেউ | শ্ৰেনারে, |
| এ তোমার | ব্যব্রিশেষের | ভাবেৰ প;খী |
| ' চামাবেই | ৭ক [ু] ।। কেবল | গল' ডাকি', |
| ষা রে হুই | 'বজন পথে | চ'লে ধা বে। |
| ওদের ঐ | হৃদয ক্ [*] ডি | শিশিৰ রাতে |
| ব'দে <য | চাথেৰ জন্মেৰ | রপেকাতে। |
| মেটাতে | া ববৈ না ছে | শাধার নি শা |
| তোমাৰ এই | কাটা ফুলেস | হণলাৰ ভুষা, |
| সে যে তাই | ২যে হ'ছে | পূবর পাবে। |

কবিব এই গানটি ইই বচনাৰ স্থান ও কাল ছিল ১৭ ভাদু সকাল, স্থাকণ : পরে যে গানটি রচনা কবিয়া গভালিতে দেওয়া ইইয়াছে ভাষাৰ রচনাৰ স্থান শাস্থিনিকেতন, এবং কাল আখিন মাসের কোনো ভাবিথেব রাত্রি। অথচ গীতালিতে যে গানটি আছে ভাষাৰ নীচে আগে রচিত গানেবই স্থান-কাল নিদিই ইইয়াছে।

গীতালি উৎসর্গ উপলক্ষ্যে যে আনিবাদী কবিতাটি আছে তাহা কবির পুত্রকে ও পুত্রবধ্কে উদ্দেশ কবিয়া লিখিত: ইহা যে আকারে ছাপা হুইয়াছে, তাহা তিন বার পবিবর্তনের পরে। প্রথমে আমি এক রক্ষ নকল করি, পরে নকলের উপর কবি অনেক সংশোধন ও পরিবর্তন করেন, এবং অবশেষে তাহাও বাতিল করিয়া ঘাহা রচনা করেন তাহার মধ্যে পূর্বের রচনার অল্ল করেক লাইন মাত্র রক্ষিত হুইয়াছে।

ইহার পরের কবির সঙ্গে আমরা বৃদ্ধগঢ়াতে যাই ২৩এ আখিন। বতকগুলি

ক্ষবিতা দেখানে এবং বৃদ্ধগন্ন। হইতে 'বরাবর' পাছাড়ে বৌদ্ধ গুহা দেখিতে বাইবার পথে বেলা স্টেশনে ও পানীর মধ্যে রচিত হয়।

গন্ধ। হইতে কবির সহিত আমি এলাহাবাদে গেলাম। সেখানেও কতকগুলি কবিতা রচিত হইন্নছিল। সেই কবিতাগুলিকে যখন ছালিতে দেওরা হইল, তথন কবিব রচনা এক অভিনব ভিন্ন স্রোতে প্রবাহিত হইতে লাগিল, এবং দেই নৃতন রকমে রচনাগুলি পরে 'বলাকা' নামে প্রকাশিত হইন্নছে।

গীতালির প্রথম গানটি একটি গ্রীক ছন্দের অমুকবণে লিখিত।

কবির এত দিনের সব কায়া বাথা প্রিয়মিলনের সার্থকতাব ঐতি মিপ্তিত হইয়া দেখা দিয়াছে গীতালিতে। গীতালিতে এই সার্থকতার স্বান্তিব স্থবই প্রধান। কবি "নিজ্য নৃতন সাধনাতে নিজ্য নৃতন বাথা" সঞ্চ কবাব জিতরে সিদ্ধির ও মুক্তিব স্থানও পাইয়াছেন। এখন প্রকৃতি এবং হৃদয় নেন পরস্পরের প্রতিছেবি এবং রসম্বর্গেব লীলাক্ষেত্র।

কবি আশীর্বাদ কবিতাটি প্রথমে লিখিয়াছিলেন---

আল আমি তোমাদের সঁপিনাম উংবে
চোমরা তাঁহারি ধন আনোকে আঁধাবে।
জেগেছি অনেক রাজি, ছেবেছি জনেক,
ক্ষণেক বা আলা হর, আলকা ক্ষণেক।
হৃদ্ধের তোলাপাদ। তুফানের ছেউ—
মনে ভাবি আমি ছাড়া নাই বৃঝি কেউ।
এমন করিরা বলো কাটে কত কাল;
মাঝি যে তাঁহারি হাতে ছেড়ে দিফু হাল।
আমার প্রদীপধানি অতি ক্ষীণকাঢ়া,
বতটুকু আলো দেব তার বেলি ছারা।
এ প্রদীপ আল আমি ভেঙে দিফু কেনে;
তাঁর আলো তোমাদের নিক বাত মেলে।
হৃদী হও দুংধী হও ভাবে চিন্তা নাই,
তোমরা তাঁহারি হও, আলীব্যাধ ভাই।

পরে বাংল করিরা নিম্নলিখিত লাইনগুলি করিলেন--সংসারে ঋণেক আশা, আশবা ক্ষণেক।

'এমন করিয়া বলো কাটে কডকাল' লাইনটি কাটিয়া একবার লিখিলেন--এ তরী আমারি ব'লে মরেছিছু ছেবে।

পুনরার কাটিরা করিলেন—

এবং পরের লাইনের 'হাল' কাটিরা করিলেন 'এবে'।

এ তরী আমারি ব'লে এত মরি ভেবে।

সংসারে ক্ষণেক আশা, আশহা ক্ষণেক—লাইনের পরে যোগ করিলেন ন্তন চারি লাইন—

> সতা ঢাকা পড়ে মোর ভরে ভাবনায়, মিথারে মূরতি গড়ি বার্গ বেম্বনায়। বিশ্ব আনন্দের সৃষ্টি, আনন্দেই ভরা, মোর সৃষ্টি মায়া দিয়ে স্বপ্ন দিরে গড়া।

এই শেষ লাইনট লিখিবার আগে লিখিতেছিলেন—'মায়া দিয়ে মোহ' এবং সেই অসমাপ্ত লাইন কাটিয়া শেষ লাইনট লিখিয়াছিলেন।

কিন্তু পরে যথন বই ছাপা হইল তথন কবি ইহার অনেক পরিবর্তন করিয়াছেন দেখিলাম। কৌতৃহলী পঠিক-পাঠিকারা বইরের সঙ্গে এই খদড়া পাঠ মিলাইয়া দেখিলে কবি-মনের একটু পরিচয় পাইয়া আনন্দিত হইবেন।

যাত্ৰা**েশ**ষ

১০৭ নম্বর

এই কবিতাটি ১৩২১ সালের কাতিক মাসের সব্ত্রপত্তের ৪১৯ পৃষ্ঠায় প্রথম প্রকাশিত হয়।

যেমন সন্ধ্যার অন্ধকারের মধ্যে নবপ্রভাতের আলোক প্রচ্ছর ইইনা পাকে, আঁধারের আলোক-বাগ্রতা (প্রধী, সম্দ্র), তেমনি মৃত্যুর মাঝে প্রচ্ছর ইইনা পাকে প্রাণ। রাত্রি যদি তাহার গভীর অন্ধকারের মধ্যে দুংথ শোক মৃত্যুর মধ্যে অমৃতের আন্ধাদ পার বলিরাই বাঁচিয়া থাকিতে পারে। সেই উদয়াচলের—পরলোকে বা নবজীবনের—পথে আমি তীর্থবাত্রী, আমি একাকী মৃত্যু-সন্ধ্যার অমুগামী ইইয়' চলিয়াছি, আমার দিনান্ত অর্থাৎ জীবনাবদান মৃত্যুপারের দিগতে লুটাইরা পড়িতেছে।

সেই নৃতন জীবনের আভাসই তারায় তারায় স্পন্দিত। প্রত্যেক প্রকাশের পূর্বাবস্থা ধ্যান সমাধি—বাজকে বৃক্ষরূপে প্রকাশ হওরার পূর্বে ভূগর্জবাস স্বীকার করিতে হয়; বাকো ও কর্মে পরিণত চইবার পূর্বে চিন্তাকে মনের গুহার অজ্ঞাতবাস করিতে হয়। মরণোত্তর-কালের স্থপন্থপ্র তাই আমার চিন্তকে সাড়া দিতে বলে।

প্রত্যক্ষের পশ্চাতে অপ্রত্যক্ষ, রূপের পশ্চাতে অরূপ, জীবনের পশ্চাতে মৃত্যু। দিবসের আলোক নির্বাণ হইলেই দেখিতে পাই অনির্বাণ তারকার জ্যোতি; জীবনের অবসানেই দেখা দের পরলোকের আনন্দ ও সর্বাশ্রের করণা। অতএব আমি নির্ভয়ে আমার জীবন-সারাক্ষের সকল সাধনা লইয়া—মান দিবসের শেষের কুত্ম চর্যন করিয়া—নবজীবনের কূলে যাত্রা করিয়া চলিয়াছি।

হে আমার জীবনাবদান, আমার দকল ভালোমন্দ তোমার মধ্যে নিছিত রহিল। অন্তর্ধামী জীবনদেবতা, ভোমার দঙ্গে আমাব যে জন্ম-জন্মাস্তরের যোগ তাহা আমি স্বীকার করিতেছি। জীবনের অনেক সাধই অপূর্ণ বভিয়া গেল ইহাও স্বীকার করিতেছি।

জীবনের সফলতা বিফলতা সব মিলাইয়াই তো আমাব এই আমিত। অতএব কিছুই ফেলিয়া দিবার বা অবছেলা কবিবাব বস্তু নতে, সমস্ত মিলাইয়াই জীবনবিধাতা জীবনের পূর্ণ পবিণতি ঘটাইতেছেন। জগৎ নশ্বর, প্রত্যক্ষ। কিছু যাহা চিরস্তন অপরিণামী তাহা অপ্রত্যক্ষ, অগোচব; তাহা প্রত্যক্ষের ভিতবেই প্রছেল থাকিয়া নানা রূপ-ক্ষপান্থবের মধ্যে প্রত্যক্ষকে ধারণ করিয়া থাকে। ইহাই হইল সং—সত্য, ভূমা, ব্রহ্ম। সকল বার্গতা থণ্ডতা চেষ্টা ইছা মিলিয়াই সম্পূর্ণ সফলতা—'পূর্ণেব পদ-পর্যশ্ব তাদের 'পরে।'

ঋষি-কবির পারগামী দৃষ্টিতে হন্দ বিরোধ অশান্তি বিফলতা প্রভৃতি সকল অসম্পূর্ণতাই একটা পূর্ণতার পূর্বস্থচনা। কবি জ্ঞানেন—'দীমার মাঝে অসীম তুমি বাজাও আপন স্থার।' কবি দীমার মধ্যে অসীমতার স্থস্মতি দেখিতে পাইয়া আনন্দ-শ্বরূপের সাক্ষাৎ লাভ করেন এবং তিনি নির্ভয়ে নিশ্তিস্ত চিত্তে বলিতে পারেন।

শেষের মধ্যে অশেষ আছে—এই কথাটি মনে আজুকৈ আমার গানের শেষে জাগুছে কংগ ক্ষে। —গীভাঞ্চলি।

All we have willed or hoped or dreamed of good, shall exist.

-Robert Browning, Abs Vogler.

ফাক্তনী

ইহা নাটক। ১৩২২ সালের ফান্তন মাসে লেখা, ইংরেজী ১৯১৬ সাল।
বৈশাধ মাসে ১৩২৩ সালে শান্তিনিকেতনে প্রথম অভিনর হয়, জানুয়ারী মাসে
পুনরায় কলিকাতায় অভিনয় হয় বাঁকুড়া ছুভিক্ষে সাহায্য করিবার জ্বন্ত।
নাটকের 'ফান্তনী' নামেই পরিচয় যে ইহা বদন্তের জ্বন্তান। 'বসত্তের পালা'
নামে 'ফাল্তনী'র প্রবেশক ও ফাল্তনী নাটক একত্র ১৩২১ সালের চৈত্র মাসের
'সব্লাপত্রে' জুড়িয়া প্রকাশিত হয়। ২২ সালের মাঘ সংখ্যায় ইহার অপর
প্রবেশক 'বৈরাগা সাধন' প্রকাশিত হয়।

ফাল্কনী নাটকোর অন্তর্গত ভাব কবি স্বয়ং ব্যাখ্যা করিয়াছেন—

িজীবনকে সতাব'লে জানতে গেলে মৃত্যুর মধ্যে দিয়ে তার পরিচয় চাই। যে মা**নুষ ভর** পেয়ে মৃত্যুকে এড়িরে জীবনকে আঁক্ড়ে রয়েছে, জীবনের 'পরে ভার যপার্থ জ্বন্ধা নেই ব'লে জীবনকে সে পারনি। তাই মে জীবনের মধ্যে বাস ক'রেও মৃত্যুর বিজীবিকার প্রতিদিন মরে। যে লোক নিজে এপিয়ে পিয়ে মৃত্যুকে বন্দী করতে ছুটেছে, সে দেশ্তে পায়, যাকে সে ধরেছে দে মৃত্যুই নয়,—দে জীবন। যথন সাহস ক'রে তার সাম্নে দাঁড়াতে পারিনে, তথন পিছন দিকে তার ছারাটা দেখি। সেইটে দেখে ডরিয়ে ডরিয়ে মরি। নির্ভয়ে যখন তার সামনে গিয়ে গাঁড়াই, তথন দেখি যে দর্দার জীবনের পথে আমাদের এগিয়ে নিয়ে যায়, সেই সর্দার মৃত্যুর তোরণ-ছারের মধ্যা সামাদের বহন ক'রে নিয়ে যাচেছ। ফাল্কীর পোড়াকার কণাটা ইচেছ এই এ, ব্বকেরা বসস্ত-উৎসব কর্ত্তে বেরিয়েছে। কিন্তু এই উৎসব তে। তথু আমোদ করা নয়, এ তো অনায়াসে হবার ক্রো নেই। জরার অবসাদ, মৃত্যুর ভয় লক্ষ্যন ক'রে তবে সেই নব জীবনের আনিন্দে পৌছানো যায়। তাই বৃদকেরা বল্লে — আন্ব সেই জরা-বৃড়োকে বেঁধে, সেই মৃত্যুকে বন্দী ক'রে। মামুহের ইতিহাসে তো এই লীলা, এই বসন্ত-উৎস্ব বারে বারে দেশ্তে পাই। জরা সমাজকে ঘনিয়ে ধরে, প্রণা অচল হ 'য়ে বসে, পুরাতনের অত;াচার নুতন প্রাণকে দলন ক'রে নিজীব করতে চায়—তথন মামূষ মৃত্যুর মধ্যে ঝাপ দিয়ে পড়ে, বিপ্লবের ভিতর দিরে। নব-বসম্ভের উৎসবের আরোজন করে। সেই আয়োজনই তো মুরোপে চল্ছে। সেধানে ন্তন যুসের ৰসজ্যে হোলিখেলা আরম্ভ হয়েছে। সামুবের ইতিহাস আপন চির-নবীন অমর মূর্ত্তি প্রকাশ কর্বে ব'লে মৃত্যুকে তলৰ করেছে। সৃত্যুই তার এসাধনে নিযুক্ত হরেছে। তাই কান্তনীতে ৰাউল বল্ছে—'বুলে বুলে ৰাস্থ লড়াই কর্ছে, আজ বসত্তের হাওরার তারি চেউ! বারা ম'রে অমর, বসস্তের কটি পাতার তারা পত্র পাঠিরেছে। দিশ্দিশতে তারা রটাচ্ছে—আমরা পরের বিচার করিনি; আমরা পাথেরের হিসাব রাখিনি, আমরা ছুটে এসেছি, আমরা কুটে বেরিরেছি।

আমরা যদি ভাবতে বন্তুন, তা হ'লে বসপ্তের দশা কি হতো ?'—বসপ্তের কচি পাভার এই যে পত্র, এ কাদের পত্র? যে-সব পাভা ঝ'বে গিবেছে—ভারাই মৃত্যুর মধ্যে দিরে আপন বাণী পারিছেছে। তারা ঘদি দাখা আঁক্ডে থাক্তে পার্চ, তা হ'লে জরাই অমর হচো—ভা হ'লে প্রাতন পুঁথির কাগজে সমস্ত অরণ্য হল্দে হ'রে যেত, সেই শুক্নো পাভার সরসর শক্ষে আকাশ শিউরে উঠ্ত। কিন্তু পুরাতনই মৃত্যুর মধ্য দিয়ে আপন চির নবীনতা প্রকাশ করে —এই তো বসম্বের উৎসব। তাই বসপ্ত বলে, যারা মৃত্যুকে ভয় করে, তারা জীবনকে চেনে না; তারা জারুকে বরন ক'রে জীবন্তু হয়ে থাকে—প্রাণবান্ বিশের সঙ্গে তাদের বিচ্ছেদ ঘটে।

"মামুং তার জীবনকে সভা ক'রে বড় ক'রে নুডন ক'রে পেতে চাচ্চে। তাই মামুধের সম্ভাতার তার যে-জীবনটা বিকশিত হ'রে উঠ্ছে, সে তো কেবলই মৃত্যুকে ভেদ ক'রে। মামুধ বলেছে-—

> মর্তে মর্তে মরণটারে লেষ ক'রে দে বারে বারে, তার পরে দেই জীবন এদে আপন আসন আপনি লবে।

মানুষ জেনৈছে--

ন্য এ মধ্ব খেলা -ভোমায় আমায় সারা জীবন
স্কাল সন্ধা(বেলা!

--গীতিমাল্য।"

জন্তব্য-অচলায়তন, অন্ধপ রতন, কান্ধনী -স্থামন্নী দেবী, জঘশী, ১৩০৮ বৈশাপ।

বলাকা

১৩২১ সালের বৈশাথ মাদ হইতে ১৩২৩ সালের বৈশাথ পর্যন্ত কবি নানা স্থানে পরিভ্রমণ করিয়া বেড়াইরাছিলেন, এবং দেই সমরের রচিত কবিতাগুলি এই পুস্তকে সন্নিবেশিত হইরাছে। এই পুস্তক প্রকাশিত হয় ১৯১৬ সালে, বাংলা ১৩২৩ সালের জ্যৈষ্ঠ কি আয়াঢ় মাদে।

আমাদের দেশের দার্শনিকদের ধারণা ছিল যে সত্য শ্বির—অচল।
শব্বরাচার্য সত্যের লক্ষণ নির্দেশ করিয়াছেন—কালত্রয়াবাধিতং সত্যম্—সত্য
ভূত ভবিশ্বং বর্তমানে সমভাবে অবস্থিত, সত্য ত্রিকালে অপরিবর্তিত। কিন্তু
বর্তমান যুগের দর্শনের বাণী হইতেছে—সত্য গভিতে, সত্য শ্বিতিতে নহে।
আধুনিক বৈজ্ঞানিক-দার্শনিক বলেন—গতি নাই এমন বস্তু জগতে নাই, যাহাতে
গতি নাই, তাহা নিছক কল্পনা মাত্র; তাহা সত্য নহে। গতির বাণী ইউরোপে
বর্গেস প্রথম প্রচার করেন, এ জন্ম তাঁহার দর্শনকে গতিবাদ বলা হয়।
যাহার জ্বীবনীশক্তি আছে দে আর-সকল জিনিসকে নিজের করিয়া লইয়া তবে
নিজেকে প্রকাশ করে; তাহার অস্তিত সমগ্রের মধ্যে,—খণ্ডভাবে দেখিলে
তাহার পরিচয় পাওয়া যায় না। গতি বস্তর একটা অবহা মাত্র নয়—বস্তু ও
স্থান-কালের সম্পর্ক মাত্র গতি নয়, গতি এক স্থিতি হইতে অপর স্থিতিতে
পরিণতি মাত্র নয়। কাল অবিভাজ্য, অনস্ত-প্রবাহ, কালে ভূত-ভবিশ্বংবর্তমান নাই। স্থানও অনস্ত, কেবল মাত্র বস্তর সহিত বিশেষ সম্পর্কে কাল
ও স্থানকে প্রবিভক্ত মনে হয়।

Space is a plenum, co-extensive, because in the concrete identical, with the totality of all existent and extended bodies. There is no empty space either between bodies or between their parts. The structure of space and the structure of the extended bodies that fill space is one and the same. Similarly time was held to be identical in the concrete with motion and continuous change. There are as many times as there are motions.

আধুনিক দার্শনিক-বৈজ্ঞানিকেরা বলেন যে নিরবচ্ছিন্ন স্থান বা কাল বলিয়া কিছু নাই, কেবল বস্তুর গতিতেই আমাদের মনে স্থান ও কালের জ্ঞান জন্মিয়া থাকে। অন্তএব একমাত্র গতি সভ্য। (দুইব্য—The New Cosmogony Journal of Philosophical Studies, July 1929.)

Mark Miller

অতএব সত্য অনন্ত প্রবহমান অবিভাজ্য। ইহার গতি রুদ্ধ হইলেই সং জীবনহীন হইয়া জড়বন্ধতে পরিণত হয়।

রবী দ্রনাথও বলাকা পুস্তকের সমস্ত কবিতার মধ্যেই এই গতি-বাদকে সহ বলিয়া প্রচার কবিয়াছেন। গতি, কেবল গতি, ক্রমাগতই চলা। থামিতে গেলেই—

উচ্ছি য়া উঠিবে বিশ্ব পুঞ্জ পুঞ্জ বস্তুর পর্বতে ।

কিন্তু কবি এইথানেই তাঁছার কথা শেষ করেন নাই। উদ্দেশ্রহীন কেবল্ব গতি আমাদিগকে কোনো গম্যস্থানে লইয়া যার না, সে গতিতে ক্লান্তি আনে প্রাণ অতৃপ্তি অমুভব করে। এই জ্লন্তই কবি নবম কবিতাতে—ভাজমহলে— গতির মধ্যে আনন্দেব কপ দর্শন করিয়াছেন—

দে শ্বৃতি ভোমাবে ছেডে
গেছে বেড়ে
সর্বলোকে।
জীবনেব অক্ষয় আলোকে।
ফঙ্গ ধবি দে অনঙ্গ শ্বৃতি
বিধের প্রীতি মাঝে মিলাইছে সম্রাটের প্রীতি।

এইখানে আমাদেব কবি-দার্শনিক বের্গ্র্যকৈ অতিক্রম করিয়া চলিরা গিয়াছেন। বের্গ্র্য গতি কেবল অফুরস্ত চলা মাত্র; তাহা কোনো লক্ষ্য-স্থারা নির্দিষ্ট নতে, কোনো আনন্দ-মারা অফুপ্রাণিত নহে। এইখানে বের্গ্র্য অপেক্ষা রবীক্রনাথেব শ্রেষ্ঠ্য—কবি কেবল গতিতেই তৃপ্ত থাকিতে পাবেন নাই, তিনি আনন্দরসের সন্ধানে যাতা করিয়াছেন। বের্গ্র্য জীবনের মধ্যে কেবল গতি দেখিয়াছেন, তিনি অসীমের সহিত জীবনের কোনো যোগ দেখিতে পান নাই; সত্য তাঁহার নিকট ভালোমন্দের অতীত রূপে প্রকাশ পাইরাছে। এই ক্ষান্তই তিনি জীবনের উদ্দেশ্য, গতির লক্ষ্য নির্দেশ করিতে পাবেন নাই। কিন্তু রবীক্রনাথের নিকট কেবল গতিতে মানবের মৃক্তি নর,—

দৃত্যুর অশ্বরে পশি, অমৃত না পাই যদি খুঁজে, সত্য যদি নাহি মেলে হুংখ সাথে বুঝে (৩৭ নশ্বর)।

ভবে ভো সমস্তই পথা।

আমাদের দেশের আর একজন শক্তিশালী লেখকও গতির মধ্যেই সভ্যকে দেখিরাছেন—

"এই পরিবর্তনশীল জগতে সত্যোপলন্ধি বলিয়া নিত্য কোনো বস্তু নাই। তাহার জন্ম আছে, মৃত্যু আছে ; যুগে বুগে কালে কালে মানবের প্রবোজনে তাহাকে নৃতন হইরা আদিতে হয় (অতীতের সত্যকে বর্তমানে শীকার করিতেই হইবে, এ বিশ্বাস ভ্রাস্ত, এ ধারণা কুসংস্কার।

"তোমরা বলো চরম সভ্য, পরম সভ্য; এই অর্থহীন নিক্ষণ শব্দগুলো তোমাদের কাছে মহা মৃল্যমান্।তোমরা ভাবো নিধ্যাকেই বানাতে হর, সভ্য শাবত সনাতন অপৌক্ষরে । মিছে কথা । মিথারে মতোই একে মানবন্ধাতি অহরহ পৃষ্টি ক'রে চলে। শাবত সনাতন নর,—এর ক্ষম আছে. মৃত্যু আছে। আমি প্রয়োজনে সভ্য স্থাষ্টি করি।"

—नवदहन्त हत्साभाषाय ।

কিন্তু রবীন্দ্রনাথ সত্যকে গতিতে স্বীকার করিয়াও এক বিশেষ লক্ষ্যে গিরা উপনীত হইয়াছেন—মাত্ম ক্রমাগত নিজেকে উত্তীর্ণ হইয়া অগ্রসর চইয়া চলিবে দেবত্ব লাভ করিবার জন্ম—

> নিদারণ হঃধরাতে মৃত্যুবাতে মান্ত্র চুর্লিল ববে নিজ মর্ত্যুসীমা, তথ্ন দিবে না দেখা দেবতার অমর মহিমা /

---७१ नच्छा ।

কিন্তু রবীক্রনাথের এই গতি-বাদ বলাকার যুগে ন্তন উপলব্ধি নহে, ইহা তাঁহার আবাল্যের কবিতার মধ্যেই বরাবর ছিল—কবি আকৈশোর অস্তব করিয়া আসিয়াছেন যে কি জড়-বিশ্ব, আর কি প্রাণী-বিশ্ব হুইরেরই মাঝে এক অবিরাম অবিশ্রাম গতিবেগ আছে—'অলক্ষিত চরণের অকারণ আবরণ চলা!' এই গতিময় কবিতাগুলিকে একত্র করিয়া মোহিতচক্র সেন 'নিক্রমণ' নাম দিরাছিলেন। কবি চিরকাল বলিয়া আসিয়াছেন—আগে চল্ আগে চল্ ভাই! কিন্তু বলাকার যুগে এই গতিবাদ একটি বিশেষ বেগ ও রূপ লাভ করিয়াছে। কবি বলিয়াছেন যে এই গতির মাঝেই বিশ্বের প্রাণশক্তির বিকাশ। গতি শ্বনিত হুইলেই আবিলতা আবর্জ্জনা জমে ও মৃত্যু উপস্থিত হয়—

বে নদী হারারে প্রোত চলিতে না পারে. সহস্র নৈবালদাম বাঁধে আসি তারে; বে জাতি জীবনহারা অচল অসাড়, পদ্ধে গদ্ধে বাঁথে তারে জীর্ণ লোকাচার। অতএব কবির মত যে গতিস্রোতে গা ভাসাইতে পাবিলেই মুক্তি।

এই গতিশীল বিশ্পাক্ততির রূপ বলাকায় ছন্দোলালিত্যে ও শইন্দার্থে কাবাসাহিতে। এক অপূর্ব সম্পদের সৃষ্টি করিয়াছে। কবির প্রত্যেক কবিতা অদৃশ্র অনস্তের ইলিতে ভরপূর। মৃত্যু তো কবির কাছে কোনোদিনই পরিসমাপ্তি নয়; আর এই পৃথিবীটকুই মানব-জীবনের কারাগার নয়; এই মানব-জীবন—

কাবনের ধবস্রোতে স্থাসিছে সম্বাই সুকনের ঘাটে ঘাটে।

আকাশের প্রতি তাবা ডাকিছে তাহারে।

তার নিমন্ত্রণ লোকে লোকে

নব নব প্র্বাচলে আলোকে।

—সাজাওন

কবি তাঁহাব গৌবনে মানসী পুস্তকে 'নিজল কামনা, নামে যে কবিতা লিখিয়াছেনে, তাহা অসম অমিত্র-ছন্দে শেখা। সেই অসম অমিত্র-ছন্দকে মিত্রাক্ষর করিয়া একটি নৃতন রূপ, লালিত্য ও বেগ দান করিয়া কবি এক অপ্র নৃতন সৃষ্টি করিয়াছেন বলাকার ছন্দ।

এইরপ বহু দিক হইতে বিচাব করিলে বলিতে হয় বলাকা রবীন্দ্রনাথের শ্রেষ্ঠ কাব্যসমূহের মধ্যে অন্তক্ষ।

এই বলাকা কাব্যথানি কবি ষয়ং শান্তিনিকেতনে ব্যাথা করিয়া অধ্যাপনা করিয়ছিলেন; প্রত্যোতকুমার সেনগুপ্ত সেই ব্যাথাানের নোট লইয়া ১৩১৮-১৯ শান্তিনিকেতন পত্তে প্রকাশ করেন। সেই নোটগুলি এবং আমি কাছে গিয়া ও পত্ত লিখিয়া কবির যে-সব অভিমন্ত সংগ্রহ করিয়াছিলাম সেই সব মিলাইয়া এই পুস্তকের কবিভার ব্যাখ্যা লিখিতে যাইতেছি।

নবীন

১ নম্ব

রচনার তারিথ ১৫ বৈশাথ, ১৩০১ সাল। ইছা ১৩২১ সালের বৈশাথ মাসের সব্**জপতে 'স**ব্জের অভিযান' নামে প্রকাশিত হয়।

ুবোরনই চলার বেগে জীবনের পরিচয় প্রকাশ করে। যৌবনই সমন্ত পর্থ করিয়া লইতে চায়—শাস্ত্রবাকাও বিনা-বিচারে মাথা পাতিয়া লইতে চায় না—দে বলে 'যাহা বিশ্বান্ত তাহাই শাস্ত্র, যাহা শাস্ত্র তাহাই বিশ্বান্ত নহে।' যৌবনের মধ্যেই মানব-জীবনের অনন্ত জিক্তাসার পরিচয় পাওয়া বায়। তাহার শক্তির প্রাচুর্য তাহার মনে পথ খুঁজিয়া লইবার প্রেরণা জাগায়, সেবলে—'পথ আমারে পথ দেখাবে,' 'চলার বেগে পায়ের তলায় রাতা জেগেছে,' 'জীর্ণ জরা ঝরিয়ে দিয়ে প্রাণ অফুরান ছড়িয়ে দেদার দিবি।'—ফান্তুনী।

এই জন্মই এই অশান্ত ও অশ্রান্ত যৌবনের প্রতি কবির অপরিসীম শ্রনা,—
কারণ, যৌবনেই মান্তুষের জীবন বিকাশ লাভ করে। কবি তাঁহার ফাজ্বনী
নাটকে ও বহু কবিভার যৌবনের জন্মগান করিয়াছেন। কবির নিজেরও
চিরদিন যুবা থাকিবার ইচ্ছা। তিনি ক্ষণিকাতে কবির বন্নস্কবিভান্ন ভাহা
প্রকাশ করিয়াছেন।

কাঁচা— থাহাদের মনে কোনে। সংস্কার বন্ধমণ এইয়া নায় নাই, নাহাদের হওয়া হুলিত এইয়া যায় নাই।

পাকা— যাহারা সংস্কারে বন্ধমূল, জড়ভানাপন্ন, এবং বাহাবের উন্নতি পরিণতি স্থানিত হাইয়া গিয়াছে। যে স্থিতিশীল সে কাজের বাহির সে নৃত্তনের পথে গতির সাধনা করিতে অক্ষম। এ সম্বন্ধে নিম্নোক্ত উক্তিটি প্রণিধানযোগ্য—

Generally the elderly are conservatives; perhaps because, as some psychologists inform us, we are incapable of absorbing new ideas by twenty-five and the memory effects a charitable compensation, recalling only what was pleasant in the golden days of youth. With eyes fixed on the future, the young find monotony boring, and it is their ardour that forces on social revolutions. Accepting the accomplished fact, their elders give it their blessing and gravely take the credit.

শিকল-দেবী— মানুবের জীবনে সমাজে ও ধর্মে ভূপাকার আবর্জনার মতো বে-সব প্রাধশক্তি-বিরোধী অনাচার ও কুসংখ্যার জমা হয় তাহাই মানুবের দৃখল ও বাধা। ইহাকেই ননবী
বেকন Idol বা অসত্যেত্ব বিশ্বন্থ চলিয়াছেন। কালাপাহাড় বেমন অসত্য কেবড়ার চির্মজন্ত্র-

নবীনও তেমনি। কিন্তু নবীনের প্রলয়-লীলার মধ্যে কেখল ধ্বংস নাই,—নব-স্টির আরোজনও আছে। নবীনের অভাগরে বত-কিছু নিয়ধের বন্ধন ছিল্লভিন্ন হইরা বার এবং সকল বাধা হইতে মুক্ত হইরা সে নুতন স্কটির পথ করিয়া দিতে পারে।

ভূলগুলো—ভূল না করিলে কেহ সত্যকে লাভ করিতে পারে না। ভূল করিরা সংশোধন করিতে করিতে তবে লোকে সত্যের সাঞ্চাৎ পাব। অতএব ভূল করিবার হবোপ পাইলেই মানুষ সত্যকে আবিভার করিতে পারে।

ষার বন্ধ ক'রে দিরে ত্রমটারে ক্লবি। সত্য বলে আমি তবে কোখা দিরে চুকি। —কণিক।।

বিবাসী কর অবাধ পানে—নবানেব নেতৃত্বে প্তিকে অবগন্ধন করিব। অবানার সন্ধানে আমাদের যাত্রা করিতে হইবে। যাহা হইবা গিয়াছে তাহার মূল্য তো জানার সঙ্গে সঙ্গেই সুবাইরা গিয়াছে। অজানাকে জানাই হইবে নবানের সাধনা। কেবল শাব্র মানিবা গতাসুগতিক ভাবে নির্দিষ্ট চিরাচরিত পথে ধাহার। চলে তাহারা পুরাতনেরই পুনরাবৃত্তি করে। নৃতনকে পাইতে হইবে নৃতন পথেই চলিতে হইবে।

রবীক্রনাখ নিধিরাছিলেন—"এই প্রকাশের জ্বগৎ এই গৌরাসী তা'র বিচিত্র রঙের সাজ্য প'রে অভিসারে চলেছে—এ কালের দিকে এ অনির্বচনীয় অব্যক্তর দিকে। বাঁধা নির্মানর মধ্যে বাঁধা থাকাতেই তা'র মরণ—সে কুলকেই সর্বান্ধ ক'রে চুপ ক'রে ব'দে থাক্তে পারে না—সে কুল খুইরে বেরিয়ে পড়েছে। এই বেরিয়ে যাওয়া বিপদের যাত্রা; পথে কাঁটা, পথে সাপ, পথে ঝড় বৃষ্টি—সমস্তকে অভিক্রম ক'বে বিপদকে উপেক। ক'বে দে চলেছে দে কেবল এ অব্যক্ত অসামের টানে। অব্যক্তের দিকে আরোর দিকে প্রকাশের এই কুল-খোবানো অভিসার বাত্রা—প্রলয়ের ভিতর দিয়ে বিপ্রবির কাঁটা-পথে পদে পদে বক্তের চিহ্ন একে। …

মাসুবের মধ্যে যে-সব মহাজাতি কুলত্যাগিনী তারাই এগোছে—তারের ভিতর এধক অভরে, বিপাদের ভিতর দিরে সম্পাদে। যারা সর্বনাশা কালের বাঁশি গুনতে পোলে না তা'রা কেবল পূঁদির নজির জড়ো ক'রে কুল আঁক্ড়ে ব'লে রইল—তা'রা কেবল শাসন মানতেই আছে। তারা কেন বুলা আনন্দলোকে জন্মছে, বেগানে সীমা কাটিয়ে অসীমের সঙ্গে নিত্য-লীলাই হচ্ছে জীবনবাত্রা, যেখানে বিধানকৈ ভাসিয়ে দিতে থাকাই হচ্ছে বিধি।

--জাপান-ঘাত্ৰী।

সবুজ নেশা—নবীন সমন্ত নুতন ও তাজা শৃতির জন্ম ব্যৱা, এই ব্যৱাচাই ভাছার সবুজের নেশা ও বড়ের মধ্যে তড়িতের বেগ। নবীন নৃতন শৃতির বারা ধরণীকে শৃত্যাকর সমৃদ্ধতর করির। তুলে—ইহাকেই কবি বলিতেছেন যে তুমি নিজের গলার মালা বিন্না বসভাকে শৃত্যাকর করে। ও শৃত্যাক্তিক করে। বসত্তের আগবানে পৃথিবী নবীন শোভার ভূষিত হয়। নবীনের চেই।তেও শৃত্যাক শাক্তিবি হয় নবীন প্রকৃতির সৌল্বাকেও শৃত্যাক করিয়া ভূলে।

सरीखनाम और इसम कथा जरनक सामनाम विनादकत ।

তুলনীয়---

"জুলে বাই জীননের ধর্ম তার নৃত্যান্ত; যা তার অপ্রাণের প্রাচীন আবরণ তাকেই মনে করি চিরকালের। সেই বোঝার ভারে আনে কান্তি, আনে নিল্চেট্টা। তাই মাঝে মারে স্বরণ করতে হবে সেই প্রাণের নির্মন নবীন রূপ, সে প্রাণ বাবে বাবে পুরাতনের মলিনতা বর্জন ক'রে নব জালে আপন কক্ষপথ প্রদক্ষিণের নৃত্য প্রার্থ্যে প্রত্ত হয়। জড় বস্তুর কোনো লক্ষ্য নেই। কিন্তু জীবন্যাত্রা মান্ব-জীবনের একটা ব্রত,—নিজেকে সম্পূর্ণ করার ব্রত। তান মন্ত্রান্তর ব্রত বিদি আমরা প্রহণ ক'রে থাকি তান্ত্র হবে মনে নবজীবনের নবপ্রারস্কৃতা। সেই নব-প্রারম্ভতার বেশ বিদি মুর্বল হয় তা হলেই জর হয় মৃত্যুর। চিত্ত যথন আপনাকে নৃত্রন ক'রে উপলব্ধি কর্বার শক্তি হারায় তপন্ট জরা তাকে অধিকার করে।"

--->ला 'दना'व, ध्वामी ১७८० 'खार्छ, २५२ পृष्ठा ।

দেশী বিদেশী বহু কবিও ফৌবনের ও নবীনতার জ্বন্ধ পোষণা করিয়াছেন। যথা,

वानभना भन (मनी बरेनरही। -कवीत

আমি আমার তারুণাকে ফকীরের মালা করিয়া কঠে ধারণ করিয়াছি।

Crabbed Age and Youth
Cannot live together:
Youth is full of pleasance,
Age is full of care;
Youth like summer morn,
Age like winter weather.
Youth like summer brave.
Age like winter bare:
Youth is full of sport,
Age's breath is short.
Youth is nimble, Age is lame:
Youth is hot and bold,
Age is weak and cold.
Youth is wild, and Age is tame:
Age, I do abhor thee,

Youth, I do adore thee. —Shakespeare.

If thou regret'st thy youth, why live?
The land of honourable death

Is here: up to the field and give Away thy breath!

Seek out—less often sought than found
—A soldier's grave, for thee the best;
Then look around, and choose thy ground,

And take thy rest. -Byron.

The end of life is not comfort, but divine being.

-A. E. (George Russel), also Emile Verhaeren of Belgium.

The whole secret of remaining young is to keep an enthusiasm burning within, by keeping a harmony in the soul.

-Amiel's Journal, The Secret of Perpetual Youth.

জীবনে বিপদ্ বরণ করিরা জীবনকে জয়ী করিবার কথাও অনেক কবি বলিরা গিয়াছেন ও বলিভেছেন—

Be thou, Spirit fierce,
My spirit! Be thou me, impetuous one,
Drive my dead thoughts over the universe,
Like withered leaves, to quicken new birth;

Be my lips to unawakened earth

The trumpet of a prophecy! O Wind,

If winter comes, can Spring be far behind!

—Shelley, Ode to the West Wind.

Then, welcome each rebuff
That turns earth's smoothness rough,
Each sting that bids nor sit nor stand but go!
Be our joys three-parts pain!
Strive, and hold cheap the strain;
Learn, nor account the pang; dare, never

grudge the throe!

-Robert Browning, Rubbi Hen Ezra.

Knowing the possible, see thou try beyond it
Into impossible things, unlikely ends;
And thou shalt find thy knowledgeable desire
Grow large as all the regions of thy soul.

—Lascelles Abercrombie, The sale of St. Thomas.

Never was mine that easy faithless hope Which makes all life one flowery slope

To heaven! Mine be the vast assaults of doom. Trumpets, defeats, red anguish, age-long strife, Ten million deaths, ten million gates to life,

The insurgent heart that bursts the tomb.

—Alfred Noyes, The Mystic.

ज्ञान : Sir Arthur Quiller-Couch—Studies in Literature. त्यापन जिल्ल Meredith व्यक्त विलाह निवा विलाहित —"No poet, no thinker, growing old, had ever a more fearless trust in youth; none has ever had a truet sense of our duty to it:

'Keep the young generations in hail,
And bequeath them no tumbled house.'

২ নম্বর

এবার যে ঐ এল সর্বনেশে গো।

১৩২৯ সালের শ্রাবণ মাসের স্বৃক্ষপত্তে এই কবিতাটি 'সর্বনেশে' শিরোনামার প্রকাশিত হয়। নবীনকে কবি বলিতেছেন সর্বনেশে কারণ সে প্রাতনের প্রতি মমতা দেখায় না, সে প্রাতনকে ধ্বংস করিয়া লোপ করিয়া দিতে চায়। কিন্তু সর্বনেশেকে ভয় করিবার কোনো কারণও নাই; সর্বনেশে গতিই বন্ধন হইতে মৃক্তি দিতে সমর্থ।

क्रवेग--- > नश्चरत्र वर्गश्रा।

৩ নম্বর

আমরা চলি সমুখ পানে

আমরা পশ্চাতের দিকে দৃক্পাত না করিয়া অনবরত সম্থাবের দিকে ধাবিত হইব, এবং সম্মাধে চলিতে পারাতেই মৃক্ত-সম্বধাবনে আমরা মৃত্যুকে উত্তীর্ণ হইয়া অমৃতে গিয়া পৌছিব।

শন্ম

এই কবিতাটি প্রশ্ম ১৩২১ সালের সর্জপত্রের আষাঢ় সংখ্যার প্রকাশিত হয়। শব্দ মঞ্চলকর্মের সময়ে বাজানো হয়, য়য়ে যোজাদের উদ্বোধিত করিবার জন্ত বাজানো হইত। এই শব্দ ইইডেছে বিধাতার আহ্বান—ইইার ধনি মুদ্ধের আহ্বান ঘোণো করে—সেই মুদ্ধ অকল্যাণের সঙ্গে, পাপের সজে, অন্তায়ের সঙ্গে। উদাসীনভাবে এই শ্ব্দকে মাটিতে পড়িয়া থাকিতে দিতে নাই। সময় আসিলেই হ:থ-বীকারের আদেশ বহন করিতে ইইবেও প্রচার করিতে হইবেও প্রচার

যুদ্ধের ব্দক্ত মিলিত হইতে হইবে এবং নব যুগকে মঙ্গল সহ আহ্বান করিয়া আনিতে হইবে—এই কথাই পাঞ্চন্ধ্য শঙ্খে সতত ধ্বনিত ও উন্বোষিত হইতেছে। গতির বাণীই অভয়শুখা বোষণা করে। তাহার ধ্বনি কানে গেলে বিরাম-বিশ্রাম খুচিয়া যায়, একটা গতির উন্মাদনায় চিত্ত চঞ্চল হইয়া উঠে। এই শুখা অশান্তি মহাবাজের ব্লয় ও 'আগমন' বোষণা করে।

- চলেছিলাম পূজার ঘরে ইত্যাদি—আমার জীবন স্ক্রায মনে হইয়াছিল যে শান্ত হইয়। নিকপদ্রবে পূজা-অচনা করিয়া বাকী দিন কয়ট। কাটাইবা দিব।
- রক্তরবা ও বজনীগন্ধা—বখন জীবনসন্ধার শান্তির স্লিগ্ধ বজনীপন্ধা চয়ন করিবার জক্ত উদ্বোপ ক্রিতেছিলাম তখন সংগ্রামের উপবোগী রক্তজবার মালা গাঁথিবার তাগাদা ও আ্বদেশ আসিবা উপস্থিত।
- ভাক্ল বুঝি নীরব তব শঝ্—কুদ্রতার গণ্ডী উত্তীর্ণ হইরা বিরাট্ বিশ্বদক্তে যোগ দিবাব আহবান বুঝি আসিল।
- বৌৰনেরি পরশমণি—সকল জড় তাকে দূর করিয়া ফেলিবার যে শক্তি যে বনে আছে তাহাই আমার মনে সঞ্চার কবিয়া দাও। ছুগ্ধ মন্তন করিলে যেমন নবনাত উৎপন্ন হয়, তেমনি জীবন সংঘাতের ভিতর হইতে মঙ্গল আহর। কবিবার জন্ত নবীনদিগকে দকল প্রকাব গঙী ছাডিয়া বাহিব হইতে হইবে। সন্ধার্ণ পনিবেন্তন হটতে তাহাদিগকে মৃত্তি পাইতে হইবেও অপরদের মৃত্তি দিতে হইবে।

व्यक्त-क्षीवटनद উद्भाश मद्यक छेपामीन ।

আতক-অভান্ত পুরাতন বর্জন করিয়া নৃতনের দিকে অভিদানের মধে নে দাণ্ডদ ও ভন্ন আদে তাহাই ভাহাদিশকে প্রোৎসাহিত করিয়া লইনা বাহবে।

স্পারাম চেরে পেলেম শুর্ লক্ষা---তুলনীয় খেয়া পুস্তকের 'দান' কবিতা।

ৰাষাত আহক নব নব—শান্তি হয় বন্ধন, যদি তাথাকে অশান্তির ভিতর ২ইতে লাভ করা । যায়। ক্লডের রেজ মৃতিকে বাদ দিয়া তাঁগার যে প্রদল্লতা, অশান্তিকে অধীকার কবিয়া যে শান্তি, তাহা তো জভবের নামান্তব, তাহা স্বপ্ন, তাগা সত্য নহে।

He (Saint John) said, I am the voice of one crying in the wilder ness, Make straight the way of the Lord

The Bible, St. John, 1 23

পাড়ি

৫ নম্বর

এই কবিতাট-সম্বন্ধে শ্বন্ধ কবি বলিয়াছিলেন---

"এই কবিতা যুক্ক আরম্ভ হবার পরে কোখা।·····ংবে সময়ে যুক্ক অ্বরু হরেছিল তার ডিব্রা আমার মনে কাল কর্মছিল। ভাতক আমার চিত্ত এই ভাবে দেখেছে— যুদ্ধের সমৃত পার হ'রে নাবিক আস্ছেন, ঝডে তাঁর নৌকার পাল ছুলে দিরে। তিনি প্রমন্ত সাগর বেয়ে এই ছদিনে কেন আস্ছেন? কোন্ বড় সম্পদ্ নিয়ে এবং কার জন্ম তিনি আস্ছেন? এই কবিতার ছটি প্রশ্নের কথা আমি বলেছি। নাবিক যে সম্পদ্ নিয়ে আসছেন তা কি এবং নাবিক কোন্ ঘাটে উত্তীর্ণ হবেন ? যুদ্ধের সাগর যিনি পার হ'রে আস্ছেন তিনি কোন্ দেশে কার হাতে তাঁর সম্পদ্কে দান কববেন ?"

১ম শ্লোক— যথন চারিদিকে গভীর রাত্তি, সাগব মত, ঝড বহিতেছে, এমন ছদিনে নাবিকের কি ভাবনা ছিল যে এমন সময়ে তিনি কল ছাডিলেন ? কি সক্ষম তাঁহার মনে ছিল ষাহাব জন্ম পরম ছদিনে নিয়মের হাবা সংগত লোকসমাজের কুলকে ভাগি করিছা তিনি মন্ত সাগের পাডি দিতে বাহিব হইয়া পড়িয়াছেন ?

নয় শ্লোকে এই ও থেব উত্তবেব আভাস আছে সেই অভাসট এই যে—কোনো একটি গৌববহীনা পূজারিনী এক জায়গায় অজ্ঞান অঙ্গনে পূজার দীপ জালাইয়া পথ চাহিয়া বসিয়া আছে, মূদ্ধের সাগব পাব হইয়া নাবিক সেই পূজা গ্রহণ করিবার জ্বন্তা এই প্রচণ্ড ঝড়ে নৌকা ছাড়িয়াছেন। যে অঙ্গনে কাহারো দৃষ্টি পড়ে না, সেখানে ঠাহার অভার্থনাব আয়োজন হইওছে কিন্তু ভাইনেকে আসিতে হইলে মুদ্ধেব ভিতৰ দিয়া আসিতে হইবে।

ঝডের মধ্যে এই বিবাহার, ঘণছাভাব এ কী সক্ষান ৮ কত না জানি
মণিমাণিকার বোঝা লইয়া তিনি নৌকা বাহিয়া আদিতেছেন! বৃঝি
কোনো বড় রাজধানীতে তিনি ধনসম্পদ লইয়া উত্তীৰ্ণ হইবেন। কিন্তু
নাবিকের হাতে যে দেখি একটি মাত্র রক্ষনীগন্ধার মন্ত্রবী। তিনি মাহাকে
খুঁজিতেছেন তাঁহাকে তো তবে মণিমাণিকা দিবেন না তিনি অজ্ঞাত
অঙ্গনে এক বিরহিনী অগোরবার কাছে দেই মন্ত্রবী লইয়া আসিতেছেন।
এরই ক্ষন্ত এত কাও ? হাঁ, এই টুকুরই জন্ত নাবিকের নিজ্ঞান।

বে রঞ্জনীগন্ধার সৌরভ অন্ধকারে বিভৃত হয়, তা সেই অচেন। অঙ্গনের উপবৃক্তা। দিনের বেলা সেই সৌরভ সঙ্গোপনে থাকে, কিন্তু রাত্রির অন্ধকারে তাহার সৌন্দর্যের প্রকাশ। সেই সৌরভময় ফুল লইয়া নাবিক বাছির হইয়াছেন। নৃতন প্রভাত আসয়, সেই নক-প্রভাতের উপহার লইয়া নবীন বিনি ভিনি আসিডেছেন। যে তপস্থিনী পথের পাশে নৃতন প্রভাতে তাঁহাকে অন্তর্থকা করিতে অপেক্ষা করিতেছে তাহাকে স্মান্তরের মালা পরাইয়া দিতে

তিনি বারির হইরাছেন। সে রাজ্বণথের পাশে রহিরাছে; তাহার লোককে দেখাইবার মতো ঘর-ছরার নাই—তাহারই ক্ষ্ম নাবিক অসমরে সকলের অগোচরে বারির হইরাছেন। সেই তপস্থিনীর রুক্ষ অলক উন্থিতেছে, পলক সিক্ত হইরাছে, তার ধরের ভিত ভাঙিরা গিরাছে, সেই ভিতের ভিতর দিরা বাতাশ হাঁকিয়া চিনিয়াছে। বর্ষার বাতাদে তাহার প্রেদীপ কম্পিত হইতেছে—ঘরের মধ্যে ছারা ছড়াইয়া দিয়া তাহার দৈশ্য-দশার মধ্যে ভরে ভরে সে রাত কাটাইতেছে, তাহার আশক্ষা হইতেছে যে বর্ষার বাতাদে তাহার কম্পমান দীপশিখা কথন নিবিয়া যাইবে। সে এক প্রান্তে বিসরা আছে তাহার নাম কেহ জানে না। কিন্তু তাহারই কাছে নাবিক আসিতেছেন।

আমার উংকঞ্জিত নাবিক আঞ্চকের দিনেই যে বাহির হইয়াছেন তাহা নর! কত শতালী হইল তাঁহার যাত্রা স্থক হইয়াছে, কত দিন হইতে কত কাল-সম্দ্র পার হইয়া তিনি আসিতেছেন এখনও রাত্রির অবসান হর নাই, প্রস্রাত হইতে বিলম্ব আছে। যখন তিনি আসিবেন তখন কোনো সমারোহ হইবে না, তাঁহার আগমন কেহ জানিতেই পারিবে না। তিনি আসিলে অন্ধকার কাটিয়া গিয়া আলোকে বর ভরিয়া যাইবে। নৃতন সম্পদ্ কিছু পাওয়া যাইবে না, কেবল দৈশ্য গৃচিয়া যাইবে। তপবিনী যে দারিয়া বহন করিয়াছিল তাহা ধন্য হইয়া উঠিবে, শৃষ্ঠ পাত্র পূর্ণ হইয়া যাইবে। তাহার মনে অনেক দিন ধরিয়া সন্দেহ জাগিয়াছিল, সে ভাবিয়াছিল যে তাহার প্রদীপ আলাইয়া প্রতীক্ষা করা বার্থ হইল বৃঝি, কিন্তু ভাহার সেই সংশব্ধ ঘুচিয়া যাইবে। তথন তর্কের উত্তর ভাষার মিলিবে না, সে প্রপ্রের মীমাংসা নীরবে হইয়া যাইবে।

ইতিহাসের বড় বড় বিপ্লবের ভিতর দিয়া ইতিহাস-বিধাতা সাগর পার হইরা প্রস্কারের বরমাল্য লইরা আসিতেছেন। সেই মাল্য কে পাইবে? আৰু বাহারা বলিষ্ঠ শক্তিবান্ধনী, তাহাদের জন্ত তিনি আসিতেছেন না। ভাহারা বে ঐশর্যের জন্ত লালারিড; কিন্তু তিনি তো ধনরত্বের বোঝা লইরা আসিতেছেন না। তিনি প্রেমের শান্তি বছন করিয়া, সৌন্দর্যের মালা হাতে করিয়া আস্নিভেছেন। আজ ভো-শক্তিমানেরা সেই মাল্যের জন্ত অপেকা করিয়া বসিয়া: নাই, ভাহারা বে রাজশক্তি চাহিয়াছে। কিন্তু বে অচেনা ভাপবিনী আপন অন্তরে বলিয়া পূজা করিতেছে, আমার নাবিক রজনীগন্ধার মালা তাহারই অভ লইয়া আসিতেছেন। সে ভয়ে ভয়ে রাত কাটাইতেছে,
মনে করিতেছে তাহার অক্সাত অঙ্গনে পথিকের পদচিক্র বুঝি পড়িল না। সে
যথন মাল্যোপহার পাইয়া ধন্তা হইয়া য়াইবে তথন সে বলিবে—তোমার
হাতের প্রেমের মালা চাহিয়াছিলাম, ইহার বেলি কিছু আমি আকাক্ষা করি
নাই। ধনধান্তে আমার স্পৃহা ছিল না। এই রিক্তভার সাধনা যে করিয়াছে,
এই কথা যে বলিতে পারিয়াছে, সে তুর্বল অপরিচিত দরিত্র হোক, নাবিক সেই
অকিকনের গলায় মালা পরাইয়া দিবেন। ইহারই জন্ত এত কাও, এত
বুগবুগান্তরের অভিসার! হা ইহারই জন্ত ৷ সকল ইতিহাসের অপ্তনিহিত
বাণী এইই।

"গত মহাযুক্ষে এক দল লোক অপেকা ক'বে বদেছিল যে যুদ্ধাবদানে তারা শক্তির অধিকারী হবে। কিন্তু আবেক দল লোক পৃথিবীতে প্রেমের রাজা চেমেছিল; তারা অধ্যাতনামা তপাবী। পৃথিবীর এই বিষম কাণ্ডকারখানার মধ্যে তারা সমস্ত ইতিহাসের গভীর ও চরম সার্থকতাকে, উপলব্ধি করেছে, বিশাস করেছে। বিবে গারা পরাজিত অপমানিত, তারা মন্ত্রুছেরের চরম দানের পথ চেযেই আপনাকে সান্ত্রনা দিতে পারে। সমস্ত জগতের ইতিহাসের পাতি তাদের মন্ত্রকার আদেশের বিপরীত পথে চলেছে, কিন্তু তবুও যদি তারা প্রেমীপ না নেবার, তপন্তার বিদ্ধান বিদ্ধান ক'বে থাকে, তবে তথন সেই নাবিক এসে তাদের ঘাটে তরী লাগাবিন আর তাদের শৃত্যভাকে পূর্ণ ক'রে ঘাবেন।"

শাস্ত্রিনিকেতন, আষাঢ় ১৩২৯, আচায় রবীক্রনাথের অধ্যাপনা প্রজ্যোতকুমাব দেন কর্তৃক অমূলিধিত।

কোনো বিশেষ যুদ্ধ বা ব্যাপারের সঙ্গে যুক্ত না করিয়া সহজ্ঞ সাধারণ ভাবে এই কবিতার অর্থ গ্রহণ করা যাইতে পারে।—

গতি অনন্তের প্রতীক। গতির আহ্বানবাণী ঝড়ের ও উত্তাল টেউরের ডিতর দিয়া আমাদের কাছে আদিরা পৌছায়। গতির নিমন্ত্রণ আমাদের নিকট উপস্থিত হইরা আমাদিগকে অজ্ঞানা ক্লের দিকে ভালাইরা লইরা বার।

এই যে অহরছ নৃত্নের আমন্ত্রণ আসিতেছে, ডাহাকে কে শ্বীকার করিরা
আকৃলে ভাসিবে ভাষা এখন কাষারও জানা নাই। যে এখন অখ্যাত অজ্ঞাত
হইরা আছে, সেই হরতো উহাকে শ্বীকার করিবে এবং ভাষার বারা বিখ্যাত
ও গৌরবাহিত হইরা উঠিবে।

এই বে আহ্বান আসিভেছে তাহার অনুসরণ করিলে ধনসম্পত্তি লাভ হইবে

না। কেবল আত্মপ্রদাদ মাত্র ইহার পুরস্কার—ইহাই তাহার প্রিয়ের হাডের রক্ষনীগন্ধার মঞ্জরী।

যাহার স্বস্থ অকশাৎ এই নাবিক যাত্রা করিয়া বাহির হইয়ছেন সে তো অতি অখ্যাত, কেহই তাহাকে এখনও চিনে না, সে পথপ্রান্থবাসী। কিন্তু তাহাকেই বিখ্যাত কবিয়া তুলিবার জন্ম নাবিকের এই অভিযান ও অভিসার।

এই নেম্নের আহ্বান তাছাকে যে বরণ করিয়া শইবে, তাহার সকল দৈন্ত ধক্ত হইয়া যাইবে, এবং তাহার আত্ম-অবিশ্বাস চিরকালেব জ্বন্ত ঘুচিয়া যাইবে।

ছবি

৬ নম্বর

এই কবিভাট ১৩২১ সালেব অগ্রহায়ন মাসের সবুজ্পত্রে প্রকাশিত হয়।

ছবি সম্বন্ধে রবীজ্ঞনাথ নিজে কি বোনেন তাহা তিনি এক প্রসঙ্গে বাক্ত করিয়াছেন। তাহা জানিলে, এহ কবিতা বোঝা সহজ হইবে বলিয়া তাহা অত্যে উদ্ধৃত কবিতেছি।

"ছবি বল্ডে আমি কি বুঝি সেই কথাটাই খোলস ব'বে বল্তে চাই।"

"মোহের কুয়াশায়, অভ্যাসের আবরণে সমন্ত মন দিবে জগংটাকে 'আছে'বলে সভার্থনা ক'রে নেবার আমরা না পাই জবকাশ, না পাই শক্তি। সেই জন্ম জাবনেব অধিকাণ্শ সম্বই আমরা নিধিলকে পাশ কাটিরেই চলেতি। সত্তাব বিভন্ধ আনন্দ থেকে বঞ্চিত হ'বেই মারা গেলুম।"

"ছবি, পাশ কাটিছে সেতে, আমামের নিবেধ করে। যদি সে জোর গলার বল্তে পারে 'চেফে মেখ', তা হ'লেই মন স্বশ্ন থেকে সত্যের মধ্যে জেগে ওঠে। কেন-না বা আছে তাই সং. বেথানেই সমন্ত মন দিরে তাকে অমুভব করি সেথানেই সমত্য মন দিরে তাকে স্ব

"কেউ না ভেবে বদেন, বা চোধে ধরা পড়ে তাই সত্য। সত্যের ব্যাপ্তি অতীতে ভবিরতে, দৃক্ষ অদৃত্যে, বাহিবে অন্তরে। আটিসটু সভ্যের সেই পূর্বভা বে পরিমানে বান্দে ধর্তে পারে, 'জাছে' ব'লে মরের সার সেই পরিমানে প্রবল, সেই পরিমানে স্থারী হয়, তাতে আমানের উৎফ্কা সেই পরিমানে অরাভ্য, আনন্দ সেই পরিমানে গতীর হ'লে ভঠে।

"আসল কথা, সভাকে উপদন্ধির পূর্বভার সলে সঙ্গে একটা অনুভূতি আছে, সেই অনুভূতিকেই আনরা সুশরের অনুভূতি বলি। গোলাপ-কুলকে ফুলর বলি এই এভেট বে, গোলাপ ফুলের দিকে আমার মন যেমন ক'রে চেয়ে দেখে, ইটের চেলার দিকে তেমন ক'রে চার দা। গোলাপ-ফুল আমার কাছে তার ছন্দে রূপে সংক্রেই সন্তা-রহস্থের কী একটা নিবিড় পরিচর দেয়। সে কোনো বাধা দের না। প্রতিদিন হাজার জিনিবকৈ যা না বলি, তাকে তাই বলি—বলি, ভূমি আছে।

"একদিন আমার মালী ফুলদানী থেকে বাসি ফুল কেলে দেবার জ্ঞান্ত গখন হাত বাড়ালো, বেষবী তপন ব্যথিত হ'বে ব'লে উঠল—লিপ্তে পড়্তেই তোমার সমস্ত মন লেগে আছে, তুমি তো দেখতে পাও না। তথনি চন্কে উঠে আমার মনে প'ডে পেল—-হা, তাই তো বটে! ঐ 'বাসি' বলে একটা কভান্ত কথার আড়ালে ফুলের সভাকে আমি আর সম্পূর্ণ দেবতে পাইনে। যে আছে সেও আমার কাছে নেই,—নিতান্তই অকারণে, সভ্য থেকে, সভ্যাং আনন্দ থেকে, বিশ্বত হলুম। 'বঞ্বী সেই বাসি ফুলছেনিকে অঞ্জলের মধ্যে সংগ্রহ ক'রে নিবে চ'লে গেল।

"আর্টিনট্ তেমনি ক'রে আমাদের চমক লাগিয়ে দিক। তার ছবি বিষেব দিকে অঙ্গুলি নির্দেশ ক'রে বলুক, 'ঐ দেখ আছে'। ফুন্সর ব'লেই জাছে তা নয়, আছে ব'লেই ফ্রন্সর।

'সত্তাকৈ সকলের চেয়ে অবাবহিত ও সুস্টু ক'রে অফুতর করি আমার নিজের মধ্যে 'আমি' এই ধ্বনিটি শ্রিতই আমার মধ্যে বাজ্ছে। তেমনি স্টু ক'রে থেগানেই আমার বল্তে পারি 'ভাছে', সেগানেই তার সঙ্গে কেবল আমার ব্যহারের অগতার মিল নয়, আত্মার গভীরতম মিল কয়। আতি অকুভূতিতে আমার বে হানন্দ, তার সানে এ নয় যে, আমি মানে হাজার টাকা রোজগার করি বা হাজার গৈকে আমাকে বাহনা দেয়। তার মানে হচ্ছে এই যে, আমি যে সভা এটা আমার কাছে নিঃস্পায়, তক্ত করা সিদ্ধান্তের স্বারা নয়, নিবিচার একাস্ত উপলক্ষির ছারা। বিধে যেথানেই তমনি একাস্ত ভাবে 'আছে' এই উপলক্ষি করি, সেখানে আমার সভার আনন্দ বিস্তারি হয়। সভোর ঐকাকে সেখানে বাপেক ক'রে জানি।"—রবীন্দ্রনাধ্য ওলানা, ২০০০ কান্তন, ১২২ পূলা।

বের্গ্ দর প্রধান কথা এই গে—গতির ভিতরেই সত্যকে গুঁজিতে ইইবে,
নিস্তর্কার মধ্যে সত্য নাই। তাই তিনি বলিয়ছেন যে—intellectual
concept-এর মধ্যে সত্যকে পাওয়া অসম্ভব। ববীজনাথও দেখাইয়ছেন
যে—এক দিকে আছে সত্য, অপর দিকে আছে কেবল ছবি—একটা
intellectual concept মাত্র, যেমন রাক্ষ্ম যক্ষ্ম কিয়র, dragon unicorn
ইত্যাদি। কিন্তু সেই ছবি সত্য ইইয় উঠে যথন তাহার সঙ্গে আমার জীবনের
অমুভূতির মিলন ও সংযোগ ঘটে, তখন সে আর ছবি থাকে না।

এই ব্ৰক্ত একজন বিখ্যাত ইংরেজ লেথক লিথিয়াছেন-

The drama of lines and curves presented by the humblest design on bowl or mat partakes indeed of the strange immortality of the youths and maidens on the Grecian Urn, to whom Keats says: 'Fond lover, never, never canst thou kiss,
Though winning near the goal. Yet do not grieve;
She cannot fade; though thou hast not thy bliss,
For ever wilt thou love, and she be fair.'

-Vernon Lee, The Beautiful.

भ में गोता

"ঐ যে আকাশের নক্ষত্র ছারাপথে একতা নীড় রচনা ক'রে ররেছে, ঐ যে এই উপগ্রহ সূর্য চক্র অন্ধকারের মধ্য দিয়ে আলো হাতে তীর্থনাত্রার চলেছে, তুমি কি তাদের মতো মত্তা নও ? আজ কি তুমি কেবল চিত্র-রূপে ররেছ ? ছবি দেখে এই প্রশ্ন কবির আরুরে উদিত হলো।" এই ছবি ধূব সন্তব কবির পত্নীর। তিনি বখন বৃদ্ধারা ইইতে এলাহাবাদে যান, তখন নেখানে তাহার ভাগিনের সত্যপ্রকাশ গঙ্গোপাধ্যারের জামাতা প্যারীলাল বন্দ্যোপাধ্যারের বাড়াতে গিরাছিলেন; সেইখানে বোধ হয় কবি নিজের পত্নীর প্রতিকৃতি দেখিরা এই কবিতা রচনা করিয়াছিলেন।

२व म्हेग्रङ्गा

"স্বাতের বা-কিছু স্বই চলার পথে ররেছে। তুমি কি কেবল চিরচঞ্চলের মাঝখানে দান্ত নির্বিকার হ'বে থাক্বে / জগৎ-যাত্রার পথে বে-সব পথিক বেরিরেছে তাদের সঙ্গে কি ভোমার বোগ নেই ? তুমি সকল পথিকের মাঝখানেই আছ অথচ তাদের খেকে দুরে আছ ; তারা চঞ্চলতার গতি পেরেছে, তুমি অক্তার বক্ষ।

"এই বে ধরণীর ধৃলি, এ অতি তৃত্ত, কিন্ত এও ধরণীর বরাঞ্চল-রূপে বাতাসে উড়্ছে। এই ধৃলিরও কত বিকার, কত পরিবর্তন, কত গতির লালা। বেশাবে কুল কোটে না, ভাকরে ব'বে বার, বখন ধরণী বিধবার মতো তার আভরণ ত্যাগ করে, তখন সেই ভাগবিনীকে এই ধৃলি গৈরিক বর পাররে দের। আবার বখন বসস্তের মিলন-উবা আনে, তখন সে ধরণীর গারে পাত্রবেখা এঁকে দের। এই বে তৃণ বিশের পারের তলার আছে, এরা আছির, এরাও অন্ধুরিত বিদ্ধিত আন্দোলিত হচ্ছে, উল্ফ্রস হচ্ছেও রান হচ্ছে। এবের মধো নালা বিকাশ ও পরিবর্তন আছে ব'লেই এরা সত্যা। তুমিই কেবল ছবি, বরাবর এক ভাবে আছে বিছ বির হ'বে আছে।

প দ্যালা

"আৰু কুৰি ছবিতে আৰম্ভ আছে বটে, কিন্ত কুনিও তো একছিল পথে চল্ডে। নিংবাসে ডোলায় বন্ধ ছবে উঠ্ড। তোমার আদ তোমার চলার কেরার হথে ছাংগ ক্ষ নৃত্য নৃত্যু ছবা কানা করেছে। বিবের ছবো আনের ছবা আনা মুখুন করে নীনারিত মুক্তান্ত্র যে আনু কান্তিন্ত্র, ক্ষিন্ত, তথ্য আন্তান নিজের কর্ম অর্থনি ব্যক্তির্ভ ভাবে বে অগৎ বিশেষ ভাবে আমারই, ভাতে তুমি কত গভাঁররূপে সতা ছিলে। এই জগতের কুন্দর জিনিস বা-কিছু আমি ভালোবেনেছি তার মধ্যে তোমার নিজের নামটি তুমি যেন লিখে দিরেছিলে, ফুন্দর প্রির সামগ্রীকে তুমিই ভোমার ভালবাসা দিরে মাধুর্যান্তিত করেছিলে। তুমি নিধিলকে রদম্য ক'রে তুলেছিলে—তোমার মাধুর্বর তুলিতে বিশ্ব ফুন্দর মধু হ'রে প্রকাশ পেয়েছিল। আনন্দমর বার্তাকে তুমি মুর্তিমতি বাণীরূপে আমার কাছে বহন ক'রে এনেছিলে।

8र्थ म्हास

"আমরা ছন্তনে এক সঙ্গে যাত্রা ক'রে চলেছিলাম। তাৰ মন্ত-রাত্রি অর্থাৎ মৃত্যু ভোমাকে অন্তর্মালে নিয়ে গেল। আমি চল্তে লাগ্লাম, তুমি নিল্চল হ'বে গেলে। ছিন ও রাত্রি আমার ম্পত্র্থ বছন ক'রে নিয়ে চল্ল, আমার চলা আব ধানল ন'। আকালের নাগরে আলো-অন্ধনারের জোরার ভাটার পালা চলেছে। আমি পথ ছিবে ঘাত্রা করেছি, সেই পথের ঘ্রারে ফুলের ফল চলেছে — কদম্ব শিউলি নাগকেশর করনী, নানা কতুতে এক্বে উৎসবের যাত্রা। আমার ঘ্রন্ত জাবন নিঝ ব মৃত্যুর মধ্য ছিবে ছুটেছে — অর্থাৎ প্রতিমৃত্ত্র স্বাংস হ'তে হ'তেই তারা প্রাণের পথ কেটে ছিছে। তাই মৃত্যুই কিন্তিপী বাজিরে জাবনকে শক্তিত কর্ছে, নানা ছিকে প্রসারিত ও প্রবাহিত ক'রে দিছেে। আদ্ব জানি না পরক্ষণে কি ঘট্রে, তথাপি অজানা তার বাঁশি বাজিরে আমাকে দ্র একে দ্রে ছেকে চলেছে, আমাকে ব্রহুট্রে ক'রে নিরে চলেছে। আমি প্রতিদ্বিনর চলাকে ভালোবানি বলেই জীবনকে ভালোবানি। অজানার ম্বর শুনে চলা আমারে ভালো লাগে। তুমি আমার সঙ্গে চলেছিল, হাইৎ এক সময়ে একেবারে পথ থেকে নিমে একেবি হ'বে রইলে।

८म में जा अ

"আষার হঠাৎ মনে হলো, এ কী প্রলাপ বক্ছি। সুমি কি কেবল ছবি । লা, লা, জুমি তো শুধুছবি মণ্ড। কে বলে সুমি কেবল রেখার বন্ধনে বন্ধ হবে রবেছ । তোমার মধ্যে বে প্রটির আনন্দ প্রকাশিত হয়েছিল ও মৃতি প্রহণ করেছিল, তা বদি এখনও না থাক্ত তবে এই নকীর আনন্দবেশ থাক্ত না। ভোমার আনন্দ বে-বাণীকে বহন ক'রে এনেছিল তা তো খামেনি। বিশের বে-অগুরের বার্তাকে তুমি এনেছিলে, তা চিরকাল ধ'রে নব নব রূপে আপনাকে প্রকাশ কর্ছে। তা বদি না হতো, তবে মেনের এই বর্ণচিন্থ থাক্ত না। তোমার চিক্শ কেশের বে ছারা, তা বিশের নানা রূপের মধ্যে ররেছে। তা যদি বিশ্ব থেকে মিলিরে বেড তবে প্রটির আনন্দের মধ্যেই কতি ঘট্ত, সেই দকে মাধবী-বনের মর্মরারমাণ ছাবা লুগু হ'রে বর্ণপ্রায় হ'রে বেড।

"ভূমি আৰার নান্ধে নেই, কিন্ত জীবনের মূলে আগার দলে দল্মিলিত হ'লে আছে, ভূমি আই পুনক্ হ'লে পাক্লে না। ভোষাকে আমি বে ভূলেছিল্ম, দে ভূল বাইরের। ভূমি আমার শ্বীখনের চেতন্তলোক থেকে মরটেডন্ডের জীবনে চ'লে গেছ। আমি তুলে গিরেছিলান যে তুমি আমার অভরের গভীর বেশে গেছ। আকালের তারা রাজিকে বেইল ক'রে আছে, আমরা কত সমরেই তাদের কথা সচেতনভাবে ভাবি না, কিন্তু রাজির অভ্যকাবে চলার মধ্যে তাদের দিকে চেয়ে না কেথ্লেও তাদের সলীতে ও আননে আমাদের মন অলজ্যে পূর্ণ হ'রে যাই। তেমনি পথে চল্তে চল্তে তাব ছি যে কুলকে তুলেছি, কারণ সচেতনভাবে ভাকে চোণে দেব্ছি না। কিন্তু আমার যাত্রাপথে সেই ফুল প্রাণেব নি:খাস বায়ুকে স্থাধ্র করছে, ভুলের শৃক্ততাকে পূর্ণ কর্ছে। আমি ভূলি বটে, তব্ও ভূলি না।

আমাদের চেতনা প্রতিদিন যাহা কিছু আনিতেছে কেলিতেছে সেই সমন্ত ক্রমে সংস্কার স্থৃতি অজ্ঞাস আকারে একটি বৃহৎ গোপন আধারে অচেতনভাবে সন্ধিত হইরা উঠিতেছে। তাহাই আমাদের জীবনের ও চরিত্রের ছিত্তি। সম্পূর্ণ তলাইরা তাহার সমন্ত তরপন্যাব কেহ সাবিকার করিতে পারে মা। উপর হইতে যভটা দৃশ্বসান হইরা উঠে, অধবা আক্মিক ভূমিকম্পের কেগে বে নিগৃঢ় অংশ উধের উৎক্ষিপ্ত হয়, তাহাই আমরা দেখিতে পাই।' পঞ্চতুত, অথওতা।

'আমি তোমাকে বিশেষভাবে মানস চক্ষে দেখছি না ব'লে যে ভূলে বর্মোছ ত। নর বিশ্বতির কেন্দ্রগতের কেন্দ্রগতের তুমি তামার রক্তেন্ত পোল দিখেছ। তুমি 'চোখের বাইবে নেই ভিতরে সঞ্চিত হ রে আছে। সেই জন্তই আজকের বস্থারার ভামলতাব মধ্যে তোমার ভামলতা জাকাশের নীলিমার মধ্যে তোমার নীলিমা দেখছি। তুমি যে আনন্দ দিখেছ, বিষের তানন্দের মধ্যে তা মিলিয়ে আছে।

আমি যথন গান গাই তথন কেউ জানে না যে তোমাব হার তার ভিতরে ধ্বনিত ং যে উঠ ছে। তুমি কবির বাংরে ছিলে, কিন্তু অন্তরের যে কবি সঙ্গীত কাব্য রচনা কবছে তাব প্রেরণা রূপে তুমি আজে মর্মন্থলৈ রয়েছ—তুমি আজে কবিচিত্তবিহারিণী। তুমি কবিৰ অপরে কবি হয়ে এইলে, আর বাইবের নিখিলে বাণ্ডিংযে থাকলে। অত্তর্ব তুমি তথ্য ছবি মানুন্ত।

'ভোষাকে একদিন দকালে অর্থাৎ সচেতন অবস্থায় লাভ করেছিলুম, তার পরে বাণি এলো মৃত্যুদ্ধপে ভূমি অন্তর্গালে চ'লে পেলে। রাজিতে ভোষাকে মারিরে কেলে, রজন'র অন্ধকারে অর্থাৎ মন্নটিভক্তে ও কুগুটৈভক্তের মধ্যেই গভীরভাবে ভোষাকে আবাৰ কিবে পেলাম।"— শাহিনিকেন্তন, চত্ত ১৩২ন।

ভুলনীয়—পূরবী কাব্যে 'পূরবী,' 'ক্লভঞ্জ' কবিভা।

শভাহান

ণ নৰ্ম

्वदे अविकाहि क्षापरम अ०२० मारणाह मन्वागरकात आवास्ताम सारमाह मःथा।। "कालमञ्जूष्ट नारम क्षापानिक सह। े এই কবিতাটি বলাকার সকল কবিতার মধ্যে সমধিক প্রসিদ্ধ। ইহার ভাষার কাককার্য, গভীর ভাবব্যঞ্জনা ও মনোহারিণী কল্পনার প্রসার ইহাকে মনোরম কবিরাছে। ইহার কবিত্বময় ঐখর্য অতৃন্য।

ত এই কবিতাতে কবি বলিতে চাহিতেছেন যে রাশি রাশি বস্তুস্থপে সত্যকে খুঁজিরা পাওয়া যার না; কিন্তু অন্তর-বেদনার মধ্যে সত্য নিহিত আছে। ভারতসম্রাট্ শাজাহান রাজশক্তি ধন মান ভূচ্ছ জ্ঞান করিয়া অন্তরের বেদনাকে চিরস্তন করিবার মানসে ভাজমহল নির্মাণ করেন।

কিন্তু শ্বৃতির চিরন্তনত্ব কেবল শ্বৃতিতে পর্যবসিত নয়, শ্বৃতিব সঙ্গে গে প্রীতি ক্ষতিত হইয়া থাকে, সেই প্রীতিতেই শ্বৃতিতেই চিরন্তনত্ব প্রতিষ্ঠিত।

আবার, কি জভবিশ্ব, কি প্রাণীবিশ্ব, ছইরেবই মধ্যে আমরা দেখিতে পাই এক অবিরাম অবিপ্রাম গতি। এই গতিব মধ্যেই বিশের প্রাণশক্তিব বিকাশ। এই গতি যেথানে থামিয়া যায় দেখানেই যত আবিলতা, যত আবর্জনা জমিয়া উঠে—দেখানেই নিদারুণ মৃত্যুর আবিজ্ঞাব হয়। এই গতিস্রোতেই মৃক্তির পথ। এই

ৈ সেই জন্ম ব্যথিত বিরহী যদিও বলিতে চায়—'ভূলি নাই, ভূলি নাই, ভূলি নাই প্রিয়া'।—তথাপি সে ভূলে, ভূলিতে বাধ্য হয়, কাবণ, বিচ্ছেদেব বেদনাটুকু ক্ষণিক এবং বিশ্বতিই চিবস্থায়ী। অথচ অন্ত দিকে এই বেদনাইকুই বাস্তবিক সত্যা, বিশ্বতি সত্যা নয়।

'মৃত্যু যেন তীর থেকে প্রবাহে ভেসে যাওয়া—যারা তীরে দাঁডিয়ে থাকে তারা আবার চোষ মৃছে কিরে বাব, যে ভেসে গেল দে অদুশ্য হ'রে গেল। জানি এই গতীর বেদনাটুকু যারা রইল এবং যে গেল উভরেই ভূলে যাবে, হয়তো এতক্ষণে অনেকটা লুপ্ত হ'রে গিবছে। বেদনাটুকু ক্ষণিক, এবং বিশ্বুতিই চিরপ্তায়া, কিন্তু ভেবে দেখ্তে গেলে এই বেদনাটুকুই বান্তবিক সন্তিয়,—বিশ্বুতি সতা লয়। এক একটা বিচ্ছেদ এবং এক একটা মৃত্যুর সময় মামুষ সহসা জান্তে পারে এই ব্যাখাটা কী ভরত্বর সত্য। জান্তে পারে যে, মামুষ কেবল অম্বক্রমেই নিশ্বিত্ত থাকে। কেউ থাকে না—এবং সেইটে মনে কর্লে মামুষ আরো বাংকুল হ'বে ওয়ে—কেবল যে থাক্ব না তা নর, কারো মনেও থাক্ব না।"

—ছিন্নপত্ৰ. (সাজাদপুর, ৪ঠা জ্লাই ১৮৯১) ৮৮ পৃঠা ।

ঁ শালাহানের হৃদন্ধ-বেদনা অপরূপ তাজমহলের চেরেও অধিক সত্য; তাই স্বৃতিম্পিনে কড়া বন্দী হইলা নাই। চিত্ত-বেদনা এক আধারেই নিজেক্ চিন্নদিন ব্ৰী ক্রিয়া ও বন্ধ করিলা রাখে না, ক্রমাগতই সে আধার হইতে আধারাস্তরে চলিরা যার। বেদনার এই আকার পাওরার পিপাসা অনস্ত— কোনও সসীম আধারে ভাহার এই পিপাসা মিটে না, অসীমকে না পাইলে ভাহার আর ভৃপ্তি নাই।

যদি ভাক্তমহলের ফ্রার মানবের শ্রেষ্ঠ কীর্তিতেও কীবনকে ধরিরা রাথা না যার, তাহা হইলে কীবনের সত্যকে কিরপে ব্যক্ত করা যাইতে পারে? বের্ন্ বিলয়ছেন যে—কীবনের শ্বরূপ হইতেছে অনস্ত প্রবাহ। রবীক্রনাথও বলিয়াছেন—কীবনের প্রকাশ হইতেছে বিরাট নদী'।

আবার, মানব তাহার কীতির চেয়ে মহৎ। অন্তএব শাক্ষাহানকে যদি
মানবাদ্ধার বৃহৎ ভূমিকার মধ্যে দেখা যার তাহা হইলে দেখিতে পাই সমাটের
সিংহাসনটুকুতে তাঁহার আত্মপ্রকালের পরিধি নিঃশেষ হয় না—উহার মধ্যে
তাঁহাকে কুলার না বলিয়াই এত বড সীমাকেও ভাঙিয়া তাঁহাকে চলিয়া যাইতে
হইল—পৃথিবীতে এমন বিরাট কিছুই নাই যাহার মধ্যে চিরকালের মতে।
তাঁহাকে ধরিয়া রাখিলে তাঁহাকে থর্ব করা হইত না, আত্মাকে মৃত্যু লহয়া
চলে কেবলই সীমা ভাঙিয়া ভাঙিয়া। তাজমহলের সঙ্গে শাক্ষাহানের যে
সম্পর্ক তাহা কথনই চিরকালের নহে,—তাঁহার সঙ্গে তাঁহার সামাজ্যেব
সক্ষেও সেই বকম। সেই সম্বন্ধ জীণ পত্রেব মতো ধসিয়া পড়িয়াছে,—
তাহাতে চিরসতারূপী শাক্ষাহানের লেশ মাত্র ক্ষতি হয় নাই।

শাজাহান অর্থাৎ কীর্তিমান মামুষ বা জীবন, যে, কিছুতেই আবদ্ধ ছইয়া থাকে না, সে কিছুতেই বন্দী হয় না বলিয়াই তাহার কীর্তি বিলাপ কবিয়া বলে—

শ্বতিভারে জ্ঞামি প'ড়ে আছি, ভারমুক্ত সে এখানে নাই।

বে চলিয়া বার সেই হইতেছে সে, তাহার শ্বতি-বন্ধন নাই , আর যে অং কাঁদিতেছে সেই তো ভার বঙ্গা পদার্থ। "আমি—আমার" করিয়া যেটা কারালাটি করে সেই সাধারণ পদার্থটা "আমি"। আমার বিরহ, আমার শ্বতি, আমার তাজমহল, যে নামুবটা বলে, তাহারই প্রতীক ঐ গোরশ্বানে ,— আম দুক্তা হইয়াছে বে, সে গোক্তাকান্তরের বাজী—ভাহাকে কোনো একবানে বঙ্গে না, না ভালমহলে, না ভারত-নারাজ্যে, না লালাকান-নামরপধারী বিশেষ ইনিহানের ক্রণভাগীন ক্রিটে।

মাকৃষ যে অতি প্রির জনকৈও চিরকাল মনে করিরা রাখিতে পারে না, এ কথা কবি আগেও বলিরাছেন—এমন গভীরভাবে নর, একটু রঙ্গ করিরা— ক্ষণিকার মধ্যে 'অনবদর' কবিতার।

এই কবিতাটি এবং ৯ নম্বর কবিতাটি তাজমহলের চমংকার প্রশস্তি। এই তাজমহলের প্রথম প্রশন্তি রচনা করেন শ্বরু সমাট্ শাজাহান। তিনি তাজমহলকে বলিয়াছেন—

> জগৎসার! চমৎকার! প্রিয়ার শেষ শেষ! অমল ভার কবর ছার তন্তুর ভার তেজ !

কুত্ম-ঠাম ধেরান ধাম অমল মন্দির,— ইহার পর ধাতার বর সন্ধাই রয় দ্বির।

--- মণিমঞ্ধা, সভ্যেলনাথ দত্ত প্রণীত, ১২৭ পৃষ্ঠা।

তাহার পরে কত কত লেখক তাজমহলের প্রানন্তি রচনা করিয়াছেন তাহার আর ইয়তা নাই। ইহাদের মধ্যে স্থার এড়ইন্ আর্নলিড, দ্বিজেজ্ঞলাল রার, সভ্যেজ্ঞনাথ দত্ত প্রভৃতির নাম করা যাইতে পারে।

সমাটের অনিমেষ ভালোবাসা সমাজীর প্রতি।

-- বিজেকুলাল রার, বন্দ্র।

শ্বতি-মন্দিরেই যে শ্বতি চিরস্থায়ী হউয়া থাকে না, সে কথা দিজে**লুলালও** বলিয়াছেন—

> কিন্তু যবে ধূলিনীন হইবে তুমিও, কে রাখিবে তব শুতি ? তে সমাধি। চিরশারনীয

সভ্যেন্দ্ৰ দত্ত তাজমহলকে বলিয়াছেন—

প্রেমের কেউল ভূমি মরণ-বেলার,

শিরোমণি তুমি ধরণীর ! — অভ-আবীর।

Not architecture as all others are,
But the proud passion of an Emperor's love
Wrought into living stone, which gleams and soars
With body of beauty, shrining soul and thought;

-Sir Edwin Arnold.

৯ নগর ক্রিড়ার কবি রবীজনাথ বলিয়াছেন যে ডাজমহল কেবল বে শাজাহারের প্রিড়া-বিরহের বেলনা বহন করিডেছে ডাহা নহে--- বেখা বার বনেছে প্রেরনী--রাজার প্রানাদ হ'তে রানের কুটারে--তোমার প্রেমের স্থাতি সবাবে করিল বহীরদী ।

আন্ত সৰ্ব-মানবের অনস্ত বেছনা এ পাবাদ-মুন্দারীয়ে আলিচনে যিবে' রাত্রিছিল করিছে সাধনা।

५ कि हमी

৮ নম্বর

এই কবিতাটি ১৩২১ সালের অগ্রহায়ণ মাসের সব্স্বপত্তে প্রকাশিত হইয়াছিল। কবি তথন এলাহাবাদে ছিলেন। অন্ধকার রাত্রিতে কবি ছাদের উপর বসিয়া ছিলেন। আকাশের দিকে চাহিয়া অগণ্য নক্ষত্র দেখিতে দেখিতে কবির মনে এই ভাবোত্রেক হইল যেন বিশ্বব্র্ব্বাপ্তব্যাপী এক বিপ্ল স্প্রনী-শক্তির স্বোত বহিয়া চলিয়া ঘাইতেছে; তাহারই ঘূর্ণাবর্তে কত শত সৌরমপ্তল ঘূরিয়া ঘূরিয়া ব্রুদের মতো শেষ হইয়া যাইতেছে। ঐ মহাব্যোমের বিরাট্ সীমাহীন অন্ধকারের মাঝে কত কত আলোকের ছটা বিজ্বারত হইয়া উঠিয়া আবার নিঃশেষে বিলীন হইয়া যাইতেছে তাহার কোনো ইয়ঝা নাই। ইহাকেই কবি বিরাট্ নদী-ক্রণে অস্কুডব করিয়াছেন। জীবন-রাজ্যেও ঐ একটি বাণী, 'অলক্ষিত চরণের অকারণ অবারণ চলা'।

। এই কবিতাটি ব্ৰিতে হইলে ফরাসী দার্শনিক বের্গ্র জগৎ সক্ষে যে
ন্তন মতবাদ প্রচার করিয়াছেন তাহা জানিলে ভালো হয়। বের্গ্র বলেন—
ক্লাতের মধ্যে, আমাদের মধ্যে, সদাসর্বদাই পরিবর্তন চলিতেছে, এবং ছইটি
পরিবর্তনের মাঝামাঝি অবস্থাটিও কেবলই পরিবর্তন মাজা। এমন কোনো
'অস্কুডি চিজা বা শুহা নাই প্রতিমৃত্তেই যাহার পরিবর্তন হয় না।

"We" change without ceasing, and the state itself is nothing but change. There is no feeling, no idea, no volition, which is not undergoing change at every moment; if a mental state ceased to vary, its duration would seem as flow?"

অভ্যাৰ পরিবর্তন ছাড়া জগতে আর কিছুই নাই। অপরিবর্তনশীল কোন সম্ভা বীকার করিতে পারা বায় না, আবার কোনো বস্তুর পরিবর্তন हुत अपन कथां वना हरन ना. कांत्रण পतिवर्छन चौकांत्र कतिरन धकांत्रास्टर ইছাই বলা হয় যে দেই বস্তুটির একটি অপরিবর্তিত অবস্থা ছিল যাহার পরিবর্তন হইরাছে। আমরা যতনুরেই দেখি না কেন কেবল চিরপরিবর্ত নই আমাদের চোখে পডে। জগতে পরিবর্তনের যে শ্রোত বহিরা চলিয়াছে তাহার মধ্যে কিছুই স্থির থাকে না। সমস্ত কিছুরই রূপান্তর ঘটতেছে এবং पहित्वहे। त्वर्ग्न देशव नाम निमाहन 'Becoming' अर्भाष 'হওরা'। যদি বস্তু ও বস্তুর গুণাবলীকে তিল তিল করিয়া বিশ্লেষণ করিয়া দেখা বাষ, তাহা হইলে দেখা যায় যে এক গতি ছাডা আমরা আর কিছুই পাই না। এই গতিকে কেহ বলেন কম্পন, কেহ বলেন ইখারের ঢেউ, কেহ বা বলেন নেগেটিভ ইলেক্ট্রন। একটি নদীর ধারার সঙ্গে এই পরিদৃশ্রমান জগতের তুলনা করা ষাইতে পারে। এই যে অনাদি অনন্ত শ্রোত, এই বে জীবনধারা, এই চরম ও পরম শক্তি চলন্তী শাশ্বতী। কিছ এই শক্তির গতি যে অবাধ, বাধাবদ্ধহীন, তাহা নহে। চলিতে চলিতে হঠাৎ বাধা পাইরা প্রতিহত হইয়া এই শক্তি ফিবিয়া দাডার। চৈতক্তশক্তির এই যে প্রতিঘাত, এই বিপরীত গতি, বের্গ্র মতে ইহারই নাম বস্তু। জীবনধারা যেন একটি উৎস, তাহার ধারা কেবলই উপরে উঠিতে চায়। যে জলকণাগুলি উপরে উঠিয়া আবার পডিয়া যায়, সেগুলিই বস্তরূপে প্রতিভাত হয় ৷ সতএব বল্পও গতিরই একটি অবস্থা মাত্র, বৃদ্ধির দারা আমবা নিরবচ্ছিন্ন গতিধারাকে খণ্ড খণ্ড করিয়া বস্তু-রূপে দেখি। কিন্তু বাস্তবিক কালের কোনো বিভাগ নাই, ষ্মতীত বর্তসান ভবিদ্যুৎ বলিয়া কালের কোনও বিভাগ করাই সম্ভব নহে। বের্গসঁ বলেন, "অতীতের অবিরত প্রবাহ নিববক্ষেদে ভবিষ্যতের গর্ভে প্রবেশ করিতেছে, বর্তমান দেই অতীত ও ভবিঘ্যতের মধ্যে একটি হাইফেন্ মাত্র, বর্ডমান বণিয়া কিছুই নাই, কারণ যে মৃহুত কৈ আমরা বর্ডমান বলি তংকশাৎ ভাষা অতীত হইয়া ঘাইতেছে, এবং ভবিশ্যৎ আদিয়া সেই বর্তমান নামক কালবিদ্দর স্থান অধিকার করিতেছে।"

ঠিক এই কথাই কৰি নবীজনাথ কবিষমন ভাৰান বৰ্ণনা কৰিবাছেল । উদি এই ক্ষিতান বিশিষ্টেশ—

कार्टमंत रकान मृहर्क है वित हरेगा नाहे---जाहारात किया निया

পরিবর্তনের থবাহ অদুশু বেগে নিরম্ভর চলিয়াছে; সেই আবাহ-বেগে সবই ভাসিরা চলিতেছে। বিশ্বের প্রবাহ কালকে অবলম্বন করিরা চলিয়াছে। কিছ কাল বিরাট। ভরা নদীর স্রোভ লক্ষ্য-গোচর হয় না, তাহার বেগ বুঝা ষার তাহার উপরে প্রবমান ফেনপুঞ্জের গতি দেখিয়া। কালপ্রবাহেরও ধর-গতি-বেপ বৃথিতে পারা বার তাহার উপরে প্রবমান ভারকাপুঞ্জের গতি দেখিরা। কালের বেগে বিশ্বন্ধাও কারাহীনতা হইতে কারা পরিগ্রহ করিতেছে। জলের বেগে কেনার উৎপত্তি হয়, তেমনি কালের বস্তুহীন বেগে সমস্ত বিশ্বক্রমাণ্ড স্টি হইরা উঠিতেছে—কান্নাহীন স্বয়ের বেগে যেমন বন্ধ জাগিনা উঠে তেমনি। গাছের মধ্যে বে বেগ তাহা বীঞ্জ হইতে অন্ধুরে, অন্ধুর হইতে কাণ্ডে, কাণ্ড इटेर्ड भाजाम, भाज इटेर्ड कृतन, कुन इटेरड करन, जमांगड माभ इटेरड ক্ষপান্তরিত হুইরা চলে। চলাটাই সর্বত্রে রূপ হুইরা উঠে। চলাটাই ৰূপ-ক্লপান্তরের মধ্য দিয়া, পরিবর্তন-পরম্পরার মধ্য দিয়া ভাসিয়া চলিতেছে। সেই চলা ভৈরবী বৈয়াগিণী অনস্তপথবাত্রিণী . তাহাব পথের চই ধারে সৃষ্টি ও ধ্বংস, बन्त ও মৃত্যু; কিন্তু কাহারও দিকে তাহার দৃক্পাত নাই। বন্তর প্রবাহ যথন চলে তথন তাহা দেশে কালে বিভক্ত হইয়া চলে। জল যথন চলে তথন তাহা वह स्टिन्द्र त्याजिनी; किन्द्र ताथा भारेत जारा रह धकि शास्त्र भावन। চলার দারা সমস্ত কিছুর ভার-সামঞ্জ্য হয়; এবং চলা স্থগিত হইলেই সেই সামঞ্চল ভব্দ হয় ও তথন বস্তু ভার হইয়া উঠে। যথন কোনো ভারী বাঁকে করিয়া ভার বহন করে, তথন যতক্ষণ দে চলে ততক্ষণ তাহার চলার দোলা **নাগিরা তালে তালে** তাহার কাঁধের বাঁকও গুলিতে গুলিতে চলিতে থাকে, তাই তাহার কাঁখের ভার বহন করা সাধ্য হয়; কিন্তু বথন সে চলা পামাইয়া স্থির হয়, তথন তাহার কাঁখের ভার হব হ বোঝা হইয়া তাহাকে পীড়া দেয় 🕻

গতি প্রবাহ কোনো রকমে প্রতিহত হটলেট তৎক্ষণাৎ বস্তুত্বপ জড়ো হইরা উঠে। বের্গ গওঁ ঠিক এই কথাই বলিয়াছেন। স্থিতিতে বস্তুর তুপ ক্ষমা হইরা উঠিলে ভাষার দ্ধপের বৈচিত্র্য কৃটিবার অবকাশ লুগ্ধ হইরা বার। বস্তুর আত্মদানে, ভাষার নিজেকে নিলেক করিরা বিলাইরা দেওয়াতে ক্ষমাইতেছে প্রাণ, আর ভাষার সক্ষরে জাগিতেছে মৃত্যু। আধুনিক বিজ্ঞানও প্রমাণ করিয়াল্ল বে বন্ধ হইতেছে ভাপ চাপ পরমাণ্-সংস্থান প্রকৃত্তির বিচিত্র দ্বশাস্থ্য স্থিতিক অণু প্রমাণ্ড তো পতিরই সমন্ত্রী মাজ্য-ইক্ষেক্ট্রন প্রোটন ধারণাকীক স্থিতিক। ভাই একটি বন্ধ ভাগে ও প্রমাণ্ডানের ভারত্ব্যে বিভিন্ন আকার ধারণ করিতে পারে—একই বস্ত হাইড্রোজেন-অক্সিজেনের সমবারে উৎপন্ন যে জল, সেটি কথনো তরল হইরা নদীতে প্রবাহিত হইতেছে, কথনো বান্দা মেম হইয়া আকাশে উডিতেছে, কথনো প্রভপ্ত তাপ হইরা এক্সিনে গতি সঞ্চার করিতেছে, আবার কথনো বা জমাট কঠিন হইয়া তুবার-পর্বতে পরিণত হইতেছে এবং আপনার আকার-সংঘতে টাইটানিক জাহাজ চুর্ন করিয়া কেলিতেছে! নদীর জলে যথন ডুব দেওয়া যায়, তথন মাথার উপর দিয়া কত জলরাশি প্রবাহিত হইয়া যায়, তাহার ভার বোধ করা যায় না। কাইণ, সেই অগাধ জলরাশি সচল বহমান। কিন্তু এক কলসী জল তুলিয়া মাথায় চাপাইলে তাহা ছবহ বোধ হয়, কারণ সেটা স্থির। বস্তু যথন চলে তথন তাহার ভার ভার থাকে না, বস্তু-প্রবাহ থামিলেই তাহা ভাব হইয়া পড়ে।

ধ্কবি চঞ্চলা কাল-নদীকে অথবা ভব নদীকে গুট কপে দেখিয়াছেন— ভৈত্ববী-বৈরাগিনী, এবং নটী চঞ্চলা অপ্সরী। গ্রহ-নক্ষত্রেব ঘূর্ণনেব মহাছন্দে যেন ছন্দিত হইরা উঠিয়াছে কবির ভাবোচ্ছাস।

আখুনিক বিজ্ঞানের মতে বস্তু কেবল গতিব বাধা মাত্র—বেগ যথন কোনো অবস্থায় স্থিরতা লাভ করে তথন সেই বাধার ফলে বস্তুতে পরিণত হয়। পতিবেগ বাধা পাইলে চলস্ত ট্রেনের কলিশনের মতন উচ্ছিত ইইয়া উচুদেয়াল হইয়া উঠে।

বৈরাগিণী কোথাও সংসক্ত হইয়া না থাকিয়া ক্রমাগত যে নিরুদ্দেশ যাত্রা করিয়া চলিয়াছে ভাহাতেই জগৎ-সঙ্গীতের অনাহত স্থ্য উংপন্ন হইতেছে।

অসীম বে দূর, তাহার প্রেম সর্জনাশা, সমস্ত সঞ্চয় ও বর্তমানতাকে বিনাশ করিতে করিতে তাহার যাতা। সেই অভিসারিকার চলার দোলা লাগিয়া দোলার বেগে তাহার বন্দের হার ছিল্ল হইয়া যায়, এবং তাহা ইইতে অমনি নক্ষত্রের মনি উৎপন্ন হইয়া চারিদিকে ছড়াইয়া ছড়াইয়া পড়ে। এই চলার বেগে তাহার কানে বিচাতের হল ছলিতে থাকে—থেমন ভাগবতে অভিসারিকা গোশিকাদের কানের হল ছলিয়া ছলিয়া আগে বাড়িয়া বাড়িয়া দোল্ল দিকে কৃষ্ণ আছেন তাহা নির্দেশ করিয়া দেখাইয়া দিয়াছিল, তেমনি এই অভিসারিকার সমস্ত কিছু চলার বেগে তাহাকে নির্দেশ করিয়া দিতেছে। সেই অভিসারিকার অঞ্চল হইতেছে তৃণ-পল্লব ফুল-ফল—তাহাও চলার বেগে ই শিক্তেছে মেলিভেছে। বিশের মধ্যে এবং মান্তবের জীবনে সমান্তে ইতিহানের সমস্ত ভাইর মধ্যে চলার বে বীলা হইতেছে, তাহার অপদ্ধপতা প্রত্যক্ষ করিয়া

কৃষি বেদ আনক্ষে নৃত্য করিভেছেন—তাঁহার কবিভার ছন্দে দেই নৃড্যের ক্লোকা গাগিয়াছে।

মহাকাদ নৃত্যগতিশীল, তাই বে-মৃহ্তকে যেই বলি 'তুমি আছ' অমনি দেটা 'নাই' হইরা যার। এই জন্ধ বের্গ্ন' বলিরাছেন যে বর্তমান বলিরা কিছু নাই, যে মৃহ্তে বাহাকে বর্তমান বলি সেই মৃহ্তেই তাহা অতীত হইরা বার—অতএব কালের মধ্যে আছে কেবল অতীত ও ভবিষ্যৎ—আর ভাহাকের মধ্যে হাইফেন্ হইরা আছে পরিস্থিতিহীন বিল্পুমাত্র বর্তমান। বাহা থাকিরাও নাই, যাহা এক মৃহ্তে থাকিরা সেই মৃহ্তেই নাই হইরা যার, ভাহা কিজ্, তাহাতে কোনো আবর্জনা কল্ব লাগিতে পার না, তাই ভাহা পবিত্র। ক্রমাগত এই থাকা ও না-থাকার ছল্বের মধ্য দিরা কালের বাত্রা— ভাহারই চরণস্পর্লে গৃলি ভাহাব মলিনভা ভোলে, এবং মৃত্যু প্রাণে পর্যবসিত হইরা চলে। এই মহাকাল যদি স্থপিত হইরা যার, তবে সমন্ত বিশ্ব জড হইরা যাইবে, আকারহীন chaos হইরা পভিবে। যাহা অপরিবভিত্ত ভাহা জড জীবনহীন। নটীর মৃত্যুর ছল্পে মৃত্যু জাবন হইরা উঠিতেছে, স্ক্লন-প্রলম্বের চিছ্পুন্ত নির্মণ আকালে নিধিল বিশ্ব বিক্লিত হইয়া উঠিতেছে।

বে চঞ্চলা গ্রহ-নক্ষত্রে সর্বত্র নৃত্য করিতেছে, দেই প্রাণীর জীবনের মাবেও
নৃত্য করিতেছে—প্রাণ মানেই 'অলক্ষিত চরণের অকারণ আবরণ চলা।'
সমৃদ্রের তর্বেশ্ব বে চলা লোলা, তাছাও দেই ভৈরবিণী বৈরাগিণী নটারই চলা।
সেই চলার বেপে প্রাণ যেন বরণা-ধারার মতন বৃপে যুগে রূপ হইতে রূপান্তর
পরিপ্রহ করিয়া চলিয়া আগিতেছে—জন্মজনান্তরের রূপ ঘুচাইয়া ঘুচাইয়া এবং
ইহজন্মের ও আবালারের রূপ-ক্রপান্তরের মধ্য দিয়া প্রাণের যাত্রা।

कवि तमहे कामत्यार छानिया धारे कत्य महाकवि हहेता छाकान भारेमाएन। किंद धारे छान- धारारक स्कृत मिन्निर हहेता छोन-कूरण मध्य मध्य पन मान यन छान किंद्रा स्नामक हहेता छिन्छ हहेता, ननीत क्म रमन मने या गार छानि किंद्रा स्नामक हहेता छिन्छ हहेता, ननीत क्म रमन ननीत थानारक छानिए किंद्रा किंद्रा स्वामक स्वाम

ভুলদীয়---

And see the spangly gloom froth up and boil.

--Keats, The Pot of Basil, xli.

Yet all experience is an arch wherethro' Gleams that untravell'd world, whose margin fades For ever and for ever when I move

-Tennyson. Ulysses

এটব্য— বার্গর্মে।— বিনরে<u>ন্দ্র</u>নাবারণ সিংচ উত্তরা ১০৪০ অগ্রহাবন, ৪০৫ পৃষ্ঠা ।

১০ নম্বব

১৩২১ সালের মাঘ মাসেব সব্জপত্রেব ৬৬২ পৃষ্ঠায "উপহাব" শিবোনামে প্রথম প্রকাশিত হয়।

মানুষ সচেতন ভাবে পুণ্যলোভে ভগবান্কে যাহা সম্প্রদান কবে তাহা
আতি শীজ্ব নষ্ট হইয়া যায়। কিন্তু মানুষের সমগ্র চরিত্র ও জীবন যদি
পুণাময় হইয়া উঠে, যদি তাহার জীবনযাত্রাই ভগবানের নিদেশামুদ্ধপ হয়,
ভবে ভাহাব জীবনের প্রত্যেক কর্মে প্রত্যেক চিম্তায় প্রত্যেক ইচ্ছায়
ভগবানের আনন্দ ও সৃধ্যি হইবাব কথা পুণ্যলোভে যদি দান করি অথচ
আমার স্বভাব যদি দয়ালু না হয়, পুণ্যলোভে যদি পূজা কবি অথচ আমার
মনে যদি পূজাব ভাব স্থায়ী হইয়া না থাকে, তবে সেই-সব অফুনন পপ্তশ্রম
মাত্র। আর যদি মহানিবাণ-তন্ত্রের আদর্শ—যৎ যৎ কর্ম প্রক্রীত তৎ
ব্রশ্ববিসমর্পন্তেৎ, যদি গীতাব অফুশাসন—

य९ करत्रावि यम् अक्षानि वङ्क्रशिव मनानि य९।

ষৎ তপশুসি কৌক্ষেয় তৎ কুরন্ব মদ্ অর্পণ**ম্**॥"

জীবনে সত্য করিরা তুলিতে পারা যায়, তাহা হইলে ভগবান্ স্বয়ং প্রসাদ বিতরণ করেন আনম্পে আমার জীবনের সমস্ত কিছুকে গ্রহণ করিয়া।

রবীজনাথের মতে ধর্ম বিশেব কোনো অস্টানের বিষয় নয়, ইহা বাহিরের কাহারও নির্দেশের মুধাপেক্ষী নয়—গুরু মোলা বেদ কোরান কেনুক্রম বলিবে কেবল সেইটুকু পালন কবাতেই ধর্ম পর্যবসিত নয়। ইহা বন্ধি গ্রান্তি মুহুতে মানবের জীবনে প্রকাশ পান, যদি ইহা জীবনেরই অসারিহার্য কর হুট্রা উঠে ভবেই তাহা প্রকৃত ধর্মপদবাচ্য ও পরমেশ্বরের প্রীতিতে গ্রহণীয় হয়। এ সমক্ষে কবি বন্ধ পূর্বেই লিখিয়াছেন—

"আমরা বাইরের শাস্ত্র থেকে যে ধর্ম পাই দে কথনোই আমার ধর্ম হয়ে ওঠে না। তার
সলে কেবলমাত্র একটা অভ্যাদের যোগ জন্ম। ধর্মকে নিজের মধ্যে উদ্ভূত করে তোলাই
মান্ত্রের চিরজীবনের সাধনা। চরম বেদনার তাকে জন্মদান কর্তে হর, নাড়ার শোণিত দিরে
ভাকে প্রাণদান কর্তে হব, তার পরে জীবনে হথ পাই আর না পাই আননন্দে চরিতার্থ হবে
মর্ত্রে পাবি। যা মুখে বল্ছি, যা লোকেব মুখে শুনে প্রভাগ আর্ত্তি করছি, তা যে আমাদের
পক্ষে কত্তই মিখা। তা আমরা ব্রুচেই পারিনে। এদিকে আমাদের জীবন ভিতরে ভিতরে
নিজের সভোব মন্দিব প্রতিদিন একটি একটি ইট গড়ে গুল্ছে।

—ছিন্নপত্ৰ (কৃষ্টিয়া, ৫ই অক্টোবৰ ১৮৯৫) ৩৪০ পূচ।।

বিচাব

১১ নম্বব

এই কবিতাটি প্রথমে ১০১১ দালের সর্ক্রপত্রের মাব মানে পকাশিত হয়। ১ম স্ট্যাঞ্জী

রিপু উদ্ধাম হইরা উঠিলে পূর্ণকে আঞ্চন্ন ও মান করে পূর্ণের সৌন্দর্য উপলব্ধি না করিরা যাহাবা ভাঁহাকে খণ্ডিত করিয়া প্রচ্ছন্ন করে, তাহাবা ভাঁহাকে অপমান করে। কবি এই অপমানের বিচার প্রার্থনা করিতেছেন দেই পূর্ণাৎ পূর্ণের কাছে।

কিছ বিচার তো প্রার্থনা করিবার আগেই আরম্ভ হইয়া গিয়াছে।
বিচার তো নিরন্তর চলিতেছে। কল্ ষিতকে ক্রমাগত বিচার করিতেছে
বাহা পবিত্র, যাহা স্থকর—যে নিজেই অস্থলর সে কখনো কল্ ষিতের বিচার
করিতে পারে না। কল্ ষিতের বিচার চলে তাহার বিপবীত স্থলরের বারা
— মাতালকে বিচার করিতেছে শান্ত সপ্রবি নিরবজির ও অক্ষিত শুচিতাব
এবং সৌলর্বের আনর্শ মানমণ্ডে—সৌল্ব্য নিরেই কন্বর্বের বিশ্বরে অভিযোগ
ও বিচার। বৈতিক বিক্কার্বই নীতি ক্রংশের চরম বিচার। বখন বিধাত।
অনাচারী পানীকেরও জন্ত জাহার বিচারশালার স্থাতি পূপা পবিত্র সমীবণ
ও বিক্রেন্তর্বার আরোজন করিবা রাখেন, তখন সেই পানীরা এই কর্মার
প্রার্থনের সেই স্থলারকৈ আর অন্ধীকার করিবের গারে না।

বলাকা

২য় স্ট্রাঞ্জা

বেখানে স্থায় অধিকার সত্য স্বন্ধ নাই সেখানে নিজের লোতকে অবস্থাতিক বিরা তোলা চুরি—সেই চুরি যেখানেই করা হোক তাহা স্থানরের ভাণ্ডাবেই করা হইয়া থাকে; এবং সেই অনাচারের ফলে যিনি প্রেমে সব দিতে প্রস্তাত তাঁহাকে অপমান করা হয়, তথন প্রেমই আহত হয়, কারণ প্রেমের প্রতি অত্যাচার প্রেমেরই ব্যভিচার কবি অপমানের শান্তি প্রার্থনা করিতেছেন প্রেমিকের কাছে।

কিন্তু তাঁহার শান্তি তো না চাহিতেই চলিতেছে—অনাচারীর পাপের জন্ত যথন তাহার জননীর অঞ্চ করে, সতী স্থী স্বামীর অনাচারের লক্ষায় কুন্তিত হইয়া বিনিদ্র হইয়া সমস্ত রাত্রি প্রতীক্ষা করিয়া থাকে তাহার সংপথে প্রত্যাবর্তনের জন্ত, পাপীর অনাচারে হখন তাহার বন্ধুর হৃদয়ে ব্যথা লাগে, তথনই তো তাহার শান্তি ও বিচার চলিতে থাকে ।

७३ में गङ्गा

গে বেখানেই চুরি করুক না কেন, পরস্বাপতরণ মাত্রই পরমেশ্বরের ভাগুারে চুরি; কারণ,—

ষ্টশা বাস্তন্ ইমং দর্পণ হং কঞ্জগতাং জগং। . তেন তাজেন ভূজীধা ম' গৃধঃ কঞ্সিদ্ধনণ্।

এই অপরাধের গুরুত্ব এত অধিক গে কবি তাহার জন্ম কোনো শান্তি বা বিচার প্রার্থনা করিতে সাহস করিলেন না, তিনি সেই র্নুব্রের জন্ম মার্জনা প্রার্থনা করিলেন—তাহার এই অপরাধ রুদ্র দরা করিয়া মৃছিয়া ফেলুন, রুদ্রের দণ্ড ভোগ করিতে হইলে সে তো একেবারে পিষ্ট বিনিষ্ট হইয়া ঘাইবে।

কিন্তু ক্লন্তের কাছে তে প্রশ্রম নাই, যেখানে সংশোধনের কোনো পথ না থাকে সেথানে তিনি ধ্বংস করিয়া তাহার সংশোধন করেন। স্থান্দর যেমন অপ্রেমর বিচারক, এবং প্রেম যেমন অপ্রেমের বিচারক, তেমনি চোরকে বিচার করে তাহার প্রীভূত পাপ। নৈতিক সামঞ্জ্য নই হইলে রুদ্র জাগ্রত হইয়া জায়দণ্ড ধারণ করেন। মানুষ অপরের সহিত সম্পর্কে সভ্য ও তায়পরায়ণ হইয়া থাকিবে ইহাই হইল বিধাতার বিধান। সেই বিধান না মানিয়া যে সেই সামাজিক সামঞ্জ্য নই করিয়া জগতে বিশৃত্বলা আনম্বন করে, রুদ্র তাহার বিধার করেন এ বিচার লোকনিন্দার, নৈতিক ধিক্কারে, তাহার অধংপতনে।

ক্ষা সমন্ত আবর্জনা মার্জনা করেন, অপসারিত করেন, তিনি তাহা উপেকা করেন না, ক্ষা করেন না। মার্জনা মানেই ধ্বংস। পুরাতন অপসারিত না হইলে নৃতনের ক্ষান হয় না, এবং নৃতনের ক্ষানেই ক্ষাের মার্জনা প্রকাশ পায়।

নির্দয় গতির মধ্যে কবি ষেমন আনন্দ দর্শন করেন, নির্মম রুদ্রের ভিতবও তেমনি তিনি মার্জনা করুণা লক্ষ্য করেন।

তুলনীয়---

Throw away thy rod,
Throw away thy wrath,
O my God,
Take the gentle path!

Then let wrath remove,
Love will do the deed,
For with love
Stony hearts will bleed

-Herbert (17th cent), Discipline

প্রভীক্ষা

১২ নম্বৰ

ভগবানের কাছে অজ্ঞ দান পাই আমর। তাঁহার দরার দান আমরা আমাদের বন্ধনে পরিণত করি, নিজেদের আসজির ঘারা, তাঁহার দানের অনেক অর্মাদাও করি আমরা। কিন্তু যথন মান্তব ভগবানের দানের সহকে সচেতন হয়, তথন সেই অজ্ঞ বিপূল খণের বোঝা তাহার কাছে তুর্বহ চইয়া উঠে। ভগবানের কাছে অ্যাচিত দান এত পাওরা যায় যে সেই প্রশ্রের আমাদের চাওরাও ক্রমাগত বাড়িয়া চলে, চাওরার ও ভিক্কপনার আর অস্ত খাকে না। এই ভিক্ক জীবনে ক্লান্ত হইরা কবি নিজেকে ভগবানের হাতে সমর্শন করিছে চাহিতেছেন—আমি তোমাকে এইবার বিব এবং আমার সর্বস্ব বিরা ভোমার ধন করিছা থাকিরাও নিলিপ্ত নির্মণ করিছা, তেমনি আমি ক্রেরার হাতে নিজুকে ধারণ করিছা থাকিরাও নিলিপ্ত নির্মণ ক্রেরার আমি তার্যক্র চইরা

থাকিব—বাহা আমি তোমার হাত হইতে বরমাণ্য-রূপে পাইরাছি, তাহাই তোমাকে ফিরাইরা দিয়া তোমাকে জীবনে বরণ করিয়া লইব, আমাদের মালা-বদল হইয়া যাইবে।

১৩ নম্বর

পৌষ মাস যেন তপাষী—সে সর্ববিক্ত হইয়া পূর্ণতার সাধনা করে। সেই পৌষ মাসের তপোবনে হঠাৎ বসস্ত-কালের মাতাল বাতাস কেমন করিয়া প্রবেশ করিল—শীতের দিনে বসস্তের হাওয়া বহিয়া গেল। ইহাতে কবির মনে হইল যেন বার্ধ কারে দিনে মনের মধ্যে যৌবনের শ্বতির উদয় হইয়াছে। শীতের অন্তরে বেমন অমর হইয়া বসস্ত লুকাইয়া থাকে, তেমনি বার্ধ ক্যের জরার অন্তরালে যৌবন-শৃতি অমর হইয়া থাকে, এবং তাহা এক একটা সামান্ত উপলক্ষ্যে জাগ্রত হইয়া উঠে। এই বার্ধ ক্যে যে জার্ণতা তাহারও পরপারে আবার এক নবযৌবন অপেক্ষা করিয়া আছে, জন্ম-জন্মান্তরের যৌবনের মালা আমারই গলার চলিয়াছে ও চলিবে।

তুলনীর--পুরবা কাব্যে- বে বন বেদন-বেদনা রসে উচ্ছল আমার দিনগুলি।

২১ নম্বর

এই কবিতাটি যদিও ৮ই মাঘ ১৩২১ সালে লেখা হইরাছিল, তথাপি
ইহার রচনা হইরাছিল ২৯এ পৌষ কবির মনে। কবি এলাহাবাদ হইতে
কলিকাতার ফিরিতেছিলেন, সঙ্গে ছিলাম আমি। ২৯এ পৌষ রেল-গাড়িতে
তিনি ২০ নম্বরের কবিতাটি রচনা করেন। রেল-গাড়িতে আসিতে আসিতে
কবি দেখিলেন যে রেল-লাইনের হুই ধারে বুনো গাছে অসংখ্য ফুল ফুটিরা
উঠিয়াছে। সেই ফুলের সমারোহ দেখিয়া কবি আমাকে বলিলেন—দেখ,
কবে বসন্ত আসিবে ভাহার খবর লইরা এই-সব বসন্তের দৃত আসিয়া হাজির
ইইয়াছে। ইহারা ছ দিন বাদেই ঝরিয়া মরিয়া ঘাইবে, ইহাদের সঙ্গে
করেরের সাক্ষাৎ ঘটিবে না। কিন্ত ইহারা যে বসন্তের আগ্রমনী ভাহাদের
করেরের সাক্ষাৎ ঘটিবে না। কিন্ত ইহারা যে বসন্তের আগ্রমনী ভাহাদের

শ্বরণ করিয়া লইতেছে হাসিমুখেই। ইহাদের সম্বর্ধনা করিয়া আমার কবিতা লিখিতে ইচ্ছা হইতেছে।

আমি কবিকে বলিলাম—বেশ তো লিখুন না।

কবি হাসিরা বলিলেন—তুমি তো বলিলে, লিখুন না। কিন্তু আমি
লিখি কেমন করিরা। আমাদের দেশের বুনো ফুলের, পাধার গাছের—কি
কোনো নাম আছে । ইংলণ্ডের লোক অতি সামান্ত বুনো ঘাসের ফুলেরও নাম
রাখিয়া ফুলের সম্মান রাখিয়াছে, তাহারা প্রকৃতির দানের সমাদর করিয়াছে;
আর আমাদের বৈরাগ্যের দেশে সব কিছুতেই উদাসীনতা, যদি বা
কোনোটা ফুল সাহিত্যে স্থান পাইয়াছে, তাহার পরিচয় অভিধানে কেবলমাত্র প্রশা বিং' ছাড়া আর কিছু নয়। ইহাদের কোন্ নামে আমি পরিচয়
দিব আমার কবিতার ।

আমি বলিলাম—আপনি ইহাদের নাম রাখুন, এবং দেই নামেই ইহাদের পরিচয় অমর হইরা থাকিবে।

কবি হাসিরা বলিলেন—কিন্তু দে নাম কে বুঝিবে। আমার পণ্ডশ্রম ছইবে।

কবি কলিকাতায় ফিবিয়া সেই বসস্তের অগ্রদ্ত ফুলেদের সম্বর্ধনা করিয়া কবিতা লিখিলেন এবং আমাকে ডাকিয়া পাঠাইয়া শুনাইলেন। আমি হাসিয়া বলিলাম—ঘত সব বুনো অনামা ফুল আপনাব কবিতায় হইয়া গেল শাগল চাঁপা আৰ উন্মন্ত বকুল।

কবি হাসিয়া বলিলেন—কী আর করি বলো। লোকের চেনা নামেই সেই অচেনাদের চেনালাম।

৩৪ নম্বর

১ম স্ট্যাঞ্চা

"আমি আজি আমার মনের জানালার দিকে আপনাকে স্থাপন কর্ত্য— আমার মনকে বাইরের দিকে মেলে ধর্ত্য। তোমার চিত্ত ধেবানে কাজ কর্ছে সেধানে টুল্টি প্রদারিত কর্বার জন্তে তাকে যেন গুল্ত্য। আমি দিকে কি ভাষ্টি, আমার মিজের কি প্রথ চংগ আছে, ভার দিকে আমি আছে, আর তাকালুক দা, এক তথ্য অধ্তর কর্তে পার্ত্য বে বিশ্বে ছুমি আপন মনে কাজ কর্ছ। যখন নিক্রিয় থাকি তথনই তো ভোম্যুক্ ডাক শুন্তে পাই।

"আমি বাইরের দিকে তাকিয়ে কি দেগ্লুম? আমি আজ আমার
ক্লারের ডাককে বাইরে দেগুলুম। আমি যথন অস্তরে নিবিষ্ট হ'য়ে থাকি
তথন অস্কুডব কর্তে পারি যে তুমি আমার ডাক্ছ। তথন আমার মধ্যে
তোমার যে ডাক রয়েছে তা এদে পৌছার, তোমার-আমার মধ্যে যোগাযোগকে জান্তে পারি—বিশের মধ্যে তোমার কর্মচেষ্টাকে আমি অস্কুডব
কর্তে পারি। আজ আমি দেগুলুম ফুলের মধ্যে পাতার মদ্যে তোমার
ডাক রয়েছে। মনের জানালা খুলে দেখি যে তোমার ঐ অস্তরেব বাণী
চৈত্র মাসের সমন্ত পত্র-পুলোর মধ্যে বাইরে ছড়িয়ে আছে। তাই আজ
আমার আর কোনো কর্ম নেই, তোমার ডাক শুনে আমি কেবল বাইরের
দিকে তাকিয়ে রয়েছি। অস্তরেব ধ্যানের ছারা বাইরের ইন্সিয়ায়ভবের
দবজা বন্ধ ক'রে যে ডাক মনের মধ্যে শুন্তে চেইগ করি, আজু সেই তোমার
আহ্বান-বাণী যেন পাতায়-পাতায় ফুলে-ফুলে চারিদিকে দেখুলুম। আজ
তাই কেবল চেয়ে আছি—আমার দব কর্ম ঘ্চে গেছে।"

२म्र में गाञ्जा

"আমি আমার নিজের স্তরে যে গান গাই তা আবরণের মতো। কারণ, আমি গাইবার সময়ে তোমার বিশ্বরাগিণীকে আচ্ছন্ন ক'রে ফেলি। আজ আমার নিজের স্থারের সেই পদা তোমার গানের দিকে উঠে গেল, তোমার সঙ্গীত আমার কাছে প্রকাশিত হলো। আমার নিজের গান যথন বন্ধ হরেছে তথন আমি অফুভব কর্ছি—এই সকলের আলোই আমার নিজের গানের মতো। আজ আর আমার গানের দর্কার নেই, কারণ, প্রভাত-আকাশ আমারই গান প্রকাশ কর্ছে, কিন্তু সে গানেব স্বর্তী তোমার। তাই আমার নিজের স্থারের প্রয়োজন রইল না। আমারই সঙ্গীত সকালের আলো আর আকাশকে পূর্ণ ক'বে প্রকাশ পাছে।

"আৰু আমার মনে হলো আমারই প্রাণ তোমারই বিশে তান তুলেছে তোমার বিশ্বের সৌন্দর্বের আকালের গানের কোনো মানে থাকে না, যদি না আমার মন ভাতে সাড়া দের। আমার মনের আনন্দের সঙ্গে তাদের বোগ আছে। বিশের বা কিছু মধুর ও স্থানর তা আমারই চিত্তে ধ্বনিত ও প্রতিক্ষিত হচ্ছে ব'লেই তা মধুর ও ত্বর। বে-জ্বগৎ জামার চেতনার মধ্যে সাড়া না পার তা বোবা জ্বগং। তাই জামার গানের ত্বরগুলিকে আজ তোমার জ্বগং থেকে কিরে শিখে নিতে হবে। আমি আমার নিজের ত্বর ভূলে গিরে নিজের গানকে তোমার ত্বরে ধ্বনিত দেখ্ছি,—আর সে ত্বর তোমার কাছে শিখে নিছে।

"বিখে বা রমণীর, বা মধুর দেখ্ছি—বার থেকে রস উপভোগ কর্ছি— তারা চিত্তের বাইরে কোনো বিচ্ছিন্ন স্থান্তর বস্তু নয়। আমার মনের মধ্যে যে স্বাভাবিক শক্তি আছে তাই এ সবকে স্থানর কর্ছে। বিখের গাছ-পাল। দেখে যে ভালো লাগ্ছে দেই ভালো লাগাটাই হচ্ছে তার সৌন্দর্য।

"ফুলের মধ্যে আমারই গান আছে, কিন্তু সে গান কার হুরে বাজ্ছে । সে তো আমার নিজের হুরের সারে গা মা নর,—তা বে হুতন্ত একটি স্লরে পূর্ণ হ'বে উঠছে। বিশ্বের সৌন্দর্যে আমার যে আনন্দসন্তোগ, তাব মধো আমি আমাব মনেব গান পাছিছ, সে গান আমার নিজের বাঁধা সাবেগ্ণমা হুর নর—তা তোমার নিজেবই হুর। তাকেই আমি শিথে নিছিছ। অ'ম আনন্দিত না হলে আমার নিজেব গান হ'তেই পার্ত না।

"আমি যথন নিজ্ঞিয় থাকি তথনই বাইরের দিকে তাকিয়ে ভোমার শ্বন্ত লিন, কুলে পাতায় আমাব নামে তোমার দাককে দেখাতে পাই। আজ তাই গাইতে চেটা কর্ছি না—আমার খুলী মনকে বিবে মেলে দিয়েছ। আজ ফুলগুলি যে সঙ্গীতের মতো জেগে উঠেছে, এতে আমার হাত আছে—আমার চিত্তই তাদের মাধুর্য দান করেছে—অথচ সেই স্কর আমার নিজের নম্ম—সে গান ফুলেরই স্করে রচিত। আমার হদমকে মেলে দিয়ে আমার দানকে তোমার স্করে শ্বনে ভান্তে পাবার সৌভাগ্য লাভ কর্ছি।"

৩৫ নম্বর

"এই বে সকালে আকাশটি শিশিরে চকষক কর্ছে, ঝাউগাছগুলি গৌয়ে নগমল কুরুছ—এরা বাইরের জিনিস হ'লে আজ কি অন্তরের এত কাছে বাস্তে পার্ড ? এই রাউ আর আকাশ এমন নিবিক্ত জাবে আলার হানবকে ধূর্ব করেছে বে আমি অকুত্ব কর্জি বে এরা বেন মনের ব্যাপারেরই অংশ— বস্ত এরা কুজালাভের ব্যাপাত, নক। ভারণ, এরা বৃদ্ধি কুরুল ব্যাপিও বিনেই গড়া হ'ত তবে এমন ক'রে আমার মনের মধ্যে স্থান পেতে পার্ত না,— বাইরেই থেকে বেত, তাদের সঙ্গে আমার অসীম ব্যবধান থেকে বেত।

"আৰু বাউগাছের বালর আর শিশির-ছলছল আকাশ এমন নিবিড় ভাবে আমার মনকে পূর্ণ করেছে যে আমার মনে হচ্ছে এরা যেন আমার ছলরে পদ্মের মতো ফুটে উঠেছে। বাইরের বিশ্ব যেন আমার মনেরই সামগ্রী, যেন অকুল মানস-সরোবরে পদ্মের মতো ফুটে রয়েছে। আজ আমি এই গ্লোবালির মধ্যে বস্তবিশ্বেই কেবল স্থান পাইনি। আমি আজ জান্তে পার্সুম যে এই বিশ্বটি একটি বাণী, আর তাব মধ্যে আমি একটি বাণী, বিশ্বটি একটি গান, আর আমি তার মধ্যে একটি গান; এই বিশ্বর মহাপ্রাণের একটি প্রকাশ আমি, অন্ধকারের বৃক-ফাটা তারার মতো। আজ যেন আমার অন্বিচর্ম নেই আজ যেন আমি অন্ধকারের ভ্রদর বিদীর্ণ ক'রে উন্ধিত অমিশিথার মতো উজ্জ্বল আলোক। আজ বিশ্ব আমার খুব কাছে এনে দাঁড়িরেছে।"

৩৬ নম্বর

১৩২২ সালের কার্ত্তিক মাসের সব্জপত্রের ৪১৮ পৃষ্ঠার "বলাকা" শিরোনামে প্রথম প্রকাশিত হয়।

এই কবিতাটি কাশ্রীর শ্রীনগরে লেখা। কবি সন্ধ্যাবেলা বজরার ছাদে বিসিন্নাছিলেন। সেই সময়ে এক বাঁক বলাকা তাঁহার মাধার উপর দিয়া উড়িয়া গেল। তাহা দেখিয়া সঙ্গে সঙ্গে কবি-চিত্তে যে ভাবতরঙ্গ থেলিয়া গেল তাহাই এই কবিতার প্রবাদ পাইয়াছে। এই কবিতার বিষয় ও নাম হইতে সমগ্র বইরেরই নাম হইরাছে বলাকা। যাযাবর পাখীর বাঁক অনস্ত আকালপথে উড়িয়া যাইবার সময়ে কবিকে শ্বরণ করাইয়া দিয়া গেল যে জগতের সমস্ত কিছুই যাযাবর, গমিষ্ণু, প্রাণ হইতে জড়পদার্থ পর্যস্ত। যে গতিবেগ কবি আবাল্য অস্তরে অস্তরে অস্তর্গর করিয়া নানা কবিতায় নানা সময়ে প্রকাশ করিয়া আসিয়াছেন, সেই গতির বাণীই গুনাইয়া গেল বলাকার নিক্ষদেশ যাত্রা—এবং সেই জন্ত এই কবিতাটি হইরাছে নিধিল জগতের তীর্থবাত্রায় জর্মনান। করি এই দেশ ও কালের বাহিরে, লোক-লোকান্তরে ও কাল-ক্ষিত্রির নিজেকে প্রসারিত করিয়া বিষক্ষগতে যে চিরন্তন গতিক্রিয়া আছে

তাহাই অমৃত্য করিতেছেন—তাঁহার মন সেই বিবাগী হংসবলাকার যাত্রা দেথিয়া প্রাচীন ঋষির মতনই উদান্ত খরে বলিয়া উঠিয়াছে—'শোনো বিশ্বজন, শোনো অমৃত্তের পূত্রগণ, হেথা নর, অভ্য কোধা, অভ্য কোধা, অভ্য কোনোখানে সকলের যাত্রা করিয়া চলিতে হইবে। কাহারও কোধাও স্থির হইরা ছণিত হইরা গণ্ডীবদ্ধ হইরা সঙ্কীর্ণ-সীমায় বন্দী হইরা থাকিবার হকুম নাই।'

যায়াবর পাথীরা যেমন নিজের বছষত্নে গড়া পরিচিত ও আরামের বাসা ফেলিয়া অজ্ঞাত দেশে নিরুদ্ধেশ যাত্রা করে, নিখিল-প্রাণ তেমনি অস্তভব করে—

> সব ঠাই মোর ঘর আছে, আমি সেই ঘর মরি খুঁজিরা। — প্রবাসী

অতএৰ এখানে থামিলে চলিবে না—'আগে চল্ আগে চল্ ভাই।'

অন্ধকার নামিয়া আদিতেই বিলম নদীর বাঁকা জলধারা ঢাকা পড়িয়া গেল, তাহা দেখিয়া কবির মনে হইল যেন কেহ একথানি বাঁকা তলোয়ার কালো থাপের মধ্যে ভরিষা রাখিল। এই রকম উপমা এক ইংরেজ কবির কবিতাতে দেখা যায়, সেই কবি পাছাডের চূডাকে খাপ খোলা তলোয়ারের সহিত তুলনা করিয়াছেন—

I'm homesick for my hills again
My hills again!
To see above the Severn plain,
Unscabbarded against the sky
The blue high blade of Costwald lie;

-F. W. Hirvey (born 1888).

এবং বিম্বাপতি বলিয়াছেন—

রঅনি ছোটি হো দিবস বাচ়। জান কামদেব করবাল কাচ॥

শীভের অবদানে বসন্তের আগমনের স্চনা করিয়া ক্রমণ রজনী ছোট ও দিবস বড় চ্ইতেছে, যেন কামদেব কালো খাপের ভিতর হইতে চক্চকে তলোরার আকর্ষণ করিয়া বাহির করিতেছেন।

 লাগিল। দেই আছের অন্ধকার যেন স্টের অব্যক্ত গুন্রানো শব্দপুরের জমাট রূপ—সমস্ত প্রকৃতি যেন কথা কহিতে চাহিতেছে, কিন্তু স্বপ্নে যেমন কেবল অব্যক্ত একটা শব্দ হর, তেমনি যেন অব্যক্ত এক বাণী অন্ধকার ভরিয়া রহিয়াছে বলিয়া কবির মনে হইতে লাগিল।

সহসা বিহাৎ-ছটার স্থার হংসবলাকার পাখার শব্দ নিশুরু অরুকারের ভিতর দিয়া আকাশের বৃকে রেখা টানিয়া চলিয়া গেল। বডের মধাে যে গভির উন্মাদনা, সেই উন্মাদনার বশেই যেন বলাকা পক্ষবিস্তার করিয়া ছটিয়া চলিয়াছে। স্তর্কতা যেন তপস্থা করিতেছিল মৌনী হইয়া, শব্দময়ী অপ্সরা সেই পক্ষধননি তাহার মৌনতা স্তর্কতা ভক্ষ করিয়া দিয়া গেল এবং সেই অঘটন ঘটিতে দেখিয়া দেওলার-বন শিহবিয়া ভাবিতে লাগিল—এ কী! এ কী! এ কীগো

সেই পাথার শব্দে নিশ্চলেব অন্তরে চলার আকাজ্জা জাগিয়া উঠিল। কবি
নিশ্চলেরও অন্তরে অন্তরে চির-চঞ্চলের আবেগ অন্থতন করিতেছেন।
বৈশাথের মেঘ যেমন কালবৈশাথী ঝডের তাডনায় আকাশের এক প্রান্ত
হইতে অপর প্রান্তে ছুটিয়া চলে, তেমনি বাধাবদ্ধহারা হইরা ছুটিয়া যাইন্তে,
চাহে পর্বত—পর্বত অচল বলিয়া অভিহিত হইলেও তাহা বাস্তবিক অচল নহে,
পর্বত অতি ধীরে হইলেও মানবের অগোচরে অগ্রসর হইয়া চলে, তাহার ও বৃদ্ধি
আছে, কয় আছে, কত কত শিলা নির্মারে নদীতে থিসায়া পড়িয়া প্রবাহিত
হইরা দ্র-দ্রান্তে চলিয়াছে, শিলা ঘৃষ্ট হইরা হইরা পলিমাটিরূপে সমৃদ্রে
উপনীত হইতেছে, স্থতরাং পর্বতও চলিতেছে। গাছও চলিতেছে—কলের
মধ্যে স্থাদ ও স্বরস সঞ্চার করিয়া প্রাণীদের প্রলুদ্ধ করিতেছে, তাহাদের বীজ্ঞা
দেশ-দেশান্তরে ছড়াইয়া ফেলিতে, শালগাছের বীজের গায়ে পাথা গজায় দরে
উড়িয়া পড়িবার জন্ম, কার্পান ও শিম্ল গাছের বীজের গায়ে তৃলা জন্মায়
বীজগুলিকে নানা ছানে উড়াইয়া দিবার জন্ম—এমনি করিয়া এক দেশের
গাছে জন্ম দেশে ক্রমাগত যাত্রা করিয়া চলিয়াছে। সমন্ত বিশ্ব-চরাচর যেন
সন্ধার অক্ককারে করিকে করির কথার প্রতিধনি করিয়া বলিতেছে—

कामि हक्क रह, आपि सुम्रवद्ग शिवामी ! —समूद ।

সেই হংস্বলাকার পাধার বাণী নিখিলের প্রাণে প্রতিধানিত হইতে
"বাদিন—'হেখা নয়, হেখা নয়, আর কোন্থানে।'

ভ্ৰমতার আবরণ নারাজালের মন্তন গুৰুতার আন্তানিক পতির আবেপকে
কবির অপোচর করিরা রাধিরাছিল, দেই পাধা-বিবালী পাধীরা বেন দেই
আবরণ উদ্ঘটন করিরা দিরা গেল। তখন কবি দেখিতে পাইলেন—মাটির
উপরে হণদল বর্ধিত হইডেছে, বিজ্ত হইডেছে, ইহা বেন ভাহাদের উদিরা
চলিবারই প্ররান। নাটির নীচে কত কোটি কোটি লক্ষ্ণ লক্ষ্ণ বীজ তাহাদের
আত্ম উদ্গত করিরা তুলিবার প্ররাশ পাইতেছে, তাহাও বেন ভাহাদের ভানা
মেলিরা উদ্যা চলিবার প্ররাশ। পর্বত চলিরাছে, অরণা বীপ হইতে বীপান্তরে
বাত্রা করিয়া চলিরাছে, নক্ষত্রপুত্রও আবর্ভিত হইতে হইতে কোন্ অজ্ঞান
ইইতে অজ্ঞানার দিকে গড়াইরা চলিরাছে—সেই অ্ঞানাকে না জানিতে পারার
বিরহ-বেদনার সমস্ত আকাশ ক্রন্দলী হইরা উঠিরাছে, নক্ষত্রগুলি বেন সেই
কালো-মেরের কপোলে আলোকমর অক্ষবিল বিরহা পড়িরাছে। তুলনীয়—

·····অনিলাম নক্ষত্রের রজ্ঞে রজ্ঞে বাবে আকাশের বিপুল ক্রন্সন, ·· · · —পুরবী, সমুন্ত ।

মানুবের সমত্ত আকাজ্ঞা কামনা ভাবনা লোকালরের তীরে তাঁরে এক শতালী হইতে অন্ত শতালীতে, এক বুগ হইতে অন্ত বুগে দলে দলে ঘূরিয়া বেড়াইতেছে। সমত্ত বিশ্বলক্তি ও বিশ্বচেষ্টা যেন আকুল শ্বরে চীৎকার করিয়া শ্বনিতেছে—এখানে থামিলে চলিবে না—চলো, চলো, চলো—চর্বৈবেতি! চ্ট্রেবেতি!

এই নিরস্তর চলিবার আহ্বান আমাদের ভারতবর্ষে বছ প্রাচীন বুগে ক্ষবিত হইয়াছিল, আবার এই নবীন বুগে স্থবির জাতিকে চলার বাণী শুনাইলেন ধবি রবীক্রনাথ। প্রাচীন ধবিরা বলিয়াছিলেন—

নানা আন্তার শ্রীব্ অন্তাতি রোহিত শুশ্রম।
পাপোন্যদ্বরোলনঃ ইন্স ইচ্চরতঃ সথা ।
—চক্রৈবেভি, চক্রবেভি ।

হে বোৰিত, চিরকানই গুনিরা আসিতেছি বে-বাজি চলিতে চলিতে প্রাথ হইরাছে জ্বাহাঁৰ আর জীব ইয়ভা নাকে না। প্রেট্ট জনও যদি গুইরা পড়িয়া থাকে তথে গ্রুম কুল্ফ হইরা বার। যে চলিতেছে স্বরুং দেবজা ভাষার স্থা ইন্টিই ভাষার সামে সমে পারকান। অভ্যান হে সোহিত, থারির হও, বারির ইন্টিইটি ভাষার সামে সমে পারকান। অভ্যান হে সোহিত, থারির হও, বারির পুলিলো চরতো অতে ভূক্র আরা ফাএরি:।
শেরেণ্ড সর্বে পাণ্যালঃ এবেল প্রপথ হতাঃ। —চরৈবেতি, চরৈবেডি!
বে বিচরণ করে তাহার প্রতিপদক্ষেপে পূলা প্রকৃতিত হওয়ায় তাহার পথ
স্থমমামর হইয়া উঠে, তাহার আজা নিত্য বৃহৎ হইতে থাকে এবং দে
নিত্যই বৃহত্তের ফললাভ করে। যে পথ সন্মুথে নিত্য উন্মুক্ত তাহাতে যে
বিচরণ করে, তাহার সকল পাপ প্রমের দ্বারা হতবীর্য হইয়া মরিয়া মরিয়া
তাহার পথের উপর শুইয়া পড়ে। অত্থব চলো, চলো।

চরন্ বৈ মধু বিশাতি চরন্ স্বাহ্ন্ উদ্বর্ধ।

স্বাহ্ন প্রান্ত বেলা ন তল্লাতে চরন। —চরৈবেতি চরৈবেতি।
বে চলিতে থাকে দে মধু লাভ করে, যে চলে সেই অমৃতময় স্বাহ্ ফল লাভ
করে। এ দেখ স্থর্বের কী দীপ্ত মহিমা—দে যে চলিতে চলিতে কথনো

করে। ঐ দেখ স্থের কী দীপ্ত মহিমা---দে যে চলিতে চলিতে তক্সবিষ্ট হয় না। অতএব চলো, চলো।

তুলনীয়---

Not there not there, my child!—Mrs Hemans.
You road, I enter upon and look around,
I believe you are not all that is here,
I believe that much unseen is also here
Allons! whoever you are, come, travel with me!
Travelling with me you find what never tires.

Allons! we must not stop here,

Alions! the road is before us!

--Walt Whitman, The Song of the Open Road

৩৭ নম্বর

এই কবিভাটি ইউরোপের মহাবৃদ্ধ শ্বরণ করিরা লেখা বলিরা মনে হয়।
বখন মরণে মরণে আলিজন লাগিরাছে, মৃত্যুর গর্জন শোনা বাইতেছে,
ছখন কবি অভ্তর করিতেছেন বে এই প্রালম্ব-তাওবের ভিতর দিরা কম্ম মৃত্যুকে স্কৃত্তি করিবার আয়োজন করিতেছেন—মিখ্যা অভার পাশের বারা বখন সভ্য আছের হইরা গিরাছে, তখন সেই সভ্যকে মানি-নির্ভি করিবার আছু এই আরোজন। এই বিজ্ঞোতের ভিতর বইতেই নব্যুক্তর উবার অভ্যাদর হইবে—অতএব কাহারও নিশ্চেট্ট হইরা থাকিলে চলিবে না, সকলকে চেটা করিয়া অগ্রসর হইরা নৃতনকে সত্যাকে স্থায়কে আবাহন করিয়া লইতে হইবে। এই বে বিশ্বজ্ঞাড়া সংখাত জাগিয়াছে, এই বে ক্রন্সের রোধ প্রদীপ্ত হইরা উঠিয়াছে, এ কাহার দোবে হইয়াছে তাহা নির্ণয় করিবার আবশুক নাই। বিশ্বে বদি কোখাও একটু পাপ অস্তার অসত্য প্রবল লইয়া উঠে তাহার জন্ত বিশ্বাসী সকল নরনারী দারী, এবং তাহার ফলভাগীও হইতে হর সকলকে—

এ আৰার এ ভোষার পাপ ৷

বে পাপের ভার এডদিন নানা স্থানে নানা জনে জমাইরা তুলিতেছিল, ভাহারই আঘাতে কদ্র আজ জাগ্রত হইরাছেন—দেবতার ও মানবভাব অপমান ডিনি সম্ভ করিতে পারিতেছেন না। এই মৃত্যুর সমূথে দাঁডাইরা আমাদের সকলকে বলিতে হইবে—

তোরে নাহি করি ভন,
এ সংসারে প্রতিদিন তোরে করিরাছি ধর।
তোর চেরে আমি সত্য—এ বিশাসে প্রাণ দিব, দেপ।
শান্তি সত্য, শিব সত্য, সত্য সেই চিরস্তন এক।

এই মৃত্যুর অন্তরে প্রবেশ করিয়া অমৃত আহরণ করিতে হইবে, এই শিশ্যার বাধা ভেদ করিয়া সত্যকে আবিদার করিতে হইবে, এই পাপের পরে নামিয়া পূণ্যপত্তর উদ্ধার করিতে হইবে। এই যে কত দেশের কত বীরহদর শোণিত দিয়া পাপ অক্সায় ক্ষালন করিতে চাহিতেছে, এই যে কত মাডার ও স্ত্রীর অক্স ঝরিতেছে, ইহাতে কি পাপ দূর হইয়া পৃথিবীতে ন্তন পর্ণরাল্য প্রতিষ্ঠিত হইবে না ? এই যে এত ছঃখ ও আত্মবিলিদান, ইহার জন্ম তো বিশেশর বিশ্ববাসীর নিকট ঋণী হইতেছেন, তাঁহাকে তো পূণ্য প্রতিষ্ঠা করিয়া এই ঋণ শোধ করিতে হইবে। রাত্রি যেমন তপতা করিয়া দিবসকে ডাকিয়া আনে, তেমনি এই পাপের প্রায়ন্টিছ দারা পূণ্যকে আহ্মান করিয়া আনিতে হইবে। মাছ্ম বর্ধন মৃত্যুক্তে বরণ করিয়া মানহতার ক্ষালার উধেন উটিডেছে তখন তো সেই মানহতার মধ্যে নেবেশের অন্তর্গালী ক্ষাৰা ইট্রা ফুটিয়া উটিবে, সে বিষয়ে কোনো সংশ্র ক্ষির স্থানেকটার স্থান হট্রা ফুটিয়া উটিবে, সে বিষয়ে কোনো সংশ্র ক্ষির

৩৮ নম্বর

ক্ষতিটি শিলাইনতে নেথা। ১৩২২ সালের অগ্রহায়ণ মাসের সর্জপত্তে "নূতন বসন" শিরোনামে ইহা প্রথম প্রকাশিত হয়।

কবি কাহারও নিকট হইতে একথানি নৃতন বসন উপহার পাইরাছিলেন।
সেই নৃতন বস্ত্র পরিধান করিয়া কবির মনে হইল—আমার সর্বদেহে আমার
অন্তরে আমার চিন্তার ভাবনার আমার প্রেমে নৃতনত্বের আকাজ্ঞার তো
অন্ত নাই, সেই নৃতনত্বের আকাজ্ঞা ধেন আজ নৃতন বস্তরূপে আমার সর্বান্ধ
পরিবেষ্টন করিয়া ধরিয়াছে। গান যেমন বাঁধা স্থর অভিক্রম করিয়া নৃতন
নৃতন তানের উচ্ছাসে আত্মপ্রকাশ করিতে থাকে, তেমনি আমার দেহ
নৃতন কাপড় পাইয়া প্রতিদিনের বাঁধা গণ্ডীকে উত্তীর্ণ হইয়া গেল।

ষিনি চিরন্তন, তাঁহার কাছে আমার ক্ষণে ক্ষণে নৃতন হইয়া উপস্থিত হইতে ইচ্ছা হয়। তাই আজ এই নৃতন বসন পরিধান করিয়া আপনাকে যেন এই প্রথম তাঁহার হাতে সমর্পন করিলাম বলিয়া মনে হইতেছে।

আমার হৃদয়ের প্রেমের রং অফুরস্ত—তবু তাহার কৃপ্তি নাই, সে আরো আরো আরো চায়। সেই রঙের নেশান্তেই তো নানা রঙের বসন পরিয়া যিনি সকল রঙের রঙ্গী তাঁহার সঙ্গে মিলন ঘটাইয়া তুলিতে চাই।

নীল রং অনস্তের অকৃলের বর্ণ—তাই আকাশ নীল, সম্দ্র নীল, আয়াদের ভগবান নীলমণি। আজ্ব আমি সেই নীলবর্ণের বদন পরিধান করিয়া অনস্তের অনস্ততাকে আমার বদনের বর্ণে প্রতিফলিত দেখিতেছি। নদীর এপার সব্লু, কিন্তু যে পার অজ্বানা অচেনা সেই দ্রের পারে নীলের পাড়—

দূরাদ্ অয়শ্চক্রনিভক্ত তথী

আভাতি বেলা লবণাস্রাশে: !

আজ এই নীল বসন গারে দিয়া আমার দেহে মনে দ্রের ডাক লাগিয়াছে—
যাহা আয়ত্ত তাহা ত্যাগ করিয়া অনায়ত্তকে ধরিতে যাত্রা করিতে হইবে,
যেমন করিয়া দিশাহারা হইয়া ছুটিয়া চলে বৃষ্টিভরা ঈশান কোণের নব
মেষ। যে দিক্ ইইতে মনোহরণ কালের বাঁদী বাজিতেছে সেই দিকে কুল
ছাড়িয়া নিরুদ্দেশ-যাত্রার জন্ত মন ব্যাকুল হইয়া উঠিয়াছে।

৩৯ নম্বর

মহাক্বি শেক্স্পীয়ারের মৃত্যুর তিন শত বংসর পরের শ্বৃতিবার্বিক উপলক্ষ্যে লিখিত এই কবিতাটি। ১৩২২ সালের পৌষ মাসের সব্রুপত্তের ৬০৫ পৃষ্ঠার শেক্স্পিরর' বিরোনামে ইছা প্রকাশিত হইগ্নাছিল।

৪০ নম্বর

মাসুবের অভিজ্ঞতার ধারা তাহার সমস্ত ইঞ্জিয়াসূভূতির ভিতরে ও চেতনার ভিতরে সঞ্চিত হইয়া থাকে; মাতুর পুরুষাস্থ্রুকে ক্ষম-ক্ষমান্তরের বে-সব অভিজ্ঞতা লাভ করিরা জীবনযাত্রা নির্বাহ করিরা চলিয়াছে, তাহারই পুঞ্জীভূত ফল তাহার বর্তমানের বোধ ও অফুভবটুকু। মাসুষ যাহা অফ্ভব করে, তাহার অন্তরালে তাহার অবচেতনার মধ্যে কত কিছু ক্ষমা হইয়া রহিয়া যায় যাহার সম্পূর্ণ সন্ধান জানা যায় না। এই অফুভবের মধ্যে তাহার কত লক্ষ পূর্বপুরুষের এবং কত লক্ষ বংসরের সঞ্চয় আছে কে তাহার ইয়ন্তা করিতে পারে ?

৪১ নম্বর

ৰাহ্ৰৰ সমস্ত জীবন ভরিরা এবং জন্ম-জন্মান্তরে প্রুমান্থক্রমে বাহা অন্তব করে, তাহাই তাহার বর্তমান অন্তবে রূপ পার, এবং সেই বছ্ৰ্গৃসঞ্চিত আনন্দ তাহার মূহুর্তের অন্তভ্তির মধ্যে জাগিয়া উঠে। তাই সামান্তে তাহার এত আনন্দ, তুদ্ধ বস্ততে এত সৌন্দর্য সে অন্তব করে। কবি এই আনন্দ-বেদনা প্রকাশ করিবার সহল বানী অবেষণ করিয়া ব্যাকৃল হইয়াছেন, কেমন করিয়া এই মূহুর্তের মধ্যে অনন্তের আবিভাবিকে তিনি ব্যক্ত করিতে পারিবেন।

৪৩ নম্বর

क्रमेशन् मास्ट्रिय क्षम्य बाद्य वाद्य वाद्य नामा क्रूजात चानित्रा क्षेत्रिक वन-नक्न त्रीक्ट्रिय मधा वित्रा किनि ज्यामात्मय ध्याण ज्यानं क्षित्रक हार्ट्सन, नक्न द्वाद्यय मरश केंग्निय क्षमान, क्षम्यमा वर्ण निक्षा क्ष्यं क्ष्यं मक्ट्रिय मधा वित्र केंग्निय ज्यानिय ज्यामारम्य क्षम्य-बाद्य । क्षित्र ज्यामता क्षम्यि मृत् द्वा मरगाद्यव সঙ্কীর্ণতার মধ্যে আপনাকে বন্ধ করিয়া তাঁহার আগমনকে উপেক্ষা করি।
তার পরে যথন সব কর্মাবসানে রজনীর অন্ধকারে একা বসিয়া নিজেকে
একাকী বোধ হয়, তথন মনে পড়ে তিনি কত মাধুর্যের মধ্য দিয়া কত রূপ-রুসের
মধ্য দিয়া আমাদের কাছে আদিয়া বার্থ হইয়া ফিরিয়া গিয়াছেন, আমরা তাঁহার
অভ্যর্পনা করি নাই। কিন্তু সেই ফিরিয়া যাওয়া তো নিরবছিয় বার্থতা নহে,
সেই ফিরাইয়া দেওয়াই আমাদের মনে পড়াইয়া দিবে যে আমাদের কাছে
তিনি অভিসারে আসিয়াছিলেন, এবং তিনি ফিরিয়া গেলেও আবার আসেন।

৪৫ নম্বর

হংশ আদিয়া থাকে, আদিয়াছে, তাহাতে ভাবনা কি? এই জগতের তো
সবই নম্মর, সুথ যদি ভাঙিয়া গিয়া থাকে, তবে হংগই কি চিরস্থায়ী হইবে?
সমস্তই কেবল মরিয়া মরিয়া চলিয়াছে—লৈশন মরিয়া কৈশোর, কৈশোর
মরিয়া যৌবন, আবার যৌবন মরিয়া বার্ধ কা আদে,—এই এক দেহেই
কতবার মৃত্যু ঘটে। এই জীবনে কত সুথ আদিয়াছে, গিয়াছে; কত হংশ
আদিয়াছে, তাহাও গিয়াছে। তবে এই হংগই কি বক্ষে চাপিয়া বিরাজ
করিবে? মাসুষের সুথ হংগ ভয় ভাবনা সমস্ত মিলাইয়া নিরাকারই তো
আকার গ্রহণ করিতে করিতে চলিতেছেন। অতএব হে জীবনপথের পথিক,
হে অনস্ত তীর্থবাত্রী, চলার আনন্দে গান গাহিয়া চলো, পথের ক্রেশ স্বীকার না
করিলে পথের প্রান্তে গম্য স্থানে উপনীত হইবে কেমন করিয়া? এই জীবনের
অবসানও নৃতন জীবনের দিকে যাত্রা, সেধানেও আবার নৃতন স্থপ নৃতন প্রেম
প্রতীক্ষা করিতেছে। অতএব ভয়-ভাবনা কিসের? আমি কবি হইয়া
জিয়িয়াছিলাম। সেই আনন্দ আমার পরজন্মের সমস্ত আনন্দে সঞ্চারিত হইয়া
যাইবে। যে জীবনদেবতা এই জন্মে আনন্দ লাভ করিলেন, তিনিই তো
জ্মান্তবের সাথী হইয়া থাকিবেন। সে তো অধর—তাই

তারে নিমে হ'ল না ষর বাঁধা, গথে পথেই নিত্য তারে নাধা এমনি ক'রে আসা-ঘাওগার ভোরে প্রেমেরি জাল বোনো---

চিরকাল চলিতে থাকিবে।

৪৬ নম্বর

এই কবিভাটি প্রথমে ১৩২৩ সালের বৈশাধ মাসের সব্রূপত্তের প্রথম পৃষ্ঠার "নববর্ষের আশীর্কাদ" শিরোনামে প্রকাশিত হয় ।

कवि भूत्राजनत्क कथाना जामन निष्ठ চार्टन नाहे। शोवतन यथन 'कि छ কোমল' রচনা করেন, তথনই তিনি বলিয়াছিলেন—'হেখা হ'তে যাও পুরাতন, হেখার নৃতন খেলা আরম্ভ হয়েছে।' সর্প যেমন তাহার জার্ণ নির্মোক মোচন করিয়া নব কলেবর ধারণ করে, তেমনি মানুষকে দমস্ত জীর্ণতা পরিহার করিয়া ছাবের তপস্থা করিয়া অমর হইতে হইবে। কাল যেমন ক্রমাগত বর্তমান হইরা চলিয়াছে, তেমনি মানবকেও অনস্ত যাত্রাপথে চলিতে হইবে-পথের भूना शास्त्र यनि नार्श, भरथत काँछ। भारत यनि विँ स, भरथत मर्भ यनि कना তুলিয়া পথরোধ করে, তবু চলিতে হইবে। যে তীর্থবাত্রী তাহাব জন্ত আরাম নহে, সে তো বরের মমতার বন্ধ হইয়া থাকিলে তাহার তীর্থে পৌছানোট ছইবে না। এই ত্রুথ সহু করিয়া চলিতে পারার মধ্যেই তীর্থের মাহাত্মা, পুণ্যের আগ্রহ প্রকাশ পার; এই হঃখই তীর্থরাজের স্থানল সম্প্রদান। চঃখ विद्वाध विभन् मृजात त्रात्मेर व्यजीस्मत व्यविकार वस मानवसीयतः। त्रहे **সমস্তকে স্বীকার করিয়া যাত্রা করিয়া চলিতে হইবে নৃতনের অভিসারে।** ষাহা কিছু কুদংস্কার আছে ভাগ ত্যাগ করিয়া, যাহা কিছু আদজ্জি আছে ভাহা পরিহার করিয়া সেই অচেনা কাগুরীকে অবলম্বন করিতে হইবে। তাহা হইলে পুরাতনের মোহ দ্র হইয়া নৃতনের আলোক উদ্ভাসিত হইয়া फेंद्रित्, वाजीब कीवन वक्र बहेटव ।

১৪ নম্বর

ৰাধবীনতাৰ কুল ফুটিবাছে। তাহা দেখিৱা কবি ভাবিতেছেন—

"এই আনশ ছবি বুগবুগান্তর প্রজান ছিল, আন্ত্র বিকাশিত ছল। বে সভা অপ্রকাশিক ছিল, আন্ত্র ডা রূপ খারে কৃটে উঠেছে। বহিঃপ্রকৃতিতে এই সাধানি বিকাশ বেসন সভা যেননি আন্ত্র আমার করে বে আনশ্ব ক্রাপ্রত হ'ল, সেও ডেগনি সভা। "একটি আ মার বাহিরে এবঃ অন্তটি আমার খারতের; ভাই বলে তা'রা গরশারের ভূলনার কেটবা বেশি কেটবা ক্র-লভা ন র। বাস্ত্রের বে আন্তর্কথারা আহি ক্রিভাল প্রকাশ কর্গান তা ভা একটি ভাবে আনারই ক্রাপ্র বেকে উর্ভুত দরা। স্থাবন্দ শিল্পী কারো ভা ভিতে বে গৌলার্ককে রুগদান করে, বে আনন্দকে কৃটিরে তোলে, তা তো দেই রসমাধ্য বা মাকুবের কত প্রেমে অলক্ষিত হরে কাজ কর্ছিল।—মাকুবের সেই অব্যক্ত উপ্তম কবি বা শিল্পার রচনার রচিত হরে উঠে। এই রচিত হরে ওঠ বার তপস্তা গৃঢ়ভাবে সকল মাকুবের মনের ভিতরে আছে। সকল মাকুবেরই মন আপনার বিচিত্র ভাবোজ্ঞমকে প্রকাশ কর্বার ইচ্ছা কর্ছে। সেই সকলের ইচ্ছা কণে কণে হানে হানে কলা লাভ ক'বে সকল হরে উঠছে। আমাধ্যের মনে যে-সকল ইচ্ছার উপ্তম, আনন্দের উপ্তম, অর্থাচ্ছ হরে আন্দোলিত হচ্ছে, তা'রাই হচ্ছে মাকুবের সকল স্প্রের মূল-শক্তি। তা'রাই চিত্রীর তুলিকার, কবির লেগনীতে, মৃতিকারের ক্লোমনীবন্তে প্রকাশিত হতে থাকে।

कारनक ममत्त्र 'वमल-कानटन এकरूँ शामि' कामारणत मटन वा कानम्म कानित्त पित्र वाह, মনে হয়, হয়তো এ কোনো দিন বাহিরে কিছুতে বিক্লিত হয়ে উঠ্বে না। কিন্তু মনে আশা আছে যে তা বার্থ হয়ে ধায় না। লোহিতসাগর দিয়ে যেতে যেতে আমি একবার আক্র रुवां छ (मः अहिनूम। उथन मटन इरविहन य এই अपूर्व वर्गक्र होत्र नमारवन्यक र्डी धरत রাখ্তে পারলুম না, ভাব্লুম যে বাইরের প্রকৃতির রূপের উচ্ছাস আমার মনে ছায়। দিয়ে চলে গেল, দে ছায়াও তো মিলিয়ে থানে। কিন্ত এই যে অমৃতমূহুঠে দৌন্দর্যে ডুব দিলুম, এর শেষ পরিণতি অপ্রকাশের বেদনার মধ্যে নয়--এই অনুভূতি আমার অন্তরকোকে আপন জারগা ক'রে নিলে। সেই আমার অপ্তরলোক সকল মানুদের অস্তরলোকের সামিল। সেইখানে এই-সমস্ত ব্যক্তিগত অমুভূতির প্রকাশ ও লয় আকাশে নেষের প্রকাশ ও লয়, অরণ্যে মাধ্বীর বিকাশ ও ঝ'রে পড়ার মতোই স্ষ্টেলীলার আন্দোলন হচ্ছে বাহির থেকে অন্তরে, আবার অন্তর থেকে বাহিরে। আজ আনার চিত্তে যে আনন্দ দেখা দিয়েছে দে যদিও আমার চিত্তের মধ্যেই আছে, তবু তার মধ্যে একটি বেরিয়ে আস্বার প্রয়াদ আছে। তাই দে ধান্ধ। দিচেছ্ ক্লভ্বারে। সমস্ত মামুধেন মন জুড়ে এই ধান্ধাটি নিরন্তর চল্ছে। সেই थाकार्षि २८७६ द्वितः वान्तात्र रेष्ट्रा । रेष्ट्रा नाना छेपनत्का काश्व ३ २८७६ द'रमरे मानवममारक স্টির কাজ চল্ছে। এর প্রেরণা, কুধাতৃকার মতো আবশুকের প্রেরণা নয়, কেবলমাত্র প্রকাশের প্রেরণা। অতএব লোহিতসমূত্রে আকাশের যে বর্ণভঙ্গিমা আমার মনের মধ্যে একদিন আনন্দের ঢেউ হরে উঠেছিল, সেই ঢেউ নিশ্চর আমার রচনার দাধনায় বারবার ঠেলা দিয়েছে। আজ বসত্তে বাইরে যে মাধবীনঞ্জরী আমার অন্তরে আনন্দক্ষণ নিয়েছে সে আমার মনের দাধারণ অকাশ চেপ্তার মধ্যে একটি শক্তিক্সপে রয়ে গেল—আমার নানা গানের নানা মুরে তার শোলা লাগ্বে--আমি কি ডা জান্তে পার্ব ?"

বিশ্বপ্রকৃতির শক্তি যেমন ফুল হইয়া বিকশিত হয়, অন্তর-প্রকৃতির শক্তিও তেমনি আনন্দস্টির রূপ ধরিয়া প্রকাশ পায়।

১৬ নম্বর

১৩২২ সালের ফাস্কন মাসের সব্স্থপত্রের ৬৮৭ পৃষ্ঠার ইছা "রূপ" শিরো-নামে প্রথম প্রকাশিত হয়।

গতি যে কেবল গতিতে পর্যবিদিত থাকিতে চায় না, তাহার লক্ষ্য যে সকল সময়েই অব্যক্ত হইতে ব্যক্ত হওয়া, নিরাকার হইতে সাকার হওয়া, এই পরম সত্যটি এই কবিভার প্রতিপাল্য। এই কবিভাটিতে একটি গভীর দার্শনিক তত্ত্ব নিহিত আছে।

গতিতে বস্তুর দ্ধপ ফুটিয়া উঠে, আর স্থিতিতে বস্তুর **স্থু**প জমা হইয়া একাকার হইয়া যায়। 'চঞ্চলা' কবিতার ব্যাখ্যা দ্রষ্টব্য।

'চারিদিকে বিশের বস্তুরাশি বেন হাহা ক'রে হেসে উঠেছে। গুলোতে বালিতে তাদের করতালি হচ্ছে, তারা উদ্মন্তভাবে নৃত্য কবছে। কন্তব সংঘাতে বস্তুর যে লীলা হচ্ছে, যেন তারই কোলাহল শোনা যাচেছ। চারিদিকে রূপের মন্ততা। রূপ বস্তুর আকারে গতি পেরেছে, তার স্বীত শোনা যাচেছ।

চারিদিকে বল্প-পুঞ্জ সন্তা ধারণ ক'রে প্রকাশের মন্ততার মেতে উঠেছে। তাই দেপে আমার মন তাদের খেলার সাধী হতে চার। বস্তুর দল আমার ভাবনা-কামনাকে বল্ছে, 'আমাদের খেলার সঙ্গী হও—কক্ষ্যগোচর হও, ধূলাবালির মধ্যে রূপ ধারণ করো।'

মাসুবের বে অব্যক্ত ব্যার ছল তারা বেন কুল পেলে বেঁচে যায়। তারা গ্রহণাশকে পেরিয়ে বস্তুর ডাঙার স্ক্টির সঙ্গে মিল্ডে চার। তারা বেন মক্জমান প্রাণীর মতো অতলের শীচ থেকে ইটকাঠের মুষ্টী দিয়ে ধরণী আঁক্ড়ে ডাঙার উঠ্তে চাব।

এমনি ক'বে মাসুবের চিতের চিন্তাগুলি বাইরে কঠিন আকার ধারণ কর্ছে। মাসুবের শহরগুলি আর কিছু নর, ভারা মাসুবের সেই ভাবনা ও কামনারই ব্যক্ত প্রকাশ। কোনো শহর কেবল কতকগুলি বাড়ীর সমষ্টি নয়। মাসুবের বে-ম্পর্ণাতীত প্রাান, চেষ্টা ও আঞাজ্বা ক্লপ-ক্লপতে স্পাষ্ট হতে চাচেছ, তারই ঘেন লোহা-লকড়ের ভিতর দিয়ে এই শহরে স্পর্ণানীচর হয়েছে। দিলীনগারীতে কত সম্রাট্ এসেছে, আবার তারা চ'লে গেছে, ম'রে গেছে। কিড দিলীতে ভাতের ভাবনা, ইচছা, প্রভাগ কালে কালে শুরে শুরে অ'লে উঠে ইটকাঠের মধ্যে আপমাকে প্রকাশ ক'রে এই মহামগারী তৈরী ক'রে গেছে। চিন্তের বেক্লাকে বাদ দিলে ক্লপ্রতি কেবল মাত্র খোলস হয়ে দাঁড়োর; চিন্তের বে কটিন চেষ্টা নিজেকে ক্লপ দিবার প্রবাস প্রেছে, সেই চেষ্টাতেই নগর নগরী হয়েছে।

বে-স্কল চেষ্টা রূপ থারণ কর্তে পার্গ, তাবের তো আছ দেখ্ছি, কিন্ত বেশুলি এবনো ব্যক্ত ব্যক্তি, তারাও বে র'য়ে গেছে। অতীতের পূর্বণিতামহদের কামনা, থান-ডপভা কি শ্রু হতে গেছে? না, তারা বে শৃষ্টে লুভে কানাকানি ক'রে কিন্তে, তারা বল্ছে, 'আমারের বাণী পোলে আপদালের প্রকাশ করি। আনামের কোরণা আধার বেই, ডোলাংগর বাণী সেই আবার দেৰে। আমরা যে অন্তরের কথা বন্ধতে চাই, শ্রুত হতে চাই।' লোকালরের তীরে তীরে এমনি কত ক্ষশ্রত বাণী যুরে বেড়াছে। তাদের হাতে আলো নেই। কিন্ত অতীতের সেই ক্ষয়ান্ত ইচছা-চেষ্টা বর্তমান কালের আলোর তীর্থে, প্রকাশের ঘাটে উত্তীর্ণ হাতে চাছে। ভারা সব প্রাকালের অংলোকহীন বাত্রী। প্রকাশের ঘাটে উঠ্তে পার্লে তারা বাঁচে।

তারা চিত্তা-শুহা ছেড়ে ছুটেছে। তারা রূপ পাবার তাশায় অন্ধ-মরু পাড়ি দিয়ে চল্ছে। তারা আকাশের তৃষ্ণার কাতর হয়ে নিরাকারকে আঘাত করেছে। তারা কতদিন ধ'রে অব্যক্ত মরু পার হবার জন্ত যাতা করেছে—বল্ছে 'কোথায় গোলে তাকার পাই ? তারা প্রকাশ হবার জন্ত কবির সাহায্য প্রার্থনা কর্ছে।

(৪র্থ গ্লোক)

আমার ভিতরে বে আকাজ্বাণ্ডলি জাগে, আমরা দ্বাই তাকে রূপ দিতে পারলাম না।
কিন্ত তারা বেরিয়ে পড়েছে। কোন্ পারে কোন্ তপস্তায় গিয়ে তাদের গতি শেষ হবে ? তারা
সব পাড়ি দিছেে। কে জানে কোন্ থাটে উঠ্বে ? কিন্তু তারা জানে যে, একদিন তারা
ন্তন আলোতে বিকলিত হবে। কত গুগ বুগাহর পেকে মামুবের মনে প্রেমের জন্ত শান্তির জন্ত
যে-সকল আকুল তৃষ্ণা জেগেছিল, তারা বুগে যুগে মানব সমাজের নানা সংগতের মধ্যে দিরে
কোনো না কোনো বাবস্থায় প্রকাশ পেয়েছে। পুরাবুগের মামুবদের চিরবাজ্যিত আকাজ্বার
দল একব্সের পাড়ি শেষ করে নববুগে রূপের বনরে এনে ঠেকুল। আজকের দিনে ফে সকল
ব্যান্তবিশেষ ওছয়েডার ভিতরে থেকে কত গভীর আকাজ্বা নিয়ে তপস্থা কবছে, তাদের অপূর্ণ
কামনাগুলি পাড়ি দিরে বদেছে—হয়তো তারা কোনো ভাবী কালে অপূর্ব-আলোতে একাশিত
হয়ে উঠ্বে। কিন্তু কত পুরাতন, দূরবর্তী অতীতের ইতিহাসে এদের লয় হয়েছিল, তথ্ব তার
কেন্ড জান্তে পার্যে না। আজ্ব তারা বাসাছাড়া পাথীর দলের মতো মানসংলাকের নীড় তার্গ
ক'রে ডানা মেনেছে। তারা গেদিন বাসার পে'ছবে, সেদিন কোন্ নীড় তার্গ ক'রে তারা
এসেছে তা কেন্ড জান্বে না।

আমার ভাবনা কামনা নিয়ে কোন্ এক কবি যে কবিতা বিখ্বে, কোন্ এক চিত্রকর বে ছবি আঁকবে, কোন এক বালপুরীতে যে হয়্ট তরী হবে, আল দেশে ভাদের কোনো চিহ্ন নেই। আল কেইনৰ অরচিত বজত্মির উদ্দেশ্যে বউমানের মাসুৰ ভাবী কালের দিকে মুখ করে তীর্থযাজীর মতো চলেছে। হয়তো কোন্ ভাবী ভীবণ সংগ্রামের রণ্ট্রের ফ্বনেরে আজকের দিবে
আরক্ত তপ্তার আহলান রয়েছে। ফ্রাসীবিল্লবে মাসুবের বৃগ-সঞ্চিত ইচ্ছা ও বেইনার আহলান
ছিল। তাই তারা ডাক তন্তে পেরে সংগ্রাম-ছলে এসে পে ছেছিল। বে ইচ্ছা আল কললাভ
কর্তে পার্ব না, ভাবী কালের কোন্ ভীষণ সংগ্রামে তাদের ডাক ররেছে।"

অগতে অসংখ্য অশ্রুত বাণী অভ্নত বাসনা ব্যক্ত হইরা আকার পাইবার
ক্ষুত্র চট্ট্রট্ট করিরা পুরিরা বেড়াইডেছে; বর্তমানের নিফ্লতা ও অপ্রকাশ
ভাবী কালে সফলতা ও প্রকাশ পাইবার জন্ম ব্যাক্ল; অনুষ্ঠ নিরাকার

চিন্তবেদনাগুলি আধারের অধেবণে অস্থির। এই জ্বস্ত ইহারা সব গতি এই বেদনাগুলি সভ্য বলিয়া গতিও সভ্য। কিন্ত এই বেদনা যেশ কেবলমাত্র বেদনাতেই পর্যবিসিত থাকিতে চায় না, গতিও তেমনি চিরকাণ কেবল গতি হইয়াই থাকিতে চায় না। এইজ্ব্রু আমাদের ভাষায় স্থব্যবস্থার নাম গতি; আর হুর্বস্থার নাম হুর্গতি। চিন্তের বেদনা এক আধারেই নিজেকে চিরদিন বন্ধ রাথে না, ক্রমাগতই সে আধার হইতে আধারে গতিশীল। এজ্ব্রু তাজমহল, সম্বন্ধে কবি বলিয়াছেল,—'তোমার কীতির চেন্নে তুমি যে মহৎ।' বের্গ্ স্ক্র আধার স্বীকার করেন না; গতি চিরকালই গতি, গতিই কাল। নগর প্রভৃতি স্থিতিশীল জিনিস কল্পনা মাত্র, বৃদ্ধির স্পৃষ্টি; সত্যের হিসাবে ইহার মূল্য শুক্ত।

১৭ নম্বর

(১ম শ্লোক)

"যতক্ষণ বিশ্বকে ভালো বাসি নি ততক্ষণ আমাব জীবনে তার দান কিছু
কম পড়েছিল। তথন তার আলোতে সব সম্পদ পূর্ণ হয় নি। কারণ যথন
আলোর মধ্যে আনন্দকে দেখি তথনই আমার কাছে তার সার্থকতা আছে।
কেবল এই ব্যাপারটি যথন আমার কাছে সপ্রমাণ হল তথনও তার আসল
তাৎপর্য (significance) আমার কাছে সম্প্রত হয় নি। কিন্তু যথন ভূবনের
দিকে চেয়ে থেকে আনন্দের উদোধন হল, তথন যে আলো আমার মনের সঙ্গে
মিলন সম্পাদন কর্ল তার সত্য আমার কাছে প্রজ্বের রইল না। আমি যতক্ষণ
ভূবনকে ভালো বাসি নি ততক্ষণ সমস্ত আকাশ দীপ হাতে চেয়ে ছিল—আমার
আনন্দের ধারা তার আলোর সত্য পূর্ণতা লাভ কর্বে বলে। আকাশ স্থেচজ্র
তারার বাতি জালিরে অপেকা ক'রে আছে—কথন্ আমি প্রেমের আনন্দ-দৃষ্টি
দিরে তার স্ত্যুকে উপলব্ধি করব। সেই বছবৎসর খ'রে দীপ আলিরে এই
আনন্দের অপেকা ক'রে আছে, কথন্ আমার জীবন তারার পূর্ণ সত্যকে পাবে।

(२व (ब्रांक)

"(तानिक ध्याम शान छादा अश-क्षामांक गाम भाषांक विश्वन क्षा, प्राप्तिक क्षित्रक कान्यकाति क्षाः। पृथानक गाम भाषांक शक्तिक क्षाः, ध्या कारणः আমি তোমার বরণ কর্লুম। আমার প্রেম বিখের গণার আপন মালা পরিরে দিয়ে হেনে দাঁড়াল। সে তার দিকে হেনে চাইল—তারপর একটা কিছু দিল। যা গোপন বস্তু কিন্তু যা চিরদিনের জিনিদ, সে তাকে দেই আনন্দসম্পদ্ দিয়ে গেল যা তার তারার আলোর চিরদিনের মতো গাঁথা হরে রইল। এই সম্পদ্ উপহার পাবে ব'লেই ভ্বন তারার দীপ জালিয়ে অর্ঘ্য সাজিয়ে পথ চেয়ে ব'দেছিল—কবে আমার প্রেমের সঙ্গে তার শুভদৃষ্টি হবে, দে এদে ভ্বনের গণার মালা পরিয়ে দেবে। তারার আলোর মধ্যে এই প্রতীক্ষা ছিল। থেদিনপ্রেম এল, সেদিন দে এমন কিছু দিয়ে গেল যা ক্রব-তাবার ক্রব হয়ে রইল, যা ভ্বনকে পরিপূর্ণতা দান কর্ল।

১৮ নম্বর

(১ম শ্রোক)

"আমি যতকণ স্থির হয়ে আছি ততকণ বস্তুদমূত ভার-স্বরূপ হয়ে থাকে। তথন জীবনের বোঝা, সঞ্চয়, ধন,—আমাব পক্ষে হয় হয়। যখন আমার চলা বন্ধ হয়ে যায়, তথন ধনজন যা কিছু জম্তে থাকে তা কিছুই চলে না; তারা আমাকে বিরে ফেলে। সেই সঞ্চয়কে বাঁচিয়ে রাখ্বার জয় আমি জেগে আছি। বইয়ের পোকা য়েমন তাব পাতার মধ্যে ব'সে ব'সে তাদের কাটে আর ধায়, তেমনি আমি এই জায়গায় ব'সে ব'সে কেবল থাছি আর জয়াছি। আমার চোথে ঘুম নেই—মনের মাথায় বোঝা ভারী হয়ে উঠেছে। হংব নৃতন সতর্ক বৃদ্ধির ভারে, সংশ্রের শীতে জীবনের চুল পেকে গেল, সে বৃড়ো হয়ে যাছে।

(২য় স্লোক)

"আমি বেই চল্তে স্থক কর্লেম, অমনি মন তার মাধার পিঠে বে বোঝা চারিছিক্ থেকে এটে দিরেছিল, চলার সক্ষে লাকে বিবের সঙ্গে গংলান্ডের ছারা তার আবরণ ছিন্ন হরে গেল, ব্যথার সঞ্চয়ের কর হল। চলার সংঘরে জানন্দের আবেলে যে আবরণ জড়িয়ে ধরেছিল তা কর হতে থাকে। মন ক্ষামন্দের (opininion-এর) ছর্লে বদ্ধ হবে বাঁধা আইডিয়ার মধ্যে থাক্লে সে

বৃদ্ধ হয়ে ওঠে। বা চলে না, স্থির হয়ে জম্তে থাকে তা মলিনতার আবর্জনা।
মন যতই নৃতন পরিবর্তনের মধ্যে চল্ছে ততই দে নব নব সম্পদে ভৃষিত
হছে। সনাতনের অচলতার দ্বারা মন নবীভূত (purified) হতে পারে না।
চলার স্নানেই সকল বস্তু খৌত নির্মল হয়ে যাছে। জ্বরা জীবনকে যে
পদ্ধিলতার আছের ক'রে রাখে, জীবনের চলার প্রাণশক্তি (vigour) সেই
স্থিত তুপকে কেলে এগিরে চলে। স্থবিরতা কেবলই পুরাতনকে আঁক্ডায়।
সে বোঝা ফেলে দিয়ে হাল্কা হতে চায় না। তাই সে মলিন তুপের দ্বারা
জড়িত হয়ে থাকে। এর থেকে বাচ্বার উপায় হছে মনকে নিত্যনবীন পথে
চালনা করা। চলার আনন্দরস পান ক'বে মনের যৌবন বিক্লিত হয়।

(৩ৰ শ্লোক)

"আমি থাম্ব না। আমি বল্ব না যে, 'আমার চলা সারা হরে গেল,—
ফুতরাং এখন আমি যা সঞ্চয় করেছি তাই দিয়ে-পুরে আমি গৃহস্থ হ'য়ে
বস্লাম।'—আমি যাত্রী, আমি সন্মুখপানে চল্ব। কে পিছন থেকে ডাক্ছে,
আমি তার কথা শুন্ব না। আমি আর সঞ্চয়—শ্ববিরতা—মৃত্যুর গোপন
প্রোমে ঘরের কোনে লুকাব না। আমি ঘর-ছাড়া হয়ে পথের পথিক হব।
আমি চিরঘৌবনকে মালা পরাব। ঐ যে চিবযৌবন চলেছে পথিকের
বেলে, তাকে আমি আমার যা-কিছু নিজের রচনা, স্ষ্টি, নিজের বে-সব
দেবার জিনিস সমস্তই দেব। যে বার্ধক্য সঞ্চয়ের হুর্গে সতর্ক বৃদ্ধির দেওয়ালে
বন্ধ হরে ব'সে আছে, তার আয়েজনকে আজ দুরে কেলে দিয়ে আমি হাল্কা
হরে চল্ব।

(৪র্থ শ্লোক)

"হে আমার মন, অনস্ত গগন বাত্রার আনন্দগানে পূর্ণ হরে গেছে। বে রথ ভোষার নিমে চলেছে, বিশ্বক্ষি তার মধ্যে ব'সে আছেন। গ্রহতারা রবি বাত্রার গান গাইতে গাইতে চলেছে। মন বিশ্বক্রাণ্ডের চলার আনন্দে পূর্ণ হরে গেছে।

১৯ নম্বর

(১ম লোক)

"আমি জাগৎকে ভালো বেসেছি ব'লে এতে আমার আনন্দ আছে।
আমি জীবন দিয়ে এই বিশ্বকে বিরে বিরে বেইন ক'রে রেখেছি। আমি
বিশ্বের প্রভাত-সন্ধ্যায় আলো-অন্ধকারকে আমার চেতনা দিয়ে পূর্ণ করেছি—
তারা আমার চৈতন্তের ধারার উপর দিয়ে ভেসে গেছে। আমি অন্থভব
করেছি যে জীবন ভূবনের সঙ্গে মিলে গেছে, এরা তলাং নয়। আমি
জীবনকে আলাদা ভালোবাসি না ব'লে আমার কাছে জগতের আলোকে
ভালোবাসা মানেই আমার প্রাণকে ভালোবাসা। আমার জীবনকে কথনো
জগং-ছাড়া দেখি না, তাই আমার ভয় হয় না পাছে জগতের সঙ্গে আমার
বিচ্ছেদ হয়। আমি যদি জগং থেকে দ্রে কারাক্র হয়ে থাক্তুম, তবে
এই অন্থভৃতি হয় তো থাক্ত না। কিন্তু আমি জগতে বাস কর্ছি ব'লে
আমার কাছে জীবন ও ভ্বনের ভালোবাসা এক হ'য়ে আছে, তাদের
বিভিন্ন করা বায় না। জগং ও আমার চৈতন্ত এক হয়ে গেছে ব'লে,
চৈতন্ত থেকে বিরহিত জগংটা আমার কাছে একটা abstraction। জীবন
ও ভ্বন যথন মিলিত হছে, তথনই উভয়ে সার্থকতা ও পূর্ণতা লাভ কর্ছে।

(২য় শ্লোক)

"এও দেমন একটা সত্য; তেমনি এই বস্তুবিখে একদিন আমাকে মর্ডে হবে এই ব্যাপারটাও তেমন সত্য। এমন একদিন আস্বে যথন আমার যে বাণী ফুলের মতো ফোটে, তা বাতাসের স্পর্লে ফুটে উঠ্বে না। আমার চোথ প্রতিদিন আলো আহরণ কর্ছে, কিন্তু সেই দিন আমার চোথের সঙ্গে আলোর সম্বন্ধ বিচ্ছিন্ন হয়ে যাবে। এখন আমার হৃদর অরুণোদনের আহ্বানে ছুট্ছে, সে দিন তা ছুট্বে না। একদিন রজনী কানে কানে তার রহস্তবার্তা বল্বে না—সঙ্গে সৃষ্টেশজ্ঞির কাজ ছুরিয়ে যাবে। তাই পার্থিব জীবনের যে এমনি ক'রে অবসান হবে এ সত্যও অস্বীকার করা যায় না।

(৩য় শ্লোক)

"জ্ঞাৎ জীবনকে এমন একান্ত ক'রে চাচ্ছে। আলো-অন্ধকারের মধ্যে জেমের সম্বন্ধের মধ্যে সে কত ক'রে জগৎকে চাচ্ছে এবং উভরের মি্সনের ছারা এই চাওয়ার সার্থকতা হচ্ছে। এ সত্য। তেমনি একদিন এই জগতের সঙ্গে বিচ্ছেদ হবে, আমাকে মর্তে হবে, সেও সত্য। তবে কি ক'রে এই contradiction হতে পারে, এই ছই সত্যের মধ্যে কি মিল নেই? যদি মিল না থাকে, তবে জগৎকে যে চাইলুম, সে যে আমাকে ভোলালে, তা যে একটা মন্ত প্রবঞ্চনায় গিরে ঠেক্ল। বিশ্বের সঙ্গে জীবনের যে আনন্দ-সন্ধ্রম ছাপিত হল তা যদি একদিন মিখ্যা হরে যার, যদি এমন ক'রে সব ছাড়তে হয়, তবে তো কোনো মানে থাকে না।

"অথচ কোনো জুরভা তো বিখে বলীরেখা আঁকে নি। যদি বিখ
এতদিন এত বড় প্রবঞ্চনাকে বছন ক'রে এনে থাকে, যদি মৃত্যুর নিরর্থকতার
সব সম্বন্ধ বিচ্ছিন্ন হয়ে যান্ন,—তবে তার কোনো চিক্ষ এই পৃথিবীতে কেন
দেখছি না ? তা হ'লে তো বিখের প্রকাশের মধ্যে কোনো সৌন্দর্য থাকত
না। পৃস্পকে কীট কাট্লে তা যেমন শুকিরে যান্ন, তেমনি যদি একটি
মৃত্যুও সত্য হত তবে সব মৃত্যু বিখে তার দংশনের ছিন্ন মৃটো বেথে দিয়ে
যেত। তবে মৃত্যুকীট অনান্নাদে পৃথিবীকে শুকিরে কালো ক'রে দিছ।
অথচ কেন এই পৃথিবী সম্ভ কোটা মূলের মতো আমার সাম্নে বল্লেছে ? এই
সৌন্দর্যের emphasis-এর মানেই হচ্ছে যে মৃত্যুই সর্বগ্রাসী abyss নয়, মৃত্যুই
চরম সৃত্যু নয়। কারণ যদি তাই হত, তবে তার প্রত্যেক দংশন ভ্রনকে
ছিদ্রে আছেন ক'রে কালো ক'রে শুকিরে কেন্ত।"

[আলোচনা]

())

'এমন একান্ত ক'রে চাওরা'—এমন ক'রে যে কাণংকে চাচ্ছি আর এমন ক'রে যে কাণংকে ছেড়ে চ'লে যাচিছ, এই ছটোই যদি সমান সভা হরেও ছটো contradictory হয় তবে কাণ্ডে এই ভরানক অসামঞ্জের ভার এই প্রবঞ্চনা থেকে যেত, তার সৌকর্ষের মধ্যে ক্রুরভার চিহু দেখ্ভাম। কিন্তু ভা ভো কোধান্ত দেখি না। তবে এই ছুই সভ্যের বিদ কোধান্ত ?

এর উত্তর এই কবিভার নেই,—কিছ সেটাকে এস্নি ভাবে বলা গেতে পারে ৷—মৃত্যুর ভিতর বিয়ে না গেলে নীমার পুনকজীবন (renewal) হর দাঃ ['কাছনীতে ৷ সামি এই কথাই বলেছি ৷ 'কাছনী' 'বলাকা'র মামনাক্ষিকা] সীমানক ৷প্রে গ্রেগ্রেড হর, পুনক্ষুক আন্তর্গার না হলে সে যে জীবন্ত হয়ে রইল। রূপ (form) যদি শ্বির হয়—fluid জীবন যদি অসীমের মধ্যে ব্যক্ত না হয়, তবেই তো অচলরূপে তার সমাধি হল। মৃত্যু রূপকে ক্ষণে ক্ষণে মৃক্তি দেয়। যদি তার জীবন এক জারগায় থেমে বইল তবে তো তার প্রসারণশীলতা (elasticity) রইল না। ইতিহাসে তাই দেখতে পাই মামুৰ যখন প্রথার গণ্ডীতে বন্ধ হয়ে থাকার দরুন তার মনের প্রসারণশীলতা চ'লে গেল, তথন আবার একটা নবয়গ তার বাণীকে বহন ক'রে এনে দেই বন্ধন ছিন্ধ ক'রে দিল। অসীমের প্রকাশ (manifestation) সীমাতে হতে বাধ্য হয়। কিন্তু সেই প্রকাশের মধ্যেই সীমার চরম অবসান নয়—মৃত্যু তার বিশিষ্ট রূপকে ভেঙে দিয়ে তাকে নব নব আকারে পুনকজ্জীবিত করে। আনন্দ হচ্ছে জীবনের positive দিক্, তার negative দিকটার কাজ হচ্ছে সীমার বেড়াকে ভেঙে দিয়ে তার প্রবাহকে পুনঃপ্রবৃত্তিত করা।

এই নিরবজিয়তার সঙ্গে সঙ্গে আমাদের স্মৃতির বোঝাকে যে বইতে হবে, তা নয়। মান্ত্রের জীবনের শৈশবকাল থেকে একটা ঐক্যধারা প্রবাহিত হয়ে এসেছে—বিশ্বতির সিংহছার দিয়ে দেই ধারাকে আদৃতি হয়েছে। আমাদের সচেতন জীবনের মধ্যেও কত বিশ্বতির কাক আছে কিন্তু তার মধ্যেও একটি অবিচিন্ন প্রবাহ রয়েছে। যে সত্য আমার দেহে আবন্ধ হয়ে প্রকাশিত হচ্ছে, তা আজ আমার চেতনার আলোয় বিশ্বে ব্যাপ্ত হয়ে রয়েছে। কিন্তু এই আলোরও মেয়াদ (term) আছে, এই বেড়ারও অবসান আছে।

এক এক সময়ে ঠেলা আসে। তথন তার ধারার সব বিদীর্ণ হয়ে যার। গর্ভের মধ্যে ত্রণের অবস্থানও ঠিক এই রকমের। সে যতক্ষণ পরিণতি লাভ করেছে, ততক্ষণ তার বৃদ্ধি সেই দীমাবদ্ধ জারগাতেই আছে। কিন্তু এই পরিণতির শেষ হলেই তাকে বৃহত্তর মৃক্তির ক্ষেত্রে যেতে হবে। ব্যক্তিগত জীবনেরও এমনি ক'রে adjustment হয়, তার পরিণতির ধারকে ভাঙ্তে হয়—বিশালতর মৃক্তিকেত্রের জাত।

এটা কোনো দার্শনিক speculation-এর কথা নয়, এ হচ্ছে poetry-র
কথা,—সভ্যের positive দিক্ হচ্ছে আনন্দ। কিন্তু তার negative দিক্ও
আছে। যদি সেটাকেই বড় ক'রে দেখ্ডুম তবে পদে পদে মৃত্যুর পদচিছ
টোখে পড়্তু। কিন্তু দেখ্তে পাছিছ জরারই ছায়ার ভিতর দিরে, মৃত্যুর
কিন্তুরার দিরে, সে চলেছে। যা দেখা যাছেছ তা হছ্ছে সভ্যের positive
দিক্টা। তবে এছটো দিকের মধ্যে সামশ্রক্ত কোখার ? যখন সীমার মুপের

ভিতর দিয়ে প্রকাশ করা ছাড়া অসীমের অন্ত গতি নেই, তথন তাকে কারাগারকে ভেঙে ফেলেই বার বার শাখত স্বরূপকে দেখাতে হবে।

(२)

ইপ্ কোর্ড ব্রুকের সঙ্গে আমার বিলাতে এ বিষয়ে কথা হরেছিল। তাঁরও এই মত। আমাদের জীবনের বাজিগত অভিজ্ঞতার একটা চক্র (cycle) আছে, সেটাকে যথন সম্পূর্ণ কর্ব তখন স্থৃতির ঘারা পূর্ণতা লাভ কর্বে। এখন আমার মনে নেই আমার পূর্বেকার জীবনে কি হরেছিল, এখন আমার সাম্নের দিকেই গতি। একটা অধ্যার যখন পূর্ণ হবে, তখন পিছন ও সাম্নের সঙ্গে আমার যোগ হবে।

'জীবনদেবতা'র group-এর কবিতাগুলিতেও এই ব্যাপারট ঘটেছে।
আমার প্রথম কবিতাগুলিতে আমি নিজেই জ্বানি না কি বল্তে চেরেছি।
'কে সে, জ্বানি নাই তারে'—এই ভাবের মধ্যে দিয়ে grope কর্তে কর্তে
আক্রাভভাবে আমার কবিতার ভিতর দিয়ে একটা অভিক্রতাকে পেল্ম।
আমার চক্র সম্পূর্ণ হল, আমার অমৃভূতির রেখাটি আবর্তন করে এনে আরেক
বিলুতে মিল্ল,—একাটি পরিস্ফুট হল, আমি বুরতে পার্লুম।

তেমনি করে জীবনের এক একটা চক্ররেপা (cycle) আছে। যথন তা সম্পূর্ণ হবে তথন অনুভূতির ভিতর দিয়ে মর্মগত (significant) সতাটকে বৃষ্তে পারা যাবে। নভেল যথন সবটা শেষ করি তথনই সব অধাায়ের সমষ্টিগত উপাধানধারাটি পূর্ণ হয়। পিছনে যা কেলে চল্লুম, তা দেখ্বার সময় নেই—আমাকে সাম্নে চল্তে হচ্ছে। চলা যথন শেষ হয়ে চক্র পূর্ণ হল তথন সন্মৃথ-পশ্চাৎ মিলিত হল, আমার স্তিগুলি ঐক্যধারায় পূর্ণতা প্রাপ্ত হল।

তর্কের দারা এই সত্যের প্রমাণ হয় না, এ ব্যাপার আমাদের instinctএর। যে পাধীর ছানা (chick) ডিমের খোলসের মধ্যে আছে, তার কাছে
প্রমাণ নেই যে বাইরে একটা জগৎ আছে। তার আবেইনটি বাইরের
জগতের সম্পূর্ণ উন্টা। কিন্তু এই বাইরের জগতের প্রমাণ আছে তার
instincta তারই প্রেরণার সে ক্রমাগত খোলসে বা দিছে। তার ভিতরে
তারিল (impulse) আছে, তার বিধাস তাকে ব'লে দিছে,—'এবানে হিডি,
এখানে স্কি নর, ক্লমিন আশ্রেরক জেকে কেল।' অধন খোলাসের গভীর
সংশ্রে এই মুক্ত জগতের কোনো গ্রমাণ বেই।

মাছবের অভিজ্ঞতাও তেমনি আমরা দেখ্তে পাই। সব ধর্মের systema একটা অক্কভ্রতার ভাব আছে; তা কেবল বল্ছে বে এই বে বা দেখ্ছ তা শেব কথা (absolute) নয়। ধর্মতন্ত্র বল্ছে যে বিরুদ্ধে যেতে হবে। তাদের মধ্যে এই বিশ্বাস বর্তমান আছে বে, যা দেখেছি তার চেয়ে যা অগোচর অপ্রত্যক্ষ তা ঢের বেশী মূল্যবান্। সেই প্রেরণা, বিল্রোহ আমাদের instincta আছে। 'যাবজ্ঞীবেৎ স্বথং জীবেৎ, ঋণং ক্রমা ম্বতং পিবেং' এ তো ঠিক কথাই—বিষয়ী লোকেরা এই কথা বল্ছে। কিন্তু মানুষ কিছুতেই মনে কর্তে পার্ছে না যে এতেই সব শেষ। সে তর্ক কর্কে আর বাই কর্কক, তার instinct তার দেওগালে এই ধাকা মার্তে ক্রটি কর্ছে না, যা প্রত্যক্ষ-গোচর তাকে সে আঘাত কর্ছে, ঠোকর মার্ছে।

সব মনুষ্যান্তের বিশ্বমানবের ইতিহাসে এই প্রেরণা (urging) চ'লে আস্ছে। যা প্রত্যক্ষ স্বাভাবিক, যাকে তর্কের দ্বারা বোঝান যায়—তাকে মামুষ অবিশ্বাস ক'রে এসেছে। বর্বরদের তো এ বিদ্রোহের ভাব নেই, কারণ তাদের জ্ঞানামুলীলন (culture) নেই। যথন আমার বৃদ্ধি আমাকে স্থির রাথ তে পার্ল না, এগিয়ে নিয়ে গেল, তথন সত্যকে পেলুম। যে সত্য আমার গণ্ডীকে অতিক্রম করে বর্তমান আছে, তাকে তথন আমি লাভ কন্মূল্ম। মামুষ যেন জ্ঞান-জগতে ক্ষদ্র গণ্ডীর মধ্যে আবদ্ধ না হয়ে বেরিয়ে পড়ে। তেমনি আমার অধ্যাত্মজগতের যে আবেষ্টন আছে, তার মধ্যেকার সত্যকে নেবার ক্ষম্ম আমার personalityতে 'ভূমৈব স্থ্যা' এই বিশ্বাদের প্রেরণা রয়েছে। আমরা জীবনের সীমাবদ্ধ অভিজ্ঞতাকে মেনে নিচ্ছি না, তাই ক্রমাগত আবেষ্টনে ঠোকর দিচ্ছি। এই বিশ্বাদের দ্বারা যারা অমুপ্রাণিত, 'অমৃতান্তে ভবস্তি', তারাই অমৃতকে লাভ করে।

প্রত্যেক formএর মধ্যে ছটো জিনিস রয়েছে—থানিকটা তার প্রকাশিত পার বাকিটা তার আছর। যা আছর রয়েছে, একটা বিরুদ্ধ শক্তি তাকে যা না দিলে তার পূর্ণ বিকাশ হর না। মৃত্যু প্রকাশের প্রবাহকে ক্রমাগত মৃক্তিদান ক'রে চলেছে। মৃত্যুতে formএর কোনো বিনাশ হয় না, তার renewal বা নৃত্ন নৃত্ন প্রকাশ হয়।

ভূমি যথন আমার সমাদর ক'রে পাশে ডেকেছিলে, তথন তর হরেছিল পাছে ভোষার সেই আদর থেকে আমি একটুও বঞ্চিত হই, পাছে অসভর্ক হরে আমার কিছু নট হয়—কোধাও সন্মানের কোনো হানি হর। তথন আপন ইচ্ছা-মতো যে নিজের রাস্তায় চল্ব তার উপায় ছিল না—যে পথে চল্লে আপনাকে সহজে প্রকাশ কর্তে পারি সে-পথে চল্তে বিধা হয়েছে। আমি চল্তে গিয়ে ভাব তে ভাব তে গেছি, পাছে এদিক ওদিক এক পা নাড়তে গিয়ে তোমাকে অসম্ভই করি। তুমি যখন আমায় সম্মান দিলে তখন এই বিপদ্ হল,—আমি যে আমার মতে সহজ্ব-পথে চল্ব তা' হল না, আপনাকে সহজ্বে বহন ক'রে নেবার ব্যাঘাত ঘট্ল। পাছে আমি কোনো সময়ে তোমার সম্মান হারাই, পাছে কোথাও গেলে ক্তি হয়—এই আলকা আমি দূর কর্তে পারি নি।

আৰু আমি মৃক্তি পেরেছি। তোমার সন্মানের বাঁধনে বাঁধা ছিলাম, আৰু মৃক্তি বেজে উঠেছে—অনাদরের কঠিন আঘাতে তার সঙ্গীত ধ্বনিত হয়েছে। অপমানের ঢাক ঢোল বেজে উঠ্ল—আমি সন্মানের বন্ধন থেকে মৃক্ত হলাম। আৰু আমার ছুটি—বে-খোটা আমার মনকে বেঁধেছিল, হা' আৰু ভেঙে গেল, হাত-পায়ের বেড়ি খ'সে গেল। যা দেবো আর নেবো দক্ষিণে বামে তার পথ খোলসা হল। যথন সন্মানের বেষ্টনে বদ্ধ হয়ে পা ফেল্ছিল্ম তথন আমার ভাবনা ছিল, কি দেবো আর নেবো। কিন্তু এবার দেবার নেবার পথ খোলসা।

আমার এক সময় ছিল যথন আমাকে কেউ জান্ত না। আমি বিধে
আনায়াসে বিহার করেছি, স্বছলে আকাশ-পৃথিবীতে উপরে উঠেছি, নীচে
নেমেছি, কে কি বল্বে, কাড়্বে তা' ভাবি নি। সে-সময়ে আমার সম্মানেব
অধিকার ছিল না। আজ আবার আকাশ-পাতাল আমার থুব ক'রে
ভাক দিল, আজ আমি অনাদ্তের দলে। যে লাঞ্চিত, তার ভাবনা নেই
—সমস্ত জগতে সে বাঁপে দিয়ে পড়্লে কে তাকে থামার? এই যে আমি
ঘরের মধ্যে সম্মানের বেইনে ছিলাম, আজ তা ঘুচে গেল। আমি আমাব
আশ্রকে হারালাম। আজ আমায় ঘরছাড়া বাতাস মাতাল ক'রে দিল,
আর আমার ভর নেই। যথন রাত্রে কোনো তারা থ'সে পড়ে, তথন সেই
ভারার একসময়ে ভারকাসমাজে যে সমানের আসন ছিল তাকে সে হারিয়ে
বঙ্গে, "কুছু পরোয়া নেই" ব'লে আকালে বাঁপে দেয়। ভেমনি আমি আজ
বরণটানে ট্রটে চলেছি, বল্ছি "ভর নেই, সব বাঁধন ছিঁড়ল।"

(৪র্থ শ্লোক)

আমি কাল-বৈশাধীর বাঁধন-ছিন্ন মেঘ। এবার ঝড় আমাকে তাড়া দিল, জপমানের ঝড় অচলা স্থিতি থেকে আমাকে পথে বা'র করে দিয়েছে। দক্ষ্যারবির সোনার কিরণ আমাকে সন্মানের মৃক্ট পরিয়ে দিয়েছিল। যথন কালবৈশাধী তাড়া দিল, তথন আমি স্থল-কিরীট অস্তপারে ফেলে দিয়ে ঝড়ের মেঘ হরে বক্সমাণিকে ভূষিত হয়ে বেরিয়ে পড়্লাম। আমি সেই বাঁধন-হারা বৈশাথের মেঘ—একা একা আপন তেক্সে ঘুরে বেড়াব। বাইরের সন্মান আমাকে আলোকিত করেছিল, কিন্তু এখন আমার ভিতরে বক্সমাণিকের তেজ্ব আছে, সেই তেজ্ব আমাকে গৌরবানিত করেছে,—বাইরের অস্তরবির কিরণ নয়। যে-সন্মান আমাকে বাইরে টেনেছিল, আমি তাকে ফেলে দিয়ে আপন অস্তরের মহিমায় একলা পথে বার হয়েছি।

আমি অসম্মানের মধ্যে মৃক্তি পেলাম। সকলের চেয়ে চরম সমাদর যা'
তা' বাইরে নেই, তা' অন্তরে। যথন বাইরের খাতির ঘটা ঘুচে বায়, তথনই
একমাত্র তোমারই আদর অন্তরে পেয়ে থাকি। সেটাই সমাদরের শেষ,
তাতেই মৃক্তি হয়। যা' অপরের অপেকা রাথে তা' আমার পক্ষে বন্ধন।
লোকের কথার উপর, স্তৃতিবাদের তারতম্যের উপর তার নিয়ত পরিবর্তন
হয়। কিন্তু তোমার আলো যথন অন্তরে আসে, তথন আপন যথার্থ স্থানপকে
জানি; তোমার চরম সমাদরে আমার বন্ধন মোচন হয়।

গর্ভে বখন সন্তান বাকে তখন সে মাকে দেখে না। মা বখন তাকে মাটার উপর দ্র ক'রে দিল, তখন যেন সে সমাদরের বেইন থেকে অসন্থানের ধরণীতে বিচ্যুত হল। কিন্তু তখনই শিশু মাকে দেখ তে পেল। যখন সে আরামে পরিবিষ্টিত হয়েছিল, তখন সে মাকে জানে নি, দোখ নি। তুমি বখন আদরের মধ্যে সন্মানের দ্বারা আমাকে বেষ্টিত কর—তার হাজার নাড়ীর বাঁধনে যখন আমাকে জড়িত কর, তখন তোমাকে আমি জান্তে পারি না, সেই আশ্রয়কেই জানি। কিন্তু তখন তুমি সন্থানের আচ্ছাদন থেকে আমাকে দ্রে ফেল, তখন সেই বিজেদের আঘাতে আমার চৈত্ত হয়, আমি তোমার সেই আবেইন খেকে মৃক্ত হ'রে তোমার মৃথ দেখ তে পাই। যখন সন্থান থেকে মৃক্ত হ'রে তোমার বিশ্বত পাই। তখন সন্থান থেকে মৃক্ত হ'রে তোমার সাম্নে এসে দাঁড়াই, তখনই তোমাকে দেখুতে পাই।

ছই নারী

এই কবিতাটি ১৩২১ সালের সব্জপত্রের ফাস্কন মাসে "ছই নারী" শিরোনামে প্রকাশিত হইয়াছিল।

স্কানের প্রথম ক্ষণে প্রইভাবের নারী অতল অব্যক্ত থেকে ব্যক্ত হরেছিল। একজন স্থানরী। তিনি উর্বশী, বিষের কামনা-রাজ্যে আধিপত্য করেন। আরেকজন লক্ষী, তিনি কল্যাণী। একজন স্বর্গের অপ্সরী, আর অন্তটি স্থর্গের জাবরী। একজন হরণ করেন, আরেকজন পূরণ করেন।

একজ্বন তপস্তাকে ভঙ্গ ক'রে দেন। সেই ভাঙনে, যে-আলোড়ন জেগে উঠ্ছে সে যেন তাঁর উচ্চহাস্ত। তিনি স্থরাপাত্র নিয়ে ছই হাতে বসন্তের পৃশিত প্রশাপের মাদকতাকে আকাশে-বাতাসে বিকীর্ণ করে দিয়ে যান।

তাঁর আগমনে বিশ্ব যেন বসস্তের কিংগুকে গোলাপে কেটে পড়তে চায়।
সমস্তই যেন বাইরের দিকে বিদীর্ণ হয়ে যায়। কিন্তু যথন হেমন্ত কাল আসে
তথন অস্ত মৃতি দেখি। তথন দেখি, তা ফল ফলিয়েছে, আপনাকে পূর্ণতার
ভিতরে সমৃত করেছে; তথন বসস্তের আত্মবিশ্বত অসংযম অন্তরে পরিপাক
পেরে সফলতায় পরিণত হয়েছে। এক নারী সেই বসস্তের আবেগে বাইবেব
তাপে আন্দোলিত করে দিলেন, অস্ত জন তাকে শিলিরম্নাত ক'রে অন্তরের
মাধুর্যে কলবান্ ক'রে তুল্লেন।

হেমন্তকালে যথন ফদল ফল্ল, তথন তার মধ্যে চঞ্চলতা রইল না, সমন্ত স্তব্ধ হল, তার মধ্যে দক্ষিণ-বাতাদের মাতামাতি থেমে গেল। হেমন্ত সেই আপনার শান্ত সফলতাটিকে বিশ্বের আশীর্বাদের দিকে উথেপ তুলে ধরে।

প্লের মধ্যে প্রাণের প্রকাশের অধৈর্য আছে। কিন্তু তার এই জীবনের আবেগ তাকে একটি পরিণামের দিকে নিয়ে যাক্তে—তাকে মৃত্যুর সীমায় গিয়ে পৌছিতে হয়—তবেই দে চরম সার্থকতা লাভ করে, ফলে পরিপক হয়। জীবন বদি আপনারই সীমা-রেখার মধ্যে পর্যাপ্ত হত, তবে মৃত্যু হঠাৎ এসে ভাকে ভয়ানক বিজেদে নিয়ে যেত এবং মৃত্যু তার একাশ্ত বিরুদ্ধ হত। কিন্তু মৃত্যুকে মুখন কল্যাপের দিক্ দিয়ে দেশ্ব, তখন বৃক্ব যে জীবন তার সীমাকে উত্তীৰ্ণ ক'বেই অমৃত্তের মধ্যেই প্রবেশ কর্ছে।

সীনার মধ্যে এই অনভের আভান, সাহিত্য ও শিরের ক্ষির মধ্যে অনিব্চনীয়ের প্রকাশের মত। শিলীর রচনার সংখ্যে যে সংখ্যের ব্যঞ্জন

আছে তার ধারা মনে হয় যে সবটা যেন বলা হল না। কিন্তু সেই বল্তে
গিরে থেমে বাওরার মধ্যে প্রকাশের অসম্পূর্ণতা বা অপরিস্ফুটতা নেই; কারণ
সেই কবিতা বা চিত্র বলাকে অতিক্রম করে, যা অনির্বচনীয় তাকেই ব্যক্ত
করে এবং এই সংযমের সঙ্গে তার বাণীর পূর্ণতার বিরোধ নেই। জীবনের
নিত্য আ্লোলনের মধ্যে তথনই অসমাপ্তিকে দেখি, যথন মনে হয় যে মৃত্যু
তাকে ভয়ানক নিরর্থকতায় নিয়ে যাচেচ। যথন মৃত্যুর মধ্যে জীবনের একাস্ত
বিচ্ছেদ দেখি তথনই কাড়াকাড়ি, তথনি বিরোধ ঘোচে না। কিন্তু যথন
কল্যাণকে লাভ করি তথন মৃত্যুর ভিতর দিয়ে জীবনের পরমার্থতা ও অসীমতা
আমাদের নিকট স্প্রপষ্ট হয়।

আমাদের জীবনের এই ব্যঞ্জনারই প্রতীক আমরা প্রকৃতির মধ্যে পাই।
গঙ্গা যেথানে সমৃদ্রে মিলিত হচ্ছে সেথানে সে আপন চরম অর্থকে লাভ করছে।
একস্বায়গায় এসে নিরর্থকতার মক্তৃমিতে তো সে ঠেকে যায় নি—তাহলে হয়
তো মৃত্যু তাব কাছে ভয়াবহ হত। কিন্তু সে যথন সমৃদ্রে বিশ্রাম পেল,
তথনই তার পূর্ণতার উপলব্ধি হল। তাই তার শেষটা ভয়ানক পরিণাম ব'লে
বোধ হয় না। সেই গঙ্গাসাগরের সঙ্গমস্থলই অনন্তের পূজামন্তির। কল্যানী
যিনি, তিনি উদ্ধৃত বাসনাকে সেই পবিত্র সঙ্গমতীর্থে অনন্তের পূজামন্তিরে
ফিরিয়ে আননন। একজ্বন সমন্তকে বিক্ষিপ্ত করে দেন, অগুজ্বন তাদের
সেখানে ফিরিয়ে আননন, যেথানে শান্তির পূর্ণতা সেথানে লক্ষীব স্থিতি।

উর্বলী আর লক্ষ্মী, এরা মামুষের ছটি প্রবর্তনার প্রেরণার প্রতিরূপ।
সর্বভূতের মৃলে এই হুই প্রবর্তনা আছে। একটি শক্তি, সে ভিতরে বা-কিছু
প্রছের আছে তাকে উদ্বাটিত করে, এক আরেকটি শান্তি, সে অপ্রনিহিত্ত
পরিপক্তার মধ্যে সফলতার পর্যাপ্তিতে নিয়ে যায়—তার প্রকাশের পূর্ণতা
অস্তরের দিকে।

ভাঙা-চোরা যথন চল্তে থাকে, জীবনে যথন অভিজ্ঞতার ভূমিকম্প হতে থাকে, তথন তার মধ্যে যথেষ্ট বেদনা আছে। সেই উদ্দাম শক্তিকে অবজ্ঞা করা যাদ্ধ না। কিন্তু কেবল যদি এই চঞ্চলতাতেই তার সমাধি হত, তবে চুর্গতির আর অন্ত থাকত না। তাই দেখ্তে পাই এর মধ্যে লন্দ্রীর হাত আছে, তিনি বাঁধন-ছাড়া-তানকে শনের দিকে ফিরিয়ে এনে ছন্দ করেন। বে জালাক্ষী শক্তি সমস্তকে বিক্ষিপ্ত করে, যদি সেই শক্তিই একান্ত হর, তবেই স্বৰ্দাশ ঘটে। কিন্তু সে ত একা নর, গতি প্রবৃত্তিত কর্বার জন্তে সে আছে;

পতি ট্রনিয়ন্ত্রিক কর্বার জ্বন্তে আরেক শক্তি আছে তাকেই বলি কলাণী। এই নিয়ন্ত্রিক গতি নিয়েই ত বিশ্বের স্কটি-সজীত।

কালিদাসের "কুমারসম্ভব" আর "শকুন্তবার" মধ্যে এই ছই শক্তির কথা আছে। শিবের তপপ্তা যথন ভাঙ্ল তথন অনর্থপাত হল, আগুন অলে উঠ্লু। শেই অগ্নি আবার নিব্ল কিলে ? গৌরীর তপস্তা দ্বারা।

'শকুন্তলার' প্রথমাংশে ঠিক এই ভাবে ট্রাক্সেডিকে দেখান করেছে। প্রবৃত্তি শকুন্তলাকে উদ্দাম করেছিল। কিন্তু পরে আবার ধর্থন তপস্থার দাবা শকুন্তলা কল্যাণী হয়ে জননী হয়ে শান্তচিত্ত হলেন, তথন তাঁর ইষ্টলাভ হল।

কালিদাদের এই ছটি কাব্যে মান্নবের ছই রক্ষের প্রবর্তনার কথা উজ্জ্বল জাবে চিত্রিত করা হয়েছে। গৌরী আর শকুন্তলা নারী ছিলেন এটাই কান্যের আসল কথা নর—কিন্তু এ দেব উপলক্ষ্য ক'রে শক্তিব দ্বিবিধ মৃতি কুটে উঠেছে। সেটাই কালিদাদের আসল দেখাবার জিনিস। গৌরী অনেক দিন শাস্তভাবে শিবের দেবা ক'রে আস্ছিপেন। কিন্তু যে ধার্নায় তিনি শিবের জন্মে ভালার প্রবৃত্ত হলেন, দেই ধারা এল বার থেকে, তাকে আমরা কলানী বলিনে। তবু সে না হলে শিবকে জ্বাগাবারও উপায় থাকে না। শিব যথন আপনার মধ্যে আপনি নিবিট, তথন তাঁব থাকা নাথাকা সমান। যে-শক্তি চঞ্চল করে, তাকে বর্জন ক'রে যে শান্তি, সে শান্তি মৃত্য়;—ভাকে সংঘত ক'রে যে শান্তি তাতেই সৃষ্টি; অভএব তাকে বাদ দেওয়া চলে না।

শক্ষণা সংসারে অনভিজ্ঞ তাব সরগতার মধ্যে যে-শান্তি সে যেন অফলা পাছের ফুলের মতো। ভরতকে যে চাই। সেই চাওয়ার মূল ধাকাটা শক্ষণাকে যে দিলে সে তাকে ছঃথেই দিলে। কিন্তু এই ছঃথের ভিতর দিয়ে যখন সে জীবন পরিণতির মধ্যে এসে পৌছল তথনি সে সত্যের চক্রপথ প্রাদক্ষিণ সাক্ষ কর্লে। এই প্রাদক্ষিণাযাত্রার প্রথম বিপক্ষ বেদনা, শেষ পরি-সমাপ্তিতে শান্তি।

গ্যেটে থে চার লাইনে শকুন্তলার সমালোচনা করেছেন, আমার মনে হর দেটা তিনি ধ্ব ভেবে-চিন্তেই নিখেছিলেন। একথা আমি আগেও বলেছি। তিনি বে বলেছেন যে কালিয়াল ফুলকে ও ফলকে, শর্গকে ও মত্যকে একতিত করেছেন। এর মধ্যে গভীর অর্থ আছে। এটা নিতান্ত করিছের উক্তি নয়। কুলি খেকে ফোটা ফাউই প্রথমে নির্মান বাস কর্ছিলেন—স্কীবন থেকে বিশিক্ত হ'মে রইছের পাতার মধ্যে নিবিট্ট ক্লিকেন। সেই কুঁড়ির মধ্যে পাপের,

আখাত ছিল না। তিনি বল্পেন যে এখানেই যদি সব শেষ হল তবে এই ত্র্গতির যথার্থ পরিসমাপ্তি হল না;—এবার হাওয়ার আছাড় থেয়ে সেই ফিরে পাবার পথকে পেতে হবে। সে যদি বোঁটা থেকে বিচ্ছিল হয়ে ঝ'য়ে পড়ত, তবে তো তাতে ফল ধর্ত না, তবে তো দে ফিরে পাবার পথ পেত না। লকুন্তনার জীবনের অভিজ্ঞতা ছিল না, জগতের তাল-মন্দের বিষয়ে সে সম্পূর্ণ অজ্ঞ ছিল। সে তপোবনে সখীদের সঙ্গে সরল মনে আলবালে জল-সেচনেও হরিণশিশু প্রতিপালনে নিরত ছিল। সেই অবস্থার সে বাইরে থেকে কঠোর আঘাত না পেলে তার জীবনের বিকাশ হত না। যেথানে জীবনের পতন, তঃথ সেখানে শেষ হ'য়ে গেল। কিন্ত কালিদাস তাকে তো শেষ কর্তে দেন নি। তিনি Problem of Evil নিয়ে পড়েছেন। তিনি দেখিয়েছেন য়ে জগতে কিছুই স্থির হয়ে নেই, তাই কুঁড়ির থেকে ফ্ল, তার থেকে ফল হছে, কোনো জারগায় ছেদ নেই।

কোনো আধুনিক শিল্পী কালিদাসের মতো 'শকুন্তলার' দ্বিতীয় অংশটা লিখ্তেন না। ট্রাজেডি দিয়েই শেষ কর্তেন। কিন্তু আসলে অন্তিম্বেরু পরম সত্য ট্রাজেডি নয়। তাকে কক্ষচাত, তার গতিবেগ বিক্ষিপ্ত ক'রে, না আত্মবিকাশের পথে তাকে নিয়ত উৎসাহিত ক'রে? সেই আত্মবিকাশের লক্ষ্যস্থানে শাপ্তং শিবং অদ্বৈতং আছেন ব'লেই আ্ঘাত-সংঘাতের বেগ একান্ত হ'রে বিশ্বকে নষ্ট করে না। গাছ থেকে ফল ভ্রষ্ট হ'রে পড়ে। সেটা একান্তভাবেই ক্ষতি হ'ত, যদি কোথাও ফলেব প্রত্যাশার কোনো সার্থকতাই না থাকত।

দেবাস্থরের যথন সমুদ্রমন্থন হল, তথন সেথানে গরল পান কর্বার দেবতা ছিলেন। তাই সে গরল অমৃতকে অভিভূত কর্তে পারেনি।

আধুনিক পাশ্চাত্য সমালোকেরা কালিদাসের এই বইকে নীতি-উপদেশমূলক (didactic) বল্বে। কিন্তু যা ধর্মনীতির দিক্ দিয়ে ভালো সেও কল্যাণ
নীতির দিক্ দিয়ে ভালো হবে না এমন তো কোনো কথা নেই। শিবের সতী
সৌলবেরও সতী। উমা যথন বসন্তপ্পাভরণে সেজে এসেছিলেন, তখন তার
সেই সৌলর্যমদে বিশ্ব মন্ত হ'রে উঠেছিল। উমা যথন তাপদিনী সেজে আভরণ
পরিত্যাগ কর্লেন, তখন তার সেই সৌলর্যম্বায় দেবতা পরিত্ত বলেন।
দেশ্তে পাই আধুনিক মুরোপীর সাহিত্য সত্যের কল্যাণম্তিকে যত্বপূর্বক
পরিহার কর্তে চার, পাছে পাঠকেরা বলে বদে এ মৃতি সন্তা নয়। পাঠকদের
চেরে বড় হ'রে উঠে কল্যাণকে সত্য এবং স্কুলর বল্বার সাহস্ ভার নেই।

সত্যকে বিশ্বপ ক'রে দেখিরে তবে সে প্রমাণ কর্তে চার যে, সত্যের সে খোসামূদি করে না। সত্যের স্থানররূপ প্রকাশ করাকে তারা ইস্থ্ল-মাষ্টারী ব'লে ঘুণা করে। একথা ভূলে যার—নীতি-বিভালয়ের ইস্থ্লমাষ্টার কল্যাণকে সত্য এবং স্থানর থেকে বিচ্ছিন্ন ক'রে তাকে একটা অবিচ্ছিন্ন পদার্থে পরিণত করে ত্লেছে—কবি যদি সেই বিচ্ছদ ঘুচিয়ে সত্যের পূর্ণতা দেখাতে পারে তা হ'লেই কবির উপযুক্ত কাজ হয়।

মামুষ যে স্বর্গকে খোজে, তাকে সে পৃথিবীর বাইরে মনে করে। তাই সেই স্বর্গে পৌছবার জন্ত সে সমস্ত ত্যাগ করে, সংসার ভাসিয়ে দেয়। যে-স্বর্গকে মামুষ সংসার থেকে বিচ্ছিম ক'রে জানে, তা অস্পষ্ট, অব্যক্ত, স্ষ্টিছাড়া।

আমি আনেকদিন পর্যাপ্ত সেই স্ষ্টিছাড়া স্বর্গে অব্যক্তের ভিতরে শৃত্যে শৃত্যে মুরেছিলুম। সেই স্বর্গ যা অক্ষুট ছিল,—যার অবস্থা প্রকাশের প্রবকার অবস্থা, তার থেকে যেই আমি মাটিতে জন্মালুম, পরম সোভাগ্যে এই গুলোমাটির মান্ত্র্য হলে পৃথিবীতে এলুম, অমনি স্কুম্পন্ত কপলোকে স্থান পেলুম।

আমার এই জন্মলাভ যেন অনেক দিনকার সাধনাব ফলে। এই বর্গের ধারণা যেন কেবল একটা ইচ্ছাদ্ধপে ছিল, তা প্রথমে রূপ ধবে নি।

অনেক দিন পর্যান্ত যেন স্ক্টিনাট্যের নেপথ্যগত একটি ইচ্ছা স্বর্গের মধ্যেই বৃরছিল্ম। ভাবুকের মনের মধ্যে যথন কোনো একটা ভাব থাকে, তথন সে একটি বৃহৎ অপ্রকাশের আকাশে বিকীর্ণ হয়ে থাকে। কিন্তু যেই সে-ভাব একটু রূপ গ্রহণ কর্ল, অমনি অনেকথানি ভাবের নীহারিকা ব্যক্ত আকার ধারণ কর্ল, অতথানি ব্যাপক অফ্টুতা যেন সার্থক হয়ে গেল। বৈ-স্বর্গ অব্যক্ত তা অনন্ত অসীম হতে পারে, কিন্তু কৃদ্র পরিমাণে রূপ দান ক'রেও অনন্ত ইচ্ছা চরিতার্থতা লাভ করে। তাই আমার পক্ষে মামুষ হয়ে জন্মানো কত বড কথা। এই যে আমি আপনাকে নানাভাবে প্রকাশ কর্ছি, ভার মধ্যে যেন অব্যক্ত অসীমের সৌভাগ্য বহন কর্ছি। এই যে আমি খ্লোমাটির মামুষ হয়েছি, এই হওরার মধ্যেই কত বৃগের পূণ্য। আমার দেহে স্বর্গ তাই ক্বতার্থ।

সেই পর্ব আমাকে আশ্রর ক'রে থেলা কর্তে পার্ল। আমাকে নিয়ে বেঅমমৃত্যুর চেউ উঠ্ল ভার সংঘাতের দোলে সে আপনাকে দোলাতে পার্ল।
পর্ব আমার গৈয়ে নিতানবীন আনকজ্জীর লীলারিও হচ্ছে, আমার ভালোবাসা
বিজ্বেন-নিলন, লাভ ক্ষতি এই সমন্তকে আপন থেয়ালে ভেলে-চুরে নানা রঙে
বিজ্বিভ কর্তেঃ।

স্বৰ্গ নীরব ছিল, তার মুখে বাণী ছিল না। আমি যেই গান গাইলুম স্থমনি সেই স্বৰ্গ বেজে উঠ্ল। সে আমার প্রাণের গানে আপনাকে খুঁজে পেল। আমার মধ্যে অব্যক্ত আপনার যে লক্ষ্যকে খুঁজ্ছে, তাকে আমার প্রাণের গতির মধ্যে অভিব্যক্তির মধ্যে লাভ করেছে। তাই অসীম আকাশ আজ আমার মধ্যে নিবিষ্ট, তাই আমাব স্থখতঃথের ঢেউরের মধ্যেই বিশ্বব্যাপী আনস্ব সংহত।

আজকে দিগদ্ধনার অঙ্গনে যে শঙ্কাপ্যনি উঠেছে সে তো আমার প্রাণেরই কেত্রে, আমারই মধাে। সাগব তার বিজয়ডকা বাজাছে—সে তো বাজ্ছে আমারই-চিন্তকুলে। আমি প্রাণ পেয়েছি, চেতনা পেয়েছি, এই জন্তই তো অঙ্গনে অজনে শঙ্কানে শঙ্কা বেজে উঠ্ল,—নইলে বাজ্বে কোথায়? তাই তো সুল ফুটেছে। প্রাঙ্গনারা যেমন অতিথিকে অভার্থনা কর্তে উল্পানি কর্তে কর্তে ছুটে আসে, তেমনি আমি আসাতে কুলের অবণা-ধারার মধ্যে ছলস্থল বেধে গেছে, অনস্ত স্বর্গ মাটিব মায়ের কোলে আমার মধ্যে জন্মছে,—বাতাসে এই বাহ্ বাহিনিদিকে প্রচারিত হল।

এপর্যাস্থ এই শোকগুলিব মানে যা বল্লাম তাতে একে একরকম ব্যাখ্যামাত্ত করা হল। কিন্তু কবিতা তো তহু নয়, তা রস। কবি যে-আনন্দের কথাটা এই কবিতায় বল্তে চাচ্ছে সে হচ্ছে প্রকাশের আনন্দ।

সন্তান যথন বাপমার কোলে জন্মাল, তথন বিপুল আনন্দে গর ভরে উঠ্ল,—এ বেষন আমাদের মানবগৃহে, তেমনি অসীমেব ক্ষেত্রেও; রূপ যথনই বাত্তব হয়ে উঠ্ল তথনও এই ব্যাপারটি ঘট্ছে। বান্তব হছে কোন্থানে ? আমারই চৈতন্তের আলোকিত ক্ষেত্রে। এই জন্তে আমার চোথে যে মৃহুর্তে দৃষ্টি জাগ্ল অমনি যেন সোনার কাঠিব স্পর্ণে একটা সম্পূর্ণ বিশ্ব উঠ্ল জেগে। থেই আমার কাজের দ্বারে চৈতন্ত এসে দাড়াল, অমনি শব্দেব জগতে এ কীকোলাহল! এই যে আমার চিত্তের প্রাঙ্গলে প্রকাশের মহামহোৎসব উঠেছে, কবি ভারই বিচিত্র বিপুল আনন্দের কথা এই কবিভার বলেছে। এর তথ কত লোকে কভ রক্ম ক'রে বুঝুবে বোঝাবে; কিন্তু এর রস্টুকুই কাব্যে প্রকাশ করা চলে।

বা শ্লষ্ট নর, ব্যস্তা নর, সেই ঠিকানাহীন দেশকে আমি 'বর্গ' নাম দিছি।
পূণ্য সঞ্চয় কর্নেই স্থর্গপ্রাপ্তি ঘটে এই কথাই চণ্ডি কথা; কিন্তু আমি
বৃক্তি যে আমি বর্গ থেকেই পূণ্যের জোরে মর্ত্যে নেমে এসেছি। আমি ফ্লন

গণ্ডীবন্ধ প্রকাশের মধ্যে পরিস্ফৃট হলাম, তথনই আমার সকল অপূর্ণতা সন্তেও মর্ত্যের মধ্যে স্বর্গ ধন্ত হল।

এই স্বর্গমর্জ্যের ভাবটা বছপূর্বে আমার বাণ্যকাণ থেকেই আমাকে অফুসরণ করেছিল।

অল্পবয়দে "প্রকৃতির প্রতিশোধ" এ এই আইডিয়ার ব্যাকুলতাকে আমি এক রকম ক'বে প্রকাশ কর্বার চেটা করেছি। সর্রাদী বল্লে "যে ভববন্ধন-দীমার শৃত্বলৈ আমাকে বেঁধে রাখে, আমি তাকে ছিন্ন ক'বে অদীম প্রাণকে পাবার জন্ম তপস্থা কর্ব।" সে লোকালয়কে তুচ্ছ মায়া, অন্ধতার গহবর ব'লে সমস্ত ত্যাগ ক'রে দ্রে চ'লে গেল। আকাশের রদবর্ণগন্ধছটো সব তার চৈতত্তের থেকে অপসাবিত হল. সে আপনাকে আপনার মধ্যে প্রতিসংহার ক'রে অসীমকে পাবার জ্বন্ত পণ কর্ল। তারপর কোথা থেকে একটি ছোট মেরে দেখা দিল, দে নিরালয় ছিল, সন্ন্যাসী তাকে গুলায় নিয়ে এল। মেরেট जादक शीदत शीदत स्मरहत वसत्न वांध्ना। ज्यन मधामीय मरन धिकात हन। म ভাব তে नाश्न (य, এই তো প্রকৃতি মান্নাবিনী দৃতী হলে এমনি ক'রে स्याप्रिक पाठितप्रष्ठ। तम मन्नाभीक वनीय १०१क विकिश्न करत मौमान सर्पा স্মাবদ্ধ কৰ্তে চায়। এই সংগ্ৰাম ধখন চল্ছে, তথন একদিন পে ক্ৰোধেৰ বশে মেরেটিকে ত্যাগ কর্ল। মেরেটি যাকে নিতাস্তভাবে আশ্রম্মণ ব'লে ক্লেনেছে ভার দেই অবলম্বন চ'লে যাওয়াতে দে ছিন্ন লভার মতো লুটিয়ে পঙ্ল। সন্মাসী যতদূবে স'রে থেতে লাগ্ল, ততই মেয়েটির ক্রন্দন তার জদয়ে এসে ধ্বনিত হতে লাগ্ল। শেষে মেয়েটি যে বাস্তব, মায়া নয়—তা, সে হৃদয়ের বেদনার আঘাতে বুঝ্তে পার্ল। মনের এই অবস্থায় সে দূরে দাঁডিয়ে লোকালরের দৃশ্র দেখতে লাগ্ল,—তার মাধুর্যো, মাত্রবের ক্ষেত্রীতিসম্বন্ধের সরসভার তার মন ভ'রে উচ্ল। সে বল্লে,—"ফেলে দিলুম আমার দও **ক্ষওপু—দৃর হয়ে** যাক্ এসব আবোজন। সীমাকে বর্জন ক'রে তো আমি क्लामा मठारे भारे नि। এकि ছোট মেরেকে শ্লেষ্ঠ কর্তে পেরেছিল্ম ৰ'লেই তো সেই রসের মধ্যে অসীমকে পেয়েছি—তার বাইরে ভো দেই **चनस्वत्रद्भाग अकाम (नहें !'' — ध**रे ভावটोरे चामात नारिकारित पून स्व।

'প্রকৃতির প্রতিশোধে'র প্রতিপাশ্ব বিষয়টা বাধ্যকালে আমার নানা কবিতার ব্যক্ত হরেছে। সীমার সঙ্গে বোগেই অসীমের অসীমহ, একথা উলোপনিষ্যে বৃদ্যা হরেছে। 'অবিশ্বা' বা সীমার কোধকেই একার ব'লে শানার মধ্যে অন্ধ তামসিকতা আছে; আবার অদীমের বোধকেই একান্ত ক'রে দেখার মধ্যেও ততোধিক তামসিকতা আছে; কিন্তু যথন বিস্থা অবিস্তাকে মিলিয়ে দেখ্ব তথনই সত্যকে জান্ব।

দীমাকে নিন্দা করা গায়ের জোরের কথা। ঐকাস্তিক (absolute) দীমা ব'লে কিছু নেই। সব দীমার মধ্যেই অনস্তের আবিভাবকে মান্তে হবে। প্রাক্তবির প্রতিশোধে'র সন্ন্যাসী দীমাকে 'না' করে দেওরার যে মৃক্তি, তার মধ্যে দিরেই সার্থকতাকে চেয়েছিল; কিন্তু এ নিয়ে যার অন্ধকারে।

তেমনি আবার সীমা-জ্বগৎকে অসাম থেকে বিষ্কু ক'রে দিয়ে তার মধ্যে বন্ধ হলে সেও ব্যর্থতা। কাব্যে শব্দকে বাদ দিয়ে যে রসিক রসকে পেতে চায়, সে কিছুই পায় না। আবার রসকে বাদ দিয়ে যে পণ্ডিত শব্দকে পেয়ে বসে তার পণ্ডতারও সীমা নেই।

৩০ নম্বর

(১ম লোক)

যে-দেহভেলা অবলম্বন করে এতদিন জীবনম্রোতে তেনে বেড়াচ্ছিলুম, সেই ভেলাকে এবার ভাসিয়ে দাও। তাকে ফেলে দাও, সে চলে যাক্। তার সঙ্গে আমার আর কোন যোগ নেই, এবাব তার কাজ ক্রালো। অমুক ঘাটে পৌছব কি না, আমার কি হবে, আলো-অন্ধকারেব মধো দিয়ে কোন্ পথ বেয়ে যাবে ?—এ-সব প্রশ্ন নাই কর্লুম, এর উত্তর নাই বা জান্লুম!

(২য় শ্লোক)

না-জানার দিকে যাত্রা করাই তো আমার আনন। অজানাই আমাকে এথানে এনেছিলেন—তিনিই আমাকে আমার এই জন্মগ্রহণের দ্বারা জানা-শোনার বন্ধনে বেঁধেছিলেন, আবার তিনিই তো সব গ্রন্থি খুলে সব চুকিয়ে দেবেন। আবার ঠিক সব থাপ থেয়ে যাবে, কোনোথানে অসামঞ্জ্ঞ থাক্বেনা। জানা এসে ব'সে ব'সে সব বাঁধে। তাই আমরা এথানে এসে সব ব্রক্ষা গুছিরে নিই, নানা পরিচন্নের মধ্যে খুব ক'সে সব জেনে নিই, 'এ আমার অমৃক, সে আমার অমৃক।' এইসব জানাজানির ভিতরে বন্দী হই। এম্ন সম্বে হঠাৎ অজ্ঞানা থামকা এসে ধাঁধা লাগিরে দিয়ে জানার বাঁধন সব ছিন্ত দেয়।

(৩র প্লোক)

এই ভেলার যে হালের মাঝি সে তো অক্সানা। সেই অপরিচিতই আমার কর্ণধার। সে আমাকে এগিরে নিরে যাছে। অক্সানাই আমার ক্সানার বন্ধন কেবলি ছিন্ন ক'রে ক'রে আমাকে মৃক্তি দের। সে থেকে থেকে বার বার মৃক্তি দিতে দিতে আমাকে নিরে যাবে, তার সক্ষে আমার এই সম্বন্ধ। তাই ত আমার সাম্নের দিকে যে অক্সানা আছে, তাকে আমি ভয় কর্তে চাইনে।
—আমি ক্সানি সেই আমার হালের মাঝি, সে আমার এই ক্সীবনেও আমাকে এগিরে নিরে চলেছে। মৃত্যু হঠাৎ এসে আমাকে চমক লাগিরে দের।
আকিস্নিক ঘটনা আমাকে ত্রন্ত করে।—এমনি ক'রে নির্দ'র যিনি, তিনি আমাকে ভালোবাসেন ব'লে অপ্রেরির অপরিচিত্তের অভিজ্ঞতার মধ্যে দিয়ে আমাকে নিয়ে গিয়ে আমার ভয় ভাকিরে দেন।

(৪র্থ শ্লোক)

তুমি ভাব্ছ যে, যে দিন চলে গেছে তাকেই ভালো জানি, অতএব তারই প্নরারতি হোক, তাকেই বারে বারে ফিরে পাই। কিন্তু তুমি যে-কৃল ছেড়েছ, সে কৃলে আর কিছুতেই ফিরে যাবে না। তোমার কি পিছনের পরেই একমাত্র নির্ভর? ঐ পিছনই কেবল বিশ্বাসযোগ্য ? যা অতীত তাই কেবল তোমার প্রধান সম্পদ্ধ, এম্নি কি তুমি ভাগ্যহার। ? কেন তুমি বল্জে পারলে না সাম্নের পরে তোমার বিশ্বাস আছে, সেখানে তোমার ভয় নেই ? পিছন তোমাকে কিছুতে বেঁধে রাখ্বে না, এতেই তোমার আনন্দ হোক্!

(৫ম শ্লোক)

যটা বেজেছে, সভা বে ভেকে গেল,—নৌকো ছাড়তে হবে, জোনার উঠেছে। তিনিই অজানা বার সঙ্গে দেখা হবে ব'লে মনে করি, কিন্তু বার মূখ দেখা আমার হর না। তাঁকে জানি না ব'লে একটু ভর হয় বই কি, একটু বুক মুলে ভঠে, মনে হর কি জানি কেমন ক'রে অজানা আমার কাছে দেখা দেবে। এই ভাষল পৃথিবী তার স্বালোক নিরে এবারকার মতো দেখা দিল; আবার আজানা কেমন করে কেখা দেবে কে বল্তে পারে। এই পৃথিবীতে জনামূহত বেকে স্বালোক লোকালরের নানা দৃশু, নানা ঘটনা, নানা অবহার মধ্যে অজানাকে জনশাই জানার ভিতর দিরে পর্ণতে করতে চলেছি।

জ্ঞানাকে কেবলি জানা, না-পাওয়াকে কেবলি পেতে থাকাকেই তো জীবন বলে। এই জীবনকে তো ভালোবেদেছি, অর্থাৎ সেই জ্ঞানাকে লেগেছে ভালো। সমুদ্রের এ পারে তাকে ভালো লেগেছিল, সমুদ্রের ওপারেও তাকে ভালো লাগ্রে।

২৮ নম্বর

(১ম প্লোক)

তুমি মাহ্ব ছাড়া আর-সব স্বীবকে বেট্কু দিরেছ সে সেইট্কুই প্রকাশ করে। পাথীকে স্থর দিরেছ, সে সেই বাঁধাস্থরের দানট বারবার ফিরিয়ে দের, তার বেনী সে দের না। আমাকে তুমি যে-স্থর দিরেছ, সে স্থর তোমার, কিন্তু আমি তার বেনী তোমার ফিরিয়ে দিই—আমি যে-গান গাই, সে গান আমার।

(২য় স্লোক)

তুমি বাতাসকে ধ'রে রাখোনি। তার কোনো বাঁধন নেই, সে অনারাসে তোমার সেবা ক'রে, বিশ্বকে বেষ্টন ক'রে কাজ করে। আমাকে তুমি বত বোঝা দিয়েছ তাকে আমার ব'য়ে ব'য়ে বেড়াতে হয়। আমার সেই বন্ধন থেকে মৃক্তিকে আপনিই উদ্ভাবন কর্তে হবে। আমি একে একে নানা বন্ধনদশার পাশমোচনের মধ্য দিয়ে মৃত্যুর থেকে মৃত্যুতে আপনাকে রিজ্ঞহন্ত ক'রে ব'য়ে নিয়ে যাব। আমি তোমার সেবার জন্ম স্বাধীনতা অর্জন কর্ব। এই হাডছটিকে মৃক্ত করে তোমার কাজের জন্ম নিমৃক্ত কর্ব, বল্ব,—তোমার আদেশে তোমারই কাজে এখন থেকে প্রন্তুত্ত হলুম। তুমি আমাকে বন্ধন দিলে, কিন্তু আমাকে ভিতর থেকে মৃক্তিতে বিলীন হতে হবে,—আমার কাছে তোমার দাবী বেশী।

(অ শ্লোক)

ভূমি পূর্ণিমার হাসি চেলে দিয়ে—ধরণীকে হাস্তমর সৌন্দর্য দান করেছ। ধরণীর অন্তত্তে বে-রস নিহিত আছে, সে ফিরে সেই রসকে চেলে দিছে। কিছু আমাত্র ভূমি গুঃশ দিবেছ, তার ভার আমার বইতে হছে। সমত জীবনের এই ছংবকৈ অঞ্জবে ধুরে ধুরে তাকে আনন্দ ক'রে তুলে আমাকে তোমার কাতে ফিরিরে দিতে হবে।
আমি দিনশেষে মিলনক্ষণে সকল ছংথকে আনন্দমর ক'রে তোমার কাছে নিয়ে
যাব—আমার উপর এই ভার রয়েছে।

(৪র্থ প্লোক)

তুমি তোমার এই ধরণী মাটি দিরে তৈরী করেছ, এই ধরণী আলো
অক্কলারে স্থপ-তুঃথে মিণিত হরে রব্বেছ। আমার তুমি এই পৃথিবীতে

পাঠিয়েছ, কিছ কিছু সম্বন্ধ দিলে না,—একেবারে হাত শৃশু ক'রে দিয়েছ,

আর আড়ালে থেকে তুমি আমার দেখে হাস্ছ। তুমি আমাকে এমনি

অবস্থায় মাটতে রেখে দিয়ে বল্ল, "তোমার উপর ভার হচ্ছে এখানে স্থল রচনা কর্বার। তুমি অক্কলার খেকে আলো উদ্ভিন্ন ক'রে, মৃত্যু খেকে

অমৃতকে বহন ক'রে এনে তোমার আপনার জীবন দিয়ে এই মর্ত্যলোকে

স্থল্গ গ'ড়ে তুল্বে, তোমার উপর এই ভার রইল।"

(৫ম শ্লোক)

প্রকৃতিতে সব জীবকে তুমি তোমার দানের হারা ভূষিত কর্লে এবং যাদের যা দিয়েছ তারা সেই সম্পদ্কেই প্রকাশ কর্ছে। কেবল আমার কাছে তোমার দাবী রয়েছে, আমার কাছে তোমার আকাজ্ঞার অস্ত নেই। তাই আমি নিজের প্রেম দিয়ে যে-অর্থ্য রচনা করে দিছি, সেই রয়ের দান তুমি তোমার সিংহাসন থেকে নেমে এসে বক্ষে তুলে নাও। তুমি আমাকে যা দিয়েছ তার পরিমাণ অল্প। কিন্তু আমি যে দান তোমাকে ফিরিয়ে দিছি তা অনেক বেশী।

তুমি আমাকে অর দিরে তোমার জীবলোকে ছোট নগণা প্রাণী ক'রে দাওনি। কারণ, আমার প্রতি তোমার যে-দাবীর জোর আছে তাতে আমার যা শ্রেষ্ঠ ধন তা আমার জীবন থেকে উৎসারিত হয়। আমি কেবল বর নিরে জনগ্রহণ করেছি। কিন্তু ভোমার দাবী আছে ব'লে তা সঙ্গীত হয়ে প্রকাশিত হয়। তুমি আমাকে বন্ধন দিরেছ, কিন্তু বলেছ যে এই কন্ধনকৈ ছিন্ন ক'রে কেল্ডে হবে। তুমি চাও বে আমি মৃক্তি লাভ করি। ভোমার দাবী আছে ব'লেট মান্তবৃদ্ধে মুর্যেশ্বর উপান্ধ আরম্ভুক্ত মুরে নেই

ছঃখকে আনন্দধারার ধৌত করে পূর্ণ ক'রে তুল্তে হয়,—মান্থরের জীবনের গতি তাই মৃজির দিকে ধাবিত হয়। কিনে তার চঃখমোচন হয়, সেই সন্ধানে সে প্রবৃত্ত হয়। তুমি পৃথিবীকে আপনি রচনা কয়লে, কিন্তু শর্প রচনা কয়বার ভার দিলে মালুষের উপর। পৃথিবীতে মালুষের যে প্রচনা হল তাকে তো জ্যোতির্ময় বলা যায় না। কিন্তু মানুষকে সেই শৃন্ততা থেকে এই মর্তাধামেই অপূর্ব আলোকে উদ্রাসিত স্বর্গ রচনা ক'রে তুলতে হবে। তাই মানুষ স্থির হয়ে বসে নেই—তার বিরাম নেই, শান্তি নেই। তার সঙ্গে তোমার এই যে কঠিন সম্বন্ধ স্থাপিত হয়েছে তারই তাগিদে সে আপনার অন্তর্নিভিত্ত সম্পদ্কে ক্রমাগত ব্যক্ত করে। তাই তোমাব ক্রন্ত তাব যে প্রেমেব অর্থ্য রচিত হয়, তাকে তুমি বছমূলা রয়ের মতো আদরের সঞ্জে বক্ষে তুলে নাও।

মান্তব তার ইতিহালে বে মুগধন নিরে যাত্রা আবস্ত কবে, তাব মণ্যেই তাে সে থেমে থাকে না । সাহিত্য-রাজনীতি-ধর্ম-কর্মতে সে ক্রনাগত উ ছর হ'রে উঠ্ছে। মৌমাছিবা যগন চাক বাঁধ্তে স্থক কবে, তথন যাব যে পরিমিত সামর্থ্যকু আছে দে সেই অন্তমাবে একই বাঁবাপথে কতার স্থির ক'রে নিয়ে কাজে লেগে যায়। কিন্তু মান্তম তাে সঙ্কীর্ণ পথে চলে না; তার যে কোথাও দাঙাবাব জাে নেই। তার হাতে যে উপকবণ আছে তাকে বিশালতব ক'রে তুল্তে হয়। সে আপনাকে আরাে বিকশিত কর্বে, সে আরাে এগিয়ে চলবে। ইতিহাসে তাব এই আহ্বান রয়েছে।

মাষ্থ্যের বর্তমান ইতিহাসেও এই বাণী রয়েছে। সে অতীত মানবদের কাছ থেকে যা পেয়েছে তাতেই আবদ্ধ হয়ে থাকলে চল্বে না—যা পেয়েছে তার চেয়ে ঢের বেশা সম্পদ্দিয়ে তাব সাজি তর তেহবে। মায়ুরের এই গৌরব আছে। সে পৃথিবীকে স্থানর ক'রে তুল্ল, বল্ল—এই মাটির ধরা আমাকে বা দিয়েছে, আমি তার চেয়ে আরো বেশী একে দিয়েছি।

"ছ:খখানি দিলে মোর তপ্তভালে"—দেখানে অপূর্ণতা সেথানেই শক্তির থবঁডা, সেথানেই ছ:খ। যথন মামুষের বাইরের অবস্থার সঙ্গে অসামঞ্জন্ত ঘটে, সে জীবনের পূর্ণ সামঞ্জন্তকে পার না, তখন তাব জীবন-বীণা ঠিক সুরে বাজে না। 'এই যে ছ:খের বাধা মামুষের পথ বোধ করে, এরই ভিতর থেকে তাকে পথ কেটে বার হতে হবে। সে শক্তি থাটিয়ে মহন্তকে বাধামূক্ত ক'বে প্রকাশ কর্মে, সকল আন্তরিক দৈল অপসারিত ক'রে জীবনকে প্রতিষ্ঠিত কর্মে—ক্ষিক সাধনা। ভার এই গোড়াকার দৈল্পই যদি চরম হত, তবে সে

প্রকরকম ক'রে বোঝাপড়া ক'রে নিতে পার্ত। কিন্তু তার অন্তরে ধর্মবৃদ্ধি বা আর কোনো অন্তভূতির চেতনা আছে যা তাকে ক্রমাগত মহন্দের পথে, সমুধ পানে চালিত কর্ছে।

২৯ নম্বর

এই কবিতা আগের কবিতার আত্মবঙ্গিক। এমন বেন কেউ মনে না করেন বে এতে আমি স্পষ্টির আরন্তের কোনো বিশেষ সময়কার কথা বলেছি; এতে কোনো স্টিত্ব নেই। এথানে 'আমি' মানে ব্যক্তি বিশেষ নয়, 'আমি' মানে হচ্ছে বে—আমি ব্যক্তবাতের প্রতিনিধিস্বরূপ। বিশেষ সময়ে আমি স্টি হই নি; এমন কোনো এক সময় ছিল যথন আবীঃ যিনি, তাঁর প্রকাশ ছিল না— তা বিশ্বাস করা যায় না।

(১ম শ্লোক)

তুমি যে কোনো সময়ে অবাক্ত ছিলে তা নয়, কিন্তু যদি কয়না কয়া
য়ায় যে আমি কোপাও নেই, তবে সেই অবস্থায় কি রকম হবে এখানে
তাই আমি বলেছি। আমি যথন নেই, তথন তুমি আপনাকে দেখতে
পাও নি। সে অবস্থায় কারো জভ্যে তোমার পথচাওয়া ছিল না। এই
যে স্থ-ছ:খের ভিতর দিয়ে আজ ধীরে ধীরে আমার বিকাশ হচ্ছে, এই
যে আমার এই চলার জভ্য তোমার অপেক্ষা আছে, এই যে তুমি আমার
জভ্ত প্রতীক্ষা ক'রে থাকো, তথন এসব কিছুই ছিল না। যথন আমার
অতিম ছিল না ব'লে আমি কয়না কয় ছি, তথন এই যে তু'পারের আকাক্ষার
আবেগের হাওয়া আজ বইছে, সেদিন তা ছিল না। আজ আমার থেকে
তোমার কাছে, আর তোমার থেকে আমার কাছে কিছু কিছু aspiration,
আকাক্ষা আস্ছে যাক্ছে—আমাদের উভয়ের মধ্যে দেওয়া-নেওয়ার আসাবাওয়ার হাওয়া বইছে। কিন্তু সেদিন তা ছিল না—এপারের সঙ্গে ওপাবের
কোনো যোগাযোগ ছিল না।

(२व झाक)

আমার। মধ্যেই তোমার শ্রমির খেকে জাগরণ হল। আমার মধ্যেই বিশেষ থেকাল বল-বিশ্ব যেন যুম গ্রেকে উঠ্ব। আবদার বে ফুল শুট্ৰ, তা আমার অন্তই বিকশিত হল, নইলে তার দরকার ছিল না।
আমাকে তুমি এখানে নিয়ে এনে কত রূপে যে ফোটাচ্ছ তার ঠিক নেই।
তুমি কত রূপের দোলার আমাকে দোলালে ("আমাকে" অর্থাং আমার
নিয়ে বে বিশ্ব, যে দুশ্ব, সেই সকলকে)।

ভূমি ধেন আমাকে বিক্ষিপ্ত ক'রে দিলে। আমাকে এমনি করে ছড়িরে দিলে ব'লেই ভোমার কোল ভ'রে উঠ্ল। ভূমি আমাকে ফিরে ফিরে নব নব ক্লাক্তরে ন্তন ক'রে ক'রে পাছে।

(৩য় শ্লোক)

আমাকে এই নানা ভাবে পাওয়াতেই তোমার আনন্দ। আমি এলাম অমনি সব শক্ষিত হয়ে উঠ্ল—নইলে তার আগে সব স্তক ছিল। আমার মধ্যেই তোমার হঃখ, আমি এসেছি ব'লেই তোমাকে হঃখ দিলাম। আমি এলাম ব'লে যে আনন্দের উদ্বোধন হল, তার মধ্যে তেজ থাক্ত না, যদি হঃখ তাকে না জালাভ—আমার হঃখের ভিতর দিয়েই দেই আনন্দিশা অ'লে উঠ্ছে? জীবনমরণের এই যে আন্দোলন এ আমার নিয়েই হয়েছে। আমি এলাম ব'লেই তুমি এলে। আমার স্পর্শে তুমি আপনাকে স্পর্শ কর্লে, আমার পেয়ে ভোমার বক্ষ ভরে উঠ্ল।

(৪র্থ শ্লোক)

আমার কত অভাব জটি অনম্পূর্ণতা আছে, তাই আমার চোথে লক্ষা, মূথে আবরণ; আমি সেই আবরণের ভিতর দিয়ে তোমায় দেখৃতে পাই না। তাই আমার চোথ দিয়ে লল পড়ে, পদে পদে বাধা আছে ব'লে লীবনে ভোমার সঙ্গে মূথোমুখি হল না। কিন্তু আমি জানি যে আমি এমনি ভাবে আজ্বন্ধ আছি ব'লে তুমি অপেক্ষা ক'রে আছ—কবে এই আবরণ উল্পাটিত হবে। এই আবরণ একদিন খ'সে প'ছে যাবে না তা নয়—কারণ ভোমার আমাকে দেখ্বার জন্ত কৌতুকের অন্ত নেই। তুমি জনশং আমার মধ্যে ভোমার দৃষ্টি পেতে চাও। আমাকে দেখ্বে ব'লেই তুমি জনশং আলার মধ্যে ভোমার দৃষ্টি পেতে চাও। আমাকে দেখ্বে ব'লেই তুমি জন্ত আলার এই সুর্বিভারার আলো জালিবেছ, তুমি আমার আজার সঙ্গে পরিচিত হবে বলেই জ্বোজার এই সুর্বিভারার আলো জন্তে।

[আলোচনা]

(5)

"আমি এলেম, এল ভোমার ছ:খ"—বিশের ছ:খ তো আমার সীমাব মধ্যেই আছে। ভোমার প্রকাশে যদি ছ:খ এসে থাকে, ভবে সে তো আমিই ববে এনেছি। তোমার আপনার মধ্যে ছ:খ নেই, আমিই তাকে এনেছি। কিন্তু তাতেই তো সব শেষ হয়ে যার নি। আমার এই ছ:খের ভিতর দিয়েই তোমার আনন্দের উপলব্ধি হচ্ছে। অধৈতের মধ্যে যেটা হৈত সেটাই বড কথা। শুধু monism তো negative। সীমা সম্পর্কিত ছ:খের বিচিত্র সীলার ভিতরে যে আনন্দ সেটাই সত্যিকারের জিনিস।

এই কবিতার "আমি" মানে হচ্ছে স্ট বগং।

(?)

আমাদের দেহ হচ্ছে অদীমের প্রতিরূপ। সূর্যের আলো, প্রাণ, বাতাস, ক্লা, আমার দেহ—এরা সব আকস্মিক জিনিস নয়, এদের মধ্যে নিশ্চয়ত অদীমের background আছে। আমার মন যদি একটা isolated fact হয়, তবে আমি কিছুই জান্তে পার্ব না। কিন্তু আসলে আমার মনেব একটা বাস্তবভার background আছে ব'লেই আমি বৃদ্ধির ও চৈতত্তেব ক্লাংকে পাছিছ।

বিজ্ঞান এ পর্যন্ত ব'লে এসেছে যে প্রাণ ও অপ্রাণের মধ্যে ছেদ আছে।
প্রাণবান্ জিনিস প্রাণেই নিঃস্থত হচ্ছে, কম্পিত হচ্ছে। বিজ্ঞান একে
Radio-activity-র গতিনীলতা বলেছে। কিন্তু জগতের প্রাণের এই
গতিবেগ অসীমেরই গতিনীলতার একটা প্রকাশ। বিজ্ঞানবাদ অন্তুসারে
অনু-পরমাণ কিছুই জন হয়ে নেই, তারা নিজের বেগে চলেছে—nucleus
এর চারিদিকে electron-শুলি সৌরজগতের আবত'নের মতো ঘুর্ছে, কিন্তু
এই যে আমরা আপনাকে জান্ছি, আমাদের মনের সঙ্গে বিশ্বনির্মের চিব্তুন
বোগ ররেছে, এটা কেবল একটা আক্মিক যোগ, আর দেইমনের উপব
বে personality আছে, তার কি infinite background নেই ও এ
হতেই পারে না। শুরু ক্রিল্—আবিক্তিক জগতেও অনীম আছেন,
ভার আনমের ব্যেই তীর personality-র বিশ্বান। আর এক অর্থে

impersonal। আপনাতে আপনার উপলব্ধি ও ঐক্যবোধের মধ্যে যে আনন্দ আছে তাকেই personality-র বোধ বলা যায়। আমার personality তথনই তৃঃথ পায় যথন বাইরে কিংবা অন্তরে এই ঐক্যেব বিচ্যুতি ঘটে।

শৈশব থেকে এ পর্যান্ত যে একটা ঐক্যধারার মধ্য দিয়ে আমি এসেছি—
যার মধ্যে আমার আনন্দ আছে, সেই ঐক্যের ভাবটিকেই আমি personality বলেছি। অসীমের personality ও আমাব ঐক্যবোধের মধ্যে
harmony আছে। যথন অসীমন্তরূপ হৈতের মধ্যে ঐক্যকে নিবিডভাবে
অমুভব করেন, তথনই চাঁব মধ্যে আনন্দ ও প্রেম জাগে। বন্ধুদের আত্মার
প্রেমের মধ্যে এক জারগায় বিচ্ছেদ আছে। কিন্তু তার মধ্যেও একটা
ঐক্যত্ত্বে আছে। বিশ্বের মৃলেও এই ব্যাপারটি আছে। আমি মাব এক
'আমি'র প্রতিরূপ। আমার অন্তরের উপলব্ধিতে জীবলোকের নাট্যলীলা
(drama of existence) আছে। আমার থাকার মধ্যে বিশ্বের মূলেব
এই থাকা আছে। আমি মানে একমাত্র 'আমি' নয়, আমার ভোগ কবা,
দেখা, জানার উপর যে আমিও আছে তাই। আমি এসেছি ব'লেই ছঃও
আছে, আনন্দ আছে। আমি এসেছি ব'লেই এপার থেকে ওপাবের চিরস্তন

৩১ নম্বর

তোমার নিজের বিধে তোমাব অধিকারের কোনো থকাতা, কোনো বাধা নেই। তোমার মধ্যে কোনো অভাব নেই, তুমি পূর্ণ। অভাব যদি না থাকে তবে তো ঐশ্বর্য থাকার কোনো মানেই থাকে না। কেননা অভাবের অভাবকে তো ঐশ্বর্য বলে না, অভাবের পূর্ণতাকেই বলে ঐশ্বর্য। চাওয়া ব'লে তোমার কিছু নেই। স্কৃতবাং পাওয়া ব'লে তোমার কিছু থাক্তে পারে না। তা হলে তোমার ঐশ্বর্য, তোমার আনন্দ থাকে কই?

তোমার নিজের কোনো প্ররোজন নেই ব'লেই আমার মধ্যে দিরে প্রারোজন ক্ষ্টি করেছ। তোমার বিশ্বকে তুমি আমার ভিতর দিরে কিরে পাক্ষ, যেন হারাবো ধনকে নতুন ক'রে লাভ করছ। তোমার যে সম্পদ ভোৰার ভাণ্ডারে সম্পূর্ণ হরেই আছে, সে ভো ভোষার পক্ষে শতীত; ভাকেই তুমি নিয়ত আমার মধ্যে দিয়ে বর্তমান এবং ভবিশ্বতের অভিমুখে বহুমান করে দিছে।

প্রতিদিনের স্থাগরণ দিয়ে আমি প্রতিদিন দোনার সর্বোদর কিনে থাকি।
আমাকে যদি না কিন্তে হত ভাহলে এ স্বর্যোদ্যে কোথাও কোনো আনন্দ
থাক্ত না, এ স্বর্যাদ্যে প্রভাতী গান স্থাগ্ত না। প্রতিদিন এ'কে নৃত্ন
ক'রে পাই ব'লেই তো এ'তে আদন্দের মূল্য লাগে। এ'কে হার পেতেই
হয় না, তাঁর কাছে এর আনন্দ কোথায় ? তাই ত আমার পাওরার ভিতর
দিয়েই ভোমার প্রভাতের আনন্দ তোমাকে স্পর্ণ করে।

তোমার হাতে রদের পরশ-পাধরধানি আছে। কিছু তোমার মধ্যে যদি রদ দম্পূর্ণ হরেই থাকে, তাহলে সেই পরশ-পাথরধানিকে তুমি চিন্বে কি ক'রে? ক্ষণে ক্ষণে তুমি তাকে যাচাই কর্বে ব'লেই তো আমি আছি। তোমার প্রেমের ক্ষাম্মণি লেগে আমার চিত্ত সোনা হয়ে ওঠে, সেই সোনাই তোমার যথার্থ সম্পান, স্নামার অভাব, আমার অপূর্ণতা, আমার বাধার ভিতর দিরেই তুমি তাকে লাভ কর। তোমার পরিপূর্ণতা ঘথন আমার শৃত্তকে পূর্ণ করে, তথন তুমি আপন পূর্ণতার স্বরূপটিকে নতুন নতুন ক'রে দেখ্তে পাও,—তোমার প্রেম আমার কাছে ভোমার কিছে ভোমার প্রেমের ভিতর দিয়ে প্রতিকলিত হয়ে তোমার কাছে পৌছর—তোমার কাছে ভোমার প্রেমের পরিচর আমারই মধ্যে।

৩২ নম্বর

चांच धरे मित्तर भिर्म धरे ति महा। जाशन काला किल र्वाछित वांचिक शरतिका, जारक चांमि श्रीति । जारक विनाश्काम धरे किलान शरतिका, जारक चांमि श्रीति । जारक विनाश्काम धरे किलान श्रीति । जारक विनाश्काम धरे किलान और निर्माण । अहे माज, और करान थे प्रिति शक्का किलान निर्माण किलान निर्माण किलान निर्माण किलान निर्माण किलान निर्माण किलान माणाम किलान माणाम किलान प्रमाण किलान माणाम किलान प्रमाण किलान माणाम किलान प्रमाण किलान माणाम किलान क

ঠেকিরে গেল, আমি তা অন্তরে অন্তব কর্লুম। ঐ বে সন্ধ্যা আন্তে আন্তে
অন্ধন্যর আকালে নীহারিকাকে স্রোভে ভাসিরে দিল, ঐ যে আকালে
ছারাপথে তারার দল ক্রমে ক্রমে স'রে যাছে, তা চোথের সাম্নে পদ্মার
ভরক্ষরীন স্রোভের প্রতিবিশ্বের মধ্যে দেখ ছি, যেন সন্ধ্যা সেই তারার দলকে
ভাসিরে দিরেছে। ঐ যে সন্ধ্যা সোনার চেলি রাত্রের আভিনার অন্ধকারে
বিছিয়ে দিয়েছে, সে যেন নিদ্রায় অলস দেহ নিয়ে সেই চেলি মেলে দিয়েছে।
আর ঐ যে রাত্রির কালোঘোড়ার রথে চ'ড়ে সন্ধ্যা সপ্রধির ছায়াপথে আগুনের
ধ্লো উড়িয়ে দিয়ে বিদায় নিল—এই তো সব চোথ মেলে দেখ লুম! সম্ভা
বিশ্বের্কাণ্ডের মধ্যে এই সন্ধ্যা এসেছিল, এত বড় কাগু, এত ঘটা, থেবল একজন
কবির জন্তই হল। তার কাছে এসে সন্ধ্যা তার করণ স্পর্ল রেখে গেল।
অনস্তকালের মধ্যে এমন অন্ধণম সন্ধ্যা একজন কবির কাছে দেখা দিল,—এড
আর্মেন্ডন, এই আশ্বর্ধ ব্যাপার তাকে স্পর্ল করে চ'লে।গেল। এমনি ক'রে
ভূমি এক নিমিষের পত্তপুটে অনস্তকালের ধনকে ভ'রে দাও—এমন যে অমৃত
ভা ক্ষণকালের ভিতরে সার্থক করে তোল—এই তো তোমার লীলা।

৩৩ নম্বর

এই যে আমি চলেছি, জীবনের গথে নানা অভিজ্ঞতাব ভিতরে আমার যে বিকাশ হচ্ছে, বিশ্বে এটা একটা সার্থক বাাপার। আমি আমার চলার সঙ্গে সঙ্গে আমার চৈতত্তে বিশ্বকে বহন ক'রে নিচ্ছি। আমি চিত্তের আবরণ উদ্বাটিত ক'রে পূর্ণভার দিকে অগ্রসর হব, এর জ্বন্থে বিশ্বে অপেক্ষা আছে। বিশ্ব আমার ক্রমিক বিকাশের দিকে চেরে আছে। আমার চিত্ত যত্তুকু পরিণামে গিয়ে ঠেক্ছে তারই জ্বন্থ বিশ্ব প্রতীক্ষা ক'রে আছে।

আমার মধ্যে যে শক্তি যে আকাজ্ঞা আমাকে চালাছে, তা বহির্জগৎ বেকে বিদ্যিন নর, বিশের মধ্যেও এই অক্রসর হবার, পরিব্যাপ্ত হবার আকাজ্ঞা আছে—তা কেবল আমারই একলার সামগ্রী নর। তাই আমার আকাজ্ঞার পরিভৃত্তিতে বিশে আনন্দ আছে। যদি আমার চলা এমন বিদ্যিন সভা হড়, ভবে বিশ্বে এমন পতিবেগ থাক্ত না, বিশ্ব মুশ্ডে যেত। কিন্ব আসলে একটি মুহৎ ক্ষেত্রে আমার আকাজ্ঞার স্থান আছে। এই অকুভব ক'রে এই কবিতা

(भ (भ्राक)

আমার মধ্যে কি একান্ত নিঃসঙ্গতা আছে, চিত্ত ছাড়া বাইরে কি আমার কোনো সার্থকতা নেই ? হাঁ, আছে। আমার দোসর আছেন, তাঁর আকাজ্ঞার সঙ্গে আমার দোসর আছেন, তাঁর কালে ঠেক্ছে। এই বিশ্বের যে রূপরসগন্ধ আমার চিত্তে আঘাত কর্ছে, তাদের অন্তনিহিত বিশ্বের আনন্দ আমাকে নিরেই পূর্ণতা লাভ কর্ছে। আমাব বিকাশের সঙ্গে সঙ্গে এই আনন্দের বিকাশ হচ্ছে। যথন আমার চিত্ত সন্ধৃচিত হয় না, আপনাকে উদ্ঘাটিত করে, তথনই এই পূর্য চন্দ্র তারা পূর্ণ আলো দের, সেই শুভক্ষণে বিশ্বের সৌন্দর্য স্থলরতম হয়ে প্রকাশিত হয়। আমি পায়ে পায়ে এগোচিছ, আর বিশ্বজ্ঞাণ প্রতি পদক্ষেপে পূলকিত হয়ে উঠছে। আমি যে চলেছি এর শন্দ কেউ শুন্ছে বা শুন্ছে না, তা আমি আনি না; কিন্তু আমার চলার ধ্বনি এক জায়গায় গিয়ে পৌচছেছ। আমি জানি যে আমার এই যে আলো-অন্ধকার স্থপ-ছঃধের ভিতর দিয়ে যাতা, এব পদশেশ একজন শুন্তে পাছেছন।

(>য় শ্লোক)

এই যে জন্ম থেকে জ্বন্মে নব নব জীবনের মধ্যে দিয়ে আমার পদ্মটির এক একটি দল উদ্যাটিত হচ্ছে, এ তো ভোমারই চিত্ত-সরোবরের মধ্যে। তোমার স্থানস-সরোবরে আমি পদ্মটির মতো বিকশিত হয়ে উঠ্ছি—নব নব জীবনে তার দলগুলি গুলে যাছে। এই ব্যাপার দেখ্বার জ্বন্থ সকল গ্রহতারা চারিদিকে ভিড় ক'রে ররেছে, এদের কৌতৃহলের অস্ত নেই। তারা সব আমারই জ্ব্য আলো দান ক'রে একদৃট্টে চেয়ে আছে।

তোমার যে জগৎকে সৃষ্টি করেছ, তা বেন জনকারের বৃত্তের উপর তোমার আলোর মন্ত্রী,—বেন তাতে একসঙ্গে অনেক কৃল ধ'রে রয়েছে। সেই মঞ্জরী তোমার দ্বুন্দিল হল্ত পূর্ণ ক'রে রয়েছে; কিন্তু তোমার স্থার্গ তো অমন ক'রে চোধের স্থান্ত্রে প্রকাশিত হল না, সে লাজ্ক, সে আমার মধ্যে স্কিরে আছে। তারার বিভিন্ন প্রকাশের মতো একটি গুল্ছে সে কুটে গুঠে নি, সে বেন পাডার জন্তরালে সৃষ্টিকেরাথা ফুলের মতো। কিন্তু তোমার এই গোপন স্থানি স্থোনে, সেগানেই জোমার সঙ্গে আমার পূর্ণ বিলন। তোমার লাজ্ক স্থানির বিশ্বের নব নব বিকাশের ভিতরে একটি একটি মণ মেনে বিশ্বের, মন্ত্রীর মতো

তার একেবারে পূর্ণবিকাশ হয় না। আমার অন্তরের ভিতরে তোমার সেই বর্গ, আমার প্রেমের বিকাশের সঙ্গে সঙ্গে তার পাপড়িগুলি খুলে দিছে। সেই গোপন উদ্বাটনের দিকে তোমার দৃষ্টি, তাতেই তোমার আনন্দ।

৪৫ নম্বর

(১ম লোক)

কে বলেছে, যৌবন, তুমি স্থেধে খাঁচাতে ছোলা জ্বল খেয়ে বাস কব্বে। কে বলেছে তুমি বাঁধা নিয়মে আহার কর্বে আর বিমুবে আর তোমাব খাঁচার চারিদিকে কাপড় দিয়ে ঢাকা থাক্বে ? আরে বাপু, তুমি কাঁটাগাছের উপরে চ'ড়ে ফিঙের মত পুছে নাচাও না কেন ? খাঁচার মধ্যে ব'সে ব'সে তোমার বাঁধা থোরাকী থেয়ে কাছ কি ?

তুমি পথহীন সাগরপারের পথিক, তোমার ভানা চঞ্চল, অক্লান্ত। তোমাকে আৰু অক্লানা বাসা সন্ধান ক'বে নিতে হবে,—জানার বাসা থেকে বেরিয়ে পড়তে হবে। ঝড়ে যে বছ আছে, তার মধ্যে ছঃখ-বেদনা থাকুক না কেন, তাকেই তুমি ঝড় থেকে ছিল কবে নিয়ে আস্তে পার—মাবামের ক্লিনিসকে তুমি চাও না—এহ তোমার দাবী।

(२व झाक)

নৌবন, তুমি কি আয়ুকে চাও ? তুমি কি নিবাপদেব চণ্ডীমণ্ডপে গন্তীর হরে ব'দে থাক্বে, এই কি ভোষার আকাক্ষা? তুমি কি আয়ুব কাঙাল হয়ে থাক্তে চাও ? না, তুমি যাকে সকান কর্ছ, সে যে মরণ। তু ম তো আয়ুর স্পৃহা রাথো না, তুমি যে অমৃতরদ পান কর্তে চাও । মৃত্যুর ভিতর দিয়েই সেই স্থাকে আহরণ কর্বে। মৃত্যুই সেই অমৃতের পাত্রকে বহন কর্ছে। তুমি জীবনের যে সার্থকতাকে চাও ৷ তোমার দেই প্রিয়া মরণ-ঘোমটার ভিতরে অবগুটিতা, সে মানিনী। তাকে পাবার দক্ষতাতেই তোমার পরিতৃষ্টি ৷ তার আবরণকে উদ্যাটিত ক'রে তুমি তাকে দেখ ।

(৩য় শ্লোক)

কোন জান জুমি সাধ্তে চাও ? শান্ত্রকারের পোকাকাটা তক্নো তুলট কাগজের প্রথির মধ্যে কি ভোমার বাণী আছে ? তোমার বাণী যে দকিণ- হাওরার বীণার আছে। তার স্থরে বে অরণ্য জেগে ওঠে। সেই বানীকে কি তুমি প্রাচীন শান্তপ্রাহ থেকে বার ক'র্বে । যে বানী তনে অরণ্যে নবকিশলরের উদ্দাম হর, সেই বানীই তোমার। তুমি তো পুঁথির পাতার মধ্যে
'খড়খড় সর্সর্কর্ছ না; তুমি ঝড়ের ঝকার তনে বেরিরে পড়। তোমার বানী চেউরে তার বিজ্যুভ্রা বাজার।

(৪র্ব লোক)

এই বে একটুখানি প্রাণের গণ্ডীর মধ্যে কোনো রক্ষে বেঁচে আছ, তোমার এই মারা কাটিয়ে উঠ্তে হবে। তুমি যে চিরকালের,—যতদিন মামুষ বাঁচ্বে ভতদিন, তোমার বিজয়ভলা বাজ্বে। স্থের আলোক যেমন কুয়াশাকে ছিল্ল ক'রে কেলে, তেমনি ভোমার যে দীপ্রিশিখা তা বন্ধসের এই কুহেলিকাকে ছিল্ল ক'রে কেটে ফেল্বে। বেমনতর কুঁড়ির বাইরে যে পত্রপুট, তা' সেই খড়্খডে পাতা কেটে ফেলে ভিতরের ফুলটিকে উদ্বিল করে, তেমনি বর্সক্লপ কুঁডির বাইরের যে আবরণ সেটা হয় জীর্ণতা, তার বক্ষ ঘুফাক ক'রে ভোমার অমব স্ক্লপটি—যা ঝর্বে না মর্বে না—ভোমার সেই চিরনবীন প্রকাশটি, জবা বিদীর্ণ ক'রে ফুটে উঠুক।

(থে প্লোক)

ভূমি কি ভোগের মানিতে জড়িত হয়ে ধ্লিতে আসক্ত হয়ে থাক্বে?
ভূমি কি ভোগের আবর্জনার বোঝার মানির ভারে লুট্টিত হয়ে থাক্বে?
ভোমার যে পবিত্র আনোর উজ্জলতা আছে, মাধার সোনার মৃক্ট আছে।
যে কবি ভোমার কবিতা রচনা করে, সে হছে অমি—ভার উপ্র-শিখা
উজ্জ্বভাবে অন্তে থাকে। আজুন ভোমার কবি, সে ভোমার অর্গান করে।
হর্ষ ভোমার মধ্যে আপন প্রতিবিধ দেখে। ভূমি কি আজুম্বে ভূলে ধ্লার
প'ড়ে থাক্রব? হর্ষ যে ভোমার মাধার উপর উঠ্বে, ভাকে কি নোজা হয়ে
দাড়িরে অক্তিবিদ করে।

वहेरा अं-वानाक्याची। भरीम, पूर्व, रताका अष्टिक गांधा।

পলাতকা

প্লাতকার কতকগুলি কবিতা ১৩২৫ সালের সব্রূপত্তে প্রকাশিত হইয়াছিল।

১৯১৮ সালের অক্টোবর মাদে এই বই প্রকাশিত হয়। কবি রবীক্রনাধ যথন অসম ছলে বলাকার কবিতা রচনা করিডেছিলেন, সেই সমরেই সঙ্গে সঙ্গে অসম ছন্দে পত্তে গল্প রচনা করিতেছিলেন এবং ছন্দমর গতেও গল রচনা করিতেছিলেন। পজে রচিত গল্পসমষ্টি হইল পলাতকা, এবং ছন্দমন্ত পঞ্জে রচিত গল্পসমষ্টি হইল নিপিকা। নিপিকা গল্গে রচিত হইলেও তাহা কবিতা শ্রেণীতে গণ্য হইবার যোগ্যা, তাহার গলগুলির মধ্যে আখ্যাদ্বিকা অপে**কা পৃশ্ধ ভাব ও র**সের প্রাধান্তই পরিলক্ষিত হয়। এই ছই পৃস্তকের মধ্যে কৰি কত গভীর কথা কত সহজভাবে বলিয়াছেন, তাহা বই ছখানি পাঠ করিলে সহজেই অমুভব করা যায়। পলাতকার প্রত্যেক গাথার মধ্যে কবির তীক্ষ অন্তর্দৃষ্টি, হন্দ্র মনস্তর-বিশ্লেষণ, সমবেদনা, সামান্তের মধ্যেও অসামাস্ততার আবিধার, অত্যুচ্চ কবিষ্ণের সহিত গ্রথিত চইয়া আশ্চর্য রকমের সহজ্ব ভাষায় প্রকাশ পাইয়াছে। কড়ি ও কোমল হইতে ছোট কবিতায় ছোটগল বলিবার যে শক্তি কবি দেখাইয়াছিলেন, এবং যাহা কথা ও কাহিনীর মধ্যে পরিণতি লাভ করে—তাহারই পূর্ণ পরিণতি ইইয়াছে এই গন্ধগুলিতে। কবিতা ও কাহিনী যে একসঙ্গে গাঁথা যাইতে পারে, তাহার পরিচয় দিলেন করি এই পুস্তকে।

কৰির জ্যোষ্ঠা কন্তা বেলা দেবী এই সময়ে অত্যন্ত পীড়িত হইরাছিলেন।
তাঁহার মৃত্যু অবধারিত। সেই বিদায়োনুখী কন্তার রোগশব্যার পার্শ্বে বিদিয়া
কবির মনে হইরাছিল যে, জগতের সব কিছুই পলাতকা। কাহাকেও এখানে
ধরিরা রাখা বার না। সেই ভাব মনে লইয়া কবি ষতগুলি গল্প লিখিয়াছেন
ভাহার অধিকাংশের নাম্নিকাই হইতেছে স্ত্রীলোক। প্রায় সব গল্পগুলির
ভাতিশান্ত হইরাছে বিজ্ঞেদ ও বিদায়, এবং মৃত্যু।

এই কাহিনীগুলিতে বিশ্বপ্রকৃতির সহিত মানবপ্রকৃতির একট ঘনিষ্ঠ বোগ কবি স্থাপন করিয়া দিয়াছেন, এবং বৈষয়িক কগতের অন্তরালে যে এক অনির্বচনীয় ভাব-জগৎ আছে ভাহার যবনিকা উদ্বাটন করিয়া দিয়াছেন। প্রত্যেক কাহিনীর উপযুক্ত পারিপার্শ্বিকতা ও আবেইন সৃষ্টি করিয়া কবি এক একটি মারাকৃহক রচনা করিয়াছেন, যাহাতে সমস্ত কাহিনীটি সঙা হইরা দরদে ব্যথায় মমতায় ভরিয়া উঠিয়াছে। ভগবানের বরে অভিজ্ঞাতবংশীয় কবিকে কথনো অভাবে দারিদ্রো কই পাইতে হয় নাই, ভাগালন্মী তাঁহার প্রতি স্থ্রসন্ন হাস্তেই চিরকাল তাকাইয়া আসিয়াছেন। তথাপি কবি তাঁহার অসাধাবণ সহম্মিতার বশে হতভাগাদের প্রতি অমুকম্পা অমুভব করিয়াছেন।

কিন্তু কবি তো জ্ঞানেন যে 'শেষ নাহি যে শেষ কথা কে বল্বে ?' এবং 'শেষের মধ্যেই অনেষ আছে।' আমরা যাহাকে শেষ বলি, যাহাকে মৃত্যু বলি, তাহা তো অসমাপ্ত অবস্থানের একদেশের অসম্যক্ দর্শন। তাই তিনি শেষ কবিতায় সমস্ত কিছুকে 'শেষ প্রতিষ্ঠা' দিয়াছেন—মান্থবের কাছে যাহা আসা-যাওয়া তাহা আধ্যানা অবস্থা প্রকাশ করে। সম্পূর্ণতার মধ্যে তো কেহ আসেও না, যায়ও না। সব-কিছুই সেখানে 'আছে' হইয়া আছে। তাহ কবি বলিয়াছেন—

আমি চাই সেইথানে মিলাইতে প্রাণ যে সমৃদ্রে আছে নাই পুণ হ'ন্বে রয়েছে সমান।

প্রথম কবিতাটির নাম পণাতকা। প্রকৃতির ডাকে পোষা হরিণ নিশ্চিত আত্মর্ম ও অবত্বস্থাত্ম-পানীর ছাড়িয়া অনিশ্চিতের ও নিরুদ্দেশের সন্ধানে প্রতিপালকের বাডী ছাডিয়া বনে চলিয়া গেল। এই কাহিনীটির মধ্যে সমস্ত বইটির তব্ব নিহিত আছে —হরিণ যেন বলিয়া গেল—

বিশ্বজগৎ আমারে মাগিলে কে মোর আত্মপর।

মুক্তি

এই গল্প-কবিভাটি প্রথমে ১৩২৫ সালের সব্দ্র পত্রের বৈশাধ সংখ্যায় প্রকাশিত হয়।

রমনীদিগকে সমস্ত বৃহৎ কর্মক্ষেত্র হইতে দূরে সরাইরা ক্ষেবলয়াত্র গৃহ-কর্মের ক্ষুত্র আবেইনীর মধ্যে জাবদ্ধ রাধার এবং বিলেই করিয়া তাহাদের আতি নির্মন ব্যবহার করার অভিযাধ এই ছবিভাটি। অন্তঃপ্রিকা মরণান্তক রোগে আক্রান্ত হইরা বলিতেছে—এই বিশ্বজ্ঞাং তাহার ছম পত্র স্থাপাত্র হাতে করিয়া বাইশ বছর ধরিয়া এই নিরানন্দ গৃহকোণের নাগপাশ ছেদন করিতে বারংবার ডাকিয়া বলিয়া গিয়ছে; কিন্তু অন্তঃপ্রের অন্ধকার কারাগারে ও রায়াগরের ধ্যাচ্ছর বন্দীশালায় সেই বাণীপৌছিতে পারে নাই। আজ আদর মৃত্যুকে শিয়রে করিয়া জানালার ফাঁকে বিশ্বপ্রকৃতির সহিত মুখোমুখী করিয়া বিদয়াছি। তাই আজ তাহার বাণী আমার প্রাণে প্রবেশ করিতে অবকাশ পাইয়াছে, আমি এখন বুঝিতে পারিতেছি যে আমি সামান্তা নই,—আমি নারী, আমি মহীয়সী, আমি ভূমার অংশ এবং অলে স্থপ নাই। বিশ্বপ্রকৃতির সমন্ত সৌন্দর্যস্থার, সে তো আমারই জন্ত এত কাল অপেক্ষা করিয়া থাকিয়াছে। আমি বদি তাহার দিকে না চাহিতাম, তাহা হইলে সে তো থাকিয়াও নাই, আমার কাছে তো সে নান্তি হইয়া যাইত।

মরণ আমার অনন্ত সন্তাবনার ভিথারী—দে আমার সমস্তই গ্রহণ করিবে, আমার সকল সন্তাবনা ভাষার কাছে সমাদৃত হইবে। অবশেষে মরণের মধ্যে আমি যে স্বাধীনভার ও মুক্তির স্থাদ পাইব ভাষা তো জীবনে আমি কোনো দিন পাই নাই। মরণ ভো কেবল আমার প্রভূনয়, সে আমার স্বামীও ছিল; সে যে আমার কাছে আমার মাধুর্য আমার স্বামীর মতন ভুকুম করিয়া আদায় করে না; সে ভিক্ষা করে, প্রার্থনা করে।

ফাঁকি

ষশুরবাড়ীতে শুরুজনের কাছে লজায় বিহুর সঙ্গে তাহার স্বামীর মিলন ছিল বাধাপ্রস্ত, ছাড়াছাড়া। সে যথন রোগে পড়িয়া হাওয়া-বদলের জ্বন্ত প্রথম শুগুরবাড়ী ছাড়িল, তথন সকল বাধা অপস্ত হওয়াতে তাহাদের মিলন হইল অব্যাহত: সেই আনন্দে তাহার জীবনের প্রতিমৃহুর্ত হইয়া উঠিল পরিপূর্ণ—বিহুর মনে হইতে লাগিল, তাহাদের বিবাহের পরে এই যেন তাহাদের প্রথম মিলনের আনন্দ্রযাত্রা—হানিমূন। সে মরিবার সময়ে স্বামীকে বলিয়া গেল—

এ জীবনের বা কিছু আর তুলি, শেব ছটি মাদ অনস্তকাল মাধার রবে মম বৈজুক্তিতে নারায়নীর দি খের পরে নিত্য-সিঁপুর সম।

এ ছুটি মান জ্বাদ বিলে ভ'রে,— বিদার নিজেন সেই কথাটি সরণ ক'বে।

কিন্তু বিহুর স্থামী তো বিহুকে এক কারগার চাঁকি দিরাছিল। বিহু রেলের কুলির বৌ রুশ্নিণীকে পাঁচল টাকা দিতে অফুরোধ করিরাছিল। সে অছরোধ তো রক্ষা করা হর নাই ! অথচ বিহু জানিরা গেল যে, তাহার স্থামী তাহাকে আনন্দ দিবার জ্বস্তু কোনো ক্রটি কোখাও রাথে নাই ৷ সেইজ্বস্তু বিহুব স্থামীর মনে হইতে লাগিল যে, সে ভাহার স্ত্রীর পরিপূর্ণ বিশ্বাসের ও প্রেমের প্রতিদান সম্পূর্ণ করিতে পারে নাই ৷ এবং সেই ক্রম্মিণীকে আর কোখাও খুঁজিয়াও পাওয়া গেল না ৷ প্রতিবিধান করিবার স্থযোগ চিরতরেই হাবাইয়া গেল ৷ তাই বিহুর স্থামী আক্ষেপ করিয়া বলিল—

রয়ে পেলাম দারী, মিথা আমার হলো চিরস্থারী।

নিষ্ণৃতি

এই কবিতা-কাহিনীট ১৩২৫ সালের জ্যৈষ্ঠ মাসের প্রবাসীতে বাহিব হইয়াছিল। তথন ইহার যে নাম ছিল তাহাতে এই কবিতার ভাবটি স্বম্পষ্ট প্রকাশিত হইয়াছিল। ইহার নাম ছিল—'যেনাস্তাঃ পিতরো যাতাঃ।' এই মেরেটির পিতৃপিতামহ যে পথে গিয়াছেন—বিপত্নীক হইয়া আবার বিবাহ করিতে তাহারা যেমন দ্বিধা করে নাই—সেও তেমনি তাহার পিতৃপিতামহের দৃইাস্ত অমুসবণ করিল—বিধবা হইয়া বৈধব্যের তপস্তার সেই কেবল ওম্ম হইয়া সমন্ত প্রেম হইতে বঞ্চিত হইয়া থাকিবে, আর পুরুষেরা যথেছোগ্র ক্রিবে, এই বি-দম ব্যবস্থার বিরুদ্ধে বিদ্যোহ ঘোষণা করিয়া, সেও তাহার প্রেমানাক্রী পুলিন ডাক্তারকে বিবাহ করিয়াছিল। এই কবিতাটির মধ্যে করুল ও হাক্তরস গলাগলি করিয়া চলিয়াছে বলিয়া এটি পরম উপভোগ্য হইয়াছে।

श्रात्रित्य याख्या

া বিশ্বশ্রেকৃতির মধ্যে সভা কইভেছে নিভা পদার্থ। ভাষাকে বৈদিক শ্^{বিরা} বিশ্বশাহেন ওকার। বিশ্বশাহাতি নেই সভাচক আনুমাইয়া চলিয়াছেন, ^{বেন} তাহা কিছুতে আচ্ছন্ন না হয়। সেই সত্য যখন আচ্ছন্ন হয় তথন বিশ্বপ্রকৃতির অন্তিষ্ট লোপ পাইতে বসে। সত্য অব্যাহত না থাকিলে লোকের জীবন-যাত্রা অচল হয়, সমাজ-ব্যবস্থা লণ্ডভণ্ড হয়, সকলের পীড়া উপস্থিত হয়। তাই উপনিষ্পের শ্বিরা এই প্রার্থনা করিয়াছিলেন—

> হিরন্দরেন পাত্রেণ সভ্যক্তাপিহিতং মুধন্। তৎ দ্বং পুষন্ন অপার্ণু সভ্যধর্মার দৃষ্টরে ॥ — লবেনাপানিষৎ ১৫

মাত্র্যন্ত নিজের থেষালটকে প্রদীপের মতো জালাইয়া সমন্ত ঝড়-ঝাপ্টা হইতে বাঁচাইয়া চলিতে চায়:—কিছ সেই থেয়াল সম্পন্ন করিতে না পারিলে, সে মনে করে তাহার সর্কানাল হইয়া গিয়াছে। যে ব্যক্তি যশোলিপ্সূ সে যদি যশের একটু হানি দেখে, তবে সে মনে করে সর্কানাল। তেমনি ধন-লিপ্সূ, রাজ্যালিপ্স্, এমন কি নিজের প্রিয়জনের প্রতি অধিক মমতাসম্পন্ন লোক, নিজের আসন্তির বল্পর একটু ক্ষতি সহ্থ করিতে পারে না; মনে করে সে ক্ষতিতে তাহার সর্বনাল হইয়াছে। সে মনে রাথে না যে তাহার সেই ক্ষতিগ্রস্ত বল্প ছাড়াও আরো অনেক কিছু আছে।

এই কবিতাটি সম্বন্ধে কবি স্বন্ধং আমাকে যে ব্যাখ্যা লিখিয়া পাঠাইয়াছিলেন তাছা এই—"বামী যেমন দীপ-হাতে একটা অন্ধকার ঘূর্ণীসিঁড়ি
বেম্বে চল্ছে, সমস্ত নক্ষত্রলোককে আমি সেই দীপ-হাতে ছোট মেমেটির
মতোই দেখ্ছি। চল্তে চল্তে হঠাং যদি তার আলো নিবে ঘান্ধ—তা
হ'লে সে আপনাকে আব দেখ্তে পাবে না—অসীম অন্ধকারের মধ্যে একটা
কারা উঠ্বে—আমি হারিয়ে গিয়েছি।"

অর্থাৎ কবি বলিতে চাহিতেছেন যে, যে-আলোক বামীর কাছে তাহার পরিবেটন সামগ্রীকে প্রকাশ করিতেছিল, তাহার নির্বাণ হওরাতে সেই-সমস্ত পারিপার্থিক সামগ্রী অন্ধকারে লুগু হইরা গেল, এবং যে পারিপার্থিকতার ছারা বামী আপনার অন্তিত্ব সম্বন্ধে সচেতন ছিল, সেই পারিপার্থিকতার লোপ হওরাতে বামীর মনে হইল সে নাই। তেমনি বিশ্বপ্রকৃতি মেরেটিও অন্ধকার রাত্রির নীলাম্বরীর অাচলের আড়ালে গ্রহনক্ষত্রের দীপশিবাগুলিকে আগ্লাইরা বাঁচাইরা চলিতেছে, গ্রহনক্ষত্রগুলিই যেন বিশ্বপ্রকৃতির অন্তিত্ব স্থাকাশ করিতেছে, বদি কোনো দিন কোনো ছবিপাকে সেই আলোক নির্বাণ পার, ভরের প্রকৃতিই হারাইরা বাইবে।

শিশু ভোলানাথ

শিশু ভোলানাথ ১৯২২ সালে প্রকাশিত হয়। রবীজ্রনাথ যখনই কোনো বিক্ষোভ, কোনো হঃথ অক্তব করিয়াছেন, তথনই শিশুর সরল সব-ভোলা বভাবের মধ্যে নিজেকে প্রত্যাবর্ত ন করাইয়া সাখানা দিতে চাহিয়াছেন—মনের সমস্ত মানি ভূলিতে চাহিয়াছেন। শিশু যেমন ঘভাব-নির্মল, তাহার গায়ের ধ্লা-বালি যেমন তাহার মনে কোনো মালিগু সঞ্চার করিতে পারে না, তাহার মনের সকল ক্ষোভ ছঃথ শিশু যেমন অনায়াসে অতি সম্বর ভূলিয়া হুত্ব হুইয়া উঠিতে পারে, সে যেন হাঁসের মতন জলে থাকিয়াও গায়ে জলের লেশ লাগিতে দের না, কবিও তেমনি সমস্ত বিক্ষোভের ছঃথের মধ্যে থাকিয়াও ছঃথাতীত ক্ষোভাতীত নির্মৃক্ত অনাবিল হইয়া বাইতে চাহেন। এইজ্ঞ কবি আযৌবন বাবংবার এই শিশুলীলার মধ্যে ফিরিয়া গিয়া শিশু হইয়া নির্মল আনন্দ অকুতব করিয়াছেন। এই ভাব হইতেই কবি স্থবেক্তনাথ মজুমনার গাঁহার মহিলা কাব্যে মাতাকে সম্বোধন করিয়া পুনরায় শিশু হইবার প্রাণানা জানাইয়াছিলেন—

"তুমি গড়েছিলে বাহা আর আমি নই তাহা, তে জননী করো পুন বালক আমায়।"

এই শিশু ভোলানাথ বইথানি রচনার ইতিহাস সম্বন্ধে শ্বরং কবি বলিয়াছেন—

"আমেরিকার বন্ধরাস থেকে বেরিবে এসেই শিশু ভোলানাথ লিখ্তে ব্লেছিল্ম। প্রবীপের কেরার মধ্যে আট্কা প'ড়ে সেদিন আমি… আবিছার করেছিল্ম, অন্তরের মধ্যে শিশু আছে ভারই বেলার ক্লেল লোক-লোকান্তরে বিভূত। এইলভে বঙ্গনায় সেই শিশুলীলার মধ্যে ভূব দিল্ম, সেই শিশুলীলার ভরলে সাঁতার কাট্লুম, মনটাকে বিজ কর্বার ক্লে, নির্মল কর্বার ক্লে, সূক্ত করবার ক্লে।"—পশ্চিম-বান্ধীর ভারারী।

ভোলানাথ দেই, বে কিছু সঞ্চর করে না, যাহার কিছুতে মমতা নাই, যে সক্তিছু প্রথম করে, যে সক্তিছু ভূলিরা যায়।

আমার্নর দেশে বিশেষরকে বলা ইইরাছে—ভোলানাথ, ভোলা মহেখব।
শিব ভোলানাথ, ভাষার থেলনা চক্ত সুর্ব জীবন সরণ কীছি। শিশুর থেলনার
মতন ভাষার বিভা নৃতন উদ্ভাবন ও বিভা নৃতন কালে।

স্থার্টিকর্তা স্থান্টি ভাঙিতে ভাঙিতে চলেন ন্তন স্থান্টি করিরা; তাই তাঁহার স্থান্টি বন্ধন হয় না। কিন্তু বয়ন্ত মানুষ নিজেদের স্থান্টিকে সঞ্চয় করে, তাই তাহাদের বন্ধন করিয়া তুলে।

শিশু ভোলানাথ—ভোলানাথ শিবেরই চেলা। সে বাহিরে বিন্তুহীন, কিছু অন্তরে দে অমিতবিক্ত; চিন্তু ভাহার বিন্তুশালী, অন্তরে তাহার অনন্ত ঐর্য্য। ভাই সে এক থেলার অভার নৃতন থেলা দিরা পূরণ করিয়া লইতে পারে। শিশুর কোনো লক্ষ নাই, উদ্দেশু নাই বলিয়া সে পথেই আনন্দ পায়; সেবলিতে পারে 'আমার পথ চলাতেই আনন্দ।' শিশু বর্তমানে আবদ্ধ; তাহার অতীত নাই, ভবিদ্যুৎ নাই। শিশুর নৃতন স্পষ্টীতে আনন্দ; কারণ ভাহার সৃষ্টি করা ছাড়া আর কোনো সৃষ্টিছাড়া উদ্দেশু নাই। অন্ত লোকে পথকে লক্ষ্যের উপলক্ষ্য মনে করিয়া ছংথ পায়। পরমেশ্বর যেমন সৃষ্টির লীলার শৃশু আকাশকে পূর্ণ করেন, শিশুও ভেমনি পথকে মৃক্তির আনন্দে পূর্ণ করে। অহেত্ক লীলার শিশু ভোলানাথের সঙ্গে ভোলা মহেশ্বরের যোগ আছে।

"সৃষ্টির মূলে এই লীলা—নিরস্তর এই রূপের প্রকাশ। সেই প্রকাশের অহেতৃক ঝানন্দে গণন বোগ দিতে পারি, তখন সৃষ্টির মূল আনন্দে গিরে পেছির। সেই মূল আনন্দ আপনাতে আপনি পর্বাপ্ত, কারো কাছে তার জবাবদিহি নেই।"

"ছোঁট ছেলে ধূলোৰাটি কাঠিকুটো নিরে সারাবেলা ব'সে ব'সে একটা কিছু গড়ছে। বৈজ্ঞানিকের মোটা কৈছিলং হছে এই বে, গড়বার শক্তি তার জীবন-যাত্রার সহার, সেই শক্তির চালনা চাই। এ কৈছিলং জীকার ক'রে নিল্ম; তব্ও কথাটার মূলের দিকে অনেকথানি বাকি থাকে। গোড়াকার কথা হছে এই যে, তার স্প্রিকতী মন বলে 'হোক'। সেই বাণীকে বহন ক'রে ধূলোমাটি কুটোকাটি সকলেই ব'লে ওঠে—'এই দেব হরেছে'। এই হওরার অনেকথানিই আছে শিজর কল্পনা। সাম্লে বথন তার একটা চিবি, তথন কল্পনা চল্ছে—,এই তো আমার রূপকথার রাজপ্রের কল্পো!' তার এ ধূলার জ্বপের ইসারার ভিতর দিরে শিত সেই কেলার সতা মনে শান্ত অক্তে তার আনন্দ। গড়বার শক্তিকে প্রকাশ কর্মাই আছুত্ব কর্ছে। এই অমুভূতিতেই তার আনন্দ। গড়বার শক্তিকে প্রকাশ কর্মাই ব'লে আনন্দ। লাভি এ ক্ষেত্রে বিশেষ প্রকাশ পাছেছ না; একটি ক্লপনিবারক ভিতর শিত্ত ক্ষেত্র ক্ষেত্র হাল আনন্দ। সেই ক্লপটাকে ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষিত্র শিল্পতে পাছির ব'লে আনন্দ। সেই ক্লপটাকে শেষ লক্ষ্য ক'রে দেখাই হত্তে পাছির ব'লে আনন্দ। সেই ক্লপটাকে শেষ লক্ষ্য ক'রে দেখাই হত্তে পাছির বালে আনন্দ। সেই ক্লপটাকে দেব লক্ষ্য ক'রে দেখাই হত্তে পাছির বালে আনন্দ। সেই ক্লপটাকে লেখ লক্ষ্য ক'রে দেখাই হত্তে পাছির কালে আনন্দ। "—পদ্বিব্রার ভারারী।

আমাদের শাত্রেও বিধেশবের স্থাটিকে শিশুর থেলার সলে তুলনা কর। হইয়াছে।

"বালকে বেষন বেলার ছলে ভাঙে-পড়ে, কোনো উদ্বেশ্ব তাহার বেলার সিছনে থাকে না, সেইরণ সেই বিষক্র্যাও এই বিষটাকে লইরা ভাঙিতেছেন ও গড়িতেছেন, নিজের কোনো আরোজন বা উদ্দেশ্ব লইরা কিছু করিতেছেম না। কারণ, তিনি তো নিতাপূর্ণ জাপ্তকায়।"—বিষ্ণুপুরাণ ১২২১৮।

ক্রীড়ভো বালকক্তৈব চেষ্টাস্ ভক্ত নিশামর—গরুড়পুরাণ ১।৪।৫।

ক্ৰি তাঁহার পূরবী কাব্যেও বিখনাথকে শিশুর সহিত তুলনা ক্রিয়াছেন-

এ কি সেই নিতা শিশু, কিছু নাহি চাহে,—

নিজের থেলেনা-চূণ

ভাসাইছে অসম্পূর্ণ
ধেলার প্রবাহে ?

—পুরবী, পদধানি ।

छष् मिछ त्वारव त्यारत, जामारत त्व खारन ছूটि व'रम,

ঘর ছেডে আসি তাই চ'লে।
নিবেধ বা অসুমতি যোর মাঝে না দের পাহারা,
ভাবেশ্রকে নাহি রচে বিবিধের বন্ধমর কারা,
বিধাতার মতো নিশু লীলা দিয়ে দৃশ্য দেব ভ'রে,

শিশু বোঝে সোরে।

---পুরবী, পধ।

রবীন্দ্রনাথ শিশুকে ভালোবাসিরাছেন। সেই ভালোবাসার ফল ইইতেছে শান্তিনিকেতনে ব্রন্ধচর্যাশ্রম প্রতিষ্ঠা এবং তাহাদের সঙ্গে থেলা করিবার জন্ত নানা নাটক গান প্রভৃতি রচনা। রবীক্রনাথ শিশুকে তাঁহার অতি নিকট প্রিক্তম আত্মীধ-শ্রন্থনের গৃষ্টিতে দেখিরাছেন—বেমন করিরা দেখিরাছিলেন ডিক্তর ছাগো। কবি শিশুকে শিশুর নিজের দৃষ্টিতে দেখিরাছেন, কবি বেন শ্বরং শিশু হইরা গিরাছেন; আবার ওরার্ড সঞ্জার্ব ও টেনিসনের জার দার্শনিক-কবির দৃষ্টিতেও দেখিরাছেন। রবীক্রনাথ শিশুর ও শৈশবের অন্তর্গানী কবি।

শিশু, খোলানাথ বই শিশু বইখানিরই জের বা তাহার পরিপুরক। শিশুর মন ব্বিতে, হইলে ও ভাহার মন পাইতে হইলে, শিশু না হইলে চলে না। কবির অকরে যে চির-শিশু রবিয়াছে ভাহারই প্রাণের কথা কৌডুকে রাল বনে নাধুর্বে অপুর্ব ক্ষমেন ভাবেন মুক্তীয়া উলিয়াকে এই মুইখানি পুরুক্তের বাদিতে। বে বিচিত্র জনমনৃত্তি শিশুর মধ্যে আছে অস্কৃট ভাবে, তাহাকেই কবি বিশ্লেষণ করিয়া প্রকাশ করিয়াছেন এই ছই বইয়ের ভিতরে। শিশুর মনতত্ব স্থপ দুঃপ এমন প্রাণ দিয়া অস্ভব ও প্রকাশ করিতে পৃথিবীর আর কোনো করি পারেন নাই।

মুক্তধারা

এই নাটকথানি ১৩২৯ সালের বৈশাধ মাসের প্রবাসীতে প্রকাশিত হয়। এবং পুস্তকাকারেও প্রকাশিত হয় ঐ মাসেই। বইধানি লেথার তাবিও হইতেছে ১৩২৮ সালের পৌষ-সংক্রাস্তি। লেথা হইয়াছিল শাস্তিনিকেতনে।

এই বইধানির বিল্পত সমালোচনা বাহিব হইয়াছিল ১৩২৯ সালেব আবাচ মাসের প্রবাসীতে, সমালোচনা লিখিয়াছিলেন প্রশান্তচক্স মহলানবীল।

উত্তরকৃটের মছারাজা ধন্মরাজ-বিভৃতিকে দিয়া শিবতরাই বাজ্যের ম্জুধাবা যন্ত্র হারা রুদ্ধ করিয়াছেন। শিবতবাইয়ের প্রজাদেব অম্রচলাচলের পথ কদ্ধ করিয়া তাহাদিগকে বশ মানাইবাব এই কৌশল। যুববাঞ্চ অভিজ্ঞিৎ ঠিক রাজার পুত্র নন। রাজা মৃক্তধারাব ঝবণাতলায় তাঁহাকে কুডাইয়া পুত্রবং পালন করিয়াছেন। তাঁহার শরীরে রাজচক্রবতীর লক্ষণ আছে জ্যোতিশীবা বলিয়াছে। যুবরাক অভিজিংকে বাজা শিবতরাই শাসন করিবার ভার দিয়া পাঠাইলেন। অভিজ্ঞিৎ দেখানে গিয়াই প্রজাদের সমন্ত অস্ত্রবিধা মোচন করিবার প্রায়র নি**ক্তেকে নিযুক্ত করিবেন**। তিনি নন্দীসঙ্গটের গড ভাঙিয়া मिलन। উত্তরকৃটের স্বার্থে আঘাত লাগিল, উত্তরকৃটের অধিবাসীবা বিবক্ত হুইরা উঠিল। কাজেই অভিজ্ঞিংকে শিবতরাই ছাডিয়া চলিয়া আদিতে হুইল। কিন্তু ধবরাক্ত অভিজ্ঞিৎ গৌরীশিথতের দিকে চাতিয়া পায়ট ভাবিতেন—'মে-সব পথ এখনো কাটা হয়নি, ঐ দুৰ্গম পাছাডের উপৰ দিবে দেই ভাবী কালের পথ দেখ তে পাচ্ছি—দরকে নিকট কববার পথ।' তিনি প্রায়ই বলেন—'আমি পৃথিবীতে এসেছি পথ কটিবার জ্ঞা, এই থবর মামার কাছে এসে পৌছেছে।' কারণ, তিনি জানিয়াছিলেন যে কোন ঘরছাড মা তাঁহাকে পথের ধারে মৃক্তধারার পাশে জন্ম দিলা তাঁহাকে বিশ্ববাসী কবিবা मित्राष्ट्रम, खिनि क्लात्म। विरमेष स्मरमद वा विरमेष आखि *स्*लाक नरहन।

অভিক্রিৎ দেখিলেন যে বন্ধরাজ-বিভৃতি বাঁধ বাঁধিয়া মৃক্তধাবা বন্দ করিয়াছেন, শিবতরাইরে ছাঁভক্ষ দেখা দিয়াছে। ইহাতে উত্তরকৃটেব অনিবাসীদের আনন্দের উৎসব হইতেছে। কিন্তু এই বাঁধ বাঁধিবার জন্ম কত মন্ত্রুকে জ্যোর করিয়া ধরিয়া কালে লাগানো হইয়াছিল। ভাগাদের অনেকে ফিরে নাই। এই উৎসবের মধ্যে সেই-সব সম্ভানহারা মারেব কালা শোনা যাইতেছে। অস্থা কাঁদিয়া বেড়াইতেছে—সুমন, আমার সমন । । পাগলা বটুক সকলকে সাবধান করিয়া হাকিতেছে—সাবধান বাবা, সাবধান, যেও না ও পথে · · · বলি দেবে, নববলি · · ।

অভিজিৎ মনে কবিতে লাগিলেন—রাজ্যলোভে স্বার্থলোলুপতার মামুষ মামুষকে দলন করিয়া দানব হইয়া উঠে, 'হঠাৎ যেন চমক ভেঙ্গে বৃষ্তে পারলুম উত্তরকৃটের সিংহাসনই আমাব জীবনস্রোতেব বাঁধ।' তিনি পথে বাহির হইয়া পড়িলেন সেই-সব বাধা দূর কবিয়া দিবার জন্ম।

ষ্ববান্ধ রাজান্তার বন্দী ইইলেন। বন্দীশালাদ আগুন লাগিল। খুডা-মহারাল্প যুবরান্ধকে উদ্ধার করিয়া নিজেব রাজ্যে মোহনগডে লইর যাইতে চাহিলেন। কিন্তু যুবরাছ সেই স্নেহের বন্ধন ও অস্বাকাব করিলেন।

যুবরাজ কারাগারে নাই শুনিয়া উত্তবকূটবাসীবা উন্মন্ত হইয়া ঠাছাকে খুঁজিতে বাহির হইয়াছে। হঠাৎ অমাবস্তা বাত্রির অন্ধকারে তাহাবা শুনিল দ্বে মুক্তধারাব বাঁধ ভাঙাব শব্দ। রুদ্ধ জলোচ্ছাস গর্জন কবিয়া ছুটিয়াছে।

কুমার সঞ্জয় আ'সমা সংবাদ দিলেন যে যুবরাজ অভিজ্ঞিং মৃক্তধাবাকে মৃক্ত করিয়া দিয়াছেন। কিন্তু যম্ববাজ্ধ-বিভৃতির সম্মাক তিনি আঘাত কবিয়া ভয় কবিয়াছেন বলিয়া এয়াও চাঁহাকে প্রত্যাঘাত কবিয়াছে যুবরাজ্জ শ্রোতে পডিয়া গিয়াছেন এবং মৃক্তধারা যুবরাজের আগত দেহকে কোলে তুলিয়া দরে দ্রাস্তরে কোথায় লইয়া গিয়াছে।

এই অভিজিৎ হইতেছেন সকল স্বাৰ্থায়ক সন্ধাৰ্ণতামুক্ত মানবান্ধার প্রতিনিধি—নে মানবান্ধা সকল বাধা সতিক্রম কবিরা দরের আহ্বানে চলিতে চার। থেখানে স্বকৃত বা পরকৃত করন, তাহাকে আঘাত কবিষ্ণ মৃক্ত কবাই হইতেছে তাহার জীবনের সাধনা ও সার্থকতা লোভের দ্বারা কল্যান খন বন্ধন লাভ করে, তথনই পাপ প্রবন্ধ হইষা উঠে এবং কেই পাপক্ষালন কবিতে মহাপাণকে বলি দিতে হয়। ধেখানে পাপ পেথানে অশান্তি, সেখানে অবিশ্বাস, সেখানে উৎপীছন একের পাপে অপারে পিডা ভোগ করে । বাজার স্বার্থের জন্ম অন্বার্থ ছেলে স্কমন হবে , ব ,ক ছটি নাতি হাবাইষ্য পাগল হইর পথে পথে ক্ষুক্তে জ্বাগাইয়া ফিরে এবং পিতার লোভের নাতি হহণ করেন পুত্র অন্ধিকিং। বিনি সকল-কিছুকে ভয় করিষা মৃক্ত তিনিই অভিজিৎ। জগতে তো এইক্লপই শ্বো বৃগে হইয়াছে— হগতের হৃংথ পাপ একজন মহাপ্রাণকে

ব্যাকৃত করিয়া ভোলে—ইহারই জন্ম বৃদ্ধনেব রাজপুত্র হইরা সন্ন্যাসী, বীওপৃষ্ট কুশে বিদ্ধ হইরা প্রাণ হারাইলেন, মহন্দদ মক্তৃমিতে পলাতক হইলেন। যে কল্পের আহ্বান গুনিরাছে, নে হইরাছে অভি—ভৈরব তাহাকে পথ দেখাইয়া আত্মদানের দিকে লইরা চলেন।

মৃক্তধারার মধ্যে রবীক্সনাশের জাবালোর বাণী নিহিত আছে—সকল বাধা ও গণ্ডী ভাত্তিয়া মৃক্তধারায় নিজেকে ভাদাইয়া দিতে হইবে, তবেই মহুশাদ্বের সন্মান সংরক্ষিত হইবে।

এই নাটকের পুড়ামহারাজের মধ্যে বৌঠাকুরাণীর হাট উপস্থাদের অথব। প্রারশিস্ত বা পারিত্রাণ নাটকের রাজা বসস্ত রারের একটু আদল দেখিতে পাঞ্জা যায়। ইহারও মধ্যে সেই ধনঞ্জয় বৈরাগী আছেন—বিনি সত্য কথা করিয়া বলিতে রাজাকেও ভর করেন না, এবং অয়ান বদনে সমস্ত শান্তি অস্থার হইলেও অপ্রতিবাদে বহন করেন। ইনি স্থায় ও সত্যের এবং সহ্য ও ক্ষার আধার।

এই নাটকে এই রকম মানব-জীবনের শ্রেষ্ঠ তক্ত ছাড়া কবিও আছে প্রচ্র—অভিজিতের কথায়, ধনঞ্জরের গানে, ভৈরবপদ্বীদের গানে। এই নাটকে পরাধীন জাতির উপর বিজ্ঞেতাদের যে নির্দন্ধ বাবহারের চিত্র দেওরা হুইয়াছে, এবং তাহা সব্বেও বধন স্ক্লের গুরুমহাশরেরা ছাত্রদের বিজ্ঞেতার জ্বর্গান মূখত্ব করাইতেছে দেখি, তখন সমস্ত বিজ্ঞিত জাতির হুর্গতির লক্ষ্যাও মনস্তাপ যেন ভাষা পাইয়াছে মনে হয়। এবং এই-সমস্তের প্রতিবাদ হুইতেছেন ব্বরাজ অভিজিং। অভিজ্ঞিৎ যেন একটি মাসুষ নহেন, তিনি যেন বৃত্তিমানু মহামনের মনস্তব।

क्रहेबा--युक्तवात्रा--अवनीनाथ त्रात्र, विक्रिका ३७६३ रेकार्ड ।

প্রবাহিণী

প্রবাহিনী পৃত্তকে প্রায় সমন্তই গান। নানা সময়ের থণ্ড রচনা একত্র করিয়া বই প্রকাশিত হয় ১৩৩২ সালে। রবীক্রনাথ গানের রাজা, এ পর্যন্ত বোধ হয় তিনি আড়াই হাজার গান রচনা করিয়াছেন। সেই-সমন্ত গানের পরিচয় দেওয়া হয়হ কর্ম। অভএব এই বইয়ের মাধুর্যের সন্ধানের ভার পাঠকদের উপর দিয়াই আমি নিরন্ত হইতে বাধ্য হইলাম। প্রবাহিনী বিচিত্র রসের ও ভাবের লিরিক ও গানের প্রবাহিনী।

চিরয়ন

এই গানটি "চির-আমি" শিরোনামে ১৩২৪ সালের বৈশাধ মাসের প্রবাসীতে প্রকাশিত হইয়াছিল।

অমর কবি বলিতেছেন যে যথন তিনি এই রবীন্দ্রনাথ নামক বিশেষ
বাজ্তি-রূপে এই জ্বগতে বিশ্বমান থাকিবেন না, তথনও তিনি এথানে সকল
শোভা মাধুর্য প্রেম ও লীলার মধ্যে বিশ্বমান থাকিবেন ভাব-রূপে। যথন
বিশ্ববাসী তাঁহার নামও ভূলিয়া বাইবে, যথন তাঁহার তানপুরার উপর
অবহেলার ও বিশ্বতির ধূলা জমিবে, কেহ আর তাঁহার কাব্য আলোচনা
করিবে না, ফুলের বাগান কাঁটার ঘাদে আছের হইয়া যাইবে, তথনও
তিনি যাহা আল দিয়া গেলেন তাহারই প্রভাব সকলের অক্সাতসারে কাল
করিতে থাকিবে। তিনি বিশ্ববাসীকে যে ভাব-সম্পদ্ দিয়া যাইতেছেন,
যে ভাষা ও ছন্দ দিতেছেন, যে প্রকাশ-ভঙ্গিমা দিখাইয়া যাইতেছেন,
তাহা তো তাহাদের কাছে থাকিয়াই গেল। যদিও বা তাহারা শ্বরং
কবিকে ভূলে তথাপি তাঁহার দানের ফল তো তাহারা প্রুবাফুক্রমে
নিজেদের অক্সাতসারেও ভোগ করিতে থাকিবে। অতএব কবি চিরকাল
থাকিরেন, তিনি চিরস্তন, তিনি অম্বন।

পূরবী

১৯২২ বা ১৩২৮ সালে শিশু ভোলানাথ প্রকাশ করার পরে কবি ১৩৩০ সাল পর্যন্ত জনেক দিন কোনো কবিতা লিখেন নাই; কেবল গান বা নাটক লিখিতেছিলেন। আমরা মনে করিতেছিলাম কবির কবিছের উৎস বৃক্তি শুক্ত হইরা গিরাছে, দেখান হইতে রসের জলকনন্দা-ধারা বৃদ্ধি আর বিশ্ববাদীকে বিমোহিত করিতে প্রবাহিত হইবে না।

১৩৩০ সালের মাখ মাসের শেষের দিকে এক দিন কবির এক চিঠি
পাইলাম— চারু, থাতার কতকগুলো কবিতা জমেছে। লুঠেরারা নজর
দিতে আরম্ভ করেছে। লুঠ হ'য়ে যাবার আগে তুমি যদি একদিন আস তা
হ'লে তোমাকে শোনাতে পারি।"

আমি উৎফুল্ল হইয়া কবি-সন্দর্শনে যাত্র। করিলাম। প্রাতঃকাল কবির জোড়াসাঁকোর বাড়ীর তিন-তলায় কবি ছিলেন। আমার সেখানেই ডাক পড়িল। কবি একথানি থাতা হইতে কবিতা পড়িতে আরম্ভ করিলেন ধ্বন শুনিলাম—

'ঘৌৰন-বেদনা-রদে উচ্চল আমার দিনগুলি !'
'মাঘের বৃকে স্কোতুকে কে আজি এলো তাহা
বৃঝিতে পারো তৃমি ?'
'হলার-বাহিরে যেমনি চাহি রে
মনে হলো যেন চিনি,—
কবে, নিক্লপমা, ওপ্রো প্রিয়তমা.

हिल नीना-मनिनी।

তথন আমার আনন্দ ও বিশ্বরের অবধি রহিল না। আমি কবিকে বণিলাম— এই-সব কবিতা ধেন আপনার বৌবনের কবিতার মতন ছয়েছে। সেই সোনার তরী, চিত্রার মুগের কবিতার কথা মনে পড়ছে।

ইহাতে কবি সম্ভট হইয়। হাসিয়া রক্তরা করে বলিলেন—তবে বে বড় তোমরা কলো যে আমি আর কবিতা লিখুতে পারিনে।

ইয়ার পরে কৰি আমাকে বলিলেন—নাও, বেছে নাও, এর মধ্যে তুমি কোন্টা নেৰে? বেশি লোভ কর্লে চলুবে না, অনেক বাবী মেটাতে হবে আমাকে তুমি একটা বেছে নাও—একটা আমি উপরের তিনটি কবিতাই পছন্দ করিলাম সব চেন্নে। তথন কবি আবার হাসিরা বলিলেন—এহ বাহ্ন, আগে কহ আরে।

আমি তথন বলিলাম—ইছাদের মধ্যে বাছাই করিয়া লওয়া কঠিন। তবে প্রথম ছটির মধ্যে ধেটি হয় আপনি দিন—ওদেব মধ্যে তারতম্য করা আমার পক্ষে কঠিন।

ভথন কবি বলিলেন—তৃমি অত্যন্ত চালাক। তবে তুমি ছটোই নাও। অন্তের ভাগে না জয় কিছু কম পড্বে।

আমি সেই কবিতা গুটি লইয়া আসিলাম। তথন প্রবাদীব ফাস্কন মাসের সংখ্যা ছাপা হইয়া গিয়াছে, কাগজ বাহির হইবে। আমি ১০০ সালের ফাস্কন মাসেব প্রবাদীব ক্রোডপত্র করিয়া আলাদা ছাপিয়া প্রথম উলিখিত কবিতাটি প্রকাশ করিলাম। পরেব মাসে চৈত্র সংখ্যা প্রবাদীতে 'মাঘের বৃক্তে সকৌতুকে' কবিতাটি প্রকাশ করিয়াছিলাম।

ইহার পরে কবি চীন জ্বাপান দ ক্ষণ-আমেবিকা ইউরোপ প্রভৃতি নানা স্থানে ভ্রমণ করিতে যান। কবিতাওলি কোনো পুস্তকাকারে প্রকাশিত হয় নাই বলিয়াই তাহাদের টানে অনেক অন্ত কবিতাও লেখা হইতে লাগিল। পরিশেষে দেশে ফিরিয়া ১০০২ সালেব খ্রাবণ মাসে পুস্তক প্রকাশ কবিলেন।

ধ কবি মনে করিয়াছিলেন বঙ্গভাবতীকে এই জাঁহার শেষ অর্ঘা নিবেদন— জাঁহার স্কাবনের বিদায়ের প্রক্ষণে প্রবীর তান। ইহার মধ্যে অনেকগুলি কবিতাতে এই বিদার-রাগিনী বাজিয়াছে—প্রবী, যাত্রা, পদধ্বনি, শেষ, অবসান, মৃত্যুর আছ্বান, সমাপন, শেষ বসন্ত, বৈতরণী, কল্পাল, ইত্যাদি। এই বইয়ের একটি বিভাগের নাম প্রবী, অন্ত একটির নাম পথিক।

(কিন্তু কবি জীবনসন্ধ্যায় সাবা জীবনের লাভ-লোক্সান শারণ কবিয়া দেখিয়াছেন ' সেই শ্বভির স্রোতে ভাসিয়া উঠিয়াছে কবির কৈশোব এবং বৌবন।) পর্চিশে বৈশাধ, তপোভঙ্গ, আগমনী, লীলাসন্ধিনী, কৃতজ্ঞ, ভাবী কাল, কিশোর প্রেম, প্রভাতী, তৃতীয়া, বিরহিণী, বদল প্রভৃতি কবিভার মধ্যে কবির কৈশোর, বৌবন ও বার্ধকোর আনল ফুটিয়াছে।

কৈবি ববীজ্ঞনাথ চিরযুবা। তিনি পূরবীর করুণ স্থুর ধরিবার চেটা করিলে কি হটবে, তাঁর মন তো আনন্দ-নিকেতন—সেই পূরবীর স্থরের সঙ্গে বিভাসের মিশ্রণ ঘটনা গিয়াছে।) কবি ফান্তনী নাটকে বলিয়াছিলেন— "নোদের পাক্বে না চুল গো!" তাহার আগে ক্ষণিকাতে ধদিও তির্দি বলিরাচিলেন—

> পাড়ার বত ছেলে এবং বুড়ো দ্বার আমি একবয়নী বে !—

ভথাপি ভাঁহার মনের বয়সটা একটু বেশি যৌবন-বেঁ বা। তাই মৌবনের বিজয়-ঘোঁষণা কবির বৃদ্ধবরসের রচনাতেও আমরা দেখিতে পাই—বলাকা কাব্যে তিনি যৌবন ও নবীনকে অভিনন্দিত করিয়াছেন। কিছু এই পূরবীতে কবি বেন যৌবনের সীমা পার হইয়া আসিয়া পিছন ফিরিয়া ভাকাইয়া গত যৌবনের স্থাভিবাদ করিতেছেন। তাই ইহার কবিতায় যৌবনোলাসের মধ্যে একটু করুণ স্থর মিশিয়া রহিয়াছে। কবি জীবন-সায়াকে পূরবীব স্লব ধরিয়া বখন বলিলেন—

বাজে প্রবীর ছব্দে রবির শেব রাগিণীর বীণ !—লীলা-সঙ্গিনী।

এবং তিনি ক্রমে বৈতরণী-তীরে আসিরা উপনীত হইলেন, তথন সেই বৈতবণী-নদীর তরঙ্গ-ভজের চাঞ্চল্য নিজের চিত্তে অম্বভব করিয়া কবি তাঁহার জীবন-দেবতাকে বলিয়াছেন---

> সন্ত্যাবেলার এ কোন্ খেলার কর্লে নিমন্ত্রণ, গুলো খেলার নাথী ? হঠাৎ কেন চম্কে ভোলে শৃস্ত এ প্রাক্রণ রুত্তীন শিধার বাতি ? —-খেলা।

কবি তথন মনে প্রাণে অমুভব করিতে লাগিলেন—

বৌবন-বেছনা-রসে উচ্ছল আমার দিনগুলি। —ভাপোভর —

কবি চিরকানই অনাসক্ত অনস্তপথযাতী পথিক। তিনি আঁকৈশোর বে-সব রচনা করিয়াছেন তাহাতে কেবল এই কথাই বলিয়াছেন যে নীমা অভিক্রম করিয়া অসীমের দিকে অগ্রসর হইরা চলিতে হইবে। এই জীবন-সারাকে বর্থন কবি জীবন-সীমার একেবারে প্রান্তে আসিয়া পৌছিয়াছেন মনে করিতৈছে, তথন তাঁলার মনে সমস্ত ছাড়িয়া অনস্তের মধ্যে মাঁপি দিয়া পাঁড়বার প্রতীক্ষাই প্রান্ত হইয়া উঠিয়াছে,—তথন কবি অঞ্জব করিতেছেন— পারের বাটা পার্যলো করী ছায়ার পাল প্রতে

वाकि वानात आरात छन्त्रवा -- अकान ।

ভাহার স্ট্রকর্ডা ভাহাকে---

ভাকিছেন সর্বহারা মিলনের প্রলয়-তিমিরে। —সৃষ্টিকর্তা।

সর্বহারার উপক্লে আসিয়া কবির মন বৈরাগ্যের গেরুয়া রঙে রঙীন হইরা উঠিয়াছে। কিন্তু আমাদের কবি তো আগেই জোর করিয়া বিশিয়া আসিরাছেন—

रिकाना-माध्यम मुक्ति म जामात्र नय । ---मूक्ति ।

কবি এক দিকে অনাসক্ত সন্মাসী, আবার অন্ত দিকে দর্বাস্তৃতির আনন্দপিরাসী—তাই তিনি তাঁহার জীবনদেবতার কাছে প্রার্থনা করিয়াছেন যে—

যুক্ত করোতে সনার সঙ্গে, মুক্ত করোতে বন্ধ।

একদিকে তিনি সকল সীমা লহ্মন করিয়া, সকল গণ্ডী অতিক্রম করিয়া চালিয়াছেন; আবার অন্তদিকে জীবনের সকল অফুভবের আনন্দ সন্তোগ করিতেও তাঁহার কম আগ্রহ নহে—রবীক্রনাথের কবিচিত্ত জীবনের বিচিত্র রম ও আনন্দের আম্বাদনে সর্বদাই উন্থা। কবির কাছে এই জীবনও মিথ্যা নছে, আবার এই জীবনই সর্বম্ব নহে। তিনি মানুষের মধ্যে বাঁচিয়া থাকিয়া প্রেম সন্তোগ করিতে চাহেন। বিশ্বপ্রকৃতির শোভার মধ্যে ভূবিয়া তাহার সৌন্দর্য উপলব্ধি করিতে চাহেন। পরিপূর্ণ প্রেম ও সৌন্দর্যাস্তৃতি রবীক্রনাথের কবিজীবনের এক অপূর্ব সম্পদ। তাই কবি জীবনের প্রান্তে উপনীত হইয়া আবার নিজের জীবনের মধ্যে ফিরিয়া আসিতে চাহিলেন। স্থান ও কালের বাধা অতিক্রম করিয়া, কবিচিত্র নিজের কৈশোর-মৃতির মধ্যে প্রত্যাবর্তন করিয়াছে। অতীতের সৌন্দর্যে ও রসে ভরা দিনগুলিকে ফিরিয়া পাইবার ইছো যথনই মনের মধ্যে জাগিয়াছে, তথনই তাহার সঙ্গে সম্পে বিদারের সম্ভাবনাও কবিকে উন্মনা করিয়াছে। সেইজ্বস্ত পূরবীর কবিতা-গুলির মধ্যে শরতের মেল ও রৌদ্রের থেলার মতন হাসি ও অঞ্র একসঙ্গে মিলিয়া গিয়াছে।

जारे कवि विनयाद्य-

এই ভালো আৰু এ সক্তমে কাল্লা-হাদির গলা ধমুনার ক্রেট্ট খেরেছি, ভূব ছিল্লেছি, ঘট ভরেছি, নিল্লেছি বিধান ! —পুরবী। অঞ্-হাসির বৃগল ধারা

ছুটে আমার ডাইনে বামে।

অচল গানের সাগর-মাঝে

চপল গানের বাতা থামে।

--- প्রবী প্রবাহিণী।)

হে জ্বীবনদেবতা কবির আশৈশবের দোসর চইরা তাঁহার সঙ্গে সঙ্গে নানা অভিজ্ঞতার ভিতর দিয়া কবিকে এই বৃদ্ধ বয়সে আনিয়া উপনীত করিয়াছেন, তিনি কবিকে গ্রাহার শৈশবের দিকে ফিরিয়া তাকাইতে ডাক দিলেন—

> 'পোসর আমার, স্থোসর ওগো, কোঝা থেকে কোন শিশুকাল হতে আমার গেলে ডেকে।' সোসর।

কবির সেই "লীলাসঙ্গিনী" আজ তাঁহার দ্বারে "শেষ প্রারিণী"-রূপে আবিভূতি। হইয়া কবির মনোহবণ করিতেছেন—কবিকে আবার যৌবনে ফিরাইয়া লইয়া আদিয়াছেন। "মাথের বুকে সকৌতুকে কে আজি এল" —কবি বিলিয়া উঠিলেন।

কবির এই দিতীয় যৌবন প্রথম যৌবন অপেক্ষা মহত্তর ও মহিমময়, তাঁহার এই দ্বিজ্বত্ব শরতের পরিণতি এবং বসন্তের প্রাচুর্য ও দৌন্দর্য দ্বারা মণ্ডিত। গোটে যেমন শকুন্তলা নাটককে উদ্দেশ্য করিয়া বলিয়াছিলেন—

"কেহ যদি তক্কণ বৎসরের স্কুল ও পরিণত বৎসরের দল, কেহ বদি মর্তা ও স্বর্গ একড়। কেবিতে চায়, তবে শকুগুলায় তাঙা পাইবে।"

তেমনি আমরাও কবির এই পূরবী কাবো বসস্ত-মূকুল, গ্রীমের ফল, ও মানস-রসায়ন সৌক্ষর্যস্তার একতা দেখিতে পাই। পূরবীর মধ্যে চিরভকণ চিত্তের তাফণা ও রসাম্ভৃতি এবং ভাবুক বৃদ্ধ দার্শনিকের পরিণত বয়সের অভিক্রতাসভূত প্রজ্ঞা একতা সন্মিলিত চইরাছে; এই-সব কবিতার মধ্যে প্রক্রা ভাব-চাঞ্চলাকে নিম্মত করিয়াছে। অস্কৃতি ও প্রজ্ঞার মিলনে বে-সব কবিতার ক্রম হর, দেই-সব কবিতাই কালের ভাগোরে স্থায়ী হয়। কবি বার্ন্স্ কর্তৃক লিখিত Auld Lang Syne, Highland Mary প্রভৃতি কবিতার প্রায় সভীর চিকাবন নর বলিরা অক্ষম নয়। অমৃভৃতি ও প্রজ্ঞার মিলনে বে-সব কবিতার ক্রম হর, সেগুলিকে ব্রিতে হইলে অমৃভৃতি ও প্রজ্ঞার মিলনে বে-সব কবিতার ক্রম হর, সেগুলিকে ব্রিতে হইলে অমৃভৃতি ও প্রজ্ঞার মিলনে বে-সব কবিতার ক্রম হর, সেগুলিকে ব্রিতে হইলে অমৃভৃতি ও প্রজ্ঞার মিলনে ব্রুবিতে হব। এই সম্পাদ্ধ পুর বেশী লোকের থাকে না।

কাজেই এইরকম কবিতার বই হুই-দশ-জন রসিক ভাবৃক প্রাপ্ত ছাড়। সাধারণের প্রিন্ন হইয়া উঠিতে পারে না—সাধারণের কাছে এই রকম কবিতা কঠিন গ্রব্ধায় বলিয়া মনে হয়; তাহাতে রসের অল্পতা হইরাছে বলিয়া সন্দেহ জন্মে। গভীর বিষয় বৃঝিতে হইলে সময় ও সাধনার আবশুক করে।

কবি রবীজনাথের বিশেষত্বকে অঞ্জিতকুমার চক্রবর্তী এক কথায় বলিয়া-ছেন—'সবামুভূতি'। কাজী আব চল ওছদ বলিয়াছেন ছই কথায়—'অতি-তীক্ত অম্বভূতি আর সন্ধানপরতা। কবি বন্ধং বলিন্নাছেন—তাঁহার গানের মাত্র একটি পালা, সেটি হইতেছে—সীমার মধ্যে অসীমের, অংশের মধ্যে সম্পূর্ণের অফুসন্ধান ও অফুভব। ইহা ছাড়াও রবীন্দ্রনাথের কাব্যের আর একটি বিশেষত আমি নির্দেশ করিতে চাই, তাহা তাঁহার মনের এক ছনিবার গতিবেগ—'হেখা নর, হেখা নর, অন্ত কোনো খানে!' এই চলার বেগে কবি ্যন মহোরতার ভার জীবনের পর্যায়ে পর্যায়ে থোলদ বদল করিয়া চলিয়াছেন; বিচিত্র ধরণের বা স্টাইলের কবিতা তিনি পরে পবে লিখিয়া আসিয়াছেন। একথানি বইয়ের বন্ধনে কতকগুলি কবিতা আবন্ধ হইলেই, কবিব নবনবো-নোৰশালিনী প্রতিভা সেই গণ্ডী উত্তীর্ণ হইয়া, সেই মাড়ানো পথ ছ'ড়িয়া আবার নৃতন পথে নৃতন রূপেব দদ্ধানে বহির্গত হইয়াছে। এই ছিগাবে রবীক্সনাথের সমগ্র কবিজ্ঞীবন বিশ্বমানবেব কাছে সংস্কার-মৃক্তির এক অম্লা উপহার। এইজ্বন্থ তিনি নৈবেগ হইতে প্রবাহিনী পর্যান্ত প্রবাহিত অধ্যাত্ম-সাধনার মধ্যেও গণ্ডীবন্ধ হইয়া থাকিতে পারেন নাই। সেই একের আরাধনার একতার৷ বাজাইতে বাজাইতে কবিচিত্ত থাকিয়া থাকিয়া বিচিত্রতার সন্ধানে ছুটিয়া বাহির হইয়াছে ; সে একতার। ফেলিয়া নানান্-তারা বীণাযন্ন তুলিয়া লইয়াছে। কারণ, কবি অনুভব করিয়াছেন-- যিনি এক, তিনিই আবার রূপং ক্লপং প্রতিক্লপং বভূব—অরূপ, তিনিই বহুরূপ ও অপরূপ।)

কবির এই যে চলা তাহা সব কিছুকে ডিঙাইয়া উড়িয়া চলা নহে,—ইহা
পা দিয়া পথ মাড়াইয়া মাড়াইয়া মাটিকে স্পর্ণ করিয়া অনুভব করিয়া চলা—
কিন্তু ছুটিয়া চলা। 'যেমন চলার অঙ্গ পা তোলা পা ফেলা', তেমনি কবি
ভাহার জীবনপথের প্রত্যেক বস্তুকে একবার অবলম্বন করিয়া পরক্ষণেই তাহাকে
পরিত্যাগ করিয়া অগ্রসর হুইয়া চলিয়াছেন। কবির এ চলা যেন রস-সমূদ্রে
সব্দি ডুবাইয়া সাঁতার কাটিয়া চলা। ঘাহার কিছু নাই সে ত্যাগ করিবে
কি !— শ্রু বড়া উপুড় করাকে তো ত্যাগ বলে না। ঝর্ণার স্বন্ধপটাই

ৰছে নিমত ত্যাগ, সেটা সম্ভব হরেছে নিমত গ্রহণে।" তাই কবি বনিয়াছেন—

আমি যে সব নিতে চাই নে, আপনাকে তাই নেল্ব যে বাইরে ৷

এই পুস্তকের কবিতাগুলি যেমন প্রবী ও বিভাস রাগিণীর মিশ্রণে এবং গভীর ভাব ও দীলার মিশ্রণে অপূর্ব স্থলর হইরাছে, তেমনি ইহার কবিতার ভাবামুযায়ী নব নব ছব্দ এবং কুশলী কবির শব্দধোজনার নিপুণতার ইহা অপূর্ব সৃষ্টি হইরাছে।

দ্রন্থবা—পূরবী সমালোচনা—নীহাররপ্পন রার, প্রবাসী, ১৬৩২ চৈত্র, ৭৯৭ পৃষ্ঠা। রবীশ্রনাথের কবিভার নৃতন সাড়া—ভবানীচরণ ভট্টাচার্ঘা, ভারতী, ১৬৬১ জ্বোষ্ঠ, ১৩৫ পৃষ্ঠা। প্রবীর হুইটি কবিভা—অমৃতলাল শুপ্ত, দীপিকা, ১৬৬১ বৈশাধ-জ্যৈষ্ঠ, ৬ পৃষ্ঠা। রবীশ্র-প্রতিভার উৎস—
নীহারপ্পন রার, ভারতবর্ব, ১৬৬৬ কার্ত্তিক।

তপোভঙ্গ

এই কবিতাটি চিরষ্বা কবির সদানন প্রাণশক্তির উচ্ছল প্রকাশ।
মহাকাল সন্নাসী, সর্বরিক্ত ভোলানাথ। কিন্তু সেই কালের অধীশর তে
সকল কালের সংবাদ জানেন, তিনি কি কবির যৌবন-কালের ধবরটি ভূলিরা
বিসিন্না আছেন? বসস্তের অবসানে কিংগুক-মঞ্জরী করিয়া গিয়াছে, তাহারই
সক্ষে 'শৃন্তের অকৃলে তা'রা অয়ত্নে গেল কি সব ভাসি?' হাওয়ার থেলার
মেঘের মন্তন সেই যৌবন-শ্বতি কি—'গেল বিশ্বতির ঘাটে?' কিন্তু ভোলানাথ
কি ভূলিয়াছেন যে একদিন কবির সেই যৌবন-দিনগুলি তাহার রুদ্ত-রূপকে
কী লোভার সৌন্দর্যে সাজাইরা তাহার ভিক্লাপাত্র ভরিয়া দিয়াছিল ? সেদিন
তো সয়াসীর সব তপতা ভূলাইয়া দিয়া কবি তাহাকে আনন্দময় করিয়া
ভূলিয়াছিলেন; এবং সেই ক্ষেপার আনন্দ-নৃত্যের তালে তালে কবি কত ছন্দ
কত সন্দীত রচনা করিয়াছেল—সর্বহারাকে ছিনি নিত্য-নৃতনের গীলায় মগ্র
করিয়া মন্ত ক্ষরিয়া ভূলিয়াছিলেন। সেদিনকার আনন্দ-রসের পানপাত্র কি
সহাকালের তাগুকে আন্ধ চুলিয়ছিলেন। সেদিনকার আনন্দ-রসের পানপাত্র কি

ক্ষি অভ্তৰ ক্ষিতেছেন বে, সেই ক্ষাপাত নিংশ হইয়া বিশ্ব হর্ম। যার নাই জাহা সম্লাসীর শ্রুম অভ্যানে সোপন কয়া আছে যাত্র। কালের রাথাণ মহাকাণ তাঁহার শিঙা বাজাইরা সমস্ত আনন্দকে জাঁহার মধ্যে সংহরণ করিয়া রাখিরাছেন, আবার অবকাণ পাইলে তাহাদিগকে ছাডিরা দিবেন বণিরাই।

> বিজ্ঞোষ্টী নধীন বীর, জবিরের শাসন নাশন, বারে বারে দেখা দিবে; আমি রচি ভারি সিংগাসন, ভারি সন্তাবণ।

কবি তো সন্ন্যাসীর তপস্থাকে অধিক দিন সহ্ন করিতে পারেন না, ঠাহার কাজই যে রিজকে সৌন্দর্যে ভূষিত করিয়া তোলা, বিনাশেব মধ্যে স্ষ্টির আবাহন করা ছঃখিতকে স্থথে আনন্দে বিহ্বল কবিয়া তোলা। ভাই কবি বলিতেছেন—

> তপোভল দৃত আমি মংগশ্রের, হে কন্ত সন্ন্যাদী স্বর্গের চক্রাপ্ত আমি। আমি কবি যুগে যুগে আসি তব তপোবনে।

হুর্ত্তরের জন্মাল।
পূর্ব করে মোর ডালা,
উদ্ধামের উতরোল বাজে মোর ছন্দের ক্রন্সনে।
ব্যথার প্রলাপে মোর গোলাপে গোলাপে জাগে বালী,
কিশলরে কিশলয়ে কে'ড়হল-কোলাংল আনি'
মোর গীন হানি'।

কবি মহাকালকে তাঁহার বার্ধ ক্যের আর সন্ন্যাসের ছদ্মবেশ ছাডাইয়া নব-বরবেশে সাক্ষাইয়া দিতেছেন, কবির ইক্সক্ষালে ক্রন্তের

> অন্থি-মালা শেছে পুলে মাধবী বল্লৱী-মূলে;

ভালে মাথা পৃস্পরেণু, চিতাভন্ম কোথা গেছে মুছি'।

কবি সন্ত্যাসীর সব চালাকি ধরিরা ফেলিয়াছেন—তিনি যে এতদিন
সন্ত্যাসের ডান করিরাছিলেন, সে কেবল প্রিরাব মনে বিরহ জাগাইরা মিলনকে
নিবিড় ও মধুর করিরা তুলিবার জন্ত। সেই মিলন তো কবি ঘটাইরা দিলেন
—সন্ত্যাসীকে স্থলর সাজাইরা। ভাষাতে সুখী হইরা—

কৌতুকে হাদেন উমা কটাব্দে লক্ষিয়া কবি পানে , মে হাদ্যে মজিল বাদী ক্ষমনের জনধানি-গানে কবিত্ব পরাগে। বৃদ্ধ কবি এইন্ধপে নিজ্য-ন্তনের চিরখৌবনের অধিকার মহাকালের দরবারে কাল্পেনী করিয়া লইলেন—ভাষাতে দেবী উমার সমর্থন আছে, মহাকালেরও যে বিশেষ কোনো আপত্তি আছে তেমন ভাব তো তিনি দেখান নাই।

J37 — Western Influence on Rengalı Literature — Priyaranjan Sen, P 362

ভাঙা মন্দির

মন্দির পবিতাক্ত ও জীর্ণ ভয় হহর। পড়িয়া আছে। সেথানে আৰু পজাবাতীর্বাত্রী কেই আদে না। নাই বা আদিল মান্তব—বিশ্বেশ্ববেব বন্দনা ও প্রাণা এখনে। করিতেছে বিশ্বপ্রকৃতি—বন্ফুল ফুটিয়া দেবতাব জংগ কমন করিতেছে, বাতাসের নিঃখনে তাঁহার বন্দনা সমীবিত হইতেছে, পংখীব ভজন গাহিতেছে। দেব-বিগ্রহ চূর্ণ হইরাছে বলিয়াই তো সীমাব বাঁধন কাটাইয় ভবনস্কাদ্ব এই মন্দিবে আবিস্থাত হইগছেন

আগমনী

মাঘ মাদ। দাকণ শীত। সব শুক্ত, পুল্প ঝরিয়া গিয়াছে। সেই শীতেব জডতার মাঝে অকলাৎ কোথা চইতে বসদ্বের পাগল চাওয়া বহিলা গেল, আব অমনি গাছে গাছে নবীন কিশলয় উলগত হঠল, দুল মঞ্জবিত হইয়া উঠিল, দোরেল শামা কোকিল কপোত মৃত্যুছি ডাকিয়া নবীনতার আনলের আগমন-বার্তা ঘোষণা করিতে লাগিল। কবি ইহা দেখিয়া নিজের জরাজীণ বার্ষক্য কুলিয়া ঘৌবনের আনলেল উল্লাস অভ্যন্তব করিতেছেন। তাঁহার স্থেক্ষর। কত অব্যক্ত ভাবমঞ্জরী উল্লোর চিত্তকাননে কুটিয়া কৃটিয়া সৌরতে শোভায় ভবিয়া উঠিয়াছে—ফ্রি অভ্যন্তব করিতেছেন—

करमञ् जाम मनीम वहना, मरमञ् जाम राजा

আৰু যথন বিদায়বেশায় পূৱৰী-রাগিণীর গেরুয়া হব গাছিতে গাছিতে — ববি পশ্চিম-গগনে হেলিয়া পড়িয়াছেন, তথন এই নব-বদফেব শুভাগমনে শ্রীহার চিন্তাকাশ বিচিত্র-বর্ণ-স্বমায় রঙীন হইয়া উঠিয়াছে। এবং----

> বিদাম নিমে শাবার আগে পড়,ক টান ভিতৰ নাগে ব্যহিরে পাস ছুটি। প্রেমের ডোবে বাঁবুক গারে, বাঁধন থাক টুটি'।

লালাসঙ্গিনী

ষে বিশ্ব-রূপ, থে ত্বন-স্থল্য, যে অধিলরসায়তম্তি কবিকে আবাল্য কাজ ভূণাইয়া বিশ্বশোভায় মাতাইয়া তলিয়া খেলা কবিয়াছেন, তে জীবনদেবতা কবিকে বিচিত্র আভ্রুছতোব ভিতৰ দিয়া এন্দৰ দীঘ্টাবানৰ পাছে লাইয়া আদিয়াছেন, তিনিই আজ্র শুক্সাং কবিকে বিশ্ববাদে নান দ্বিন্দ্র প্রায়েশ করিয়া 'কাভেব কক্ষ-কোণে' আদিয়া খেলার শোলিতে ভাকিতেছেন। সেই নিবপমা প্রিষ্তমা লীলাদ্দ্রিনী ঠাহাব খেলাৰ সহচব কবিকে ছাডিয়া তো বিশ্বলীলা জমাহতে পাবিতেছেন না। কাজ কবিবাব যোগা কেজো লোক তো জগতে তেব আছে, কিন্তু ক্ষন্তবেৰ দহিত খেলাক কবিবাৰ লোক কো কবি ছাডা আর কেই নাই। তাই কবি সেই 'চিনি চিনিকৰি চিনিতে না পাবি' গোছেৰ লীলাদ্সিনীকে জ্ঞান্তান কবিবাত্তন—

নিষে যাবে সামে শুলাঘবের পরে ঘর-ছাড়া যত দিশা হাবাদের দান, অবারো-পথে যাত্রী বাহারা চাল নিশ্বল আবোজনে। কাজ ভোলাবারে করো বাবে বাবে কাজের কল কোলে।

করিকে আবার মানস-প্রতিমাগুলিকে কগ্পনা পটে নেশাব ববং বং করিয়া তুলিতে হইবে রসের তুলি বুলাইয়া। কিন্তু সেহ মোহিনী নিষ্ঠুরা বাব বার কবিকে অসমবেই ভাক দেন, তিনি 'আবাব আহবান' কবিয়াছেন, কিন্তু-- বেৰো বা কি হার, বেলা চ'লে বায়— সারা হ'লে এলো দিল। বাজে পুরবীর ছন্দে রবির শেষ রাগিলীর বীণ।

কবি এবার শেষ খেলা খেলিয়া লইবেন মৃত্যুর অজ্ঞাততার মধ্যে।
পৃথিবীতে পার্থিব শোভার মধ্যে হাঁহার সঙ্গে দেখাসাক্ষাৎ পরিচর হইয়াছিল,
দেই লীলাসন্ধিনীর সহিতই লোকলোকান্তরে অন্ত কোন অচেনা স্থানে
প্নঃপরিচর হইবে। কবির তো 'নিশীখ-অন্ধকারে অমাবস্থার পারে' যাইতে
ভর বা দিখা নাই, তাঁহার লীলাসন্ধিনী গোপন-রঙ্গিণী রস-তর্মিণী যে তাঁহার
আজীবনের চেনা, এবং তিনি যে কবির প্রিয়, প্রিরতমা নিরুপমা।

লীলাদন্ধিনী জাবনদেবতার অনুভূতিকে জীবনে ফিরিয়া পাওয়ার কথা পূরবীর অনেক কবিতাতেই আছে। যিনি নানা অবকাশে ও নানা উপলক্ষ্যে জীবন স্পর্শ করিয়া কবিচিত্ত সৌন্দর্যে ও আনন্দে পূর্ণ করিয়া তোলেন, তাঁছাকে কবি অনেক দিন যেন হারাইয়া ভূলিয়া ছিলেন। আজ জীবনসন্ধ্যায় সেই হারানিধি আপনি তাঁহার জীবন-নিকুল্লের ঘারে আসিয়া কবির দৃষ্টিপথে পড়িবার জ্বন্ত প্রতীক্ষা করিয়া আছেন; তাঁহাকে দেখিতে পাওয়ার আনন্দে কবিচিত্ত উল্লাসে উদ্বেশিত হইয়া উঠিয়াছে।

বেঠিক পথের পথিক

যিনি অনন্ত-রগ্নীর তিনি তো অচিন্তাত্ব, তিনি তো কোনো সীমার মধ্যে আবদ্ধ নহেন। তাই তিনি বেঠিক পথের পথিক, তিনি অচিন। কিন্তু তিনি তো অবাঙ্ মনদোগোচরঃ নহেন, তাঁহার সন্তা তো আমরা নানা ইন্দ্রিরায়-ভূতির মধ্য দিরা, ভাবনা-মননের মধ্য দিরা, রসাখাননের মধ্য দিরা উপলব্ধি করিয়া থাকি। সেই উপলব্ধিকে প্রকাশ করিবার মতন বচন আমরা পাই না, সেই অ-ধরকে ধরিয়া রাখিবার মতন কোনো বন্ধন আমাদের আরত্তে নাই; তথাপি তাঁহাকে চিনি না এমন কথাও আমরা বলিতে পারি মা, আবার চিনি এমন কথাও বলা বার মা। বেধানে বত কিছু খুমার আছে, আমল আছে, ক্রমণ আছে, তির আছে, বিলম আছে, বিরহ আছে, সকলের ভিতর দিরা তাহারই শর্মণ আমরা পহিছা থাকি। তাই কবি বলিজেকেন বে—

আহ্বান

बरीक्रमाथ कवि ७ कर्मी धकांवास्त्र । जाहे कांकात्र वक्षरमाञ्च कक्षरमा डाहारक धनित्रा नामिएछ भारत ना, चौरानत डेकाम बाज-अिखाक, विक्तितृथ বার্মের থাকন ও উন্মন্ত বংকাত কবির মনকে আকুল উতলা করিয়া ভূলে। তখন আমরা বৰীজনাথকে কমি-মধ্যে পাই। মুনামানবের ডাকে ববীজনাথ कवि-कहारमाक हाछिया वाक्टर जीवत्नत्र विमुचनात्र मत्था नामिता प्रात्मन : ৰাখিত মানবের বেদনায় ব্যাথা অম্বুন্তব করেন; এবং বিশ্বের কল্যাণ-বিধানের চেষ্টা করেন। ভাঁষার অন্তরের মানবতা কবি-ভাবের উপরে প্রভাব বিস্তার করে; বিশ্ব-প্রেমিকের কাছে আর্টিস্ট পরাভব স্বীকার করেন। করিব बीयत्न वात्रश्वात अहेन्नल बाँग्डिट त्नथा निवारक,-श्रतनी-श्राम्बीन यागवान, ব্রহ্মর্যাক্রম-প্রক্তিগা, বিশ্বভারতী-স্থাপন, মহাত্মা গান্ধীর প্রায়োপবেশনের সমরে দেশের জন্ম ব্যস্ততা, ইত্যাদি। কিন্তু লোকহিতকর কর্মাহ্রাসের অপেকা আর্টের স্থান অনেক উচ্চে ; হিত-সাধন সাময়িক, আর্ট' চিরম্ভন---যে অভাব বা হুৰ্গতি মানুষের উপস্থিত হইয়াছে, তাহা নিরাকরণ করিতে পারিলেই হিতসাধকের কাজ সমাপ্ত হইয়া গেল; কিন্তু জাট হইতেছে A thing of beauty is a joy for ever (Keats) ; সেই অন্ত এই-সকল কাঁজের মধ্যে রবীজ্ঞনাথ বারংবার এক কিরিয়া যাওয়ার ভাক ভনিতে পাইরাছেন, তাহা সেই চিরস্তনেরই ডাক। তাই কৰি যেমন বালী বাজাইতে বাজাইতে ৰলিয়া উঠেন 'এবার ফিরাও মোরে!' অথবা বলিয়া উঠেন 'আবার আহ্বান!' 'তোমার শহা ধ্লায় প'ড়ে কেমন ক'রে সইব।', তেমনি আবার অন্ত দিকের ডাকেও বলিরা উঠেন—'সমর হরেছে নিকট, এখন বাঁধন ছিড়িতে হবে।' যে বানী বিশ্বজনকে শুনাইবার জন্ত তিনি ধরাতলে অবতীর্ণ হইয়াছেন সেই একমাত্র অদ্বিতীর বাণীর প্রচারই জাঁহার कांक, डाँबांब मिलन ; चक्र नमखरे छम् किनिटकत, वित्रस्ततन नरण छारामित কোনও সম্বন্ধ নাই। এখানে কবি বাহার আহ্বান শুনিয়াছেন তাহা জাঁহার চিরস্তন-পঞ্জিরই নব-ছপ।

আকাৰ কবিভাটিন যথ্যে একটি বিবাদের ভাব আছে, বারার কর কৃতির চাঞ্চল্য বা আকুলভার (unrest) মধ্যে। এই চাঞ্চল্য হইভেছ্নে আকাচনার নালা। কবির মন এক এক পর্যার হইতে অপর পর্বাহে উদ্ধীর্ব হইরা ন্তন ন্তন স্থা করিয়া আসিয়াছে; এখন কবির মনে আর-একটা ন্তন-স্কনকারী যুগ আসিয়া আবিত্তি হইরাছে; কিন্তু কবিচিত্র নিজেকে প্রকাশ করিতে পারিতেছে না; সেই চাঞ্চলা শুধু ঘূর্ণীরই স্থাই করিতেছে, জাহার মনের সমন্ত ভাষ-সন্তার কেবল কুগুলী পাকাইরা উঠিতেছে, কোনো বিশেষ আকার ধারণ করিতেছে না। কবি যখন চিন্তের ভাবৈষর্ধ-নীহারিকাকে স্কল্পট করিয়া তুলিতে পারিবেন, তথন তাঁহার এই ব্যাকুলতা শান্ত হইরা বাইবে; এবং সাহিত্য-সৌরক্তরতে এক ন্তন ক্যোতিছের আবিত্রা হইবে, বাহার ভাশ্বর ক্যোতি দেখিয়া বিশ্বমানব মৃথ্য হইবে, কত পথিক প্রাণ-পথের নির্দেশ পাইবে। এই স্থাইর ব্যাধা ও আকুলতা প্রত্যেক নৃতন ভাবস্থাইর পূর্বে কবি-চিন্তকে বিমথিত করিয়াছে—তুলনীয়: জীবনদেবতা ভাবের ও নৈবেশ্ব-দীতাঞ্জলি ভাবের কবিতাবলী। কবি ব্যাথিত শ্বরে বলিয়াছেন—র্থন তুমি বাঁথ ছিলে তার সে কী বিষম ব্যথা।' সন্তানের জন্মের পূর্বে মারের মনে যেমন একটা চঞ্চলতা ব্যাকুলতা কষ্টকর অমুভূতি ক্যান, এও তেমনি,—কবিতাগুলি কবির মানস-সন্তান বৈ তো আর কিছু নয়! তুলনীয় ও দুষ্টব্য—ক্ষমের।

কৰিব বিনি জীবনদেবতা, অন্তৰ্বামিনী, প্ৰতিভা, লীলাসজিনী, দোসর—তিমি যেমন কৰিকে ডাক দিয়া বাঁধা গণ্ডী হইতে বাহিরে লইয়া যান, কৰিও তেমনি তাঁহাকে খুঁজিয়া ফিরেন,—উভরের মিলনের আগ্রহে থাকিয়া থাকিয়া উভরের সাক্ষাৎ বটিয়া যায়। সেই কবি-প্রতিভার দারাই কবিব পরিচয়; মান্ত্র রবীজ্ঞনাথ অপেক্ষা কবি রবীজ্ঞনাথের একটি বিশেষ পরিচয় আছে; সেই কবিথের অন্তপ্রেরবীর দারাই কবি নিজেকে কবি বলিয়া জানেন এবং বিশ্বের কাছেও তাঁহার পরিচয় দেওয়া ঘটে। যাহা কিছু ন্তন অন্ত্রেরণা ভাহাকেই কবি তাঁহার প্রণাভ্যারিকা-রপে ক্ষেত্রেরণা

ৰাক্ষ ববীশ্ৰনাথ তো সাধারণ সহত্রের একজন মাত্র—তেষন ধনিপ্ত স্পূক্ষ তো আরো অনেকে আছেন। সেই রূপে ভাঁহার কোনো বিশেষ্ট নাই। কিন্তু বেই সেই মানুষ ববীশ্রনাথকে কবিগুলজি শর্প করে, ^{বেই} ভাঁহার ক্ষিপ্রভিতার অন্ত্রেরণা অপূর্ব ক্ষিতে প্রকৃত্ত করে, অমনি তিনি , সহত্রং সহত্র জনসাধারণ হইতে ক্ষুত্তাং পৃথক হইবাং বান—তিনি রাম গ্রাম বহ বরিং হারী তিক্ষা চর আধ্রেরণ গ্রুক্ত প্রভৃতি হইতে পুরুক্ত হইবাংকবিগোলিতে স্থান লাভ করেন, এবং সেথানেও একজন শ্রেষ্ঠ কবি বলিরা সম্মানের সিংহাসন অধিকার করিয়া মহিমমণ্ডিত হইয়া বসেন।

কবি নিজের কবিত্ব-শক্তির সন্ধন্ধে সঞ্জাগ হইরা উঠিতেই তাঁহার আমোপলন্ধি হয়, কবি অনুভব করেন,—'আছি, আমি আছি!' এবং সেই 'আমি আছি'-বোধ জাগ্রং হইরা উঠিয়া কবির জীবনের প্রতি মূহুর্ড অমরত্বের আনন্দে মণ্ডিত করিয়া দেয়। কবিপ্রতিভা যেই কবিকে নিজের বলিয়া গ্রহণ করে, অমনি অব্যক্ত ব্যক্তি মুপরিবাক্ত হইরা উঠেন, অখ্যাভ ব্যক্তির খ্যাতিতে জগং প্লাবিত হইরা যায়।

নিখিলের অধির ছন্নাবে আদিয়া যখন উষা তাহাব উদোধিনী বীণার আলোকর দির হাজার তার বাজাইয়া তুলে, এবং আলোকের বর্ণে বর্ণে অমরাবতীর গান রচনা করে, তখন যেমন বিশ্বপ্রাণের মধ্যে প্রকাশব্যগ্রতা ও চাঞ্চল্য জাগ্রং হইয়া উঠে, সামান্ত ধূলাও তখন খ্যামল সরস্তার ঢাকিরা যায়, তেমনি এই কবি-প্রতিভাও 'আকাশন্তই প্রবাসী আলোক, দেবতার দ্তী,' তাহা স্বর্গেব আকৃতি মর্ক্যের গৃহের প্রান্তে বহিয়া আনে, এবং বাহা ছিল নশ্বর মরণধর্মী তাহাকে অমর কবিয়া তুলে। রবীজ্ঞাণ যদি হাজার হাজার জমিদারের মতন কেবল জমিদার-মাত্রই হইতেন, তবে অস্থান্ত জমিদারদের নাম যেমন কেই জানে না, মনে করিয়া বাথে নাই, তাঁহারও সেই দশা হইত; কিন্তু যেই তাঁহাকে তাঁহার প্রতিভা কবি করিয়া তুলিল, অমনি তিনি অমর হইয়া গেলেন অমর কবি।

সেই কল্যানী দেবদ্তীর আশীর্বাদ নামিয়া আসিল,—
তাই তো কবির চিত্তে কল্পনোকে টুটেল ফর্যল বেদনার বেঙ্গে;
মানস-তরঙ্গ-ভলে বাণীর সঙ্গীত-শতদন নেচে ওঠে জেগে।

যাহা কিছু কৰির মনে অন্ধত্তব জাগায় তাহাই তো তাঁহার বেদনা। সেই বেদনা হইতেই তো কবির স্ষ্টি। যিনি ছিলেন অখ্যাত অজ্ঞাত সামাস্ত একজন গোক, তিনি সেই অজানার আবরণ উন্মোচন করিয়া দীর্ণ করিয়া বাহির হইয়া আসিলেন কবি হইয়া—

অধির তিমির-বন্ধ ধীর্ণ করে তেজৰী তাপস।

জাই কবি কেৰাৰী, ভাগৰ, বীর: দ্বাৰত্যকে দ্বিৰি হনন ক্রমেন, ন্দ্রার করে ভিনি বজ্বকে বশ করেন—কঠিন ভাঁহার ক্রাধনা।

কবিব নেই সক্লপ্রেরণা, প্রজিজা, নীলাবছিনী, বোনর, কজ বার কবিব প্রাণ স্থান্তিয়ারিকা-বেজে সাসিরা উপনীত কইয়াছিল; সাম স্থানার করি ভাষার ক্ষম প্রতীকা করিছেছেন—টাহার চিত্তপ্রদীপ নির্বাণিত হইরা বিরাহে, তাঁহার ছব্য-বীনা নীরব কইয়াছে, নেই স্থান্তিয়া স্থানিকা সাবিহা এই বীণের সূবে শিশা আলাইয়া তুলিবে, এই বীণার ভাবে শ্বনার তুলিবে। কবি চিরন্তনী কবিত-শক্তির প্রস্থা ব্যাকৃল কইরা প্রতীকা করিতেছেন। ক্ষিতার সকল উপকরণ প্রান্তত, সেই স্থান্তিনারিকা আসিলেই ভাষাকে প্রকাশের সার্থকভা বান করিতে পারিবে।

ক্ষন ভাব ও নৃতন ক্ষি-নৈপুণা-প্রকাশের বাখা ও বেদনা ব্যঞ্জতা বুকে ক্ষরা কবি বিনিপ্র অভবে হইরা প্রতীক্ষা করিতেছেন,—কবে জাঁহার কাছে জাঁহার কাছে কার্যুল্মীর চরম আহ্বান—the best creative call in the poet's mind—কবে আনিয়া উপন্থিত হইবে। কবি তো জানেন যে শেষ নাহি যে শেষ কথা কে বল্বে ৮' 'শেষের মধ্যে অশেষ আছে', তাই জাঁহার শেম গান চরম ও পরম গৌলার্যে ভূষিত করিয়া পূর্ণ তানে পাওরা হয় নাই, জাঁহার মন One Word More বলিবার প্রতীক্ষার জাঁহার অন্ধ্রেরণার দিকেই তাকাইরা আছে—কোথায় সেই সর্বশ্রেরণার ফিকেই তাকাইরা আছে—কোথায় সেই সর্বশ্রের অন্ধর্মন বাহা কবিকে শেষবারে পরিপূর্ণতা চরমোৎকর্ম দান করিয়া যাইবে। কবির যে সমস্ত ক্ষণ নিফল বন্ধ্য অন্ধর্ম—uninspired moments—তাহারই প্রায়ে কোথার সেই অভিনারিকা বিলম্ব করিতেছে ?

অপ্রকাশের অন্ধকার কালো চক্ষের মধ্যে মহেক্রের বক্স হইতে বিছাতের আলো প্রকাশিত হইরা উঁঠুক। কবির চিন্ত কবিত্ব-স্থা বর্ধণের জন্ত কাঙাল হইরা উঠিয়াছে, তাহাতে প্রকাশের বাগ্রতা সঞ্চারিত হোক। কবির যে দান-শক্তি অপ্রকাশের কারাগারে অবক্ষম হইরা আছে, তাহাকে মৃক্তি দান কক্ষক সেই অভিনামিকা। কবি জাহার সর্বশক্তি প্ররোগ করিরা, তাহার যাহা দিবার ভাহা দান করিয়া রিক্ত হইতে পারিলে পরিত্রাণ পাইরা বাচেন। নৃতন ক্ষনীশক্তি করিকে সার্থক করিয়া ভূকুক।

কৰিব জীবন-সারাচ্ছে কৰিকে দিয়া 'ৰেইজন দাই ক্ষাইরা কৰি-প্রতিতা

ধদি বিদাৰ লয়, তাহাতে ক্লবির ক্লোনো ক্লতি নাই, অগতেরও কোনো ক্লতি নাই। তথন আর দিবার কিছু থাঞ্চিবে না বলিরা বিধবার মতন শুলবেশ ধারণ কলিয়া বিধবার মতন শুলবেশ ধারণ কলিয়া বিধবার মতন শুলবেশ ধারণ কলিয়া বিবর-শান্ত প্রগতীর ক্লাবে গ্রান্তার মধ্যে দেখা দিবে। জীবনের দেব মৃহতে যাহা ক্লি করা কলৈ তাহা ক্লির শোস লাভ, এবং কবির জীবন-গরমার ক্লাবেরা ঘারিকেন ইনিকে পারিকেন ; ক্লিবে ক্লীবন শেব হইরা যাওয়াতে ভাষা পারিকেন না বলিরা যাহা ক্লাবের মর্ব শেষ কভি হইল, রেই সমন্তই শেষ চরিতার্থতায় আননাম্য কর্মী উঠিবে—ক্লীবনধেৰতার ক্লাব্ল-শ্লেষ আবির্ভাবে ক্লির হুংথ-প্রথ প্লচ্ছ আনন্দে পূর্ণ ইইয়া উঠিবে।

কৰি তো জীবন-পথের পাষ। তিনি তাঁহার যাত্রা-সহচরী লীলাসন্ধিনী দোসরকে সন্ধান করিতেছেন জীবন-পথের প্রান্তে উপনীত হইয়। কিছু সেই যাত্রা-সহচরীর স্বর্ণরথ কোন্ সিন্ধুপারে যে চলিয়া গিয়াছে, তাহার তো কোনো উদ্দেশ কবি পাইতেছেন না—তিনি তাঁহার শেষজীবনে মনের মধ্যে কবিত্বের অফুপেরলা অফুভব করিতেছেন না।

কবি তাঁহার অন্তরের গহন-বাসিনী নব-মানসীকে শেষ-প্রারিণী নামে অভিনিত করিতেছেন—দেই যে কবি-প্রজিভার অন্তপ্রেরণা ভাগা তো নৃতন নৃতন কবিত্রা গান স্থাই করিয়া কবিকে সম্মানিত সংবর্ধিত করে—সেই প্রারিণী কবির চিন্তকাননে গানের ফুল ফুটাইয়া, তাহাতে অর্থা রচনা করিয়া কবিকে পূজা করে—মানুষ রবীক্রনাথকে নহে, রবীক্রনাথের অন্তরের চিরদিনেব কবিকে। যিনি ছিলেন কাবর জীবনদেবতা, অন্তর্থামিনী, নিট্রা স্বামিনী, ভিনি এখন হইয়াছেন শেষ-পূজারিণী—ভিনি এই শেষবার কবির চিত্তকাননের পূপা চয়ন করিয়া কবিকে শেষ পূজা করিয়া লইবেন, কবির এই শেষ অন্তর্পরাধার ছবিকে বরণ করিয়া লইবেন।

যেদিন কবি লেব গান রচনা করিবেন তাহার পরে বদি আর একদিনও জীবিত থাকেন ভবে সেই দিনেও তো কোনো নৃতন সৃষ্টি করিতে পারিবার সন্তাবনা থাকিরা ঘাইতেছে, এবন কি মরণের মৃহুতেও তো কোনো নৃতন সৃষ্টি সন্তব হইছে পারে। অভএব কবি যাহাকে শেষ রচনা বলিতেছেন তাহা বাস্তবিক শেষ নাহে, অশেবের মধ্যে এক স্থানে হুগিত হইলা থামা মাত্র। সেই কর বলিভেছেন যে ভাঁহার শেষ-পূজারিণীর—

অসমান্ত পরিচর, অসম্পূর্ণ নৈবেছের বালি

নিষ্ঠে হলো তুলে' !

কিন্ত কবির প্রেরসী লীলাগঙ্গিলী যাত্রা-সহচরী মরণের ক্লে-তিক মরণমৃষ্ট্রেল্-কবিকে দিরা কিছু রচনা করাইরা লইবার—কবিকে কবি বলিরা বরণ
করিরা লইবার কোন আরোজন কি করিরা রাখেন নাই ? আর, মরণের
পরে মরণোত্তর কালে অন্ত কোনো লোকে কবি যথন পুনর্জন্ম লাভ করিবেন,
তথন কি সেধানে সেই নব-জীবনে তিনি আবার ন্তন কবিতা রচনায় প্রবৃত্ত
হইবেন ? পুরবীর রাগিণী কি প্রভাতী ভৈরবীতে পরিণত হইরা সেই জ্বনেব
নীরবতার বক্ষে নব ছন্দের ফোরারা ছুটাইরা দিবে ?

১১ই জ্যৈষ্ঠ ১২৯৭, ২৪এ মে ১৮৯৯ সালে রবীক্সনাথ প্রমথনাথ চৌধুরীকে এক পত্র লেখেন। সেই পত্রে ডিনি তাঁহার কাব্যজীবনের একটা বিশ্লেষণ দিয়াছিলেন। তাহা হইতে 'শেষ পূজারিনী'র ভাবটি পরিদার বুঝা যাইবে।

"আক্রমাল বে-স্কল কবিতা নিখ্ছি, তা 'ছবি ও গান' থেকে এত তলাং বে আমি ভাবি আমার লেগার আর কোথাও পরিণতি হচ্ছে না, ক্রমাগতই পরিবর্তন চলেছে। আমি বেশ অফুছব কর্তে পার্ছি, আমি বেন আর একটা পরিবর্তনের সন্ধিপ্তলে আসম্ন অবস্থাব গাঁচিবে আছি। এরকম আর কতকাল চল্বে তাই ভাবি। অবশেবে একটা ভাবগা তো পাব, নটা বিশেবরূপে আমারই আরগা। অবিশ্রম পরিবর্তন দেখ্লে ভয় হয় বে, এতকাল ধারে এতওলো বে লিখ্লুম সেওলো কিছুই হয় তো টিক্বে না—আমার নিজের বেটা চরম অভিবাজি সেটা যতকাল না আমে, ততকাল এওলো কেবল ভাবে আছে। বাত্তবিক, কোন্টা সত্যি কোনটা বিখ্যে, কবে বে ধরা পড়বে তার ঠিক নেই। কিন্তু আমি থেখেছি, যথিও এক এক সমবে সন্দেহের অক্ষণারে মন আছের হ'রে বার, এবং আমার প্রাতন সমন্ত লেখার উপরেই অবিহাস ক্ষেত্র, তব্ বোটের উপর মন থেকে এই আর্রিবাসটুকু যার না যে, যদি বংগইকাল বেঁচে থাকি, তা হ'লে এমন একটা দৃঢ় প্রতিষ্ঠাভূমিতে পিবে পৌছব, সেধান থেকে কেউ আমাকে স্থানচ্যত

---সবৃ**জ্পত্র, ১৩২৪, পৃষ্ঠা** ৩৪৬-৪৭:

এই যে ক্রমাগত পরিবর্তনের মধ্যে দিয়া কবির শ্রেষ্ঠ এবং দৃঢ় প্রতিষ্ঠাভূমিতে খিনি কবিকে উত্তীর্ণ করিরা আনেন, তিনিই কবির শেষ-পূজারিণী।
সেই সর্বপ্রেষ্ঠ স্থাই যে কবি কবে কথন করিবেন ভাষার ভো নিক্ষরতা নাই,
ভাষা- মৃত্যুক্ত মৃত্যুক্ত হুইতে পারে। কাজেই সেই কবির অন্তর্যামী জীবনদেশতা যিনি কবির লীলাসন্ত্রিণী ও দোনর, তিনিই কবির সেব-পূজারিনী।

লিপি

এই কবিভাটির আবিভাব সম্বন্ধে কবি স্বয়ং তাঁহার যাত্রী পুস্তকে পশ্চিম-বাত্রীর ডামারীর মধ্যে লিথিয়াছেন—

"ও অক্টোবর, ১৯২৪। হারনা মারু জাহাজ। এখনো পুগও ওঠেনি। আলোকের অবতরণিকা পূর্ব আকাশে। - স্যোদরের এই আগমনীর মধ্যে ম'জে গিয়ে আমার মুখে হঠাৎ ছুন্দে গাঁধা এই কথাটা আপনি ভেষে উঠ্ল—

হে ধরণী, কেন প্রতিশিন

ভৃপ্তিহীণ

একই লিপি পড়ো বাবে বার /

'বুঝ্তে পার্লুম, আমার কোনো একটি আগস্তক কবিত। মনের মধ্যে এদে পেঁছবার আগেই তার বুবোট। এদে পেঁছেছে।

"সমুদ্রের দূর তাঁরে যে-ধরণী আপনার নানা রঙা আঁচলধানি বিভিষে দিবে প্রের দিকে মুখ ক'রে একলা ব'সে আছে, ছবির মতো দেখতে পোলুম তার কোলের উপর একখানি চিটি পড়জ খ'মে কোন্ উপরের খেকে। সেই চিটিখানি ব্কের কাছে তুলে ধ'রে সে একমনে পড়তে ব'মে পেল ।

"আমার কবিতার ধুরো বল্ছে, প্রতিদিন সেই একই চিটি। সেহ একথানির বেশি আর দরকার নেই সেই ওর যথেটা। সে এত বড় ডাই দে এত দবল। সেই থানিতেই সব আকোশ এমন সহজে ভ'রে গেছে।

"ধর্ণী পাঠ কবছে কত দুগ থেকে। সেই পাঠ-করাটা আমি মনে মনে চেবে শ্বেষ্ ছি। হ্বুলোকের নাণী পৃথিবীব বুকের ভিতৰ দিবে, কঠের ভিতর দিরে, রূপে ক'প বিচিত্র হ'য়ে উঠ্ছ। বনে বনে হলো গাছ, ফুলে হুলো হলো গান্ধ, প্রান্ধ হলো গান্ধ, কেই কারার কাপনে ছলছল।

" · কালিছাস বে মেবলুত কাব্য লিখেছেন সেটাও বিষের কথা। নইলে তার এক প্রাছে নির্বাসিত ফল রামলিরিতে, আর-একপ্রান্তে বিরথিনী কেন অলকাপুরীতে ? বর্গ মর্চ্চোর এই বিরথনী কেন অলকাপুরীতে ? বর্গ মর্চ্চার এই বিরথনী কেন অলকাপুরীতে ? বর্গ মর্চ্চার বিছেবের গান বেলে উঠ্চে। এই মলাক্রান্তা ছলেই তো বিষের গান বেলে উঠ্চে। বিছেবের গানের ভিতর দিয়ে অণু-পরমাণু নিত্যই বে-অদৃশু চিটি চালাচালি করে, সেই চিটিই স্টির বাণী। স্ত্রী-পুরুবের মাঝপানেও, চোখে-চোখেই হোক, কানে-কানেই হোক, মনে মনেই হোক, আর কাগজে পত্রেই হোক, বে-চিটি চলে, সেও এ বিষ-চিটিরই একটি বিশেষ রূপ।"

হে ধরণী, তুমি সমস্ত কিছু ধারণ করিবার জন্ম প্রভাতের মর্মবাণীতে ভবা একই লিপি প্রতিদিন পাঠ করে। কত ক্লে—আলোকই তো নানা রূপ রস শব্দ গব্দ স্পর্শ হইয়া উঠিতেছে।

বছ বুগ পূক্ষে নীহারিকার অম্পট্টতা হইতে তোমার উদ্ভব ইইয়াছে,
অমর জ্যোতির মৃতি পূর্য তোমার চক্ষের সম্মুথে প্রতিভাত ইইল, তোমাব বক্ষে
ভূণরোমাঞ্চ ইইল, পরম বিশ্বরে পর্বতেব স্থ-উচ্চ চূড়ায় প্রভাতের প্রথম
আলোক-সম্পাত ইইল এবং তুমি ভাহাকে বরণ করিয়া লইলে। সালোকেব
ভাপে বায়ু সমীরিত হয়, বাভাসের প্রেরণায় সমৃত চঞ্চল ইয় এবং বন মুখর
ইইয়া সন্সন্ শব্দ করিতে থাকে। একই আলোক বিশ্ব-চরাচরে জাণবল
আনিয়া দেয়।

আলোকের সেই প্রথম দর্শনের বিশ্বর ধরণীর এখনো কাটে নাই—ধরণীর ধূলি তৃণ-রূপ কণ্ঠস্বর তুলিয়া সেই আলোকেরই ব্দর ঘোষণা করে। সে বিশ্বর 'পূলা পর্নে গলে বর্ণে ফেটে ফেটে পড়ে।' আলোকই প্রাণের আকব। সেই প্রাণপ্রবাহে ক্রমাগত ক্ষান ও প্রলম্ব খেলা করিয়া চলিয়াছে, রূপ হইওে রূপান্তর পরিগ্রহ হইতেছে মৃত্যু ধ্বংস প্রলম্ব; সেই বিশ্বর নৃতনের স্বিতি মিলনের স্কুখের মধ্যে এবং পরিচিতের সঙ্গে বিচ্ছেপের চংথের মধ্যে এব আলোকেরই ব্যাগান করিতেছে।

ধরনী ও পূর্বের মাঝখানে 'আকাশ অনস্ত ব্যবধান'। এই ব্যবধান আছে বিনিয়াই তো পরস্পারের মধ্যে এত মিলন-ব্যগ্রতা এত দেওয়া-নেওয়া। বিরহ ছাছে বলিয়াই তো লিপি লিখিতে হয়; মিলন থাকিলৈ তো পত্ত-প্রেরণের আবস্তুকই, থাকে না। নীল আকাশখানি যেন নীল কাগজ, এবং তাহাতে করিয় আকরে তারকা দিয়া লেখা অমরাবতীর বার্তা। (তুলনীয় জ্ঞানদাস ব্যোগীর কবিতা, উৎসর্গেয় চিট্ট কবিজ্ঞার ব্যাখ্যা ক্রইব্য।) বির্ফিই ধ্রনী সেই লিপিখানি বক্ষে ধারণ করে এবং তাহাকে শ্লামলভাম ভূবিত করে—

সেই বিরহিণী ধরণী আলোক-নিপির যে উত্তর স্ষ্টির প্রথম হইতে নিথিতেছে, তাহা আর আজ পর্যন্ত শেষ হইল না,—কত কত রকমের উদ্ভিদের উদ্ভব হইল, বিলয় হইল, কত কত জীবের উৎপত্তি ও বিনাশ হইল, যুগে যুগে নব নব স্ষ্টির আর অন্ত নাই। ধরণী আলোকের উত্তরে যাহা এক যুগে স্থাই করে, তাহা অন্ত যুগে ধ্বংস করিয়া আবার ন্তন স্ষ্টিতে মনোনিবেশ করে। যাহা তৈয়ারি করিতেছে তাহা যথেই উৎকৃষ্ট হইতেছে না. মনে করিয়া ধরণী 'আঅবিজ্ঞাহের অসন্তোষে' পুনঃপুনঃ সৃষ্টি এবং ধ্বংস—ধ্বংস এবং সৃষ্টি করিতেছে।

আলোক-লিপির ফলে ধরণী-বক্ষে যত শোভা আনন্দ প্রেম প্রকাশিত
হইয়াছে ও হইতেছে, তাহাই কবি ও শিল্পীদের অস্তরে প্রবর্তনা জোগাইয়াছে
—তাহারা বেন ধরণীর অস্তরের কথা অসুমানে বৃষিয়া তাহার হইয়া আলোকলিপির জ্বাব লিখিতে চাহিতেছে। যেন একটি অল্পশিক্ষতা তরুণী তাহার
প্রিয়তমের পত্র পাইয়া খুব তালো করিয়া উত্তর লিখিতে চেটা করিতেছে;
কিন্তু তাহার হাতের লেখা খারাপ হইতেছে, বর্ণাশুদ্ধি ঘটতেছে, কথা তেমন
কবিত্বমন্ন হইতেছে না, এবং সে নিজের অক্ষমতায় অসম্ভই হইয়া পুনঃপুনঃ
সেই লেখা চিঠি ছিঁডিয়া ফেলিয়া, আবার নৃত্রন করিয়া চিঠি লিখিতে প্রবৃত্ত
হইতেছে, এবং সেই-সব ছেঁডা-চিঠির টুক্রা ধরণীর স্তরে স্তরে ক্ষিল হইয়া
জন্দীর জ্বানী একখানি ভালো চিঠি লিখিয়া দিতে প্রয়াস পাইতেছে;
কিন্তু তাহান্ত ভাহান্তের অথবা ধরণীর মনঃপৃত হইতেছে না , কাজেই নব নব
কবি ও শিল্পীর চেটার আরু বিরাম নাই। কবির চিত্ত যেন বাণী; নানা
ভাবের প্রকাশ ভাহান্ত ক্রের স্বর; ধরণীর অব্যক্ত আকৃতিই যেন কবি-চিত্তে স্বর

হুইরা বান্ধিতেছে। ধরণীর এই প্রিয়ন্তমের গিপির উদ্ভর দিবার আকুতিই কবির কাব্য-প্রতিভাবে অন্ধ্রাণিত করিয়া তুলুক, কবিকে নৃতন স্বষ্টের অন্ধ্র্যেরণা জোগাক। ধরণীর সকল ঋতুর সকল সৌন্দর্বসন্তার কবির ছন্দের দোলার চাপিরা বিরহিণী ধরণীর প্রিয়মিলন-দৌত্য বাত্রা করুক !

ধরণী বহুধা হইলেও মর্তা, অসম্পূর্ণ, নশ্বর; আর স্বর্গ শাখত সম্পূর্ণ।
যাহা অসম্পূর্ণ তাহার অস্তরে নিরন্তর কুষা জাগিয়া থাকে সম্পূর্ণ হইরা উঠিবার।
সেই যে উগ্র আকাক্ষা আরো ভালো হইরা উঠিবার, অনারন্তকে লাভ করিবার,
গঞ্জীকে উত্তীর্ণ হইরা অগ্রসর হইরা অকানা রাজ্যে প্রবেশ করিবার, লব্ধ বিষয়ে
অসম্ভোষ প্রকাশ করিবার, তাহাই কবির চিত্তে সংক্রামিত হইরা কবির
বাণীকে জালামরী করিরা তুলুক।

বাতাস

এই কবিভাটি ১৩০১ সালের চৈত্র-সংখ্যার বঙ্গবাণীতে ১৩০ পৃষ্ঠায় প্রথম প্রকাশিত হয়।

ব্যতাদ গোলাপকে, পাখীকে, অরণাকে বলিতেছে আমি তোমাদের কাছে তাঁচারই বাণী বহন করিয়া আনি ধাঁচাকে তোমরা দকলে না ব্ধিয়া ধ্ৰৈতেছ—থিনি জ্লগৎপ্রাণ, ঘিনি অনস্ত, ঘিনি অজানা, আমি সেই সীমাহীনের বাণী; আমি তাঁছার পূর্ণতার মুখ, অজানাব আভাল তোমাদের ব্রকের কাছে পৌছাইয়া দিই।

পদক্ষনি

কবিকে বেমন তাঁহার জীবনদেবতা তাঁহার আরাম বিশ্রাম ছাড়াইয়া সন্ধ্যাকালে 'আবার আহ্বান' করিয়াছিলেন, তাঁহার শব্দ ধ্লার পড়িয়া থাকিতে দেখিরা কবিকে অসময়ে আরাম বিশ্রাম ত্যাগ করিতে হইয়াছিল, এবারও তেমনি কবি অমুক্তব ক্রিডেছেন বে, তাঁহার জীবনদেবতার পদ্ধানি জীহার মনের হাবে বাজিডেছে, এবং জাঁহাকে জিজানা করিভেছেন— ভাঙিয়া স্বপ্নের যোর,

ছিড়ি মোর

শ্যারে বন্ধন-মোহ, এ রাত্রি-বেলায

মোরে কি করিবে দক্তী প্রলয়ের ভাসমান-পেলাব ?

কবি পূৰ্বেও বলিয়াছেন—

হবে হবে হবে জয়, *হে* মেলী করিনে ভর,

ংব আমি জয়ী। — **অশে**

তেমনি এবারও বলিতেছেন—

ख्य नाहै, ख्य नाहै, এ প्रला 'भटलिছ नावःनाद जोनटन योभाद्र।

দোসর

কবির যিনি দেশের নালাসিদিনী যাত্রা-সহচরী জাবনদেবতা, তিনি কবির একক জাবনের চিরদলী, তিনি কবিব সহিত কত ভাষার কত ছলে কথা কছেন, তিলি এটা দুবনগঙ্গা হহয়া সকল বিশ্বশোধার ভিতর দিয়া কবিকে টাহার দিকে আহ্বোন কবেন আজ জাবন-সামাকে কবি সেই দোসরকে স্বস্পষ্ট মিলনে নিকটে দেখিতে চাহিতেছেন। যিনি এক অদিতায়, সেই একের সহত এককৌ কাবর মিলন পূর্ণ হোক, কবির হৃদয়ের ভাতে ও আত্রসমর্পণ ভাঁহাব দেশেব।নজের হাতে ভূলিয়া লউন—

শোসর ওসো, শোসর আমার, দাওনা শেখা সুন্ধ হলে একার সাথে মিলুক একা। নিবিড় নীরব অঞ্চারে রাচেত্র বেলায অনেক দিনেব দূবেব ডাক। পুণ করে। কাছের পেলায। তোমার আমার নড়ন পালা হোক না এবার হাডে হাতে এবার লেবার।

কুত্তত

এই কবিতাটির সঙ্গে বলাকার 'ছবি' কবিতার ভাব-সাদৃশু আছে। কবি বে প্রথমা প্রিয়াকে একদিন ভালোবাসিয়া বিশ্বকে মধুর দেবিয়াছিলেন, কত কবিতার প্রেরণা অন্তব করিয়াছিলেন, সেই প্রিয়াকে যদি ভূলিয়াই থাকেন, তবু তাঁহার জীবনে সেই প্রিয়ার আবির্ভাব তো বার্থ হয় নাই, বরং কবিকে সেই আবির্ভাবই কবি করিয়া তুলিয়াছে। এই জন্ম কবি ভূলিয়া-যাওয়া প্রেয়নীর কাছে ক্বতজ্ঞ।

মৃত্যুর আহ্বান

১৯১২ সালে কবি যথন অস্ত্ৰন্থীৰ লইয়া ইংলণ্ডে যাত্ৰা কৰিতেছিলেন তথন আমি অত্যন্ত আশঙ্কা প্রকাশ করিয়াছিলাম। তাহাতে কবি আমাকে সাম্বনা দিবাব জ্বন্ত বলিয়াছিলেন—তোমাব এতে আপত্তি কি? জ্বানো তো ববি পশ্চিমেই অন্ত যায়। আর আমাদের দেশের চিরকালের ব্যবস্থাট এই যে, মৃত্যুর সময়ে কাছাকেও ঘবে পূবিয়া বাধা হয় না; তাছাকে মৃক্ত প্রাঙ্গণে আকাশের তলে বাহির কবিয়া বাথা হয়। যথন মাতুষেব জন্ম হয়, তথন দে আদে গৃহেব কোলে গৃহের অতিথি হইয়া, আব ষধন মৃত্যু আন্দে তথন দে অনস্তেব যাত্রী। মৃত্যুব সমল্পে ঘরেব মধ্যে বন্দী হইয়া থাকিলে, ঘরের বস্তুব মমতা যাত্রায় বিদ্ন ঘটায়—এই আমাব **ম্বর, আমার বিছানা, আমার বাক্স, আমার আত্মীয়, আমাব আ**মাব আমার, চারিদিকে কেবল আমার। তথন মনে হয় যেন মৃত্যু আমাকে আমার সমস্ত বন্ধন হইতে জোব কবিয়া ছিনাইয়া লইয়া যাইতেছে, ইহাতে আমার পরাভব ঘটিতেছে মৃত্যুর কাছে, আর যথন মবণোলুথ ব্যক্তি বাহিরে চলিয়া যায়, তথন তাছাব মনে হয় দে মৃত্যুকে আগ বাড়াইয়া দাদরে অভার্থনা করিয়া ভাকিয়া নইতে প্রস্তুত হইয়া যাত্রা করিয়াছে ; সেধানে ভাহার ব্রুয়, মৃত্যুর পরাভব।

এই ভাবটি এই কবিতার মধ্যে পরিব্যক্ত হইরাছে। তাই কবি বিদিয়াছেন—

মৃত্যু তোৰ হোক দুৰে নিশীৰে নিজ নৈ।

কারণ,—

মৃত্যু সে বে পৰিকেরে ভাক।

मान

এই কবিতাটির সহিত থেষার শুভক্ষণ ও ত্যাগ কবিতার ভাব-সাদৃষ্ঠা আছে। কাহাকেও কিছু দান করিতে হইলে কর্মফলের কোনো আশা না রাথিয়াই দান করা উচিত। ভগবানকেও আমাদের ভক্তি নিবেদন করিতে হইবে মনের মধ্যে বণিকরন্তি পোষণ করিয়া নহে, কোনো লাভের প্রত্যাশা রাথিয়া নহে। অহৈত্বকী ভক্তি দান করিতে হইবে এবং তিনি তাহা গ্রহণ করিলেন কি না তাহার জন্ম কোনো ভাবনা রাখিলে চলিবে না। প্রিয়জনকে দিবার মতন মূল্যবান্ স্থামগ্রী জগতে কি বা আছে; কাজেই কেবল গ্রহণ করার মূল্যই দানকে মূল্যবান্ করিয়া তোলে। প্রীকৃষ্ণ বিদ্বরের গুদ খাইয়াছিলেন, দ্রোপদীর শাক-কণিকা থাইয়াছিলেন, স্থদামার গুদ সাদরে গ্রহণ করিয়াছিলেন; তাই সেই সমাদরে ঐ সামান্য বস্তু মহামূলা হইয়া উঠিয়াছিল যাহারা তাহা দিয়াছিল তাহাদের নিকটে।

তুলনীয়---

বঁধুর কাছে আদার বেলার গানটি শুধু নিলেন গলার, ভারি গলার মাল্য ক'রে কর্ব মূল্যবান্।

শৈতমালা, ৬১ নম্বর :— পীতবিতান, ৪৩৯ পৃষ্ঠা।

প্রভাত

এই কবিতাটিতে মনোহর কবিও প্রকাশিত হইয়াছে। প্রভাতের স্বর্ণমুধাঢালা বুকে কবি অবকাশ যাপন করিতেছেন; তাঁহার চারিদিকে পুশোর
কোয়ারা, তুণের লহরী, সৌরভের স্রোত বহিয়া ঘাইতেছে, এবং সেই 'জন্মমৃত্যু-তর্মিত ম্নপের প্রবাহ' কবির বক্ষস্থল স্পন্দিত করিতেছে—বিশ্বনিধিলের
সন্মিলিত আনন্দস্বর যেন কবি নিজ্যের প্রাণের মধ্যে শুনিতেছেন, এবং

এই কচ্ছ উদার গগন বাজার অদৃত্য শব্ধ শব্দহীন সুব। জামার ময়ন মনে চেলে দের স্থনীল স্বপূর। কৰির সেই চিরপ্রির স্থদ্রের অম্বন্ধব তাঁহার নয়নে মনে তিনি প্রভাত-আলোকে পাইতেছেন।

অন্ত্রহিতা

এই কবিতাটির সঙ্গে থেয়ার আগমন কবিতার নিকট ভাব-সাদৃশ্য রহিয়াছে। কবি বার বার বলিয়াছেন—

शक्त्र-प्रशांत्र वक्त त्वश्चिम कि विशा त्यरहा ना अञ् ।

তবু তো অনেক সময়ে তাঁহার জীবনদেবতা হতাশ হইয়া ফিরিয়া গিয়াছেন। সারারাত্তি সেই অভিসারিকা বন্ধ গারের বাহিরে অপেকা করিয়া চলিয়া গিয়াছেন

> ভোরের তার। পূব-গগনে বধন থালা গাওঁ বিশাস-রাতির একটি কোঁটা চোপের জলের মতেন

যখন দেই অভিদারিকা অন্তর্হিতা হইয়া চলিয়া গিয়াছে, তথন কবি অসমধ্যে সঙ্কর করিতেছেন—

আজ ২তে মোর গরের সুয়ার রাখ্য গুলে রাচে প্রদীপথানি রহঁবে আল। বাহির জানালাতে ।

তুলনীয়-

Three wives sat up in the lighthouse tower,

And they trimmed the lamps as the sun went down.

--Kingsley, Three Fishers.

প্রভাতী

চপল ভ্রমর কবির কাব্য-শতদলের মধুপ, দরদী সমঝ্দার। প্রস্তার স্ষ্টি তথনই সার্থক হয়, যথন তিনি একজন বসজ্ঞ মরমী সমঝ্দার পান। কবি ও শিল্পী চাহেন রসজ্ঞের রসায়ভব ও সমাদর।

কবির কাব্য-শতদশ শ্রমরকে আহ্বান করিতেছে, প্রভাত শীন্তই সন্ধ্যার অন্ধকারে আবৃত হইনা যাইবে, তাহার আগে সমন্ন খাকিতে থাকিতে শতদলের •মর্মকোমের মধুসঞ্চন সার্থক করিতে হইবে শতদল প্রাক্ষুটিত হইবার আগে তাহাকে কিছুদিন কোরক অবস্থায় অপ্রকাশের হঃথ সহা করিতে হয়। আজ তাহার সেই গোপনে কাঁদার সময় উত্তীর্ণ হইয়া গিরাছে, নিধিল ভূবন প্রকাশের আনন্দে মাতোয়ারা হইয়াছে।

গগন যেন একটি নীল পদ্ম, শতদল পদ্ম; তাহার আহ্বানে সোনার ভ্রমর সূর্য তাহার বৃকে আসিয়া জুটিয়াছে। গগনের মতন কবির চিত্ত-শতদলও প্রভাত-আলোকে বিকশিত হইয়া উঠিয়াছে, সেও তার রূপ রস গন্ধ লইয়া রসজ্ঞ সমন্দারের প্রতীক্ষায় আছে।

চিত্তে কোনো ভাব সঞ্চিত হইলে, তাহা প্রকাশের জন্ম ব্যগ্রতা জন্ম। কবির চিত্ত স্থাগ্রং ইইরাছে। কবি তাঁহার কাব্যের মর্মজ্ঞকে ডাকিয়া বলিতে-ছেন—তুমি এস, এবং আসিয়া দেই ভাব-সম্পদের রসাস্বাদ করে।, তুমি না আসিলে আমার সকল আয়োজন ব্যর্থ ইউবে।

অস্কৃল অরুপণ মাহেক্রক্ষণ আসিয়াছে, তুমি এখন রুপণ হইয়া দূরে ণাকিয়ো না। আমার মন বিলাইয়া দিবার জন্ত আমি প্রস্তুত হইয়া আছি, আমার মনের সমস্ত মাধ্রী আমি উজাড় করিয়া তোমাকে বিলাইয়া দিব, তুমি আসিয়া গ্রহণ করিলেই হয়।

তুলনীয়---চিত্রা।

এই কবিভাটির ছন্দের মধ্যে কবি-চিত্তের আমন্দ-আহ্বান যেন আন্দোলিত হুইয়া উঠিয়াছে।

তৃতীয়া ও বির্হিণী

কবি তাঁছার পৌত্রীকে সংখ্যাধন করিয়া এই তুইটি ক্লেছসিক্ত রক্ষভরা কবিতা লিখিয়াছেন :

কম্বাল

কবি একটা পশুর কল্পাল দেখিয়া মনে করিতেছেন যে, পশুর মৃত্যুর সঙ্গে সঙ্গে সব স্বাইয়া যায়। কিন্তু মান্ত্যের, বিশেষ করিয়া কবির, জীবন তো মৃত্যুর হারা নিংশেষ হয় না— তিনি হাহা হাবেন, জানেন, জন্তুত্ব করেন; ভাহা ভো কেবলমাত্র নশ্বর দেহের সংক্ট বিনষ্ট হইবার সামগ্রী নহে— ভাহা ভো হর্লাভ চিরন্তন সামগ্রী, ভাহা অপাথিব—

বা পেরেছি, বা করেছি পান,
মর্ত্যে তার কোধা পরিমাণ ?
আমার মনের নৃত্য কত বার জীবন-মৃত্যুরে
লাজ্বা চলিয়া গেছে চির-স্থুনরের স্থ্য-পুরে।

কবি যে রূপের পদ্মে অরূপ মধু পান করিয়া অমর হইরাছেন, কাজেই তাঁহার দৃঢ় ধারণা—

> নতি আমি বিধির বৃহৎ পরিহাস, অসীম ঐবধ দিয়ে রচিত মহৎ সর্বনাশ।

বিধাতা যে কবিকে এত মানসিক ঐশ্বর্য দিয়া স্থাষ্ট করিয়াছেন, তাহ। তো কেবল দেহের সঙ্গে বিনষ্ট হইয়া যাইবাব জন্ত নহে

অন্ধকার

আর কোনো কবি অন্ধকাবেব ঐশ্বয়ের এমন স্কান পাইয়াছেন কি ন সন্দেহ। কবি জাঁহার নব-গীতিকা পুস্তকেব একটি গানে বলিয়াছেন —

অন্ধকারের বুকের কাছে
নিত্য আলোর অসেন আছে,
দেখার ভোমান গুলারখানি পালো।

গীতাৰিতে বলিয়াছেন—

অককারের ওৎদ ২'তে ত্ৎসারিত কালে। সেই তো তোমার আলো।

ইহার সহিত তুলনীয় গীতালি পুস্তকের যাত্রাশেষ কবিতা এবং ফান্ধনী লাটক। ফান্ধনীর অন্তরের কথা হটতেছে এই—শীত ও বসন্ত যেন অন্ধনার ও আলো,—শীতের শীর্ণতার মধ্যে বসন্তেব ঐশ্বর্য ও প্রাচ্য লুকাইয়া থাকে। অন্ধনারও তেমনি আলোকের স্ষ্টির ব্যথার চঞ্চল। অন্ধকার যেন গড়িণী, আলোকসন্তানকে প্রস্রবার ব্যথার সে কম্পিত হইতেছে।

স্টির পূর্ববর্তী অন্ধকারের মধ্যে এই বিচিত্র আলোকময় অমর জগৎ প্রক্রের ছিল, এমন কথা বেল ও বাইবেল উভয়েই বলেন।

> न बाजा करू थानीर श्रदकरुः । उमे भानीर रुममा मृहर् याजश्रादकरुन् । —नन्दन्दन, ১०,১২२

প্রথমে রাত্রি ও দিনের প্রভেদ ছিল না। সর্বপ্রথমে অন্ধকারের ছারা অন্ধকার আর্ত ছিল।

....and darkness was upon the face of the deep . And God said Let there be light, and there was light. —Bible, Genesis, I. 2. 3.

And the light shineth in darkness; and the darkness comprehended it not. —Bible, St. John, I. 5.

অন্ধকার হইতেই দিন তাহার শক্তির উৎস সংগ্রহ করিরা প্রভাতের আলোকে নৃতন বেশে দেখা দেয়; সৃষ্টির প্রারম্ভ হইতে এই চিরস্তন রহস্ত চলিরা আদিতেছে। "আঁধারের আলোক-ভাণ্ডার" দিনেব থান্ত জ্বোগাইতে কথনো পরাব্যুথ হয় না; কারণ, একের অভাবে অভটি অসম্পূর্ণ—ইহারা পরস্পর পবস্পরের পরিপ্রক। তুলনীয়—

·····গুলিলাম নক্ষরের রক্ষ্ণে রক্ষ্ণে বাঞ্চে আকাশের বিপুল ক্রন্থন, দেখিলাম শৃষ্ঠ-মাঝে আঁখাবের আলোক-ব্যাহা। —পুরবী, সমুদ্র ।

প্রকৃতিব এই অন্ধকারের লীলাব সঙ্গে কবির প্রত্যক্ষ যোগ আছে। অন্ধকার যেমন দিনকে প্রাণ-শক্তিতে সঞ্চীবিত করে, তেমনি কবিকেও প্রাণ-শক্তিতে উদ্বন্ধ করিয়া তুলে। তুলনীয় —কল্পনায় বাত্রি।

কবি অন্ধকারকে বলিতেছেন নিগৃত স্থলর অন্ধকার। কবি শেলীও অন্ধকারকে স্থান্ধর ভীষণ দেখিয়াছেন—

Thou wovest dreams of jox and fear
Which make thee terrible and dear.
—Shelley, To Night.

উদয়াচলের পশ্চাতে এবং অন্তাচলের পশ্চাতে অন্ধকারের অবিচ্ছিন্ন আসন বিছানো রহিন্নছে। সেই অন্ধকারের গর্ভ হইতে প্রভাতালোকের জন্ম হয়, বেন শুভ্র শক্ষের মঙ্গলধ্বনি জ্বগৎকে জাগ্রৎ কবিতে ছুটিয়া চলিয়াছে। সেই আলোক মামুষের জন্ম মাত্র চক্ষে প্রতিভাত হয় এবং তাহার সমস্ত চিন্তা ভাবনা কামনার উপর প্রভা বিস্তার করিয়া তাহার কর্মিন্যা জাগ্রং করে।

প্রকাশের পূর্ববতী ধ্যানের নিস্তন্ধতা কবির চিত্তকে অলেষের পথে তীর্থমাত্রা করাইয়া লইয়া চলিয়াছে।

কবি স্থদীর্ঘ জীবনের অবসানে ক্লান্তি অপনোদনের জন্ম সেই অন্ধকারের ঘারে আদিয়া বিশ্রাম প্রার্থনা করিতেছেন, নব উন্ধযে আবার কর্মে স্ষ্টিতে প্রবারত্ত হইতে পারিবেন বলিয়া,—বেমন করিয়া সমস্ত দিনের পরিপ্রমে ক্লান্ত রবি অন্ধকারের মধ্যে প্রবেশ করিয়া তরুণ অরুণ রূপে প্রভাতে পুনঃপ্রকাশিত হয়।

দিনের আলোকের আন্দোলনে চিন্ত চঞ্চল হইয়া থাকে; তথন জীবনের উদ্দেশ্যর উদ্দেশ পাওরা যার না। এখন অন্ধকারের গভীরতার মধ্যে ধ্যানে নিমগ্ন হইয়া নিঃশব্দ গুঢ়তার মধ্যে অবগাহন করিয়া, আলোকের প্রকাশ-সম্ভাবনার স্থায় নিজের সমন্ত সৃষ্টি-সম্ভাবনা কবি জানিয়া লইতে চাহিতেছেন—তিনিও পুনর্বার তারুণ্য লাভ করিয়া নির্মলা প্রশান্তি লাভ করিবেন।

কবি জীবনে অনেক ধ্যাতি প্রাশংসা পাইয়াছেন; সে-দকল তাঁহার জীবন-শেষে তুচ্ছ বলিয়া বোধ হইতেছে, তাহা অসীম অন্ধকার অনস্তের যোগ্য উপহার নহে।

দিনের আলোকে কাজের ভিড়ে ভালো-মন্দ সত্য-মিধ্যার মাঝে ভেদ রেখা টানা যার না। বেলা-শেষে কার্য-অত্তে অন্ধকারাচ্ছন মৌন মৃহত ওলিতে বধন শকল কাজের স্বরূপ জানা যায়, তথন কবি দেখেন যে, দিবদের চাঞ্চল্যের মধ্যে যাহাকে খাঁটি বলিয়া মনে হইয়াছিল তাহা মেকি মাত্র। কিন্তু তাহাতেও কবি কুপ্প নহেন; কবি অনামাসে বলিতেছেন—'সে বোঝা ফেলিয়া পিছে।' যশ মান গর্ব ইত্যাদি বহু মিধ্যা সত্যের ছল্পবেশে কবিকে ভলাইবার **জন্ম আনে; কিন্তু অন্ধকারের কষ্টিপাথরে—অনন্ত কালের পরী**ক্ষায় তাতাদের স্বরূপ ধরা পড়িয়া যায়; তাহারা যে চিরস্তন নঙ্গে, তাহারা যে অল্পপ্রাণ, তাহা ধরা পড়িয়া যায়। কিন্তু দেই-সব মেকি জিনিস ছাড়াও কবির এমন কিছু শঞ্চ আছে যাহা চিরস্তন সত্য অমান অমুল্য-তাঁহার যাত্রা-সহচরী কবি-প্রতিভা অকারণে কেবল ভালোবাদার টানে তাঁহার হাতে যে ভালোবাদার দান দিয়াছিল, তাহা তো এই জাবনাস্ত-কাল পর্যন্ত অমান বিরাজে-দেই কবিছ-শক্তি মাধবী-মঞ্জরীর মতো তাঁহার চিত্ত-কুঞ্জে আঞ্চও অমান বিরাজে— তাহা অতি পুরাতন হইলেও, তাহা যেন দখোলাত তালা বহিয়াছে,--প্রভাতের **শিশিরসিক্ত সরমতা যেন এখনো তাহার গায়ে লাগিয়া রহিয়াছে। ক**বির ইহজনের সেই অকারণে পাওয়া হুন্দর দান চিরস্তন অন্ধকারের থালায় তিনি রাথিয়া যাইবেন, এবং তাহা সমস্ত অক্ষয় নক্ষত্রগোকের মাঝে নক্ষত্তের স্থায়ই অক্ষয় উজ্জল হইয়া দীপামান থাকিবে।

অন্ধবার পরিবর্তন-রহিত একটানা, তাই দে নিত্য নবীন। অন্ধকারের স্থার ধানতত্বতা হইতে কবির স্থরের গানের কর্মনার কবিছের ফুল আলোকে প্রকাশের অন্ত কবে কোন্দিন যাত্রা করিয়া বাহির হইয়াছে তাহার তো কোনো নির্ণন্ধ নাই। কবি একদিন জীবনের মধ্যে সচেতন হইয়া দেখিলেন যে, তিনি কবিদ্ধ-শক্তি লাভ করিয়া কবি হইয়া গিয়াছেন। সেই প্রাণের কবিত্বকে এবং সত্যকে কবি কথনও প্রকাশের মোহে, প্রশংসার লোভে মান হইতে দেন নাই; তিনি সেই অমান উপহার আনিয়া চিরন্তনকে সম্প্রদান করিতেছেন।

কৰি বলিতেছেন যে অন্ধকারই হইল সমস্ত সৃষ্টির ভাণ্ডার, সকল বস্তর চরম পরিণতি তাহারই মধ্যে—কবির কবিত্ব-শক্তিরও জন্ম মৌনতার ধ্যানের অন্ধকারে। তুলনীয়—"কল্লনায়" 'রালি' কবিতা। কবির কবিত্বের মধ্যে কতথানি অন্ধকার ধ্যান-শুক্তার প্রভাব ও আনন্দ নিহিত বহিয়াছে, তাহা তো কবি এত দিন প্রকাশের আগ্রহে চিন্তা করিয়া দেখেন নাই। কিন্তু কবি আজ্র উপলব্ধি করিতেছেন যে—অন্ধকার অনুসান নহে, তাহা একটা নূতন আরম্ভের হচনা, এবং সমস্ত আরম্ভের চরম আধার। কবির প্রাণের খাল্য ও রস জ্যোগায় অন্ধকার তাহার মৌনতায় ভূবাইয়া এবং একাগ্রতা জাগ্রৎ করিয়া। সেই জ্বল্ল অন্ধকারের সঙ্গে কবির প্রাণের সম্বন্ধ অতি নিবিভ ও ঘনিষ্ঠ—কবিত্বের সঙ্গে মৌনতার অবিগ্রেত্ব সম্বন্ধ কবিও দিনের আলোকাজ্বের ভিড সহিত্বে পারে না।

বসস্থের দান

কবির যে-সমন্ত পুরাতন রচনা প্রের কোনো বইয়ে স্থান পায় নাই, তাহা এই পুশুকের পরিশেষে সংগ্রহ করা হইয়ছে, সেই পরিশিষ্ট বিভাগের নাম রাধা হইয়াছে 'সঞ্চিতা'।

বদন্তের দান কবিতাট রবীন্দ্রনাথ কবি প্রিয়নাথ সেনকে সংখ্যাবন করিয়া লিখিয়াছিলেন। প্রিয়নাথ সেন "প্রাদীপ" পত্তে একটি সনেট লিখিয়া-ছিলেন তাহার প্রথম লাইন ছিল—

°অচির বসস্ত হার, এল, গেল চ'লে।"

রবীজনাথ দেই প্রথম লাইনটি দিয়া নিজের সনেট আরস্ত কদিয়া কবি-বন্ধকে প্রশ্ন করিয়াছেন—

"এবার কিছু কি কবি করেছ সঞ্চয় ?"

শিবাক্তী উৎসব

১৩১১ সালের ভাজ 'মাসে ১৯০৪ খুট্টাব্দে স্থারাম গনেশ দেউস্কর নামক মহারাট্রী-বাঙালীর উদ্বোগে অহান্তিত নিবান্ধ্রী-উৎসব-উপলক্ষ্যে রবীন্দ্রনাং "শিবান্ধ্রী-উৎসব" কবিতা রচনা করেন এবং ভাহা "শিবান্ধ্রীর দীক্ষা" নামক পুন্তিকার ও "বঙ্গদর্শনে" ছাপা হয়। এই কবিতায় দেশের বীরকে শ্রদ্ধ নিবেদন করা হইয়াছে।

নমস্কার

"নমস্কার" কবিতাটি অরবিন্দ ঘোষকে উদ্দেশ করিয়া লেখা। দেশের ছদিনে প্রেস আইনের কঠোর শান্তির ভয়ে যখন দেশে অপর সকল লোকের কণ্ঠরোধ হইয়া গিয়াছিল, তখন অরবিন্দ 'বন্দে মাতরম্' পত্রিকা প্রকাশ করিয়া নিভীকভাবে দেশের অভাব অভিযোগ মর্মবেদনা ও স্থায়সঙ্গত দাবী প্রচার করেন এবং প্রবল রাজ্বপুরুষের সকল প্রকার অন্থায়ের তীব্র প্রতিবাদ করেন ইহাতে অরবিন্দকে অভিযুক্ত হইতে হয়। অরবিন্দের সেই নিভীক তেজাবিতার মুগ্র হইয়া কবি লিখিয়াছিলেন—

অরবিন্দ, রবীক্সের লহ নমস্কার : হে বন্ধু, হে দেশ-বন্ধু, স্বদেশ-আত্মার বাণী-মৃতি ভূমি।

এই কবিতাটি ৭ই ভাল ১৩১৪, ২৪ আগ্নট ১৯০৭ চারিখে রচিত হয় ও ১৩১৪ ভাল মাদে "বঙ্গদর্শনে" প্রকাশিত হয় :

নটীর পূজা

ইহা নাটিকা। ১৩৩৩ সালের বৈশাথ মাদের "মাদিক-বস্থমতী" পত্রিকার সম্পূর্ণ একেবারে প্রকাশিত হয়, পরে পুস্তকাকারে প্রকাশিত।

মগধের মহারাজ অজাতশক্রর সময়ের বৌদ্ধকাহিনী—কিছু কাল্পনিক, কিছু ঐতিহাসিক। মহারাজ বিশ্বিসার পিতার বৈদিক ধর্মকে পরিত্যাগ করিয়া বৌদ্ধর্ম অবশ্বন করেন: মহারাণী লোকেশ্বরীও সেই ধর্মের প্রতি অত্যস্ত ভক্তিমতী হইয়াছিলেন। বৌদ্ধধর্ম মহারাজ বিশ্বিদারকে নির্লোভ ক্ষমাশীল নিষয়-বাসনায় উদাসীন করিয়া তুলিয়াছিল। তাই যথন তিনি জানিতে পারিলেন যে, তাঁহার পুত্র অজাতশক্ত পিতার রাজ্যের প্রতি লোলুপ হট্যা উঠিয়াছেন, তথন তিনি স্বেচ্ছায় পুত্ৰকে রাজ্য ছাড়িয়া দিয়া, রাজপ্রাসাদ ছাড়ির। অগুত্র রাজ্যের একান্তে বাস করিতে চলিয়া গিয়াছিলেন । মহারাণী ল্যেকেশ্বরীর পুত্র চিত্র বৌদ্ধর্ম গ্রহণ করিয়া ভিন্দু হইয়া রাজগৃহ ত্যাগ করিয়া চলিয়া গিয়াছেন, পিতা-মাতার প্রদত্ত নাম পর্যন্ত তাাগ করিয়া কুশল্লীল নাম গৃহণ করিন্নাছেন। মহারাণী লোকেশ্বরী রাজকুলবণ্; ভাঁহার যে দেবতার ভক্তি তাহা ঐহিক স্থ-স্বাচ্চন্যের জন্ত। পতিপুত্রে বঞ্চিতা হইরা বুদ্দদেবের ধর্মের উপর বীতরাগ হইয়া উঠিয়াছেন বাহিরে; কিন্তু মন হইতে বুদ্ধদেবের প্রভাব কিছুতেই বিদ্রিত করিতে পারিতেছেন না তাই তিনি বরিলেন— ভিতরে উপাদিকা আছে, দে ভিতরেই থাক; বাইরে আছে নিষ্ঠুরা, আছে রাজকুলবধু, তাকে কেউ পরান্ত কর্তে পার্বে না। লোকেখরী বৌদ্ধর্মের निकटक विद्याहिनी श्हेशा डेठिटन ।

অজাতশক্ত রাজা হইয়া বৌদ্ধর্মের প্রভাব প্রতিরোধ করিবার জন্ম বৃদ্ধদেবের প্রতিস্পাধী দেবদত্তকে গুরু স্থীকার করিয়া দেবদত্তর কাছে দীক্ষা করিয়াছেন এবং মহারাজ বিশ্বিসার রাজোল্যানের অশোকতক্তলে বে বেদিকার প্রভু বৃদ্ধকে বসাইয়া পূজা করিয়াছিলেন, দেবদত্তের প্রোচনার সেই আসন ভয় করিয়াছেন। মহারাণী লোকের্যরীও প্রমকার্কণিক বৃদ্ধদেবের নামের বদলে মন্ত্র গ্রহণ করিয়াছেন নমো ব্জুকোধ্ডাকিল্যৈ, নমঃ প্রীবজ্ঞান্দ্রার করিয়াছেন করিয়াছেন মধ্যে থাকিয়া থাকিয়া

ভাসিয়া উঠে—ওঁ নমো বৃদ্ধায় গুরবে, নমঃ সক্র্যায় মহন্ত্রমায়। মহাবাদ্ধ অক্সাতশক্র কিন্তু বৌদ্ধ ও দেবদন্তের শিশ্বদের উভয় দলকেই সন্তুষ্ট রাথিবাব অসাধ্য-সাধনে ব্যস্ত—"উনি রাজ্যেশ্বর, তাই ভয়ে ভয়ে সকল শক্তির সন্তেহ সদ্ধির চেষ্টা। বৃদ্ধশিশ্বের সমাদব যথন বেশি হ'য়ে যায়, অমনি উনি দেবদ র শিশ্বদের ডেকে এনে তাদেব আবো বেশি সমাদর করেন। ভাগ্যকে ছই দিব থেকেই নিবাপদ কর্তে চান।" যেমন চাহেন আমাদের দেশেব বর্ত্তমান গভন্মেন্ট্ হিন্দু-মুসলমান উভয় দলকে হাতে রাথিয়া নিজেব কার্যোদ্ধার কবিতে। কিন্তু মহাবাণী লোকেশ্ববী অজ্ঞাতশক্রর এই বিধাভব। মিগাচাব সহা করিতে পাবেন না; তিনি বলেন—"আমার ভাগা একেবাবে নিবাপদ আমার কিছুই নেই, ভাই মিথ্যাকে সহায় কববার ছর্বলবৃদ্ধি ঘুচে গেছে "ইহা তো প্রভু বৃদ্ধদেবেবই মহাধর্মেব মূল কথা, লোকেশ্বরীৰ জ্বীবনে বৃদ্ধদে বি

রাজবাড়ীর মধাে যথন এইরূপ তই বিবন্ধ ভাবের চন্দ্ চলিতেছে, তথন সেথানে আছে এমন একজন ধাহাব নৃদ্ধানেবের প্রতি অবিচলিত ভক্তি— স রাজবাড়ীর নটা শ্রীমতী। শ্রীমতীব অবিচলিত নিষ্ঠা দেখিয়া রাজাব শক্ষ প্রিকানা কেই বা তাহাকে বিদ্যাপ করে, কেই বা তাহাকে ভ্যাকরে, সূত্র ন তাহাকে মনে মনে শ্রদ্ধা করে আব শ্রীমতাব পার্কে আসিনা স্টিরাছে, গুম বালিকা মালতী—যাহার ভাই ও প্রেমাম্পাদ বাগদন্ত স্বামী ভিশু ১১বা তাহাকে একাকিনী নিঃস্থ অবস্থায় কে লয়া গিয়াছে। সে তথাপি বৃদ্ধানেবের প্রতি ও বৌদ্ধার্মের প্রতি পরম শ্রদ্ধা হৃদরে লহর্ম শ্রীমতীব কাছে আসিয়াছ জীবনে সান্তনা পাইবার আশায়, এবং বা হবে সে শেখাইতেছে যে সে শ্রীমণীব কাছে নাচ শিথিতে আসিয়াছে, ভিন্নবা উংপ্রপর্ণাব কাছে তে সে শ্রীমণীব

শ্রীমতীর বর্মনিষ্ঠা দেখিলা তাচাকে দব চেন্ত উপতাস করে বাজমহিষ' রত্মবেলী। সে বিজ্ঞপ কবিয়া বলিল—"অপেকা করাছ উদ্ধারেব মালন মনকে নির্মণ ক'রে এই শ্রীমতীর শিখা হবার পথে একট একট ক'রে এগোচিছ।" ইছা শুনিয়া মহারাণী লোকেশ্ববী বলিয়া উঠিলেন—"এই নানব শিখা। শেষকালে তাই ঘটাবে, সেই ধর্মই এসেছে। পতিতা আদবে পরিত্রাণের উপদেশ নিয়ে।" বাস্তবিক তো সেই ধর্মই আসিয়াছে,— নাচারা

পতিতা তাহারা প্রভু বৃদ্ধের পুণা প্রভাবে পবি এটা পাইরা ধন্ত হইরাছে, তাহাবাই তো ভালো করিয়া দিতে পারিবে পাবলাবের উপদেশ। বৃদ্ধদেবের পুণা-প্রভাবে পতিতা অম্বপালী ও নটা শ্রীমতা আজ সাধনা হইরাছেন, নাপিত উপালি, গোয়ালা স্থানন্দ, পুরুষ স্থানীত আজ সাধু স্থাবর হইয়াছেন।

মহারাজ অঞ্চাতশক্র রাজবাজীতে বৃদ্ধপুল নিষেব করিয়া দিয়াছেন।
ভিক্ষাী উৎপলপণা শ্রীমতাই উপর ভার নিয়া গেলেন সেই পূজা করিবার . এবং
তিনি নিজে গেলেন নগরে পূজা করিতে দেবনতের 'নগ্যেবা উৎপলপর্ণাকে
হত্যা কবিল। শ্রীমতা বাজাগগৈবের বালনীদের নিষেব না মানিয়া বে
আশোকতরু-মূলে প্রাভু বৃদ্ধ এক দিন বাস্মাভিনেন, তাহার সন্থে পূজা করিবার
ভ্যুপ্ত হতল। রাজমহিনা ব্যাবলী নিটকে এবং স্কান্তবের এস সজে
ব্রমান কবিলার জ্যা বাজার আর্থা হার্থান স্নান্তকেন স্নান্তকে এক সংক্রেপ্রান্ত বিশ্ব ভ্রাবলী ব্যাবলী নি

ন দিকে দেকদকের শিশ্যেবা প্রল হইলা উঠিল : হাবাজ ক্ষিণাবকে প্রে হলা করিয়াছে। মহাবাজ জো চক্ প্রহেণাব জল অভু হল্প হহলাছেন ক্ বাজমহিন্দী বল্প ক্ ভাগাল কৈ প্রতাবি করে কি ভাগাল কৈ বাজমহিন্দী বল্প কি ভাগাল কৈ কি লাল কি কি লাল কি কি লাল কি লাল কি লাল কি ভাগাল কি ভ

কাজের রহাবলীর থুব হাভাতাতি—হিন শ্রীমতাকে পূজাবেদীব সক্ষধ নাচাইয়া বৃদ্ধদেবের অপমান কবিয়া ছাডিবেন— ও বেধানে পূজাবিণী হ'য়ে পূজা কব্তে যাছিল, যেধানেই ওকে নটা হ'বে নাচ্তে হবে।"

শ্রীমতী নটীর বেশ ও প্রচুব অলম্বার পরিধান কবিলা নাচিতে আদিল। বিক্ষিণীরা ও কিম্বরীরা পর্যস্ত তাজাকে ধিক্কাব দিতে লাগিল। কিন্তু শ্রীমতী শাম্ব সমাহিত হইনা আদিয়া নৃতা আরম্ভ কবিল নটীব সেই নৃত্য হইন্ন। উঠিল নতি, এবং তাহার গান হইয়া উঠিল বন্দনা। নটা নৃত্য করিতে করিতে তাহার সমন্ত বসন ভূষণ খুলিয়া খুলিয়া বেদীয়ুলে নিক্ষেপ করিতে লাগিল—তাহার নটাবেশের নীচে হইতে বাহির হইল ডিক্লীর কাষায়বস্থা। রক্ষিণীরা তাহাকে এই পূজা হইতে নিবৃত্ত হইতে অনেক অফুরোধ করিল। কিয় রক্ষাবলী রক্ষিণীদিগকে র্ভংসনা করিয়া বলিল—"রাজ্ঞার আদেশ পালন করো।" রক্ষিণী শ্রীমতীকে অস্তাঘাত করিল। শ্রীমতী আহত হইয়া পড়িয়া গেল। রক্ষিণীরা তাহার পায়ের গুলা লইয়া তাহার কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করিতে লাগিল। মহারাণী লোকেশ্বরী শ্রীমতীকে কোলে লইয়া বদিলেন এবং শ্রীমতীর ভিক্ষণীর বস্ত্র মাধায় ঠেকাইয়া বলিলেন—"নটা, তোর এই ভিক্ষণীর বস্ত্র আমাকে দিয়ে গেল।"

এ দিকে মহারাজ অজ্ঞাতশক্র অমৃতপ্রচিত্তে বৃদ্ধদেবের করুণা ও ক্ষমা প্রার্থনা করিবার জন্ম ভগবানের পূজা লইয়া কানন-দ্বারে আদিয়া উপস্থিত। কিন্তু তিনি শ্রীমতীর হত্যার সংবাদ গুনিয়া ভরে কম্পিত হইয়া উঠিলেন, তিনি ফিরিয়া গোলেন। নটা প্রাণ দিয়া, মান দিয়া ভগবান বৃদ্ধদেবের পূজা সমাধা করিয়া গোল। নটার পূজা জয়য়্ফ হইল।

ঋতু-উৎসব ও ঋতু-রঙ্গ

ঋতু-উৎসব প্রকাশিত হয় ১০৩৩ সালে। ঋতু-রঙ্গ প্রকাশিত হয় ১৩৩৪
সালের পৌষ মাসের মাসিক-বস্থমতী পত্রিকায়। ছইখানিই ষড্ঋতুর
সৌন্দর্যের বন্দনা। সৌন্দর্যলন্ধীর পূজারী কবি ঋতু-পর্যায়ে মনের মধ্যে য়ে
আনন্দ হিল্লোল অমুভব করেন তাহারই উল্লাস এই ছইখানি বই।

ঋতু-উৎসবের মধ্যে আছে— >। শেষ-বর্ষণ, ২। শারদোৎসব, ৩। বসন্ত, ৪। স্থান্দর, ৫। ফান্ধনী। বর্ষার শেষ হইতে বসন্তের শেষ পর্যন্ত পৃথিবীর উপর দিয়া যে সৌন্দর্যের ও আনন্দের প্রাবন বহিয়া যায়, তাহারই পাচটি তরক এই পৃস্তকে ধরা পড়িয়াছে ঐক্রজালিক কবির মায়ায়।

কবির অনেক ঋতু-উৎসব-সঙ্গনীয় পুস্তকের মধ্যে একজন রাজা থাকেন এবং একজন কবি থাকেন। রাজা হইতেছেন বৈষয়িক, আর করি হইতেছেন সৌন্দর্যলক্ষ্মীর উপাসক। কবির আনন্দের ছোলাচে বাজা বিষয়কর্ম ভূলিরা প্রকৃতির সৌন্দর্যপূজায় মাতেন, এমন কি অর্থসচিব পর্যস্ত টাকার থলির ভার ভূলিয়া আনন্দে নৃত্য করেন। ঋতু-উৎসবগুলির অন্যুরের কথাই এই। প্রকৃতির সহিত মানব-মনের মিলনেই বিশ্বের আনন্দোৎসব পূর্বতা লাভ করে।

দ্রষ্টব্য—শারদোৎসব—রবীজনাথ ঠাকুর, বিচিত্রা, ১০০৬ আধিন। এই পৃষ্ঠকে শারদোৎসব-ব্যাথ্যা দ্রষ্টবা।

রক্তকরবী

নাটক। ১৩৩১ সালের আখিন মাসের প্রবাসীর অভিরিক্তাংশ-রূপে সমগ্র ছাপা হয়। পরে বই আকারে প্রকাশিত হয় ১৩৩৩ সালে।

কবি রবীক্সনাথের বিফল্কে একটি অভিযোগ আছে যে, তাঁহার কবিভা ও নাটক অস্পট্টতার দোষে দ্বিত। সেই অভিযোগ এই নাটকবানির বিকল্পে বত বিঘোষিত হইয়ছিল, এমন আর অভা কোন নাটকের এবং 'সোনার তরী' ছাড়া অভা কোন কবিতার বিকল্পে হয় নাই বোধ হয়! কোনো কবির কোনো কাবা ব্ঝিতে না পারিলে তাঁহাকে অপরাধী করার পূর্বে নিক্সের বোধশক্তিটাকে একবার যাচাই করিয়া লওয়া ভালো। বেদাস্কদর্শন বা কান্ট্-হেগেলের দর্শন অথবা বৈজ্ঞানিক আইন্টাইনের মতবাদ সাধারণ লোকের জভা যেমন নয়, কোনো কোনো কবির কাবাও তেমনি সাধারণের সহজ্পবোধা হইতে নাও পারে। এই জভা দোষাবোপকারীদের মনে রাখা উচিত ক্রেনের সন্ধান না পাইয়া থেজুব-গাছের গলায় কলদীটাকে ঝুলিয়া থাকিতে দেখিলে, নিরর্গক বলিয়া মনে হওয়া কিছু আশ্চন নয়; কিস্কু কলদীটাই তো লোব অর্থ নয়, তাহার অন্তরে যে রস সঞ্চিত আছে সেইটারই অর্থ যা-কিছু। রস না দেখিয়া লোকে কলদীর মানে খুঁজিয়া পায় না। এই নাটকেরও রসটুকুর সন্ধান পাইলে আর কোনো গোলমাল থাকে না। সেই রস হইতেছে নন্দিনী—ভাহার নামেই আছে তাহার আদল পরিচয়।

এই নাটক লইয়া হৈচৈ হইয়াছিল বলিয়া বহু মনস্বী ব্যক্তি ইহার ব্যাখ্যা করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন, এবং স্বয়ং কবিকেই নিজের কাব্য ব্যাখ্যা করিতে একাধিকবার আদরে নামিতে হইয়াছে। কবি রক্ষ করিয়া বলিয়াছিলেন—

পরজন দত্য হ'লে কি ঘটে মোর দেটা জানি,

व्यावाद त्यादेव होन्देव य'त्त तर्ला त्यत्यद्र य द्राक्यांनी ।

আমার হয়তে। কর্তে হবে আমার নেধা সমালোচন।
আমার নেধার হব আমি ছিতীর এক ধুত্রলোচন। —ক্ষণিকা, কর্মধন।
কিন্তু কবিকে আর পরস্থানের জন্ম অপেকা করিয়া থাকিতে হন্ন নাই;
জোলাকে ইহজনেই সেই হুর্ভোগ ভূগিয়া লইতে হইয়াছে।

এই নাটকের বছ সমালোচনা বিচক্ষণ লোকে করিয়াছেন; সেই জস্ত আমি ইহার কিঞ্চিৎ আভাষ মাত্র দিয়া নিরস্ত হইব।

রাজা প্রজ্ঞাদের শোষণ করিতেছে, তাহার লোভের পোরাক জ্ঞোগাইবার
জ্ঞাধনির কুলীরা সোনা তুলিতেছে। কুলীরা মান্ত্র হইরাও কাহারও সজে
যেন তাহাদের মহায়ত্বের সম্পর্ক নাই, তাহারা কেবল সোনা তুলিবার যন্ত্র-শ্বরূপ,
তাহাদের পরিচয় ৪৭ক, ১৬৯ফ মাত্র। ইহার দ্বারা জীবন পীড়িত হইতেছে,
যন্ত্রবদ্ধতা (organisation) ও লোভে মহায়ত্ব ব্যথিত হইতেছে। জীবনের
সম্পূর্ণ প্রকাশ হইতেছে প্রেম, এবং শ্বন্দর হইতেছে তাহার উপযুক্ত আবেইন।
পাথরে বাঁধা পাকা রাস্তার ভিতর দিরাও ঘাস গজাইয়া উঠে—এইরপে জীবন
নিরস্তর জড়ের বিরুদ্ধে যুদ্ধ ঘোষণা করে। জীলোকই হইতেছে জীবন,
জী, প্রেম, কল্যাণ, লক্ষ্মী। যে প্রয়োজন ধন-মান যশ-ক্ষমতার জন্ম লোল্প,
সে জীবন শ্রী প্রেম কল্যাণকে পরিত্যাগ করে। কিন্তু নন্দিনী—দেই জীবন-জী
প্রেম-কল্যাণমন্ত্রী—লোভাকে পরিত্যাগ করে। কিন্তু নন্দিনী—দেই জীবন-জী
প্রেম-কল্যাণমন্ত্রী—লোভাকে গোভ ভোলায়, পণ্ডিতকে তাহার পাণ্ডিতা
ভোলায়। যন্ত্রবদ্ধ ব্যরারা যান্ত্রিকতাকে জ্ম করা যায় না, প্রেমের
নারাই প্রয়োজনের আবর্জনা, যান্ত্রিক বন্ত্রণা জ্ম করিতে হয়। যে নারী
সম্পূর্ণতার আদর্শকে পরিবাক্ত করিতেছে, সে সকলের মধ্যেকার স্বপ্ন প্রাণকে
জাগ্রত করে, প্রকাশ করে।

উবণী যেমন চিরস্তনী নারী, নারীড,—নন্দিনী তেমনি আনন্দ-লহরীর
প্রতিমৃতি, সে প্রাণশক্তির প্রাচুর্য। সে কিশোরকে মৃদ্ধ করে, পণ্ডিতকে
লগায়, সকলকে চঞ্চল করে। রাজা যেমন করিয়া সোনা সংগ্রহ করিয়াছে,
শক্তি লাভ করিয়াছে, তেমনি করিয়া সে নন্দিনীকেও পাইতে চায়—সে জানে
কেবল মাত্র কাড়িয়া লওরার পাওয়া, হাতে স্পণ-ছারা অহুভবনীয়, tangible
—কিছু পাওয়া। কিন্তু নন্দিনীকে সে কিছুতেই তেমন করিয়া পাইতেছে না।
ইহাতে রাজার মনের ভিতেও নাড়া লাগিয়াছে। মোড়লকেও নন্দিনী
বিচলিত করিয়াছে, কিন্তু মোড়লের প্রেম উংপ্রগামী (perverse)—সে
বাহাকে ভালোবাদে তাহার বির্ন্ধতা করে, সেই বিরোধিতার মধ্য দিয়াই
তাহার ভালো-লাগা প্রকাশ পায়। নন্দিনী কেনারামকেও প্রেম দিয়া
কিনিয়াছে—কেনারামও বিচলিত ইইয়াছে। যে নন্দিনী রাজার দরজায়
ধারা লাগাইতেছে, সেই সকলের হৃদ্ধের ছারে ধারা দিতেছে। অবশেষে
শীবন হইডেছে জনী মৃত্যুর মধ্যে নিজের চরম ও পরম বলিদানের ছারা।

জীবনের শ্রেষ্ঠ অভিব্যক্তিও প্রকাশ হইতেছে প্রেম, জীবনের শ্রেষ্ঠ অম্ববলী হইতেছে প্রেম—জীবনের সঙ্গে প্রেমের পরিপূর্ণ শ্বসঙ্গতি। হিংসায় ও লোভে প্রেম ও জীবন বিজিয় হইয়া যায়, স্থসঙ্গতি নই হয়,—রঞ্জম ও নিজনীব মধ্যে বিজেদ ঘটে। জীবন তাই নিরস্তর্ত্ত প্রেমকে সন্ধান করিয়া দিবে এবং যন্ত্র চায় প্রেমকে বিনাশ করিতে।

বিদর্জন নাটকে ধেমন দেখানো হইয়াছে প্রথা প্রেমকে বিনাশ করিছে উন্থত হইয়াছিল বলিয়া প্রেম প্রথার বিরুদ্ধে বিদ্যোহী হইয়া দাডাইছ, (প্রেমরূপিনী অপর্ণা যেমন জয়সিংহকে মন্দির ছাডিয়া চলিয়া ধাইতে প্ররোচনা দিয়া ডাক দিয়াছিল), তেমনি নন্দিনীও জালের পিছনে আবছায়া রাজাকে ডাক দিয়াছিল—বাহিবে চলিয়া আইস বন্ধতার মধ্য হইতে।

রক্তকরবীর আরম্ভ লোককে আনন্দে ভূলাইয়া। যেমন কোন গাছ দিবদ্ধ অবস্থার থাকে, তবে যেদিকে কাক পার সেদিকে আলোকেব জন্ম বিধা পড়ে, তেমনি লোকেরা নিজেদের নানা বক্ষম বন্ধতার মধ্যে আবন্ধ ছেট, নিজিনীকে দেখিরাই সকলে বাঁচিবার জন্ম তাহাব দিকে ঝুঁকিয়া প্রভিন্ন নিজনী বে জ্বমাগত ডাকিতেছে—এস; এস আমার দিকে, আমি তোসাদেব মুক্তি দিব। এই যে ডাক, ইহা তো প্রাণের ও প্রেমেব ডাক। কার্ডিশ্ব ভাঙ্গিল কি না তাহা বড় লক্ষ্য নয়, লক্ষ্য এই যে জীবন ও শ্রী অপবকে স্বর্ধিয়াছে বন্ধ হইতে বিমৃক্ত হইয়া যাইতে।

চতুরক্ষের দামিনীও ক্রমাগত এই কথা বলিয়াছে—দেও এই কেম প্রাণের ও প্রেমের প্রতিমৃতি। গুরুর কাছে স্বাই ল্টাইতেছে, কিন্তু সেং গুরুকে অবজ্ঞা ও অগ্রাফ কবিতেছে দামিনী। (oncrete পাণ ও এ) চাহ ব দাবী লইয়া শচীশ বা বিশ্রীকে চাহিতেছে। বাধা দিতে দিতে এক দিন বাধা ভাঙিয়া গেল।

কবির কথা সন্নাসীর কথার একেবারে উন্টা। সন্নার্গ বলেন—কর্ণাননী কাঞ্চন ত্যাগ করো। আর কবি বলেন—কামিনী না হইলে তোমানের ভাবমন্তর্ভা (abstraction)—রূপ-মোহের তম হইতে কে বাঁচাইবে গ কাঞ্চন ত্যাজ্য,, কারণ তাহা মাহ্মের স্ঠি, তাহা বন্ধন; কিন্তু কামিনী অভাগ্না, কারণ সে ভগবানের স্ঠি, সে কেবল ভাব হইতে, অবাস্তবতা হইতে মূল্লি দের। কাঞ্চন মাহ্মের নিজের হাতের গড়া শিকল; কিন্তু কামিনা—ভগবানের বেওরা মুক্তিন দুতী—প্রাণে প্রেমে রসে বিচিত্র।

রক্তকরবী রূপক-নাট্য বা সমস্তামূলক নাট্য নহে, ইহা গীতিনাট্য— Dramatic Lyric। ইহাতে সামাজিক সমস্তার উপরে সৌন্দর্যলন্ধীর অধিষ্ঠান হইসাছে—ধেমন পটের উপরে চিত্র তাহাতে চিত্রটাই প্রধান হয়, পট নয়।

মন্তব্য—বাত্রী—রবীন্তনাথ ঠাকুর, ২৭-৩১ পূর্চা। রক্তকরবী—রবীন্তনাথ ঠাকুর, প্রবাদী, ১০৩২ বৈশাণ, ২২ পূর্চা। রক্তকরবীর মমকথা—ভোলানাথ দেনগুরু। রক্তকরবীর তিনজন —অন্তব্যাশকর রাম, বিচিত্রা, ১০৩৪ ভাত, ৩৪৯ পূর্চা। রক্তকরবী—নবেন্দু বস্থ, বিচিত্রা, ১০৩৫ আবাচ্, ১১১ পূর্চা। রক্তকরবী—মানদী ও মমবাণী, ১০৩১ টেলু, ১৯৭ পূর্চা। রক্তকরবী—দিশিরক্ষার সৈতে, উত্তরা, ১০৩৫ আব্রহায়ণ, ১৭১ পূর্চা। রক্তকরবী—ক্তেলাল সাহা, গুরুহবর্ষ, ১০৩৩ আবণ, ভাত্ত, ১০২৫ আহিন, অপ্রহায়ণ।

Red Oleanders—Jaygopal Banerjee, Calcutta Review, 1925 October, November; 1920 February.

লেখন

वहे तथा ममाश्च हम २०० कार्तिक, ১००० मार्त--१ ने नट ज्युत ১०२७। বইখানি মাত্র ৩৩ পুগার। সমস্ত কবিতা কবির নিজের হাতের লেখায় অস্টিয়ার ব্ডাপেট ছাপা। ইহাতে কবিব নিজের হাতে লেখা ছোট ছোট কতকগুলি কবিতা আছে; এই কবিতাগুলি কলিকা জাতীয়। এই লেখন-গুলির রচনা আরম্ভ হয় চীনে জাপানে—পাখায়, কাগজে, রুমালে কবিকে কিছু শিখিয়া দিবাৰ জন্ত লোকের অন্থবোৰ হইতে ইহাদেৰ উৎপত্তি। পরে দেশে ফিরিয়াও লোকের হস্তাক্ষর সংগ্রহের খাতায় কবিকে এই বকম লেখা অনেক লিখিতে হইয়াছে। এমনি কবিয়া অনেক টকবা লেখা জমিয়া উতে। এই কবিভাগুলির মধ্যে ক্লিকাৰ কবিভাৰ চেয়ে কবিম্ব আছে বেনি এবং তত্ত্ব আছে কম। এই কবিতাগুলিব কবিষ ৭ তত্ত্ব ছাড়াও মূলা চইতেছে, কবির নিজের হাতের লেখায় তাঁচাব বাক্তিগত পবিচয়ে। ছাপার অফবে কবিতার যে ব্যক্তিগত দংস্রবটি নষ্ট হইয়া বার, কবিব হাতেব লেখায় ছাপা ছপুরাতে দেই সংস্রবট রক্ষিত হইরাছে—কবিব মসমনস্কতার যে-সব ভুগচুক ঘটাতে অথবা মতি পরিবতনে পদ-পাববর্তন কবাতে যে-সব কাটাকুট কবি করিয়াছেন সেই-সমস্ত স্থল ছাপা হওয়াতে ইহাব মধ্যে কবি-মনের পবিচর অধিক পাওয়া যায়। কবিতাগুলির ইংবেদ্ধা অন্তবাদও দক্ষে দক্ষে কবিব নিজের হস্তাক্ষরে দেওয়া হইয়াছে। এই বই বিদেশে ছাপা হওয়াতে এদেশে দুর্লভ হট্যাছে। কতকগুলি কবিতা কলিকাতার বই প্রকাশিত হওরার আগে ১৩৩৪ সালেব ভাদ্র মাদের বিচিত্রা পত্রিকান্ন ছাপা হইয়াছিল। অতএব এদেশে এই বইয়ের প্রকাশের তারিথ উচার পরে।

এই বইয়েব উৎপত্তি এবং বিষয়বস্তুর পরিচয় কবি শ্বন্ধ দিয়াছেন ১০০৫ সালের কার্ডিক মাদের প্রবাসী পত্তের ৩৮-৪ • পৃষ্ঠায়। কবি ণিথিয়াছেন—

"বধন চীনে জাপানে গিরেছিলেম, প্রায় প্রতিদিনট বাক্ষর নিপির দাবী মেটাতে ৪'ত কাগজে, রেশমের কাপড়ে, পাথায় জনেক নিথ্তে হয়েছে।…… দু চায়টি বাকোর মধ্যে এক-একটি ভাবকে নিবিষ্ট ক'রে দিয়ে তার যে একটি বাহল্য-বজিত রূপ প্রকাশ পেত, তা আমার কাছে বড় লেখার চেয়ে জনেক সময় জারো বেশি জাদর পেয়েছে। আমার নিজের বিবাস বড বড় কবিতা পড়া আমাদের অভ্যাস ব'লেই কবিতার আন্নতন কম হ'লেই তাকে কবিতা ব'লে উপলব্ধি কর্তে আমাদের বাবে।……জাপানে ছোট কাব্যের অমর্যাদা নেই। ছোটর মধ্যে বড়কে দেখ্তে পাওরার সাধনা তাদের—কেননা তারা জাত্ আটিস্ট্—সৌন্দ্য-বস্তুকে তারা গজের মাপো বা সেরের ওজনে হিসাব কর্বার কথা মনেই কর্তে পারে না।……এই-রকম ছোট ছোট লেথায় আমার কলম যপন রস পেতে লাগ্ল, তখন আমি অমুরোধ-নিরপেক্ষ হ'রেও গাতা টেনে নিয়ে আপন মনে যা-তা লিপেছি, এবং সেই সঙ্গে পাঠকদের মন ঠাঙা করবার জত্যে বিনর ক'রে বলেছি—

আমার লিখন ফুটে পথ ধারে ক্ষণিক কালের ফুলে, চলিতে চলিতে পেথে যার। তারে চলিতে চলিতে ভুলে।

কিন্তু ভেবে দেখতে গেলে এটা কানক কালের ফুলের দোষ নয়, চল্তে চল্তে দেশারই দোষ। যে জিনিসটা বংলে গড় নয়' তাকে আমহা দীড়িয়ে দেখিনে—গদি দেখভূম তবে মেঠো ভূল দেখে খুলি হ'লেও লক্ষার কারণ পাক্ত না। তার চেয়ে কুমড়া-ফুল যে রূপে শ্রেষ্ঠ তা নাও গতে গাবে।

ছোট লেপাকে ঘারা সাধিত্য-তিসালে জনামর করেন তারা কবির স্বাক্ষর-তিমারে হয়তো সেওলোকে প্রথম কর্তেও পারেন। ... জারেনি বাংলা এই ছুট্কো লেপাওলি লিপিবন্ধ করতে বসকুষ।

কবি এই ক্ষুদ্র কবিতাকণিকাগুলির নাম দিয়াছেন কবিতিকা।

এই রকম কবিতার ছোটর মধ্যে একটি ভাব সম্পূর্ণ ফুটিয়া উঠে এবং কবি
নিজের মনকে সংযত করিয়া তাহাকে বড় করিবার চেষ্টা করিয়া ছোট করেন না
বলিয়াই ইহারা প্রশংসার যোগ্য। ইহারা অলুক্ত কবি-মনের সংযমের ও
আটিট্রিক বৃদ্ধির পরিচায়ক। এই রকম অনেক লেখাই একেবারে নিরাভরণ
বলিরাই ইহার ভিতরকার সৌন্দর্য ও রস অপরিস্ফুট হইয়া প্রকাশ পাইবার
অবকাশ পায়। কবির নিজের কথাতেই ইহাদের সহদ্ধে বলিতে পারা যায়—

কুন্দকলি কুন্ত নানি' নাই হুংগ, নাই তার লাক পূর্ণতা অন্তরে তার অগোচরে করিছে নিরাক। বসস্তের বাণীধানি আবরণে পড়িয়াছে বাঁঘা, স্থানর হাসিয়া বচে প্রকাশের ফুন্দর এ বাধা।

মভ্যা

১৩৩৬ সালের আখিন মাসে প্রকাশিত হয়। ইহার উৎপত্তি-সম্বন্ধে শ্রীযুক্ত প্রশাস্তকুমার মহলানবিশ পুস্তকের পাচ-পরিচয় লিখিয়া বলিয়াছেন---

"মহরার অধিকাংশ কবিতা ১০০৫ সাস্ত্রে প্রাবণ হইতে পৌর মাসের মধো লেখা। সেই সমরে কথা হয় বে, রবীপ্রনাথের কাব্য-প্রস্থাবলী হইতে প্রেমের কবিতাগুলি সংগ্রহ করিয়। বিবাহ-উপলক্ষে উপহার দেওয়া যায় এইরূপ একখানি বই বাহির করা হইবে, এবং কবি এই বইরের উপযোগী করেকটি নৃতন কবিতা লিখিয়া দিবেন। কিন্তু অল্প করেক দিনের মধে। করেকটির জায়গায় অনেকগুলি নৃতন কবিতা লেখা হইর। গেল; সেই-সব কবিতাই এখন মহয়ানামে বাহির হইতেছে। ইহার কিছু পূর্বে, ১০০৫ সালের আয়াঢ় মাসে, 'পেবের কবিতা' নামে উপজ্ঞাসের জল্ম কয়েকটি কবিতা লেখা হর। ভাবের মিল হিসাবে সেই কবিতাগুলিও এই সঙ্গেছাপা ইইল।"

এই কবিতাগুলির রচনা-সম্বন্ধে কবি স্বয়ং প্রশান্তবাবৃকে যাজ। লিখিয়া-ছিলেন তাহার মধ্যে এই পুস্তকের কিছু পরিচয় পাওয়া যায়।

"লেখার বিষয়টা ছিল সংকল্প করা—প্রধানতঃ প্রজ্ঞাপতির উদ্দেশ্যে—আরে তাঁরই শালালী করেন মে দেবতা তাঁকেও মনে রাধ্তে তরেছিল ৷ অতএব 'মহল্ল'র কবিতাকে টিক আমার হালের কবিতা ব'লে শ্রেশীবদ্ধ করা চলে না ৷ তেবে দেব্তে বেলে এটা কোনো কাল-বিশেষের নয় এটা আকেশ্যিক ।·····

"আমি নিজে মহন্নার কবিহার মধ্যে হুটো দল দেশ্তে পাই। একটি হ'ছেছ নিছক পীতি-কাবা, ছন্দ ও ভাষার ভঙ্গীতেই তার লীলা। হাতে প্রপ্রের প্রদাধনকলা মুখা। আর একটিতে ভাবের আবেগ প্রধান স্থান নিরেছে, ভাতে প্রপরের দাধন-বেগই প্রবল। মহন্নার 'মারা' নামক কবিহার প্রপরের এই ছুই ধারার পরিচয় দেওয়া হয়েছে। প্রেমের মধ্যে স্টি-শক্তির জিরা প্রবল। প্রেম সাধারণ মামুষকে অসাধারণ ক'রে রচনা করে নিজের ভিতরকার বর্ণে রঙে রুপে। ভার সঙ্গে বোগ দের বাইবের প্রকৃতি থেকে নানা গান গন্ধা, নানা আভাস। এমনি ক'রে অস্তবের বাহিরের মিলনে চিত্রের নিক্ত-লোকে প্রেমের মপরুপ প্রসাধন নিমিট হ'তে থাকে—স্বোনে ভাবে ভঙ্গীতে সাজে সজ্জার নৃত্র নৃত্র প্রকাশের জন্ত ব্যাকুলাটা, সেধানে মনির্ঘটনীবের নানা ছন্দা, নানা বাঞ্চনা। একদিকে এই প্রসাধনের বৈচিত্রা প্রার একদিকে এই উপসন্ধির নিবিড্টা ও বিশেষত্ব। মহন্নার করিটা চিত্রের এই মারালোকের কাবা; তার কোনো অংশে ছন্দে ভাষার ভঙ্গীতে এই প্রসাধনের আরোজন, কোনো অংশে উপলব্ধির প্রকাশ।

এই কুরের মধ্যে নৃত্তনের বাদান্তিক শ্পণ নিশ্চরট আছে—নইলে লিখতে আমার উৎদার্চ থাকত না।

ু এই বইরের প্রথমে ও দব শেষে যে ওটিকরেক কবিত। আছে, দেওলি মহয় পর্বারের ন্য—সগুলি মৃত্যু ওমের রচনা হলেছিল। কিন্তু নববসন্তের আবিভাবিই মতরা কবিতার উপবৃদ্ধ পূমিব। ব ো নকীবের কাজে গ্রাম্বর এই প্রস্কু সাহবান করা হয়েছে।

ক্ষরিতা**গুলির দক্ষে মহর।** নামের একট্বানি সঙ্গতি গাছে—মত্যা বদস্তেরই অস্তুচর আব পুর রমের মধ্যে **প্রছেম আছে** উন্মাদনা।'

বইরের আরজ্ঞে বসস্তের আগমনী-সম্বন্ধে ৫টি কবিতা, আর বইরের শেষে 'বলায়-সম্বন্ধে ৪টি কবিতা ১৩৩০-১০৩৪ সালের লেখা। ঐ সময়ের আব কটি মাত্র কবিতা 'সাগরিকা' এই বইয়ে স্থান পাইয়াছে। 'শুবায়োন। কবে বান গান' কবিতাটি ১৩৩৫ সালের ভাদ্র অথবা আম্বিন মাসে লেখা।

গার-একটি কথা উল্লেখনোগা---এই পুস্তকের নাম-পত্রথানি কবির স্বাস্থত অদি হ

বরীক্ষনাথের কাব্যে নব নারীব বৌবনাবেগে যৌন আকর্ষণের এবং 'মঙ্গুন ভাব কবিতা বেশি নাই , নাহা আছে তাহাতেও কবিব প্রকৃতিগভ সংক্ষে ও দেহাতিরিক্ষে মানসিকত। ও আধ্যাধিকতা সংমিশ্রিত হইলা কবিতা গুলিকে কামনার রাজ্যের বাহিবে নহন্য গিলাছে। এই মন্ত্রাব মধ্যে কতকগুলি কবিতা আছে, যাহাব কবেনারীর মানবীয় ভাব স্থপবিশ্যুত হইয়াছে, অংচ কোথাও কবিব সংগ্রেবর ব্যতিক্রম ঘটে নাই ক্লিকাব মধ্যে যদিও কবি বালয়ছিলেন—

ে নিক্লপমা

बाजिक कार १२ क्री इ एउ भारत,

कोरल क्या ।- छात्नर

তথাপ কবির আচারের ফুটি কোথাও ঘটে নাই—জাঁহার ভটি মন প্রণায়র কারতাকেও কামনাবেগে কল্বত হইতে দেয় নাই। ইহার মধ্যে প্রণয়ের একটি সতাপ্রতিষ্ঠ বলিষ্ঠ রূপ প্রকাশ পাইয়াছে, এবং রমনী কবির স্ষ্টেতে আর অবলা নহে, সে সবলা ছইয়া পুরষের সহব্মিনী হইবার যোগ্যতা লাভ করিয়াছে। এই নরনারীর প্রণয় লীলার মধ্যে কোথাও দীনাখার কাতরতা প্রকাশ পায় নাই, কোথাও হীন ভিক্ষাবৃত্তি প্রশ্রম পায় নাই।

উজ্জীবন

যিনি সন্নাসী তিনি মনোভবকে ভন্ম করিয়া তাহাকে অপমানিত করেন।
কবি তাঁহার মোহন মন্ত্র পাঠ করিয়া সেই অতমুকে উজ্জীবিত করিতেছেন।
মনসিজ্ঞ হইতেছে সৃষ্টির প্রেরণা—নর-নারীর প্রেমের মূল। যাহা সৃষ্টিকর্তার অমুশাসনে আবিভূতি হয়, তাহাকে বিনাশ করিতে চাওয়াতে সৃষ্টিকর্তার সৃষ্টির উদ্দেশ্রই পশু করা হয়। সেই জ্বন্ত কবি অতমুকে ভন্ম-অপমানের শ্যা ছাড়িয়া উজ্জীবিত হইতে আহ্বান করিতেছেন—কিন্তু তাহার মধ্যে যাহা য়ুল ও শ্রীহীন তাহাকে সেই ভন্মের অবশেষের মধ্যে পরিহার করিয়া আসিতে অম্বরোধ করিতেছেন। বীরের তমুতে এই অতমু যদি তমু লাভ করিতে পারে, তাহা ইইলে—

ইছাই ছইতেছে সমগ্র কাব্যের অন্তরের বানী ৷ এই জ্বন্তই বীর প্রেমিক ভাষার প্রেমিকাকে বলিতেছে—

> আমরা ছজনা স্বর্গ খেলনা গড়িব না ধরণীতে,

ভাগ্যের পারে হর্বল প্রাণে ভিক্ষা না যেন যাচি। কিছু নাই ভয়, জানি নিশ্চর ভূমি আছ, ফামি আছি। — নির্ভয়।

এবং সৰলা নারীকে দিয়াও কবি বলাইরাছেন নুতনতর বাণী-

যাব না বাসর-কক্ষে বধুনেশে বাজায়ে কিন্ধিনী,— আমারে প্রেনের বীর্বে করো অশক্ষিনী। বীর-হস্তে বর্মাল্য লব একদিন।

বিনম্ভ দীনতা সম্মানের যোগ্য নতে তার,— কেলে দেবো আচ্চাদন সুর্বল লক্ষার। বীর প্রেমিক কামনা করেন এই রকম দন্ধিতা যাহাকে তিনি বলিতে পারিবেন---

সেবা-কক্ষে করি না আহবান। শুনাও তাহারি জয়গান যে বীর্ষ বাহিরে ব্যর্থ, যে ঐখর্থ ফিন্নে অবাস্থিত, চাটুসুদ্ধ জনতায় যে তপস্তা নির্মন লাস্থিত। ---প্রতীক্ষা।

দুস্পতীর জীবন কেবল স্থেযাতা নহে, তাহাতে পদে পদে বিপদ্ বিল্ল আছে এবং তাহাকে উত্তীর্ণ হইয়া জ্মী হইয়া চলাই দাস্পত্য জীবনের চরম কথা। পরস্পরের সাহায্যে সকল সংঘাত হইতে পরস্পরকে বাঁচাইয়া অদৃষ্টের উপর জ্মী হইতে হইবে, নৃত্যুর ভিতর হইতে অনৃত আহরণ করিয়া লইতে হইবে, এই শিক্ষা কবি প্রত্যেক কবিতাতেই দিয়াছেন। দুস্পতীর বাসর-ঘর অক্ষয়; মালা-বদলের হার ছিল্ল হইলেও বাসর-ঘরের ক্ষয় নাই, তাহা নব নব দুস্পতীর আনন্দ-মিলনের মধ্যে নিত্য বর্তমান। সেই জ্বন্ত কবি বাসর-ঘরকে সংখোধন করিয়া বলিয়াছেন—

> হে বাদর হয়. বিশ্বেরপ্রম স্কুটোন, ভূমিও অমর : --- বাদর হয়

পথের বাঁধন ও বিদায়

এই দুইটি কবিতা 'শেবের কবিতা' উপন্যাসের, মহুয়া হইতে গৃহীত।
মহুয়ার কবিতাগুলি বিবাহ-বাপোর সুইয়া লেখা, মর-নারীর প্রেমের নানা
অবস্থার বিশ্লেষণ শেষের কবিতাও তাহাই। অমিত ও নাবণা অকমাং
পরিচিত হইয়া দেখিল—উভয়েরই উভয়কে ভালো লাগে। কিন্তু সেই ভালোলাগা তাহাদের পূর্ব প্রণায়নী ও প্রণায়ীর দাবীর কাছে পরাজিত হইয়া তাহাদের
আর বিবাহ-বন্ধনে আবদ্ধ হইতে দিল না। এই যে জীবন-পথে চলিতে
তার বিবাহ-বন্ধনে আবদ্ধ হইতে দিল না। এই যে জীবন-পথে চলিতে
চলিতে এক-একজনকে ভালো লাগে, আবার ভাহাকে ছাড়িয়া চলিয়া ঘাইতে
হয় তাহাও জীবনের পাথেয় হইয়া থাকে; এই ফ্ল-পরিচয়ও জীবনকে গঠন
হয় তাহাও জীবনের পাথেয় হইয়া থাকে; এই ফ্ল-পরিচয়ও জীবনকে গঠন
করে, শোভা সৌন্দর্য দান করে, মহিমানিত করে। এই ফ্লিক প্রেমের
স্বৃতিকণাগুলি মহামূল্য রত্তকণিকারই তুলা সমাদরে মনোভাগ্রারে চিরসঞ্চিত

হইরা থাকে; এমন কি স্থৃতিতে না থাকিলেও তাহা ময়চেতনার অবগাহন করিয়া জীবনের জন্ত অমৃত, আহরণ করিতে থাকে। মামুষ মাত্রেই জীবনে একবার একজনকে ভালোবাদে, আবার সেই ভালোবাদা হ্রাস হইরা আদে, সে আবার অপরের প্রতি অমুরক্ত হয়। কিছু সেই যে পূর্ব অমুরাগের মাধুর্য, জীবনের যে-ক্রাটি মৃহুর্ডকে সেই প্রেমের অমৃত-ম্পর্শ মহিমাবিত করিয়াছিল, তাহা তো চিরস্তন, তাহা সারা জীবনের সম্প্রদ। এই কথাই এই চইটি কবিতার বলা হইয়াছে।

তুলনীয়-শাব্দাহান (বলাকা), অনবসর (ক্ষণিকা):

নায়ী

নান্নী পর্য্যায়ের কবিতাগুলিতে মারীর চরিত্রের বিবিধ দিক ও বিচিত্রতা চিত্রিত হইয়াছে।

সাগরিকা

এই কবিভাটি যবদ্বীপকে সংখাধন কবিয়া কোলা। একটি বিশেষ সানকে স্থান্ধী বমণী কল্পনা কবিয়া ভাহার প্রতি এমন মধুব প্রণয়-সন্থাষণ আরু কোনো কবি কোথাও কবিয়াছেন কি না জানি না; এবং ঘবদ্বীপের সহিত ভারতের যে বেংগ কালে কালে নানা রূপে ঘটিয়াছিল ভাহার ইভিবৃত্তকে এমন সরস্থারীয় প্রকাশ করাও অভ্যানীয়।

দ্বীপ দাগর-জলে স্থান করিয়া উঠিয়াছে, তাহার ভট-রেখা উপবিষ্টা রমণীর পীতবাদের প্রান্তের মতো গোল হটয়া ছড়াইয়া পড়িয়াছে :

সেই দেশে ভারতের রাজারা প্রথমে দিগ্বিজ্ঞয়ী বেশে গিয়া উপনীত হইয়াছিলেন। কিন্তু সেই রাজারা তাহাকে পদানত করেন নাই; সেই দেশের যে কৃষ্টি ভাহার সহিত ভারতের সংস্কৃতি মিলাইয়া তাঁহারা নব-সভাতা গড়িয়া তুলিলেন, সেবানে এক নব-পদ্ধতির নৃত্যছন্দ ও স্থাপত্য-চিত্রাঙ্কন-পদ্ধতি উদ্ভাবিত হইল। মনের সংশয় দূর হইল,—ভয়য়র কৃদ্র ধ্রুটির প্রেমের পরিচয় পাওয়াতে পার্বতী বেমন তাঁহার দিকে চাহিয়া প্রসম্ম হাস্ক-বারা নিজের

েপ্রম প্রকাশ করেন, সেইরূপ এই বিজিত দেশ বিজেতার প্রেমে উৎচ্ছ হইরা উঠিল, তাঁহার পরাজ্যের মানি দূর হইল।

তাহার পরে কালে কালে ভারত হইতে গুণী জ্ঞানী শিল্পী বণিক্ পেই দেশে গিয়াছেন এবং সেই দেশকে নব নব সম্পদ্দান করিয়াছেন। কত অস্তদেশবাজী নাবিকের তরী ভগ্ন হওরাতে তাহারা এই উপকূলে আসিয়া উপনীত হইয়াছিল, এবং তাহারা এই দেশে ভারতের কর্ষণার নিদর্শন দেখিয়া ভারতের সহিত তাহার যোগের পরিচয় পাইয়াছিল। তাহারা দেখিল— যবদ্বীপের নৃত্যা, প্রসাধন করিবার ধরণ, গাঁত বাল্লা, সাহিত্যা, সমগুই ভারতের দান: সেই দেশের ধর্ম, দেবতা,—তাহাও ভারতের, ভারতের শৈব-ধর্ম সেখানে স্প্রতিষ্ঠিত। ধূর্জটি পার্বতী এবং শিব-শিবাণীর উল্লেখ করিয়া কবি সেশদেশের ধর্মমতের আভাস দিয়াছেন।

অবশেষে শ্বয়ং কবি রবীক্রনাথ ভারতের প্রতিনিধি-রূপে বত শত বংসর
পরে সে দেশে গিয়া উপস্থিত গ্রহাছেন, এবং সে দেশকে সম্বোধন করিয়া
বিলিত্তেছেন—আমি ভারতের প্রতিনিধি আদিগছি, কিন্তু আমি বিশ্বয়ী রাজা
নতি, আমি কোন বিশেষ জ্ঞান বা বিস্তা বিতরণ করিতেও আদি নাই।
আমি কবি, কেবল বীণা আনিয়ছি, ভোমায় গান শুনাইয়া আমার প্রীতি
নিবেদন করিব। তথাপি আমি সেই প্রাগত ভারতবাসীদেরই একজন
প্রতিনিধি, আমি সেই প্রের যোগভূত্তকেই শুধু আর-একটি গ্রহিবন্ধন করিয়া
দৃত্ত করিয়া দিতে আদিয়াছি।

েই কবিতাটির সঙ্গে বাত্রী পুস্তকের ২১০ পুগায় 'জীবিজ্বর-লন্ধী' কবিতাটি পাঠ করিলে উভয়েরই অর্থ স্থম্পট্ট হইতে পারে।

বনবাণী

১৩৩৮ সালের আখিন মাসে প্রকাশিত, ১৯২৬ সালের অক্টোবর মাস: কবি রবীন্দ্রনাথ স্রষ্টা। তিনি বিশ্বপ্রকৃতিকে তাঁহার কণার ইন্দ্রজালের মোহন মন্ত্র পড়িয়া পুন:স্টে করিয়াছেন—বে-প্রস্কৃতিকে আমরা নিত্য নিরস্তর দেপিতেছি, তাহার সহিত আমাদের নৃতন নিবিড় পরিচর ঘটাইয়া দিয়াছেন যাত্রকর কবি--- যেমন চেনা মেঘকে নৃতন করিয়া গড়িয়াছেন কবি কালিদাস।

মরমিরা কবি তাঁহার অন্তর্গুড় স্থা দৃষ্টি লইয়া প্রাকৃতির দৌন্দর্যের ও রদের মধ্যে অবগাহন করিয়া তাহার নব নব মাধুর্য আবিদ্ধার করিয়াছেন এবং

তাহার সহিত আমাদের পরিচয় করাইয়া দিয়াছেন।

আমরা রবীন্দ্রনাথের প্রকৃতি-পরিচয়ের ধারা ঐতিহাদিক কাল-পর্য্যারের ক্রমে যদি অন্তুসরণ করি, তাহা হইতে দেখিতে পাই—প্রথমতঃ কবি প্রকৃতির বৈচিত্র্য ও যিশালতার বাহিরের পরিচয় পাইয়াছিলেন। তাহার পরে অঞ্ভূতি ও অন্তর্গৃষ্টির দারা প্রকৃতির ভাবরাজ্যের ও অন্তর্জগতের সহিত পরিচয় ও আত্মীয়তা লাভ করেন : শেষে এক গভীর আধাাত্মিক সভার সমন্বয়ের নাকে **কবি বিশ্বপ্রকৃতির এক নবীনতর পরিচয় ও অর্গ পাইয়াছেন। রবীন্দ্রনা**পের কাব্য-জীবনের প্রথম ভাগ হইতেই যদিও প্রকৃতির প্রভাব অসাধারণ, ভুগালি প্রথম জীবনে তিনি ছিলেন প্রধানতঃ মানবের কবি। মানবীয় স্থধ-চুংধ ও সৌন্দর্য-উদার্য যেমন ভাবে তাঁহার কাবো বাণী পাইয়াছে, প্রকৃতি সেইরূপ পায় নাই। রবীক্রনাথের কাছে তথন গ্রন্ধতির সার্থকতা বেন মানবকে পাইয়াই— মানবহীন প্রকৃতি ্যেন কবির কাছে মাধুর্যই'ন ও বার্থ (তুলনীয় : 'পোড়োবাড়ী' কবিতা 'ছবি ও গান' কাবো)।

মানবের অন্তভূতির মাঝেই প্রকৃতি দার্থক। তাই কবি প্রকৃতির মাঝে মানবীর অন্তভূতির বাঞ্জনা দিয়া প্রকৃতিকে অন্তভব করেন। বলিয়াছেন—"জীবের মধ্যে অনন্তকে অভভব করারই অপর নাম ভালবাদা, প্রকৃতির মুধ্যে অমুভব ্করার নাম সৌন্ধ-স্ভোগু।''—পঞ্ভভ সৌল্ধবিলাসী কবি মানবকে প্রকৃতির সৃহিত মিলাইয়া দেখিয়াছেন-তিনি মান্বকে প্রকৃতির আখা দিয়া ব্যাখা করিছাছেন, এক প্রকৃতিকে ব্যক্তিত मान क्रिया मिथियाछ्न। मानव वस् क्वि श्रक्तिक मानवीयछारव अञ्चलानिक করিরা ব্রিতে চাহিরাছেন।—শীতের রৌদ্র কবির কাছে বন্ধুর আলিঙ্গনের মতো, বর্ষার আকাশ স্থলরীর জ্ঞাতরা চোথ শ্বরণ করাইয়া দের, এবং নির্মার কেশ এলাইয়া ছোটে; কবির মানস-স্থলরী কথনো মানবী, কথনো প্রকৃতিমরী —'কথনো বা ভাবমর, কথনো মূরতি' এবং 'সহস্রের স্থথে রঞ্জিত হইয়া আছে সর্বাঙ্গ তোমার হে বস্থে থে!'—বস্থন্ধরা।

কেবল মাত্র বিশ্বপ্রকৃতির সহিত নব নব রসমন্ন সম্বন্ধ-বন্ধনের মধ্য দিরা রবীশ্রনাথের স্ক্রনীশক্তির ক্রমবিকাশ অন্তুসরণ করা যাইতে পারে।

রবীক্সনাথের পূর্বে বঙ্গীয় কবিগণের নিকট বিশ্বপ্রকৃতি ছিল অভেরই বৈচিত্র্য মাত্র। ঈশ্বর শুপ্তের রচনায় যথেষ্ট প্রকৃতি-বর্ণনা আছে, কিন্তু তাহাতে প্রাণের সাড়া নাই—প্রকৃতির সহিত কবি চিত্তের কোনো আশ্রীয়তা দৃষ্ট হয় না—বিশ্বপ্রকৃতি মামুষের ইন্দ্রিয়ের জন্ম কি উপভোগ্য জোগায় তাহারই তালিকা মাত্র পাপ্তয়় যায়—মাঝে মাঝে সৃষ্টি দেখিয়া স্রষ্টাকে মনে পড়িয়াছে—কিন্তু এই পর্যস্ত । মাইকেলের প্রাণের উপর প্রকৃতি কিছুমাত্র প্রভাব বিস্তার করিতে পারে নাই—চতুর্কশপদী কবিতাবলীর মধ্যে গই-একটা সনেট ছাড়া তাঁহার স্বতম্ব প্রকৃতি-বর্ণনা নাই। হেমচন্দ্রকে ও নবীনচন্দ্রকে বিশ্বপ্রকৃতি ভাবনার হত্র পরাইয়া দিয়াছে মাত্র—তাই পল্লের মৃণাল দেখিয়া হেমচন্দ্রের মনে পড়িয়াছে রাজার ও রাজাের উত্থান-পতনের কথা, পন্মা দেখিয়া কেনাচন্দ্রের মনে হইয়াছে মান্ব-জাবনের বাধা-বিম্ন ও স্বতি-অস্বতির কথা, মেবনা দেখিয়া মনে হইয়াছে মান্ব-জাবনের বাধা-বিম্ন ও স্বতি-অস্বতির কথা, প্রকৃতির সহিত ইহাদের কোনো আশ্রীয়তা দৃষ্ট হয় না। বিহারীলালেই আমরা প্রথম মানব-প্রকৃতির সহিত বিশ্ব-প্রকৃতির অন্তরের আদান-প্রদানের পরিচয় পাই—

যুমায় অমার প্রিয়া ছাদের উপরে,
জ্যোৎসার আলোক আদি' কুটেছে অধরে।
সাদা সাদা ভোরা ভোরা দার্য মেকগুলি
নীরবে যুমায়ে আছে থেলা দেলা ভূলি';
একাকী জাগিয়া চাদ তাহাদের মারে,
বিশের আনন্দ যেন একতা বিরাজে।
—শর্থকাল।

বিহারীশালের শিশু রবীন্দ্রনাথই মামুষের সহিত ব্ণযুগান্ত-বিশ্বত ঘনিষ্ঠ সংক্ষটিকে নানা ভাবে পুনর্বন্ধন করিয়াছেন। বিশ্বপ্রকৃতির বছমুখ প্রভাবে ন্ধবীজ্ঞচিত্ত গঠিত; আবার রবীজ্ঞানাথ বিশ্বপ্রকৃতিকে মানসদৃষ্টিতে রাসমণ্ডিত করিয়া ন্তন রূপে গড়িয়াছেন। রবীজ্ঞ-প্রতিভার ক্রমবিকাশ এই পুনর্গঠনেবই ইতিহাস।

কবি সন্ধ্যা সঙ্গীতের 'ফদরের অরণ্য-আঁধারে' ব্যাকুল হইরা প্রকৃতিব মাধ্র্মর জীবনটিকে খুঁজিতেছেন—মাঝে মাঝে তাহার সন্ধান পাইরাছেন, আবার হারাইরাছেন; তাই সন্ধ্যা-সঙ্গীতে নৈরাণ্ড আছে, অতৃপ্তি অংছে, সন্ধোচ আছে, শিশিরোজ্জন প্রভাতের 'সেই হাসিরাশির মাঝারে আমি কেন থাকিতে না পাই গুঁবিলিরা থেদ আছে। এথন

গাছ পাতা সরোবর সিরি নদী নিরঝর

সকলের দহিত কবির প্রণয় জন্মিতেছে। কিন্ধ—

"

अধ মনে জাগে এই ভব,—

আবাব হারাতে পাছে হব !

কবির এথন—

বসন্তেব কুমুমের মেলা, মেগেদের ছেলেপেলা

সারাদিন দেখিতে ভালো লাগে। প্রথম প্রণয়ের সাকুলতার একট বল্ল আছে, তাই এই সঙ্গাতগুলির নাম হুইয়াছে আরক্তিম সন্ধার সঙ্গীত।

কবির মিলন-বাাকুলতা প্রকৃতির অস্তর পশ করিল, —দেও কবিকে হণ্ড ছানি দিয়া তাহার অস্তঃপুবে ডাকিয়া শইল। অমনি 'নিম'বের স্বপ্রছল' হইল, কবির রসপিপাত্র চিত্তন্তমর অস্বগৃহা হইতে বাহির হইল। তাই পালত সন্ধাতে দেখি প্রকৃতিব অস্থাপুরের দিকে কবিব যাত্রা—প্রভাত উৎসবের মধ্যে মেঘ বায়ু জাঁহাকে পথ দেখাইতেছে,—মেঘকে কবি আকাশ-পারাবারে ইয়া ঘাইতে বলিতেছেন, বায়ুকে বলিতেছেন জাঁহাকে দিগ দিগন্তে ছড়াইয়া 'দতে, প্রকৃতির মধ্যে নিজেকে পরিব্যাপ্ত করিয়া দিবার আগ্রহে তিনি মরণকে পান্ধ আহ্বান করিতেছেন—

সংখাত জীব আমি কণামাত্র ঠাই ছেডে বেতে চাই চরাচরমব।

কবির 'সহসা থুলিয়া গেল প্রাণ', আর কবির মনে হইল-

কে যেন নোরে থেতেছে চুমা— কোলেতে ভারি পড়েছি লুটি'। কবি এখন জগৎ-সুলের কীট। মরণহীন অনস্ত-জীবন মহাদেশ উংহার আবাসস্থল।

ইহার পরে ছবি ও গান। প্রক্কৃতির অন্তঃপুরে কবি প্রবেশ করিয়াছেন— যেথানে প্রকৃতির

অমির-মাধুরী মাপি' চেয়ে আছে ছটি আঁপি। —প্রেচমগ্রী :

প্রকৃতির মধ্যে মমতার আমাদ পাইয়া কবি সেই মমতা আরো নিবিড়-ভাবে পাইতে চাহিতেছেন; তাই কবি মেহময়ী পল্লীপ্রকৃতির অঙ্গনে আসিয়া-ছেন, যেধানে

> একটি মেয়ে একেল! নামের কেল। মঠে দিয়েে চলেছে— চারিদ্যাক সোলার ধান ফলেছে। —একাকিনী।

ভাহার পরে কবি প্রকৃতির মধ্যে মানবীয় মাধুর্য দেখিতে পাইলেন—

পুরী যে ভোষোর কাছে সকলে সভান্তে ভাছে, পুরী মোর আপনার কোকি,

ওরাও হামারি মতে তার গ্রেছে আছে রত,— জুঁই চাপা বকুল মধোক —গ্রেছন্টা।

প্রকৃতির মধ্যে মানবার মাধ্য উপলব্ধি করিয়া কবি মানব-প্রকৃতির প্রতিও লুব্ধ হউলেন—'কড়ি ও কোমল' স্ববে ভাঁহার চিত্তবীণা বাজিয়া উঠিল—

> মারতে চাতি না আমি সুন্দর ভূবনে, মানবের মারে আমি বাঁচিবারে চাই।

কবি বলিয়াছেন— 'প্রকৃতি তাখার রূপ রদ বর্ণ গল্প লইয়া, মানুষ তাখার বৃদ্ধি মন শ্লেষ প্রেম লইয়া আমাকে মৃথ্য করিয়াছে;'—জীবনশ্বতি। প্রকৃতির সহিত কবির তন্মাত্রগত বা ইন্দ্রিয়ান্তভাব-গত পরিচয়ের এইথানেই শেষ।

প্রকৃতির দহিত নিবিড় পরিচয় হওয়ার ফলে কবি দেখিলেন—প্রকৃতি কেবল আদরই করে না, শাসনও করে, প্রয়োজন হইলে পীড়নও করে। কবি তাই প্রকৃতিকে 'নিষ্ঠুরা' বৈলিয়াছেন ধুল অতি-পরিচয়-গত অভিমানে। প্রকৃতির কঠিন নিয়ম'কে তিনি তিরস্কাব কবিয়াছেন—'আমরা কাঁদিয়া মরি, এ কেমন রীতি ?' কবি প্রস্কৃতির মধ্যে দেখিতেছেন—'পাশাপানি একঠাই দরা আছে, দরা নাই।'—'মহাশলা মহা-আশা একত্র বেঁধেছে বাসা।' 'মানসী'তে কবি প্রস্কৃতিকে জননী জ্ঞান করিয়াছেন বলিয়াই অভিমানে নিচুরা বলিয়াছেন—'জীবন-মধ্যাক্ত' ও 'অহল্যা' কবিতার প্রস্কৃতির মাতৃত্ব ফুটিরাছে।

সোনার তরীতে কবি প্রকৃতি-মাতার মেহের ব্যাথাটুকুও লক্ষ্য করিয়াছেন—সে তো নিচ্না নয়, সে 'অক্ষমা', সে 'দরিলা'—মানবের অনন্ত ক্ষ্মা ও অত্থ বাসনা তৃপ্ত করিতে না পারিয়া সে ব্যথিতা।—সে মৃতবংসা জননী—'যেতে নাছি দিব' বলিয়া সে সন্তানকে বৃকে আঁকড়িয়া ধরে, 'তব্ যেতে দিতে হয়, তব্ চ'লে য়য়।' কঠিন নিয়ম-ধারার জন্ত একদিন যাহাকে তিরস্কার করিয়াছিলেন, আজ তাহার ঘনিষ্ঠ পরিচয় পাইয়া বৃঝিলেন—কঠিন নিয়ম প্রকৃতির নহে, সে নিয়ম বিশ্বস্রার; সেই নিয়মের নাগপাপে বাঁধা পড়িয়া মাও কাঁদিতেছে, ছেলেও কাঁদিতেছে। তাই প্রকৃতির প্রতি দরদে কবির মন তরিয়া উঠিয়াছে—'সমুদ্রের প্রতি' কবিতায় যেমন জননীতের আকৃতি ফ্টিয়াছে. তেমনি 'বস্কয়রায়' সন্তানের ব্যাকুলতা ফুটয়াছে।

কবি ইহার পরে কিছুকাল বিশ্ব-প্রকৃতির দিক্ হইতে মানব-প্রকৃতির দিকে ফিরিয়াছেন; তাহার পরে প্নরাব প্রকৃতিব দিকে যথন 'ফরিলেন, তথন প্রকৃতিকে দেখিলেন আব-এক চোখে—তথন প্রকৃতিতে আব মানবিকতা নাই, মানবের আশা আকাক্ষা স্থু ছঃথ তথন আব প্রকৃতিতে কবি আবোপ করিলেন না, তথন প্রকৃতিতে কবি দেখিলেন ঐশিকতা—humanity হইতে divinity-তে উপনীত হইলেন। ইক্রিয়গত দৃষ্টি তথন উপসংস্কৃত হইয়াছে, অতীক্রিয়-দৃষ্টি খুলিয়া গিয়াছে—প্রকৃতির শুল যবনিকা তথন স্বচ্ছ প্রক্রাল পরিপত হইয়াছে। সেই স্বচ্ছতার মধ্য দিয়া কবি দেখিলেন লীলাময়কে। প্রকৃতির বৈচিত্র্য এখন কবির কাছে সেই লীলাময়েরই লীলা মাত্র। নৈবেতেই কবি প্রথমে প্রকৃতিব মধ্যে ঐশিকতা-বোধ অহুভব করিলেন, 'বেয়া'তে তাহা স্পষ্টতর হইল। 'প্রশান্ত আনন্দ-ঘন আকালের তলে' 'মুয়্ম সম' শিরায় শিরায় আতপ্ত প্রেমাবেশ' লইয়া কবি ঘ্রিতেছেন সেই লীলাময়কে লক্ষ্য করিবার অন্ত। যে 'অক্রপ-রতন' আশা করিয়া কবি 'ক্নপ্রাগরে ভূব' দিয়াছিলেন' এখন ভাহার সন্ধান পাইয়াছেন।

ইহার পরে জমে গীতাঞ্চলি, গীতিমাল্য ও গীতালিতে কবির রসের কার্বার সবই বিশ্বনাথের সঙ্গে অপরোক্ষভাবে; বিশ্বপ্রকৃতির সঞ্চিত সম্বন্ধ এখন গৌণ। বিশ্বপ্রকৃতি কথনো ভক্ত ও ভগবানের মধ্যে দেরাসিমী, কথনো দরিতের সহিত মিলনের দৃতী, কথনো অন্তঃপুর-পথ-পরিচারিকা প্রতিহারিশী, কথনো 'কাব্যের উপেক্ষিতা'র মতো বিশ্বনাথের সহচরী বিশ্বপ্রকৃতি কবিব চক্ষে উপেক্ষিতা। প্রকৃতি কথনো ইঙ্গিতে লীলাময়কে দেখিয়াছে, কথনো সে কবিকে আঘাত করিয়া প্রবৃদ্ধ করিয়াছে, কথনো কবির পূজার অ্যাসন্থার জোগাইয়াছে, পূজার ভালি ভরিয়া দিয়াছে, মালা গাথিয়া দিয়াছে, বিশ্বনাথকে বহন করিয়া কথনো বা কবির তয়ারে আনিয়া হাজির করিয়াছে, কথনো বা গোপন করিয়া রাখিয়া কবির সহিত পুকাচুরি খেলিয়াছে, কথনো ভগবানকে ববন করিয়া কবি মনোমন্দিরে তুলিয়াছে।

নেবেন্তের করে কবি গেমন বিশ্বনাথকে প্রকৃতির অতীত মহারত পণ্ বলিয়া করনা করিয়াছিলেন, প্রবতী স্তবে বিশ্বনাথকে তেমন বিশ্বাতীত দাপে দেখেন নাম কবি বিশ্বপক্ষতির স্থিত বিশ্বনাথকে অভিন্নাত্মক রূপে দেখিল। ছিন, এখন লীলাম্যা প্রকৃতির গজে শাসে বিরাজ্মান লীলাম্যের মহারাজ্য ব প্রভুত্ব লোপ পাইয়াছে।

আবাব কবির নিজেব সঙ্গেও প্রকৃতিব অভেদা একতা করনা করাও তাহার প্রান্তির সংস্কৃত প্রকৃতির সংস্কৃত নিজেবর মর্ব নাব উপলব্ধি করেন নার্চ, কবি বিশ্বপক্ষতির সংস্কৃত নিলাময়েব সেই প্রকার সভাক হলয়ক্ষম করিতে পার্নিয়াছেন। আরও উচ্চ স্তরে কাব কেবল নিজেব সংস্কৃত ভগবানের বিস্পাক্তিব কথা নয়, মহামানবেব সহিত্ত ভগবানের ঐ সভ্পর্ক গে সহজ্ব ও চিবস্থন তাহাও উপলব্ধি কবিয়াছেন এইথানেত তাহাব বসবোধের চরম সাথকতা এই বিশ্ববোধে কবি মহামানবেব সহিত নিজেরও অভিনাত্তকতা জনয়ক্ষম করিতেছেন।

কবিব ব্যক্তিত কমে আয়ত ২হতে আয়ততব হইয়া বিশ্বপ্রকৃতির ও বিশ্বমানবের সহিত অভিন্নতা লাভ করিখাছে। গ্রাই কবি প্রত্যাশা করেন— ইাহাব প্রথম্বনি প্রত্যেক মানবেরত শোলা সম্ভব, তাই কবি ভাবেন ইাহার মনে বিনি বিরাজ করেন 'যে চিল মোব মনে মনে, সেই তিনিই 'শ্রাবণ খন-গৃহন-মোহে স্বার দিঠি' এড়াইয়া অভিসারে জান্দেন

বলাকার এই বিশ্ববোধের চরম উৎকর্ম দেখা যায়। বিশ্বপ্রকৃতির সহিত বিশ্বমানবের সংযোগে বিশ্ব-সংস্থিতির অন্তরে এক প্রবল গতিব যোগ হইয়ছে —কবি শেষিতেছেন এক বিরাট্ শোভাষাত্রা অনস্তকাল চলিয়ছে, তাছার বিরাম নাই, বিশ্রাম নাই—ভগবানের মন্দিরের দিকে নয়, ভগবানকে সঙ্গে সঙ্গে সংক্ষ

কবি মনোলোকে বিশ্বপ্রকৃতিকে এইভাবে মানব-মনের মাধুরী মিশাইয়া নুতন করিয়া গডিয়াছেন।—এইটিই কবির সর্বপ্রেষ্ঠ স্থাষ্টি।

বনবাণীতে কবির সহিত বিশ্বপ্রকৃতির—উদ্ভিদ্ ও প্রাণি-জগতের—আত্মীয় । আবো বিশেষ ঘনিষ্ঠ হুইরা উঠিয়াছে। অন্ত কাব্যে প্রকৃতিব প্রতি কবির দরদ বিক্ষিপ্ত হুইয়া ছড়াইয়া আছে। কিন্তু বনবাণীতে সেই দরদ ও পীনি একটি স্পষ্ট রূপ ধারণ করিয়া আমাদের সন্মুখে উপস্থিত হুইয়াছে।

এই বইখানি লেখা-সম্বন্ধে কবি কাব্যেব ভূমিকায় লিখিয়াছেন—

"আমার ঘরের আন্পোশে যে-সক আমার বোবা বন্ধু আলোর প্রেম মন্ত হ'য়ে আকালের ছিকে হাত বাভিরে আছে, তাদের ভাক আমার মনের মধ্যে পেঁছলো। তাদের ভালা হাড জীব জনতের আদি ভাষা, তার ইসারা গিয়ে পেঁছর প্রাণের প্রথমতম ছরে; হাজাব হাড ব্বমারের ভূলে,যাওরা ইতিহাসকে নাড়া দের, মনের মধ্যে যে সাড়া ওঠে সেও এ গাছের ফায়ে —তার কোনো শান্ত মানে নেই, অধাচ তার মধ্যে বহ বৃগ-বৃগাপ্তর ভানতনিবে ওঠে।

"এ গাছগুলো বিশ্ববাইলের একতাবা, ওপের মজার মজার সর্কার স্থাবের কাঁপন, শে ভালে ভালে পাতার পাতার একতাপা ছন্দের নাচন। বন্ধি নিপ্তর ১'বে প্রাণ বিবে গুনি হ'লে অবরের মধ্যে মুক্তির বান্ধী এনে লগেয়। মুক্তি সেই বিরাট্ প্রাণ সমুজের কুলে, যে সমুদ্রে উপরের তুলার স্থান্ধর নালা রঙে রঙে তরঙ্গিত, আর গশীরতলে শান্তন শিবন অবৈত্যা। ২০ স্থানের নীলার লাজসা নেই, তাবেশ নেই, কন্তন্তা নেই, কন্ত প্রমাশক্তির নিংশের আনহানে বান্ধিনালন । 'একক্তিরানন্দক্ত মানানি' দেখি সুন্দে হলে প্রানে; তাতেই মুক্তির স্বাদ বাং বিশ্ববাদী প্রাণের সঙ্গে প্রাণের নির্মাণ করাধ মিলনের বান্ধি হনি।

"বৈষ্টিমী একছিল জিঞ্জালা করেছিল, 'কবে গামাদেন মিলন হবে গাছ ভলাৰ গ' গার মান গাছের মধ্যে পালের বিশুল্ধ হর ; সেই হবটি যদি পোল পাণ গ'নতে পারি চা হ'লে নামাদেন মিলন সঙ্গীতে বদ-হর লাগে না। বৃদ্ধদেন যে বোধিদ্ধদেন উলাল মৃত্যি তর প্রেছিলেন ইন বালীর সঙ্গে সেই বোধিদ্ধদেনর বালীন হান নিন্দ্র নামাদেন আন্তাহ প্রেছিলেন গাছের বালী,—সুক্ষ ইব স্থান্ধা দিনি ভিউভোকঃ। স্থানছিলেন 'যদিদ কর্ম মর্বাধ একতি নিংস্তম্'। তারা গাছে গাছে চির বাগব এই প্রছটি পেরেছিলেন, কন আগে প্রকাশ একতি বৃক্তঃ'—প্রথম-প্রাণ তার বেপ নিয়ে কোখা থেকে এসেছে এই বিধে সেই প্রৈছি, সেই বেগ ধান্তে চায় না, মধ্যের কর্মা অহরত করেতে লাগ্ল, তার কন্ত রেখা, কম্প্রতা, কত ব্যানা, কত ব্যানা। সেই প্রথম প্রাণ-স্থান্তির নম্বন্ধালিনী স্থাইব চির প্রমাহকে নিম্মের মধ্যে গাতীর ভাবে বিশ্বম্ব ভাবে অস্কৃত্ব করার মহামৃত্যি আরু সোধার স্বাচে।

"এথানে—তিবেনা নগরে—তোরে উঠে হোটেলের জানালার কাছে বনে কতদিন মনে করেছি শান্তিনিকেতনের প্রান্তরে আমার সেই যরের বারে প্রাণের আনন্দ-রূপ আমি দেও্ব আমার সেই লতার শাবায় শাবায় গাবায় গাবায় হাবার প্রতির বছ-বিহীন প্রকাশ-রূপ দেও্ব সেই নাগ-কেশরের ফুলে ফুলে। মুক্তির জড়ে প্রতিদিন বর্ধন প্রাণ বাবিত ব্যাকুল হ'রে ওঠে, তথন সকলের চেরে মনে পড়ে আমার দরলার কাছের সেই গাছগুলিকে। তারা ধরণীর ধানমন্তের ধরি। প্রতিদিন অঙ্গণোধনে প্রতি নিন্তর হাত্রে তারার আলোয় তাদের ওবারের মঙ্গে আমার বাবের ফ্রে মেলাতে চাই। এখানে আমি রাত্রি প্রায় তিন্টার সময়—তথন একে রাত্তর অঞ্চার, তাতে মেথের আবহন—অন্তরে অন্তরে একটা অন্ত্র চঞ্চলতা অনুভব করি নিজের কাছে থেকেই উদ্ধাম বেগে পালিয়ে ধাবার জল্পে। পালাব কোথার! কোলাহল থেকে সঙ্গীতে। এই আমার অন্তর্গৃত বেদনার দিনে শান্তিনিকেতনের চিঠি যবন পেলুম, তথন মনে প'ড়ে গোল সেই সঙ্গীত তার সরল বিভদ্ধ হবে বাজ্ছে আমার উত্তরায়ণের গাছগুলির মধ্যে,—তাদের কাছে চুপ ক'রে বস্তে পারলেই সেই হ্রের নির্মল ঝরণা আমার অন্তরায়াকে প্রতিদিন সান করিয়ে দিতে পারবে। এই স্নানের দারা ধেতি হ'য়ে বিশ্ব হ'য়ে বিশ্ব হ'য়ে বিশ্ব বিত্তাণ, জনন্দমন্ত প্রবেশর অধিকার রাম্বারা পাই। পরম ফ্রেরের মুক্তরূপ প্রকাশের মধ্যেই পরিত্রাণ, জনন্দমন্ত হ্বাতার বিহাগ্যই হচ্ছে সেই ফ্রেরের চরন দান।"

বিশ্বপ্রকৃতির প্রতি এবং উদ্ভিদ্ ও প্রাণীর প্রতি কবির প্রীতি এই বনবাণীকাব্যে নানা ভাবে প্রকাশিত হইয়াছে—এই বিশ্ববোধ ও বিশ্বমৈত্রী ও করণা
ইহার মধ্যে চারিটি বিভাগে বিশুন্ত হইয়াছে—)। বন-বাণী, ইহাতে আরণ্যক
ত্রুলপালা—যিনি বিশ্বেশ্বর তিনি নাটের গুরু, তিনি নটরাজ্ঞ, ঋতুতে
ঋতৃতে তাহার বিবিধ নৃত্যাণীলা জগতে প্রদর্শিত হয়, ঋতুগুলিই যেন তাঁহার
বঙ্গণীঠ। "নটরাজের তাগুবে তাঁর এক পদকেপের আঘাতে বহিরাকাশে
রপ্রাকাশের রসলোক উন্থিত হ'তে থাকে। অন্তরে বাহিরে মহাকাশের
এই বিরাট নৃত্যাজ্ঞেদে যোগ দিতে পার্লে জগতে ও জীবনে অথও লীলারম
উপলব্ধির আনন্দে মন বন্ধনমৃত্য হয়। 'নটরাজ' পালা গানের এই মর্ম।"
৩। বর্ষামঙ্গল ও বৃক্ষরোপণ উৎসব। ৪। নবীন—বসন্তের চিরনবীনতার
আবির্ভাবে কবি-মনের আনন্দোৎসব। শান্তিনিকেতনে ঋতৃতে ঋতৃতে বিশ্বপ্রক্তির সহিত ছাত্রদের মনের সংযোগ-সাধনের উদ্দেশ্যে এগুলি কেথা
হইরাছিল। নবীন হইতেছে বসন্ত ঋতুকে আবাহন।

এই সকল বিভাগেই কবি তাঁহার অনস্তকে ও অসীমকে উপলব্ধি এবং

বিশ্বসৌন্দর্যে নিমজ্জন-জ্বনিত আনন্দ প্রকাশ করিরাছেন--- সঙ্গে করুণা ও বিশ্বসৈত্তীও প্রকাশ পাইরাছে।

বনবাণীর সকল কবিতারই রচনার উপলক্ষ-সম্বন্ধে একটু করিয়া পরিচয় নিজেই দিয়া রাখিয়াছেন।

পরিশেষ

১৩০৯ সালের ভান্ত মাদে প্রকাশিত। কবি অনেক দিন হইতে কেবলই মনে করিয়া আসিতেছেন যে, তাঁহার যাহা দিবার তাহা ফুরাইয়া আসিরাছে; যে কাব্য তিনি দিতেছেন তাহা তাঁহার শেব দান, তাঁহার পরমায়্ অবসানের শেষ প্রাস্তে আসিয়া ঠেকিয়াছে। তাই কবি 'থেয়া' নাম দিলেন তাঁহার অনেক দিন আগের এক কাব্যের, পরে আর এক কাব্যের নাম দিলেন প্রবী, এবং তাহারও পরে যথন তাঁহাকে দিয়া তাঁহার 'বিচিত্রা' বাণীবন্দনার আরোজন করাইয়া ছাড়িলেন, তথন কবি সেই বিচিত্রাকে জ্লিজ্ঞাসা করিতেছেন—

ভবুও কোন এনেছ ডালি দিনের অবসানে ; নিঃশেষিয়া নিবে কি ভরি' নিংখ-করা দানে ? —বিচিতা।

এবং দিনের অবসানে সক্ষিত এই ডালির নাম কবি রাধিয়াছেন 'পরিশেষ'।

বিচিত্রা তাঁহাকে নান্য বৈচিত্রোর ভিতর দিয়া—স্থা-ছাথের ভিতর দিয়া এখনও **'পুজার অর্থ্য বিরচন' ক**রাইয়া ছাড়িয়াছেন।

তিনি বারংবার মনে করিতেছেন—

রবি-প্রস্থাব্দিণ-পদে জনাধিবদের আবর্ত্তন
হরে আদে সমাপন : --জনাধিন

যাত্রা হ'য়ে আদে সারা, - আসূর পশ্চিম-পথশেষে

কনায় মৃত্যু হ'যে। এদে। ---বর্ণ-শেষ ।

কিন্তু কবি তো মৃত্যুঞ্জয়—ভাঁচার তো কোথাও সমাধি নাই, তিনি যে মহাপথিক—তাই কবি নিজেকে সংখাধন করিয়া বলিতেছেন—

্ন মধ্পপিক,
ভাষারিত তব দশদিক।
ভাষার মন্দির নাই, নাই স্বর্গধান,
নাইকো চরম পরিণান।
ভীর্ত তব পদে পদে;
চলিয়া ডোমার সাথে মৃত্তি পাই চলার সম্পদে

চক্ষনের নৃত্যে আর চক্ষনের দাবে, চক্ষনের সর্বডোলা দাবে, আঁধার আলোকে।

কবি মৃত্যুঞ্জর। ক্লডের প্রবলতম আঘাত যে মৃত্যু তাহারও সম্মুধে দাঁড়াইর। কবি সেই হর্জর নির্দয়কে বলিতেছেন—

> এই যাত্র ? আর কিছু নর ? ভেঙে গেল ভর । বধন উম্ভত ছিল তোমার অশনি ভোমারে আমার চেরে বড় ব'লে নিরেছিন্থ গণি'।

যথন ক্রন্তের চরমতম আঘাত বক্ষে আসিরা বাজে, তথনও মানুষ তাহা দল্ল করিয়া দাঁড়াইয়া থাকিতে পারে, মানুষের দল্পক্তি অসীম। অতএব দেই সামাল মানব ভগবানের অপেক্ষাও এক হিসাবে বড়, ভগবানের দেব দণ্ড মৃত্যুর অপেক্ষা তো নিশ্চয়ই বড়। তাই কবি সাহস করিয়া বলিতেছেন—

> যত বড় হও ভূমি তে। মৃত্যুর চেয়ে বড় নও। আমি মৃত্যু চেয়ে বড়—এই শেষ কথা ব'লে ধাব আমি চ'লে —সভূঞ্জিয়।

আবার কবি তো প্রাণমন্ধ, ভিনি প্রাণমন্ত্রের সাধক। যেখানে ননীনতা বেধানে দৌন্দর্যা প্রাচূর্য আনন্দ দেখানে তে। কবির আসন পাতা থাকে। সেই চিরস্কর কবির চিরসাথী। উভয়ের চলার একই ছন্দ, উভয়ের চলা একই সঙ্গে।

চিনি নাছি চিনি চির-সঞ্জিনী চলিলে আমার সঙ্গে :

এবং কবি সেই চির সঙ্গিনীকে বলিতেছেন—

আমার নরনে তব অপ্তনে স্টেছে বিশ্বচিত্র, ভোমার মত্রে এ বীণা চত্রে উদ্যাধা স্থাবিত্রে। কিন্তু সেই

চেনা মুখধানি আর নাহি জানি, আঁখারে হতেছে গুপ্ত।

কিন্ত কবির সহিত তাহার চির সঙ্গিনীর তো বিচ্ছেদ ঘটতে পারে না, তাহা হইতে তিনি চির সঙ্গিনী হইবেন কেমন করিয়া। তাই ভরসা লইয়া কবি বলিতেছেন—

> মরণ-দন্তার ভোমার আমার শাব আলোকের জর। --- ভূমি !

এই পরিপূর্ণ নির্ভরতা ও আশা-আখাদের দহিত কবি বলিয়াছেন—

এই গীতি-পথপ্রাস্তে, হে মানব, তোমার মলিবে ছিলান্তে এসেছি আমি নিশাণের নেশন্দের তীরে আরতির সাক্ষ্যক্ষণে; একের চরণে রাখিলাম বিচিত্রের নর্মবীশি,—এই মোর রহিল প্রণাম

ইংাই হইল পরিশেষ কাব্যের অন্তরের কথা। ইংা ব্যতীত নানা উপলক্ষো লেখা—বিবাহ, নামকরণ, বক্ষাতরে বন্দীদের সম্বোধন, ইত্যাদি— কতকগুলি কবিতা আছে। কতকগুলি কথিকা জাতীয় কবিতা ও গাথা-জাতীয় কবিতা আছে। তাহার কয়েকটি ছলোবদ্ধ গয়ে লেখা। পরিশেষের পরিশিষ্টে শ্রীবিজ্ঞা, সিয়ান, বোরোবৃত্র প্রভৃতি দেশ-ভুমণ-উপলক্ষে লেখা কবিতা আছে। ইহার গই-তিন্ট কবির খারী' নামক পুস্তকেও আছে।

পুনশ্চ

১৩০৯ সালের আখিন মাসে প্রকাশিত। ছন্দোবদ্ধ গল্পে শেখা কাব্য। গল্পে শেখা ইইলেও ইহার রচনার মধ্যে একটি ছন্দ আছে, তাল আছে, এবং কবিতার রস আছে। নিপিকার রচনার সহিত ইহাদের অনেক সাদৃশ্য আছে, পার্থক্য এই যে নিপিকার সমস্ত কথাটি গল্পেব আকারে ছাপা হইরাছিল, আর ইহাতে ভাবাস্থারী নাইনগুনিতে ভাভিরা সাম্বাইরা কবিতাব আকাব দেওয়া হইরাছে। এই বচনা-পদ্ধতিও কবির এক নব সৃষ্টি।

কবির জীবনদেবতা কবিকে দিয়া এক এক সমরে এক এক নতন সৃষ্টি কবিইয়া লইয়াছেন। কবি যতবাবই বলিতে চাহিয়াছেন ধে, এই সমানব এব সৃষ্টি, ততবারই তাঁহার জীবনদেবতা তাঁহাকে দিয়া নৃতন সৃষ্টি ববাহয়। ছাডিয়াছেন। কবি যেবাবে পবিশেষ বলিয়া একেবাবে কাজে ইপ্সাস 'ন্য থতম কবিয়া বসিতে চাহিলেন, সেবাবেও তাঁহার আবেদন না-মান্তব হুইছে গোল—কবিকে কাঁচিয়া গণ্ডৰ করিতে হুইল—পুনশ্চ তাঁহাকে নবসৃষ্টিতে নসক্ষে হুইতে হুইল।

অপূর্ব যথন চাহে ছে পূর্ণের দিকে
তার বিচ্ছেদের যাত্রাপথে
আনন্দের নব নব পর্বায়।
পরিপূর্ণ অপেক্ষা কবছে স্থির হ'বে,
নিত্য পুন্প, নিত্য চল্রালোক,
নিতাই সে একা, সেই তো একান্ধ বিরহী।
য অভিসারিকা তারই ক্সর,
আনন্দে সে চলেজে বাঁটা মাড়িযে।

इन बना श'रना वृद्धि।

দেও তো নেই দ্বির হ'রে, বে পরিপূর্ণ, সে বে নাজার বাঁশি, প্রতীকার বাঁশি,— স্বর তার এবিংর চলে অস্কভার পথে। বাছিতের আহ্বান আর অভিসারিকার চলা পদে পদে মিল্ছে একই তালে। তাই নদী চলেছে যাত্রার ছন্দে, সমুত্র গুলুছে আহ্বানের হরে। —বিচ্ছেদ

এই তো কবি রবীজ্ঞনাথের নিজের জীবনের কথা ও তাঁহার কাব্যে অস্তরের বার্ডা।

দ্রষ্টব্য-প্রাচীন সাহিতা ও লিপিকা পুস্তকে, মেঘদূত প্রবন্ধ, জীবনস্থতি, যাত্রী প্রস্তৃতি পুস্তকে এই পূর্ণ-অপূর্ণের মিল-সাধনার কথা।

কালের যাত্রা

ইহা নাটকা। ১৩৩৯ সালের ভাদ্র মাসে প্রকাশিত। ইহার মধ্যে ছুইটি নাটকা আছে—১। রখের রশি, ২। কবির দীকা।

১৩৩০ সালের অগ্রহারণ মাদের "প্রবাদী"তে কবির একটি নাটক বাহির হইরাছিল—রথবাত্রা। ভাহাকেই একটু বদল করিয়া ও বর্ষিত করিরা লিখিত হইরাছে রথের রশি।

মহাকালের রথ অচল হইয়া সিয়াছে। প্রাহ্মণ-পুরোহিতের মন্ত্রপাঠ, ক্ষণির রাজা সেনাপতি ও সৈভসামস্তদিগের বীর্ত্তের আফালন, শ্রেষ্টা ধনপতির ধনবল কিছুতেই সেই রথকে চালাইতে পারিল না। মেয়েরা কত মানত করিল, কত তুক্তাক করিল, কত পূজা দিল, কত লোকে কত টানাটানি করিল, কিয় রথের চাকা বিস্থা যায় ছাড়া আব চলে না; রথের বিশি কেই চালাইডেই পারে না। এতদিন এই বথ প্রাহ্মণেরাই চালাইয়া আসিয়াছেন, "তথন যে এরা স্থাধীন সাধনার জ্যোরে নিজে চল্তেন, চালাতেও পারতেন। এখন এর ধনপতির বারে অচল হ'য়ে বাধা, এখন এঁদের হাতে কিছুই চল্বে না।"—রথমাত্রা। তাই মন্ত্রী কোনো উপায় না দেখিয়া বসিতেছেন—"দেখ শেরডেই, রথমাত্রাটা আমাদের একটা পরীক্ষা। কাদের শক্তিতে সংসারটা সাত্যাহ চল্ছে মহাকালের রথচক বোরার স্থারা সেইটেবই প্রমাণ হ'য়ে থাকে হখন পুরোহিত ছিলেন নেতা, তথন ঠাবা রশি ধরতে-না-ধর্তে রথটা ঘুম-ভাশে সিংহের মতো ধড্ কড় ক'বে ন'ড়ে উঠ্ত। এবারে সে কিছুতেই সাড়া দিল না। তার থেকে প্রমাণ হক্তে শাম্বই বলো শক্তই বলো সমন্ত অর্থহীন হ'য়ে পডেছেন।"

তথন শৃদ্রের দল হৈ হৈ করিতে করিতে আদিয়া পড়িল—তাহার। রথেব রশি টানিয়া মহাকালের রথ চালাইবে। এতদিন তাহারা মহাকালনাথের রথের চাকার তলায় পিষিয়া মরিয়া আদিয়াছে, কিন্তু এবার তাহারা আদিয়াছে মরিতে নম্ন—মরীয়া হইয়া রথ চালাইতে—তাই তাহাদের দলপতি বলিতেভেন—

এবারে রখের তলাটাতে পড়্বার শ্বন্তে মহাকাল আমাদের ^{ডাক} দেননি—তিনি ডেকেছেন তাঁর রখের রশিটাকে টান দিতে।"—রখধাতা। "আমরাই তো ভোগাচিছ অন্ন, তাই থেরে তোমরা বেঁচে আছ; আমরাই বৃন্ছি বন্ত্র, তাতেই তোমাদের লজ্জা রক্ষা!"—রথযাত্রা।

দলপতি তাহার শূদ্র সহচরদের ডাক দিয়া শশ্লিল—"আর রে ভাই, লাগাই টান, মরি আর বাঁচি।"

মন্ত্রী ভাড়াভাড়ি বলিল— কিন্তু বাবা, সাবধানে রাস্তা বাঁচিয়ে চোলো। বরাবর যে রাস্তায় রথ চলেছে, যেয়ো সেই রাস্তা ধ'রে। পোড়ো না ধেন একেবারে আমাদের ঘাড়ের উপর।"—রথের রশি।

মন্ত্রীর বড় ভর, পাছে রথ বাঁধা পথ ছাড়িয়া কোনো নৃতন পথে চলে এবং অবশেষে তাঁহারই মতন অভিজাত ধনীসম্প্রদায়ের কোনো বিপদ ঘটায়, গাহারা এতদিন শূদ্রদের দমাইয়া নীচে রাখিয়া মহাকালের প্রদাদ ভোগ করিয়া আদিতেছেন।

শূলদের টানে রথ চলিল, মহাকালের জাত গেল ও তাঁহার গতি হইল, তাঁহার রথ "মান্ছে না আমাদের বাপ-দাদার পথ!"

এমন সময়ে কৰি আসিয়া উপস্থিত। সকলে কবির কাছে এই আন্ধব বাপোরের কারণ জিজ্ঞাসা করিতে লাগিল—"এ কী উল্টোপাটো ব্যাপার, কবি ? পুরুতের হাতে চল্ল না রথ, রাজার হাতে না, মানে বৃষ্লে কিছু!"

কবি।—ওদের মাথা ছিল অত্যন্ত উচু, মহাকালের রথের চূড়ার দিকেই ছিল ওদের দৃষ্টি—নীচের দিকে নাম্ল না চোথ, রথের দড়িটাকেই কর্জে ভুচ্ছ। মাসুষের সঙ্গে মাসুষকে বাঁধে লে বাঁধন, ভারে ওরা মানে নি।
প্রেলা পড়েছে ধুলোর, ভক্তি করেছে মাটি। রথের দড়ি কি প'ছে থাকে বাইরে? সে থাকে মাসুযে মানুষে বাঁধা—দেহে দেহে প্রাণে প্রাণে।
সেইথানে স্থামেছে অপরাধ, বাঁধন হয়েছে তুর্বল।
ভাতে দাও মন—রথের দড়িটাকে নাও বৃকে ভুলে, ধ্লোয় ফেলো না;
আলকের মতো বলো সবাই মিলে, যারা এতদিন ম'রে ছিল, তারা উঠুক বেঁচে, যারা যুগে যুগে ছিল থাটো হ'য়ে, তারা দাড়াক এবার মাথা ভুলে।

এই শ্রেণীর কবিরাই কালে কালে গোকেদের মহাকালের রথ চালাইবার উপায় নির্দেশ করিয়া দেন—তাঁহারা বলেন তাল রক্ষা করিয়া ছন্দ বাঁচাইরা চলো, তাহা হইলেই মহাকালের রথ চলার কোনো বিদ্ন হইবে না। সমাজ-ব্যবস্থায় একপেশে ঝোঁক হইলেই রথের চাকা মাটিতে বসিয়া যার। ইহাই হইতেছে কবির শিক্ষা। সেই শিক্ষা গ্রহণ করিলেই—জন্ম মহাকাল-নাথের জন্ম।

करित मौका नामक जाएन कुट जानत कथा जाएक-उथानि उठात ठिक नाष्ट्रक दना यात्र मा. जेबात मध्य त्कारमा घटेना नाहे, त्कारमा शिक नाहे. আছে কেবল একট় তথা। কবি শিব-মন্ত্ৰের উপাদক, তিনি লোককে শিব-মলে দীক্ষা দিয়া থাকেন। এই শিব-মন্ত্র হইতেছে ত্যাগের মন্ত্র-কারণ মহাদেব ভিকৃষ। এই যে ত্যাগ তাহা শৃগু ঘড়াটাকে উপুড় করা নর, "জ্যাগের রূপ দেখ ঐ ঝর্ণায়, নিয়ত গ্রহণ করে, তাই নিয়তই করে দান ৮০০০০ माजित्या छातरे मरुव, मरु९ विनि क्षेत्रार्था। महारमव क्षित्रा तन भारतन व'ल নর, আমাদের দানকে কর্তে চান সার্থক। কিছু তিনি চান্নি কুকুর-বেরালের কাছে। অর চাই ব'লে ডাক দিলেন মাহুবের দ্বারে। বেরোলো মাত্রৰ লাঙল কাঁধে। যে-মাটি ফাঁকা ছিল, প্রকাশ পেল তাতে অর। वन्ति । विद्यारमा कार्य वार्ष कार्य विद्यारमा कार्य वार्ष कार्य । ভূলোর থেকে হতে।, হতোর থেকে কাণড়। ভাগ্যে তাঁর ভিক্ষার ঝু^{ৰু} অসীম তাই মাহুষ সন্ধান পার অসীম সম্পদের। নইলে দিন কাট্ত কুকুব-বেৰালের মডো ' তোমরা কি বলো সব চেন্নে সন্ন্যাসী ঐ কুকুর-বেরাল ... মামুষকে যদি দেউলে করেন তিনি, তবে ভিক্ন দেবভার ভিক্ষা হবে যে অচল ত্র্বৈ ভিক্ষার ঝুলির টানে মাত্রুষ হয় ধনী, যদি দান করতেন ঘটত সর্বনাল।

"তবে কি মুরোপখণ্ডকে বল্বে শিবের চেলা ?"

বিলতে হয় বৈ কি। নইলে এত উন্নতি কেন ? মেনেছে ওরা মঠা ভিক্ষর দাবী। তাই বের ক'রে আনছে নব নব সম্পদ্, ধনে প্রাণে, জ্ঞানে মানে।

কবি এই দীকা আমাদের দিতেছেন যে আমাদিগকে অর্জন কবিতে ইইবে ত্যাগ করিবার জন্ত, ত্যাগ করিতে ইইবে কল্যাণের জন্ত সাবিক ভাবে সচেতন ভাবে, তমোভাবে ভ্লিয়া গাঁজার দম লাগাইরা যে সর্যাস সে স্র্যাস নর, মৃত্যু। "প্রাণের ধনই হলো আনন্দ, যাকে বলি রস। যেখানে বসের দৈন্ত, ভরে না সেখানে প্রাণের কমণ্ডলু।" "মান্তবের বিনি শিব তিনি বিষ পান করেন বিবকে কাটাবেন ব'লে। ভিক্ষা দাও ভিক্ষা দাও দ্বারে ভাবে ব্যারে বিক্রিয়ার ত্রাত বর্ধন হয় অলস তথন তার দানে পদ্ধ হয় প্রধান। তর্ধল আত্মার ভাষসিক দানে দেবতার ভৃতীয় নেত্রে আগ্রন ওঠে জলে।

বিচিত্রিতা

১৩৪০ সালে প্রাবণ মাদে প্রকাশিত বলিয়া যদিও বইয়ে ছাপা হইয়াছে, কিন্ধ বাজারে বাহির ইইয়াছে ভাদ্র মাদে।

স্বয়ং কবির এবং অপর নানা চিত্রকারের নানা বিষয়ের ও নানা স্টাইলের ছবি লইরা ছবির একটি এল্বামের মতন করা হইয়াছে, এবং প্রত্যেক ছবিকে কবি এক-একটি কবিতা শিধিয়া ব্যাখ্যা করিয়াছেন: ছবির নামও বোধ হর কবি দিয়াছেন, এবং ওাঁছার ব্যাখ্যা যে ছবিকে ছাপাইয়া কবিষে বৈজ্ঞানিক তবে সামাজিক তবে মিশিয়া রসালো ও অপূর্ব স্কুলর হইয়া উঠিয়াছে তাহা বলাই বাছল্য।

ছবিগুলি বিভিন্ন লোকের অন্ধিত এবং তাহাদের বিষয়ও বিভিন্ন বিসর।
কবিতাগুলিতেও বিভিন্ন রসের সমারেয় হইয়াছে। এই জন্ত এই পুস্তকের
নাম 'বিচিঞ্জিতা' স্কুদক্ষত হইয়াছে।

চণ্ডালিকা

ইহা নাটকা। ১৩৪০ সালের ভাদ্র মাসে প্রকাশিত। গল্পে ও গানে লেখা। এই নাটকার বিষয়-সম্বন্ধে কবি ভূমিকায় পরিচয় দিয়াছেন—

রাজেজ্ঞলাল মিত্র কর্তৃক সম্পাদিত নেপালী বৌদ্ধ নাহিত্যে শাঙ্গুল-কর্ণবিদানের যে সংক্ষিপ্ত বিবরণ দেওয়া হয়েছে, তাই থেকে এই নাটিকার গল্পটি গৃহীত।

গল্পের ঘটনাস্থল প্রাবস্তী। প্রভূব্দ্ধ তথন অনাথপিওদের উন্তানে প্রবাস যাপন কর্ছেন। তাঁর প্রিয় শিশ্য আনন্দ এক গিন্ত বাড়ীতে আহার শেষ ক'রে বিহারে কের্বার সময় ভৃষ্ণা বােধ কর্লেন। দেখ্তে পেলেন এক চণ্ডালের কন্তা, নাম প্রকৃতি, ক্ষো থেকে জল ভুল্ছে। তার কাছ থেকে জল চাইলেন, সে দিল। তাঁর রূপ দেখে মেয়েটি মৃদ্ধ হলো। তাঁকে পাবার অন্ত কোনো উপার না দেখে মায়ের কাছে সাহায্য চাইলে মা তার বাছবিল্লা জান্ত। মা আভিনায় গোবর লেপে একটি বেদী প্রস্তুত ক'রে সেথানে আগুন আল্ল এবং মন্ত্রোজারণ কর্তে কর্তে একে একে ১০৮টি অন্ত ফ্ল সেই-আগুনে ফেল্লে। আনন্দ এই যাহর শক্তি রাোধ কর্তে পার্লেন না। রাজে তার বাড়ীতে এসে উপস্থিত। তিনি বেদীর উপর আসন গ্রহণ কর্লে প্রকৃতি তাঁর জন্ম বিছানা পাত্তে লাগ্ল। আনন্দের মনে তথন পরিতাপ উপস্থিত হলো। পরিত্রাণের জন্ম ভগবানের কাছে প্রার্থনা জানিয়ে কাদ্তে লাগ্লেন। ভগবান্ বৃদ্ধ তাঁর অলৌকিক শক্তিতে শিশ্যের অবঞ্চ কেনে একটি বৌদ্ধমন্ত আর্ভি কর্লেন। সেই মন্ত্রের জ্বোরে চণ্ডালীর ক্লিকরপবিল্লা ছর্বল হ'রে গেল এবং আনন্দ মঠে ক্রিরে এলেন।"

কবির লেখনীর যাগতে এই আখ্যারিকা তাঁহার নাটকে কিছু বদ্লাইরা
সিরাছে। এখানে অলোকিকতা বিশেষ কিছু রাখা হয় নাই, যাহা আছে
তাহা রূপক বা symbol। চগুলী প্রকৃতি আনন্দকে দেখিরা মুগ্ধ হইয়াছে।
সে তাহার মার্কে বলিল—"আমি চাই তাঁকে। তিনি আচম্কা এসে আমাকে
লানিয়ে গেলেন, আমার দেবাও চল্বে বিধাতার সংগারে, এত বড় আশ্রে
কথা।" সে তাহার মাকে অধ্রোধ করিল মন্ত্র পড়িয়া সে টানিয়া আমুক

আনন্দকে তাহাদের বাজীর ঘারে। প্রকৃতির মা মন্ত্র পড়িয়া তুকতাক কবিতে লাগিল। কিন্তু প্রকৃতি করনায় দেখিতে লাগিল যিনি গুন্ধচরিত্র অপাপবিদ্ধ সাধু সন্মানী তিনি সেই মন্ত্রের মোহে কামার্ত হইরা চপ্তালের ঘারে অভিসারে আসিতেছেন; তাঁহার চরিত্রের শুদ্রতা কলন্ধিত হইরা গিয়াছে, তাহার গতি হইরাছে কুন্তিত, পদক্ষেপ লজ্জিত, বক্ষে হয় ভয়, চক্ষে নৃভূক্ষা। যেমন কবিব 'উদ্ধার' নামক ছোট গল্লে গৌরী বাতায়ন হইতে গুক্লেবকে চোরের মত্রো প্রার্থীতটে শিশ্ববধ্ব কাছে অভিসারে আসিতে দেখিয়া বছ্রচকিত্রেব হার দৃষ্টি অবনত করিয়াছিল, এই চপ্তালকনা প্রকৃতিও তেমনি নিজের ধ্যাননেত্রে তাহার প্রিয়তমের পতনের ছবি দেখিয়া আর্ত্রনাদ করিয়া উঠিল—"ওবে ও রাক্ষুসী, কী কর্লি, কী কর্লি, তুই মর্লিনী কেন? কী দেখ্লাম। ওগো কোথায় সেই দীপ্ত উজ্জ্বন, সেই শুদ্র নির্মল, সেই প্রদাব ব্যালে। কী আন, কি কান্ত, আত্মপরাজ্বের কী প্রকাণ্ড বোঝা নিরে এলো আমাব হারে। মাথা হেঁট কবে এলো। যাক, যাক, এ-সব যাক— ওরে তুই চণ্ডালিনী না ভোস যদি, অপমান কবিসনে বীবের—ক্ষয় হোক ঠাব ভর্ব হোক।"

এমন সময়ে আনন্দ আসির সেইথানে উপ্তিত ২০১ বৃদ্ধনকনা পাঠ কবিতে লাগিলেন। প্রকৃতিব মা মবিয়া গোল--অগাৎ পর্কৃতিব মনেব সেই পাপ মারজ্য়ী মহাস্মানী বৃদ্ধনেবে প্রাপ্তাবে মবিয়া গোল-চণ্ডাবিশ্ও প্রাপ্তাভাবে পবিত্র হুইয়া গোল। জয় ২০ল পুর্ণোব, জয় ২০ল সংখ্যেব, জয় ১ইল কক্ষাব, জয় হুইল ক্ষমাব, জয় হুইল আচ্পাতিব ও স্মাবেধিব

এইবাপ একটি কহিনী অধনম্বন ক্ৰিয়া সভীশ্চল বাহ , ১১০ সাৰে ব ব্দদৰ্শনে "চগুলী" নামে একট দীৰ্ঘ কবিতা বিধিয়াছিলেন

তাদের দেশ

১৩৪০ সালের ভাজ মাসের শেষে প্রকাশিত নাটকা, রূপক। রবীন্দ্র-নাথের পুরাতন ছোট গল্পের মধ্যে একটি গল্প আছে, ভাহার নাম 'একটা আষাঢ়ে গল্প'। সেই গল্পটিকে অবলম্বন করিয়া এই নাটকাটি রচিত ছইয়াছে—পুরাতনের ইছা নৃতন রূপ, গানে কথার রসে তক্ষে একেবারে ভোল ফিরিয়া গিলাছে।

রাজপুত্র লক্ষীকে ছাড়িয়া অলক্ষীর আশ্রম গ্রহণ করিতে চাছেন, কারণ ভীক্ষ করেছে ঐ লক্ষী। সাহস আছে লক্ষীছাড়ার। যার বিপদ নেই, তার ভরসা নেই।" তিনি কৃল ছাড়িরা অকৃলে ভাসিতে চাহেন নবীনাব সন্ধানে, রূপকথার দেশের সন্ধানে। তিনি মারের কাছে বিদায় চাহিলেন। রাজমাতা বলিলেন—"আমি ভয় ক'রে অকল্যাণ করব না। ললাটে দেব খেতচন্দনের তিলক, খেত উফীযে পরাব খেতকরবীর শুচ্ছ।"

बास्त्रभूत्वत मन्नी श्रमा मनागरतत भूव । नवीनात वाणिका-यावाय जाशान्त्र তরী ভন্ন হইন, তাহারা শেষে উপনীত হইল এক দ্বীপে। দেটা তাদের দেশ। দেখানকার লোকেরা সব কাগজের, পেটেপিঠে চেপ্টা, ভাছাক टिका-टिका हात्न हत्न, मवह 'त्रिशादन निष्ठाम वीधा, छाहात्रा छेत्र वरम हत्न फिर्टेड अथा ७ म्ब्बर जरूमाद्य, (कर राम ना, रामा मिथान निष्य नह विनाहें। जाहारमञ्ज मरधा शममर्थामा धना-वैधा, मन शाक-वैधा, जाहाना हजूर्वर्ग বিভক্ত। কে যে কবে কেন ঐ রকম ব্যবস্থা করিয়া দিয়াছে তাহার কোনো নির্ণয় নাই, তথাপি দেই মার।তার আমলের নিয়মের ব্যতিক্রম করিতে কেছ সাহস করে না, বর্ণাশ্রম ধর্ণ সেথানে কারেমী। সমাজে কাছার কি মূল্য ও কোথায় কাহার পরে কাহার স্থান তাহা স্থির করা আছে, তাহার প্রতিবাদ করিতে কেই সাইস করে না, প্রতিবাদ বা বদদ যে করা যায় এমন कथां अक्ट आदि ना, मिथान मकलाबरे शास कांग्रेस कांग्रिस जाहारमब মূল্য নিধারণ করিরা রাখা হইরাছে—হরির চেমে ভিরি বড়, ভিরির চেমে চৌকা, এবং তাহার পরে পঞ্চা ছকা ফ্রমে দহলা পর্যস্ত, তাহার উপরে পোলাম, বিবি, সাহেব ; কিন্তু সকলের বড় হইল টেকা--ভাহার মাত্র একটি কোঁটা মূল্য হইলে কি হয়, তাহার পদমর্যাদা সকলের চেরে বেশি ইহা

সকলেই মানিয়া লইয়াছে, এমন কি নহলা দহলা পর্যন্ত এক দিনও আপত্তি উথাপন করে না যে, মাত্র একটি ফোটার জ্বোরে টেকা কেমন কবিয়া তাহাদের অতগুলি ফোটাকে পরাস্ত করিতেছে। কারণ, সেচা নিয়মেব দেশ। এই সেথানকার মাদ্ধাতার আদলের নিয়ম, বাপ-পিতামহ মানিয়া আদিয়াছে; কিন্তু কে যে সেই নিয়ম করিয়াছে, তাহা কেই নাই বা জানিল, এবং তাহাতে কোনো বিচার ও গ্রায়নক্ষতি নাই বা থাকিল। সেথানকার সকলেই সনাতনপন্থী। যাহাব হাতেব পাঁচ সেই তাহাদের ভাজিয়া যথারীতি বিতরণ করে; তাহাদের নিজ্ঞানে কোনো মতামত নাহ।

এই তাসের দেশে এমন গ্রহণ্ডন লোক আসিয়া উপস্থিত হইয়াছে, যাহাদের একজন রাজপুত্র ও একজন সদাগবের পুত্র—একজনেব দেশে দেশে দিগুবিজয় করিয়া বেডানো বৃদ্ধি, একজনেব বন্ধবে বন্ধবে অচেনা নবীনাকে সদ্ধান করিয়া কেবাই বাবসায়। তাহারণ ববেব বাবা-বরাদ্ধ ছাডিয়া অনিনিচতের পশ্চাতে ধাবিত হইয়াছে, তাহাবা বাবা ভাডিয়া সমস্ত কিছু নিজেরা নাচাই করিয়া দেখিলা প্রহতে, বিচাব কবিওে শক্তেল ভাসিরা বিশ্বে বাহিব হইয়া প ওয়াছে তাহাবা হাবে, ভাহাব শোন গার, তাহাবা নিয়ম ভঙ্গ কবে। তাদেব প্রথম চনকাইয়া উঠিল, কলেগাবি বাপোরে ভ্রম পাইল, কিছু তাহাদের গায়ের হাওয়া লানির্ম ভাসেব দেশে বিশ্বন উপ ওত হইল, তাসেব দেশের প্রবেব কণেজের সম্পানক চক্ষা হস্মা হাসেব দেশের কলি ও কালির। অবশেষে প্রবেব কণেজের সম্পানক চক্ষা হস্মা হাসেব দেশের কলিও লাগিল। অবশেষে দেশের সক্ষে আহন আয়ান অমান্য করিছে গানির চালের সামান্য করিছে গানির ছারা চালেন না। বিদেশীরণ তাসের দেশে আনিল মুক্তির গান, আশানির সঞ্জিত, নিয়মের শ্বেশিত।

তাদেব দেশের মেড়দের উমিলা নলা তাক নিয়া বলে তালাদেব কুনিত কলদাম বাতাসে উচালয়া নাত্রা চালতে, কুন অফুনয় করে ভাগাদের অলকে ছালিয়া ভূষণ হংবার জন, পাথারা গানে গাভিষা নিক্ঞাননে গোমের পালাভন শুনায়। সকল দিকে জাগিয়া উঠিল ইচ্ছা, চারিদিকে লোনা গোল নিয়মের গণ্ডী ভাচার ডাক। ভীক হইল সাহসী; সকলে স্বাধীন ইচ্ছায় প্রাণশক্তিতে প্রবল হইয়া সনাতনী জ্লুম ও অত্যাচাবের বিরোধী হইয়া উঠিল।

এই তাদের দেশ যে আমাদেরই সনাতনপদ্ধী দেশ তাহা না বিশিরা দিশেও কাহারও বুরিতে কট্ট হইবে না। কত বার কত রাজপুত্র ও সদাগরের পুত্র আমাদের এই নিজীব তাসের দেশে আসিরা আমাদের কানে মন্ত্র দিরাছেন—"ভাঙ্তে হবে এখানে এই গুলসতার বেড়া, এই নিজীবের গণ্ডী, ঠেলে ফেল্ডে হবে এই-সব নির্প্তকের আবর্জনা। ছিডে ফেলো আবরণ, টুক্রো টুক্রো ক'রে ছিডে ফেলো। মৃক্ত হও, শুদ্ধ হও, পূর্ণ হও।" কিন্তু সেই অমৃতমন্ত্রী বাণী তো আমাদের রুদ্ধ প্রাণের দরজার মাধা কুটিরা অপমানিত হইরা বার্থ হইরাছে। আমাদের কবি তাহার তুর্বকণ্ঠে এই বাণী পুনঃপুনঃ উদ্বোধিত করিতেছেন। আমাদের তাসের দেশে কি প্রাণের সাড়া জাগিবে না।

ন্তব্য—ভানের জেশ—কুপালনী, Visva-Bharati News. Oct. and Nov., 1988.

উপসংহার

ত্বন্ধহ প্রত উদ্যাপন করিলাম। মহাকবি রবীক্সনাথের কাব্যতীর্থে পরিক্রমণ সমাপ্ত করিলাম। তীর্থরাজ্বের প্রসাদ ও স্থফল আমার তাগ্যে স্কৃটিল কি না তাহা জানি না—তবে পরম শ্রদ্ধার দহিত গুরুপরিশ্রম স্বীকার করিয়া দীর্ঘ দশ বংসরের নিরন্তর চেষ্টায় এই হছর তীর্থশ্রমণ যে সমাপ্ত করিতে পারিয়াছি ইহারই আনন্দ ও আত্মপ্রসাদ আমার প্রস্কার। আর একটি কথাও মনে জাগিতেছে—এই তীর্থপথে গাহারা পথিকং তাহাদিগকে সসন্মানে ও কৃতিজ্ঞচিত্তে প্রণতি জানাইয়া বলিতেছি যে, এই স্ফুর্গম তীর্থে আমি যতদ্র পর্যান করিয়াছি, কেইই এতদ্র পরিশ্রমণ করিবার আয়াদ স্বীকার করেন নাই। আমি এই পথের শেষ পর্যন্ত একবার দেথিয়া আদিলাম এবং এমন অনেক নৃতন ভীর্থ আবিহার করিলাম, গাহা আমার পূর্বে অন্ত কেই লক্ষ্যা করেন নাই।

কবিসার্বভৌম রবীন্দ্রনাথ অতি বালাকাল হইতেই বাগ্দেবীর আরাধনা করিতে আরম্ভ করিরাছেন। তাঁহার লেখনীর উৎস-মৃথ হইতে উৎসারিত অসংখ্য কবিতা ও গান অপূর্ব ভাব-সম্পদে সমৃদ্ধ হইয়া আমাদিগকে ও বিশ্ববাসীকে নব নব আনন্দরস পরিবেশন করিরাছে। রবীন্দ্রনাথের কাবা এবং কবিতার আলোচনা আমি এই রবিরশ্মির আলোকে আনিরা ধরিরাছি। আমার মন-প্রিজ্ম যে সকল রশির গথায়থ বিশ্লেষণ করিতে পারিরাছে তাহা জ্বোর করিয়া বলিতে পারি না। কাব্য-বিশ্লেষণ ঠিক নিদিষ্ট বিজ্ঞান নহে, তাহার সম্বন্ধে কেইই শেষ কথা বলিতে পারে না। মানুষের মনের গঠন-অমুসারে একটি কবিতারই বহু অর্থ আবিদ্ধার করা যাইতে পারে। ইহার উদাহরণ কবি নিজেই দিয়াছেন তাঁহার 'পঞ্চভূত' পুস্তকে কাব্যের তাৎপর্য নামক আলোচনার।

কবি পুনঃপুনঃ বলিয়াছেন—

কৰি আপনার গানে ফত কথা কছে, দানা অনে লয় তার নানা অর্থ টানি'; ভোমা পানে বায় তার শেষ অর্থবানি। ---গাঁতাঞ্জলি। কে কেমন বোঝে অর্থ তাহার.
কেহ প্রক বলে, কেহ বলে আর,
আমারে গুধার বৃথা বারবার,
দেখে তুমি হানো বৃথিও —চিক্রা, অন্তর্গামী:

কত জন মোরে ডাকিয়া কয়েছে —
'যা গাহিছ তার অর্থ রয়েছে কিছু কি ?'
তথন কী কই, নাহি আদে বালী,
আমি শুধু বলি, 'অর্থ কী জানি!'
তারা হেদে যায়, তুমি হাদে! ব'দে:

ল'য়ে নাম ল'য়ে জাতি বিশ্বানের মতাথাতি,
ও সকল আনিস্নে কানে।
আইনের জৌহ ছাঁচে কবিতা কড়ু না বাঁচে.
প্রাণ গুরু পায় তাহা প্রাণে।
হাসিন্ধে শ্বেহতরে সাঁপলাম তোর কবে,
বুঝিয়া পড়িবি অমুরাগে।
কে বাঝে, কে নাই বোঝে, ভাবুক তা নাহি থোঁতে
ভালো যার লাগে তার লাগে

—विमधन नाउँद्वित छेरमर्थ।

আমার এ সব জিনিদ বাশির মতো—বুরুবার জতে নয়, বাজ্বার জতে । — কার্নী

রবীজনাথ মিস্টিক কবি। বিশ্বপ্রতি মহামানব যুগধর্ম ইত্যাদি সৃষ্টির মধ্যে যতপ্রকারের রূপবৈচিত্র্য আছে তাহার সঙ্গে দাধারণ মানুষের যে স্থল, সে সম্বন্ধ কবির নয়। কবি তাহাদের সঙ্গে দ্ব নব রস-স্থল সৃষ্টি করেন। করি দাধক দ্বী যুগে যুগে অধ্যর সঙ্গে যে গভীর রস-সম্বন্ধ সৃষ্টি করেন, লোকে তাহাকেই রস-ধর্ম বলিয়া মানিয়া লয়। সাধক কবিরা যে ভগবানের সহিত অন্তর্ম রস-স্থলের কথা বলিয়াছেন, তাহাই মহামানবের জীবনধর্ম হইয়া উঠিয়াছে। রসমন্বের সহিত এই রস-সম্বন্ধ-বন্ধনের নামই মিস্টিসিজ্ম। কিন্তু ভক্ত প্রেমিক রবীজনাথ যথনই প্রেমে আত্মহারা হইতে চাহিয়াছেন, তথনই শিল্পা রবীজনাথ বিচারের বল্পার ঘারা সেই আবেগকে শাসন করিয়া-ছেন। রবীজনাথের মিস্টিসিজ্ম্কে সেইজ্ল সমাক্র্পন বলা যাইতে পারে।

তিনি গাছা দেখেন বা অমুভব করেন, তাহা ঠিক বিচার করিয়া প্রকাশ করেন
না, অতীন্দ্রিয় একটি অমুভবকে প্রকাশ করেন। তাঁহার দারাই সভ্যের ও
সৌন্দর্যের গভীর রূপ প্রকাশ করা সভ্ব। কিন্তু সেই অত্তবের অন্তরাকে
কবির মগ্রচেতনার মধ্যে একটি বিচারবৃদ্ধি প্রচ্ছর থাকিয়া তাঁহাকে কেবলমাত্র ভাব-বিলাসিভা হইতে রক্ষা করিয়াছে। সেই জন্ম রবীন্দ্রনাথের কাব্য বোধ্য-অবোধ্যের সীমানায় গাঁড়াইয়া পাঠককে ও স্মালোচককে বোঝানা-বোঝার দোটানায় ফেলিয়া রক্ষ করিয়াছে।

রবীক্রনাথের কবিতার ব্যাখ্যা বহু লোকে বহু বিভিন্ন ভাবে করিয়াছেন।
আমি তাঁহাদেরই পদাস্ক অন্তসরণ করিয়া সকলের উক্তির সার সংগ্রহ করিয়াছি,
এবং অনেক স্থলে কবির নিজের অভিমতের হারা বাচাই করিয়া বিশেষ শ্রদ্ধা
ও বিনরের সহিত আমার বক্তব্য বলিতে চেষ্টা করিয়াছি। আমি অবশেষে
এই বলিয়া সহদয় পাঠক-পাঁটিকাদের নিকটে ক্ষমা চাহিয়া বিদায় লইতে
চাই—

বুকেছি কি বৃদ্ধি নাই বা সে তকেঁ কছে নাই, শুজো শ্বামার কেগেছে যে সুইল সেই কুগাই : - প্রবাহিনী।

পরিশিষ্ট

[টীকা-টিপ্লনী ও সমালোচনা-সংগ্ৰহ]

উৎসগ –হিমাদ্রি

কী জানি কি বাণী—অজ্ঞাত কোন বার্ত্তা, মেদেজ্। তুলনীয়—ভপোষ্তি কবিতার ৫-৭ লাইন।

হঃসাধ্য তেনের উদ্ধান আপনার সাধ্যের শেষ সীমার, যতদ্র গলা চড়াইতে পারা যায় তত দ্বে।

অন্নিতাপ বেগে —ভূগর্ভের তাপের বেগে। টেনিসন প্রভৃতি কবিরাও এমনই বছ বৈজ্ঞানিক তত্তকে কবিতায় প্রকাশ করিয়াছেন।

নিরুদ্দেশ চেষ্টা—অনির্দিষ্ট সাধনা—কী চাই ভাহার গারণা অস্পষ্ট, অথচ চেষ্টা চলিয়াছে ক্রমাগত।

পেয়েছ আপন সীমা—তুমি তোমার শেষ সীমায় পৌছিয় সীমানক হইয় গিয়াছ।

দীমা-বিহীনের—আকাশের।

(리칭)—(저희 (리칭)

শেষ থেয়া—ভগবানের অন্তিম কুপা। কর্ম্মকান্ত জীবনের শেষ দিনের চিন্তায় কবি ভগবানের নিকটে তাঁহার করুণা প্রার্থনা করিতেছেন।

पित्नत्र (नरय-व्योवत्नत्र शर्शा मिन यथन सूत्राहेशा व्यानिग्राह्य !

ঘুমের দেশ—পরলোক, সেধানে দর্ক সংক্ষোভ বিরত হইয়া প্রমা শান্তি বিরাজ করে।

বোষটা-পরা--অন্দার, দৃশ্র-অদৃশ্র।

কাজ-ভাঙ্গানো গান-মধ্র দলত যাহার মোহিনী শক্তিতে জগতের দকল কাজ ভূলাইরা দের; পরলোকের চিন্তা তেমনি দর্কবিশ্বরণী। মানব-জীবন কর্ম-শৃথালে বন্ধ, মৃত্যু দেই শৃথাল মোচন করে। চুকিরে স্থ--- মৃত্যু তো স্থ-দৃ:খ গুইরেরই বিরতি।

কেরার পথে ফিরেও নাথি চায়—যাহারা যাইতেছে তাহারা যাইতেছেই, আর ফিরিয়া আদে না, অন্তত এই আকারে আর ফিরে না।

ৰব্ধ-ছাড়া-—এই প্ৰবাসভূমি পৃথিবী পরিত্যাগ করিয়া যাইতে প্রস্তুত। সাধোর বেলা-জীবন-দায়াহে।

ত্তরী—আমার সহচর সঙ্গী সকলে একে একে আমাকে পরিত্যাগ করিয়া প্রস্থান করিতেছেন।

কেমন ক'রে চিন্ব ইত্যাদি—কোন্ সাধনার ফলে তাঁহারা এমন শ্বচ্ছল-গতি লাভ করিয়াছেন, তাহাও তো আমার চিম্তার অগোচর।

ছায়ায় যেন ছায়ার মতো—আমার পূর্বজ সাধকদিগের সাধন তব আমি অস্পষ্ট উপলব্ধি করিতেছি।

এমন নেয়ে—তাঁহাদের মধ্যে কাহার দাধন প্রণালী আমার অবলম্বনীয় তাহাই আমি জানিতে চাই।

বরেও নহে পারেও নহে—যে ব্যক্তি সাংসারিকতায় বৈষয়িকতায় আসক্তও নহে, আবার একেবারে অনাসক্তও চইতে পারে নাই।

মৃলের বাহার নাইকে। যাহার ইত্যাদি—যাহার ইহজীবনে আশা নাই,
পরজীবনেরও কোনো সঞ্জনটি।

অঞ্চ যাহার ফেল্তে হাসি পায়—-জীবনের বিদ্যালয় যাহার বিলাপ করিতেও লক্ষ্যা বোধ হয়, কারণ দে তো নিজের অবহেলাতেই সমস্ত নষ্ট পশু করিয়া বসিয়াছে।

দিনের আলো—ইহকাল, ইহকালের আশা ও উৎসাহ। দাঁবের আলো—পরকাল, পরকালের সৌন্দ্র্যা মাধুর্য। ঘাটের কিনারায়—জীবনের শেষ প্রান্তে।

বলাকা কাব্যের নামকরণ

বলাকা কাব্যথানি ৪৬-টি পৃথক্ পৃথক্ কবিতার সঞ্চয়ন। ইহাদের মধ্যে কবি মাত্র ৮-টি কবিতার নাম দিয়াছেন, আর বাকীগুৰির কোনো নাম দেন নাই। বলাকা নামটি সংস্কৃত সাহিত্যে স্থপরিচিত। বলাকা-পংক্তি ঘর্থন আকাশে তোরণহীন লখিত মালার স্তায় ছলিতে ছলিতে মানস-সরোবরের দিকে উদ্বিয়া চলিয়া যায়, তথন তাহাদের প্রত্যেকের পৃথক্ ও স্বতম্ন মৃতি আমাদের দৃষ্টিতে তেমন স্কল্টেডাবে প্রতিভাত হয় না, যেমন প্রতিভাত হয় তাহাদের সম্প্রিলিত 'মালিকাবদ্ধ সমগ্র পংক্তির গতিছেন্দ ও গতিভিন্দি। বলাকার কবিতাগুলির প্রত্যেকেরই এক-একটি স্বতম্ব তাৎপর্য তো আছেই, কিন্তু তাহা অপেকাও তাহাদের সম্মিলিত সমষ্টিফল হইমা একটি স্বতম বিশেষ তাৎপর্য পরিক্ষুট হইয়া উঠিয়াছে। বলাকার অদিকাংশ কবিতার মধ্য দিয়া এই সমূহাত্মক তাৎপর্যের এক-একটি বিশেষ প্রকার ও বিশেষ ভঙ্গী ফুটিয়া উঠিয়াছে। বোধ হয় কবি সেইজগ্রই কবিতাগুলির নাম দিতে দিতে সজাগ হইয়া নাম দেওয়া বয় করিয়া প্রক্রম ভঙ্গ করিয়াছিলেন। নামের মধ্যে যাহা বাধা পড়ে, তাহার স্বতম্বতা নামের আবরণের মধ্যেই সীমাবদ্ধ হইয়া বায়। যেখানে প্রত্যেকটি কবিতার মধ্য দিয়া একটি চঞ্চল নৃতাশতির পাদবিক্ষেপ স্টিত হয়, সেথানে এই পাদবিক্ষেপকে সমস্ত নৃত্যের মধ্যে এক এক কবিয়া দেখিলে তাহার সমগ্রতার তাৎপর্য বয়া যায় না।

দোত্রনামান মালার ন্যায় বলাকা-পংক্তি যথন আকাশপণে উ⁶৮মা নাম, তথন প্রত্যেকটি বক বা হংদেব যে স্থান-সন্ধিরেশের বিচিত পর্ববক্ষ ঘটে, তাহা আমাদের দৃষ্টি তেমন আকর্ষণ করে না। এই স্থানস্মিরেশেব বৈচি-ত্যের কলে বলাকা-মালাটি যে বিচিত্রভাবে বিচিত্র কপে আমাদেব মন ংবল करत, त्रहे वर्गनाहे मध्य वलाकात वर्गना। आकात्म घनक्रक्षमाने कृता (अव উঠিয়াছে, ঝড় বহিয়া চলিরাছে, বলাকাব মালাটি মধ্যে মবো ছি'িছ্যা চি'্বা यहिएक हा वनाकात अहे क्रिय निश्रास्त मर्था, राष्ट्रास्त मर्था, रिश्रार्थ বলকের মধ্যে কোনো ভর নাই; তাখাদের মালা যেমন এক একবাৰ ছি ডিযা ষাইতেছে, আবার প্রস্থােই তাহাবা তাহা গাণিয়া তুলিতেছে। মেদেব সংগ্ৰ আসিয়া विপদের সভাথীন इटेशा डाइ। त्यन न इन कीनरन द मन्नान भाग। তাহারা মানস-সরোবরের যাত্রী, বিপদের মধ্যে যাত্রা করিয়া চলা তাহাদেব অনিবার্যা। তাই তাহারা বিপদ অগ্রাহ্য করিয়া, বিপদ অতিক্রম করিয়া স্থান অজ্ঞানা মানদ-সরোবরের দিকে যাত্রা করে: ভাই বলাকা কথাটি উচ্চাবণ কবিলেই আমাদের মনে স্ববিপক্ষয়ী একটা অজ্ঞানার উদ্দেশ্যে অন্তহীন অকারণ অবাবণ চলা ও গতিছেন্দের •কথা মনে পড়ে। বলাকা বইথানিতেও এমনি একটি গৃতিছলের দীলাভদী চিত্রিত করিতে কবি চেটা করিয়াছেন। কবি রবীশ্রনাথ তাঁহার চিরনবীন অন্তরাশ্বাতে যে গতিধর্ম অফুভব করেন, সেই গতিধন্ম নিজের মধ্যে তিনি উপলব্ধি করিয়াছেন। বাহিরের জগতের ও নি^{ডেব} সঙ্গে বাহিরের ঘন্দে তাহার কি ভাব ফুটিয়া উঠে, তাহাও প্রধানতঃ এই কাব্যে প্রকাশ করিতে চাহিয়াছেন। তিনি বিশ্বময় এই অকারণ অবারণ চলার শীলাই প্রতাক্ষ করিয়াছেন 🖟 গহন রাত্রিকালে গভীর অন্ধকারের মধ্য দিয়া মাত্রুষ অজ্ঞানা সাগরে পাড়ি দেয়, তাহার জীবনীশক্তির প্রবাহ তাহাকে কোন স্কুদুর জ্ঞাৎ হইতে জগতান্তরে, এক দেহ হইতে দেহান্তরে লইয়া যায়। সেই অন্ধকার রজনীতে রজনীগন্ধার গঙ্গের ন্যায় অনম্ভের একটি স্থগন্ধ মানবের হৃদয়কে আবিষ্ট করিয়া রাথে। গাদি এই অনত্তের সভিম্থে যাত্রা, এই গতি, এই অকারণ অবারণ চলা মুহতের জন্ম বন চইত, তবে বিধ মৃত জড়পুঞ্জের সমাবেশে মহাকলুষ্তার সৃষ্টি কবিত: কিন্তু গতিশক্তিব নিত্যমন্দাকিনী মৃত্যুস্থানে বিশ্বের জীবনকে নিরস্তর শুচি করিয়া ভূগিভেছে। মৃভ্যুকে জীবনের মধ্যে স্থান দিয়াছে বলিখাই মূড়ার মধ্যে মৃত্যুকে আমরা পাই না, চির্নবীনতার মধ্যে অমৃতের মধ্যে মৃত্যুর যথার্থ রূপ আমরা প্রত্যক্ষ করি। যেমন বলাকা বলিলেই একটি গতিধয়ের কণা মনে পড়ে, তেমনি এই কারাথানির মধ্যেও কবি বিশের অনুনিহিত একটি গতিভালের কনি। ক্রিয়াছেন। এই ছন্দ বিহুকে ক্রমগ্রে তথ্য সমু, হেণা নমু, অন্ত কোনো-থানে" এই বাণী দিয়া অবিধাম ভৃতিয়া চলিয়াছে: বলাকার মতোই এই কাবোর কবিতাভলি এক অল্পান বাজোর বালী। এইজনুই কবি এই काराथानित नाम मियारहन 'तलाका':

ক। রবী-দ্রকাবাপরিক্রমন

গুটায় উনবিংশ শতকের শেষ ভাগে ব্যন রবীন্দ্রনাথের কবি-থাতি সমস্ত বঙ্গদেশে পরিবাপে ইট্রা পড়িয়ছিল, তথনও ঠাহার নিন্দা করা ছিল একটা ক্যাসান। তাঁহার বিশ্বদ্ধে প্রধান অভিযোগ ছিল যে তিনি স্থাই স্থলনিত ভাষার মোহ বিস্তার করিয়া পাঠকের ও শোতার মনোহরে করেন, কিন্তু তাঁহার কবিতা পাধীর মধুর কাকলীর মতনই অর্থনিন এই অভিযোগের উত্তর কবি নিজেই তাঁহার পঞ্চভূত নামক পুত্রে "কাষোর তাৎপর্য" ও "প্রাপ্তনতা" নামক প্রবন্ধয়ের মধ্যে দিয়াছেন—"বেধার দোষ থাকাও যেমন আশ্চর্য নহে, তেমনি পাঠকের কাব্যবাধশক্তির থর্বতাও নিতান্ত অসম্ভব বলিতে পারি না।" "শাহিত্যের উদ্দেশ্য আনন্দ দান করা। সেই আনন্দটি গ্রহণ করাও নিতান্ত সহজ্ব কাজ নহে—তাহার জন্তও বিবিধ প্রকার শিক্ষা এবং সাহায়ের প্রয়োজন। যদি কেছ অভিমান করিয়া বলেন, যাহা বিনা শিক্ষায় না জানা যায় তাহা বিজ্ঞান নহে, যাহা বিনা চেষ্টার না বোঝা যায়—তাহা কর্দন নহে, এবং যাহা বিনা সাধনায় আনন্দ দান না করে তাহা সাহিত্য নহে, তবে কেবল খনার বচন, প্রবাদ-বাক্য, এবং পাঁচালি অবলম্বন করিয়া তাঁহাকে অনেক পশ্চাতে পড়িয়া থাকিতে হইবে।"

ইহার পরে কবি যেই ইউরোপের সাহিত্য-রসিক সমাব্দের বিচারে অগ্রগণ্য কবি বলিয়া বিবেচিত হইলেন, নোবেল পুরস্কার লাভ করিলেন, অম্নি হাওয়া বদ্লাইয়া গেল, কবির সুখ্যাতি করা, তাঁহাকে বিশ্বকবি বলিয়া বরণ করা ও বড়াই করা ফ্যাসান হইয়া উঠিল।

এই ছই অবস্থা কাটাইয়া উঠিয়া রবীক্রকাব্যের প্রক্তত নিরিথ নির্ণয় করার সময় আসিয়াছে। রবীক্রনাথের প্রতিভা যে কিন্নপ নবনৰ-উন্মেষশালিনী, তিনি যে কী সম্পদ্ আমাদের সাহিত্যে দান করিয়াছেন, এবং তাঁহার দানে আমাদের ভাষা ও জ্বীবন যে কী অমূল্য সম্পদে সমৃদ্ধ হইয়া উঠিয়াছে, তাহার একটা সম্পূর্ণ ও সর্বাঙ্গীন পরিচয় লওয়া আবশ্যক হইয়া পড়িয়াছে।

কবি ববীক্রনাথের প্রতিভা-নির্করিণী তাঁহার বাল্যকালেই সমন্ত সন্ধীর্ণ গতান্থগতিক পথ ছাড়িয়া শতম্থে অনন্তের অভিম্থে অভিমারে যাত্রা করিয়া চলিয়াছে। তিনি একাই সাহিত্যের সাত-মহলা ভবনের শত কক্ষের ঘার সোনার চাবি দিয়া উল্মুক্ত করিয়া দিয়াছেন। কবিতা, গান, নাটক, গল্প, উপস্থাস, প্রহসন, প্রবন্ধ, সমালোচনা, যেদিকেই তিনি তাঁহার প্রভাশর প্রতিভাল্যোতি বিকীর্ণ করিয়াছেন, সেই দিক্টিই সমৃদ্ভাসিত হইয়া উঠিয়াছে। এমনটি এদেশে আর কাহারও ঘারা হয় নাই, আর অন্থ দেশেও একাধারে এত বিচিত্র শক্তির পরিচয় কোনো কবি বা লেখক দিয়াছেন কি না তাহা আমার কানা নাই।

কবি কবিতাকে ন্তুব নব রূপ দান করিয়াছেন—তিনি নিজের স্টিকে নিজেই অতিক্রম করিয়া নৃতন রূপ স্টি করিয়াছেন। কবি নব নব ছক্ষ আবিদার করিয়াছেন, তাঁহাল বাগ্-বৈভবে ও প্রকাশ-ভঙ্গিমায় কবি-মানসের বে একটি অভিনব রূপ তিনি প্রকাশ করিয়াছেন তাহা অতীব বিষয়কর। রবীজনাথ একদিকে সংশ্বত সাহিত্যের সৌন্দর্যরাশি, অপর দিকে ইউরোপীর সাহিত্যের ভাবৈশ্বর্য একত্র সমাহাত করিয়া নিজের প্রতিভার অপূর্ব ছাঁচে কেলিয়া যে ললিত-ললামশালিনী তিলোত্তমা স্পষ্ট করিয়াছেন, তাহাতে জগৎ মৃগ্ধ হইয়াছে, তাই তিনি কবি-সার্বভৌম বা কবি-সমাট্ নামে সন্মানিত ছইতেছেন। •

কবি রবীশ্রনাথ তাঁহার জীবনস্থৃতিতে তাঁহার কাব্য-সাধনার একটি মাজ ধারা বা উদ্দেশ্য নির্দেশ করিয়াছেন—"আমার তো মনে হর, আমার কাব্য-রচনার এই একটি মাজ পালা—দে পালার নাম দেওয়া ঘাইতে পারে—সীমার মধ্যেই অদীমের সহিত মিলন-সাধনের পালা।" বান্তবিক লক্ষ্য করিয়া দেখিলে এই একটি বিষয়ই কবির সমন্ত কবিতার অন্তর্নিহিত ভাব বলিয়া বুঝিতে পারা যায়। কিন্তু রূপদক্ষ ছন্দের যাহকর স্থললিত প্রকাশ-ভঙ্গিমার ওম্বাদ কবি একই জ্বিনিস বার বার এমনই নৃতন চঙে সাজাইয়া আমাদের সন্মুখে উপস্থিত করিয়াছেন যে, কবির প্রভারণা আমরা ধরিতেই পারি না, এবং একই ভাবের বছু বিচিত্রতার কৌশলে মুগ্ধ হইয়া বিশ্বয়ম্ম হইয়া থাকি।

রবীক্রনাথ বলিয়াছেন বে "ক্সীবের মধ্যে অনন্তকে অন্নতব করারই নাম ভালবাদা; প্রকৃতির মধ্যে অনুভব করার নাম সৌন্দর্যসন্তোগ।" এই ছই প্রকারের অনুভবই যে তিনি পূর্ণ মাত্রান্ন করিয়াছেন, তাহার সাক্ষ্য দিতেছে তাহার রচিত সাহিত্য, এবং তাঁহার ব্যক্তিগত জীবন।

রবীন্দ্রনাথের ব্যক্তিত্ব পূর্ণ জীবন্ত। জীবনের লক্ষণ হইতেছে নিত্যনির্ব্তর পরিবর্তন। যাহা জড়ধ্মী তাহারই পরিবর্তন থাকে না। তাই
ফরাসী দার্শনিক জীবনের সংজ্ঞা নির্দেশ করিয়া বলিয়াছেন—পরিবর্তন,
পরিবর্তন, ক্রমাগতই নির্ম্তর পরিবতনই জীবন এবং তাহাই সত্য। ক্বির্ব্ত প্রতিভা-নির্কারির যেদিন স্থপ্রত্তম হইয়াছিল তাহার পর হইতে আজা পর্যন্ত তিনি অকারণ অবারণ চলার' আবেগে নিজে সমন্ত সঙ্কীর্ণতা, সমন্ত বন্ধ গুহা
ও সকল প্রকারের গণ্ডির প্রাকার উল্লেখন করিয়া অনন্তের অভিসারে অগ্রসর
হইয়া চলিতেছেন, এবং তাহার সঙ্কে সঙ্কে সমন্ত মানব-স্মাজকে চলিতে
আহ্বান করিতেছেন—

> আগে চল্ আগে চল্ ভাই। প'ড়ে থাকা পিছে, ম'রে থাকা মিছে, বেঁচে ম'রে কিবা ফল ভাই! স্কুল

বৈদিক যুগে ইওরার পুত্র মহীদাস যেমন ভূর্যকণ্ঠে আহ্বান করিয়াছিলেন—
চরৈবেতি, চরৈবেতি,—চলো, চলো,—তেমনি রবীক্সনাথও আফাদের
সকলকে ক্রমাগত সীমা অতিক্রম করিয়া সকল বাধা উত্তীর্ণ হইয়া স্মৃদ্রের
পিয়াসী হইয়া অগ্রসর হইতে আহ্বান করিতেছেন।—

প্রতি নিমেবেই যেতেছে সময়, দিন-ক্ষণ চেয়ে পাকা কিছু নয়।

তাই তিনি পাঞ্জি-পুঁথি বিধি-নিষেধ অগ্রাহ্য করিয়া "মাতাল হ'য়ে পাতাল পানে ধাওয়া" করিতে বলিতেছেন। কবি নিজেকে যাত্রী বলিয়াছেন—

> যাত্রী আমি ওরে। পার্বে না কেউ রাধ্তে আমায় ধ'রে। ---গীডাঞ্লি, ১১**৬ নম**র

কবি পথিক—

পাৰের নেশা আমায় লেগেছিল, পথ আমারে দিয়েছিল ডাক।

কবির যাত্রা "নিরুদ্দেশ যাত্রা", মনোহরণ কালোর বাঁশী তাহাকে ঘর ছাড়াইয়। উদাসী করিতে চায়—জাপান-যাত্রী, ৪০-৪১ পূর্রা। নির্মার ও নদী তাঁহার গতি-উন্ধ চিত্তের প্রতীক, বলাকা তাঁহার সহধর্মী, সেই বলাকার পক্ষপ্রনির মধ্যে কবি এই বাণী প্রনিত শুনিয়াছেন—"হেথা নয়, হেথা নয়, অসকোনোধানে।"

কবি রবীন্দ্রনাথ গতিধর্মী বলিয়া তিনি যেমন অনস্তের স্থদ্রের পিয়ানী, তিনি এই চিরজনমের ভিটাতে এ সাত-মহলা ভবনে বস্থন্ধরার বৃকে প্রানামী হইয়া থাকিতে চাহেন না, কবি অন্তরের অন্তরে অন্তভব করেন যে—"মব ঠাই মোর ঘর আছে, আমি সেই ঘর মরি খুঁজিয়া।"

কবির আকাজ্ঞা—"ছোট-বড়-হীন স্বার মাঝারে করি চিত্তের স্থাপন।"
—প্রবাদী, উৎস্র্গ। জগতে ছোট ভুচ্ছ বলিয়া কিছু নাই। সীমাকে
লইয়াই অসীম, সীমাকে ছাড়িয়া দিলে অসীম শৃন্ততা। তাই তিনি কবি-সাধক
শাহর ন্তায় দেখিরাছেন যে—

ধ্প আঁপনারে মিলাইতে চাহে গজে, গদ্ধ দে চাহে ধুপেরে রহিতে ফুডে। স্থার আপনারে ধরা দিজে চাহে ছন্দে,
ছন্দ ফিরিয়া ছুটে যেতে চাহ স্থার।
ভাব পেতে চাহ রূপের মাঝারে অঙ্গ,
রূপ পেতে চাহ ওংবের মাঝারে ছাড়।
অসীম সে চাহে সামার নিবিড় সঙ্গ,

সামা চার হ'তে অসামের মাঝে হার! --- উৎসর্গ, আবর্তন

ছোটকে এবং তুদ্ধকেও কবি অসামান্ত অসীম রহস্তমর বলিয়া জানিয়াছেন বলিয়া তাঁহার সর্বামৃত্তি ও একাছাতা এত প্রবল হইতে পারিয়াছে। তিনি 'বহুন্ধরা'র সর্বদেশে সর্বজাবের জীবন-লীলা উপভোগ করিতে উৎস্কক। কবি বে ঘর বাঁধিয়াছেন তাহা 'অবারিত'—

> এরে কে বঁথেছে হাটের মাকে, আনালোগানার পদে ৮—পেলা, অকারিত

কবির 'পুরাতন ভূতা' অতিপ্রশান্ত ক্ষাকান্ত, রাজা ও রাণী নাটকের ভূতা লামন থেকাবাব্র প্রত্যাবতন গলের ভূতা রাইচরণ, কবির নিজের ভূতা নোমিন মিঞা (টেতানি, কর্ম; ডিমপত্র ওজন পুনা; মাহিত্যতর, প্রবাদী ১০৪১ বৈশাথ, ১২ পুষ্ঠা) পশ্চিমা মছ্বের মেয়ে নেড়া-মাথা ভাইরের 'দিদি' (টেতানি), ইই বিঘা জমির উদ্ভিন্ন মানিক উপেন, দেবতার প্রাদ ইইতে রাথানকে রক্ষা করিতে প্রথানী মৈত্রমহাশন্ত, একবন্তা অতিদীনা ভিথারিণী রমণীর শ্রেষ্ঠভিন্না, দকলেই কবির মনকে স্পর্শ করিয়াছে, কেহই তাঁহার কাছে তুল্ছ বা পর নহে। এইরূপে কবি তাঁহার গ্রগত্রে, প্রগত্রে ওকবিত্রার মধ্যে কত নগণা মানব-লদ্বের উপেন্ধিত স্থা-ইংখ, তুল্ছ মানবেরও মহন্ত এবং মানব-চিত্তের বিচিত্রতা দেখাইয়াছেন,—তাহার সংবাচ নির্দেশ করিয়া দেখানো সহজ কাজ নহে। মানব-জীবনের স্থা-ইংথর মরমী দরদী কবি প্রাত্রকা কাব্যের প্রায় সমস্ত কবিতার তাঁহার নিপুণ হক্ষ দৃষ্টির ও অদামান্ত স্থান্ব ক্ষির পরিচয় বিরা আমানিগত্রক মৃথ্য করিয়াছেন।

কবির সৃক্ষ দৃষ্টির আরও পরিচয় পাই কণিকার কবিতা-কণাগুলির মধো।
কবি দিবা দৃষ্টি দিয়া সামান্তের মধ্যেও অপরূপের ও মহং সত্যের সাক্ষাৎ
পাইয়াছেন। সামান্ত ঘটনার মধ্যে যে কী গভীরতা নিহিত থাকে তাহা
ভিনি 'যেতে নাহি দিব' কবিতাটির মধ্যে বিশেষ ভীবে দেখাইয়াছেন;

বির দার্শনিক মন আপাত-দৃষ্টির অন্তরালে মহৎ তত্ত্ব সহজেই আবিষ্কার
 করিতে পারে।

কবির জীবনের উদ্দেশ্য বা মিশন যে কি তাহা তিনি বছ প্রকারে বছ স্থানে প্রকাশ করিয়াছেন। শৈশব-রচনা 'কবিকাহিনীর' মধ্যে কাব্যের নায়ক 'কবি'র চরিত্রে রবীজ্ঞানাথ দেখাইয়াছেন যে শান্তিময় বিশ্ব-প্রেমই মান্ত্র্যের জীবনের কাম্য বস্তু। তাহার পরে রবীজ্ঞানাথের প্রথম যৌবনের লেখা 'নির্ম্বরের স্বপ্রভঙ্গ' কবিতায় তিনি দেখাইয়াছেন যে মহাসাগরের সহিত মিলিত হইতে পারাতেই জীবন-নদীর সার্থকতা। 'স্রোত' নামক কবিতায় তিনি বলিয়াছেন—

জগৎ-স্রোতে ভেদে চলো যে যেখা আছ ভাই, চলেছে যেখা রবি-শুণী চলো রে সেখা যাই!

জগৎ পানে যাবিনে রে, আপন পানে যাবি ? দে যে রে মহা মক্তর্মি, কি জানি কি যে পাবি !

ক্লগৎ হ'বে রব আমি, একলা রহিব না।
মরিয়া ধাব একা হ'লে একটি জলকণা।
আমার নাহি হুথ হুখ, পরের পানে চাই,
বাহার পানে চেমে মেধি ভাষাই হ'রে ঘাই।

মারের প্রাণে স্নেহ হ'রে লিশুর পানে ধাই, ছবীর সাপে কাঁদি আমি স্থার সাথে গাই। সবার সাথে আছি আমি, আমার সাথে নাই। লগৎ-সোতে দিবানিপি ভাসিরা চ'লে বাই।

'প্রভাক্ত উৎসব' নামক কবিতায়ও কবি বলিয়াছেন—

লগৎ আদে প্রাণে, লগতে যার প্রাণ,

লগতে প্রাণে মিলি' গাহিছে একি গান।

ধূলির ধূলি আমি, রছেছি ধূলি 'পরে, জেনেছি ভাই ব'লে জগৎ-চরাচয়ে :

কবি বিশ্বদোহাগিনী লক্ষীকে অথবা জীবনদেবতাকে আবেদন জানাইয়া বলিয়াছেন—

আমি তব মালকের হব মালাকর।

'পুরস্বার' কবিতায় তিনি কবির মিশনের সম্বন্ধে বলিয়াছেন--

অস্তর হ'তে আংরি' বচন আনন্দলোক করি বিরচন. গীতরসধার। করি দিঞ্চন সংদার-ধ্লিজালে।

না পারে বুঝাতে, আপনি না বুঝে
মাম্ব ফিরিছে কথা পুঁজে পুঁজে,
কোকিল যেমন পঞ্মে কৃজে,
মাগিছে তেমনি হর।
ঘুচাইব কিছু দেই ব্যাকুলতা,
কিছু মিটাইব প্রকাশের ব্যধা,
বিশারের আগে ছ-চারিটা কথা
রেখে যাব সুমরুর।

ঠিক এই কথাই তিনি কবি-চরিত কবিতার মধ্যেও বলিয়াছেন—

আমি সেই এই মানবের লোকালরে
বাজিরা উটেছি হবে-ছবে লাজে ভরে,
পরজি' ছুটিরা খাই জর পরাজরে
বিপুল ছন্দে উবার মন্দে মাতিরা।
বে পন্ধ কাঁপে ফুলের বুকের কাছে,
ভোরের আলোকে যে গান খুমার আছে,
শারদ-খান্তে যে আভা আভাসে নাচে
কিরণে কিরণে হসিত হিরণে হরিতে,
সেই পাছই পড়েছে আমার কারা,
সে পান আমারে নরনে কেলেছে ছারা,—
আমার মাঝারে আমারে কে পারে ধরিতে ?

তোমাদের চোখে খাঁ।বিজ্ঞল ঝরে যবে, আমি তাহাদের গেঁখে দিই গীতরবে, লাজুক হাদর যে-কথাটি নাহি কবে, স্থাের ভিতরে লুকাইয়া কহি তাহারে।

কবি সকলেরই মুখপাতা। এইজন্ম কবির কোনো নির্দিষ্ট বয়স নাই, কবি বলেন—

কেশে আমার পাক ধরেছে বটে,
তাহার পানে নজর এত কেন ?
পাড়ার যত ছেলে এবং বৃড়ো
সবার আমি এক-বরসী জেনো।

তাই কবি শিশু ভোলানাথের সহিত অহেতুক আনন্দে ছেলেখেল। করিতেও পারেন, এবং প্রবীণ পাকা যাহারা জগৎ মিথ্যা মনে করিয়া পরকালের ডাক শুনিতেই ব্যস্ত তাহাদের জন্য নৈবেন্তও সাজাইয়া দেন, খেরারও জোগাঙ্ক করেন, গীতাঞ্জলি রচনা করেন, গীতিমাল্য গাঁথিয়া তুলেন।

কবির কোনো বয়স নাই বলিয়া তিনি চিরনবীন, চিরব্বা, তিনি সবুজের অভিযানে অলেষাতে যাত্রা ক'রে শুরু পালের পৈরে লাগান রড়ো হাওফ সান্ধনী নাটকের সমস্তটাই তো নবীনতার জ্বগান । সেথানে ব্রক্দল জ্বের গলায় বলিয়াছে—

আমাদের পাক্বে নাচুল গো,—মোদের পাক্বে নাচুল।

চিরঘ্বা কবি কর্তব্যে নিরলস, তিনি কেবল লোটাস্-স্টার নহেন, তিনি কমিশ্রেষ্ঠ। তাঁহার কাছে নানা দিব হইতে কর্তব্যের আহ্বানের 'আবার আহ্বান' আদে, দে আহ্বান অশেষ। তিনি কর্তব্যের 'শহ্র' ধূলায় পড়িয় থাকিতে দেখিয়া কথনো স্থির থাকিতে পারেন না, আরাম-বিশ্রাম ত্যাগ করিয় আশেষের আহ্বানে তিনি রজনীগন্ধার মালা কেলিয়। রক্তজ্বার মালা গাঁথিতে প্রত্ত হন। 'বর্গনের' তাঁহার কাছে নৃতনেরই বার্ডা বহন করিয়া আনে, তিনি উচ্চকণ্ঠে ঘোষণা করেন—

চাবো না পশ্চাতে মোরা, মানিব না বজন জম্পন, হেরিব না ধিক্, গণিব না দিন স্থাপ, করিব না বিত্রক বিচার, উদাম পশিক্। মুহুর্তে করিব পান মৃত্যুর কেনিল উন্নপ্ততা উপকণ্ঠ ভবি'— থিন শীর্ণ জীবনের শত লক্ষ ধিক্কার লাঞ্ছনা উৎসজনি করি'।

কবির কাছে ছঃধরাতের রাজা নথন হঠাৎ ঝড়ের সাথে আসিয়া অভ্যর্থনা দাবী করেন, তখন তিনি তাঁহাকে বিম্থ করেন না, তিনি আপনাকে ডাক দিয়া বলেন—

> ওবে হ্বার পুনে দে রে, বাজা শন্ধ বাজা, গভীর বাতে এনেছে আজ সাঁধার গরের রাজা। বজ ডাকে গুজতবে, বিভ্যতেরি ঝিলিক কলে, ছিলশয়ন টেনে এনে আডিনা তোর সাজা, কড়ের সাধে চঠাৎ একো হুংধরতের রাজা।

> > ্ৰেয়া, আগমন, ১৩ পৃষ্ঠা

'জ্যেষয়' যথন আছে তথনও কবি নিউছ, যদি কোনো আশ্রম নাই থাকে, যদি কোনো আশা নাই থাকে, তথাপি কর্ম ছইতে প্রতিনিত্ত ছইলে চলিবে না, যত্রো থামাইলে চলিবে না।—

ব্যবিও সজাং আসিজে মন্দ মন্তবে,

মান সঙ্গীত সৈতে ইন্সিতে থামিছা,

যামও সজী নাহি অনাত অধরে,

যামও প্রাণীত আনিছে আজে নামিছা,

মহা আশারা জানিছে মোন মন্তবে,

মিগ্লিগত অবশুতনে চাকা,

তবু বিংজ, ওবে বিংজ মোর,

এখনি আজ, বল করো না পাখা।

---কল্পনা, ছংগ্ৰহ

জগনাথের বিজয়-রথ যথন বাহির হয়, তথন ডাহার রশি টানিবার জন্ম সকলের কাছে আহ্বান আদে, সকলে গুনিতে পায় না, গুনিতে পান কবি। তাই তাঁহার আহ্বান-ধ্যনি হইতে গুনি--

> উড়িরে ধ্বন্ধ অত্রভেগী রবে ক্র বে ভিনি, ক্র বে বাহির পথে!

আয় রে ছুটে, টান্তে হবে রশি, ঘরের কোণে রইলি কোথায় বসি', ভিডের মধ্যে ঝাঁপিয়ে প'ড়ে গিয়ে

ঠাই ক'রে ডুই লে রে কোনো মতে। —গীতাঞ্চলি, ১১৯ নম্বর

কবির এই কর্তব্যনিষ্ঠার প্রতি সম্মান ও শ্রদ্ধা প্রকাশ পাইয়াছে কথা-কাব্যের 'পণরক্ষা' ও 'প্র্জারিণী' নামক হুইটি প্রাসিদ্ধ ঐতিহাসিক ব্যাপার লইয়া লিখিত কবিতার।

চিরষুবা কবি তৃ:থকে জয় করিয়া তৃ:থের মাহাত্ম্য ঘোষণা করিয়াছেন।—

কিদের তরে অশ্রু থবে, কিদের লাগি' দীর্যদাদ ? হাস্তমূধে অদৃষ্টেরে কর্ব মোরা পরিহাদ। রিক্ত বারা সর্বহারা, সর্বজয়ী বিখে তারা, গর্বমন্ত্রী ভাগাদেবীর নয়কো তারা শ্রীভদাদ। হাস্তমূধে অদৃষ্টেরে কর্ব মোরা পরিহাদ।

তিনি দেবী অলম্বীকে আহ্বান করিয়া বলিয়াছেন—

যৌবরাজ্যে বদিয়ে দে মা লক্ষীছাড়ার সিংহাসনে।
ভাঙা কুলোয় করুক পাখা তোমার যত স্কৃত্যপণে।
ক্ষান্তালে প্রলয়শিপা কিবা কিবা পরাধ সক্ষা লক্ষাহারা জীর্ণ কন্তা ছিত্রবাস।
হাস্ত্রমূবে অদৃষ্টেরে কর্ব মোরা পরিহাস।

--কল্পনা, হতভাগ্যের গান

কবি সকলকে 'শুধু অকারণ পুলকে ক্ষণিকের গান' গাহিয়া নদীজলে-পড়া আলোর মতন শিথিল-বাঁধন জীবন যাপন করিতে আহ্বান করিয়া বলিয়াছেন—

> ওরে থাক্ খাক্ কাঁদনি। তুই হাত দিয়ে ছিড়ে কেলে দে রে নিজ্ঞ হাতে বাঁধা বাঁধনি।

> > --কণিকা, উদ্বোধন

ভাগ্য যবে কুপণ হ'দে আদে,
বিষ যবে নিঃম তিলে তিলে,
নিষ্ট মুখে ভূবন ভৱা হাসি
ওটে শেষে ওজন-মনে মিলে।—

তথনও কবি আনন্দ করিয়াই বিশকে অবজ্ঞা করিতেই ব**লিয়াছেন। দেবতা** যথন ত্রংথমৃতি ধরিয়া মালার বদলে ভীষণ তরবারি উপহার দিয়া কবিকে সন্মানিত করেন, তথন কবি বলিতে পারেন---

> দ্রবের বেশে এদেছ ব'লে ভোমারে নাহি ভরিব হে। যেথায় বাণা দেখায় ভোমা নিবিড ক'রে ধরিব হে।

> > —বেলা, ছঃখমৃতি ও দান

ক্বি আত্মতাণ চাহেন না, তাঁহার প্রার্থনা কেবল এই---

বিপদে মোরে রক্ষা করো, এ নহে মোর প্রার্থনা, বিপদে আমি না যেন করি ভয়। হুখে-ভাপে বাথিভ চিতে নাই বা দিলে সান্ত্ৰা, হংখ তেন করিতে পারি জয়।

> সহায় মোর না যদি জুটে, निएक इतन मा त्यन हेटहे. দাদারেতে ঘটলে কভি, क[्]रत च्यु तक्कना. নিজের মনে না গেন মানি **কর** !

> > ---গীভাঞ্চলি, ৪ নম্বর

কবি প্রাজ্যকেও ভয় করেন না, তিনি মুক্তকণ্ঠে বিধাতাকে বলিতে পারিয়াছেন-

> इएक्ट अलाई अन्त भारा, तमा । यदि शक्ति प्रतित प्रति।

হেরে ভোমার করব দাধন, ক্তির কুরে কাট্ব বাঁধন, শেষ থানেতে তোমার কাছে

বিকিয়ে দেবো আপনারে! --- থেয়া, হার

কারণ, কবি লানেন যে বিফলতা সফলতারই সোপান-পরস্পরা মাত্র।—

जीवत्न घठ शृक्षा श्रांता ना मात्री, জানি হে জানি ভাত হয়নি হারা। এবং---

জীবনের ধন কিছুই যাবে না ফেলা, ধূলার তাদের যত হোক অবহেলা, পূর্ণের পদ-পরশ তাদের 'পরে। —গীতাঞ্কলি ও গীতালি

কবি হংথকে জন্ম করিয়াছেন বটে, কিন্তু স্থা হংথকে একেবারে অস্বীকার করেন না, স্থাকে পৃষিদ্ধা হংথকে ভূলিয়া থাকিতে চাহেন না, আবার হংথের মধ্যে স্থাকেও বিশ্বত হন না। Shakespeare যেমন বলিয়াছেন যে—The fire in the flint shows not till it be struck. তেমনি আমাদের কবিও বলিয়াছেন—

> আমার এ বুপ না পোড়ালে গন্ধ কিছুই নাহি চালে, আমার এ দীপ না জালালে দেয় না সে তো আলো ! জনতে মোল ভীত্র দাংন জালো !

তাই কবি জানেন যে—

হাসিকালা হারাপালা দোলে ভাতে,
কাঁপে ছলে ভাতোমন্দ তাতে তাতে,
নাচে জন্ম, নাচে মৃত্যু পাড়ে পাতে,
তাতা থৈগৈ তাতা থিগৈ। — রাজা
বসত্তে কি শুরু কেবল কোটো ফুলের মেলা রে।
পেবিস্নে কি শুকুনো পাতা ধরাজুলের পেলা রে ? — রাজা

"আমাদের থতুরাজের যে গাঁরের কাপড়ধানা আছে, ভার একপিঠে ন্তন, একপিঠে পুরাতন। যথন উন্টে পরেন, তথন দেখি ভক্নো পাতা ঝরা ফুল; আবার যথন পান্টে নেন, তথন সকাল-বেলার মনিকা, সন্ধা-বেলার মানতী,—তথন ফাল্পনের আম্রমঞ্জরী, চৈত্রেথ কনকটাপা। উনি একই মাসুধ ন্তন-পুরাতনের মধ্যে পুকোচ্রি ক'রে বেড়াচেচন।"

—শ্বভূ-উৎস্ব, বদস্ত

আমাদের কবি সত্য শিব স্থন্দরের পূজারী। সত্য কঠোরমৃতি, কড়া মনিব, তাহাকে যে অর্ঘ্য দিতে হয় তাহা ছঃথেরই অর্ঘ্য। এইজ্লন্থ তিনি ভগবানের প্রতিনিধি-রূপে 'ন্যায়দণ্ড' ধারণ করিবার যে 'দীক্ষা' প্রার্থনা করিয়াছেন তাহা বীরের যোগ্য সংগ্রামের দীক্ষা। দেশের জ্বন্তও তিনি যে 'ত্রাণ' প্রার্থনা করিয়াছেন তাহা অশাস্তির পরপারে যে শাস্তি আছে তাহাই (নৈবেছ)। নিরবচ্ছিন্ন শাস্তি তো জ্বড়ত্ব, অশাস্তির মধ্য দিয়া যে শাস্তি উপার্জন করিয়া লইতে হয় তাহাই বীরের কাম্য। কবি অত্যন্ত সহজ্ব ভাবেই বলিয়াছেন—

মনেরে আজ কহ যে,

ভালো-মন্দ गাগাই আহক,

সভোরে লও সহজে। —কণিকা

সভাসন্ধ কবি আরও বলিয়াছেন—

আরাম হ'তে ছিন্ন ক'রে সেই গভীরে লও গো মোরে চাশান্তির অন্তরে যেপায় শান্তি স্থমহান্।

কবি ভাষধর্মের সমর্থক, অভান্নের তীব্র প্রতিবাদী, ইহা তিনি তাঁহার জীবনে ও রচনায় দেখাইয়াছেন—'গালারীর আবেদনে' এই ভাষনিষ্ঠা স্কুল্ট হইয়া প্রকাশ পাইয়াছে।

যিনি শিব, তিনি তো কেবল আরামের দেবতা নহেন, তিনি আবার কন্দ্র। এই কন্দকে স্বীকরে করিয়াই শিবের আরাধনা করিতে হইবে।— 'এক হাতে ওর ক্নপাণ আছে, আরেক হাতে হার'।—গীতালি।

কবি বীরধর্মী, তাই তিনি স্বক্ষেত্রে কাপুর্যতাকে, স্কীর্ণতাকে ধিক্কার দিয়াছেন, রুদ্রতা হইতে মুক্ত হইবার জন্ম তীর আগ্রহ প্রকাশ করিয়াছেন। আমাদের এই নিশ্চেষ্ট জীবনকে কবি দিয়ার দিয়া বলিয়াছেন—ইহার চেয়ে হতেম যদি আরব বেছ্রিন!' একদিকে সকল সংস্কার হইতে মুক্তিলাতের জন্ম যেমন তাঁহার "ছুর্স্থ আশা" দেখা যায়, তেমনি আবার কাপুর্যতাকে তিনি বিদ্ধাপে বিদ্ধ করিয়াছেন, একদিকে 'হিং টিং ছট্' বলিয়া কুসংস্কারকে বাঙ্গ করিয়াছেন, অপর দিকে নিরীহ বর্গপ্রচারক ক্রিসাছেন, পাদ্রীর মাধায় রক্তপাত করিয়া দেওয়ার কাপুর্যতাকে ধির্কার দিয়াছেন—

তদে রে লাগাও লাঠি. কোমরে কাপড় আঁটি'. হিন্দুধর্ম ছাউক রক্ষা, স্বষ্টানী ভোক মাটি।

রবি-রুশ্মি

পুলিশ আসিছে ভাঁতা উচাইয়া, এই বেলা দাও দেওে। শস্ত হইল আর্যধর্ম, ধন্ত হইল গৌড : —মানসী, ধর্মপ্রচার

রবীক্রনাথের সব চেয়ে বড় দান আমি মনে করি,—আমাদের বৃদ্ধিকে সকল সংস্থার ও বন্ধন হইতে মৃষ্টি দেওয়া। এই কথা তিনি বিদর্জন নাটকে প্রথাগতপ্রাণ গতামুগতিক র্যুপতির জ্বানী জয়সিংহকে বলিয়াছেন — আপন মনকে মুক্তি দিবার প্রয়াসও কবির মহৎ দান।

কবির দেশামুরাগ আবালা যে কিরূপ প্রবল তাহা তাঁহার জীবনশ্বতি ও সমস্ত কাব্য সাক্ষ্য দিতেছে। কবি কল্পনা-বিশাস ছাড়িয়া কর্মজীবন বরণ করিতে ব্যগ্র হইয়া ব্যাকুল কঠে বলিয়া উঠিয়াছিলেন—"এবার ফিরাও মোরে"। তাঁহার স্বজাতি-প্রীতি ও মানব-প্রীতি যে কিরূপ প্রবল তাহার দাক্ষী এই কবিতাগুলি—বঙ্গমাতা, স্নেচগ্রাদ, ভারততীর্থ, অপমানিত, প্রাচীন ভারত, শিক্ষা, 'কথা' কাব্যের সমস্ত কবিতা, এবং জাতীয় দঙ্গীতগুলি: कवि "नीत्नेत मण्डी" इटेश "धुलामन्तित" (नवठात आवाधना कविवाद अग्र দেশবাদীকে আহ্বান করিয়াছেন-

> তিনি গেছেন গেখায় মাটি ভেঙে করছে চাষা চাষ, পাথর ভেডে কাটুছে যেথায় পণ, বাট্ছে বারো মাস : রৌদ্র-জলে আছেন দবার দাণে, ধুলা তাঁহার লেগেছে ছই হাতে, ভারই মতন শুচি বসন ছাডি'

আয় রে ধুলার 'পরে। — গীতাঞ্চলি

"বিৰ দালে যোগে যেখায় বিহারো. দেইখানে যোগ তোমার সাথে আমারো:"

কবি অমুভব করেন যে—

राषात्र भारक मवात्र अक्ष्म मोरनत्र इ'रङ मीन. সেইখানে যে চরণ তোমার রাজে. দবার পিছে, সবার নীচে, मव-क्षेत्रारकत्र बाद्य ।

-গীতাঞ্চলি

কবি দেশের অতি সামান্ত লোকের সহিত মিলিত হইয়া তাহাদের আত্মীয় হইতে ইচ্ছা করেন---

ওদের দাপে মেলাও, ধারা চরায় তোমার ধেতু। সীতিমাল্য

কবির কাছে এই ধর্মী তীর্থদেবতার মন্দির-প্রাঙ্গণ (গীতালি), আবার তাঁহার স্বদেশ মহামানবের সাগর-তার বলিয়া ভারত-তার্গ (গীতাঞ্বলি)। কবি তাঁহার স্বদেশকে বিশ্বদেবের প্রতিমৃতি মনে করেন—

> তে বিশ্বনের, মোর কাছে তুমি দেপা দিলে আজ কা বেশে ? দেখিমু ভোমারে পূর্ব-গরনে,

দেশিমু তোমারে **খদে**। —উৎসর্গ

বিশ্বের মধ্যে কবি বিশ্বেষরকে উপলব্ধি করেন বলিয়া বিশ্বপ্রকৃতি তাঁহার কাছে জড় মাত্র নহে। প্রকৃতি তাঁহার কাছে সৌন্দর্যলক্ষ্মী, বিশ্বসোহাগিনী লন্ধী, বিশ্ববাপিনী লন্ধী, বিশ্ববাপিনী লন্ধী (চিত্রা)—তিনি প্রকৃতিকে সংখাধন করিয়া বলিয়াছেন যে—

বিষদোহাগিনী লম্বা, জ্যোতির্মগী বালা, আমি কবি তারি তরে আনিয়াছি মালা।

—-চিত্রা, জ্যোৎসা রাত্রে

প্রকৃতির সঙ্গে মানব-মনের আনন্দের সম্পর্ক রবীন্দ্রনাথই প্রথম বঙ্গসাহিত্যে প্রচার করিয়াছেন। তাঁহার পূর্বগামী কবিরা এতদিন কেবল মাত্র প্রকৃতির বাহ্ন দৃষ্ঠ বর্ণনা করিয়া ক্ষান্ত ছিলেন। কিন্তু তিনিই নববর্ধার সমারোহ দেখিয়া বলিতে পারিয়াছেন—

হৃদর আমার নাচেরে স্মালিকে, ময়ুরের মতো নাচে রে।

কবি যখন শৈশবে ভূত্যরাজকতপ্রের শাসনে একটি ববের মধ্যে থড়ির গণ্ডিতে বন্দী হইয়া ছিলেন, তথন অতি হুর্লত বিলিম প্রকৃতির সহিত ফাঁকে-ফুকোরে যে চোরা-চাহনির বিনিময় হইয়াছিল, সেই গুপ্তপ্রণয় কবি জীবনে ভূলিতে পারেন নাই।

প্রকৃতির ছই রূপ,—রুদ্র আর শান্ত,—হই রূপই কবিকে মুগ্ধ করিরাছে। কাল বৈশাধীর ঝড়, সিদ্ধৃতরক, বর্ধশেষের ঝড়, কবিকে যেমন মুগ্ধ করিয়াছে, তেমনি আবার শরৎ, বসন্ত, বর্ধা ঋতুর শান্ত সৌন্দর্যও তাঁহাকে মুগ্ধ করিয়াছে। তাই কবি বলিয়াছেন—'আমি যে বেসেছি ভালো এই লগতেরে'। মানবের মনন প্রকৃতির সৌন্দর্বসঞ্জাত আনন্দ ও প্রকৃতির সৌন্দর্যের মধ্যে মানবের মনন মিলাইয়া কবি উভয়ের ভেদ-রেথা লুগু করিয়া আনিয়াছেন। কূটীরবাসী পাখী, নীলমণি লভা, আশ্রম-রক্ষ, কেহই তাঁহার সমাদর হইতে বঞ্চিত হয় নাই (বনবাণী)। কবির রক্ষবন্দনা যেন বৈদিক ঋষির স্থক্তের ন্যায় উদাত গন্তীর মনোহর।—

আজ বরধার রূপ হেরি মানবের মাঝে.

চলেছে গরজি', চলেছে নিবিড় সাজে।

—গীতাঞ্জলি

পূর্বেই কবির মত উদ্ধৃত করিয়া দেখাইয়াছি যে, তিনি বলেন—"জীবের মধ্যে অনস্তকে অনুভব করারই নাম ভালবাসা; প্রকৃতির মধ্যে অনুভব করারই নাম ভালবাসা; প্রকৃতির মধ্যে অনুভব করারই নাম সৌন্দর্যসন্তোগ।" এই জন্ত কবি নর-নারীর প্রেমকে আধ্যাত্মিক সাধনা মনে করেন, তাহা ইহলীবনের ভোগেই পরিসমাপ্ত বা পর্যবসিত হয় না, তাহা জন্মজ্বনাস্তরের সাধনার ধন। তাই কবির কাছে নর-নারীর প্রেম নির্মল, প্রশাস্ত, বিক্ষোভবিহীন। অনস্ত প্রেম, স্বরদাসের প্রার্থনা, প্রেমের অভিষেক, পরিশোধ প্রভৃতি কবিতায় কবির মত পরিব্যক্ত হইয়াছে। দাম্পত্যপ্রেমের আদর্শ যে কি তাহা তিনি দেখাইয়াছেন মহুয়ার 'নির্ভয়' নামক কবিতায়—

আমরা হুজনা স্বর্গ-পেলনা গড়িব না ধরণীতে.
মুগ্ধ ললিক অঞ্জনলিক গীতে।
পঞ্চলরের বেদনা-মাগুরী দিয়ে
বাসর-রাত্রি রচিব না মোরা, প্রিয়ে।
ভাগ্যের পায়ে তুর্বল প্রাণে ভিক্ষা না যেন যাচি।
কিছু নাই ভয়, জানি নিশ্চয় ভুমি আছ, আমি আছি!

কবির কাছে নারীপ্রেমে ইন্দ্রিয়সম্ভোগ একান্ত হইয়া উঠে নাই, 'নিক্ষল কামনা' কবিতায় (মানসী) কবি বলিয়াছেন—আকাক্ষার ধন নহে আত্মা মানবের। অতএব 'নিবাও বাসনা-বহিং নয়নের নীরে'।

নর-নারী যথন 'হুঁছ কোরে হুঁছ কাঁদে বিচ্ছেদ ভাবিয়া' এবং 'নিমেবে শতেক ধ্গ দ্র হেন মানে' তথন তাহারা অনেক সময়ে কামনার কল্বে প্রিয়তমকে কলঙ্কিত করে তাই কবি তাহাদিগকে বলিতেছেন— যে প্রদীপ আলো দেবে তাহে ফেল খান, খারে ভালবাদ তারে করিছ বিনাশ

—কড়ি ও কোমল, পৰিত্ৰ প্ৰেম

যখন মানব-চিত্ত পূর্ণ মিলনের জ্বন্ত ব্যাকুল হইয়া প্রিয়ের মধ্যে আপনাকে ও আপনার মধ্যে প্রিয়কে বিলীন করিয়া দিতে চাহে অথচ পারে না, তথন ভাহাদের সেই ব্যর্থতাকে দেখিয়া কবি বলিয়াছেন—

> একি ছরাশার শ্বপ্ন হার গো ঈশব, তোমা ছাড়া এ মিলন আছে কোন খানে।

> > -- কড়ি ও কোমল, পূর্ণ মিলন

কবি রবীন্দ্রনাথ নারীকে ছই রূপে দেখিয়াছেন, একটি তাহার ভোগের রূপ, অপরটি তাহার কল্যানী রূপ। 'বাত্রে ও প্রভাতে' এবং 'ছই নারী' নামক কবিতাদ্বয়ে তাঁহার এই অভিমত পরিবাক্ত হইয়াছে। নারী একদিকে যেমন রাত্রির নর্মস্থী উর্বনী, অপর দিকে সে তেমনি প্রভাতের লক্ষ্মী কল্যানী। এই কল্যানী মৃতিকে বন্ধনা করিয়া কবি বলিয়াছেন—

দর্বশেষের গান্টি আমার আছে তোমার তরে! ত্রানার

নারী কবির কাছে অবলা মাত্র নহে, তাহার মধ্যে যে আ্যাশক্তির অমিত সম্ভাবনা নিহিত হইয়া আছে, তাহার সম্বন্ধে সে অচেতন বলিয়াই সে অবলা হইয়া অবহেলিত ও নির্যাতিত হয়। তাই তে' কবি সাধারণ মেয়েকে সম্বোধন করিয়া তঃথ করিয়াছেন—

> হায় রে দামান্স মেয়ে, হায় রে বিধাতার শক্তির অপবায় !

তাই তিনি সকল নারীকে বিধাতার শক্তির অপবায় হইয়া না থাকিয়া 'সবলা' হইতে আহ্বান করিয়াছেন—

> নারীকে জাপন ভাগ্য জয় করিবার কেন নাট দিবে অধিকার, হে বিধাতা !

যাব না বাসর-কক্ষে বধূৰেশে বাজায়ে কিঞ্জিনী, আমারে প্রেমের বীর্ষে করে। অশঙ্কিনী ! বীর-হস্তে বরমাল্য লব এক্ষিন,

রবি-রশ্মি

সে লগ্ন কি একান্তে বিলীন
কীনদীপ্তি গোধ্লিতে !
কভু তারে দিব না ভূলিতে
মোর দৃপ্ত কঠিনতা
বিনম্র দীনতা
সম্মানের যোগা নহে তার,
কেলে দেবে। আচ্ছাদন ধুর্বল লক্কার।

হে বিধাতা, আমারে রেখো না বাক্যগীনা,
রক্তে মোর জাগে গড়বীণা,
উত্তরিয়া জীবনের সর্বোন্নত মুহুর্তের 'পরে
জীবনের সর্বোত্তম বাণী যেন করে
কঠ হ'তে
নির্বারিত শ্রোতে।
যাগ মোর অনির্বচনীয়
ভারে যেন চিত্ত মাঝে পার মোর প্রিয়।
—মহুরা, সং

সকল নারীর আদর্শরূপে চিত্রাঙ্গদাও এই কথা অর্জুনকে বলিয়াছিলেন—

নারীর নারীত্ব যে সর্বাবস্থাতেই অক্র থাকে, তাহা অবস্থা ও সময় বিশেষে স্থা থাকে মাত্র, এই কথা কবি প্রচার করিয়া নারীর মর্যাদা রক্ষা করিয়াছেন। প্রতিতা নারীর মধ্যেও তাহার হৃদয়ের মাধুর্য ও মাহাত্মা দেখিয়া তাহাকে কবি সন্মান দেখাইতে কৃষ্টিত হন নাই। প্রতিতা নারীকে দিয়া তিনি বলাইয়াছেন—

পরিশিষ্ট---রবীম্পকাব্য-পরিক্রমণ

নাহিক করম, লজ্জাসরম,

জানিনে জনমে সতীর প্রধা,

তা ব'লে নারীর নারীষ্টুক্

ভুলে যাওয়া দে কি কথার কথা! — কাহিনী, পতিতা

পতিতার হৃদয়-মাহাত্মা দেখাইয়া কবি হুটি সনেট লিথিয়াছেন, তাহার একটির নাম 'করুণা' ও অপরটির নাম 'সতী' (চৈতালি)।—

অপরাহে ব্লিচছর নগরীর পথে
বিষম লোকের ভিড়; কর্মশালা হ'তে
ফিরে চলিয়াছে ঘরে পরিশ্রান্ত জন
বাঁধমুক্ত ভটিনীর স্রোত্তের মতন।
উপ্রেখিদে রগ-ভাখ চলিয়াছে ধেয়ে
ক্ষুণ্ণ আর সারেশীর কশাখাত পেয়ে।
হেনকালে পোকানীর পেলামুদ্ধ ছেলে
কাটা ঘুড়ি ধরিবারে ছুটে বাত মেলে।
অকস্মাৎ শকটের তলে গল পড়ি',
পাষাণ-কঠিন পণ উঠিন শিহরি'!
সহসা উঠিল শুছ্যে নিলাপ কাতার!
হর্দে ধন দয়াদেবা করে হাতাকার!
উপ্রেপিনে চেয়ে দেখি ঋলিত-বসনা
লুটায়ে লুটায়ে ভূমে কাদে বারাসনা!

পতিতার মনে প্রকৃত প্রেমের স্পর্ণে এক নিমেষেই যেমন,—

জননীর শ্বেহ, রম্পার স্মা,

কুমারীর নব-নীরব-প্রীতি

আসার সময়-বীণার তন্ত্রে

বাজায়ে ভুলিল মিলিত গীতি !

তেমনি সামাজিক বিচারে কলঙ্কিনী নারীও প্রেমের একনিষ্ঠতা ও প্রেমের জরু ছঃখ বরণের দারা সতীত্বের মর্যাদা পাইবার যোগ্যা হইয়া উঠে—

সতীলোকে বদি' আছে কত পতিব্ৰতা পুরাণে উজ্জ্বল আছে যাহাদের কথা। আরো আছে শত লক্ষ অক্তাত-নামিনী থাাতিহীনা কীতিহীনা কত না কামিনী,— শুধু শীতি ঢাপি' দিয়া মুছি' ল'নে নাম
চলিয়া এসেছে তারা ছাড়ি' মর্ত্যধাম।
তারি মাঝে বসি' আছে পতিতা রমণী,
মর্ত্যে কলন্ধিনী, স্বর্গে স্তীশিরোমণি!
——চৈতালি, সতী

কবি রবীন্ধনাথ মানব-প্রক্লতি ও বিশ্ব-প্রকৃতি উভরের মধ্যেই অনন্তেরই শীলা প্রত্যক্ষ করিয়াছেন বলিয়া তাঁহার কাছে কিছুই তৃচ্ছ নয়, কিছুই কুল নয়। তিনি বলিয়াছেন---'ছোট-বড়-হীন দবার মাঝারে করি চিত্তের স্থাপনা!' এই চিত্ত-স্থাপনার ফলে তিনি বিশ্বরূপের মধ্যে বিশ্বেশবের লীলা অতি সহজেই অমুভব করিয়াছেন। তাঁহার এই আধ্যাত্মিকতা তাঁহার ব্যক্তিত্বকে পূর্ণতা দান করিয়াছে। নৈবেগু, থেয়া, গীতাঞ্জলি, গীতিমাল্য, গীতালি, ব্রন্ধ-সন্দীত প্রভৃতির মধ্যে কবির আধ্যাত্মিকতার ক্রম-পরিণতির ও নিবিড়তার পরিচয় পাওয়া যায়। কবির ভগবান কথনো প্রভু, কথনো বন্ধু, কথনো বা প্রিয় বা প্রিয়া, কথনো বা কেবল মাত্র 'ভূমি' বা 'ভিনি', কথনো বা একেবারে নির্ব্যক্তিক। মধ্যযুগের ভারতীয় সাধক কবীর, দাতু, নানক, রজ্জবন্ধী, মালিক মহমুদ্ জায়গী প্রভৃতি, এবং স্ফী সাধকেরা ভগবানকে লইয়া সাম্প্রদায়িকতার টানাটানি ও বিরোধ দেখিয়া ভগবানকে কোনো নামে অভিহিত করেন নাই। যিনি সকল নাম-রূপের অতীত তাঁহাকে কোনো একটি বিশেষ নামে অভিহিত করিলেই তাঁহাকে সাম্প্রদায়িকতার ক্ষুদ্র গণ্ডিতে আবদ্ধ সন্ধীর্ণ করিয়া কেলা হয়। • এইজন্ম আমাদের দেশের বাউল ও ভাটিয়াল গানে ভগবান কথনো দরদী, কথনো গাঁই, কথনো বন্ধ, কথনো বা কেবল মাত্র সর্বনাম অর্থাৎ যাহা সকলেরই নাম। রবীজ্ঞনাথের ভগবান কোনো বিশেষ নামে চিচ্চিত হন নাই বলিয়াই তাঁহার গীভাঞ্জলি প্রভৃতি ভক্তিরসাত্মক কারা সর্বধর্মের সাধকদের সমাদরের শামগ্রী হইতে পারিয়াছে। কবির আধ্যাত্মিকতা ও ভক্তি কেবল মাত্র ফদয়ের আ-বেগ বা e-motion নয়, তাহা যুক্তির ভিত্তির উপরে স্কুপ্রতিষ্ঠিত, অপ্রমন্ত, বলিষ্ঠ, আত্মনির্ভর। এইজ্বল্য কবি প্রার্থনা করিয়াছেন—

বে ভক্তি তোমারে ল'য়ে ধর্য নাতি মানে,
মৃত্রুটে বিহ্নল হল নৃত্যা-নীত-নানে
ভাবোমাদ মন্ত্রতায়, সেই জ্ঞানহারা
উদ্প্রান্ত উচ্চ্ল-কেন ভক্তি মদধারা
নাতি চাতি নাথ। দাও ভক্তি শান্তি-রম,
বিদ্ধা সুধা পূর্ব করি' মঙ্গল-কলস

সংসার-ভবন-দ্বারে। যে ভক্তি-অমৃত
সমস্ত জীবনে মোর ইইবে বিস্তৃত
নিগৃত গভীর সর্ব কর্মে দিবে বল,
বার্থ শুভ চেষ্টারেও করিবে সকল
আানদে কল্যাণে। সর্বপ্রেমে দিবে তৃপ্তি,
সর্ব দ্বংখে দিবে কেম, সর্ব স্থ্পে দীবি
দাহহীন। সম্বরিয়া ভাব-অগ্রনীর
চিত্ত রবে পরিপূর্ণ অমত্ত গভীর — নিবেছ, অপ্রমত্ত

অথচ কবির এই আধ্যাত্মিকতা কেবল মাত্র শুদ্ধ জ্ঞান ও বৃদ্ধির বিচার-বিতর্ক নহে,—এই আধ্যাত্মিকতার সরস প্রেম-মধুর আত্ম-নিবেদনের ও প্রিয়-মিলন-সঞ্জাত আনন্দের অভাব নাই।

কবি আনন্দময়েরই উপাদক, তাঁহার কাছে—'আনন্দই উপাদনা আনন্দময়ের !'—চৈতালি, 'অভয়'। কবির কাছে 'গারে বলে ভালবাদা তারে বলে পূজা !'—চৈতালি, 'পুণোর হিদাব'। কারণ—'আর পাবো কোথা, দেবতারে প্রিয় করি, প্রিয়েরে দেবতা !'—দোনার তরী, 'বৈষ্ণব কবিতা'। কবি জানেন—

নিতাকাল মহাজেমে বলি' বিপচুপ তেমে-মাকে হোৱছেন আল-প্ৰতিৱপ ! —তৈতালি, ধান

কবি শুনিতে পান—'জগং জ্ভে উদায় স্থারে আনন্দ-গান বাজে।' এবং তিনি জানেন—'জগতে আনন্দ-যজ্ঞে 'গামার নিমন্ধণ'। কবি বিশ্ববাসীকে আহ্বান করিয়া বলিয়াছেন—

আনন্দেরি সংগর থেকে এসেছে আজ বান, দাড়ে ধ'রে অংজ বদ্ধে সবাই, উন্নেধে সবাই টান! —গীতাঞ্চলি

কবির দেবতা কথনো রাজার ছলাল হইয়া ঘারে উপনীত হন, জদয়ের মণিহার উপহার পাইবার জন্ত, কথনো তিনি বর ও বঁধু-রূপে কবির মনোহরণ করেন। কবি নাম-রূপহীন অপরপের প্রেমে মর্য। কবির এই মিদ্টিসিজ্ম্ সলোমনের দাম, ডেভিডের গীতি, দেউ জান্দিস্ অক আাদিসি, টমাম্ এ কেম্পিস্ প্রভৃতি ও ফুলী কবিদের ভক্তির উক্তি শ্বরণ করাইয়া দেয়। ভগবানকে বর-রূপে বঁধু-রূপে বোধ করা বৈষ্ণব-ভাব-সাধনার একটা অঙ্গ। বৃন্দাবনে একমাত্র পুরুষ শ্রীকৃষ্ণ, আর স্বাই গোপী। তাই চৈতন্যচরিতামৃত্ত গ্রেষ্ক রচয়িতা প্রার্থনা করিয়াছেন—

অস্ত্রের হৃদর মন,

মোর মন বৃন্দাবন,

মনে বনে এক করি' জানি।

তাঁহা তোমার পদব্য

করাহ যদি উপয়,

তবে তোমার পূর্ণকৃপা মানি ॥

প্রাণনাথ। গুন মোর সত্য নিবেদন। — চৈ, চ, মধ্য ১৩

ইংরেজ কবিরাও ভগবানকে বর ও বঁধু রূপে অমুভব করিয়াছেন।

What if this Friend happen to be-God.

-Browning, Fears and Scruples.

For me the Heavenly Bridegroom waits;

-Tennyson, St. Augustine's Eve.

The bridegroom of my soul I seek, Oh, when will be appear! —Cowper

কবি রবীক্সনাথের স্বর্গ কোনো বিশেষ সূথ্যমন্ত্র প্রলোভনমন্ত স্থান মাত্র নহে। কবি কল্লিত স্বর্গ ইইতে এই মাটির ধরণীকে অধিক সমতামন্ত্রী পুণ্যমন্ত্রী মনে করেন, ভাই তিনি স্বর্গ ইইতে বিদায় লইন্ত্র। চলিয়া আসিবার সমন্ত কিছু-মাত্র বেদনা তো অনুভব করেনই নাই, বরং আনন্দ অনুভব করিয়াছিলেন। এই স্বর্গ ভগবানের রচনা নহে, তিনি ইহা রচনা করিবার ভার সকল মানবের উপরে দিয়া রাথিয়াছেন—

তুমি তো গড়েছ শুরু এ মাটির ধরণী ভোমার
মিলাইয়া আলোকে আঁধার !

শৃষ্ঠ হাতে সেথা মোরে রেপে
হাসিছ আপনি সেই শৃষ্ঠের আড়ালে গুপ্ত থেকে।

দিয়েছ আমার 'পরে ভার
ভোমার কাটি রচিবার —বলাকা, ২৮ নম্মর

কবি স্বৰ্গ-সম্বন্ধে কি মনে করেন তাহা তাঁহার বলাকার একটি কবিতায স্থান্দাই হইয়াছে।

ন্ধ্য কোধার জানিদ্ কি তা ভাই !
তার ঠিক-ঠিকানা নাই।
তার আরম্ভ নাই, নাই রে তাহার শেষ
ওরে নাই রে তাহার দেশ,
ওরে নাই রে তাহার দিশ।
ওরে নাই রে দেবস, নাই রে তাহার নিশা !

কিরেছি সেই ধর্মে শৃত্যে শৃত্যে শৃত্যে কিরেছি সেই বাকা মানুষ!
কত যে-নুগনুগান্তরের পূণে;
জন্মেছি আজ মাটির 'পরে গুলা-মাটির মানুষ।
কর্ম আজি কৃতার্থ তাই আমার দেহে,
আমার প্রেমে, আমার স্নেহে,
আমার বাক্লি পুকে,
আমার লক্ষা, আমার সক্ষা। আমার জ্বংশ স্থেধ।
আমার জন্ম গুড়ারি তরক্ষে
নিতা নবীন রচের ছটার পেলায় সে যে রক্ষে।

স্বৰ্গ আমার জন্ম নিল মাটি মারের-কোলে ! ব্যতাদে সেই প্ৰৱ ছোটে আমন্দ-কলোলে !

শুর্গ যদি এই মাটির ধরণীর বুকে আমার মধ্যে আমার স্পষ্ট হয়, তাহা হইলে এথান হইতে মুক্তি পাইতে কবি চাহেন না ৷ কেবল মাত্র মুক্তি তো অর্থপূন্য, বন্ধন যদি নাই থাকে তবে মুক্তি হইবে কিলের হইতে ! বন্ধন শীকার করিলেই তো মুক্তি পাওয়া যাইবে ৷ তাই কবি বলিয়াছেন—

> বৈৱাগ্য সাধনে মৃক্তি সে আমার নয়। অসংখ্য বন্ধন মাথে মহানন্দময় গতিব মৃক্তির স্বাম। — নাবেছা, মৃক্তি

কবি বলেন—

মরিতে চাতি না আমি ফুলর ভূবনে, মানবের মাঝে আমি বাঁচিবারে চাই।

তাই ভগবানের কাছে তাঁহার প্রার্থনা উত্থিত হইয়াছে—

ফুক্ত করে। হে সবার সঙ্গে, মুক্ত করে। হে বন্ধ।

কবি সকলের সহিত অনাসক্ত হইয়া যুক্ত থাকিতে চাহেন পদ্মপত্রম্ ইবান্তসা।
আনন্দবালী কবি মৃত্যুভয় জয় করিয়াছেন, তিনি মনে করেন মৃত্যু এই
ভীবনেরই একটি অবস্থা; ফুলের যেমন পরিণতি ফলে, মান্ত্রের যেমন বাল্য
বৌবন বার্ধকা, তেমনি জীবনের পরিণতি মৃত্যুতে—

ওগো আমার এই জীবনের শেষ পরিপূর্ণতা, মরণ, আমার মরণ, তুমি কও আমারে কথা। — গীতাঞ্ললি

এইজনাই কবি কিশোর বয়সেই বলিতে পারিয়াছিলেন—

মরণ রে, তুঁহ মম খ্রাম সমান।

--ভামুদিংহ ঠাকুরের পদাবলী

মৃত্যু কবির কাছে ঝুলন-থেলা, তাহা ইং-জীবন ও পর-জীবনের মধ্যে দোল খাওয়া। কবীর সাহেব ও সিন্ধী সাধক কবি বেকস্ যেমন বলিয়াছিলেন যে মৃত্যু হইতেছে ঝুলন বা দোলা বা ইংলোকে পরলোকে বল-লোফাসুফি খেলা, তেমনি রবীন্দ্রনাথও জানেন গে মরণই জীবনের শেষ নহে, কবি জানেন যে শেষের মধ্যে অশেষ আছে !*

প্রথম-নিলন ভীতি ভেঙেছে বধুর, তোমার বিরাট মৃতি নিরখি' মধুর। সর্বত্র বিবাহ-বাঁশী উঠিতেছে আজি। সর্বত্র তোমার ফ্রোড ধেরিতেছি আজি।

করীর মরণকে ঝুলনের সজে তুলনা করিয়া বলিয়াছেন—
জনম মরণ বাঁচ দেহ অন্তর নহাঁ—
দাচছ ঔর বাম য়ুঁ এক এক আহাঁ।
জনম মরণ জহা তারী পরত হৈ;
হোত আনলা উহ পানন গাজৈ।
উঠত ঝনকার তই নাদ অনহদ ঘুরৈ,
তিরলোক-মহলকে প্রেম বাজৈ।
চল্র তপন কোটি দীপ বরত হৈ,
তুর বাজে উহা দত্ত ঝুলৈ।
পারে ঝনকার উহ নুর বর্ষত রহৈ,
রম্পীবৈ উহ ভক্ত ভুলৈ।

সিকুদেশের ভক্ত বেকস্ মাতা ২২ বৎসর বরদে অষ্টাদশ শতাব্দীর শেষভাগে মারা যান তিনি মৃত্যুর সময়ে মাতাকে প্রবোধ দিয়া জন্ম ও মৃত্যুকে জগজননী ও পাথিব জননীর মধ্যে বল-লোকালুকি থেলার সলে ভুলনা করিয়া বলিয়ছিলেন—

> উভয় মাতু বাঁচ খেল চলে— গেঁদ জ্বা মোকো দেঈ লেই।

ইহলোকে যে জীবনদেবতা অস্তর্যামী আমাকে সার্থকতা দান করেন, তিনিই মরণ-সিন্ধুপারে অবগুঠন মোচন করিয়া দেখা দেন, তথন বিশ্বর-শুদ্ভিত হৃদরে মামুর বলিয়া উঠে—'এথানেও তুমি জীবনদেবতা!'

কবি মৃত্যুকে মাতৃপাণির ভাষ পরম নির্ভরযোগ্য মনে করিয়াছেন—

দে যে মাতৃপাণি

স্তন হতে স্তনান্তরে লইতেছে টানি'।

* * *

স্তন হতে তুলে নিলে শিশু কাঁছে ভৱে,
মুহুতে আহাস পায় গিয়ে শুনান্তরে : — নৈবেছ

কবীর যেমন মৃত্যুকে তাঁহার জীবনের বর বলিগা আনন্দে বরণ করিগা লইগ্ন। ছিলেন, আমাদের কবির কাছেও মৃত্যু সেইরূপ, গৌরীর কাছে ত্রিলোচনের তুল্য।

ভগবান্ তো মামুষের "এই জীবনে ঘটালে মোর জন্ম-জন্মান্তর !" অতএব যে মৃত্যু জন্মান্তরের স্তান করিতেছে তাহাকে ভর কি ! এইজন্ম কবি নিজেকে বলিয়াছেন তিনি মৃত্যুঞ্জয়—

> আমি মৃত্যু-চেয়ে বড়---এই শেষ কথা ব'লে যাব আমি চ'লে।

> > —পরিশেষ, মৃত্যুপ্তয়

उन्हें क जनम (भारत) देश हैं।

খেলু আজ নোকু দেই :

—শীৰুক্ত কিতিমোপন সেনের সংগ্রহ

ইউরোপীয় লেখকেরাও মৃত্যুকে অনুতের সেতু বলিয়াছেন-

Our life is a succession of deaths and resurrections; We die, Christopher, to be born again.

-- Romain Rolland.

From death to death thro' life and life and find Nearer and nearer Him, who wrought Not matter nor the finite-infinite.

-Robert Browning.

Earth knows no desolation.

She smells regeneration

In the moist breath of decay.

-Meredith.

এবং সর্বশেষে কবি এই বলিয়া মনকে অভয় দিয়াছেন—

নব নব মৃত্যু-পথে

তোমারে পুজিতে যাব জগতে জগতে।

আর—

यानात प्रित्न এই कथांकि न'रण त्यन गाहै, या त्यर्थाक, या त्यर्थाक, कुलना जात नाहें।

এবং---

অবশ্যে বুক ফেটে শুধু বলি আমি'--তে চিরমুন্দর, আমি ভোরে ভালবাসি।

কিন্তু কবি চিরস্তন, তাঁহার তো মৃত্যু বলিয়া কিছু নাই।

এই সকল কারণে কবি রবীক্রনাথ আমাদের সকলের ফদরের ক্রি, আমাদর মুথপাত্র, আমাদের মনের অফুট কথাগুলিকে তিনি আকার দিরাছেন, যে কথা আমরা বলিতে চাই অথবা বলিতে জানি না, সেই-সব কথা তিনি আমাদের হইয়া বলিয়া দিয়াছেন, তাই তিনি আমাদের সকলের এত প্রিয় কবি। তিনি ছাথে সাস্থনা-দাতা, আনন্দের সঙ্গী, অবসাদে উৎসাইদাতা, কুসংস্কার হইতে উদ্ধার-কর্তা, বৃদ্ধির মৃজিদাতা। এই ক্বির আবিভাবে বিশ্ববাদী যে কন্ত দিকে কন্ত লাভবান্ হইয়াছে তাহা বলিয়া শেষ করা ছঃসাধ্য।

খ। রবীক্র-কাব্যের একটি প্রধান মূর

কবিগুরু রবীক্রনাথ তাঁর 'জীবন-মৃতি'তে লিথেছেন—"কুদুকে লইয়াই বৃহৎ, সীমাকে লইরাই অসীম, প্রেমকে লইরাই মৃক্তি। প্রেমের আন্তর্মধনি পাই, তথনি বেখানে চোধ মেলি সেবানেই দেখি সীমার মধ্যেও সীমানাই। প্রকৃতির সৌলর্য যে কেবলমাত্র আমারই মনের মরীচিকা নহে, তাহার মধ্যে যে অসীমের আনলই প্রকাশ পাইতেছে এবং সেইজ্বন্তই এই সৌলর্যের কাছে আমরা আপনাকে তুলিয়া যাই। বিশ্বনের প্রকৃতিতে যেখানে নির্মের ইল্লজালে অসীম আপনাকে প্রকাশ করিতেছেন, সেধানে সেই নির্মের বাঁধাবাঁধির মধ্যে আমরা অসীমকে না দেখিতে পারি, কিন্তু সেধানে সৌল্বর্য ও প্রীতির সম্পর্কে হলর একেবারে অব্যবহিতভাবে ক্রের

মধ্যেও সেই ভূমার স্পর্ণ লাভ করে, সেই প্রত্যাহ্য়বাধের কাছে কোনো তর্ক থাটিবে কি করিয়া ? এই হাদয়ের পথ দিয়াই প্রকৃতি সন্ন্যাসীকে আপনার সীমা-সিংহাসনের অধিরাক্ত অসামের খাস দরবারে লইয়া গিয়াছিলেন। প্রেমের সেতৃতে যথন ছই পক্ষের ভেদ ঘূচিল, গৃহীর সঙ্গে সন্মাসীর যথন মিলন ঘটিল, তথনই সীমায় অসীমে মিলিত হইয়া সীমার মিথাা ভূচ্ছতা ও অসীমের মিথাা শৃত্ততা দূর হইয়া গেল। আমার নিজের প্রথম জীবনে আমি যেমন একদিন আমার অন্তরের একটা অনির্দেশ্যতাময় অন্ধকার গুহার মধ্যে প্রবেশ করিয়া বাহিরের সহজ অধিকারটি হারাইয়া বিদ্যাছিলাম, মধ্যে প্রবেশ করিয়া বাহিরের সহজ অধিকারটি হারাইয়া বিদ্যাছিলাম, মধ্যে প্রবেশ করিয়া বাহিরের সহজ অধিকারটি হারাইয়া বিদ্যাছিলাম, মধ্যে প্রবিশ্ব হইতেই একটি মনোহর আলোক হলছের মধ্যে প্রবেশ করিয়া আমাকে প্রকৃতির সঙ্গে প্রিপূর্ণ করিয়া মিলাইয়া দিল। তালার সমস্ত কাবা-বচনার ইহা একটি ভূমিকা। আমার তো মনে হয় আমার কাব্যবহুলার এই একটিমাত্র পালা। সে পালার নাম দেওয়া মাইতে পারে 'সীমার মধ্যেই অসীমের সহিত মিলন সাধনের পালা।"

ববীজনাথ সতা শিব স্কলেরের উপাসক; প্রকৃতি দৌলটের অনুরন্ধ ভাপ্তার; তাই তিনি প্রকৃতির রূপ-মুগ্ধ প্রেমিক। প্রত্যেক বড় কবির মধ্যে এইটিই প্রধান লক্ষণ যে, তাঁর বর্ধনীয় বিষয়বন্ধকৈ ছাড়িয়ে তাঁর ভাব উপচে ছাপিয়ে ওঠে—তাঁর রচনার দীমার মধ্যে তাঁর ভাব বন্ধ খাক্তে চায় না; ভদতিরিক্তে, দীমার বহিভ্তি একট কিছু প্রকাশ কর্বার আকুতি দেই রচনা প্রকাশ করে। রবীজনাথের সমস্ত কাবোর ভিতর দিরে একটি আকুলতাব স্কর প্রনিত হাতে শোনা যায়। সেক্তর হচ্ছে দীমার মধ্যে অদ্বীমের, বিশেষের মধ্যে অবিবাহ রাজপের উপলব্ধির জন্ম অবীরতার প্রের, যে ভারটিকে তিনি প্রবতীকালে রচিত একটি কবিভায় প্রকাশ করেছিলেন এবং যে-কবিভাটিকে আমি তার প্রথম প্রকাশিত কাবা-চয়নিকায় তার সমগ্র কাবোর মূল স্কর-স্বরূপ মুখ্বন্ধ ও ভূমিকান্ধপে ছেপেছিলাম—

'ধুপ আপনাৰে মিলাইতে চাহে গৰে,
গথানে চাহে বুপেরে রহিতে ছুড়ে!
থ্র আপনারে ধরা দিতে চাহে ছুল্লে
ছুল ক্রিয়া ছুটে খতে চায় মুবে।
ভাব পেতে চায় রূপের মাধারে অঙ্গ,
রূপ পেতে চায় জাবের মাধারে ছাড়া।

্ অসীম সে চার সীমার নিবিড় সক্ষ,

সীমা হ'তে চার অসীমের মাঝে হারা।
প্রলয়ে স্ফলনে না জানি এ কার বৃত্তি,
ভাব হ'তে রূপে অবিরাম বাওরা আসা।
বন্ধ ফিরিছে খুঁজিয়া আপন মৃত্তি,
মৃক্তি মাগিছে বাঁধনের মাঝে বাসা।"

এই ভাবটিকে রবীন্দ্রনাথের প্রথম ও প্রধান মর্ম-ব্যাখ্যাতা বন্ধুবর অজিত কুমার চক্রবর্তী "একাম্বিক ভাব-গতি" নাম দিয়েছিলেন। বাস্তবিক পক্ষেরবীন্দ্রনাথের সমস্ত রচনার মধ্যে এই সীমাকে উত্তীর্ণ হ'য়ে বাধাকে অস্বীকার ক'রে বা বাধাকে কাটিয়ে অগ্রসর হ'য়ে চলবার একটা আগ্রহ ও বাগ্র তাগাদা স্পষ্টই অমুভব করা যায়। যা লক্ষ, তাতে সন্তুই থেকে তৃপ্তি নেই; অনায়ত্তকে আয়ত্ত কর্তে হবে, অজ্ঞাতকে জান্তে হবে, অদৃষ্টকে দেখে নিতে হবে—এই হচ্ছে রবীন্দ্রনাথের বাণী, এই হচ্ছে তাঁর প্রধান বক্তব্য।

বেখানে গতি আছে, সেখানে ব্যাপ্তিও আছে। তাই ববীক্রনাথের কবিতার আর একটি বিশেষত্ব হছে সর্বায়ুভূতি—জল-স্থল-আকাশে, লোক-লোকাস্তরে, সর্বদেশকালে ও সর্বমানবসমাজে আপনাকে পরিব্যাপ্ত ক'রে মেলে দিতে তিনি নিরস্তর উৎস্থক। বে-কবি দেশ-কালকে অতিক্রম ক'রে শাখত সত্যকে যত বেশী প্রকাশ করতে পারেন, তিনি তত বড় কবি। রবীক্র এই হিসাবে কবীক্র, তিনি শাখত সত্যের একজন শ্রেষ্ঠ পুরোহিত। সামান্ত প্রাণক্ষের মাঝে, শিশুর হাত্ত-কণিকায়, দুলের হিল্লোগিত রূপ-স্থমায়, নদী-সমুদ্রের তর্ম্প-ভঙ্গে যে প্রাণ-শক্তি দীপামান হ'রে ওঠে, তাকে তিনি নব নব রূপ, নব নব জ্ঞী ও অভিনব মহিমা দান করেছেন; ভূদ্ধতমও তাঁর কাব্যে মর্য্যাদা লাভ করেছে, কারণ ভূদ্ধতম পুলিকণাকেও তিনি অসীম স্ঠি-রহস্তের অন্তর্ম্প ব'লে জেনেছেন। নোমগোত্রহীন দুলের মধ্যে বিশ্ব-স্থমার আভাস পেয়েছেন, সমাজে ছোট-লোক ব'লে গণ্য অভি সাধারণ লোকের ছেলের মধ্যেও তিনি বিশ্বমানবের মহন্ন উপলব্ধি করেছেন।)

আমাদের দেশের দার্শনিকদের ধারণা ছিল যে সত্য স্থির। শঙ্করাচার্য
সত্যের লক্ষণ নির্দেশ ক'রে গেছেন—"কালত্রয়াবাধিতম্ সত্যম্"—যা ভূত
ভবিদ্যং ও বর্তমান এই ত্রিকালে সমভাবে অবাধে অবস্থিতি করে, যার কমিন্
কালেও কোনো পরিবর্তন হয় না, তাই সত্য। কিন্তু বর্তমান যুগের যুরোপীয়

দর্শনের বাণী হচ্ছে যে, সত্য গতিতে, সত্য স্থিতিতে নয়; যার গতি নেই, ফুতি নেই, তা হ্রুড়, তা কখনো সত্য হ'তে পারে না। যার জীবনী-শক্তি আছে সে আর সকল জিনিসকে নিজের ক'রে নিয়ে তবে নিজেকে প্রকাশ করে, তার অন্তিম্ব সমগ্রের মধ্যে; থণ্ডভাবে দেখ্লে তার পরিচয় পাওয়া যায় না। কাল অবিভাল্পা, কাল অনন্ত-প্রবাহ, মহাকালের মধ্যে ভূত, ভবিশ্বৎ, বর্তমান নেই; ভূত, ভবিশ্বৎ ও বর্তমান একটি বিশেষ খণ্ডকালের সম্পর্ক, একটি বিশেষ ক্ষণের তুলনার কবি কালিদাসের কাল তাঁর কাছে ছিল বর্তমান, কিন্তু আমাদের কাছে তা হ'য়ে গেছে ভূত বা অতীত; আবার কবি রবীশ্রনাথের কাল আমাদের কাছে বর্তমান, কিন্তু তা "আজি হ'তে শত বর্ষ পরে" "দূর ভাবী শতানীর" লোকেদের কাছে ভূত হ'য়ে যাবে। এই অনন্ত কাল ও দেশ ব্যেপে নিজেকে প্রসারিত ক'রে দেওয়ার 'ইছ্ছাই' রবীশ্রকাব্যের একটি প্রধান স্কর।

রবীজনাথ তাঁর প্রথম গৌবন থেকে পরিণত থৌবন-কাল পর্যন্ত কেবল এই গতির মাহাত্মাই প্রচার ক'রে এসেছেন; আমাদের এই নিশ্চল জড়-ভাবাপন্ন পঙ্গু দেশে কিশোর কবি অগ্রগতির জভু বিশ্ববাসীকে আহ্বান করেছিলেন। আমাদের এই জড়-ধর্মী দেশে আজ্কাল যে একটু নড়বার লক্ষণ দেখা যাচ্ছে, তার মূলে আমাদের এই কবির উদ্যোধিনী বাণীর অমুপ্রেরণা অনেকখানি রয়েছে।

আমরা দেখ্তে পাই, কবি কিশোর বয়দেই গতির মাহাত্মা প্রচার কর্বার জন্ম "পথিক"-বেশে যাত্রা করেছেন এবং সকলকে তাঁর যাত্রা-পথের সঙ্গী হবার জন্ম আহ্বান ক'রে বলেছেন—

"ছুটে আয় তবে ছুটে আয় সবে,

অতি দূর দূর যাব ;
কোপায় যাইবে : — কোপায় যাইব !

আনি না আমরা কোপায় যাইব : —
সমুধের পথ যেথা ল'য়ে যায়,—''

শুধু 'অকারণ অবারণ চলার' আবেগ তিনি বরাবর অমুভব করেছেন, তার "চলার বেগে পায়ের ক্রান্ত জেগেছে" আকৈশোর ৷ এই গতির আছবানেই "নিঝারের স্থা-ভঙ্গ" হয়েছে ৷ আমাদের কবির "প্রভাত-উৎসব" গতিরই উৎসব :…

'ৰূপৎ আদে প্ৰাণে, জগতে যায় প্ৰাণ, জগতে প্ৰাণে মিলি' গাহিছে এ কি গান।"

প্রভাত-উৎসবের এই গতি অস্তর থেকে বাহিরে এবং বাহির থেকে অস্তরে, গতির এক অপূর্ব গতায়াত; বিশ্বব্রদাণ্ডকে আপন অস্তরে গ্রহণ ক'রে আপন অস্তরকে বিশ্বব্রদাণ্ডে মেলে দেবার আনন্দ এই কবিতায় প্রকাশ পেয়েছে ফকবির অস্তরের গতি-বেগ "স্রোত" হ'য়ে রুয়ে চলেছে; এবং কবি সকলকে আহ্বান ক'রে বলেছেন—

"জগথ-ম্রোচত ভেসে চল', যে যেথা আছ ভাই। চলেছে যেথা রবি শশী চল' রে সেথা যাই।"

কবির কাছে যাত্রার আহ্বানই "মঙ্গল-গীতি"---

"থাত্রী দবে ছুটিয়াছে শৃত্তপথ দিয়া,
উঠেছে দঙ্গীত-কোলাহল,
ওই নিবিলের নাথে কণ্ঠ মিলাইয়া
মা আমরা থাত্রা করি চলু।
থাত্রা করি বুথা যত অহস্কার হ'তে,
থাত্রা করি ছাড়ি' হিংসা ছেম,
থাত্রা করি স্বর্গমিয়া করণার পথে
শিরে ধরি' মত্যের আদেশ।
থাত্রা করি মানবের হৃদ্যের মান্ধে
প্রানে ল'রে প্রেনের আলোক,
আর মানগা থাত্রা করি জগতের কাজে
তৃচ্ছু করি' নিজ ছঃগ শোক।"

কবির যৌবন-স্থলত হাদ্যাবেগ যথন তাঁর মনোবীণায় "কড়ি ও কোমল" স্থর বাজাচ্ছিল, তথনও সেই স্থারের মধ্যে গতির মুছনা ধানিত হতেছে — কবি লক্ষা করেছেন—

"মানক হৃদয়ের বাসন। বিশ্বময় কারে চাহে, করে হায় হায়।"

কবি অমুভব করেছেন—

"লক্ষ ক্ষয়ের সাথ শূতো উড়ে গায়, কুত দিন হ'তে তারা ধায় কুত দিকে।"

সমৃদ্রের অস্থিরতা দেখে কবি বলেছেন-

"কিসের অশান্তি এই মহা পারাবারে। সতত ছি'ড়িতে চাংগ কিসের বন্ধন।"

আমাদের কবি দাগর-পারের অপরিচিতা বিদেশিনীর অভিদারে "সোনার তরী"তে বার বার "নিরুদ্দেশ যাত্রা" করেছেন—

> "সার কত দূরে নিয়ে গাবে মোরে, হে স্বর্গী ? বল কোন্ পারে ভিড়িবে তোমার দোনার তরী।"

ক্বি শুধু যেতেই চান "অক্ল-পাড়ির আনন্দ" অমূভব কর্বার জন্ম-

"দকাল বেলার গাটে যে দিন ভানিয়ে দিলেন নে:কা-থানি, কোলায় আমার যেতে হবে দে কথা কি কিছুই জানি।"

"হলুক ভরী ডেউরের পিরে,
থরে আমার জাত্রত প্রাণ।
গাও রে আজি নিশাখ-রাতে
অকুল-পাড়ির আনন্দ গান।
যাক্ না মুছে ভটের রেখা,
নাই বা কিছু গেল দেখা,
অভল বারি দিক্ না সাড়া
বাধন-হারা হাওয়ার ডাকে :
দোসর-ছাড়া একার দেশে
একেবারে এক নিমেরে,
লও রে বুকে ছ'ছাতে মেলি'
অস্তবিহীন অজানাকে।"

কবির মনোরাজ্যের "বনের পাধী" এসে "থাচার পাধী"কে বাহিরে উড়ে যেতে ডাকাডাকি করেছে; "কত্যা মোর চারি বছরের" "যেতে নাহি দিব" ব'লে কাতর নিষেধ কর্লেও কবি-চিত্তের যাত্রা স্থগিত হয়নি। কবি-চিত্ত বিশ্ব-ব্রহ্মাণ্ডে ছনিবার গতির আবেগ দেখে ছঃখ ও সান্থনা ছই-ই অমুভব করেছে—

"এ অনম্ভ চরাচরে ম্বর্গ মর্ত্য ছেরে স্বচেরে পুরাতন কথা, স্বচেরে গ্রভীর ক্রন্দন 'বেতে নাহি দিব'। হার, তবু যেতে দিতে হয়, তবু চ'লে যায়।"

কবি "মানস স্থন্দরী"কে প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করেছেন--

"কোন বিখ-পার
আছে তব জন্মভূমি ? সঙ্গীত তোমার
কত দুরে নিয়ে ধাবে কোন্ লোকে"—

জীবন-মরণের দোলায় কবি "ঝুলন" থেল্তে ব্যগ্র , সমগ্র "বস্করা" কবি-চিত্তের বিহার-ভূমি—

> "ইচ্ছা করে আপনার করি বেখানে বা কিছু আছে······..."

বিশ্ব-বিমূথ স্বার্থপর ক্ষুদ্রতার বেদনা কবিকণ্ঠে কাতর ক্রন্দন ক'রে বলেছে "এবার ফিরাও মোরে"—

"ছ্দিনের অঞ্জ-জল-ধার।
মন্তকে পাড়িবে করি' তারি মাঝে যাব অভিসারে
তার কাছে, জীবন-সর্বস্থ-ধন অপিরাছি বারে
জন্ম জন্ম ধরি'। কে দে? জানি না কে। চিনি নাই তারে।
তথু এইটুকু জানি, তারি লাগি' রাজি-অক্ষকারে
চকেছে মানব-বারী বুগ হ'তে বুগাস্তর পানে-····"

কবি তার "অন্তর্যামী"কে পথিকের চঞ্চল সঙ্গীরূপেই উপলব্ধি কর্তে চেরেছেন—

"আবার ভোষারে ধরিবার ভরে ফিরির: মরিব বলে প্রাক্তরে পথ হ'তে পথে, ঘর হ'তে ঘরে, দ্রাশার পাছে পাছে।"

ভিনি "অভিথি অঞ্চানা'র দঙ্গে 'অচেনা অদীম আঁধারে' যাত্রা কর্বার জন্ম উৎস্কুক; দিনশেষে কবির যদি বা কথনও তরনী বাঁধবার প্রশোভন হরেছে, কিন্তু পেও "বহু দূর হুরাশার প্রবাদে" "আসা-যাওয়া বারবার" করার পর কোনও অঞ্চানা বিদেশে অচেনা তরুণীর ভরা ঘটের ছল-ছল আহ্বানে! কিন্তু দিনশেষেও কবির ভাগ্যে বিশ্রাম-লাভ ঘটেনি; যথন

"পৌষ প্রথর গাঁত-জর্জর থিলী-মুখর রাতি।" তথনও এক অবশুষ্ঠিতা তাঁর স্থখনিদ্রা ভাঙিয়ে "সিন্ধুপারে" নিয়ে চলেছে— "অচ্বান পথ, অচ্বান রাতি, অজানা নৃতন ঠাই।"

কবির "হুরস্ত আশা" "পোষমানা এ প্রাণ" নিয়ে "বোতাম-অাঁটা জামার নীচে শান্তিতে শন্নান" থাক্তে পারে না। সন্ধ্যার হুঃসময় এসে উপস্থিত হ'লেও কবি তাঁর চিত্ত-বিহঙ্গকে পাথা বন্ধ করুতে নিষেধ ক'রে বলেছেন—

"যদিও সঙ্গী নাহি-অনস্ত অস্বরে

তবুবিহল, ওরে বিহল শোর, এখনি, অল বছ ক'রোনা পাধান'

কোথাও যদি কোনও আশ্রয় না থাকে, তবু নভ-অঙ্গন তে। আছে, তার মধ্যেই স্বাছন্দ-বিহার কর্তে হবে।

বর্ষ-লেখে'র দঙ্গে-দঙ্গে কবি-চিত্ত বন্ধন-মৃক্ত হ'রে অনস্তাভিম্থ হ'রে উঠিছে—

> "চাবো না পশ্চাতে মোরা, মানিব না বন্ধন ক্লন্সন, হেরিক না দিক্ গশিব না দিনক্ষণ, করিব না বিভক্ষ বিচার, উদ্দাস পথিক।

বে-পথে অনপ্ত লোক চলিয়াছে ভীৰণ নীরবে দে পথ-প্রাপ্তের একপার্থে রাথ মোরে, নির্থিব বিরাট্ স্বরূপ ধুন বুগাস্তের।" রুদ্র বৈশাথের "বিষাণ ভয়াল" তাঁকে ডাক দিলে তিনি বলেছেন—

"ছাড় ডাক, হে কন্স বৈশাখ, ভাঙিয়া মধ্যাহ-তন্ত্ৰা জাগি' উঠি বাহিৰিব দারে…"

তিনি অচেনা বহু পথিকের সঙ্গে এক নৌকার "যাত্রী", তিনি গৃহত্তের বরে "অতিথি" মাত্র, তিনি "ছুটির" আনন্দে উল্লসিত হ'য়ে সকল বন্ধনের প্রতি "উদাদীন", তিনি "প্রবাদী"। কবি বলেছেন--

"শ্লান দিবদের শেষের কুস্থম তুলে এ কুল হইতে নব-জীবদের কুলে চলেছি আমার ধাতা করিতে দারা।"

কিন্তু কবির এ ''যাত্রাশেষ'' তো ''বিপুল বিরতি'' নর, এ যাওয়া যে দোলার ফিরে আদার বেগ-সঞ্চয়ের জন্ম—

> "এই মত চলে চিরকাল গো শুদ্ যাওয়া শুধু আসা !"

এ "বেয়া-নেয়ে"র এপার-ওপার যাওয়া-আসা।

কবির "পরাণ-দথা বন্ধু", "ঝড়ের রাতে অভিদার" করেন কবির কাছে : কবি জানেন, ঠাঁর বিধাতা তাঁকে কোন্ আদি-কাল হ'তে জীবনের সোতে ভাসিয়ে দিয়েছেন—

> জোনি কোন্ আদি কাল ২০চ ভাষালে আমারে জীবনের প্রোচেচ !*

কবি নিজে অমুভব করেন এবং সকলকে অমুভব কর্তে বলেন—

"জগতে আনন্দ-যজ্ঞে আমার নিমন্ত্রণ।

সেই আনন্দ-বজের নিমন্ত্রণে যাত্রা ক'রে--

"কৰে আদি বাহির হ'লেদ ভোমারি গান গেলে িদে তো আঞ্জকে নয়, সে আক্তকে নয়।"

যাত্রার থেয়া-ঘাটে এদে কবির আশকা 'ঐরে তরী নিল খুলে !' কিছু তর্থনি তিনি মনকে সাম্বনা দিয়ে বলছেন— "আমার নাইবা হ'ল পারে যাওয়া, যে হাওয়াতে চলতো তরী অঙ্কেতে সেই লাগাই হাওয়া।"

কিন্তু তিনি যদি বা যাত্রার উত্যোগ-পর্ব সমাধা ক'রে প্রস্তুত হ'লেন, কাণ্ডারীর তথনো উদ্দেশ নেই—

> "কথা ছিল এক তরীতে কেবল তুমি আমি যাব অকারণে ভেলে কেবল ভেলে; ত্রিভ্বনে জান্বে না কেউ আমরা তীর্থ-গামী কোষায় যেতেছি কোন্ দেশে সে কোন্ দেশে।"

তথন তিনি কাণ্ডারীকে দেখে বল্ছেন-

"ওবে মাঝি, ওবে আমার মানক-জম-ভরীর মাঝি, শুন্তে কি পাস্ দূরের পেকে পারের বাঁগা উঠ্ছে বাজি ? কাগুারী বো, যদি এবার পেঁছে থাক' কুলে, হাল ছেডে দাও, এখন আমার হাত ধ'বে লও তুলে।"

কবি কা গুারীর বিলম্ব দেখে অধীর হ'য়ে উঠেছেন—

"এবার ভাসিছে দিতে হবে আমার এই তরী। ভীরে বদে নায় যে বেলা মরি গো মরি ."

্ৰ সদ্য-প্ৰস্তুত কাণ্ডাৰীকে হঠাং দেখুতে পেয়ে আনন্দে ব'লে উঠ্লেন—

"নাম-হার। এই নদীর পারে ছিলে ভূমি বনের ধারে বলেনি কেউ আমাকে।"

কিন্তু ভৱা যদি নাই মেলে তা হ'লে কি তবে যাওয়া বন্ধ পাক্ৰে ?

"্য বিল ঝাঁপ ভব-মাগর মাঝ-থানে
কুলের কথা ভাবে না দে'
চায় না কভু তরীর আশে,
আপেন হথে সাতার-কাটা সেই জানে
ভব-মাগর মাঝ-থানে।"

কিন্তু এত দিন নদী-পথে যাত্রার প্রতীক্ষা করার পর কবি দেখ্তে পেলেন-—

"উড়িরে ধ্বজা অস্ত্র-ভেগী রখে ঐ যে তিনি, ঐ যে বাহির পথে !"

তথন আনন্দিত কবির উৎসূল কণ্ঠ থেকে উচ্চারিত হরেছে—

"যাত্রী আমি ওরে,

পার্বে না কেউ রাধ্তে আমায় ধ'রে।"

কবির "পথ হ'ল স্থন্ধর"; তিনি যাত্রা কর্তে পেরেই সন্তই, তরীতে না হয় তো রথে তাঁর যাত্রা—দে একই কথা, বাহন তুচ্ছ সাধন মাত্র, যাত্রা কর্তে পারাটাই হ'ল তাঁর কাছে প্রধান।

কবি নিজেই জানেন যে, গতির মাঝে মাঝে গতি-বিরতিও আছে। থেমন চলার অঙ্গ পা-তোলা পা-ফেলা"; কিন্তু পা ফেলেই কবির ভর হয় বুঝিবা গতি স্থগিত হ'রে পড়্ল—

> "ভেবেছিমু মনে যা হবার তারি শেষে যাত্রা আমার বৃঝি থেমে গেছে এসে।

পুরাতন পথ শেষ হ'য়ে গেল বেখা দেখার আমারে আনিলে নৃতন খেলে !"

কিছ চির-নবীন কবি-চিত্তের যাত্রা তো স্থগিত হবার নয়—

"আমি পথিক, পথ আমারি সাধী।

বাহির হ'লেম কবে সে নাই মনে।

যাত্রা আমার চলার পাকে
এই পথেরই বাঁকে বাঁকে
নৃতন হ'ল প্রতি কণে জ্বণে।

যত আশা পথের আশা,

পথে যেতেই ভালবাসা,

পথে চলার নিতা-রনে

ভিনে জিনে জীবন ওঠে মাতি।"

মাৰে মাঝে পথ খুঁজ ভে গিনে পথ হারাদ্——

"এধানে তো বাধা পথের অন্ত না পাই,
চলতে গেলে পথ ভূলি যে কেবলি তাই।"

এবং "খুঁজিতে গিম্বে কাছেরে করি দ্র", চলা আরো বেড়ে যায়—তথন হতাল হ'রে কবি বলেন—

> "এম্নি ক'রে ঘুরিব দূরে বাহিরে, আর তো গতি নাহি রে মোর নাহি রে।"

কিন্তু তাতেও লোক্সান নেই---

"মিথা আমি কি সন্ধানে যাব' কাহার দার ? পথ আমারে পথ দেখাবে এই জেনেছি সার।"

কবির ^{*}চলার বেগে পায়ের তলায় রাস্তা জেগেছে" দেখে কবি প্রম আনন্দিত—

> "তাগ্যে আমি পথ হারালেম কাজের পথে। নইলে অভাবিতের দেখা ঘট্টো না কোনো মতে।"

নেই অভাবিতের দেখাট কি ?—

আমার ভাঞ্জ পথের রাঙা ধূলায় পড়েছে কার পাঙ্গের চিহ্ন গ

দেই হারাপথে বিদেশী দাপুড়ের সঙ্গে যাত্রীর দাক্ষাৎ ঘটে---

'কে গো তুমি বিশেণী, দাপ-থেলান বঁশী ভোমার বাজালো হুর কি দেশী।

পুকিয়ে রবে কে গো মিছে, ছুটেছে ডাক মাটির নীচে ফুটায়ে ভুঁই-চাপারে।"

কবি সেই বাঁশীর স্থর ধ'রে যাত্রা ক'রে চলেছেন নিরুদ্ধেশের পানে—

"শুনেছি সেই একটি বাণী— পথ দেখাবার মন্ত্রখানি লেখা আছে সকল আকাশ মাঝে গো। ভোমার মাঝে আমার পথ ভূলিরে দাও গো ভূলিরে দাও।
বাধা পথের বাধন হ'তে
টিলিরে দাও গো টিলিরে দাও।
পথের শেবে ফুল্বে বাসা—
সে কভূনর আমার আশা,
যা পাব' তা পথেই পাব',
ভূরার আমার গুলিরে দাও।"

কবি *স্তুরের পিয়াদী," তাঁর কাছে দুরের ডাক এদে পৌচেছে—

"এবার আমায় ডাক্লে দূরে সাগর-পারের গোপনপুরে।"

সেই "সাগর-পারের গোপনপুরে" কবি একা পথিক হ'লেও তাঁর সঙ্গী জুটে —যায়

্ষেতে যেতে একলা পথে নিবেছে মোর বাতি। ঝড এদেছে ওবে এবার ঝডকে পেলেম সাথী।"

ক্বির এই যাত্রা তো আজ কের নর, তা অনাদি অনন্ত-

"জনেক কালের যাতা আমার, অনেক দূরের পথে, প্রথম বাহির হয়েছিলেন প্রথম আলোর রপে।"

তিনি সকল ভার বোঝা ফেলে দিয়ে লঘু হ'য়ে যাত্রা কর্তে উৎস্তক—

"রিক্ত হাতে চল্না রাজে নিক্লেশের ক্ষেব্যা"

কবির "পথ চলাতেই আনন্দ," পথের নেশায় তিনি বিভার—

'পথের নেশা আমায় লেগেছিল, পথ আমারে দিয়েছিল ভাক।"

কারণ---

"পাস্থ তুমি, পাল্পজনের স্বধা হে,
পথে চলাই সেই তো তোমার পাওয়া।
যাক্রা-পথের জানন্দ-গান যে গাহে
তারি কঠে তোমারি গান গাওয়া।"

পরিশিষ্ট—রবীন্স-কাব্যের একটি প্রধান স্থর

গতি আমার এসে ঠেকে যেণায় শেষে অশেষ দেগা পোলে আপন দ্বার।"

ক্বি "শিশু-ভোলানাথ"-রূপে বল্ছেন—

"সাত সমুদ্র তের নদী

আজ্কে হবো পার।"

শিশু-ভোলানাথ বলেছে-

"আজকে আমি কতনুর যে
নিয়েছিলেম চ'লে।

যত' তুমি ভান তে পারো

তার চেয়ে সে অনেক আরো,
শেষ কর্তে পার্ব না তো
তোমায় ব'লে ব'লে।

অনেক দূর সে, আরো দূর সে, আরো অনেক দূর।"

'দান্ত্রনী' নাটকটি আগা গোড়া চলার মহিমা-কার্তনে ভরা—তার মধ্যে চলার বানী বেজেছে—

> "চলি গো, চলি গো, যাই গো চ'লে, পথের প্রদীপ শুলে গো গগন-তলে। বাজিয়ে চলি পথের বাঁশী, ছড়িয়ে চলি চলার হাসি, রঞ্জীন বসন উড়িয়ে চলি

প্রকাল- বলে।
প্রথম ভাবন ভাবোবাসে
প্রথম জবে রে।
এমন ক্ষরে তাই সে ভাবে
ক্ষরে কারে বা
চলার পথের আগে আগে
ক্রুর ক্রুর সোহার জারে,
চর্ব- যারে মরণ মরে
প্রেল পলে।

চাঞ্চল্য হচ্ছে প্রাণের ধর্ম, শিশু প্রাণের স্ফৃতিতে সদা-চঞ্চল, যুবা প্রাণের প্রবল আবেগে উদাম। তাই দেখতে পাই যে, আমাদের দেশের স্থবিরদের যিনি গতির মুক্তি-বাণী শুনিরাছেন তিনি কথনো শিশু আর কথনো যুবা, তিনি স্থবির কথনই না—

"সবার আমি সমান-বরসী যে, চুলে আমার যতই ধরুক পাক।

চির-ঘুবা কবি "শুধু অকারণ পুলকে" মেতে তাঁর যুবক সঙ্গীদের ডেকে বলেছেন—

"আমেবাতে যাত্রা ক'রে স্কন্ধ
পাঁজি-পুঁথি করিল্ পরিহান,
অকারণে অকাজ ল'রে যাড়ে
অসময়ে অপথ দিয়ে যাল্,
হালের দড়ি নিজের হাতে কেটে
পালের 'পরে লাগাল্ ঝড়ো হাওয়া,
আমিও ভাই তোদের ব্রত লব—
মাতাল হ'য়ে পাতাল পানে ধাওয়া।"

যৌবন তো স্থথে-শান্তিতে নিশ্চিন্ত হ'য়ে থাক্তে পারে না, অসাধ্য সাধন করাই যৌবনের ধর্ম, এইটেই যৌবনের মহিমা—

> " ''পার্বি নাকি যোগ দিতে এই ছলে রে, ব'দে যাবার, ভেদে যাবার ভাঙ্বারই আনলে রে।

লুটে যাবার, ছুটে যাবার চল্বারই আনন্দেরে।"

কবি সকল "অচলায়তন" ভেঙে কেলে চলার নিময়ণ ঘোষণা করেছেন। মহা-পরিব্রাজ্বক কবি তাঁর "যাত্রী" পুশুকের মধ্যেও এই একই কথা ব'লেছেন। "বলাকা"তে এই মহাবাণীই আগাগোড়া উদেগানিত ক'রে চ'লেছে—

"হেথা নর, অন্ত কোথা, অন্ত কোথা, অন্ত কোন্থানে।"
কবির গানে মধন জীবন-সন্ধার "প্রবী" রাগিনী বেজে উঠেছে, তথনও তাঁর
বিশ্রাম বা বিরতির কথা মনে হয় নি, তথনও কেবলই 'চলো চলো' বানী ধ্বনিত
হয়েছে—

পরিশিষ্ট--রবীশ্র-কাব্যের একটি প্রধান সুর

"আদিনের রাত্রি-শেষে ঝরে-পড়া শিউলি ফুলের আর্থাহে আকুল বনতল; তা'রা মরণ-কুলের উৎসবে ছুটেছে দলে দলে; গুরু বলে চলো চলো'।

ওরা ডেকে বলে, কবি, সে তীর্থে কি তুমি দঙ্গে যাবে ?''

ক্ষি বলেন,—

''যাত্রী আমি, চলিব রাত্রির নিমন্ত্রণে—।"

'ম্লুয়া' তার ঘৌবন-প্রেমের মাদকতা বিলিয়ে—

''বাবার দিকের পথিকের 'পরে ক্ষণিকের স্নেহ-পানি শেষ উপহার করুণ অধরে দিল কানে কানে আনি' !"

তথনও মাদকতা-বিহ্বল কবি নিশ্চল হ'য়ে পড়েন নি, তথনও তিনি যাত্রার জন্ত দকলকে আহ্বান ক'রে বলেছেন—

> "কালের যাত্রার ধ্বনি শুনিতে কি পাও ? তারি রধ নিতাই উধাও……"

ক্বি রবীন্দ্রনাথ আকৈশোর চলারই মাহাত্ম্য ঘোষণা ক'রে এসেছেন। কবি
নলেছেন—

''না চলতে চাওয়া প্রাণের কুপণতা, সঞ্চয় কম হ'লে ধরচ কর্তে সঙ্কোচ হয় ·····এই তঙ্গণ একদিন গান গেয়েছিল'—'আমি চঞ্চল হে, আমি স্থদ্রের পিয়াসী।' —সাগর-পারে যে বপরিচিতা আছে তার অবশুঠন মোচন কর্বার জন্মে কি কোনো উৎকঠা নেই।"

অজানাকে জান্বার, অনায়ত্তকে আয়ত্ত কর্বার, অদৃষ্টকে দেখ্বার যেআগ্রহ নিয়ে বৈদিক ঋষি আপনাকে মহীপুত্র ব'লে পরিচয় দিয়ে বিশ্ববাদীকে
ডাক দিয়ে বলেছিলেন—"চরৈবেতি, চরৈবেতি" ঠিক দেইভাবেই অমুপ্রাণিত
হ'য়ে আমাদের কবি সকলকে ডাক দিয়ে পুন: পুন: বলেছেন—"আগে চল্,
আগে চল্, ভাই!"

কবি-চিত্ত সপ্ত-তন্ত্রী বীণার মতো, তাতে কত স্থর, কত মূর্ছ নাই বেক্সেছে; কিন্তু আমার কানে এই গতির বাণীটিই থুব বেশী ক'রে ধরা পড়েছে ঘিনি অগতির গতি তিনিই এই গতি-শক্তি-হারা দেশে এই তুর্ধ-কণ্ঠ কবিকে প্রেরণ করেছিলেন দেশবাসীদের অবড়ত্ব থেকে উলোধিত ক'রে তোল্বার জন্মে।

রবীক্রনাথের সদেশ প্রেম

রবীন্দ্রনাথ তাঁহার জীবনস্থতিতে তাঁহার বাল্যকালের কথা-প্রসঙ্গে লিখিয়াছেন—"·····ভামাদের পরিবারের হৃদয়ের মধ্যে একটা স্থদেশাভিমান স্থির দীপ্তিতে জাগিতেছিল। স্থদেশের প্রতি পিতৃদেবের যে একটি আখুরিক শ্রদ্ধা তাঁহার জীবনের সকল প্রকার বিপ্লবের মধ্যেও অঙ্গুণ্ণ ছিল, তাহাই আমাদের পরিবারস্থ সকলের মধ্যে একটি প্রবল স্থদেশ-প্রেম সঞ্চার করিয়া রাখিয়াছিল। বস্তুত সে সময়টা স্থদেশ-প্রেমের সময় নয়—তথন শিক্ষিত লোকে দেশের ভাষা এবং দেশের ভাব উভয়কেই দূরে ঠেকাইয়া রাখিয়াছিলেন। আমাদের বাড়িতে দাদারা চিরকাল মাতৃভাষার চচা করিয়া আসিয়াছেন। ·····

"আমাদের বাড়ির সাহায়ে হিন্দু-মেলা বলিয়া একটি মেলা স্থাষ্ট হইয়া-ছিল। তেওঁ তেওঁ ক্ষেত্ৰ সদেশ বলিয়া ভক্তির সহিত উপলব্ধির চেষ্টা সেই প্রথম হয়। মেজদাদা সেই সময়ে বিখ্যাত জাতীয় সঙ্গীত 'মিলে সব ভারত-সন্তান' রচনা করিয়াছিলেন। এই মেলায় দেশের শুবগান গীত, দেশাল্বাগেব কবিতা পঠিত, দেশী শিল্প-ব্যায়াম প্রভৃতি প্রদর্শিত, ও দেশী শুণী লোক পুরস্কৃত হইত।"

এই মেলায় "চৌদ্দ-পনেরো বছর বরদের বালক কবি" লর্ড লিটনের দিল্লীদরবার সম্বন্ধে একটা পাত রচনা করেন। সেই কাব্যে বরসের উপযুক্ত উত্তেজন।
প্রভূত পরিমাণে" ছিল। কবি সেটা পড়িয়াছিলেন "হিন্দু-মেলায়" গাছের
তলায় দাঁডাইয়া। শ্রোতাদের মধ্যে কবি নবীন সেন মহাশয় উপস্থিত ছিলেন।

কবি আরও লিখিয়াছেন,—"জ্যোতিদাদার উদ্যোগে আমাদের একটি সভা হইয়াছিল—ইহা স্বাদেশিকের সভা।——আমার মতো অর্বাচীনও এই সভার সভ্য ছিল———এই সভায় আমাদের প্রধান কাল [বীরত্বের] উত্তে-জনার আগুল পোহানো।"

বাহির হইতেন। রবাহত অনাহত যাহারা আমাদের দলে আদিয়া জুটিত

....তাহাদের মধ্যে ছুতার কামার প্রভৃতি সকল শ্রেণীরই লোক ছিল।"

"আমানের দলের মধ্যে একটি মধ্যবিত্ত জমিদার ছিলেন। তিনি নিষ্ঠাবান্ হিন্দু। গঙ্গার ধারে তাঁহার একটি বাগান ছিল। সেথানে গিয়া আমরা সকল সভ্য একদিন জাতিবর্ণ-নির্বিচারে আহার করিলাম।"

"স্বদেশে দিয়াশলাই প্রভৃতির কারথানা স্থাপন করা আমাদের স্ভার উদ্দেশ্যের মধ্যে একটি ছিল।"

"ছেলে-বেলায় রাজনারায়ণ-বাবৃর সঙ্গে যথন আমাদের পরিচয় ছিল, তথন সকল দিক্ হইতে তাঁহাকৈ বৃথিবার শক্তি আমাদের ছিল না। দেশের উন্নতি-সাধন কবিবার জন্ত তিনি সর্বদাই কতে। রকম সাধ্য ও অসাধ্য প্ল্যান্ করিতেন তাহার আর অন্ত নাই। এদিকে তিনি মাটির মান্ত্য, কিন্তু তেজে একেবারে পরিপূর্ণ ছিলেন। দেশের প্রতি তাঁহার যে প্রবল অনুরাগ, সে তাঁহার সেই তেজের জিনিস। দেশের সমস্ত থবঁতা দীনতা অপমানকে তিনি দগ্ধ করিয়া ফেলিতে চাহিতেন। তাঁহার চেই চক্ষ জলিতে থাকিত, তাঁহার চদ্য দীপ্ল হইয়া উঠিত, উৎসাহের সঙ্গে হাত নাড়িয়া আমাদের সঙ্গে মিলিয়া তিনি [গান] ধরিতেন

্রেক স্থতে বাধিয়াছি সহস্রটি মন, এক কারে মুপিয়াছি সহস্র জীবন।"

ত্যতের দেখা থাইতেছে যে, রবীক্রনাথ বাল্যকাল হইতে একটি স্থান্দূর্ণ থানেশ-প্রেমের আবহাওয়ার মধ্যে ববিত হইয়ছেন এবং সেই ভাবই তাঁহার জীবনে ও চরিত্রে বদ্ধমূল হইয়া ক্রমশঃ বিভিন্নরূপে আত্মপ্রকাশ করিয়াছে। রবীক্রনাথ বাল্যকালে স্থানেশ্রেম ও স্থানেশ্রেমার যে স্থপ্ন ও কল্পনার ভিতর দিয়া পরিণত বয়স বৃদ্ধি ও বিবেচনায় উপনীত হইয়াছেন ভাহার কিঞ্চিৎ পরিচয় "চিরকুমার সভা'য় চক্রবাবুর কল্পনা ও প্রচেটার বর্ণনা উপলক্ষে ঠাটার স্থ্রে আমাদের গুনাইয়াছেন। হবীক্রনাথের বয়স যখন যোলো বংসর মাত্রে, সেই বাল্যকালেই "বাদ্যালীর আশা ও নৈরাশ্র্য" নামে একটি প্রবন্ধ প্রথম বংসরের 'ভারতী' পত্রিকায় প্রকাশ করেন। অল্প বয়সে বিলাতে গিয়াও রবীক্রনাথ স্থদেশের প্রতি শ্রদ্ধা হারান নাই। বিলাতে বরাবর ভিনিদেশী কাপড় পরিয়াছেন, এবং ভাহার ভক্ত জনেক বিক্রপও সহ্ত করিয়াছেন।

রবীজ্বনাথ সাহেবিয়ানাকে চিরদিনই ঘূণা করিয়া আসিয়াছেন। রবীজ্বনাথ মুরোপ-প্রবাসীর পত্তে ১২৮৬ সালে মাত্র ১৬ বংসর বয়সে একটি ব্যঙ্গ-সঙ্গীত উদ্ধৃত করিয়াছিলেন—

"ম। এবার ম'লে সাহেব হবো;
রাঙা চুলে ফাট বদিয়ে পোড়া নেট্ব নাম বোচাবো।
শাদা হাতে হাত দিয়ে মা বাগানে বেড়াতে যাবো,
আবার কালো বদন দেখ্লে পরে রাকি বলে' মুখ কেরাবো।"

১৩০২ সালে রচিত চৈতালি নামক পুস্তকে পর-বেশ-পরিহিত ছন্মবেশী সাহেবদের লক্ষ্য করিয়া লিথিয়াছিলেন—

কে তুমি ফিরিছো পরি' প্রত্বদের সাজ!
ছন্মবেশে বাড়ে না কি চতুগু ন লাজ!
পরবন্ত অঙ্গে তব হ'মে অধিঠান
ভোনারেই করিছে না নিত্য অপমান ?
বলিছে না, ওরে দীন, যত্নে মোরে ধরো,
ভোমার চর্মের চেয়ে আমি প্রেন্ঠতর ?
চিত্তে যদি নাহি থাকে আপন সম্মান,
পৃঠে তব কালো বন্ত্র কলক-নিশান।
ওই তুচ্ছ টুপিখানা চড়ি' তব শিরে
ধিকার দিতেছে নাকি তব স্বজাতিরে?
বলিতেছে, যে মন্তক আছে মোর পায়,
হীনতা ঘুচেছে তার আমারি কুপায়।
সর্বান্ধে লাঞ্না বাহ' এ কি অহকার!
ওর কাছে জারি চীর জেনো অলকার।

মুরোপ-যাত্রীর ভারারিতে ১৮৯৬ সালে জাহাজে চড়িয়া তিনি লিথিয়াছেন—
"সামাত্র এই করেক দিনের ছুটি নিয়ে চ'লেছি, কিন্তু ভারতবর্ধ একান্ত করুণ স্বরে আমাকে আহ্বান কর্ছে, বল্ছে—বংস, কোথায় যাদ্! আর যাই করিদ্ অবজ্ঞার ভাবে চ'লে যাদ্নে, আর অবজ্ঞার ভাবে ফিরে আসিদ্নে।"

পরিণত বর্ষেও তিনি খনেশবাসীর দারা মাতৃত্মির অপমানে ব্যথিত ছইয়া কাতর কঠে গাহিষাছেন— কাহার স্থামনী বাণী
মিলার অনাদর মানি' ?
কাহার ভাষা হার
ভূলিতে সবে চার ?
দে যে আমার জননী রে
ক্ষণেক স্লেহকোল ছাড়ি'
চিনিতে আর নাহি পারি!
আপন সস্তান
করিছে অপমান'—
সে যে আমার জননী রে !

কবি বাল্যকাল হইতে বাংলা-দেশকে মায়ের মতন ভালবাসিয়া আসিয়াছেন। বাল্য রচনা "আলোচনা" নামক পুত্তকে লিখিয়াছেন—
"এমন মায়ের মতো দেশ আছে ? এতো কোলভরা শশু, এমন শ্রামল পরিপূর্ণ সৌন্দর্যা, এমন স্নেহধারাশালিনী ভাগীরথী-প্রাণা কোমল-স্কদন্তা তরুলতাদের প্রতি এমনতর অনিব্চনীয় করুণাময়ী মাতৃভূমি কোথায় ?"

কিছুদিন কবি আপনার ব্যক্তিগত হৃদয়ের স্থতঃথ ও ভাবপুঞ্জের ভাওারে আবদ্ধ হইয়৷ স্বদেশের দিকে ফিরিয়৷ তাকাইবার অবদর পান নাই; কিছ হঠাৎ তাঁহার সংজ্ঞা কিরিয়৷ আদে, সার্থ বলি দিয়৷ স্বদেশের সেবায় ও উরতিতে নিজেকে নিযুক্ত করিয়৷ দিবার জন্ম তাঁহার মনে "হরন্ত আশা" জাগ্রৎ হয়; তথন নিজেকে ও "মাথায় ছোটো বহরে বড়ো বাঙালী-সন্থান'দের অকর্মণা "অন্ধশায়ী বঙ্গবাসী স্তম্মপায়ী জীব" বলিয়া বাশ করিয়৷ ধিরুয়ার দিয়৷ বলিয়াছিলেন—ইহার চেয়ে হতেম যদি আরব বেছয়িন! বাঙালীর হীনাবয়৷ দাস্ম ও নিশ্চেইতা কবিচিত্তকে নিপীড়িত করিয়াছে, তাই তিনি কাত্রর হইয়৷ স্বদেশবাসীদের বারংবার বিজ্ঞপের ব্যথা দিয়৷ উদ্বোধিত করিতে চেঁই৷ করিয়াছেন, কিন্তু তাহাতে নিজেই ব্যথিত ইইয়া বলিয়াছেন—

দূর হোক্ এ বিড়খনা বিজপের ভান।
স্বারে চাহে বেদনা দিতে বেদনাভরা প্রাণ!
আমার এই হৃদয়-তলে দ্রম-তাপ স্তত হৃদে তাই তো চাহি হাসির ছলে করিতে লাক্সদান। কবি কাতরকঠে জীবনদেবতাকে বলিরাছেন—ভাববিলাগিতা ও অকর্মণা জড়তা হইতে "এবার ফিরাও মোরে"। স্বদেশের যে-সব লোক নীরবে শত শতাকীর অত্যাচারের ভারে পিষিয়া মরিতেছে—

এই সব মৃঢ় মান মৃক মৃথে
দিতে হবে ভাষা, এই দব প্রাপ্ত শুদ্ধ ভগ্ন বুকে
ধ্বনিমা তুলিতে হবে আশা; ডাকিয়া বলিতে হবে—
মুহুর্তে তুলিয়া শির একত্র দাড়াও দেখি দবে!
বার ভয়ে ভীত তুমি, সে অন্তায় ভীক্ন তোমা চেয়ে,
হর্ধনি জাগিবে তুমি তবনি সে পালাইবে ধেয়ে;…

কিন্তু কবির আদর্শ-স্থদেশ য়ুরোপের বিলাস-বাছল্যে ও ক্ষমতাদর্পে ভয়ত্বর নছে; সেই স্থদেশের রূপ শান্ত, ত্যাগের মহিমায় উজ্জ্বল, সাম্যের প্রভাবে উদার, সেথানকার স্বাধীনতা অপরের পরাধীনতার বুকের উপর প্রতিষ্ঠিত নতে— সেই স্বদেশের

> হেলা মত কীতক্ত ক্তিয়-গ্রিমা, হোলা তর মহামৌন বাক্ল-মহিমা

পাশাপাশি হাত-ধরা-ধরি করিয়া বিরাজিত !

আবার আমাদের কবি বিশ্বপ্রেমিক। অতি শৈশব হইতে তাঁহার কবিচিত্ত সন্ধীর্ণ দেশকালের সীমায় আবদ্ধ থাকার হৃংথের ও দীনতার বিশ্বদ্ধে মুদ্ধ ঘোষণা করিয়া আসিয়াছে। তাই তাঁহার স্বদেশপ্রেম কথনো অত্যুগ্র স্থাদেশিকতার পরিণত হইতে পারে নাই। আমার দেশের সব ভালো, আমার দেশের ভালো করিতে যদি অপরের মন্দ করিতে হয় তাহাও স্বাকার, এমন উৎকট তাব নতাসন্ধ প্রেমিক কবির চিত্তে কথনও স্থান পাইতে পারে না। তাই তাঁহার সেই ছেলেবেলা হইতে দেখা যায় তিনি স্বদেশকে ভালোবাদিয়া বিদেশকে মন্দ-বাসেন নাই; বিদেশের মোহ ও অত্করণকে দ্বণা করিয়াছেন, কিন্তু বিদেশের মহর ও সদ্গুণের সমাদর করিয়াছেন, 'যুরোপ-যাত্রীর ডায়ারি'তে তিনি লিখিয়াছেন—"কেহ কেহ বলেন যুরোপের ভালো খ্রোপের পক্ষেই ভালো, আমাদের ভালো আমাদেরই ভালো। কিন্তু কোনো প্রকৃত্ত ভালো কথনই পরস্পরের প্রতিযোগী নয়, তারা অত্যোগী। অবস্থা-বশত আমরা কেহ একটাকে কেহ আর-একটাকে প্রাধান্ত দিই, কিন্তু মানবের সর্বাসীণ হিত্রের প্রতি দৃষ্টি কর্লে কাউকেই দূর ক'রে দেওয়া যায় না।" সেই

বাল্যকাল হইতে প্রাচ্য ও পাশ্চান্ত্য সভ্যতার মিলনের কথা তিনি লিখিয়া আদিয়াছেন; বিশ্বভারতীর পূর্বাভাস তিনি বাল্যকালেই দিয়াছেন। ১২৮৬ সালে মাত্র ১৬ বংসর বয়সে প্রকাশিত "কবিকাহিনী" নামক কাব্যে কবি লিখিয়াছিলেন—

কৰে দেব এ রজনী হবে অবসান ?

মান করি' প্রভাতের শিশির-সলিলে
তরুণ রবির করে হাসিবে পৃথিবী !
অমূত মানবর্গণ এক কণ্ডে দেব,
এক গান গাইবেক বর্গ পূর্ব করি? ?
নাহিক দরিদ্র ধনী অধিপতি প্রস্তা;
কেহ কারে; কুটারেতে করিলে গমন
মর্বাদার অপমান করিবে না মনে,
সকলেই সকলের করিবেছাছে সেবা,
কেহ কারে। প্রাভু নয়, নহে কারো দাস !
দোদন প্রামিরে বিহি এখনই গেনো
দূর প্রিয়াং সেই পেতেতি দোলতে —
ব্যেটাদ্র এক প্রেমে হইয়া নিবদ্ধ
মিতিবেক কর্মি গানিক্রাক্ষর !

এই বিশ্বপ্রেমের মহাদর্শ তাঁহার মনে চিরজাগ্রং, তাই 'প্রভাত-সঙ্গীতে'র কবিতাবলীর মধা দিয়া আধুনিকতম রচনার মধ্যে পর্যন্ত এই সার্বজনীন ও সার্বজৌমিক মহামিলনের আকাক্ষা প্রকাশ পাইয়াছে। "নিম্বর্ধির অপ্রভঙ্গ", "প্রভাত-উৎসব", "স্রোত" প্রভৃতি কবিতা এক-রকম বাল্য-রচনা, তথন কবির বয়স মাত্র ২১ বংসর। সেই-সব কবিতার মধ্যেও "জগং প্লাবিয়া বেড়াবো গাহিয়া আকুল পাগল পারা" ও "জগং-স্রোতে ভেসে চলো যে যেথা আছো ভাই" প্রভৃতি মহাবাণী প্রচুর দেখিতে পাই!

কবি স্থাদেশ-জননীকে বারংবার অন্তরের করিয়াছেন—তিনি তাঁহার সন্তানদের "স্বেহগ্রাস" হইতে মুক্তি দান করুণ—

> অন্ধ মোহবদ্ধ তব দাও মুক্ত করি'! রেখো না বসায়ে দারে জাত্রং প্রহরী হে জননী, আপনার স্লেহ: কারাগারে সন্তানেরে চিরজন্ম বন্দী রাথিবারে।

চলিবে সে এ সংসারে তব পিছু পিছু? সে কি শুধু অংশ তব, আর নহে কিছু? নিজের সে, বিখের সে, বিখ শেবতার; সস্তান নহে গো মাতঃ সম্পত্তি তোমার।

ভারতমাতা স্নেহাধিক্যে বিধি-নিষেধের গণ্ডি দিয়া দিয়া সস্তানদের পঙ্গ্ করিয়া ফেলিয়াছেন, তাহাতে কবিচিত্ত ব্যথিত হইয়া আর্তনাদ করিয়াছে—

> সাত কোটি সন্তানেরে হে মৃগ্ধ জননী, রেখেছো বাঙালী ক'রে, মামুখ করো নি !

কিন্তু একদিকে যেমন বিশ্বপ্রেমের মহান্ আদর্শে কবির কাছে স্থদেশ একান্ত হইয়া উঠিতে পারে নাই, তেমনি আবার বিশ্বপ্রেমের বন্ধায় স্বদেশ তাঁহার কাছে ড্বিয়া হারাইয়া যায় নাই। তিনি বারংবার "ভ্বন-মনোমোহিনী জনক-জননী-জননী" স্থদেশ-মাতাকে আহ্বান করিয়া বলিয়াছেন—"এবার ফিরাও মোরে।" নববর্ষে তিনি ভারতবর্ষকে সংস্থাধন করিয়া বলিয়াছেন—

নব বংদরে করিলাম পণ

্ব্রুবো স্বদেশের দীকা।

তব আশ্রুমে, তোমার চরণে,

হে ভারত, লবো শিক্ষা।

পরের ভূষণ, পরের বসন,

ডেয়াগিবো আল্ল পরের অশন,

যদি হই দীন, না হটব হীন,

ছাডিবো পরের ভিক্ষা।

"ভিক্ষারাং নৈব নৈব চ'' এই মহাবাণী তিনি আমাদের দেশে পুনঃ প্রচার করিয়া বারংবার বলিরাছেন যে খদেশের হৃঃথ মোচন ভিক্ষার দারা হইবার নম, নিজের জননীর লজ্জা মোচন করিতে হইবে নিজেদের চেষ্টার দারা, অর্জনের দারা, নিজেদের ত্যাগের দারা।

ভোমার যা দৈল্প মাতঃ, তাই ভূবা মোর কেলো তাহা ভূলি, পরধনে ধিক্ গর্ব, করি' করজোড় ভরি ভিক্ষাঝুলি!

.75

পুণাহত্তে শাক-অন্ন তুলে শাও পাতে তাই থেনো হুচে, মোটা বস্ত্ৰ বুনে শাও যদি নিজ হাতে তাহে লজ্জা ঘুচে।

স্বদেশের দৈন্তের লজ্জা ঘোচাবার 'পথ ও পাথের' কবি নির্দেশ করিয়াছেন
—কেবল স্বদেশ স্বদেশ বলিয়া, জননী জন্মভূমি চ স্থানি গরীয়সী
বলিয়া ভাববিলাসিতা করিলে চলিবে না; কবি স্বদেশবাসীদের ডাক দিয়া
বলিতেছেন—

"তাই বারংবার বলিয়াছি এবং বারংবার বলিব শক্রতাবৃদ্ধিকে অহোরাত্র কেবলি বাহিরের দিকে উত্তত করিয়া রাথিবার জন্ম উত্তেজনার অগ্নিতে নিজের সমস্ত সঞ্চিত সম্বলকে আছতি দিবার চেষ্টা না করিয়া, ঐ পরের দিক হইতে জ্রকুটিকুটিল মুখটাকে কিরাও, আষাঢ়ের দিনে আকাশের মেব যেমন করিয়া প্রচুর ধারাবর্ষণে তাপগুদ্ধ ভ্ষাতুর মাটির উপরে নামিয়া আসে, তেমনি করিয়া দেশের সকল জাতির সকল লোকের মাঝখানে নামিয়া এদো, নানা-দিগভিমুখী মঙ্গল-চেষ্টার বৃহৎ জালে স্বদেশকে সর্বপ্রকারে বাঁধিয়া কেলো; কর্মক্ষেত্রকে সর্বত্র বিস্তৃত করো, এমন উদার করিয়া এতোদ্র বিস্তৃত করো যে, দেশের উচ্চ ও নীচ, হিন্দু মুসলমান ও গৃষ্টান, সকলেই যেখানে সমবেত হইয়া স্লামের সহিত সদয়, চেষ্টার সহিত চেষ্টা সন্মিলিত করিতে পারে।"

আমরা যদি উচ্চ-নীচের ক্বত্রিম ভেদ ও বিরোধ গুচাইতে না পারি, তবে—

তে মোর গুড়ালা দেশ, যাদের করেছ অপমান, অপমানে হ'তে হবে তাহাদের স্বার স্মান !

যতোদিন আমরা দেশের সকল জাতি ও ধর্ম নিবিশেষে মিলিত ইইতে না পারিব, ততোদিন আমাদের দেশকে স্বাধীন করিবার ইচ্ছা ছরাশা ছাড়া আর কিছুই নয়, এ কথা কবি বারংবার বলিয়াছেন—

"একথা বলাই বাহুলা, গে-দেশে একটি মহাজাতি বাধিয়া ওঠে নাই, সে-দেশে স্বাধীনতা হইতেই পাবে না। কারণ স্বাধীনতার 'স্ব'-জিনিসটা কোথায়? স্বাধীনতা—কাহার স্বাধীনতা? ভারতব্যে বাঙালী যদি স্বাধীন হয়, তবে দাক্ষিণাত্যের নায়র জাতি নিজেকে স্বাধীন বলিয়া গণ্য করিবে না। এবং পশ্চিমের জাঠ যদি স্বাধীনতা লাভ করে, তবে পূর্বপ্রান্তের আসামী তাহার সঙ্গে একই ফল পাইল বলিয়া গৌরব করিবে না। এক বাংলাদেশেই হিন্দুর সক্ষে মৃদলমান যে নিজের ভাগা মিলাইবার জন্ম প্রস্তুত, এমন কোনও লক্ষণ দেখা যাইতেছে না।"

এইজন্ম কবি মঙ্গল-মহোৎসবের পুরোহিত হইয়া আবাহন-মন্ত্র উন্গীত করিয়াছেন---

এনো হে আর্থ, এদো অনাথ,

হিন্দু মুদলমান;

এসো এদো আজ তুমি ইংরাজ

এদো এদো খুটান!

এনো ব্রাহ্মণ, শুচি করি' মন

ধরো হাত সবাকার,
এনো হে গতিত, করো অপনীত

সব অপমানভার!

মার অভিষেকে এদো এদো ত্রা,

মঙ্গলঘট হর্যনি যে ভ্রা

সবার প্রশে-প্রিক্র-করা

তীর্থনীরে,

আজি ভারতের মহামানবের

সাগরতীরে!

'শিবাদ্ধী' নামক প্রশিদ্ধ কবিতাতেও কবি এই একই কথা বলিয়াছেন—

সে-দিন শুনি বি কথা — আজ মোরা তোমার আদেশ শির পাতি' লবো। বঙ্ঠে কণ্ঠে বক্ষে বক্ষে ভারতে মিলিবে সর্বদেশ ধ্যানমন্ত্রে তব। ধ্বজা করি' উড়াইব বৈরাগীর উত্তরী'-বদন দ্বিদ্বের বল। 'এক ধর্মরাজ্য হবে এ ভারতে' এ মহাবচন ক্রিব স্থান।

কবির উদার হৃদ্ধ খণেশকে মহামানবের মিলনভূমি বলিয়া অমুভব করিয়াছে। কবির কাছে ভারতবর্ষ কোনো বিশেষ জাতি বা ধর্মাবলমীর দেশ নয়। কবির মতে ভারতবাসী মাত্রই হিন্দু জাতি, ধর্ম তাহার যাহাই হউক। কবি 'পরিচয়' নামক পুশুকে লিখিয়াছেন—"তবে কি মুদ্দমান অথবা খৃষ্টান সম্প্রদায়ে যোগ দিয়াও তুমি হিন্দু থাকিতে পারো? নি-চয় পারি। ইহার মধ্যে পারাপারির তর্ক মাত্রই নাই।ইহা সত্য যে কালীচরণ বাঁড়ুজ্যে মহাশম হিন্দু-খুষ্টান ছিলেন, তাঁহার পূর্বে গোপেক্রমোহন ঠাকুর হিন্দু-খুষ্টান ছিলেন। তর্গাৎ তাঁহারা পূর্বে ক্ষমেহেন বন্দ্যোপাধ্যায় হিন্দু-খুষ্টান ছিলেন। তর্গাৎ তাঁহারা জাতিতে হিন্দু, ধর্মে খুষ্টান।বাংলা দেশে হাজার হাজার মুসলমান আছে তাহারা প্রকৃতই হিন্দু-মুসলমান। হিন্দু শব্দ ও মুসলমান শব্দ একই পর্যায়ের পরিচয়কে বুঝার না। মুসলমান একটি বিশেষ ধর্ম, কিন্তু হিন্দু কোনো বিশেষ ধর্ম নহে। হিন্দু ভারতবর্ষের ইতিহাসের একটি জাতিগত পরিণাম। মত-পরিবর্তন হইলে জাতির পরিবর্তন হয় না।'

রবীন্দ্রনাথ "ভারতবর্ষে ইতিহাসের ধারা" নামক প্রাসিদ্ধ প্রবন্ধে জাতীয়ছের আদশ স্পষ্ট ব্যক্ত করিয়াছেনঃ "এই কথা উপলব্ধি করিব যে স্বজাতির মধ্য দিয়াই স্বজাতিকে ও সর্বজাতির মধ্য দিয়াই স্বজাতিকে সত্য রূপে পাওয়া বায়—এই কথা নিশ্চিতরূপে বৃথিব যে আপনাকে ত্যাগ করিয়া পরকে চাহিতে যাওয়া বেমন নিশ্চন ভিক্ষ্কতা, পরকে ত্যাগ করিয়া আপনাকে কৃঞ্চিত ক্রিয়া ব্যেনি দারিদ্রোর চরম তুর্গতি।"

এই তত্ত্বকে 'গোরা' নামক উপতালে গোরার মুথ দিয়া কবি স্কম্পর্ট করিয়াছেন। আমরা দেখি গোরা নিজেকে ভারতবর্ষায় হিন্দু মনে করিয় যথন প্রাণপণে আপনার চারিদিকে গোড়ামির দেয়াল তুলিয়াছিল, তথনই তাহার নিজের দেওয়া দেয়াল অকল্লাং ভূমিদাং হইয়া গেল, দে জানিতে পারিল—দে হিন্দু নয়, দে মাটিনির সময়কার কুড়ানো ছেলে, তাহার বাপ একজ্বন আইরিশ্মান। এই জানাজানির সঙ্গে সঙ্গে দে ইহাও বুনিতে পারিল—'ভারতবর্ষের উত্তর থেকে দক্ষিণ পর্যন্ত সমস্ত দেবমন্দিরের বার আজ আমার কাছে কল্প হ'দে গেছে,—আজ সমস্ত দেনের মধ্যে কোনো পঙ্ক্তি কোনো জায়গায় আমার আহারের আদন নেই।" ইহাতে গোরা খুনী সহমাই পরেশনান্তকে বলিয়াছে, ''আমি দিনরাত্রি যা হ'তে চাঙ্গিল্ম অথচ হ'তে পার্ছিল্ম না, আজ আমি তাই হয়েছি। আমি আজ ভারতব্যায়। আমার মধ্যে হিন্দু মৃদলমান খুটান কোনো সমাজের কোনো বিরোধ নেই। আজ এই ভারতবর্ষের সকলের জাতই আমার জাত, সকলের অয়ই আমার অয়; দেখুন, আমি বাংলার জনেক জেলায় ভ্রমণ করেছি, খুব নীচ পয়ীতেও আতিথা নিয়েছি কিন্ত কোনো মতেই সকল লোকের পাশে গিয়ে ব'স্তে পারি নি—

এতোদিন আমি আমার সঙ্গে-সঙ্গেই একটা অদৃশ্য ব্যবধান নিয়ে ঘুরেছি— কিছুতেই সেটাকে পেরোতে পারি নি। সেজত্যে আমার মনের ভিতর থ্ব একটা শৃষ্ঠতা ছিলো। আজ আমি বেঁচে গেছি পরেশ-বাব্।''

অবলেষে গোরা পরেশবাবৃকে কছিল—"আজ সেই দেবতারই মন্ত্র দিন, যিনি ছিল্পু মুসলমান খৃষ্টান ব্রাহ্ম সকলেরই—যাঁর মন্দিরের দ্বার কোনো জ্ঞাতির কাছে, কোনো ব্যক্তির কাছে কোনোদিন অবরুদ্ধ হয় না—যিনি কেবল হিন্দুর দেবতা নন, যিনি ভারতবর্ষের দেবতা।"

কবি ভারতবর্ধকে একটি অথও সত্তা-রূপে উপলব্ধি করিলেও বঙ্গভূমিকে বিশেষভাবে ভালবাসিয়া বারবার বলিয়াছেন—

আমার দোনার বাংলা, আমি তোমার তালোবানি, চিরদিন তোমার আকাশ, তোমার বাতাদ, আমার প্রাণে বাজায় বাঁশি।

কবি বার-বারই বলিয়াছেন-

তোমারি ধ্লামাটি অঙ্গে মাধি' ধশু জীবন মানি।

অথবা---

সার্থক জনম আমার, জনেছি এই দেশে ; সার্থক জনম মা গে। তোমার ভালবেসে !

কবির কাছে স্বদেশ-মাতা কেবলমাত্র মৃন্ময়ী নহেন, তিনি চিন্ময়ী—

আজি বাংলাদেশের হৃদর হ'তে
কপন আপনি
তুমি এই অপরূপ রূপে বাহির
হ'লে জননী।

এই চিনায়ী স্থদেশ-জননী বিশ্বমাতারই থণ্ড প্রকাশ রূপে কবির চফে প্রতিভাত—

ও আমার দেশের মাটি,
তোমার 'পরে ঠেকাই মাধা !
তোমাতে বিশ্বমরীর
তোমাতে বিশ্বমারের
আঁচল পাতা !

দেই মাটির দেশই কবির দেহমনে মিলাইয়া আছেন প্রাণ-রূপে ভাব-রূপে—

তুমি মিশেছো মোর দেহের দনে,
তুমি মিলেছো মোর প্রাণে মনে.
তোমার ঐ ভামল বরণ কোমল মৃতি
মর্মে গাঁখা।

তাই কবি ভক্তি-গদ্গদ চিত্তে দেশ-মাতাকে প্রাণাম করিয়াছেন — "নমো নমো নমঃ স্থানর মম জননী বন্ধভূমি!"

কবির মনে এইরূপ স্থদেশপ্রীতি সার্বজ্ঞনীন ও সার্বভৌমিক প্রীতির সঙ্গে ওতঃপ্রোত হইয়া মিশিয়া থাকাতে সংকীর্ণ স্বাদেশিকতা কবির কাছে ভয়ঙ্কর—

Nationalism is a great menace. It is the particular thing which for years has been at the bottom of India's troubles.

সংকীর্ণ স্বাদেশিকতার উদ্ধে ভারতবর্ষকে উঠিতে হইবে, ইহাই তাহার বহুকালের সাধনা ও উত্তরাধিকার—

"She has tried to make an adjustment of races, to acknowledge the real difference between them where these exist, and yet seek for some basis of unity. This basis has come through our saints like Nanak, Kabir, Chaitanya and others, preaching one God to all races of India."

মান্ধরে সঙ্গে মান্ধরে মিলনে আনন্দ, বিরোধে ত্রংথ। এই বিরোধ দূর করিবার জন্ম কালে কালে দেশে দেশে মহাপুরুষেরা চেষ্টা করিরাছেন। মানুষের বিরোধের কারণ হইতেছে অহলার এবং স্বার্থপরতা; এই অহং ভাবকে এক প্রেমস্বরূপের বোধের মধ্যে নিম্জ্রিত করিয়া সকল বিরোধের সমন্বর করিতে হইবে; তাহা ছাড়া অন্য গতি নাই—

Each individual has his self-love. Therefore his brute instinct leads him to fight with others in the sole pursuit of his self-interest. But man has also his higher instincts of sympathy and mutual help. The people who are lacking in this higher moral power and who therefore cannot combine in fellowship with one another must perish or live in a state of degradation. Only those people have survived and achieved civilization who have this spirit of co-operation strong in them. So we find that from the beginning of history men had to choose between fighting with one another and combining, between serving their own interest or the common interest of all.

স্বার্থপর স্বজাতি-প্রীতি বা স্বদেশ-প্রীতির পরিণাম বিনাশ—

বার্থের নমাপ্তি অপঘাতে বার্থ বতো পূর্ণ হয়, লোভ কুখানল ততো তার বেড়ে উঠে,—বিষ ধরাতল আপনার থাল্ল বলি' না করি' বিচার জঠবে প্রিতে চায় ! ছুটিয়াছে জাতিপ্রেম মৃত্যুর সন্ধানে বাহি বার্থতিরী, গুপ্ত পর্বতের পানে।

স্বার্থ ত্যাগ করিয়া অহঙ্কার বিসর্জন দিয়া পরাথে আআ্রোংসর্গই যে যথার্থ বদেশপ্রীতি একথা তিনি বারংবার বলিয়া 'সফলতার সভপায়' নির্দেশ করিয়াছেন—"ভাবিয়া দেখো, আমরা যথন ইংরেজকে বলিতেছি—তুমি সাধারণ মতুগুস্বভাবের চেয়ে উপরে ওঠো, তুমি স্বজাতির স্বার্থকে ভারতবর্ষের মঙ্গলের কাছে থর্ব করো, তথন ইংরেজ যদি জ্বাব দেয়, 'আচ্ছা তোমার মুখে ধর্মোপদেশ আমরা পরে ভনবো, আপাতত তোমার প্রতি আমার বক্তবা এই যে, সাধারণ-মতুশ্য-স্বভাবের নিয়ত্ম কোঠার আমি আছি, সেই কোঠার তুমিও এসো, তাহার উপরে উঠিয়া কাজ নাই—স্বজাতির স্বার্থকে তুমি নিজের স্বার্থ করো, স্বজাতির উন্নতির জন্ম তুমি প্রাণ দিতে না পারো, অন্তত আরাম বলো, অর্থ বলো, কিছু একটা দাও! তোমাদের দেশের জন্ম আমরাই সমস্ত করিব আর তোমরা কিছুই করিবে না ?' একথা বলিলে তাহার কি উত্তর আছে ?'

আমাদের জাতীয় জীবনের জড়তার এই লজ্জা-মোচনের উপায়-সরপ কবি কতকগুলি কর্ম নির্দেশ করিয়াছিলেন, তাহার মধ্যে প্রধান হইতেছে 'হদেশী সমাজ' প্রতিষ্ঠা। প্রাচীন কালে যে সমাজ-বাবস্থা ছিলো, "সেই সমাজ আমাদের এখনো আছে, কিন্তু তাহার ভিতর দিয়া রক্ষাভিম্থী মোক্ষাভিম্থী বেগবতী স্রোতধারা 'যেনাহং নামতা স্থাং কিমহং তেন কুর্যান্' এই গান করিয়া ধাবিত হইতেছে না।—

> মালা ছিলো, তার ফুলগুলি গেছে, রয়েছে ডোর।

"সেইজন্ত আমাদের এতোদিনকার সমাজ আমাদিগকে বল দিতেছে না, গৌরব দিতেছে না, আধ্যাত্মিকতার দিকে আমাদিগকে অগ্রসর করিতেছে না, আমাদিগকে চতুদিকে প্রতিহত করিয়া রাখিয়াছে। এই সমাজের মহৎ উদ্দেশ্ত যথন আমরা সচেতন ভাবে বুঝিব, ইহাকে সম্পূর্ণ সফল করিবার জন্ত যথন সচেত্ত ভাবে উন্তত হইব, তথনই মুহূর্তের মধ্যে বৃহৎ হইব, মুক্ত হইব, অমর হইব—জগতের মধ্যে আমাদের প্রতিষ্ঠা হইবে, প্রাচীন ভারতের তপোবনে ঋবিরা যে যজ্ঞ করিয়াছিলেন, তাহা সফল হইবে, এবং পিতামহগণ আমাদের মধ্যে ক্রতার্থ হইয়া আমাদিগকে আনীবাদ করিবেন।''

রবীজ্ঞনাথ স্বদেশ-দেবার যে-সব উপায় নির্দেশ করিয়াছেন তাহার মধ্যে উত্তেজ্ঞনা নাই, পরের প্রতি জোহ বা বিদ্বেষ নাই; এজন্ম তাঁহার প্রণালী শীঘ্র লোকের মন হরণ করে না। তিনি বহুদিন পূর্বে স্বদেশজ্ঞননীকে সংবাধন করিয়া প্রার্থনা করেন—

নিজহত্তে শাক-জন্ন ভূলে দাও পাচেই, তাই যেনো ক্লচে,— মোটা বস্ত্ৰ বুলে দাও বদি নিজ হাতে, তাহে লঞ্জা বুচে।

কিন্তু পরবিদ্ধেষের বশে যথন বিলাতী কাপড় পুড়াইয়া ফেলার ধুম লাগিয়াছিল তথন কবি তাহা সমর্থন করিতে পারেন নাই। এই কথা তিনি 'বিরে বাইরে' উপজ্ঞাসে সম্পীপ ও নিথিশেশ চরিত্রের তারতমা দ্বারা ও একাধিক প্রবন্ধে বিশ্বভাবে বুঝাইতে চেষ্টা করিয়াছেন—

Prof. Thompson বলিয়াছেন—

"He (Rabindranath) faces both East and West, fillal to both deeply indebted to both. He has been both of his nation, and not of it, his genius has been born of Indian thought, not of poets and philosophers alone, but of the common people, yet it has been fostered by Western thought and by English literature; he has been the mightiest of national voices, yet he has stood uside from his own folk in more than one angry controversy."

কবির কাছে স্থদেশ এত সত্য যে সেখানে কোনো রক্ষের ভেদ-বিচ্ছেদ তিনি সহ্য করিতে পারেন না। স্থদেশ তো কেবলমাত্র মাটির দেশ নহে, দেশবাসীদের লইয়াই তো দেশ। আমার স্বজ্ঞাতি ও স্থধনী বলিয়া পরিচিত্ত যে লোক অন্যায় উৎপীড়ন ও অত্যাচার করিয়া পরধর্ষকে ভয়াবহ প্রতিপন্ন করিতেছে তাহা অপেকা সংকর্মশীল বিধনী যে আমার অধিক আত্মীয় একথা কবি 'গোরা' উপন্যাসে পরেশবাব্র ম্থ দিয়া বলাইয়াছেন—"পবিত্রতাকে বাহিরের জিনিস করিয়া ভূলিয়া ভা্রতবর্ষে আমরা এ কী ভয়ন্ধর অধ্য

কবিতেছি৷ উৎপাত ডাকিয়া আনিয়া মৃস্পমানকে যে পোক পীড়ন করিতেছে, তাহারই ঘরে আমার জ্বাত থাকিবে, আর উৎপাত স্বীকার করিয়াও মৃস্পমানের ছেলেকে যে রক্ষা করিতেছে এবং সমাজের নিন্দাও বহন করিতে প্রস্তুত হইয়াছে তাহারই ঘরে আমার জ্বাত নষ্ট হইবে!"

এই কথা আঞ্চকালের হিন্দু-মুসলমানের ক্বত্রিম বিরোধের দিনে বিশেষ ভাবে অন্থধাবন করার যোগ্য।

রবীন্দ্রনাথ দেশের সঙ্গে সঙ্গে দেশের মানুষ ও ভাষাকে ভালবাসিয়াছেন বলিয়া স্বদেশের সব ভালো ও বিদেশের সব মন্দ এমন কথা কথনো বলিতে পারেন নাই। তিনি স্বদেশের সমস্ত ক্রটি ও অপূর্ণতা স্পষ্ট ভাষায় নির্মন-ভাবে নির্দেশ করিয়াছেন, কাবণ তিনি যে সত্যদ্রষ্ঠা কবি! সমাজে ধর্মে শিক্ষাব্যবস্থায় সর্বত্র তিনি সংস্কারক দেশবন্ধু। কবি আমাদের 'শিক্ষার হেরফের' ঘুচাইয়া "আমাদের·····ভাবের সহিত ভাষা, শিক্ষার সহিত জীবন" সমঞ্জস করিয়া তুলিতে বলিয়াছেন; "ছাত্রদের প্রতি সম্ভাষণ" করিয়া কবি বলিয়াছেন-- ভারতমাতা যে হিমালয়ের দ্র্পম চূড়ার উপরে শিলাসনে বসিয়া কেবলই করুণ স্থরে বীণা বাজাইতেছেন, একথা ধ্যান করা নেশা মাত্র—কিন্তু ভারতমাতা যে আমাদের পল্লীতেই পঙ্কশেষ পানাপুকুরের ধারে ম্যালেরিয়া-জীর্ণ প্রীহারোগীকে কোলে লইয়া তাহার পথ্যের জন্ম আপন শৃক্তভাণ্ডারের দিকে হতাশ দৃষ্টিতে চাহিয়া আছেন, ইহা দেখাই যথার্থ দেখা। ষে ভারতমাতা ব্যাদ-বশিষ্ঠ-বিশ্বামিত্রের তপোবনে শমীবৃক্ষমূলে আলবালে জলুসেচন করিয়া বেড়াইতেছেন, তাঁহাকে করজোড়ে প্রণাম করিলেই যথেষ্ট, কিন্তু আমাদের ঘরের পাশে যে জীর্ণচীরধারিণী ভারতমাতা ছেলেটাকে ইংরেজী-বিত্যালয়ে শিখাইয়া কেরানীগিরির বিভন্নার মধ্যে স্থপ্রতিষ্ঠিত করিয়া मिताब क्या अर्थामान পরের পাকশালে রাধিয়া বেড়াইতেছেন, তাঁহাকে তো অমন কেবলমাত প্রণাম করিয়া দারা যায় না।" কবি দেশের ছাত্রদের সংস্থাধন করিয়া আরো বলিয়াছেন—"আমি জানি, ইতিহাস-বিশ্রুত যে-সকল মহাপুরুষ দেশহিতের জন্ম, শোকহিতের জন্ম আপনাকে উৎদর্গ করিয়া মৃত্যুকে পরান্ত, স্বার্থকে লজ্জিত ও ছ:ধক্লেশকে অমর মহিমায় সম্জ্জল করিয়া গেছেন, তাঁহাদের দুষ্টান্ত তোমাদিগকে যথন আহ্বান করে, তথন তাহাকে তোমরা আৰু বিজ্ঞ বিষয়ীর মতো বিদ্ধপের সহিত প্রত্যাখ্যাত করিতে চাও না— ভোষাদের সেই অনাজাত পূপা, অবশু পুণোর ক্লার নবীন-মুদয়ের সমত

আলা-আকাজ্ঞাকে আমি আজ ভোষাদের বেংলর বারস্বতবর্গের নাজ্য আহ্বান করিতেছি—ভোগের পথে নহে, ভিক্ষার পথে নহে,—কর্মের পথে। দেশের কাব্যে, গানে, হড়ার, প্রাচীন মন্দিরের ভরাবলের কীটাইপুঁখির জীর্ণপত্তে, প্রাম্য পার্বণে, ব্রতক্ষণার, পরীর ক্রবিকুটীরে প্রভ্রেক বস্তবে স্থানীম চিক্তা ও গবেবলা বারা জানিবার জন্ত, শিক্ষার বিবরতে কেবল পুঁথির ব্যয় হইতে ম্থত্থ না করিয়া বিশ্বের মধ্যে ভাহাকে সন্ধান করিবার জন্ত, ভোমাদিগকে আহ্বান করিভেছি; এই আহ্বানে যদি ভোমরা সাড়া রাও. ভবেই ভোমরা থথার্থ বিশ্ব-বিভালরের ছাত্র হইতে পারিবে; তবেই ভোমরা গাহিত্যকে অফুকরণের বিড়ম্বনা হইতে বক্ষা করিতে পারিবে এবং দেশের চিৎশক্তিকে চ্বর্জনভার অবসাদ হইতে উদ্ধার করিয়া জগতের জ্ঞানিসভার ব্যদেশকে সমাদৃত করিতে পারিবে।"

ভারতব্যীর সভ্যতার আদর্শ যে দিখিলর বা সামাল্য বিস্তার নহে, তাহা যে জ্ঞানবিজ্ঞান ও স্বাধীনভার আদর্শ স্থাপনা করা, ভাহা তিনি বার বার বলিয়াছেন। অতি বাল্যকালে ১২৮৫ সালের ভারতীতে "কান্ননিক ও বাস্তবিক" নামক প্রবন্ধে তিনি আকাক্ষা প্রকাশ করিয়াছিলেন বে, ভারতবর্বে একটি আদর্শ সভ্যতা ও স্বাধীনতা প্রতিষ্ঠিত হইবে, যে সভ্যতা অপরকে অসভ্য রাধিয়া প্রভূষ করিতে উৎস্থক হইবে না, যে স্বাধীনতা অপরের পরাধীনতার বুকে চাপিয়া বিরাজ করিবে না। কবি নিধিয়াছিলেন---"মনে হয়, ঐ সভ্যতার উচ্চ শিখরে থাকিয়া ধর্বন পৃথিবীর কোনো অধীনতায়-রিষ্ট অত্যাচারে-নিশীডিত জাতির কাতর ক্রন্দন গুনিতে পাইব, তথন স্বাধীনতা ও সাম্যের বৈজ্ঞগুরী উড্ডীন করিয়। তাহাদের অধীনতার শৃঙ্খণ ভাঙ্গিয়া দিব। আমরা নিজে শতান্দী হইতে শতান্দী পর্যন্ত অধীন ভাবে অদ্ধকার-কারাগৃহে অঞ্জ মোচন করিরা আসিরাছি, আমরা সেই কাতর জাতির মর্মের বেলন যেমন বৃধিব, তেমন কে বৃধিবে ৷ অসভ্যতার অন্ধকারে পৃথিবীর যে-সকল দেশ নিজিত আছে, তাহাদের ঘুম ভাঙাইতে আমরা দেশ-বিদেশে এমণ क्त्रित । विकान, मनेन, कावा পिएवांत अश्व (मन-विरम्दन लाक आमारमन ভাষা শিক্ষা করিবে। আমাদের দেশ হইতে জ্ঞান উপার্জন করিতে এই मिल्येत विश्वविद्यालक सम्म-विस्मालक ट्रांक भूम हरेटव !"

আট-চল্লিশ বংসর পূর্বে কবি-চিত্ত বে আদর্শ ধারণা করিয়াছিল, তাহাই আরু বিশ্বভারতী রূপে প্রকাশ পাইয়াছে। এই বিশ্বভারতী বিশ্বনানবের জ্ঞান-সাধনা ও জ্ঞান-বিনিময়ের তীর্পক্ষেত্র। এইজ্বন্ত যথন বিদেশী শিকাও শিকায়তন বর্জন করিবার হজুগ দেশের বৃক্তে মাডামাতি করিতেছিল তথন রবীজ্রনাথ তাহার সমর্থন না করাতে পরম নিন্দাভাজন হইয়াছিলেন। কিন্তু সত্য-সন্ধ কবি কথনো নিন্দা বা গ্রানির ভরে নিজ্ঞের আদর্শ হইতে ভ্রষ্ট হন নাই। আবার এই কবিই স্থদেশের লোককে বিদেশী ধরণের শিক্ষাকে প্রকৃত স্থদেশী ধরণে পরিণত করিতে বলিয়া এবং "শিক্ষার বাহন" মাতৃভাবাই হওরা উচিত বলাতে দেশের লোকের বিরাগভাজন হইয়াছিলেন। কবি কথনো গতান্থগতিক হইয়া সাময়িক উত্তেজনায় মাতিয়া উঠিতে পারেন নাই বলিয়া তাঁহাকে বহুবার লোকগঞ্জনা সহা করিতে হইয়াছে। একটু অমুধাবন করিয়া দেখিলেই আমরা বৃঝিতে পারিব যে এইখানেই কবিব পরম গৌরব ও মহন্ত নিহিত আছে।

পরের পরাধীনতার উপর প্রতিষ্ঠিত স্বাধীনতা ঐ মহৎ নামের যোগ্য নয় এ কথা তিনি রূপকের মধ্য দিয়া 'কাঙালিনী' নামক প্রসিদ্ধ কবিতায় বলিয়াছেন। এ সম্বন্ধে 'জীবন-স্থৃতিতে'ও তিনি লিপিয়াছেন—

> "আনন্দমরীর আগমনে আনন্দে গিরেছে দেশ ছেবে, হেরো ঐ ধনীর দুয়ারে গাঁডাইয়া ফাঙালিনী মেরে—

এ তো আমার নিজেরই কথা। যে সব সমাজে ঐশর্যশালী স্বাধীন জীবনের উৎসব, সেধানে শানাই বাজিরা উঠিয়াছে, সেধানে আনাগোনা কলরবের অস্ত নাই; আমরা বাহির প্রাঙ্গণে দাঁড়াইয়া লুক দৃষ্টিতে তাকাইয়া আছি মাত্র— সাজ করিয়া আসিয়া যোগ দিতে পারিলাম কই ?"

তাই কবি নিজের প্রিয়তম পিতৃভূমি ভারতের জঞ আদর্শ স্বাধীনতা ভগবানের নিকট প্রার্থনা করিয়াছেন—

চিত্ত বেখা ভরণ্স্থা, উচ্চ বেখা শির,
জ্ঞান বেখা মৃক্তা, বেখা গৃহের প্রাচীর
লাপন প্রাঙ্গণ-তলে দিবস-শর্বরী
কম্পারে রাখে নাই থও কৃত্ত করি',
বেখা বাক্য হলরের উৎসম্প হ'তে
উচ্ছ্সিয়া উঠে, বেখা নির্বারিভ স্রোতে
দেশে দেশে দিশে দিশে কর্মধারা ধার
ক্ষাক্র সহস্রবিধ চরিচার্যভার;

বেখা ভূচ্ছ আচারের মরবাদ্রাশি
বিচারের লোডংগথ কেলে নাই গ্রানি',
পৌরুবেরে করে নি শতধা; নিত্য যেখা
ভূমি সর্ব কর্ম চিন্তা আনন্দের নেতা,—
নিজ হল্ডে নির্দর আখাত করি পিতঃ
ভারতেরে সেই খর্গে কর লাগরিত।

কবির অনেশপ্রেম এমনই অসাধারণ, এমনই অনেশের সর্বাজীন উন্নতিকামী।
রবীজ্বনাথের অন্ধেশপ্রেম সম্বন্ধীর কবিতাবলী স্মৃভামিত সম্ক্র-বিশেষ।
সেই রত্নাকর হইতে করেকটি মাত্র মণি উদ্ধার করিয়া আমি আপনাদের নিকটে
উপস্থিত করিলাম। কোন্টি ছাড়িয়া কোন্টি দেখাই এই সমস্তান্থ পড়িরা
অর্গম নিপুণ মণিকারের মতন স্থবিহাস্ত মালা গাথিয়া এই রত্নাবলী উপস্থিত
করিতে পারিলাম না; ইহার জন্ম আমি অত্যন্ত হংথিত। উপসংহারে কবিকণ্ঠেব উদাত্ত বাণীর সঙ্গে আমার শ্রহাকুন্টিত কণ্ঠম্বর মিলাইন্ন প্রার্থনা করি—

বাংলার মাটি नाःलात जल, বাংলার ফল বাংলার বায পুণা হউক পুণ্য হউক হে ভগবান ! পুণ্য হউক वाःलाब शहे. বাংলার ঘর বাংলার মাঠ বাংলার বন পূর্ণ হউক পূৰ্ণ ২উক হে ভগবান্! পূৰ্ণ হউক বাঙালীর আশা, বাঙালীর পণ বাঙালীর ভাষা বাঙালীর কাজ সভা হউক সভা হউক হে ভগৰান্! সভ্য হউক বাঙালীর মন, वाहानीव थान হতো ভাই বোৰ वाडानीत परत এক হউক কৰ্ম্ভৰ ক্ৰ হে ভগৰাৰ ৷ এক হউক

থ। মৃত্যু-সক্ষরে স্বাধী-ক্রশাথের থারণ।

রবীজনাথ সভ্য নিব স্থারের প্রারী কবি, "লগতে আনন্দ-বজ্ঞে" ভাহার নিম্মণ, সেই বজ্ঞের ভিনি প্রধান পুরোহিত। তাই ভাহার নিক্ট কোনও ব্যাপারই আনন্দহীন বলিয়া প্রতিভাত হয় না। বে মৃত্যুর ভয়ে জগৎবাসী সম্ভর, সেই মৃত্যুকেও ভিনি অভন-বৃভিতে দেখিবাছেন, এবং মৃত্যুর বিভাবিকা বোচন করিবা মৃত্যুকেও স্থানর করিয়া দেখাইয়াছেন।

किट्यांत्र कवि त्राधात रवनामी मृज्यारक मरवाधन कतित्रा विनेतारहन-

মরণ বে তুহি মন ভাম সমান !

-ভামুসিংছ ঠাকুরের পথাবল

কারণ মৃত্যুতে সকল সম্ভাপ প্র হইয়া যায়। আর বাস্তবিক মৃত্যু তে। কোখাও নাই।—

> নাই তোর নাই রে ভাবনা, এ **জগতে কিছু**ই মরে না।

এই জগতের বাবে একটি সাগর আছে, নিস্তব্ধ তাহার জলরাশি। চারি বিস্কৃ হ'তে সেধা অবিরাম অবিলাম জীবনের প্রোত মিশে আসি'।

জগতের মাঝখানে, সেই সাগরের তলে রচিত হডেছে পলে পলে, অনস্ত-জীবন মহাছেশ ।

—প্ৰভাত-**সন্ধা**ত, অনুষ্ঠ জীবন

ষহাজীবন হইতে উৎপন্ন ব্যক্তি-জীবন যেন অগ্নিজালা হইতে বিনিগত বিক্ল্পিল, তাহা বাহা হইতে উৎপন্ন হন্ন তাহাতেই লন্ন পাইনা নিৰ্বাণ লাভ করে। আন পার্ষিব জীবনই তো এক মাত্র জীবন নহে, আন এই জীবনও তো মরণের সমষ্টি জিন্ন আন কিছু নহে, প্রতি পলে কত পরিবর্তন ঘটে এই দেহের অন্তরালে, লৈশবের পরে বৌবন ও বৌবনের পরে বার্ষক্য এবং বার্ষক্যের পর দেহাত্তর একই মৃত্যুর পৃষ্ণাল-পরাপার। ৰউটুকু বৰ্তমান তারেই কি বল আৰু ? দে তো শুৰু পলক নিষেব।

অতীতের মৃত ভার পৃঠেতে ররেছে তার কোধাও নাহিক তার শেষ।

ৰত বৰ্ব বেঁচে আছি তত বৰ্ব ম'নে পেছি, মনিডেছি প্ৰতি পলে পলে

জীবস্ত মরণ মোরা মরণের খবে থাকি, জানিনে মরণ কারে বলে।

> মৃত্যুৱে হেরিয়া কেন কাঁছি। জীবন তো মৃত্যুর সমাধি!

জীবন-মরণ তো কেবল ইহলোকের ব্যাপার নহে, তাহা লোক-লোকান্তরের একটি সংলগ্ন ঘটনা---

কবে রে আদিবে সেই দিন—
উঠিব সে আকাশের পথে,
আমার মরণ-ভোর দিরে
বৈধে দেবো জগতে জগতে।
আমার মরণ-ভোর দিরে
গাঁথে দেবো জগতের মালা,
ববি শুলা একেকটি ফুল,
চরাচর কুম্মের ভালা।

—প্ৰভাত-সঙ্গীত

কারণ---

অ**ন্তিখের** চক্রতলে

একবার বাধা প'লে

পাৰ কি নিস্তার ?

এই মরণ-যাত্রায় কাহারও সহিত কাহারও বিচেছে হয় না, কারণ সকলেই
নরণ-যাত্রী, কেহ আগে আর কেহ পিছে চলিতেছে মাত্র, মহাযাত্রা-পথে আবার
লোক-লোকাস্তরে পরস্পরের সহিত সাক্ষাৎ ঘটিয়া যাওয়া কিছুমাত্র অসম্ভব
নহে।

তোরাও আমিনি মবে উটিনি রে কণ ছিকে, এক সাথে হইবে দিগন, জোৱে জোৱে দাগিবে বীধন। জীব অণুটেডন্ত, মহাপ্রাণ বিভূচৈতন্ত। অণু ক্রমাগত বিভূত্বলাভের সাধনা কবিয়া মৃত্যুর পথে অপ্রদর হট্যা চলিয়াছে।

> অণুমাত জীব আমি কণামাত ঠাই ছেড়ে বেতে চাই চরাচরমন্ত । এ আশা হদরে জারে তোমারই আখাস-বলে, মরণ, তোমার হোক জার ।

> > ---প্রভাত-সঙ্গীত, অনন্ত মর-

বিশ্বন্ধপৎ নাবিক, আমরা তাহার বাত্রী পথিক, আমরা প্রবাসী, অনন্তের মিশন-প্ররাদী হইরা অভিদারে যাত্রা ক্রিয়া চলিয়াছি।

গাও বিশ্ব গাও তুমি
স্বদুর অদৃশু হ'তে,
গাও তব নাবিকের গান —
শত লক্ষ বাত্রী ল'রে
কোধার বেডেছ তুমি
ভাই ভাবি মুদ্ধিনা নরান

ম'রে যাই অসীম মধুরে, বিন্দু হ'তে বিন্দু হ'রে মিলারে মিশাবে দাউ

जनत्यत रम्द रम्दर । — इति ७ भान, পनिमाय

আমাদের জীবনের থণ্ডতা কেবল আমাদের পার্থিব জীবনের ব্যবহারিক বোধ মাত্র, কিন্তু আসলে—

আকাশ-মণ্ডপে শুধু ব'দে আছে এক 'চির-ছিন"।

—কডি ও কোমল, চির দিন

"আমাদের দৃষ্টির ক্ষেত্র সীমাবদ্ধ, তাই আমর। মরণকে ভর করি। আমরা ভাবি যুতু; বুকি জীবনের শেষ। কিন্তু কেংটাই আমাদের বর্তমানে সমাপ্ত, জীবনটা একটা চক্ষস অসমাপ্তি ভাষার সঙ্গে লাগিয়া আছে, ভাষাকে বৃহৎ ভবিছতের দিকে বহন পরিয়া লইয়া চলিয়াছে।"

---পঞ্ছত, মমুগ্

আমাদের অধিষ্ঠান ভূমার মধ্যে। বাহা ভূমা তাহা সত্য, তাহা অমৃত।
তাই আমার মরণ নাই। মৃত্যু বৃদিয়া প্রতীয়মান অবস্থা জীবনেরই
প্রকারান্তর মাত্র; অসম্পূর্ণ জীধনের সম্পূর্ণতা-লাতের সহায় ও উপায় মরণ।

এই मीमावद जीवतन गांश जर्म् अक्षाक्ष भारक, जाहाद मन्मृद्रम हद्र मदरम। **गृ**ज्ञात भृज-धात्रात देश-कीरानेत मकन वन्द विद्वाध मानि श्लीख शहेता सात्र, তাহার পরে অনত জীবন, অনন্ত শান্তি, অনন্ত আনন্দ।

> कोरदम यङ श्रृका श्टला ना नाता, জানি হে জানি তাও হর নি-হারা।

—শীভাপ্ললি

জীব ভাহার জীবনের অন্তিম্ব অমুভব করে পরিবর্ডন-পরম্পরার ভিতর দিয়া, এবং সেই পরিবর্তনেরই নামান্তর মৃত্যু। মাতৃগর্ভন্থ ত্রণ মাতৃগর্ভে বাস করিবার সময়ে মাতাকে চিনে না, কিন্তু মাতৃক্রোড়ে জন্মগ্রছণ করিবামাত্রই মাতাকে আপনার সর্বাপেকা আত্মীয় বলিয়া চিনিয়া লয়; তেমনি আমরা মৃত্যুকে অপরিচয়ের জন্ম বৃথা ভয় করি, কিন্তু মৃত্যু জীবের পরমাত্মীয়, সে আত্মার প্রণরী। মৃত্যু প্রাণের প্রণয়-লাভের জ্বন্ত দিবারাত্র সাধনা করিতেছে, তাহার মন হরণ করিবার জন্ম তাহার নিরন্তর অবিশ্রাম আরাধনা চলিতেছে; মৃত্যুর চঞ্চলা প্রেম্বলী প্রথমে তাহার কাছে ধরা দিতে চাহে না, ক্লিন্ত অবশেৰে তাছাদের মনোমিলন ঘটিয়া যায়।---

চপল চঞ্চল প্ৰিয়া

ধরা নাহি দিতে চার,

স্থির নাহি খাকে,

মেলি' নানাবৰ্ণ পাখা

উড়ে উড়ে চ'লে ৰায়

নব নব শাখে।

তুই তবু একমনে

মৌনব্রত একাসনে

বৃদি' নিরলন, ক্রমে সে পড়িবে ধরা,

গীভ ৰন্ধ হ'ৰে বাবে,

মানিবে নে বশ।

ওগোমৃত্যু, সেই লগে

নিজন শরনপ্রায়ে

এদ বরবেশে,

আমার পরাণ-বধু

ক্লাম্ভ হস্ত প্রদারিয়া

বহু ভালোবেদে

ধরিবে ভোমার বাহ ;

তথৰ ভাহারে তুমি

মন্ত্র পড়ি' নিয়ে৷ ;

রজিম অধ্য ডার

निविष् पृथन-मारन

পাওু করি' ছিয়ো।

—সোনার তরী, প্রতীব্দা

মৃত্যুকে যাহারা ভালো করিয়া চিনিয়া উঠিতে শারে নাই, ডাহারা তাহাকে জীকা বনে করে; কিন্তু বাহার সহিত মৃত্যুর মনোমিশন ঘটে, নাহার প্রাণ সেহরণ করে, সে তাহার মনোহারিত বৃত্তিরা তাহার মিলনের জন্ত সম্থ্যুক হইরাই থাকে—

শুনি' দ্মশানহাসীর কলকল

গুলো সরণ, ছে নোর মরণ,
হুবে পৌরীর জীবি ছলছল

গুরু কাঁপিছে নিচোলাবরণ।
টার যাতা কীঞ্চে শিরে হানি কর,
কেশা বরেরে করিতে বরণ,
টার পিতা মনে মানে শরমাদ,
গুলো মরণ, হে যোর মরণ।

—উৎসর্গ, মরণ

বে মৃত্যু লাভ করিয়াছে দে তো সমাপ্ত হইরা বার নাই---

ব্যাপিয়া সমস্ত বিশ্বে

দেব ভারে দর্ব দৃষ্টে

वृहद कत्रियो ।

—চিত্ৰা, মৃত্যুর পরে

আমার জীবন তো আমার এই দেহটির মধ্যেই পরিসমাপ্ত নহে, তাহা নব নব কলেবরে আমার হইরা আমাকে আমিঘের আম্বাদ জানাইতেছে ও জানাইবে। আমার জন্ম হইতে জীবন মৃত্যুর অভিসারে চলিরাছে, সে কি আজিকার ঘটনা। সে যে—

> শত জনমের চির-সক্সতা, আমার প্রেরসী, আমার দেবতা, আমার বিশ্বরূপী।

—िंहजा, व्यवधानी

আমার জীবনদেবতা যদি আমার ইহ-জীবনে সম্পূর্ণ সার্থকতার আনন্দ না পাইরা থাকেন, তবে কাহাতেই বা হঃথ করিবার বা নিরাধাস হইবার কি আছে—

ক্ষেত্ৰ দাও তবে আজিকায় সভা, আনো নৰ স্থাগ, আনো নৰ শোভা, নুষ্ক্রন ক্রিয়া তহ আর বার.

চিন্ন-পুরাতন মোরে, নৃতন বিবাহে বীধিবৈ আমায়

नदीन कोरन-एकारतः।

—চিত্ৰা, জীবনদেবতা

অনস্ক-পথ-বাত্রী মানব তাহার বাত্রা-পথের একটি আতিথ্যস্থান ছাড়িরা বাইতে কাতর হয়, সঙ্গীদের ছাড়িয়া যাইতেছে মনে করিয়া ভর পায়, কিন্তু সে তো চির-একাকী,—

ভৰনো চলেছ একা অনম্ভ ভূবনে
কোৰা হ'তে কোৰা গেছ না রহিবে মনে। — চিতানী, বাত্রী

এবং নৰ নৰ পৰিচয়ের ভিতর দিয়া তাহার যাত্রা—

পুরাণো আবাস ছেডে বাই যবে,
মনে ভেবে মরি কি জানি কি ববে,
নৃতনের মাবে তুমি পুরাতন,
সে কথা ভূলিরা বাই।
জীবণে মরণে নিধিস ভূবনে

য়খনি যেখানে লবে চির জনমের পরিতিত ওচে,

তৃষিই চিনাবে সবে। — গান

ষিনি জীবন মরণের বিধাতা, তিনি প্রাণের সহিত মরণের ঝুলন ও দোল খেলা দেখিতেছেন,—তিনি প্রাণকে দোলা দিয়া মরণে-জীবনে চালাচালি করেন,—

> পলকে আলোকে তুলিছ, পলকে আঁখারে নিতেছ টানি'।

ভান হাত হ'তে বাম হাতে লও, বাম হাত হ'তে ডানে।

ভাহাতে

আছে তো বেমন যা ছিল।
হারার নি কিছু, কুরাছ নি কিছু,
বে ছারাল, বে বা বাঁচিল।
---উৎসর্গ, মরণ-বোলা

মৃত্যু পরম কারুণিক, সকলের ভেদ ঘূচাইরা সমতা-সম্পাদনের সহায ---

ইং-সংসারে ডিপারীর মতে। বঞ্চিত ছিল বে জন সতত, কক্ষণ হাতের মরণে ভাহারে বরণ করিরা নির্দো।

রাজা মহারাজা বেখা ছিল বারা, নশী গিরি বন রবি শশী ভারা, সকলের সাথে সমান করিয়া,

নিলে ভারে এ নিশিলে।

—মোহিত সেন সংকরণ, মরণ—বরণ

রালা প্রজা হবে লডো, গাক্বে না আব ছোট বড়, একই স্থোচের মূলে ভাস্ব স্থান বৈতঃশীর নদী গেরে। —প্রার্গাকত

মৃত্যুভীতি নবোঢার প্রণয়ভীতির তুল্য, কিন্তু একবার প্রণরীর সহিত প্রিচয় হইয়া গেলে আর ভয় থাকে না---

> প্রথম মিলন-ভীতি 'হঙেছে ববুর কোমার বিবাট মূর্ট্টি নির্মূপ' মধুর। সর্বজ্ঞ বিবাহ-বাশি উঠিতেছে বানি', সর্বজ্ঞ তোমার ক্রোড় হৈরিতেছি আজি।

জন্মের পূর্বে এই দেহও সংসাব জীবের অজ্ঞাত থাকে, তাহার দক্ষে পরিচয় হওয়ামাত্র তাহাদের—

> নিমেরেট মনে ২লো মাতৃবক্ষ সম নিতাপ্তট পরিচিত একাওট মম।

তেমনই "মৃত্যুও অজ্ঞাত মোর "--

জীবন আমার
এত ভালবাসি ব'লে হয়েছে প্রতায়,
সূত্যুত্রে এমনি ভালবাসিব নিশ্চয়।
তথ হতে তুলে নিজে শিশু কাঁকে ভরে,
মুমুর্তে আযাস-পায় সিয়ে ভ্রমন্তরে।

ইংলোক ও পরলোক ফুই-ই বিশ্বমাতার অমৃতপূর্ণ তান, আর মৃত্যু-

সে যে মাতৃপাণি

ন্তন হ'তে ন্তনান্ত্ৰৰে লইতেছে টানি'। —সোনার ভরী, বন্ধন

নিজের মরণে যেমন ভয় বা ছংশের কোনও কারণ নাই, প্রিয়জনের মূলুতেও তেমনই কোনও ক্লোভের কারণ নাই।—আমরা ক্লোভ করি, যে কেতু—

অল্ল লইরা থাকি, তাই মোর বাহা বায় ভাহা বায়। কণাটুকু যদি হারায় তা হ'লে প্রাণ করে হায় হায়।

किम्रु वाञ्चविक क्लाएंडर कारना कारन नाहे—

ভোষাতে রয়েছে কত শনী ভাষু,

কভূ না সারায় অণু পরমাণ । — [>]নবেক্স

াথন মৃত্যু আমাকে পরলোকে লইয়া বাইবে, তথন—

একখানি জীবনের প্রদীপ তৃলিখা,
ভোষারে হেধিব একা ভুবন ভুলিয়া।
—নেনেস্থ

মৃত্যু তো ইছলোক হইতেও চিরবিদার বা চিরনির্বাসন নছে। দেই ও মাগ্রা ছই-ই তো এথানেই নানা আকারে বহিয়া যায়।—মৃত্যুতে হারাইয়া-মাগ্রা থোকা হাওয়ায় জলে, তাবার আব টাদের আলোর মায়ের কাছে আসা-মাগ্রমা করে, সে স্বপ্রের ফাকে মায়ের মনের মধ্যে আবিভ্তি হয়। তাই থোকা মাকে সাস্থনা দিয়া বলিয়াছে—

মাসী যদি শুধায় ভোৱে
থোকা তোমার কোথায় গেল চ'লে।
থাকিল্ থোকা সে কি ছারায়,
আছে প্রামাব চোথেব ভারায়,
মিলিয়ে আহে আমার বুকের কালে —শিশু, বিশাব

সাজাহানের প্রেয়সী ভাজমহলে সমাধিতকে কেবল ছিলেন না, তিনি
সাজাহানের নিকট সর্ববাশিনী—

বেশা ভব বিরচিশী প্রিয়া বরেছে মিশিরা প্রভাতের স্কল্প আঞ্চাবে, ক্লান্ত-সন্মা বিশয়ের কক্ষণ নিঃখানে, পুনিমার বেংহীন চামেলির লাবণ্য-বিলানে, ভাষার অতীত তাঁরে

কাঙাল নয়ন যেখা বার হ'তে আদে কিরে কিরে।---বলাকা, সালাহান

প্রির বধন মৃত্যুতে নরন-সন্মুধ হইতে অপসারিত হইরা যার, তধনও সে অস্তর্হিত হর না।—

> नवन-अब्र्थ फूमि बाहे, नवरनव माचवारन निरवह (४ ठाँहे ;

> > আলি ভাই

ভাষলে ভাষল তুমি, নীলিমার নীল।

আমার নিধিল

তোমাতে পেরেছে ভার অস্তরের মিল। —বলাকা, ছবি

উঠিতেছে চরাচরে অনাদি অনম্ভ করে

সঙ্গীত উপার।

সে নিত্য গানের সনে মিশাইরা লহ মনে

জীবন ভাহার।

ব্যাপিরা সমস্ত বিবে দেখ' তারে সর্বদৃষ্টে

বৃহৎ করিয়া;

कीवरमद्र वृति शृद्ध (वर्ष) जात्त्र वृद्ध (वर्ष)

সম্মুখে ধরিয়া।

—চিজা, মৃত্যুর পরে

আমি যথন আমার বর্তমান দেহে থাকিব না, তথনও তো পৃথিবীতে সকাল-সন্ধ্যা ঋতৃ-পর্যায় আসিবে; কালে হয় তো আমার পরিচিতদের মন হইতে আমার স্থতি মৃছিরা যাইবে, কিন্তু 'আমি' তো লোপ পাইব না—

তথন---

কে বলে গো সেই গজাতে নেই আমি
সকাল বেলার কর্বে খেলা এই আমি।
নৃতন নাবে ডাক্বে বোরে,
বাধ্বে কছুন বাহ-ভোবে,
আসুব বাব চিয়বিদের সেই অমি।

---প্ৰবাহিণী

বলাকার উড়িয়া চলা দেখিয়া কবির---

মনে আজি গড়ে সেই কথা—
বুগে বুগে এসেছি চলিরা
বুলিরা বুলিরা
চূপে চুগে
রূপ হতে রূপে,
থাণ হ'তে গ্রানে।

মৃত্যুর প্রেম সর্বনাশা, তাই সে ক্রমাগত প্রাণ হ'তে প্রাণ টানিরা নব নব স্থাপাত্র আবাদন করাইরা লইরা চলে,—

সর্বনালা প্রেম তার, নিত্য তাই তুমি বরছাড়া। —বলাকা, নছী

বাহার

काटलब मिन्द्रा एर मुनाई बाटन खाईरन वादा हुई हाएछ ।

সেই মহাকাল প্রত্যেককে

ডাক দিল লোন মরণ-বাঁচন-নাচন-দভার ডক্কাতে। —প্রবাহিনী

আমরা সকলেই এখানে প্রবাসী; তাই কবি স্থদ্রের পিরাসী হইরা বলিয়াছেন—

সব ঠাই মোর যর আছে, আমি
সেই গর মরি খুঁজিয়া। — উৎসর্গ, প্রবাসী ও স্থদুর

বয়সের জীর্ণ পথলেবে মরণের সিংহ্গার পার হইয়া নবজীবন ও নবদৌবন-লাভের আহ্বান আমাদের কাছে নিরস্তর আসিতেছে; কিন্তু আমাদের অক্তানাতে ভয় লাগে; তাই আখাদ দিয়া কবি বলিতেছেন—

অচেনাকে ভর কি আমার ওরে।
অচেনাকেই চিনে চিনে
উঠ বে জীবন ও'রে।
জামি জানি আমার চেমা
কোন কালেই স্থ্রাবে না,
চিন্তারা গথে আমার
টাদ্যে অচিন ডোরে।

ছিল আমার মা অচেন।

মিল আমার কোলে।

সকল প্রেমেই অচেনা গো,

ভাই ডো জন্মর লোলে।

—গীডালি

মৃত্যুর প্রেমাভিসারেই জীবনের মহাযাতা-

আমি শুে। মৃত্যুর গুপু প্রেমের র'ব না গরের কোণে পেমে।
কামি চিরবৌধনেরে প্রাইব মালা,
শতে মোর তারি তো বরণডালা।
কোলে দিব আর সব ভার,
নাম কোর ভূপাকার
আয়োজন।

যাত্রার আনন্দগানে পূর্ণ আজি অনন্ত গগন।
তোর রথে গান গার বিষকবি,
গান গার চন্দ্র তারং হবি।
—বলাকা

ওরে মন.

কবি বলেন---

আমি যে অজানার যাত্রী সেই আমার আনন্দ। —বলাক।

এবং সেই জ্বন্ত তিনি নির্ভয়ে বলিতে পারিয়াছেন—

কেন রে এই ত্রারটুকু পার হ'তে সংশ্র প জয় জলানার জয়। —প্রবাহিণী

সেই অঞ্চানা সূত্যুর ভিতর দিয়া —

চিরকালের ধনটি ভোষার ক্ষণকালে লও যে নৃতন করি'। — বলাকা

অতএব মৃত্যুর সম্ব্রে দাড়াইয়া---

বলো অকম্পিত বৃক্তে,—
তোরে নাহি করি জ্ঞা,
এ স'সারে প্রতিদিশ তোরে করিয়াছি জয়।
তোর চেরে আমি সতা, এ বিশাসে প্রাণ দিব, দেখা।
শান্তি সতা, শিব সভা, সভা সেই চিরম্বদ এক।
——বলাকা

মৃত্যু তো মানবের---

बह ने क्रमायत कार्य-कार्य कार्य-कार्य कथा।

कीरवद्र कीवन गहेश--

বেহৰাতা মেদের ধেরা বাওলা, यन जाशास्त्र चूर्नी-भारकत्र जालका ; বেঁকে বেঁকে আকার এঁকে এঁকে

ठन्ट् नित्राकातः - वनाका

মহাপ্রাণ বা সমতা প্রাণ হইতে যে প্রাণধারা নিরম্ভর প্রবহমান হইতেছে তাহা তো মৃত্যুর ছার দিয়াই বহিয়া চলিয়াছে—

মৃত্যুর সিংহদার দিবেই জন্মের জর্মাত্রা। ---নটীর পূচা

দেই প্রাণে মন উঠ্বে মেতে মৃত্যু-মাঝে ঢাকা আছে

দে অন্তহীন প্রাণ।

দগতে কিছুই শেষ হয় না, কারণ শেষ তো অলেষেরই অংশ—

्रम्य नाहि त्य, त्मय कथा क वन्त्व।

ফুরার ধা, ভা

কুরার শুগু চোখে,

অন্ধকারের পেরিয়ে ভুয়ার

वात ह'ल व्यात्नादक।

পুরাতনের সদয় টুটে

আপনি নৃতৰ উঠ্বে ফুটে.

बीवत् कृत काठी इ'ता মরণে ফল ফল্বে।

---গীতাঞ্চলি

শেষের মধ্যে অপের আছে,

धरे कथाहि, मरन

खाळाडू खामान नारमन व्यव

आश्रह करन करन ।

---গীতাঞ্চলি

হে জাশেৰ, তব হাতে শেৰ

থাৰে কী অপূৰ্ব বেশ ?

কী বহিনা !

ক্যোতিহীন সীমা

মৃত্যুৰ অগ্নিতে জ্লি'

বার পলি',

প'ডে তোপে অসীমেৰ অলকাৰ ।

—পূৰ্বী, শেৰ

कवि नद्रश्रकु-नषरक निवित्राष्ट्रन-

"আমাদের শরতে বিজেশ-বেদনার ভিতরেও একটা কথা লাগিরা আছে বে, বারে বারে নৃতন করিলা দিরিলা ভিরিলা আগিবে বলিলাই চলিলা বার—ভাই ধরার আভিনার আরমবনী বানের আর অন্ত নাই। বে লইলা বার নেই আবার কিরাইলা আনে। ডাই সকল উৎসবের মধ্যে বড় উৎসব এই হারাইলা কিরিলা পাওরার উৎসব।"
কবির ফান্তনী নাটকের অন্তরের কথাও এই—

ন্তন ক'রে পাবো ব'লে ছারাই ক্লণে ক্লা,

ও মোর ভালোবাসার ধন।

क्वि वर्णन—

মৃত্যু সে বে পথিকেরে ভাকে। —পুরবী, মৃত্যুর আহ্বাৰ

এবং---

অসীম ঐবর্ব ছিল্লে রচিত মহৎ সর্বনাশ। — প্রবী, কন্ধান

"স্টিকর্তা" বিনি---

তিনি উন্নাদিনী **অভিসানিশীনে** ভাকিছেন সৰ্বহান্তা মিলনের প্রকল-ভিমিনে। —পুরবী, ক্**টি**কর্ডা

সৃষ্টিকর্তার এই ডাক কেন, না---

बोरम मं शिक्षा, क्षोबरमयद्भ,

পেতে হবে তব পঞ্জিন।

---পূরবী, মুপ্রভান্ত

ক্লান্ত হতাল অলফে কবি বারংবার আখাদ দিরা বলিয়াছেন-

নাৰিরে দে রে প্রাধের বোকা, আর্ত্রেক দেশে চলু রে জােলা নতুন ক'বে বাঁধ্বি বার্না,

मपून (बना) (बन्दि हम अहे ।

---(नोर्शक्तानीय गाँव

जगरान् जनस्, जाद छाराद ग्रह कीवनक जनस क जनाहि-

সকলেৰে কাছে ডাকি' আনন্দ-আলরে থাকি'

অমৃত করিছ বিভরণ,

পাইরা অনত প্রাণ ক্রপৎ গাইছে গান

পগলে করিয়া বিচরণ।

बार्ष नव नव खान, हिन्नबीवरमत्र शान

প্রিভেছে অনস্ত গগন।

পূৰ্ণ লোক-লোকান্তর প্ৰাণে মগ্ন চরাচর

व्यापित मानदा मखद्रग ।

ৰূপতে যে দিকে চাট বিনাশ বিরাম নাই,

অহরহ চলে বাত্রিপা।।

—শাৰ

জানি জানি কোন্ আছি কাল হ'তে ভাসালে আমারে জীবনের স্রোতে।

সেই আদি কাল কি অল্লকাল,—

কবে আমি বাহির হলেম তোমারি গান গেরে— সে তো আজকে নর, সে আজকে নর।

মানুষ মৃত্যুকে ভয় করে এই জন্ম যে তাহার আহ্বানে সংসার ছাড়িয়া যাইবার সমন্ন আমাদের প্রিন্ন সামগ্রী পশ্চাতে ফেলিয়া বাইতে হয়। কিন্তু মরণ তো রিক্ত নয়।

কে বলে সৰ কেলে বাৰি

মরণ হাতে ধরুবে ববে !
জীবনে তুই বা নিরেছিস্,

মরণে সব কিতে হবে !

অতএব মৃত্যু যথন সমারোহ করিয়া প্রিরসমাগমের জন্ত আনে তখন---

রাজার বেশে চন্দ্ রে হেসে মৃত্যুগারের সে উৎসবে।

বরু যে দিন বধুকে বরণ করিয়া লইতে আসিবে, সে দিন তো ভাষাকে
শৃত হাতে বিদার করিলে চলিকে না, ভাষাকে প্রথারের অপমান ইইবে বে।

কার্ক থে বিধা বিধান লৈকে আক্ষুবে জোমার ইয়াবে, সে বিশ ভাম কৈ বন বিবে উহারে ? ভামা আমার পরাধ্যানি সন্মুখে ভার বিব আনি', স্ভা বিধার কর্ব না ভো উহারে,——
মরণ বে বিল আস্বে আমার হ্যারে।

মৃত্যু-বরের জন্ত জীবন-বধ্ মিলনোৎস্থক হট্টা সর্বন্ধণ প্রতীক্ষা কার্যা পাকে—

> সারা জনম তোষার লাগি' প্রতিদিন যে আছি জাগি',

ধা পেরেছি, বা হরেছি,

যা কিছু নোর আশা,

লা জেনে ধার ভোমার পানে

সকল ভালবাসা।

মিলন হবে ভোমার সাবে,
একটি তভ দৃষ্টিপাতে,
জীবদ-বধু হবে ভোমার
নিত্য অমুগ্তা,

সে দিন জামার রবে না বর,
কেই বা জাগন, কেই বা জগর,
বিজ্ঞন রাতে পাঁতির সাথে
শ্বিশ্বে পতিরতা ।
মরণ, জার্মার মরণ, তুমি
কণ্ড জারারে কথা। —গীতাঞ্লি

আমি অনাদি, আমার বাস্ত অনাদি কাল প্রতীকা করিতেছে, মৃত্যু সেই অনাদি মহাকালেরই মিলমণ্ড,—সেই বাস্ত আমার অভিসারও অনাদি অনুক্

क्षित्राम् अक्ष्मित् त्या क्ष्म महि।

ভাই

ভোষার খোঁজা শেব হবে না হোর যবে জানার জনম হবে ভোর।

চ'লে যাব নবজীবনলোকে, নৃত্য দেখা জাগ্বে আমার চোখে, নবীন হ'লে নৃত্য সে আলোকে পরবো তব নবমিলম ডোর।

মরণযাত্রাম তো মানব একাকী যাত্রী নয়, তাহার সঙ্গে তাহার বিধাতাও যে সহযাত্রী—

> যবে মরণ আসে নিশীপ গৃহস্বারে, যবে পরিচিতের কোল হ'তে সে কাড়ে, যেন জানি পো সেই অজানা পারাবারে এক তরীতে তুমিও ডেসেছ।

> > ---গীতিমাল্য

আমাদের সংসার-বন্ধন ছাড়িয়া যাইতে ক্লেশ বোধ হয়, তাই মৃত্যু সেই বন্ধন মোচন করিয়া আমাদিগকে আমাদের প্রিয়তমের সকাশে লইয়া যায়, কাজেই মৃত্যু ভয়ানক নহে, সে আমাদের আনন্দদ্ত ।—

মৃত্যু লও হে বাধন ছি ড়ে.

তৃষি আমার আনন্দ।

আমার জীবনদেবতার দহিত মিলন হইবে বলিয়াই আমার প্রাণবধ্
শ্বয়ংবরা হইয়া মৃত্যুর পথে অভিসারিকা—

চল্ছে ভেসে মিলন-আলা-ভরী অনাদি প্রোভ বেরে।

ভোষার আষার মিলন হবে ৰ'লে বুনো বুনো বিষভুবন-তলে পরাণ আষার বধ্ব বেশে চলে

চির স্বর্ধরা। --- গীতিখালা

আমি যে এই অঙ্ক ধারণ করিয়া আমার প্রাণকে আশ্রর দিয়া প্রকাশ করিবাছি,

সে বে প্রাণ পেরেছে পান ক'রে বুর-বুরান্তরের বস্ত ,
ভূষদ কত তীর্ক-জন্মে ধারায় করেছে তার বস্ত । —গীডিযালা

মৃত্যু বৃদ্ধি না থাকিত তাহা হইলে জীবনই থাকিতে পারিত না, মৃত্যুর ভারাই আমরা জীবনের অভিড উপলব্ধি করিয়া থাকি---

মহণকৈ প্ৰাণ বৰণ ক'ৱে বাঁচে। ---গীতালি

এবং প্রত্যেক বীব—

বহিল মরণ-রূপী জীবন-স্রোতে। দে যে ঐ ভাঙা-গড়ার তালে তালে

নেচে যার **দেশে দেশে** কালে কালে ॥ —গীতিযাল্য

"সবাই যারে সব দিতেছে," সেই আমাদের প্রিয়তম আমাদের সংখ হরণ করিবার জ্ঞ

মরণেরি পথ দিয়ে ঐ
আসছে জীবন-মান্দে,
ও যে আস্ছে বীবের সাজে।

মরণ লাবে ডুবিলে শেবে
সাজাও ভবে মিলন-বেলে,
সকল বাধা মৃচিয়ে কেলে
বাধ বাহুর ডোবে। —গীতাাল

मत्रवह जामात्मत्र जीवन-जत्रवी का छा वी.--

মরণ বলে, আমি ভোমার জাবন-তরী বাই।

গানের রাজা কবি জীবন-মরণের দেবতার কাছে প্রার্থনা জানাইয়াছেন---

তোমার কাছে এ বর নাগি—
মরণ হ'তে যেন আগি
বাবের হারে।
বেগুনি নরন মেলি, খেন
মাতার ভাষ্ক্রখা-হেন
নবীন জীবন গেল,গো পুরে
বাবের হারে।

বাস্থবের জীবন তো অনাদি কাল হইতে অনম্ভ কাল ধরিরা পথিক, কিন্তু সে
চিত্র-পূরাতন হইরাও মৃত্যুর বয়ে চিত্র-স্তন—

বাহির হলেম কবে সে নাই মনে।
বাত্রা আমার চলার পাকে
এই পথেরই বাঁকে বাঁকে
নৃতন হলো প্রতি ক্ষণে ক্ষণে।
কে বলে, "বাও বাও"—আমার
যাওরা তো নয় বাওর।
টুটুবে আগল বারে বারে
তোমার বারে

লাগুৰে আমার কিন্তে ফিন্তে ক্রি-আসার হাওরা।

পথিক আমি পথেই বাসা,
আমার ধেমন গাওরা তেমনি আসা।
ভোরের আলোর আমার তারা
হোক না হারা,

আবার জৃদ্ধে সাজে আঁধার-মাঝে তা'রি নীরব চাওরা ॥

—প্রবাহিণী

কবি একদিন রঙ্গ করিয়া বলিয়াছিলেন বে—

পরক্রম সভ্য হ'লে কি ঘটে মোর সেটা জানি। আবার আমার টান্বে ধরে

वाःला (मरमद्र এ द्रालधानी। ---क्ननिका, कर्वकल

কিন্তু কবি পরজ্বন্মে স্থির বিশ্বাস করেন, তাই তিনি বলিয়াছেন—

আবার যদি ইচ্ছা করে। আবার আসি কিরে চু:ৰ-মুবের ঢেউ-খেলানো এই সাগরের তীরে। — গীতালি

ৰবি লিখিয়াছেন-

জগৎ-রচ নাকে বলি কাব্য হিসাবে খেবা যায়, তবে স্ত্যুই ভাষার মেই অধান রস স্ত্যুই ভাষাকে বধার্ব কবিম অর্ণন করিরাছে। যদি স্ত্যু না ধাকিত, জগতের বেবানকার বাইন তাই। টিবঁকাল দেইখানেই ঘট অবিক্তাজানে গাঁড়াইনা থাকিজ; তবে ক্রমন্টা চিবছারী। সমাধি-মন্দিরের মতো অভ্যন্ত সন্থার্থ, অভ্যন্ত ক্ষিণ্ড, অভ্যন্ত ক্ষিণ্ড, আই অব্যক্ত নিক্সভার চিরছারী তার বহন করা প্রাণ্ডিমের পক্ষে বছু বুরুহ হইত। মৃত্যু এই অভিছের ভীবন ভাঁরকে সর্বলা লঘু করিরা রাখিরাছে এবং ক্রমণ্ডকে বিচরণ করিবার অসীম ক্ষেত্র ভীবন ভাঁরকে সর্বলা লঘু করিরা রাখিরাছে এবং ক্রমণ্ডকে বিচরণ করিবার অসীম ক্ষেত্র নির্দিক মৃত্যু নেইনিকেই ক্রমণ্ডের অসীমভা। সেই অবন্ত রহক্তভূনির বিকেই মান্তবের সমত্ত কবিভা, সমত্ত সন্থাত, সমত্ত ধর্মতির, সমত্ত ভৃথিহীন বাসনা সমূত্রপারসামী পক্ষীর মতো নীড় অবেববংশ উড়িরা চলিরাছে।—একে, বাহা প্রভাক, বাহা বর্তমান ভাষা আমাদের পক্ষে অভ্যন্ত প্রবল —আবার তাহাই বন্ধি চিবছারী হইত, তবে তাহার একেব্যন্থ জারান্দের আর শেষ থাকিত না—তবে তাহার উপরে আর আশীল চলিত কোখারণ তবে কে নির্দেশ করিরা দিত বে ইহার বাহিরেও অসীমতা আছে গু অবন্তের ভার এ ক্রমণ্ড কেমন করিরা বহন করিত, মৃত্যু বন্ধি সেই অনন্তকে আপনার চিরপ্রবাহে নিত্যকাল ভাসমান করিরা না রাধিত !

যরিতে না হইলে বাঁচিয়া থাকিবার কোনো মর্থাদাই থাকিত না। এখন লগংক্ত লোক বাহাকে অবজ্ঞা করে সেও সৃত্যু আছে বলিয়াই জীবনের গৌরবে সৌরবাহিত।

ক্ষাতের সূব্যে মৃত্যুই কেবল চির্ম্বারী—সেইকস্থ আমাবের সমস্ত চির্ম্বারী আশা ও বাসনাকে সেই মৃত্যুর মধ্যেই প্রতিষ্ঠিত করিবাছি। আমাবের ম্বর্গ, জামাবের অমরতা, সব সেইখানে। যে-সব জিনিস আমাবের এত ক্রির, কথনও তাহামের বিনাশ কর্নাও করিতে পারি না; সেগুলি মৃত্যুর হত্তে সমর্পণ করিরা দিয়া জীবনাস্তকাল অপেক। করিরা থাকি। পৃথিবীতে বিচার নাই—স্থবিচার মৃত্যুর পরে; পৃথিবীতে প্রাণপণ বাসনা নিক্ষল হর,—সক্রতা মৃত্যুর কল্পতকতিন। অপতের আর সকল দিকেই কঠিন স্থুল বস্তুরাশি আমাবের মানস আম্বর্ণক প্রতিহন্ত করে, আমাবের অমরতা অসীমতাকে অপ্রমাণ করে—জপতের যে সীমার মৃত্যু, মেথানে সমস্ত বস্তুর অবসান, সেইখানেই আমাবের প্রিয়তম প্রবাতম বাসনার, আমাবের উচিত্র স্থান্যতম কঞ্জনার কোনো প্রতিবন্ধক নাই। আমাবের পির স্থানবাসী,—আমাবের মর্বান্ধ মঙ্গলের আর্থণ মৃত্যু-নিকেতনে।

ক্ষাতের নশ্বতাই ক্ষণ্থকে ফ্লার করিয়াছে। এইজস্ত মাসুবের ক্ষেবলাকেও মৃত্যুর করনা, স্নাতীর দেহত্যাপ, মন্ত্র-ভদ্ম ইত্যাদি। স্পঞ্চুত

জীবনকে সতা ব'লে জান্তে গেলে মৃত্যুর মধ্যে দিয়ে ভার পরিচয় চাই। যে মাহ্য ভর পেরে মৃত্যুকে এড়িয়ে জীবনকে আঁক্ড়ে রয়েছে, জীবনের পারে তার ব্যার্থ শ্রদ্ধা নেই ব'লে জীবনকে লে পার নি। তাই সে জীবনের মধ্যে বাস ক'রেও মৃত্যুর বিভীষিকার প্রভিদিন মরে। যে লোক নিজে এগিয়ে গাঁরে মৃত্যুকে বন্দী কর্তে ছুটেছে, সে দেখ্তে পার—বাকে বে ধহরছে লে মৃত্যুক্ নর,—সে জীক্ষা।"

कान्छनी नाहित्कत अखरतत कथा देशहें।

ু বৃষক্ষর বর্ষণ জগতের সেই যে বিরাট বৃষ্ণে স্থানজ্যের মতো পৃথিবীর-"বৌষন-সমূল ওবে বেলে চার" ভালাকে ধরিবার জন্ত পাতিবাল করিয়া বাহির ইইবাছিল, তথন ভালারা বলাবলি করিভেছিল——

বিশারের বাঁশিতে বখন কোমল থৈবত লাগে তথনি দকলের ছিকে চোখ বেলি। আরু দেখি বড় মধুর। যদি সবাই চ'লে চ'লে না যেতো তা হ'লে কি কোন মাধুরী চোঝে পড়তো। চলার মধ্যে যদি কেবলই তেজ খাক্ত তা হলে বৌবন গুকিরে বেত। তা'র মধ্যে কায়া আহে, তাই বৌবনকে সব্জ গেখি। জাগুটা কেবল 'পাবো' 'পাবো' কাছে না,—সঙ্গে সঙ্গেই বল্ছে 'ছাড়বো' ছাড়বো'। শুটির গোধুলি লাগ্র 'পাবো'র সজে 'ছাড়বো'র বিরে হ'রে গেছে রে—ভাবের মিল ভাঙ লেই সব ভেঙে যাবে। —কাল্ভনী

দাবন ব'রে বার ধরাতে
বরণ-গীতে গলে রে—
কলে দেবার ছেডে দেবার
মর্বারই আনন্দ রে—
—গান

বদন্তে কি শুধু কেবল কোটা-ফুলের মেলা।
দেখিদনে কি শুক্নো পাডা ঝগাণুলের খেলা!
বে চেউ গঠে ডারি হরে
বাজে কি গান সাগর জুডে।
বে চেউ পড়ে ডাহারো হর জাগুছে সারা বেলা। ——অরশ রভন

মৃত্যু যে অবসান ও শেষ নহে তাহা কবি বারংবার বলিয়াছেন।—

আমাদের মধ্যে একটা মৃচতা আছে; আমরা চোখে-দেখা কানে-দোনাকেই দব চেরে বেলী বিশাস করি। বা আমাদের ইল্লিফ-বোধের আডালে প'ড়ে বার, মনে করি সে বৃধি একেবারেই কেল। ইল্লিয়ের বাইরে শ্রন্ধাকে আমরা জাগিরে রাখতে পারিনে। আমার চোধে-দেখা কানে-দোনা দিরেই তো আমি জগথকে সৃষ্টি করিনি বে, আমার দেখা-দোনার বাইরে যা পড়্বে তাই বিলুগু হ'বে যাবে! বাকে চোধে দেখ্ছি, মাকে সমত ইল্লিছ দিরে জানছি, সে বার মধ্যে আছে, ধখন তাকে চোধে দেখিনে, ইল্লিছ দিরে জানিনে, তথনো তারই মধ্যে আছে। আমার জানা আর তার জানা তো টিক এক সীমার সীমাবন্ধ নর। আমার বেধানে জানার শেব, সেধানে তিনি সুরিরে জাননি। আমি বাকে দেখ্ছিনে, তিনি তাকে দেখ্ছেন—আর তার সেই দেখার নিমেব পড়ুছে না।"

—শান্তিনিকেতন, বাবল বঞ্চ, নাভ্নাৰ

আৰ্থি ক'লে বে কাঙালটা সৰ জিনিসকেই থালের মধ্যে প্লিডে চাৰ, সৰ জিনিসকেই মুঠোর
মধ্যে পেতে চার, মৃত্যু কেবল তাকেই কাকি দেয়-তথন সে মনের থেকে সমস্ত সংসামকেই কাঁকি

ৰ'লো পাল বিভে: খাকে-জিও সনোর বেষন তেমনই থেকে খাল, মৃত্যু ভার গালে জাঁচড়টি কাছিছে পারে মা ৷ অভএৰ মৃত্যুকে ধৰণ দেখি তখন সর্বজই তাকে দেখাতে থাকা মনের একটা বিকার। বেখানে অহং সেইখানেই কেবল মৃত্যুর হাত পড়ে, আর কোখাও না। লগৎ কিছুই হারার না, বা হারাবার সে কেবল অহং হারার। —শান্তিনিকেতন, সপ্তম খণ্ড, মৃত্যু ও অমৃত তাই কৰি বলিয়াছেন-

> বৰন আমান আমি क्रुबाद्य यात्र थायि', ভৰন আমার ভোমাতে প্রকাশ।

এক-

মৃত্যু আপন পাত্রে হরি' বহিছে যেই প্রাণ, সেই তো তোমার প্রাণ,

প্রাণ যে মৃক্তধারায় প্রবাহিত হইয়া চলিতে পারিতেছে তাহার কারণ-

मार्ट (व नाट्ड, बब्र मार्ट প্রাণের কাছে, প্রাণের কাছে।

—মৃক্তধারা

—গীতালি

মরণকে বে প্রাণের পরিচয় বলিয়া না জানিতে পারে তাহার প্রাণ হর কুদ্র ও সভীৰ্ণ ৷---

> মরণকে তুই পর করেছিস্, ভাই, ৰাবিন বে ভোর কুত্র হলো ভাই। — এবাহিণী

—সভাগি

অভএব—জীবনেশ্বর তো কেবল জীবনেরই দেবতা নন, তিনি মৃত্যুবিধাতা—

তোমার মোহন রূপে

বে রয় ভূলে।

कानि ना कि मद्रश-नारह

নাচে সো ঐ চরণ-মূলে। — গীতালি

মৃত্যু হইতেছে জীবনের পরিণতি,—

ওলো जामात्र এই स्रोतम्बद्ध त्यव পরিপূর্ণতা সরণ, আমার মরণ, তুমি কও আমারে কথা। —পীতাঞ্চল

জীবনকৈ তোর ড'রে নিচে

ৰশ্প-আহাত খেতেই হবে।

আবদের ধন কিছুই বাবে না কেল্য ধূলার ভাবের বত হোক্ অবহেলা,

তাবের পদ-পর্শ তাবের 'পরে।

--- গীডালি

ৰ্শব কীট্ৰও বাঁগরাছেন যে—

Death is Life's high meed.

Death is the Crown of Life.

পূৰ্ণাৎপূৰ্ণ বিনি তাঁহারই মধ্যে তো সৰুল অংশ নিবিষ্ট ও নিহিত হইরা রহিরাছে অতএব কোথাও কোনও ক্ষতি নাই, বিনাশ নাই, বিচ্ছেদ নাই। এই সত্যদৃষ্টি লাভ করিয়া কবি আপন প্রার্থনা ব্যক্ত করিয়াছেন—

আছে ত্ৰংগ, আছে মৃত্যু,
বিরহ-দহন লাগে;
তবুও শান্তি তবু আনন্দ
তবু অনস্ত জাগে।
তবু প্রাণ বিভাগারা, হাদে সূর্ব চন্দ্র ভারা,
বসন্ত নিকুল্লে আদে বিচিত্র রাগে।
তরঙ্গ মিলারে যায়, তরঙ্গ উঠে,
কুকুম ক্রিয়া পড়ে, কুক্ম কুটে,
নাহি ক্য নাহি শেষ, নাহি নাহি ক্যেনেশ,
সেই পূর্বভার পায়ে মন স্থান মাগে। —গান

কিন্তু কবি জীবন-মরণ-বিধাতার স্বরূপ অস্তুত্ব করিয়া এখন প্রার্থনারও উধেব উঠিয়ছেন। নিগ্রহামুগ্রহদমর্থকে প্রদান করিবার জন্ম প্রার্থনার আবস্তুক্ত হয়। কিন্তু পূর্ণাৎপূর্ণ যিনি তিনি তো কোনোমতেই অংশকে পরিত্যাপ করিতে পারিবেন না। তাহা করিলে তাহার পূর্ণতার হানি হইবে, তাই কবি সংশ্রাতীত হইরা, পূর্ণের মধ্যে অংশের নিশ্চর আশ্রয় জানিয়া, নিশ্চিত হইরাছেন। তিনি এখন মৃত্যুভ্রের অতীত হইরা মৃত্যুক্তর হইরাছেন। যতক্ষণ ভরের স্বরূপ জানা না যায়, ততক্ষণই আশক্ষা থাকে, কিন্তু মৃত্যু আসিয়া উপস্থিত হইকে, মৃত্যুক্তে আর ভয়ন্তর বিশিয়া মনে হয় না। বঞ্জাঘাত হইবে এই সম্ভাবনাতেই ভয়, কিন্তু যক্সপাত হইরা গেলে আর ভয় কিন্তের ? বিনি জীবন-বিশ্বান্তা, তিনিই তো স্বরং মৃত্যুক্তপী; তিনি মৃত্যুর ভয় দেধাইয়া মানবের পরীকা করেন, কিন্তু যে মানব মৃত্যুক্তে বরণ করিয়া সইতে পারে, তথন সে

বিষাতার মৃত্যুত্তর-দেখানোকে জন করিবাং শ্বরং বিধান্তার উপরও জরী হর। ভাই মৃত্যুক্তর কবি কহিয়াছেন----

বখন উত্তত ছিল তোমার জননি,
তোমারে আমার চেরে বড় ব'লে নিরেছিপু গদি'।
তোমার আমাত সাথে নেরে এলে তুরি
বেখা মোর আগনার তুরি।
ভোট হ'রে বেছ আল।
আমার টুটন সব লাল।
বত বড় হও,
তুমি তো স্ভুবে চেরে বড় নও।
আমি তার চেরে বড়, এই শেব কথা ব'লে
বাব আমি চ'লে।

'ঙ'। রবীন্স-পরিচয়

আমি যথন সাবেক হিসাবে কুলের পঞ্চম শ্রেণীতে পড়ি, তথন আমার বরস বড় জোর বারো বংসর হবে। আমি সেই বরসে, আর সেই বিপ্লা নিয়ে তথনকার সকল বড় সাহিত্যিকের বই প'ড়ে শেষ করেছিলাম। বিভিমবারর সকল উপতাস, মাইকেল, হেম, নবীন প্রাভৃতি কবির কাব্য, দীনবদ্ধ, সিরিশ ঘোর, রাজরক্ষ রার প্রাভৃতির নাটক আমি পেটুক ছেলের মতনই গিলেছিলাম। বজিমবারর 'সীতারাম' উপত্যাস সন্তঃ প্রকাশিত হ'বে আমার সেধানি পড়বার আগ্রহ প্রমন প্রবল হয়েছিল যে লোকানে বই ফিন্তে বাবার বিলম্ব আমার সরনি; বজিমবারর বাড়ীর কাছেই জামরা খাক্তাম; তাই তাডাতাডি আমি স্বরং বঞ্জিমবারর কাছে বই কিন্তে গিরে তার ধনক খেয়ে প্রস্কেছিলাম, এবং তিনি যদিও আমাকে বলেছিলেন বে, এ বই কো তোমার মতন ছেলেমামুবের পড়বার নম, তর্ আমি তার বাড়ী থেকে বেরিরেই দৌকান খেকে সেই বই কিনে প'ড়ে ছবে নিশ্চিত হ'তে পেরেছিলাম। আমারু বই পড়ার জন্ম এই রক্ষ লোড খাকা সঙ্গের জানি বিভিত্ত হ'তে পেরেছিলাম। আমারু বই পড়ার জন্ম এই রক্ষ লোড খাকা সঙ্গের জানি বিভার রবীক্রনাথের কোন বই বা রাচনা বিত্র, রাচন পঞ্চার আর্থার আর্থার

পড়িনি, এমন হিং রবীজনাথ নামে রে একজন কবি আছেন, এ সংবাদও আমার -কাজে পৌছেনি।

বাংলা ১৩০১ সালের বৈশাও মানে, ইংরেঞ্জা ১৮৯৪ সালে, বন্ধিনবার্ম মৃত্যুতে কল্কাভার টার থিরেটারে একটি শোকসভা হর। তথন আমি ফার্টার রামে পড়ি। বন্ধিনাব্র প্রতি গভার প্রজা থাকাতে আমি সেই সভার উপন্থিত হই, বন্ধিও তথন আমার পারের মথে একটা বা হ'রে আমি এক রকম পঙ্গু হরেই ছিলাম। সেই সভার বন্ধিনাব্র প্রতিভা সন্ধন্ধ প্রবন্ধ পাঠ করেন রবীজ্ঞনাথ, আর সভাপতি ছিলেন গুরুদাস বন্ধ্যোপাব্যার মহালয়। সেই দিন আমি রবীজ্ঞনাথকে প্রথম দেখ্লাম, এবং তার মধুর অণচ তীক্ষ কণ্ঠম্বর তানে ও ক্ষর চেহারা দেখে একটু আক্রপ্ত হলাম। তার বক্তার পর সমস্ত প্রোতা এক বাক্ষা চীংকার কর্তে লাগ্লেন—"রবিবাব্র গান, রবিবাব্র গান!" আমি তথন পাড়াগেরে ছেলে, ঐ চীংকারের কোনো মর্মই হলরক্ষম কর্তে পার্লাম না। শোকসভার গান্তার্মির আশক্ষার রবীজ্ঞনাথ কিছুতেই গান গাইলেন না। আমিও রবিবাব্র বিশেষ কোনো পরিচর না পেরেই বাড়ী ফিরে এলাম।

তার পর ছিতীয় দিন রবিবাব্কে দেখ্লাম আমি যথন ফার্ট আর্টস্
পড়ি, ১৮৯৬ সালে, ইউনিভারসিটি ইন্টিটেউট্ হলে; সকল কলেজের
আরেজিপ্রতিযোগিতার সভায় তিনি অন্ততম বিচারক ছিলেন, অপর হজন
বিচারক ছিলেন কবিবর নবীনচন্দ্র সেন ও হীরেক্রনাথ দত্ত মহাশর। সেদিনও
সকল প্রোতা ও দর্শকেরা সভার কার্যপেবে চাৎকার জ্ডে দিলেন, "ববিবাব্র
গান, রবিবাব্র গান!" রিনিবাব্ অন্থরোধ অস্বীকার ক'রে লজ্জান্মিও
মূথে কেবলই ধীরে মাথা নাড়ছেন, আর জনতাব চাৎকারও চল্ছে।
আমি জনতার অভদ্রতা দেখে বিরক্ত হ'রে উত্তেছিলাম, একজন ভত্রনোক
কিছুতেই গান থাইবেন না, তব্ তাকে গাইতে পীড়াপীডি করা আমার
কাছে অতান্ত বেরাদ্বী ব'লে মনে হলো। আর মনে হলো যে
এমনই বা কি গান যে পোনবার জন্ম এমন কান্স্লামি কর্তে
হবে। আমি বিরক্ত হ'রে সভাত্যাগ ক'রে বেরিরে চলে বাচ্ছিগান,
হারেল কাছে গিরে পোছেছি, হঠাৎ আমার কানে অক্রতপূর্ব মধুর কটের
অরম্ভূর্মা ভেনে এনে প্রবেশ কর্ল, আমি অক্সাৎ অপ্রত্যালিত এক
অন্তিবির রাজ্যে নীতে হ'রে চট্ ক'রে কিরে গাড়িরে দেখ্লাম ববিবার্ গান

গাইতে আরম্ভ করেছেন। আমি সভার সাম্নের দিকেই বিদেছিলাম, কিন্তু উঠে চ'লে আসার পর আমার সমূথে অগ্রসর হবার পথ রুদ্ধ হ'লে গিরেছিল। আমি জনতার বৃহ ভেদ ক'রে ভিতরে প্রবেশ কর্তে না পেরে সেই হারপ্রান্তে দাঁড়িরেই মন্ত্র্য অভিডের মতন গান শুন্তে লাগ্লাম। সে ক্রে মন্ত্রকণ্ঠের পর নর, বেমন মধুর তেমনি তীক্ষ স্পষ্ট, আর গানের ভাষ। প্ররের সঙ্গে বেন পারা দিরে চলেছে। তিনি সেদিন গাইলেন—

> আমার বোলো না গাহিতে বোলো না ! এ কি তথু হানি খেলা প্রমোদের মেলা, ७४ विट्र कथा, इनमा । এ বে নরনের জল হতালের বাদ. কলকের কথা, দরিজের আপ, এবে বুককাটা হুখে, ভগরিছে বুকে, গভীর মরম-বেদনা ! এ कि उधु शनि (थना, अस्माएक सना, च्यु यिष्ट् क्या इनना। এসেছি কি হেখা যশের কাঙালী, কথা গোঁথে গোঁথে নিতে করতালি, মিছে কথা ক'ছে, মিছে খণ ল'ছে, হিছে কাজে নিশি বাপনা। কে আগিবে আজ. কে করিবে কাজ, কে বঢ়াতে চাহে জননীর নাজ, কাতরে কাঁছিবে মারের পারে ছিবে সকল প্রাণের কামনা। এ কি শুধ হাদি খেলা, প্রযোগের যেলা, শুধ মিছে কৰা ছলনা।

তথন আমার নবীন মনে স্থলেশপ্রেমের রঙীন নেশা নৃতন লেগেছিল, ভাই রবীক্ষনাথের এই সঙ্গীত আমাকে একেবারে মোহাবিষ্ট ক'রে ফেল্লে।

তার পরে আবার আর একদিন ঐ ইউনিভারসিটি ইন্টিটিউট্ হলে রবীজ্ঞনাথ 'গান্ধারীর আবেদন' নামক নাটকা পাঠ করেন। তার অরদিন আগেই আমার সক্পাঠী বন্ধু হেমেজ্ঞপ্রসাদ ঘোষ মহাশয় ঐ হলেই শ্ববিবাবুর কবিভার এক সমালোচনা গাঠ করেন। এই চুই সভাতেই সন্তাগতি হিশেন অফলাশবার্। রবিবাবু তাঁর নবরচিত নাটিকা পাঠ কর্তে উঠে ভূমিকা শ্বরূপ বল্তে লাগ্লেন—"কয়েক বংসর পূর্বে শ্বগীয় বল্লিমবাব্ আমাকে এই হলে কোনো লেখা পড়তে অহরে।ধ করেছিলেন। তার সেই অহরে।ধ রক্ষা কর্বার স্থযোগ আমার হয়নি। সম্রতি আক্ষার মাননীয় সভাপতি মহাশর আমাকে এখানে কিছু পাঠ কর্তে অনুরোধ করেন। আমি মনে কর্লাম যে এই স্থয়োগে বৃদ্ধিমবাৰুর অমুরোধের ঋণ পরিলোধ করুতে পাৰ্ব, তাই আমি আমার লেখা পাঠ কর্তে দক্ষত হয়েছিলাম। কিন্তু আৰু আমার শেখা এখানে পাঠ কর্তে আমার স্বভাবতই সঙ্কোচ বোধ इस्छ। कार्रा, अब करमक मिन आश्र এই शल, मভाপতির অধীনে হয় তো বা ঠিক এই জারগার দাঁড়িয়ে আমার কবিতার বিরুদ্ধ সমালোচনা পাঠ হয়ে গেছে। যিনি সমালোচক, তিনি বয়দে তরুণ। তরুণ বয়স যথার্থ সমালোচনার সময় নয়। তরুণ বয়সে লোকে কবি হতে পারে, কিছ সমালোচক হতে হ'লে প্রবীন বয়দের দরকার। কাঁচা বাঁশে বাঁশী হতে পারে বটে, কিন্তু লাঠি হ'তে হ'লে পাকা বাঁশের দরকার। মাছুযকে ভাইপো হয়েই জ্বনাতে হয়, কিন্তু অনেক লোকে জ্ব্যাঠা হবার প্রেই জাচাইরা যান। সকল মাহুষের মধ্যে সকল গুল থাকে না, আর তা প্রত্যাশা করাও যায় না। মহুরের পুচ্ছ আছে, কিন্তু তার কণ্ঠে কোকিলের মুসর নাই, আবার কোকিলের কৃষ্ঠ আছে, তার মহুরের মতন স্থুন্দর পুছে নেই। ইকুৰণ্ডে আত্রফল ফলে না, আর আত্রশাবায় ইকুরস পাওয়া যার না। অতএব কবির কাব্যে কি আছে তারই বিচার না ক'রে, কি নাই তাই নিয়ে তাকে দোষারোপ কর্লে তার প্রতি অবিচার করা হয়। তাই আৰু আমি অতান্ত সঙ্গোচের সঙ্গে এথানে এসেছি আমার লেখা পাঠ করতে।"

এই ভূমিকা ক'রে তিনি গান্ধারীর আবেদন পাঠ কর্তে আরম্ভ কর্লেন। সে কী কঠম্বর, কী মুন্দর উচ্চারণ, কী কবিত্মধুর ওলম্বী ভাষা। সমস্ত শ্রোভা তার হ'বে শুন্তে লাগ্লেন।

সেই সমর কালীপ্রসর কাব্যবিশারদ হেরখ মৈত্র মহালরের পত্নীর জ্ঞান মানগ্রুক লেখা প্রকাশ ক'রে অভিযুক্ত হরেছিলেন। গান্ধারীর উঞ্জির মধ্যে আমরা রবিবাবুর ধিকার জন্মান ক'রে অত্যন্ত আনন্দ অন্তব করে-ছিলাম, যখন ভন্লাম রবিবাবু গান্ধারীর জ্বানী বল্ছেন---

भूत्रका शूक्ताव कथा । न्द्रार्थ ल'दन वाट्य अस्त्रर,--काटला अन्त নাহি বুৰি ভাৰ,-- মঙনীতি ভেৰণীতি কৃটনাতি কৃত শত,--পুক্লবের রীতি शूक्रवाई स्नाम । वरलव विद्वार्थ वत, हरनव विरत्नार कड क्लांस डिटंड हल, কৌশলে কৌশল হাবে'---মোরা থাকি দূরে व्यानमात्र गृह-कदर्व भाख क्षष्टः भूदेत्र। य मधा है। निहा चादन विद्युक्त नि বাহিরের ছব হ'তে,-পুরুষেরে ছাড়ি' অন্তঃপুরে প্রবেশিয়া নিরূপার নারী गृहश्यकाविधाव भूगारमञ् 'नाद কল্ব পর্য প্রেণ অসন্মানে করে হস্তক্ষেপ,—পতি সাথে বাধায়ে বিরোধ যে-নর পত্নীরে হানি লর ভার শোধ, দে শুধু পাবও নহে, সে যে কাপ্রুষ।

এই নাটক। পাঠ শেষ হ'লে গুরুদাদবাবু হেমেক্সপ্রসাদবাবুকে দিয়ে রবিবাবুকে
ধন্তবাদ দেওয়ালেন। হেমেক্রবাব্ প্রথমে কিছুতেই সন্মত হজিলেন না, শেষে
গুরুদাস্বাবুর পীড়াপীড়িতে বাধা হ'য়ে ধন্তবাদ দিলেন, সে যেন বেছলার
অনুর্বোধে চাঁদ স্দাগরের হাতে মনসাদেবীর পূজা পাওয়া।

যথন রবিবাব হেমেজ্রবাবৃকে উদ্দেশ ক'রে কবিত্বরসালো তিরস্কার কর্ছিলেন, তথন স্বরেশচন্দ্র সমাজপতি প্রভৃতি হেমেজ্রবাবৃর করেকজ্ঞন বন্ধু সভাগৃহ ত্যাগ ক'রে চলে গিয়ে নিজেদের বিবক্তি ও প্রতিবাদ প্রকাশ করে-ছিলেন।

্ধস্তবাদ প্রভৃতি শেষ হলে, সমস্ত শ্রোতা আবার চীংকার আরম্ভ কর্লে—
বুবিবাবুর গান, ববিবাবুর গান!

আমি এর পূর্বে একদিন রবিবাবুর গানের আস্থাদ পেরেছি, আন আর

নাল্যা ছেড়ে নড়্বার নাম্প্র কর্লান না। জনেক অফুরোধের পর রবিবাবু

নাল্যান

কে এলে ধার কৈনে কিরে, ক্ষাকুর সম্বাদর্শকার। কে বুঝা আলাভরে वाहित्स मुक्तारक সে বে আমার জননী রে। কাহার প্রধানরী বাণী विकास जनायत यानि । কাহার ভাষা হার, ভূলিতে দবে চার। সে যে আমার ক্রমনী রে। ক্ৰণেক ৱেছকোল ছাডি' চিনিতে আৰু নাহি পারি। আপন সম্ভান করিছে অপমান,---সে বে আহার জননী রে। বিরল কুটীরে বিবর, কে ব'সে সাজাইর। অর। সে স্বেহ উপহার क्रुटि मा मुख्य जाता। त्म (य जामाद सनमी (व

সেই সভার অনেক বিলাভফেরত ইক্ষবন্ধ—না ইংরেক্ষু না-বাঙালী গোছের বিদেশী পোষাক-পরা ও বিদেশী ভাষার কথা বলার চেটিত লোক ছিলেন, তাঁদের অবস্থা দেখে আমরা তথন অত্যন্ত স্থুথ অক্ষভব করেছিলাম। আমাদের মনে ছচ্ছিল তাঁরা যেন স্থদেশভক্ত কবির তীত্র তিরস্কারে লক্ষিত হ'বে নিক্ষেদের গারের বিদেশী পোষাক গা থেকে ঝেড়ে ফেল্তে পার্লে বাঁচেন।

'গান্ধারীর আবেদন' নাটকাটির মধ্যে আমরা দামরিক ইতিহাসের ছারা-পাত দেব তে পেরে অত্যন্ত আনন্দ অন্তব করেছিলাম। তথন আমাদের মনে হরেছিল গতরাই হচ্ছেন ব্রিটণ পাল'মেন্ট, চর্যোধন Bureaucracy, গান্ধারী ইংরেজ জাতির স্থামনিষ্ঠা (British sense of Justice), ভাত্মতী British prestige, পাওবেরা আধিকারবঞ্চিত ভারতবাসী এবং দ্রৌপদী ধর্মপথে চলার শান্তি ও গৌরব!

এর পরে তথনকার শেক্টেনান্ট গতরর উভ্বার্ণ সাহেব একবার ইউনি-ভাসিটি ইনটিউটের সকল মেধরকে জার বেল্ভিডিয়র প্রাসালে নিমরণ করেন। সেই দিন রবিবাব স্থান্তর ঢাকাই মস্লিনের একটি প্রচুর কুঁচি দেওরা বাষরার মতন মৃসলমানী জোকবা পারে দিরে ও পাঞ্জাবী নাগরা জুতা পারে দিরে গিরেছিলেন। সেদিন তাঁকে কেমন দেখ্তে হরেছিল তা তাঁরা, ব্যুতে পারবেন, বারা বাংলার ইতিহাসে ইংরেজ আমলের প্র্রের নবাবদের ছবি দেখেছেন। সেইদিন হেমেজ্রবাব্ও গিরেছিলেন, রবিবাব্ তাঁকে কাছে ডেকে আলাপ করেন, এবং কখন ফটো তোলা হয় তথন হেমেজ্রবাব্ বেছে বেছে রবিবাব্রই পাশে দাঁড়িয়ে ছবি তোলান।

আমি তথনো রবিবাব্র কোনো বই কোনো চোখেও দেখিনি। আমি প্রেসিডেন্সী কলেজে বি. এ. পড়তে ভতি হরেছি, আর পাকি হিন্দু হোটেলে। সেখানে একদল লোক ছিল যারা রবিবাব্র কাব্যকে অস্পষ্ট ও অর্থহীন ব'লে নিন্দা কর্ত, এবং আমিও তাদের সঙ্গে যোগ দিতাম, রবিবাব্র কোনো লেখা না প'ডেই।

একদিন এক মঞ্লিশে রবিবাব্র নিন্দা হচ্ছিল। আমি ব্ব উৎসাহের সঙ্গে তাতে যোগ দিছিলাম। সেখানে মুখ ব্রে বসেছিলেন আমাদের সহপাঠী অধুনা স্বর্গগত নলিনীকান্ত সেন। কিছুক্রণ পরে আমাদের নিন্দাসভা ভেঙে গেলে নলিনী নিজের বরে চ'লে গেল এবং থানিক পরে আমার বরে ফিরে এসে আমার বিছানার উপর রবীক্তনাথের কাব্যগ্রস্থাবলী কেলে দিরে কোনো কথা না ব'লে বর থেকে চ'লে গেল। নলিনী বিনা বাক্যব্যরে আমাকে কি বই দিরে গেল দেখ্বার জন্ত কৌতৃহলাক্রান্ত হত্তে দেখ্লাম রবিবাব্র গ্রন্থাবলী। তার প্রথম পৃষ্ঠা খুলেই পড় লাম—

ত্তন বলিনী খোলো গো আঁথি,

মুম এখনো ভাঙিল না কি।

কেখ তোমারি সুমার পারে

সবি এগেছে ভোমারি রবি।

করেক গৃষ্ঠা উল্টেই আবার পড়্লাম —

গুনেছি গুনেছি কি নাম তাহার গুনেছি গুনেছি গুনা। নালনী নালনী নালনী নালনী—— কেমন স্বাধুন গোলা। ् नत्त्रजी मिलम्] आह्मपूर ख्रद्रः विकास स्मान् वालियाः व्यापात ग्रेसीत साम् क्ष्म व्यापमाटन विकास मुख्य क्षम व्यापमाटन विकास मुख्य मिलमें मिलनो मिलनो माम !

তক্রণ বরনে প্রাণে যে কবিশ্ব জাগে, এ আকৃতি প্রকাশ কর্বার জন্ত,
মৃক মন ভাষা খুঁজে ব্যাকুল হয়, আমার প্রাণে সেই. কবিশ্ব সেই আকৃতি যেন
কবির লেখার ভাষা পেরে, হাঁপ , ছেড়ে, বাঁচল। আমার মনে হ'লো
আমি যে কথা বল্তে চাই অথচ পারি না, সেই কথাই তো এই করি
আমার জবানী ব'লে রেখেছেন। আমার মনের এই কথাটি কবি পরে
'ক্লিকা' কাব্যে বলে চুকেছেন—

তোমাৰের চোধে আঁথিজন ঝরে ববে, আমি তাহাদের গেঁধে দিই গীতরবে, লাজুক হাদর যে কথাটি নাহি কবে বরের ভিঙ্গের সুকাইর) কহি ভাহারে।

ববীক্রনাথের কবিতা আমার প্রাণমন হরণ কর্ল। আমি আর পরের বই পড়তে পার্লাম না। নলিনী দেনকে তার বই ফিরিয়ে দিয়ে তথনই ছুট্লাম গুরুদাস চট্টোপাধ্যায় মহাশরেব বইরেব দোকানে। একখানি টালী আকারের গ্রন্থাবলী কিনে নিয়ে হোষ্টেলে ফির্লাম এবং দিন থেকে রবীন্দ্রনাথের কাব্যগ্রন্থ আমার জীবনের আনন্দ বন্ধ শিক্ষক গুরু সহচর হ'রে আছে।

এই সময়ে আমাদেব সহপাঠী স্পরেশচন্দ্র আইচ আমাদের সংক্র ইন্দু লোটেলে বাস কর্ছিলেন। আমি শুন্লাম তিনি রবিবারব গান গাইতে পাবেন। এব পবে তাঁর সঙ্গে আমার বন্ধুও হ'তে অ'ধক বিলম্ব হরনি। কন্ত সন্ধ্যা আমরা ইডেন গার্ডেনে গিয়ে স্বরেশের মধুব কণ্ঠের গান শুনে অতিবাহিত করেছি, তার শ্বতি আন্তপ্ত মনকে হর্ষবিবাদে অভিত্ত করে—স্বরেশ আন্তর্গানেক, সে আমাকে যে অমৃতের আসাদ দিয়ে গেছে, তা আমার জীবনকে মাধুর্যে অভিবিক্ত ক'রে রেখেছে।

এই সময়ে বা এর পরে—এখন তা ঠিক মনে নেই, এবং কি উপলক্ষ্যে ভাও এখন শ্বরণ নেই, কল্কাভার লোকমান্ত টিলক, মহাম্মা গান্ধী, পঞ্জিত মন্দন-মোহন মালবীর প্রভৃত্তি লেলনেভারা সমব্যে হমেছিলেন। ভাঁমের দ্বন্ত একবার্ট হলে বছর্থনা-সভার আরোজন করা হরেছিল। সেই সভায় আর কি কি হরেছিল এবং কে কি বলেছিলেন তা আজ আর কিছুই যনে নেই; কেবল মনে আছে রবিবাবু গান গেয়েছিলেন—

> জননীর বারে আজি ৩ই তন লো নথ বাজে ! থেকো না থেকো না থেনে ভাই মধুন মিখ্যা কাজে !

রবীশ্রনাথের প্রসিদ্ধ গান---

"वात्र जूवनमरनारवाश्रिनी !"

আমি তার কণ্ঠ খেকে এ সময়েই ইউনিভার্সিটি ইন্**টি**টিউট্ হলে কোনো উপলক্ষে গুনেছিলাম।

বাংলা ১৩০৮ সালে আশিচন্ত মক্ষদার ও শৈলেশচন্ত মক্ষদার ভাতৃদ্য মক্ষদার লাইবেরী প্রতিষ্ঠা করেন ও নবপর্যার 'বঙ্গদর্শন' প্রকাশের আরোজন কর্তে থাকেন। আমার বই কেনার প্রবল কোঁক ছিল। আমি বই কিন্তে বাওরা উপলক্ষ্যে মক্ষদার মহাশরদের সঙ্গে বিশেষ পরিচিত হই। সেই সমরে আশিবাবুর ভাই-পো প্রবোধবাবু করাশী লেখক থিওফিল গ্যাতিয়ের লেখা মধুর উপন্তাস মাদ্দোরাজেল ভ মোপ্যা প্তকের একটি প্রশংসাহ্চক পরিচর পাঠ করেন ইউনিভাসিটি ইন্টিটিউট হলে। মিটিং শেব হ'রে গেলে আমি প্রবোধবাবুকে তাঁর লেখার প্রশংসা জানিয়ে করাশী বইখানির ইংরেজী তর্জমা আছে কি না জিজ্ঞাসা কর্লাম। এই হত্তে প্রবোধবাবুর সঙ্গে আমার পরিচয় হলো, এবং তিনি আমাকে সন্ধ্যাকালে মজ্মদার লাইবেরীতে যেতে নিমন্ত্রণ করলেন এই বলে যে, "সন্ধ্যাবেলা আদ্বেন না আমাদের এখানে, জনেকে আসেন, সাহিত্য আলোচনা হর।"

এর পর থেকে আমি মজ্মদার বাইব্রেরীর সাদ্ধ্য মজ্বিশের একজন সদস্থ ব'লে গণ্য হ'বে গেলাম। এবানে 'ভিদ্ভাস্ত-প্রেম''-প্রণেতা চন্দ্রশেশর মুখোপাধ্যার মহাশ্রের সঙ্গে পরিচর হবার সৌভাগ্য আমার হয়।

একদিন সন্ধার সময় আমি মজুমদার লাইব্রেরীতে গিরে দেখি পাশের বরে রবিবার ব'সে আছেন। আমি লাইব্রেরী দরে বস্লাম, এবং রবীত্রনাথের সান্ধিণ্য-লাডে ভাগ্যবান্ লোকদের কর্ষার দৃষ্টিতে দেখুতে লাগ্লাম।
একটু পরেই স্ববোধ মজুমদার লাইব্রেরী দরে একেন, এবং আল্যারী থেকে

রবিবাব্র 'কাহিনী' [বইথানি বার ক'রে নিরে চ'লে যদ্জিলেন। আমি তাঁকে কুণ্ঠার সন্দে জিজ্ঞানা কর্লাম "অবোধবাবু, এ বই কি হবে ?" তিনি বল্লেন—"রবিবাবুকে দিয়ে 'পতিতা' কবিতাটা পড়াব।" আমি জড়ান্ত তারে তরে নিতান্ত সন্ধোচ ও কুণ্ঠার সহিত তাঁকে বল্লাম—অবোধবাবু, আমি বাব ?" তিনি বল্লেন—"আন্থন না।" আমি কুতার্থ হ'রে সেই মরে গেলাম।

অপরিচিত আমাকে বেতে দেখে ববিবাবুর মূথে একটি লাজুক হালি কুটে উঠ্ল, এবং তাঁর মূখ অপ্রভিভ হরে উঠ্ল। 'পতিভা' কবিভাটি পড় বার কথা আগেই স্থির হ'রে ছিল। কিন্তু অপরিচিত আমার সাম্নে 'পতিতা' সম্বন্ধে কবিতা পড়তে উর্দির লজ্জা বোধ হচ্ছে ব'লে আমার মনে হলো। তিনি মাথা নত ক'বে নতনেত্তের উধা দৃষ্টি আমার মুখের দিকে প্রেরণা ক'রে বল্ডে লাগুলেন—"এ কবিভাটা কি বোঝা যার ?" আমি বল্লাম, "বোঝা যাবে না কেন ? এ কবিতা তো চমৎকার !" তথন বৃদ্ধি নি যে রবিবাবু আমার মতের জন্ত ঐ কথা:[বলেন নি, তিনি কবিডা পাঠের ভূমিকা শব্দপ নিজের কাছেই নিজে ঐ কথা বলতে আরম্ভ করেছেন। তিনি আমার কথা কানে না তুলেই নিজের মনে: ব'লে থেতে লাগুলেন—"আমি এই কবিতার বল্ডে চেয়েছি—রমণী পুষ্পতৃণ্য—তাকে ভোগে ও পৃঞ্জায় নিয়োগ করা যেতে পারে! তাতে যে কদৰ্যতা বা মাধুৰ্য প্ৰকাশ পায় তা সুলকে বা রমণীকে স্পর্ণ করে না, ---রমণী বা সূল চির-জনাবিল,--তাতে ফুল বা রমণীর কোন ইচ্ছা মানা হয় না ব'লে দে ভোগে বা পূজার নিয়োজিত হয়, তাতে নিয়োগকতার মনের কদৰ্যতা বা মাধুৰ্য মাত্ৰ প্ৰকাশ পায়। যে সংজ-পূজা তাকে ভোগের পদবীতে নামিরে আনে যে সেও একটা আনন্দ পার বটে, কিন্তু সে আনন্দ অতি নিক্লট শ্রেণীর। পতিতা হলেও নারীর স্বাভাবিক পবিত্রতা তার মধ্যে প্রচ্ছন্ন ধাকে, অমুকুল অবস্থা পেলে সে পুনর্বার পবিত্রতা লাভ কর্তে পারে। পাপের অস্তায়ে সে তার আত্মাকে কলুষিত করেছে মাত্র, কিন্তু তার আত্মা একেবার नहें रहि--- जात जाजा वालाफिह मर्गानत गरेजा राह जारह। अवि क्मांत्रहे পতিতার কল্য-তামস জীবনের মধ্যে প্রেমের জ্যোতি বিকীর্ণ ক'রে প্রকৃত জীবনপধের সন্ধান তাকে দেখিতে দিলেন। ভক্ত যথন জাগার তথনই তো ভগবান্ জাগেন, ভাই ভো আমরা বলি জাগ্রৎ ভগবান্। পতিতার নারীছের প্ৰারী কেউ ছিল না, অধিকুমার তার প্রথম পূজারী হয়ে তাকে তার

শারীবের সংক্রাপীরিভিভ ক'ছর। বিলেন। নাংগুর, নো পর্যন্ত রিজিনা হো, পর্যন্ত নাংভাবের ভার্ক । একে তার উপাদনা । কর্ছেন। শক্তিয়ানের প্রান্তা প্রেকে শক্তি কাগরিত তার কা ৮'

থাই ভূমিকা ক'বে তিনি কবিজাই পড় ড়ে আরম্ভ কর্ণেন্। সে বর কানের ভিতর দিয়া ক্লামার মর্মে প্রবেদ, করিবা প্রাকৃত্য, করিয়া ভূমিল।

পণ্ডিতা কবিভাটি পড়া হ'লে স্থবোধবাবু অন্নুরোধ কর্ণেন 'বিসর্জন' নাটকের, রমুপতির উক্তি পাঠ কর্তে।

এর পূর্ব-রাত্রেই সঙ্গীতসমাজে 'বিসর্জন' নাটক অভিনর হ'রে গেছে বরোদার মহারাজা পারকোরাড়ের সম্বর্ধনা উপলক্ষে। রবিবার তাতে রমুপ্রতির ভূমিকা নিয়ে অভিনর করেছিলেন। তিনি রবুপতির উজ্জি পড়ডে
অন্তর্কত হ'রে বল্লেন, "নাটকের পাত্র-পাত্রীর কথা কেবল পড়লে তার যথার্থ ভারত প্রকাশ করা যার না। নাটক অভিনরে যে অক্তর্কী প্রভৃতি থাকে
ভাতে ভাব প্রকাশে সাহায্য করে। ইংরেজী ড্রামা মানে এক্শান, মোশান।"

ভার পর তিনি রঘুপতির উক্তি পাঠ করলেন।

পাঠ শেষ হ'লে আমি তাঁকে জিজ্ঞাসা কর্ণাম—''ব্রাহ্মণ'' কবিতাব মধ্যে বে আছে—

> 'নে বনে স্থারিক্সান্ত্রেথ বহুপারচর্যা করি' পেবোছমু ভোরে, জন্মেছিদ ভর্তৃ হীনা জবানার ক্রোড়ে, গোত্রে তব নাচি জানি ভাত ''

এর অর্থ কি ? আমার এক বন্ধু এর অর্থ করেন যে অনেক দেবারাধনা মানং করার পর তোমাকে পেরেছি। কিন্তু আমি বলি ওর অর্থ বহু ব্যক্তিব সঙ্গে ব্যক্তিচাবের মধ্যে ভোমার জন্ম, তাই আমি জানি না যে তুমি কাব পূত্র। জ্যানানের মধ্যে কার অর্থ সঙ্গত ?"

রবিবার অত্যন্ত শক্ষিত হরে যাপা নীচ ক'রে মৃত্ব শরে বল্লেন—"আপনি বে অর্থ করেছেন তাই ওর অর্থ।" অপরিচিত আমার কাছে ঐ কধার আলোচনাম তিনি অত্যন্ত লুজ্জা ও শক্ষোচ বোধ কর্ছেন ব্যুতে পেরে আমি ক্ষার কোনো কথা বল্লাম না।

अहे सामान दिसात्त मध्य क्षामान ।

তথি সমন্ত্র মান্ত্রেরীর উন্বোদ্ধ পদাতে প্রকৃতি ক'রে সাহিত্যিক সভা হজো। ভাতে গান, আর্ভি, প্রকরণাঠ, আলোচনা প্রাকৃতি বছটান সেই সভার রবিবার, অকরকুমার মৈত্রের, রক্ষমীকাল্ত কেন প্রভৃতি বদারী সাহিতিকেরা যোগ দিতেন। একদিন রবিবার গান পাইতে আরভ ক'রে একটা কলি প্নঃপ্র: ফিরে ফিরে গাইছেদ লার লজ্জিত ভাবে মৃচ্ কি মৃচ্ কি হাস্ছেন দেখে আমি ব্যুতে পার্লাম যে তিনি গানের পদ ভূলে গেছেন, ও মনে কর্বার চেটা করেও মনে কর্তে পার্ছেন না। তথন আমি উঠে দাঁড়িরে গানের পদ চেঁচিরে ব'লে দিতে নাগ্লাম, ও তিনি গাইতে লাগ্লেন। আমি তাঁকে বিপদ্ থেকে উদ্ধার করাতে তিনি আমার দিকে এমন কোষণ দৃষ্টিতে একবার চাইলেন যে আমার মন আনন্দে পূর্ণ হ'রে গেল। তাঁর সেই দৃষ্টিতে লক্ষা, কৃতজ্ঞতা, ধত্রবাদ, ফুটে উঠেছিল।

এই সমন্ন আমি আমেরিকার কবি অনিভার ওরেণ্ডেন্ হোন্ম্ন্ সাহেবের
একটি কবিতা অমুবাদ করেছিলাম "বৃদ্ধের অমদর্শন" নাম দিরে। আমি সেই
কবিতাটিতে মুকুমার বন্দ্যোপাধাার স্বাক্ষর ক'বে 'বঙ্গদর্শন' সম্পাদকের নামে
ভাকে পাঠিরে দিয়েছিলাম। সেট ছাপা হলো দেবে আমার আর আনন্দের
সীমা রইল না। ববিবাবৃব বিচারে যে কবিতা উত্তীর্ণ হরে গেল সে ভো
দিগ্রিজ্বী হ'তে পারে। তখন আমি শৈলেশবাবৃকে বল্লাম যে সেটি
আমারই লেখা, পুকুমার বন্দ্যোপাধ্যার চারুচক্র বন্দ্যোপাধ্যারেরই রূপান্তর
মাত্র। রবিবাবৃ শৈলেশবাবৃর কাছে আমাব কথা ভনে বলেছিলেন যে আমার
আত্মগোপন ক'রে ছ্রানাম নেবাব কোনো আবিত্যক ছিল না।

এই সময়ে আমি লেখ্বার চেটা করছিলাম। আমি একটি প্রবন্ধ দাবার জন্ম কথা" লিখে 'বঙ্গদর্শন্ধে' ও "লিখনস্টির ইতিহাস" লিখে 'ভারতী'তে ভরে দিয়েছিলাম। ছটিই আমার স্থনামে ছাসা হলো। গ্রীমতী সরলা দেবী আমাকে নিজে তেকে আমাব সঙ্গে আলাপ কর্লেন এবং আমি তাঁকে ভারতী সম্পাদনে সাহায্য কর্তে পারি কি না জ্বিজ্ঞাসা কর্লেন। আমি তখন বি, এ, পাস ক'রে বেকার ব'সে ছিলাম, কেবল ছপুর বেলা ইম্পিরিয়াল লাইব্রেরীভে পড়তে হাওয়া ছাড়া আমার আর কোনো কাজ ছিল না। আমি সরলা দেবীকে সাহায্য কর্তে সন্ধত হলাম। আমি শুরু লেখক হওয়ার মুখেলা পেলাম না, বছ বিখাড়ে লেখকদের সঙ্গে পরিভিত্ত হ'তে লাগ্ আম্ এইছং বহু লেখকের প্রকাশ কালাই হাড দিয়ে মাজিক্ত হ'তে প্রকাশিত হ'তে লাগ্ আরু এই

কাশীতে গাহিত্য-পরিবদের শাখা প্রতিষ্ঠিত হবে। সেধানকার সেকেটারী আমাকে অহুলোধ কর্লেন উল্বেখনের উপবেশী একটি নান লিখে দিতে হবে। আমি কবিতা লিখ্বার ছকেটা মাঝে মাঝে কর্লেও কবিষের প্রাপ্তি আমার কোনো নিনই প্রভা বা বিধান ছিল না। তথনো রবিবাব্র পরবর্তী কবিদের অভাদর হরনি। আমি কাশীর সাহিত্য-পরিবদের সেকেটারী মহাশরকে লিখ্লাম বে "আমা হতে এই কার্য হবে না সাধন। তবে আমি রবিবাব্রক দিরে অথবা সরলা দেবীকে দিরে আপনাদের একটি গান লিখিয়ে দেবো!" সেকেটারী মহাশর অপ্রতাানিত ও আপাতীত লাভের সন্তাবনার উইকুর হ'রে আমাকে ধন্তবাদ নিয়ে পত্র লিখ্লেন। আমিও ছই জনের কাছে গান রচনা ক'রে কোর অহুরোধ ক'রে পাঠালাম। রবিবাব্ ছিলেন তথন শিলাইদহে। তিনি আমাকে পত্র লিখ্লেন যে তিনি শীপ্র কল্কাতার আদ্ভেন, এবং কোন নিদিষ্ট তারিখে জ্যোড়ার্গাকোর বাড়ীতে যদি আমি যাই তা হ'লে ভার সঙ্গে শাকাং হ'তে পারবে।

আমি নির্নিষ্ট দিনে বিকাল বেলা জ্বোড়ার্গাকোর বাড়াতে গিয়ে ছারোরানকে দিরে আমার নামের কার্ড রবিবাব্র কাছে পাঠিয়ে দিলাম।
তিনি তথনই নীচে নেমে এলেন। তাঁর পরণে একটা ঢিলা পাজামা, ঢিলা পার্পাবী সারে—আর পাঞ্জাবীর গলার বোডামটি খোলা। পরে লক্ষ্য করেছি তিনি কখনই জামার গলার বোডাম দেন না। তিনি আমাকে জ্বিজ্ঞানা কর্লেন —''আপনি আমাকে কি ফর্মান করেছিলেন না?'' আমি বল্লাম—"গরস্বতীবন্দনা সম্বন্ধে একটা গান লিখে দিতে বলেছিলাম।'' আমার কথা ভনেই তিনি ব'লে উঠলেন—''ওরে বাদ্ রে! গান শেখ্ বার সাধ্য কি আমার আছে আর! গান-টান আর আমার আদে না।—

চলে পেছে যোর বীণাপাণি। (চৈভালি)

আমার একট। পুরাণো গান আছে—

মধুর মধুর ধ্বনি বাজে জ্বন্ধ কমন বদ সাবে।

সেই পানটা দিয়ে কাল চালিয়ে নেবেন।"

আৰি বাৰ্ত্যনোৱণ হ'বে ফিলে এলাম। কবির বীণাণাণি কবিকে ভাগি ক'বে গেছেন হ'লে কবি ৯০০২ নালে বিলাপ করেছিলেন। কিন্তু ভার পরে হাজার গান রচনা করেছেন আর হাজার থানেক কবিঠাও গিখেছেন। ১৩১২ সালে আমি "নৈষ্টিক ব্রহ্নারী" নামে একটি পর নিবে প্রকাশ করার জন্ধ 'প্রবাসী'তে পাঠিরে দিয়েছিলাম। রামানক্ষরর পরটি কেবং দিয়ে অনুরোধ কর্লেন গরটির আয়তন সংক্ষেপ ক'রে দিলে ছাপা হ'তে পার্বে। দীনেশবার আমাকে তার সক্ষে পরিচর অবধি খুব ব্রেহের চক্ষে দেখুতেন। তাঁকে ঐ গরটির কথা বলাতে তিনি বল্লেন—"তুমি ঐ পর্লটি রবিবার্র কাছে পাঠিরে দাও, আর তাঁকেই বলো সংক্ষেপ ক'রে দিতে।"

দীনেশবাব্র পরামর্শ অনুসারে তার নাম ক'রেই আমার গরটি রবিবাব্র কাছে পাঠিয়ে দিলাম। তিনি তথন শিলাইদহে। তিনি আমাকে শিথ্লেন, তিনি শীদ্রই কল্কাতার কিরে আস্ছেন, তথন তার সঙ্গে জ্ঞোড়াসাঁকোর বাড়ীতে সাক্ষাৎ কর্তে গেলে তিনি মোকাবেলার আমার সঙ্গে আমার পর সম্বন্ধে আলোচনা কর্বেন।

একদিন প্রাতে রবিবাব্র জ্বোড়াসাঁকোর নৃতন লাল বাড়াতে গেলাম।
নীচে প্র্বিকের কোণের ঘবে তিনি বসে ছিলেন, আর সেধানে ছিলেন—
শ্রীর্জ্জ দীনেশচন্দ্র সেন, মোহিতচন্দ্র দেন, প্রিরনাথ সেন প্রস্তৃতি। আমি
নমস্কার ক'রে রবিবাব্র ডান দিকে ফরাসের একপ্রান্তে বস্লাম। তথন
'বঙ্গদর্শনে' রবিবাব্র 'চোথের বালি' শেষ হ'রে 'নৌকাড্বি' বাহির হজেছ।
ভার সম্বন্ধেই কথা চল্ছিল। আমি যথন গেলাম, তথন গুন্লাম দীনেশবাব্
বল্ছেন—''আপিনি ভো ছটি মেরে এনে উপস্থিত করেছেন। ওদের কার
সক্ষে শেষকালে রমেশের প্রণয় প্রবল হবে? ছল্লনের মধ্যে রমেশকে ফেলে
যে গোলমালের স্টেই কর্লেন, তা থেকে উদ্ধার পাবেন কেমন ক'রে!''

রবিবাবু হেদে বল্লেন—''আমি তো তা কিছুই জানি না যে রমেশ কমলা আর হেমনলিনীর মধ্যে পড়ে কি যে কর্বে। আমি তো কথনো আগে ভেবে চিছে কিছু নিধিনা, নিধ্তে লিধ্তে যা হ'রে গাড়ায়। দেখা যাক শেষে কি হয়।"

अत उत्तर विनि आभात निक् एक्टर वन्ति— अववास आत आभारक वीरुआ कत्र वन्ति ना।

তার এই কথা সকলের মনে লাগ্ল, কারণ এর অল্পদিন আগেই তার জীবিলোগ হবেছিল। ান্যতক্ষণ কথাবাতী চলছিল তভক্ষণ রবিধার্ মারোণিমাই জার্মার্য দিকে জ্বানান্ত ভিলে ভাকাছিলেন। আমি বৃন্তে পার্ছিলমি বৈ তিনি আমাকে চিন্তে পারছেন না, জথচ চিনি চিনি করছেন, এবং আমি কৈ হ'তে পারি তা ধনে মনে মিনিরে থেছে থেছে গেখুছেন। ভিনি নিশ্ব ভাবছিলেন থে এই প্রাণ্ড লোকটি কে, বে বিনা পরিচয়ে আমাকে পরামর্শ দিতে সাহস্করে। অনেকক্ষণ কথাবাতা হওয়ার পদ্দ কথার মধ্যেই রবিবার্ হঠাৎ আমার নিকে কিরে জিজানা কর্লেন—"আপনি কি চার্লার্ণ" আমি তার জন্মান মাধা নেড়ে খীকার ক'রে নিতেই, তিনি আবার যে কথা চন্ছিল ভারই আলোচনার বোগ দিলেন।

ৰখন সভা ভক্ত হলো তখন তিনি আমাকে বল্লেন আমি আপনাকে বা বল্ৰার তা শৈলেশকে বিয়ে ব'লে পাঠাব।

এর পর আমি অবস্থাবিপর্যরে কথেক বংসর কল্কাতাছাত। হ'রে ছিলাম। রবিবাবুর সঙ্গে আমার আর দেখা-সাক্ষাৎ ঘটেনি।

ইংরেজী ১৯০৮ সালে আমি এলাহাবাদের ইপ্তিয়ান প্রেসের তরক থেকে কল্কাতার ইপ্তিয়ান পাব্লিশিং হাউস নামে একটি পুশুক প্রকাশের ও বিজ্ঞানের দোকান খুলি। আমার উপরে ভার ছিল সকল প্রসিদ্ধ লেককের কই প্রকাশের অধিকার সংগ্রহ করার। আমি রবিবাবৃকে দিরে বউনি কর্ম লবর ক'রে রামানন্দবাবৃকে সঙ্গে নিয়ে রবিবাবৃর কাছে গেলাম। রামানন্দবাবৃ আমার উদ্দেশ্য ব্যক্ত কর্লে ববিবাবৃ বল্লেন—"এর জ্ব্যু আপনার কোনো স্থপারিশ আমবর্শী আবশুক ছিল না। কেউ যদি আমার এই সমস্ত ক্কর্মের ভার নিরে আমাকে নিশ্চিম্ভ করেন, সে তো আমার পরম উপকার করা হবে। আপনি ধবে বল্বেন আমার পর বই আপনার হাতে সংশিক দিয়ে আমি নিশ্চিন্ত হবো।"

এই হলো তাঁর সঙ্গে আমার ঘনিষ্ঠতা হওরার স্ত্রপাত :

এই সমর সত্যেন্দ্র দক্ষের সংশ আমার পরিচর হর। তথন তার 'তীর্থ-দলিল' ছাপা চল্ছে। ভিনি প্রায় রোজই সদ্ধাবেশা প্রেস থেকে প্রফ দিবে আমার বাসার আস্তেন' আর আমাকে তার কবিতা শোনাতেন। একদিন আমি তার বৈশু ও বীণা' উৎদর্গ সম্বন্ধে তাকে প্রেম্ন কর্মণাম "এ ক্রিটা আপনি কাকে উৎদর্গ ক্ষেছেন শি

गर्ভाक्त वन्त्वन-"व्यानिम वनून मा ।"

व्यक्ति (नवनाम-त्नहे छेश्नदर्न-त्नवा व्यक्त--

থিনি অনতের সাহিত্যকৈ অন্যত্ত করিয়াছেন বিনি ববেশন সাহিত্যকে অন্তর্ক করিয়াছেন বিনি বর্তনাদ বুগেয় সর্বজ্ঞেচ লেখক সেই অলোকসাখান্ত শক্তিসম্পন্ন কবির উদ্দেশে এই সামান্ত কবিতাঞ্জলি সসন্ত্রমে অপিত চইল।

দেখে—আমি বল্লাম—ইনি হর শেক্স্পীয়ার, আর নয় রবিবাব্।"
সভ্যেন্দ্র উত্তর কর্লেন—"অন্দেশের কবি থাক্তে আমি বিদেশে বাব কেন ?"
আমার আনন্দের অবধি থাকল না। আমার মনে মনে ধারণা ছিল যে,
রবিবাব্ জগতের মধ্যে শ্রেষ্ঠ কবি। কিন্তু তখনও আমাদের দেশে ভার প্রতিভা সর্বজনসমাদৃত হয়নি, একদল নিন্দক প্রবল হ'য়ে তাঁকে থাটো কর্বারই ব্রত গ্রহণ করেছিল। তাই আমার মনের ধারণা লোকের কাছে
আমি প্রকাশ ক'রে কখনো বল্তে সাহস করিনি। সেদিন সভোজকে আমারই মতামুক্ল পেয়ে আমি আনন্দিত হলাম, আমার পৃষ্ঠপোষক পেয়ে
আমার সাহস বাডলো, আমি মনে জার পেলাম।

এই সময় রবীন্দ্রনাথ পাকে চক্রে ঘূবিয়ে ফিরিয়ে আমাকে জানাতে লাগলেন যে আমাকে তিনি তাঁর বিদ্যাপরে চান। আমাকে একদিন বল্লেন—"চাক, তুমি কি আমাকে একজন এমনি লোক দিতে পারো একটু সংস্কৃত জানে, ই'রেজীটার নেহাৎ ভূল করেশ্বনা, আর আমার লেথাগুলোকে নিতান্ত তুক্ত ব'লে অবহেলা করে না।"

বন্ধুবর অঞ্চিত চত বতী আমাকে বললেন—"গুরুদেব, তোমাকেই চান।"
আমি তথন সন্থ ইণ্ডিরান পাব নিশিং হাউস খুলেছি, আমার উপর নির্ভর
করে ইণ্ডিরান প্রেসের মালিক চিন্তামণিবার অনেক টাকা ব্যয় করেছেন,
এখন আমার পক্ষে তাঁর কর্ম ভ্যাগ ক'রে বোলপুরে চ'লে বাওয়। উচিত হবে না
ব'লে আমার মনে হলো। আমি রামানন্দবার্কে পরামর্শ জিঞ্জানা কবলাম;
ভিনি বল্লেন—"না, আপনি এখন যেতে পারেন না।"

আৰি যাধ্য হয়ে কবিশুরর আষশ্রণ থাকার করতে না পেরে খুবই কুর বলাম। তথ্য কবিকে বল্লাম—"আপনি মদি লোক চান তো আমার চেয়ে বছন্তংগ ভালো লোক আপনাকে এনে দিভে পারি '" তিনি গোক চাওয়াতে আমি বন্ধুবর বিধুশেশর শান্ত্রী ও ক্ষিতিমোহন সেনকে শান্তিনিকেতনে আসতে প্ররোচিত করি।

আমি একবার শান্তিনিকেজনে গিছে কিভিযোহনের আপ্রয়ে আমার জিনিসপত্র রেখে কবির সঙ্গে সাক্ষাৎ কর্তে গেলাম। কিভিযোহন বল্লেন— "ভূমি বাও, আমি একটু পরে বাহ্নি, ভারপর একসঙ্গে বেড়াতে যাব।"

ক্ষিতিমোহনের কাছে আগে সিরে পরে তার কাছে এসেছি, এই নিরে কবি আমাকে ঠাটা ক'রে বল্লেন—"ক্ষিতিমোহনের মোহ এতক্ষণে কাটল।"

আমি লজ্জিত হয়ে তাঁকে প্রণাম ক'রে তাঁর কাছে বসনাম।

তিনি তথন শান্তিনিকেতনে শালবীখির খারে মাঠে একখানা তক্তপোবের উপর একলা ব'সে ছিলেন। অল্পক্ষণ পরে ক্ষিতি এসে আমার পাশে ব'সে বল্লেন—"চাঙ্গ, চলো বেড়াতে যাই।"

কবি হেদে বল্লেন—''হাঁ, যথনি চাকচন্দ্র কিতি আর রবির মার্যানে পড়েছেন, তথনই জানি যে রবির গ্রহণ লাগুবে।"

ক্ষিতিমোহন আমার আশা ত্যাগ করে পলায়ন কর্তে কর্তে ব'লে সেলেন—"না না, আমি চারুকে নিয়ে বেতে চাইনে, ও আপনার কাছেই থাক।"

"শারদোৎদব' নাটক সম্ভ লেখা হয়েছে, শাস্তিনিকেতনে ছাত্রশিক্ষকে মিলে তার অভিনয় কর্বেন, তার আগে বইখানি শোভন রূপে ছেপে প্রকাশ কর্বার জ্বন্তু আমার ডাক পড়েছে। কবি বই প'ড়ে আমানের শোনালেন। কথা হলো যে আরস্তে একটি মঙ্গলাচরণ দিতে হবে। কবি অনুবোধ কর্লেন, শান্ত্রী মহাশন্ত একটা সংস্কৃত মঙ্গলাচরণ নিখে বা বেদ থেকে খুঁজে দেবেন। আমি বল্লাম—"যার লেখা বই সেই কবিই মঙ্গলাচরণ লিখবেন, আর কারো অন্ধিকার প্রেবেশ এখানে খাটবে না।"

কৰি হেদে বল্লেন—"আমার প্রকাশকের তো বড় কড়া শাসন দেখি। তা তোমরা যদি আমাকে এখন ছুট দাও তাহলে একবার চেটা করে দেখ্ডে পারি বে, আমার প্রকাশকের ছুকুম তামিল করতে আমি পারি কি না।"

তিনি নিজের ঘরে চ'লে পেলেন। আধ ঘণ্টা পরে ফিরে এলেন—গান তৈরী ও হুর সংযোজনা সর হয়ে পেছে। দে গানটি শার্দোৎসবের প্রথমেই আছে—

ভূমি নৰ নৰ ক্লগে এন প্ৰাণে, এন গলে বৰণে এন গানে।

রবীজনাথের নিমন্ত্রণে একবার শিলাইনহে তাঁর কাছে গিরেছিলাম। তথন তিনি কাছারীর পরণারে চরের গারে বজরা বেঁধে বাস কর্ছিলেন। হুণানি বজরা পাশাপাশি বাঁধা, একথানিতে কবি নিজে বাস করেন, আর অন্তথানিতে অজিতকুমার পীড়িত হ'রে আহা সঞ্চরের জন্ত বাস কর্ছিলেন। আমি অজিতের বজরার বাসা পেলাম। আমি কবিকে প্রণাম ক'রে আন কর্বার জন্ত অপর বজরার যাব ব'লে উঠ্লাম। কবির বজরা থেকে অজিতের বজরার যাবার একটি তক্তা এক বোট থেকে আরেক বোট পর্যন্ত কেলা ছিল। আমি যথন অপর বজরার যাবার জন্ত উঠ্লাম, কবি আমাকে বল্লেন—"চারু দেখো সাবধানে যেরো, এখানে জ্বোড়াসাঁকো নেই, এক সাঁকো দিবেই পার হ'তে হবে।"

সে সময়ে তিনি আমাকে যে যত্ন করেছেন তা আমার জীবনের মহার্ঘ সহল। নিজে না থেকে আমাকে থাওয়ানো, আমার স্থপ-বাছেন্দ্য সধক্ষে সর্বদা উৎস্কুক থাকা, অজিতকে ক্রমাগত বলা, দেখো অজিত, তোমার বন্ধর যেন কোন অস্থবিধা না হয়।

পরদিন রাত্রে আমাকে তাঁর বোটে ধাক্তে অমুরোধ কর্লেন। এত বড় লোকের অত কাছে থাক্তে আমার অত্যন্ত সন্ধাচ বোধ হ'তে লাগ্ল। আমি বল্লাম—আমি তো অজিতের সন্ধেই বেশ আছি, এথানে গুলে আড়ট্ট হ'রে আমারও অমুবিধা হবে, আর আপনারও বিশ্রামের ব্যাঘাত হবে।

কিছ কবি কিছুতেই শুন্দেন না, অঞ্জিতকে বল্লেন—"অজিত, ভোমার বদ্ধু ভোমাকে ছেড়ে থাক্তে চান না। অতএব তুমিও ভোমার বাসা বদল ক'রে এই বোটে এসো।"

স্ক্যার সময় থুব ঝড়জাল আরম্ভ হলো। কবি বল্লেন—"অজিত অতিথির স্মধনা করো, পান ধরো।"

कवि जान धन्दानन, जिल्ड मरक योज वित्नन--

আজি বড়ের রাতে তোমার অভিনার প্রাণস্থা বস্তু হে আমার। তারপর আবার গান ধর্বেন-

কোথার আলো কোথার ধরে আলো। বিব্রচানলৈ আলো রে তারে বালো।

এই ছটি গানই আমি 'প্রবাসী'র বস্তু চেয়ে নিরে এসেছিলাম।

এই সময় 'প্রবাসী'তে 'গোরা' বাহির হচ্ছিল। তিনি আমাকে বল্লেন আরো একদিন থেকে 'গোরা'র কপি সংক্ষ নিয়ে ষেতে। আমি তাঁর কাছে থেকে 'গোরা' নেথার পছতিও দেখ্বার সৌভাগালাভ কর্লাম। খাড় কাড ক'রে ঘস্থস্ ক'রে কলম চালিরে যাচ্ছেন, আর থানিক লিখে কিরে প'ড়ে দেখে অপছন্দ অংশ চিত্রবিচিত্র ক'রে কেটে উড়িরে দিছেন। কত স্থলর স্থলর রচনাংশ যে কেটে উড়িরে দিয়েছেন তা দেখে আমাদের কই হরেছে। আমি বল্লাম যে, আপনি যা লিখে ফেলেন তাতে আর তো আপনার অধিকার থাকে না, তা বিশ্ববাদীর হ'মে যার, অতএব সব থাক।

কবি হেসে বল্লেন—"তুমি বভ ক্লপণ। সব রাখ্লে কি চলে। সঙ্গে সঙ্গে ধ্বংস না থাক্লে কি সৃষ্টি কথনো সুন্দ্ৰ হ'তে পারে।"

শিলাইদহে থাববার সময় কবির থুব ঘনিষ্ঠ সংসর্গ লাভ কর্বার সৌজাগ্য আমার হয়েছিল। সেই সময় তার উপাসনায় জন্মহতা আর গভীব ধ্যান দেখে মৃগ্ধ হরেছিলাম। ভোর-রাত্রে একথানি চেরার বোটের সামনে পেতে প্রদিকে মৃথ ক'রে তিনি ধ্যানে বস্তেন, আর বেলা হ'লে সুর্যের আলোক প্রভিপ্ত হ'রে তার মুখের উপর এদে না পড়া পর্যন্ত তার ধ্যান্তক হতো না। তাঁকে সেই তন্মর অবস্থায় দেখে আমার মনে হতো 'নৈবেগু'র সেই কবিতাটি থেটি তিনি, তাঁব পিতা মহর্ষিকে লক্ষ্য করে লিথেছিলেন—

ভক্ত করিছে প্রভুর চরণে
ক্রীবন সমর্পণ,
ভরে দান তুই ব্রোড় কর করি,
কর তাহা দরশন !
মিলবের ধারা পড়িটেছে করি,
বহিলা বেডেছে সম্তল্মরী,
ভূতকে মান্টি মানিকা, লহ রে
ডভালেন্ট্-ব্রিবেণ !

स्क कतिरह्न युद्धुद् हुन्नल, स्रोतन समर्थन !

ওই যে আলোক পড়েছে উ।২।র উপার ললাটদেশে, দেশা হ'তে তারি একটি বর্ণি পড়ুক মাধার এনে!

বোলপুরেও আমি তাঁকে এমনি ধানের অনেকদিন দেখেছি। তথন তিনি 'শান্তিনিকেতন' নামক পুস্তকাবলীতে প্রকাশিত উপদেশাবলী প্রতি সপ্তাহে মন্দিরে বল্তেন আর প্রতাহ প্রত্যাবে মন্দিরের পূর্বদিকের বারান্দায় ব'দে ধ্যানস্থ হতেন, এবং মৃথে রোদ এদে না পড়া পর্যস্ত তাঁর ধ্যানভঙ্গ হতো না। 'গীতাঞ্জলি' রচনার সময় আমি লক্ষ্য করেছি তিনি কথা বল্তে বল্তে হঠাৎ ঘেন সংসার থেকে নিজেকে বিচ্ছিন্ন ক'বে নিয়ে গভাঁর ধ্যানে নিমগ্র হ'য়ে যেতেন।

কোনো এক উৎসব উপলক্ষ্যে আমরা বহু লোকে বোলপুবে গিয়েছিলাম।

শ্ব সম্ভবত 'রাহ্মা' নাটক অভিনর উপলক্ষ্যে। বসস্ত কাল, জ্যোৎসা রাত্রি।

যত প্রালোক ও পুরুষ এসেছিলেন তাঁদের প্রায় সকলেই পারুলডাক্সা নামক

এক রমা বনে বেডাতে গিয়াছিলেন। কেবল আমি ঘাইনি রাভ জাগ্বার

ভয়ে। রাত্রিতে আমাব ঘুম ভেঙে গেল গায়ে কিসের স্পান লেগে। জেগে

দেখি স্বয়ং কবি এসে আমার গায়ে তাঁর নিজেব গায়ের মলিদা চাদব ঢাকা

দিয়ে দিজেন। আমি ধডমড ক'রে উঠে বস্লাম। কবি আমাকে বল্লেন

—'তুমি উঠো না, ঘুমোও, তোমার শীত কর্ছে, ভাই গায়ে ঢাকা দিয়ে

দিছি।''

আমি শুয়ে শুয়ে ভাবতে লাগ্লাম আমার সৌভাগ্যের কথা। কোন্
স্কৃতিব দলে আমার মতন গুণহান এত বড় কবি ঋষিব সেংভাজন হ'তে
পার্ল।

ভাব্তে ভাব্তে ঘ্মিয়ে পডেছি। গভীর রাত্রি। হচাৎ আমার ঘুম ভেঙে গেল, মনে হলে ধেন শান্তিনিকেতনের নীচের ভলার সাম্নের মাঠ থেকে কার মৃত্ মধুর গানের স্বর ভেসে আস্ছে। আমি উঠে ছাদে আল্সের ধারে গিয়ে দেখ্লাম, কবিগুরু জ্যোৎস্বাপ্লাবিত খোলা জ্বারুগার পায়চারি কর্ছেন আর গুন্গুন্ ক'রে গান গাইছেন। আমি থালি পারে ধীরে ধীরে নীচে নেমে গেলাম। আমি গুরুদেবের কাছে গেলাম, কিছ ভিনি আমাকে লক্ষ্য কর্লেন না, আপন মনে বেষন গান গেরে গেরে পারচারি কর্ছিলেন তেমনি পারচারি কর্ভে কর্ভে গান গাইভে লাগ্লেন। গান গাইছিলেন খুব মৃত্ত্বের। আমি পিছনে পিছনে বেড়াভে বেড়াভে গানের কথা ধর্বার চেটা কর্ভে লাগ্লাম। তিনি গাইছিলেন।

আৰু জোখনা রাতে স্বাই সেছে বনে বসতের এই বাতাল স্বারণে।
বাব না গো বাব না হে,
বাক্ব প'ড়ে বরের মাঝে,
এই নিরালার রব আপন কোণে।
বাব না এই মাতাল স্বারণে ।
আমার এ বর বত বতন ক'রে
ধৃতে হবে নুছতে হবে মোরে।
আমারে বে জাগ্তে হবে,
কি জানি সে আস্বে কবে—
বহি আমার পড়ে তাহার মনে।
বাব না এই মাতাল স্বীরণে।

এই গানটি পরে 'গীতালি'তে স্থান পেরেছে, এবং সেখানে তারিখ দেওয়া আছে ২২এ চৈত্র ১৩২১ সাল।

অনেক্কণ পরে গান থাম্লে তিনি অতি মৃত স্বরে কথা বল্লেন—"চারু এসেছ ?"

আমি তাঁকে প্রণাম ক'রে পায়ের ধ্লো নিলাম। তিনি তেমনি মৃদ্ধ স্বরে বল্লেন—''যাও তুমি শোও সে।"

বুৰ্লাম তিনি একলা থাক্তে চান। আমি চ'লে এলাম। 'গাতালি'র গানগুলি রচনার সময় আমি কবির কাছে ছিলাম। অনেকগুলি গান রচিত হ'লে তিনি আমাকে বল্লেন—"চাক্ষ, তুমি আমার এই গানগুলি নকল ক'রে দিতে পারো, তা হলে ছাপ্তে দিতে পারি। যে খাতায় গান লিখেছি সেটা প্রেমে দেওরা চলবে না. থাতাথানা রখী চেয়েছে।"

আমি গানগুলি নকল ক'রে দিলাম।

তিনি জিজাসা কর্লেন—"তোমার কেমন লাগ্ল ?"

আমি বল্লাম-একটা গান একট্ অস্পট হরেছে, মানে ঠিক ধরা মার না। কবি চ'টে সেলেন। বিরক্ত করে বল্লেন—"ভূমি কিচ্ছু বোঝো না, ও ঠিক আছে।"

আৰি অপ্ৰক্ত হরে বল্লাম—আমি বুৰুতে পারিনি সেই কথাই বন্-ছিলাম, কবিতার কোনো ক্রটির কথা আমি বলি নি।

কবি গন্ধীর ও নীরব হ'য়ে রইলেন। আমি প্রশাম ক'রে চলে গেলাম। তথন সন্ধ্যা উত্তীপ হয়ে গিয়েছিল।

আমি খেরে-দেরে বৃমিরে গেছি ৷ রাত্রে আমার বাসা বেণুকুঞ্জে কবির কঠবর শুনে বৃম ভেঙে গেল—"চাক, তুমি বৃমিয়েছ ?"

আমি ধড়মড় ক'রে উঠে পড়্লাম, এবং মশারির দড়ি ছিঁছে কেলে ভাড়াতাড়ি মশারি সরিয়ে কবিশুককে বদ্বার জায়গা ক'রে দিলাম।

তিনি আমাকে বল্লেন—"চারু, তুমি ঠিকই বলেছ, ঐ গানটার কোনো মানেই হর না, আমি প'ড়ে দেখি বে আমি নিজেই তার মানে বৃর্তে পারি না, কি তেবে বে নিখেছিলাম তা এখন আর ধর্তেই পারি না। সেটাকে বদ্লে এনেছি, দেখো তো এটার কোনো মানে হয় কি না।"

আগের গানটি কেটে সেই কাগজে সেই গানের পাশে নৃতন ক'রে আর একটি গান লিখে এনেছেন, কেবল আমাকে তিরস্কার করার আমি ক্র হয়েছি ভেবে আমাকে দাখনা দেবার সেটি যে কৌশল মাত্র, তা আমার বৃষ্তে বাকী রইল না। আমার মনের ক্লেশ দ্র কর্বার জন্ম নিজের ক্রটি শীকার ক'রে এত রাত্রি পর্যস্ত জেগে থেকে আবার একটি নৃতন গান রচনা করেছেন। ঘড়ির দিকে তাকিরে দেখলাম তখন ১১টা বেজে গেছে।

নিম্নে প্রথম লিখিত কবিতাটি তার সংশোধন সমেত দিলাম, এবং তার পরে পরিবর্ভিত ও 'গীতালি' পৃস্তকে প্রকাশিত কবিতাটিও তার সকল সংশোধন সমেত দিলাম।—

কেন আর মিথা আশা

वाद्य वाद्य.

হাত ধরে

ওরে তোর সঙ্গে যে কেউ

যাবে না রে।

এ তোমার রাত্রিশেবের ভোবের পাণী, তোমারেই একলা কেবল গেল ডাকি

বারে ভূই বিজন পথে চ'লে বারে।

र्जाय-मान

গুলো ঐ খুনক ক্ষি নিনির বাকক : ব'লে রম চোবের জলের আপেকাতে ।
মেটাতে গার্বে বা বে নাথার নিশঃ
ডোমার এই কোটা কুলের আলোর ভ্বা,
দে বে ভাউ চেরে আছে প্বের পারে ॥

₹

বে থাকে থাক না
ভরা পাকে থবের থারে

যে বাবি বা না
বা না ভূই আপন পারে।
বাহি-ঐ ভোরের নারী
ভোরের নারী
ভোরের নার রর
ভোষারেই পেল ভাকি,
একা ভূই চ'লে বা রে।

কুঁড়ি চার আঁধার রাতি

রসে শাভি।

শিশিরের অপেকাডে।

চার না নিশা কোটা কুল আলোর ভূষার প্রাণে ভার আলোর ভূষা কাঁছে দে অমাদিশার

সে কাৰে সে অন্ধকাৰে।

'নীভেনি'র উৎসর্গের কবিভাটিতেও বছ পরিবর্তন করা হরেছিল,। কবি এইরপে বছ কবিতা রচনা করেছেন এবং কোন না কোন কারণে দেগুলিকে প্রকাশ করেন নি। সেগুলিকে প্রকাশ কর্তে পার্লে কবির মনের চিন্তার একটু পরিচয় পাওয়া যেতে পারে। আমার খাতিরে যে কবিতাটিকে একোরে বর্জন ও লোকলোচন থেকে বিদর্জন করেছেন সেটিও যে একটি উৎস্কট্ট কবিতা তাতে আর কোনো সন্দেহ নেই।

যথন 'গীতালি'র গান নুকল কর্ছিলাম সেই সময় একদিন বছুষর অসিড-কুমার হালদার আমাকে বল্লেন—"চলো গয়া বেড়িয়ে আসি।" অসিতের প্রায়োব গুনে রবিরাব্য আমাতা ক্ষিয়ুক্ত নগেক্সনাথ গাসুলী মহাশ্যও तिरक श्रीष्ठक स्रामन। त्नरिय कविश्व वाश्यात हैक्या श्रीकाण कर्मणन। अवर अन्दन व्यामादनत्र कन द्वल शूर्व क्यांत छेठ्न। श्रीमछी द्व्यवका क्याँ। श्रीता तिर्वोश्व हन्दनन। योजात मध्य त्रविवान् व्यामादक वन्दनम—"हांक, व्यामिश्व कोमादनत्र मदन हैक्तांत्रिष्ठिद्वहि क्यांतम यात।

আমি অনেক অমুরোধ ক'রে তাঁকে ঐ সঙ্ক ত্যাগ করাগাম, তাঁকে এই বলে ব্রিয়ে বল্লাম—তাতে আপনার তো কট হবেই, আর আপনার কট্ট হচ্ছে ভেবে আমাদেরও শান্তি-স্বিত্ত কিছু থাকবে না।

গরার তথন প্রভাতকুমার মুখোপাধ্যার মহাশর, আর বসন্তকুমার চট্টোপাধ্যার মহাশর ছিলেন। তাঁরা সহরে একদিন রবীক্রনাথকে সম্বর্ধনা কর্লেন। সেই সভায় বসন্তবাব্ পান গাইলেন। আর এক ভারুলোক হারমোনিয়াম বাজ্ঞালেন। একটি কচি মেরে আকৃত্তি করলে। তার প্রথম গাইনটি মনে আছে—

তবু মরিতে হবে।

সত থেকে বেরিয়ে বৃদ্ধগন্ন আস্বার রাতার গাড়াতে ব বনার আমাকে বললেন —''দেখেছ চাক, আমার পাণের পাংশ্চিত্ত আমি না হর গোটাকতক গান কবিতা লিখে অপরাধ করেছি, তাহ বলে আমাকে ধ'রে নিম্নে গিয়ে এ রকম যন্ত্রণা দেওয়া কি ভদ্রতাসদত। গান হলো, কিন্তু ছ্ম্বনে প্রাণণণ শক্তিতে পালা দিতে লাগ্লেন যে কে-কত বেতালা বাহ্মাতে পারেন আব বেশ্বরা গাইতে পারেন, গান যার য'দ এপণে, তো বাহ্মনা চলে ভার উল্টো পথে। গায়ক বাদকের এমন স্বাতন্ত্রা বন্দার চেটা আমি আর ক্মিন্ কালেও দেখেন। তার পর ঐ একবিত্তি ক'চ মেয়ে তাকে দিয়ে নাকি শ্বরে নামাকে শুনিরে না দিলেও আমার জ্বানা ছিল যে,—উর্ মঁবিতেঁ ইবেঁ "

রবিবাব বুদ্ধগরায় পাণ্ডার অতিথি হ'য়ে বুদ্ধগরাতে অবস্থান কর্ছিলেন।
তাঁর বাসায় একদিন নন্দলাল ব'লে এক ভদ্রশোক এসে 'বরাবব' পাহাড়
দেখে যাবার জন্ম অনুরোধ কর্তে লাগ্লেন। তিনি আখাস দিলেন
যে তিনি সেখানকার এক জমিদারের প্রধান কর্মচারী, তিনি সেখানে থাক্বার
তাঁবু যান-বাহন আহারাদির সমস্ত ব্যবস্থা ক'রে দেখেন, কবি তথু কট ক'রে
গিয়ে দেখে আগবেন বৌদ্ধ আমলের গিরিগুছা।

আমরা স্বাই রওনা হলাম। ক্বির দৌহিত্তের জ্বর হওয়াতে মেরের। আসতে পার্লেন না, এবং উাদের জ্ঞ নগেনবাব্রও আসা হলো না। গ্রা থেকে রেলে বেলা নামক টেশনে নেমে আমরা এক হাতীতে রওনা হলাম। রবিবাবু পান্ধীতে যাবেন, কিন্তু পানী তথনও আসে নি, ননলালযাবু আখাস দিলেন—"আপনারা চ'লে যান, হাতী আন্তে আতে যাবে, আর পান্ধী পরে রওনা হলেও আগে চ'লে বাবে।"

আমরা চ'লে গেলাম। নন্দলালবাবু আমাদের দক্ষে কিঞ্চিং ফল দিয়েদিলেন পাথের, এবং ব'লে দিলেন দেখানে তাঁবু পড়েছে এবং পাচকের।
আন প্রস্তুত ক'রে রেখেছে।

আমর। বরাবর পাহাড়ের নীচে পৌছে দেখি মাঠ ধৃধু কর্ছে, কোণাও তাঁবু বা থান্তপানীরের কোনো আয়োজন নেই। কবির আস্তে দেরী হচ্ছে দেখে আমি প্রস্তাব কর্লাম আমরা আগে গিয়ে গুহাগুলো দেখে আসি। কবি যে আস্বেন তার কোনো লক্ষণ তো দেখা যাছে না, আর যদি আসেনই তবে তাঁর সঙ্গে আর একবার দেখা যাবে তাতেও কোন ক্ষতি হবে না। আমরা গুহা দেখে নেমে এলাম। তথনো কবির পাতা নেই। কুগরে নাড়ী চোঁ টো বহছে। সঙ্গীরা অল্লবয়নী,—তাদের ক্ষাব তাভন বেনী। তারা ফলের থাকা আক্রমণ কর্লে। আমি তাদের মুখ থেকে কেছে। একটি নাস্পাতি ও একটি কলা রক্ষা কর্লাম কবির জন্তা।

অনেককণ পরে কবির পানী এলো। কবি এসে ধর্ম শুন্পেন মানের মাঝবানে একটি গাছ ছাড়া আর কোনো আশ্রয় নেই, এবং বিশুন্ধ মেঠে: বাভাস ছাড়া আর কিছু থাফ সংগ্রহের সম্ভাবনা নেই, তথ্য তিনি বল্লো --"ভাগ্যে কেয়ের৷ আর শিশুটি আসেনি। আর পাহাড দেখে দরকাব নেই, কেরো।"

আমি বল্লাম—এতদ্র যথন এবেন ওখন গুলা না দেখেই কিরে বাবেন গ তিনি পান্ধী থেকে নামতে কিছুতেই রাজা হলেন না। তথন আমি জোর ক'রে তাঁকে কিছু খাওয়ার জন্ম অনুরোধ কর্লাম। তিনি কেবল একটি কলা থেলেন। আমি নাসপাতি ছাড়িয়ে দিশাম, কিন্ন তিনি তা গ্রহণ না ক'রে বল্লেন—"আমারু কি শক্ত জিনিস থাবার জো আছে। তোমরা যদি কিছু থেতে পাও তবে উমাচরণকেও একটু দিও।"

আমি বল্লাম—উমাচ্বণকে খেতে দিছেছি।

উমাচরণ তাঁর ভৃত্য, মালককাল খেকে তাঁর পত্নীর কাছে আদরে ^{যত্নে} কাজ নিথে মাতুর হয়েছে। ভৃত্যের প্রতি কবির সন্তানবাৎসল্য ছিল। সন্ধাবেলা বেলা টেসনে ফিরে গেলাম। কবির সমস্ত দিন স্নান হয়নি, আহার হয়নি, রৌদ্রে পথে যাভায়াতে ও মনের বিরক্তিতে তাঁর চেহারা অত্যস্ত মান ও গস্তীর হ'য়ে উঠেছে। তিনি ষ্টেশনের এক ধার থেকে আর এক ধার পর্যস্ত প্রাট্যর্মের উপর পায়চাবি ক'রে বেড়াতে লাগলেন।

আমরা কেউ তাঁর কাছে যেতে সাংস কর্ছিলাম না। অনেকক্ষণ পরে আমি আন্তে আন্তে তাঁর পিছনে গিয়ে সঙ্গে সঙ্গে চল্তে লাগলাম। তিনি আমাকে নিকটে দেখে বললেন—"জীবনে ত্রংথ পাওয়ার দরকার আছে।"

আমি তাঁর কথা সমর্থন ক'রে কি বল্তে গেলাম। তিনি সে কথা গ্রাহ্ম
না ক'বে ছঃথ সম্বন্ধে দাশনিক তত্ত্ব অবতারণা ক'রে অনর্গল বলে বেতে
লাগ্লেন। আমি বৃষ্ণাম, ঐ যে দার্শনিকতা তা কেবল নিজেব বিবক্ত
মনকে সাল্থনা দেবার ও রুষ্ট মনকে শান্ত কববার উপায় মাত্র, তাঁর ঐ
উক্তি স্থগত, আমাকে উপলক্ষা ক'বে নিজেকে বসা। অতএব আমি চুপ
ক'রে সঙ্গে সক্ষে চলতে চল্তে ভনতে লাগ্লাম মাত্র। আমার অত্যন্ত
চঃথ হয় নে কৈ চহৎকার উক্তিন কেন্দ্রিক লা বি এখন হলে নহ , বিদি
না প্রান্ধ করতে পালেন্দ্র ন ন ই ন্বি ক্রান্ধ ন্যাত্র প্রক্ষ আত্তি ভাব ১৮বেও উক্তর্গন কলা হতো।

ানাদের বরাবর হোর কা'হন 'মানসী' প্রকার প্রকাশিত হয়েছিল, পুনাবেশ আনামাক। ব স্বোল নেই হাই আমি ব ছি।

वि . १ नक. १ क्या कात्र हात दे द्य अभ इर्मा

চাহি প্রশাসন বল পেটে বন্ধান চলাব প্রটেল নিব মব খানে পেতে
দায় কালে বন্ধান প্রান্ধান কবলা তপনা আমাদেব ট্রেন
দামাত লেবা লাছে বলেব উপর প্র বাসাধারণ সেহারে ও পোষাকেব
লোকটে স্ক হ'লে বলে থাকতে দেখে ইনের সকল গাড়ীব জানালা
থেকে মুথ বাকে পড়ল। টেন চ'লে গেল। কয়েবজন গেয়ো লোক
সেই টেলনে নেমে ছিল। তারা বাইবে বেপিয়ে যাবাব পথে সৌমামুভি
কবিকে সমাসীন দেখে তাঁর থেকে দরে অথচ তাঁর সাম্নে থম্কে দাভিয়ে
গেল। ক্রাদের একজন দেখে দেখে গন্তীব ভাবে বললে—কোই বৈস
(সন্ধান্ধানি) হৈ। দিন্দীয় বাজি বল্লে—নেই, কোই বাজা ঠোইটে।

क्षेत्रि वांकि प्रेंबरनप्रें अध्यान ना-अक्ष्म क'रत माथा माए का्रा--- निर्देश मार्थ हैं विकेत ।

আমার মনে হলো ঐ ভিনম্পনেরই অফুমান স্ত্য—তথন কবির সুখে আভিমাত্যের গান্তীর্য, রাশ্বনিক তেজ, আর সাহিক তাবের মিগ্ধতা মিলে এফ অনির্বচনীয় সৌন্দর্য সৃষ্টি করেছিল। কবির মনে তথন বে সাধিক ভাবের কি টেউ চলেছিল তার সহক্ষে তার 'গীতালি' পুস্তকের শেবের করেজ পৃষ্ঠা চিরকাল সাক্ষী হ'রে থাকবে।

পাস্থ তুবি পাছজদের সধা হে,
গথে চলাই সেই তো তোমার পাওরা।
বাত্রাপধের আনন্দর্গান বে গাহে
তারি কঠে তোমারি গান গাওবা।
ব্যথের মাঝে তোমার থেখেছি,
তুঃখে তোমার পোরেছি প্রাণ ভরে।
চারিরে তোমার গোপন রেথেছি,
পেরে আবার হারাই মিলন যোরে।

বৃদ্ধগন্ধায় একদিন তিনি সমন্ত দিন অমাত অভ্ৰক্ত থেকে ধরে দরজা দিয়ে কেবল গান লিখে লিখে ভগবানের দক্ষে মিলন অমুভব করেছিলেন। ভারও এক সৈবিচয় 'গীতালি'র পাতায় লেগে আছে।

তোমার কাছে চাইনে আমি অবসর।
আমি গান শোনাব গানের পর।
বাইরে হোধাব ছায়ের কাছে
কাজের শোক দাঁড়িয়ে আছে,
আশা ছেড়ে বাক্না কিরে
আপন ঘর।
আমি গান শোনাব গানের পর।

গরা থেকে রবিবাব এলাছাবাদ গেলেন। আমাকেও সঙ্গে থেতে হলো।
আর স্বাই শান্তিনিকেতনে কিরে গেলেন। এই যাত্রার ১৩২১ সালে
এলাছাবাদে 'বলাকা'র কাল্ল হয়। যখন তিনি ফিরে কল্কাতার এলেন তখন
আছ মাদ। তিনি আমাকৈ কল্লেন—''দেখ চাক, আস্বার সময় রেল
লাইনের ছ্থারে দেখ্লাঘ কত মূল কুটে রয়েছে। তারা স্বা বল্লের

আরাণ্ত। তাদের ওপর আমার একটা কবিতা নিপুতে ইচ্ছে কর্ছে।
কিন্তু আমাদের দেশের বুনো ফুলের তো কোন নাম নেই। জ্ঞিধানে
পণ্ডিত মহাশয়রা পুল্প বিং বলেই খালাস। তাদের পরিচয় আন্বার জ্ঞ কারো মনে যদি এতটুকু আগ্রহ খাক্ত, তা হলে মুরোপীর ফুলের মন্তন্ ভাদেরও নাম গোতা সব নির্ণয় হ'রে যেত।"

আমি বল্লাম — আপনি ওদের নামকরণ ক'রে ওদের জ্বাতকর্ম করে দিন, ওরা ঐ নামেই চিরকাল পরিচিত হবে।

কবি কবিতা লিখ্লেন, কিন্তু প্রচলিত ফুলের বেনামীতে।—

ওরে ভোষের স্বরা সহে না আর।
এখনো পাত হর্মন অবসান।
পথের ধারে আন্তান পেয়ে কার
দবাই মিলে পেয়ে উঠিদ গান।
ওরে পাগল চাপা, ওরে উন্মন্ত বকুল,
কার ভরে সব স্থুটে এলি কৌতুকে আকুল।

আমার শ্বতি থেকে লেখার সময়েব পৌর্বাপর্য দব ঘটনায় রক্ষা ক'রে বল্তে পারছি না একট সাদট উন্টাপান্টা হ'য়ে নাছে। পাজিপুথি মিলিয়ে দেখে বুনে লিখ্লে হয় তো কভকটা পৌর্বাপর্য রক্ষা হ'তে পার্ত। কিছ আমি তো ইতিহাস লিখছি না, আমি লিখ্ছি আমার মনে রবীক্সনাথের ছাব। তাই ঘটনার ওলোট পালোটে বিশেষ ক্ষতি হবে না।

একবার এক উৎসব উপলক্ষ্যে আমরা অনেকে শান্তিনিকেতনে গেছি।
কবি আমার সঙ্গাদের বললেন—"দেখো, তোমরা যেথানে থাক্বে
সেথানে চারুকে আর সতোম্রকে নিয়ে যেয়োনা। তোমরা সমস্ত রাভ
গোলমাল কর্বে, ঘূম্বে না। চারু বড ঘূমকাতুরে আর সত্যেক্তরে শরীর
ভালোনয়। তোমরা ওদের আমাকে দিয়ে দাও। আমি ওদের থাইছে
দাইয়ে শুইয়ে রাথবো।"

বন্ধরা আমাদের আশা তাাগ ক'রে তাঁদের বাসায় 6'লে গেলেন। আমরা কবির সক্ষে আহার ও আলাপ ক'রে শয়ন কর্লাম কবিরই শয়ন-কক্ষের পালের যরে, তাঁরই বিছানায় তাঁরই মশারি থাটিয়ে। অল ছ-একটা কথা বলার পর সভ্যেক্স ও আমি নীরের হ'রে গেলাম। থানিক পরে সত্যেক্স মৃহস্বরে আয়াক্সে ডাক্লেন—"চাক্স, খুমিংছছ দ" আমি বল্লাখ—না।

সত্যেক্স ধিজ্ঞানা কর্লেন—"কি ভাবছ ?"
আমি পাণ্টে প্রশ্ন কর্লাম—তুমি কি ভাব্ছ ?

দত্যেক বল্লেন—"আমি ভাব্ছি বে আমাদের কি দৌভাগ্য। আমার আমনেক মুম আস্ছে না।"

একবার ১৯২২ সালে বা ১৩২১ সালের শেষে 'প্রবাসী'র জন্ম একথানি উপন্তাস আবশুক হয়। রবিবাবুকে অমুরোধ কর্বার জন্ম আমি আর সত্যেক্ত তাঁর কাছে গেলাম। রবিবাবুকে আমাদের আবেদন জানালে তিনি আমাকে বল্লেন—"তুমি নিজে লেখ না।"

আমি বল্লাম "আমার প্রট মনে আসে না। প্রট পেলে লিখ্তে চেষ্টা ক'রে দেখ্তে পারি।"

কবিগুরু বল্লেন—তোমরা সব বড় পরে জ্লেছ। বছর কুড়ি আগে বিদি জ্মাতে ভাবলে তোমাদের আমি দেদার প্লট দিতে পার্তাম। তথন আমার মনে হতো আমি ছুহাতে প্লট বিলিয়ে হরির লুট দিতে পারি। একটা প্লট আমি নিজে লিখ্ব ব'লে ভেবে রেখে ছিলাম, সেইটেই তোমাকে দিই। ধরো একটী নিজিত মেরে এক অনিক্ষিত পরিবারের মধ্যে গিয়ে পড়ল। ভার আদর্শের সঙ্গে ওদের কি রকম বিরোধ বেধে যাবে ভাই দেখাও।

ঐ প্লটটা আমার 'স্রোতের কুল' নামক উপস্থাদের ভিত্তি।

এর পরেও আমি তাঁব কাছ থেকে প্রট পেয়েছি। একদিন সন্ধ্যাবেলা স্থারেশ বন্দ্যোপাধ্যায় আর আমি কবির সঙ্গে সাক্ষাৎ কর্বার জন্ম তাঁর জ্যোড়াসাঁকোর বাড়ীতে গিয়েছিলাম। কবি আমাকে জ্বিজ্ঞাসা কর্লেন—
"চারু কি লিথ্ছ?"

আমি তো সর্বদাই কিছু না কিছু লিখি, বেকার বসে কথনো থাকি না।
কিছু সেসব লেখা কি কবীক্স রবীক্স নাথের কাছে লেখা ব'লে গণ্য হবার
যোগা। তাই তিনি আমাকে যখনই জিজাদা করেন আমি কিছু লিখ্ছি
কি না, তখনই আমি আমার লেখার বিষয় গোপন ক'রে বলি, না আমি
কিছুই লিখ্ছি না। আমি কিছুই লিখ্ছি না শুনে তিনি বল্লেন—''দেখ,
দরখতী জীলোক, তাকে বল কর্তে হলে কেবল সাধ্যসাধনার তার মন
পাওসা বাবে না, তার উপরে মাঝে মাঝে কড়া হুমুস করাও ধরকার।

জ্ঞানো তো যে মেরেরা কড়া স্বামী ঝাল লঙ্কা আর জেনি। টক পছল করে। তুমি একটু ছকুম ক'রে দেখো, ঠিক বশ মানাতে পার্বে।"

আমি বল্লাম—একটা প্লট পেলে লিখ্তে চেষ্টা কর্তে পারি। কবি একটু উন্মনা হয়ে বল্লেন—"প্লট। আছে। ধরো-····"

তার পর যে গল্পের কাঠামো বল্লেন তাকে আমি 'চই তার' নামক উপস্থাসে রূপ দিতে চেটা করেছি। এর পরে আমার 'হেরফের' উপস্থাসের প্রট বোলপুরে পেরেছিলাম, আর 'ধোঁকাব টাটি'র প্রট তিনি আমাকে শিলং পাছাড় থেকে পত্রে লিখে পাঠিরেছিলেন, যদিও রাম্যান্তর চিত্র এঁকে আমি অনেকের বিরাগভাজন হয়েছি।

একবার মাবোৎসবের দিন আমি তাঁর জোডাসাঁকোর বাডীতে গিয়ে ছিলাম। আমি থেতেত দারোয়ান আমাকে বল্লে—"বাবৃমশায় আপনাকে দেখা কর্তে বলেছেন।"

বন্ধুরা দব সভার গেল, আমি কবির দক্ষে দেখা কর্তে তাঁর বাডীর উপর-তলায় একেবাবে পশ্চিমেব গিকেব ঘরে গেলাম। কি জন্মে আমাকে ডেম্বকছিলেন তা আমাব এখন মনে নেই, কিং সেদিন আমি আর একটি যে দুগু দেখেছি তা আমার মনে মৃক্তিত হ'রে আছে।

দারোগ্রান এদে ধবর দিল একজন ক্যোক বাব্যশায়ের সজে দেখা কর্তে চার।

কবি বল্লেন—"তাকে বলো, এখন তো আমার সময় নেই, উপাসনা আরম্ভ হবার সময় হয়ে এগেছে, আমাকে সভায় যেতে হবে।"

দাবোরান বল্লে—সেই লোকটিকে এ কথা বলা হরেছে, কিন্তু তিনি বল্ছেন তিনি বেশীক্ষণ বিলম্ব করাবেন না, তিনি কেবল মাত্র প্রণাম ক'রেই চলে বাবেন।

কবি তাঁকে আস্তে অনুমতি দিলেন।

ধিনি এলেন, দেখ্লাম, তিনি সৃদ্ধ ও অন্ধ, অপর একজন তাঁর হাত ,ধ'রে নিবে আস্ছে। তিনি এসে জিজ্ঞাসা কর্লেন—"আমি কি কবি রবীক্তনাথ ঠাকুর মহাশরের কাছে এসেছি।"

कवि वन्द्रनन-हैं।, व्याभि द्रवौद्यनाथ।"

বৃদ্ধ ভূমিষ্ঠ হ'লে প্রণাম ক'রে বল্লেন—"আমি অহা, আমার এক খেলে সম্প্রতি বিধবা হরেছে: কিন্তু বিধবা হ'লে সে কলেকদিন কালাকাটি ক'লে বর্ধ চুপ করে পেল। আমার কৌভূহল হলো আন্তে যে ভার কি হলো বে হঠাং কারা বন্ধ হ'রে গেল। তাকে ডেকে আমি জিল্লানা কর্ণাম। দে বরে—'আমি রবিবাব্র, 'নৈবেল্প' বই প'ড়ে ডা থেকে পরম সান্তনা পেরেছি, আর আমার শোক ছাথ কিছু নেই।' আমি তাকে বল্লান— 'দারুল শোক তাপ দ্র হরে যার এমন যে বই ভূমি পেরেছ, তা আমাকে প'ড়ে শোনাগু।' মেরে আমাকে সেই বই প'ড়ে প'ডে শোনালে। আমি ডা ডনে মুগ্ধ হ'রে পেছি, আর বড় সান্তনা লাভ করেছি। এই কথাটি ব'লে আপনাকে আমাদের ক্বক্তভা আনিরে যাবার জন্ম আমি কলকাতার এসেছি।

এই কথা ব'লে অন্ধ আবার ক'ব গুরুকে প্রণাম ক'রে ধীবে ধীরে চ'লে গেলেন। আমি 'নৈবেল্পে'ব ভাব জদয়ে ধারণ ক'রে কবির সঙ্গে মাঘোৎসবেৰ উপাসনায় যোগ দিতে গেলাম।

ববীক্রনাথের বিনয় ও ধৈর্য অসাধাবণ। কল্কাতার এলে তাঁর কাছে দর্শকের আনাগোনার অন্ত থাকে না। সকাল সাতটা থেকে রাত নটা-দশটা পর্যন্ত গোক আদৃতে থাকে। যার যথন অবদর ও ইচ্ছা সে তথন আসে, কিন্তু কবির যে বিশ্রাম করার অবদর পাওয়া দরকার, তাঁর যে সানাহার আবশ্যক, এ সম্বন্ধে কাকরই হ'ল থাকে না। আমাবও থাক্ত না অপরাথ খীকার ক'রে রাখি, আমাদের মনে হতো যে আমাদের যথন অবদর আছে তথন তাঁরও আছে। এক একদিন দেখেছি, লোকের পরে লোক আদৃছে কবি ঠার ব'লে আছেন, নডা নেই চডা নেই বসার ভঙ্গী পরিবর্তন করা নেই। ভূত্য এসে দ্রে দাঁভিয়ে অরণ করতে দিতে চাহছে যে আহার অপেক্ষা কর্ছে, কবি তার দিকে চোথ রাভিয়ে তাবিরে নীংবে তিরক্সার করেছেন আর সে বেচারা মুথ কাচুমাচু ক'রে পরায়ন করেছে। আমি অনেক সমর আগন্তকদের কৌশলে বিদায় ক'বে দিয়ে কবিকে উদ্ধাব করেছে।

একদিন সন্ধাবেলা আমরা গেছি, লোকের পরে লোক আস্ছেন, কেউ
নৃত্য গান শিথে নিচ্ছেন, কেউ তাঁকে দিয়ে কিছু পড়িয়ে গুন্ছেন, কেউ
নানা বাজে কথা পেড়ে বকর বকর কর্ছেন, আর কবি অপরিসাম থৈর্বের
নকে তাঁলের সকলের মন রক্ষা কর্ছেন। রাত্রি আটটা বেজে শেল, আমরা
উঠি উঠি কর্ছি, এমন সমহ এক জন্তলোক এলেন। তিনি একেই বিজ্ঞানা
কর্নেন—"আছা আপনার ফুডের ম্প্রেক্ত সকলে মত কি ? আমার তো
ক্লেন হয়"—চল্ল তাঁর অনুর্গল বক্তা। ক্লিব তাঁকে বন্ত্যন—"ক্লেন

ভোষার সংশ বৃশ্ধ চাক্ষর পরিচর নেই, ও সম্পাদক মাতৃষ, ওর সক্ষে আলাপ ক'রে রাখ্নে ভোষার ক্রুডের কিছু হিলে লাগ্ডে পারে।" সে ভল্তগোক কবির বাক্স বৃক্তে পার্লেন না। তিনি কেবল এক "ও" বলে আবার বক্তে লাগ্লেন। তাঁর বকুনি আর থামে না দেখে আমি উঠ্বার উপক্রম কর্লাম, তথন প্রায় রাত্রি দশটা। আমাকে চ'লে যেতে উন্নত দেখে কবি আমাকে বল্লেন, "চাক্র, তুমি চলে যেও না, ভোমার সঙ্গে আমার দরকার আছে, তুমি আর এক; বোগো।"

এতক্ষণে সে ভদ্রলোক উঠ্লেন। তিনি চ'লে গেলে কবি কুপিত ভাবে আমাকে বল্লেন—''চারু, তোমাকে আমি আমার বন্ধ ব'লে জানতাম, কিছু সে ভ্রম আজে আমার ঘৃচ্ল।"

আমি তো অবাক্। ভীত দৃষ্টিতে তার মুখের দিকে চাইতেই তিনি হেসে বল্লেন—''তুমি আমাকে ঐ ফুডের ভৃতেব হাতে অসহায় ফেলে রেখে চ'লে যাচ্ছিলে কোন্ আক্রেলে ?"

আমি তো এতক্ষণে হাঁফ ছেডে হেসে বাঁচ্লাম।

সেই ভদ্লোক এতকণ ফ্রেড নামকে ফ্রুড্উচ্চারণ ক'বে ক'রে আমাদের মনের মধ্যে যে হাস্ত হ্লা ক'রে তুলেছিলেন, তা এতক্লে মৃক্তি পেরে গেল।

এর পবে একদিন আমি বাত নটাব সময় তাঁব সজে দেখা কবতে গিয়ে দেখ্লাম তাঁর ঘরে তথনো অনেক লোক ব'সে বয়েছেন। আমাকে দেখে রথীবারু আমাকে বাইরে ডেকে বল্লেন—"স্বাল থেকে বাবা এই ঘরে ব'সে আছেন, তাঁর এখনো স্থানাহারও হয় নি, আপনি যদি পারেন সব লোককে বিদায় কর্তে একবাব চেষ্টা ক'রে দেখুন।"

আমি তথ্ন নিতান্ত অসভ্যের মতন ঘরের দব লোককে ডেকে ডেকে কবির অবস্থা জ্ঞাপন কর তে লাগ্লাম। রুচ হবে ব'লে বাডীর লোকেরা বে কথা বল্ভে সঙ্কোচ বোধ করেছিলেন, আমি বাইরের লোক হওয়াওে তা অনায়াদে ব'লে দকলকে বিদায় কর তে লাগলাম। দকলকে বিদায় ক'রে আমি বিদায় নিয়ে ঘর থেকে বেরিয়ে সিঁভিতে পা দিয়েছি, দেখ্লাম আর একজন ভদ্রলোক তথন সিঁভিতে উঠ্ছেন। বাত দশটা হয়েছে, তার ভাজারী ব্যবসামের বিশ্লামের অবসরে তিনি কবির সঙ্গে সাক্ষাৎ কর ডে শাস্কো। আমি তাকে সিঁভিতেই গ্রেপ্তার ক'রে কবির চরবন্ধার সংবাদ কিলাক, কিয় তার অক্তমণা উল্লেক কর তে পার্লাম না। তিনি আবাব

ভরানক বাঁচাল ও গরে; তিনি একবার কথা ফেঁদে বস্লে কোথায় যে তাঁর কমা সেমিকোলন পড়বে তা কেউ বল্তে পারে না, তাঁর কথার তো কোথাও দাঁড়ি ছেদ নেই-ই। তাঁকে নাছোড়বান্দা হ'য়ে ঘরে প্রবেশ কর্তে দেখে রখীবাব্ বেরকম হতাশ নিরুপার ভাবে আমার দিকে চাইলেন, তাতে আর আমার চ'লে যাওয়া হলো না, আমি কাবকে উদ্ধার কর্বার মন্ত আবার ঘরে ফিরে গেলাম, এবং পাঁচ মিনিট পরেই আগন্তককে স্পষ্ট ব'লে দিলাম যে রাত অনেক হয়েছে, এখন আমাদের চলে যাওয়া নিতান্ত উচিত।

রবীন্দ্রনাথের থৈর্যের পরিচয় আমি আর একদিন পেয়েছিলাম, তা
যথান্থানে বল্তে ভূলে গেছি। ২৬২১ সালে যখন 'গীতালি'র গান রচনা
চল্ছিল, তখন আমি শান্তিনিকেতনে গিয়ে কিছুদিন ছিলাম তা আঙ্গে
বলেছি। তার কিছুদিন আগে কবি হ্লয়লে নৃতন বাড়ী কিনেছেন, রেখানে
এখন শ্রীনিকেতন প্রতিষ্ঠিত আছে। একদিন কবি বল্পেন, "চলো চারু, ভোমাকে আমার নৃতন বাড়ী দেখিয়ে নিয়ে আসি।" আমরা এক বোড়ার
গাড়ীতে চ'ড়ে রওনা হলাম। বোলপুর বাজারের কাছে গিয়ে একটা
অপরিসর রান্তার মধ্যে গাড়ীর মোড় ফেরাবার দরকার হলো। কবি গাড়ীর
ভিতর খেকে চীৎকার ক'রে কোচম্যান্কে বল্তে লাগলেন—''ওরে, এখানে
মোড় ফেরাতে চেষ্টা করিসনে, করিসনে, গাড়ী উল্টে যাবে গাড়ী উল্টে

কোচমান তাঁব নিষেধ না তনে গাড়ী ঘোরাতেই লাগ্ল। কবি শাস্ত ভাবে আমাকে বল্লেন যে গাড়ী উল্টে যাবে, তুমি ভর পেরো না, গাড়ী খেকে লাফিয়ে নেমে পড়্বার চেষ্টা করো না। এই ব'লে তিনি আমার ছাতে চেপে ধর্লেন পাছে আমি তাঁব নিষেধ না মেনে লাফ দিতে যাই: দেখতে দেখতে গাড়ী সত্যিই উল্টে গেল। কিছু আমাদের কিছুমাত্র আঘাত লাগেনি। আমরা গাড়ীর খোল খেকে গর্তের ভিতর খেকে উপরে ওঠার মতন ক'রে বেরিয়ে এলাম। তার পর হেঁটে শান্তিনিকেতনে দির্লাম, দেখিন আর স্কলে যাওয়া হলো না।

জালিরান ওরালাবাগের হত্যাকাণ্ডের সংবাদ বেদিন এল, সেদিন কবির বিচলিত ভাব আর অধৈর্য দেখেছি। সমস্ত দিন অনাহার অস্নাত। রুক্ষ শুক্ক চেহারা, মূব লাল ছ'রে উঠেছে, কারো সজে কোন কথা নেই, কেবল বারান্যার একধার থেকে আরেক ধার পর্যস্ত পায়চারি কর্ছেন। কাছে কেউ যেতে সাহদ কর্ছে না, কেবল এণ্ডুন্স সাহেব একবার তাঁর কাছে গিরে কি বল্লেন, আর কবি উভেন্সিত হরে ব'লে উঠ্লেন—'ও নো নো নো!'

তার পর তাঁর লেখ্ বার টেবিলে ব'দে খদ্খদ্ করে লর্জ চেমদ্নোর্ডকে পত লিখে নিয়ে এদে এণ্ডুক্স সাহেবকে দেখ্তে দিলেন। এণ্ডুক্স সাহেব সেই চিঠি পড়ে বল্লেন বড় উগ্র হয়েছে। চিঠিটা আরো মোলায়েম করা দবকার। কবিকে অনেক সাধাসাধি ক'রে সাহেব কিছু পরিবর্তন কর্তে সম্মত করালেন। কিছু যা পরিবর্তন হলো ভাও সকলের মনে আতক্ত সঞ্চার কর্তেই লাগ্ল। কবি আর মোলায়েম কর্তে বাজী হলেন না। সেই চিঠিই বোধ হর লাট সাহেবের কাছে গিয়েছিল, এবং সমস্ত ভারতবাসীর আহত আত্মসমান রক্ষা করেছিল।

রবীক্সনাথের বয়দ পঞ্চাশ পৃতি হ'লে দত্যেন্দ্র প্রতাব করেন যে সাহিত্য-পরিষৎকে দিয়ে তাঁকে সম্বর্ধনা করাতে হবে। সহ্যেন্দ্র আর মণিলাল পরম উৎসাহ সহকারে টাকা সংগ্রহ কর্তে ও লোকমত গঠন কর্তে লেগে গেল দ আমি ববাবব তাদেব সহকারী হ'য়ে কাজ কবে অন্তর্ত্তানটিকে অসম্পন্ন ক'রে তুলেছিলাম। ভাগ্যে নোবেল প্রাইজ পাৎয়ার আগে আমরা তাঁকে দেশের সাহিত্য-পরিষৎকে নিয়ে সম্বর্ধনা করাতে পেবেছিলাম, তাই দেশের ইজ্ঞৎ রক্ষা হয়েছে, নইলে আমাদের লক্ষা রাখ্বার আরে জায়গা থাকত না।

রবীশ্রনাথের বাড়ীতে নিমন্ত্রিত হ'রে আহার করবার সৌভাগ্য আমার ক্ষেক্তবার হয়েছে। কবির দবই কবিত্বয়। আহার-স্থান সঙ্গিত করা হয়েছিল যেন এক পরীয়ান রূপে। ছটি নিমন্ত্রণ সভার বর্ণনা দেবার ক্ষীণ চেটা আমি করে:ছ আমার 'যম্নাপ্লিনের ভিথাবিশী' আর 'জ্যোড়বিজ্ঞোড়' নামক উপস্থানের মধ্যে।

রবীন্দ্রনাথ এমনি বিনশ্নী যে 'প্রবাদী'র জন্ম কোনো লেখা আমার ছাতে দিয়ে বা চিঠিতে পাঠিয়ে আমাকে বল্তেন—দেখো 'প্রবাদীতে চল্বে কি না' :

আমি বাংলা বানান সহদ্ধে অনেক চিন্তা ক'রে বানান সংশ্বার কর্বার চেটা করেছি। আমার সব চেয়ে বড় পুরস্কার যে আমি রবীক্তনাথকে আমার মতাবলম্বী কর্তে পেরেছিলাম। তিনি আমাকে বলেছিলেন যে ভোমার এক 'মতো' ছাড়া সব বানান আমি মেনে নিলাম, তবে যদি স্থনীতি চাট্জ্রেও ভোমাকে সমর্থন করেন তবে অগত্যা আমাকে সেটাও মেনে নিলিত হবে।

একবার শ্বনিজ্ঞনাথ কল্কাতা ইউনিভাগিটিতে তিনটি বক্তৃতা করেন এবং সেগুলি পরে 'বলবাদীতে প্রকাশিত হয়। তিনি এই সময় চীনদেশে মাবেন ব'লে বড় বান্ত ছিলেন। তিনি জীমান খামাপ্রসাদ মুখোপাধ্যায়কে ব'লে দিখেন যে প্রাক্ত চাক্রকে দিয়ে দেখিয়ে নিশে আমি নিশ্চিন্ত হ'রে বিদেশে গেতে পার্ব। প্রথম—প্রবন্ধের প্রফ যেদিন আমার কাছে এলো তার পর দিন কবি চীনে বাবেন। আমি রাত্রে তাড়াতাড়ি প্রক দেখে সকালেই কবিকে একবার দেখিয়ে নেব ব'লে তাঁর বাড়ীতে গেলাম। প্রফের মধ্যে 'আকৃতি শব্দটা 'আকৃতি' হয়ে থেকে গিয়েছিল, আমি সংশোধন করিনি। কবি আমাকে বল্লেন—''চারু, তোমার দেখা প্রফের এমন ভূল থেকে গেল কেমন ক'রে!

এই তিরস্কারও আমাব কাছে পরম পুরস্কার ব'লে মনে হলো।

চীন খেকে যেদিন কিরে এলেন, সেদিন আমিও ষ্টিমার-ঘাটে তাঁকে অভ্যর্থনা কর্তে গিয়েছিলাম। আমি তথন কঠিন পীড়াগ্রস্ত, একরকম চলচ্ছেক্টিহীন। কবিগুক্ন ডাঙার নেমেই আমাকে দেখে সম্নেহে আমার পিঠে হাত রেথে আমাকে বল্লেন—"চাক্ন, তোমার একি দশা হয়েছে! প্রতিপচ্চক্র্মা ইব।" সেই মেহ-ম্পর্ণ আজ্পু আমার অক্সের ভূষণ হ'য়ে রয়েছে।

তথন 'প্রবী'তে প্রকাশিত ক্বিতা লেখার পালা চলেছে। আমাকে কবি পত্র নিথে জানালেন—"চাক্ল, করেকটা কবিতা লেখা হয়েছে, থদ্দের জনেক, আনে তোমাকে প'ড়ে শোনাতে চাই, দেখে বেতে পাবো যদি কোনোটা তোমাদের 'প্রবাসী'তে চলে।" আমি তাঁর কাছে গেলাম। তিনি আমাকে প'ড়ে শোনালেন অনেকগুলি কবিতা। আমি বঙ্গাম— এ যে দেখি আপনার আবার 'মানসী' 'সোনার তরী'র যুগ ফিরে এসেছে!

কৰি হেদে বল্লেন—"তবে যে তোমরা বলো আমি আর কবিতা লিখতে পারি না। তবে ভালো হয়েছে বলে তুমি বেশী লোভ কোরো না, একটা—বোণা একটা—বেছে নাও।"

আমি ছাট কবিতা বেছে তাঁকে বল্গাম—এই ছাটর মধ্যে কোন্ট আমি নেবো, তা আর আমি থিবু কর্তে পারছি না, আগনিই দিন বেটা ২য়।

কৰি ছেলে বল্লেন---- কুনি ভানি চালাক, হুটো নেবারই ফলি। তবে ঐ চটোই নাও।" যখন আজি কবির কবিতা থেকে চয়নিকা প্রথম প্রকাশ করি, তখন কবির সঙ্গে বহু কবিতার অন্তনিহিত অর্থ সহয়ে আমার আলোচনা হয়। পরেও চাকায় শিক্ষকতা করার উপলক্ষ্যে অনেক কবিতার মর্গ আমি তাঁয় কাছ থেকে জেনে নেবার ক্যোগ ও সৌভাগা লাভ করেছি।

দেই সময় আমি তাঁর সমস্ত গানেরও একটা সংগ্রহ প্রকাশ করি আমি তথন তাঁকে অনুরোধ ক'রে ক'রে বন্ত গান তাঁর কাছ থেকে শুনেছি। প্রেমের গানও বাদ দিই নি আমি তাঁকে যেদিন "বিধি ভাগর আঁমি যদি দিয়েছিল, দেকি আমারই পানে ভূলে চাইবে না" গানটা গেরে শোনাতে অনুরোধ কর্লাম, সেদিন আমাকে তিনি বল্লেন—"চাক, তুমি আমার মান মর্যাদা আর কিছু রাখ্লে না। তবে দরজা দাও, তোমার কাছে তো থেলো হয়েইছি, আর অপরের কাছে আমাকে থেলো কোরো না।"

কবি যথন কল্কাতার 'ফাস্কুনী' নাটকের অভিনয় করেন, তথন তাঁর ছকুমে আমার মতন মুখচোরা অক্সক্তের রঙ্গমঞ্চে নাম্তে হয়েছিল। শেষ দৃশ্রে যথন কবি-বাউল সকলের সঙ্গে মিলে বসন্তের বন্দনা গান কর্ছিলেন তথন আমি তাঁকে দেখার প্রলোভন ত্যাগ কর্তে না পেরে পকেট থেকে আমার চলমা বার ক'রে চোখে লাগিয়ে দিয়েছিলাম। কবি নাচ্তে নাচ্তে আমাব কাছে এসেই দিলেন এক ধমক—চশমা খুলে কেল বল্ছি!

ঢাকা ইউনিভারদিটিতে একজন বাংলার উপাধ্যার চাই জেনে আমি সেই পদের জন্ম প্রার্থী হবো স্থির ক'রে রবীন্দ্রনাথের স্থপারিশ পাবার জন্ম তাঁকে শান্তিনিকেতনে পত্র লিখ্লাম। তিনি তথন কল্কাতার এপেছেন, আমি পী'ড়ত ছিলাম ব'লে থবর পাই নি। ছদিন পরে থবর পেরে তাঁর দঙ্গে দেখা কর্তে গেলাম। আমি তাঁকে আমার আবশুক নিবেদন কর্লে তিনি বল্লেন—"দেখো দেখি তোমার কাণ্ড, তোমার কি সব অসামিরক, যদিও তুমি সামিরিক পত্রিকার সম্পাদক? এতদিন তুমি কি কর্ছিলে? আছই সকালে আমি একজনকে ঐ কাজের উপযুক্ত ব'লে প্রশংসাপত্র লিথে দিয়েছি, এখন আমি ভোমাকে কি ব'লে স্থপারিশ করি বলো ভোঁ। তুমি আমাকে কী মুক্তিলেই যে ফেল্লে ভার আর ঠিকানা নেই।"

আমি বন্গাম—আপনি আমাকেও একটা বা হর লিখে দিন। তার পর আমার তাপনা আর আপনার প্রশংসা আর অপর প্রার্থীর গুণপ্রা ও আপনার প্রশংসা বাচাই হ'বে নার ভাগো হর কর কুটে যাবে। কবি চিন্তিত হ যে গন্তীর হবেন। আমি বৃঝ্লাম যে আমার অনুরোধ তাঁকে বিপন্ন করেছে। তথন আমি প্রশংসাপত্ত বিনাই বিদায় নেবো ভাব ছি, এমন সময় আমার প্রতিহল্পী ভদ্রলোক সেথানে এসে উপস্থিত হলেন। আমার যাও ক্ষীণ আশা ছিল, তাও আব রইল না, আমার স্থির ধারণা হলে। যে আব আমাব কোনো প্রশংসাপত্ত পাওয়াব পথ থোলা রইল না।

কবি তৎক্ষণাৎ উঠে পড্লেন এবং ঘর থেকে যেতে যেতে ব'লে গেলেন—"চারু, ভোমবা বোসো, আমাব এক জায়গায় নিমন্ত্রণ আছে, আমাকে কাপ্ত বদলে এখনি বেরতে হবে "

অপ্লেশণ পবেই কবি কাপড বদলে আলখালা প'রে ফিরে এলেন। সিঁডি দিয়ে নীচে নামতে নামতে আমাব সঙ্গে চোখোচোখি হওয়াতে তিনি চোখেব ইসাবায় আমাকে তাঁব অনুসবণ ক'বে েতে বললেন। আমি উঠে বেবিয়ে পডলাম. এবং কবিব সঙ্গে মোটবে চ'ডে বছনা হলাম—কোখায় হু তথনো ছানি না। গোটব জোডাসাকো শেকে নিক্সান্ত হ'থে গেড তিনি লোগানকে আছো কললেন মোটব বিশ্বভাবতাব আহিস্ক তিলে বহু শালা বি প্লান্ত তা বিশ্বভাবতাব আহিস্ক তিলে বহু শালাম সংগ্ৰুত প্লান্ত ছিল। স্থান বাবে প্ৰশাসা কব্লেন বা লোগান স্থানত লোগাহ ছিল। সেই পত আমাব হাতে দিয়ে জিল্পা। কব্লেন নাপ্লেখে তো, হবে লে

আমাৰ মন আৰু কৰন কৰি হ'ল বিষ্টিল দে আৰু কথা বনতে পাৰ্লাম না তথন কৰি আমাকে বলুনে— "দেগ চাব, ডোমার জাতা আজা যা কৰলাম তা আনাৱ কৰি কিউ কৈনো শামীয়েৰ জাতে ক্রেডাম না"

কবীন্দ্র সই পশ সার ভোগেবই ঢাকায় শানাব চাকুবী হ'রে গেল কবি-মান্ত্রীবই পরিচয় বিশৃত হ'য়ে পঙ্ল। কবি-মান্তেব পরিচয় দেবার আর স্থান নেই। শুগু তাঁব ক'বমনেব কয়েকটী লক্ষণের উল্লেখ ক'বেই আমার প্রসঙ্গ সমাপ্ত কব্ব।

রবিব উদরে যেমন ইবিখবাসী নবচেত্রনা লাভ করে, আমাদের ববিব উদয়েও তেমনি আমাদের দেশের এক অপূর্ব চেত্রনা লাভ করেছে। ডিনি মরোন্তম, তিনি আমাদের দেশের তথা বিখেব শ্রেষ্ঠ মানবের প্রতিভূ তিনি সত্য শিব স্থন্ধরের উপাসক কবি। তিনি বাজি-দ্বাবনে ও স্থাতি-দ্বাবনে ক্ষতা থেকে মৃক্ত ছওয়ার বাণী গুনিয়েছেন। গ্রার জীবনদেবতা গ্রাকে ক্রমাণত "শভ্য" বাজিয়ে "আবার আহ্বান" করেছেন-—আগে চল আগে চল! তিনি স্থান্ধ ভ্রনকে ভালোবেদেছেন, মৃত্যু পর্যস্ত তাঁর কাছে শ্রাম সমান—মৃত্যু

> দে যে মাতৃপাণি গুন ২০৬ গুনান্তৰে কইচেচ্ছ টানি।

ইং পরকালকে ফলর আনন্দময় ব'লে যিনি আমাদের আখাদ দিয়ে অভয় দিয়ে কেবল মাত্র সভার পথে চল্তে বলেছেন বন্ধন থেকে মৃক্তিতে, মৃত্যু থেকে অমৃতে, তার আশীবাদ আমাদের ব্যক্তিগত জীবনে ও জাতীয় জীবনে সত্যু হোক্।

শ্বরং রবীজ্ঞনাথের দ্বারা বিশ্লেষিত বলাকার দ্ইটি কবিতা

রবান্দ্রনীথ দদিও তাঁহার নিজের কাবা বৈশ্যেণ ও সমালোচমায় ছানিচছা প্রকাশ করিয়া তাঁহার যৌবনে একবার দিখিয়াছিলেন—

পরত ম স্থা। বলৈ

াক বল্টে মার সেটে জানি।

বাবে ব জানায় ট নাবে ধবে

বাজ বা লাশের এ বাজধানী
প্রমাপ্ত কিছে

চারাই আমায় কানবে বৌধ

চানক গোমায় কানবে বৌধ

কান ক গোমা বনেক পাতক

সে মগাপাপ কবর মোচন।

আমায় ব্যত কর্তে হবে

কামার বেলা সনাকোচন।

কিন্তু পরজন্মের জন্ম কবিকে আর প্রপেকা করিতে হয় নাই ৷ জাবিতকালেই তিনি তাঁহার স্বরচিত বছ গ্রমণ্ডের সমালোচন ও ব্যাধা-বিশ্লেষণ কবিয়া গিরাছেন। নাঁচে বশাকার 'শৃত্য' 'শাজাহান' নামক বিখ্যাত 'ক্ষিডাই ছটির বিশ্লেষণ কবি ষেভাবে করিয়া পাঠাইরাছিলেন তাহা মৃত্তিত হইগ। কবিতা ছটির বিশ্লেষণ দীর্ঘ নর। কিন্তু স্বল্প-পরিসরের মধ্যে কবিতা ছটির ভাব স্থারিব্যক্ত ইইরাছে।

শঞ্ছা—বলাকার শন্ধ বিধাতার আছবান শন্ধ। এতেই বৃদ্ধের নিমন্ত্রণ বোষণা কর্তে হয়—অকল্যাণের সঙ্গে, পাপের সঙ্গে, 'অক্তান্থের সঙ্গে। সময় এলে উদাসীন ভাবে এ শন্ধকে মাটিতে পড়ে থাক্তে দিতে নেই। হঃখ-বীকারের ছকুম বহন কর্তে হবে, প্রচার করতে হবে।

শাক্তাহান—শাজাহানকে যদি মানবাত্মার বৃহৎ ভূমিকার যথ্যে দেখা বাষ, ভাহদে দেখ্তে পাই সমাটের সিংহাসনটুকুতে তাঁর আন্ধপ্রকাশের পরিধি নিঃশেষ হয় না—ওর মধ্যে তাঁকে কুলায় না বলেই এত বড়ো সীমাকেও ভেকে তাঁর চলে বেতে হয়—পৃথিবীতে এমন বিবাট কিছুই নেই যার মধ্যে চিরকাদের মতো তাঁকে ধরে রাখ্লে তাঁকে ধর্ব করা হয় না। আত্মাকে মৃত্যু নিরে চলে কেবলি সীমা ভেকে ভেকে। ভাক্ষহলের সঙ্গে লাজাহানের যে সম্বন্ধ সে কথনই চিরকালের নয়—তাঁর সামাজ্যের সম্বন্ধও সেই রকম। সে সম্বন্ধ জীর্ণ পত্রের মতো থসে পড়েছে—ভাতে চিরসত্যরূপী শাজহানের লেশমাত্র কভি হয়ন।

তাজমহলের শেষ ছটি লাইনের সর্বনাম "আমি" ও "সে"—যে চলে বার দেই হ'ল্ছে 'দে', তার স্থৃতি বন্ধন নেই,—আর যে-অহং কাঁদচে, সেই তো ভার বওরা পদার্থ। এখানে আমি বল্তে কবি নয়—''আমি—আমার ক'রে ষেটা কাল্লাটি করে সেই সাধারণ পদার্থটা। আমার বিরহ, আমার স্থৃতি, আমার তাজমহল যে মাহ্যুটা বলে, তারই প্রতীক ঐ গোরস্থানে—আর মৃক্ত হরেছে যে, দে লোক-লোকান্তরের যাত্রী—তাকে কোনো একখানে ধরে না,—না তাজমহলে, না ভারত সাম্রাজ্যে, না শাজাহান নামরূপধারী বিশেষ ইতিহাসের কণকাণীৰ অন্তিতে।

নিদর্শনী

| অক্লয়কুমার মৈত্রে | য় ৪ • ≰ | অসিতকুমার হালদার | 826 |
|--------------------------------|---------------------------|-----------------------------|---------------------|
| | २७, २२६-२२ १, २२४, | ष्ट्रा | ২৮৮ |
| 10.1 | ૭ ૯૨ | আইন্স্টাইন্ | २१२ |
| অজিতকুমার চক্র | বৰ্ত্তী ২৩৫, ৩৪০, | আকাশ-সিন্ধ্-মাঝে এক ঠ | াই ৬৩-৬৪ |
| March March | 8∘a, 8×5 | আগমন ১৪, ৭৮-৭৯, ১২৬ |), २७०, ७२३ |
| অভিতকুমার চত্র | | আগমনী ২৩ | is, २७৮-२७ ৯ |
| | বৈতা সম্পর্কে 🔹 | আৰু এই দিনের শেষে | २५२-२५७ |
| অতিথি | 75-28 | আ ত্ত প্রভাতের আকাশী | এই |
| আতী ত | e • - e > | | 245-240 |
| অথ র্ববেদ | 5¢, 8¢ | আজ মনে হয় সকলেরি য | |
| অথববেদ 'অধিভারতী | 86- | আজি ঝড়েব রাতে তো | |
| অ।বভারতা অন ন্ত জীবন | ৩৭২ | অভিসারে | 200 |
| , | ७५, ३५२, ७२৮ | আত্মবিক্রয় | _ 68° 20° |
| অনন্ত প্ৰেম | @@, 277, 378 | অঁাধার আসিতে র জ নীব | मील ७७ |
| অনন্ত-মরণ | स्य, ७१८ ४७-৮८ | আনাতোল জাস্ | ₹8¢ |
| গ্ৰাবশুক | • | <u> আবর্তন</u> | ৪৮, ৩১৭ |
| অ স্থামী | 00b, 088, 095 | আবহল ওহদ | २५, २७६ |
| অ স্থহিতা | ৭৯, ২৬০ | আবহুল ওহুদ | |
| অপমান_ | >> €<-8< | উদ্বোধন কবিতা সন্ | পর্কে 🕻 |
| অপমানিত | ৩২% | আবার আহ্বান | ২৩৯, ২৪৭ |
| অপব্ল প | 8२ | আবার এসেছে আষাঢ় | |
| অপূর্ব রামায়ণ | ೨• | (গান) | 28 |
| অ প্রমন্ত | ೨೨೨ | আাবভাব | 29-36, 93 |
| অবসান | २ <i>७</i> ५, २ ७२ | | |
| অবাশ্বিত | ৩১৭ | Adhem) | રહ |
| অবিনয় | ২ ৭ ৯ | ,,,,,, | ৬৪, ৬৮ |
| অভয় | ३ ६ , ७७९ | | |
| অভ্ৰ-আবীর | >42 | 211114 -1 11 2.2.1 | ছ ভার সকল |
| অরবিন্দ ঘোৰ | २७। | অল্ ছার | 259 |
| অন্নপ রতন | 25. | > আমার চিত্ত তোমার বি | নত্য হবে ১১৮ |
| ष्यक नाम न | াইন (Auld Lang | व्यागात धर्म १५ | 92, 252, 254 |
| Syne) | ২৩ | ৪ আমার ধর্ম প্রবন্ধে ধে | য়ার আগমন |
| फारभव | २६५, २६ | ণ ক্বিতার মর্মক্থা | 90 |

| | - 6 | উদ্ভান্ত প্ৰেম | 8०२ |
|------------------------------------|----------------|---|------------------|
| জামার নয়ন ভ্লানো এলে ১০৩-১ | • 0 | | ર-હ, ૭૨૨ |
| আমার মনের জানালাট আজ | • | উপনিষ ং | ૭, કર |
|) 9 0 -) | 44 | উপহার | 29¢ |
| আমার মাঝে তোমার লীলা হবে | | | 82, 292 |
| | > 9 | | (95, 228 |
| আমার মাথা নত ক'রে দাও হে | 6.2 | * • | 295 |
| আমার মিলন লাগি' তুমি আস্ছ | | ঋতু-রক্ষ | נה, יי נה, יי |
| কোথা থেকে | • 9 | ঋতু-সংহার ৮ ঋতু-সংহাব | , , , , , , |
| আমি চঞ্চল হে | 89 | স্তু-সংখ্য ও ক্ষণিকার সেকাল | ۶ |
| আমি যে বেসেছি ভালো এই | | | N |
| জগতেরে ১৮৯-১ | | এ, ই. (জর্জ রাসেল্) ও নবীনতার জ্বয়গান | \ \ \ |
| আবার এরা বিরেছে মোর মন | 9 0 | | |
| আর্নভঃ, সার এডুইন্ ও তাজ- | | এই দেহটির ভেলা নিয়ে | |
| | 696 | এই মোর সাধ যেন এ জীবন | |
| जार्न, अन् | 98 | मात्व | 775 |
| আলোকে আসিয়া এরা লীলা করে | ſ | একলা আমি বাহির হলেম ৫ | |
| राम् ७२ | - 50 | অভিসারে | 220 |
| · · | 989 | একটি আষাঢ়ে গর | ७∙ 8 |
| জাশ্রমবিক্যালয়ের স্চনা | २७ | একাকিনী | २৮१ |
| আৰাচ | >8 | এটারনাল চাইল্ড্(দি) | ⊘ 8 |
| আ্যাড়-সন্ধ্যা খনিয়ে এলো | २ २ | এণ্ডাইমিঅন (Endymio | |
| जास्त्रां ३, २८१- | ૨ ৫২ | এ ন্ভাণ্ট ্মেরিনার | 5.0 |
| | > % ¢ | এবার নীরব করে দাও হে | |
| हेन् आन्वाम, नि | 9 5 | म्थत कविदत | 20% |
| हन् कान्यान, स हन्हें, ⊌ात | & 9 | এবার ফিরাও মোরে | ৬১, ২৪৭, |
| रन् <i>णू जान</i> इन्मिका स्मरी | >00 | | ৩৪৪, ৩৫৮ |
| •• | æ 9 | এৰ্ট্ ভল্গাৰ | 506 |
| ইম্মরট্যাল্ ম্যান্ | รล | ववांत्र (य के वन मर्वतिन (| |
| ই নে ট্ন্ | | এমাপ্ন্ | e9, 550 |
| क्रेस्माशनिषर २৮, ३००, | २०२, | এমিয়েল্স্ জার্নাল | 389 |
| 92), | 585 | এ নেমারি (A Memory |) 8. |
| ঈশ্বর গুপ্ত | २५६ | এস হে এস সঞ্জ খন বাদৰ | |
| উজ্জীবন ২৮০ | -243 | বরিষণে | 2 04 |
| उद्मर्ग ১७, ८১, ८२, ८४, ८७ | . co. | এদে অন্ ওভার্দোল | 49 |
| 42, 44, 43, 4a, 43, 45 | | आब हैं जाहेक् हैंहें | ७२ |
| 508, 509, 288, 500, | | এগড়োনিদ | ৩১, ৩৯ |
| 2-0, 2-1, 200, 000, | ઝર૧ | धावातकभ्वि, गारमम् | >8% |
| | | - Attion fine many | |

| ওড্অন্এ গ্রীসিয়ান্ খ | गर्न २८७ | কৰ্ম | . ৩১৭ |
|------------------------------|--------------------|--------------------|-------------------------------|
| ७७ अन् नि हेन्टिस्मान | ৰ্ অব্ | কর্ফল | २१२, ७৮३ |
| ইম্মটালিটি | . 98 | করুণা | <i>৩</i> ৩) |
| ওড্টু এ নাইটিখেল | 28 | কল্প ৪ | १२, ४३, ४२, २४४, २५७ |
| ७७ हे अस्त्रम्हे डेहेख | ১8७, ২8 € | | २७€, ७२১, ७२२ |
| ভুমর বৈশ্বাম | ৬ | কল্যানী | >₽- ₹ • |
| ওমর থৈয়াম ও রবীশ্রন | াথ তুলনা ২ | কাউপার | b), ७७८ |
| ওয়ার্ড দ্ওয়ার্থ | | কাঙালিনী | ' ೨ १० |
| ওয়ার্ডস্ওয়ার্থ ও রবীক্র | গথৈর কল্পনা- | কাণ্ট্ | २ ९२ |
| | ७৫, ७०, २२४ | | , २२, २१, २३৮, २३३ |
| ९ १३ त्मृ, ७३ ह्. चि. | G o C | কালীপ্রসন্ন ক | |
| ভরে তোদের ত্বর সহে | না আর | কালের যাত্রা | ₹2₽- ೨ ०० |
| | o P <- G& C | কাল্পনিক ও | |
| কন্ধাল | २७५, २७४, ७৮८ | কাহিনী | 85, 60, 65,000 |
| | १२१, २৮१, ७२२, | কিপ্লিং | रь |
| | 983 | কিশোর প্রে | _ |
| কণিকা ২, ৪১ | , ७०, ३88, ८১१ | কীট্স্ |) 8, 88,) 6¢, 286, 289 |
| কত অজানারে জানাই | ইলেভুমি ১•২ | কুইন্ ম্যাব্ | @ ? |
| কত কি যে আসে ক | ত কি বে | কুইলার কো | চ্, সাৰ্ আৰ্থার ১৪৬ |
| য ায় | ao, 62-15 | কুমারসম্ভব্য | |
| কত লক্ষ বয়ষের তপ | | | ও ক্ষণিকার সেকাল ১ |
| | 245-240 | *ুড়ি | 8 %-89 |
| কথা | 87, ८०, ७२७ | কুয়ার ধারে | b o |
| কথা কও কথা কও | | কুত্ত | २७५, २৫१-२८४ |
| কথা ছিল একা তরী | তে কেবল ভূমি | কু প ণ | 49, ۶۶ |
| <u> তামি</u> | >>> | কেন মধুর | ८ ℃-೨℃ |
| কণ্টেন্ট ্মেন্ট ্ | ৮৮ | | ম্থের পানে চাহিয়া ৬ ৫ |
| কর্পুরমঞ্জরী | ř | কেম্পিস, ট | |
| কবিকণ্ঠহার | ទ២ | কোকিল | 45 |
| কবিকথা | s>, % | ুকান আড়ে | নাতে প্রাণের প্রদীপ ১০৯ |
| কবিকাহিনী | ৩১৮, ৩৫১ | কোল্রিজ | |
| কবি-চরিত | ৩১ | | |
| কবির দীকা | दह | ্ৰিট্ মা স্ | ४७ २-२ २७२, २१२, ७२२, ७२६, |
| কৰিতিকা | 2 9 | সংখ্যা প | .022, 803 |
| কবীর ৫৩, | १७, ७२, ३३७, ३8 | a ক্লিডিমোর | , ' |
| • | 225 226 24 | وريدع والمدا أور | 124 |
| কবে আমি বাছির | इटलम 💛 🧦 | • থাপাড্দে | |

| 0 | |
|---|--|
| খেলা ২৩২ | চয়নিকা ৪৮ |
| বেশা ১৪, ৭১-৭৩, ৮২, ১২৩, ১৩°, | চাই গো আমি তোমারে চাই ১১১ |
| >86, 565, 500, 500, 050, | চিঠি ৩১, ৬৮-৭৽, ১০৭, ২৫৪ |
| ७५१, ७२५, ७२७, ७७१ | চিত্রা ৬৪, ২৬১, ৩০৮, ৩২৭ |
| খোকাবাব্র প্রত্যাবর্ডন ৩১৭ | চিত্ৰাঞ্চদা ৩৩৩ |
| গুৰুত্ব পুরাণ ২২৪ | চিস্তামণি খোষ ৪০৯ |
| গান দিয়ে বে তোমার ধুজি ১১৭ | চির আমি ^{২২৯} |
| গান্ধারীর আবেদন ৩২৫, ৩৯৬. ৩৯৯ | [विश्व कूमा प्रणा |
| श्राक्ती, महाया >२४, २८१, ४०) | רדו אסן |
| গিরিশ ঘোষ ৩৯৪ | [চরস্তান |
| পীত্বিতান ^{২৫} | 6041 |
| গী ভাঞ্ লি ৫৬, ৭১, ৭২, ৯৫, ৯৮- | চৈতন্তচরিতামৃত ২২, ১১১, ১১৬, ৩৩৩, ৩৩৪ |
| 300, 320, 306, 28b, 909, | |
| ૭১৬, ૭૨૨, ૭૨૭, ૭૨୫, ૭૨৬, | (१७७४ ८५४ |
| ৩২৮, ৩৩২, ৩৩৩, ৩৩৬, ৩৭৫, | हिजां २६, ৮७, २२४, २४२, ७२१ ७७२, ७७२, ७७७, ७८७, ४०७ |
| ৩৮৩, ৩৮৬, ৩৯২, ৪১৩ | |
| গীতাঞ্বলি— | |
| ২৪, ২৫, ২৬, নম্বর গান ১০৫ | ছবি ৩০, ১৫২, ২৫৭, ৩৮০ |
| গীতাঞ্জনির বৈষ্ণবভাব ^{১২০} | ছবি ও গাৰ ১৫২-১৫৬, ২৮৪, ২৮৭ |
| নীতানি ৭ ১, ৭২, ১০ <i>৫,</i> ১৩২-১৩৫, | ছল |
| २७२, २৮৮, ७२८, ७२८, ७७२, ७৮२, | ছিন্নপত্র ৩৭, ৭৭, ৭৮, ৯০, ১৩১, |
| ত্রুচন, তচ্ছ, ৩৯২, ৩৯৩, ৪১৪, ৪১৬ | ५८१, ५७७ १ |
| शिक्तिमाना १२, १२, १२, ४८, २२, | ছেলে-ভুগানো ছডা ৩৪ |
| ५०६, ५२७, ५७०, ५७४, २८६, २६३, | ত্ত গৎ জুডে উদার স্থরে ১০৪ |
| ২ ৮৮, ৩২৭, ৩৩২, ৩৮৭, ৩৮৮ | জগতে আনন্দ-যজ্ঞে আমার |
| अक्रमान वरम्यानीशांत्र १३६, १३१, | নিময়ণ >০৮ |
| ৩ ৯৮ | জুগদীশচন্দ্র বস্ত্র ৭২ |
| <i>र</i> श्चार े | জ্ঞান গণ মৰ অধিনায়ক জায় হে ১২৮ |
| ^শ ও উৎসর্গের স্থান্ত ৪৮ | ক্রন্য ও মবণ |
| <i>त्नार्</i> षे) ३५, ३७८, ६०३ | ক্রমাক্রথা ৩৫ |
| সোরা ৩৬, ৩৬৩, ৪১২ | च्याचित्र रेक्ष |
| খনরাম দাস | |
| 5441 24.************************************ | 3 4414 4141 11414 388, 434 |
| ট্ডাৰিকা 🔻 🛪 ১৪, ৩৯ | 2 addited stars |
| চতুরজ ২৭ | a ditablicant it a. |
| চশ্রদেশৰ মুখোপাধ্যার 🔭 | ২ জীব গোখানী |

| | _ |
|---|-------------------------------|
| জীবন-দেবতা ৪১, ৬০, ৬১, ৬৪, | তুমি কেমন করে গান করো জে |
| १ ७ २, २७७, २७ ८, २७२, २४०, | ুগুলী ১০৫ |
| २8 ৮, २৫১, ₹৫ ৬, २ ৫৭, २৬∘, | তুমি নব নব রূপে এগ প্রাণে ১০৩ |
| ৩১৯, ৩৩৭, ৩৫৮, ৩৭৬, ৩৭৭ | তৃতীয়া ২৩১, ২৬১ |
| कौ रन-मशाङ् २৮৮ | তোমায় খোঁজা শেষ হবে না |
| জীবন-শ্বৃতি ৯৭, ২৮৭, ৩১৫, ৩২৮, | মোব ১১৮ |
| 290 | তোমায় চিনি ব'লে আমি কবেছি |
| জীবনে যত পূজা হলোনা সাবা ১১৯ | গরব ৬৬৬৭ |
| জোড-বিজোড ৪২৭ | তোমার প্রেম যে বইতে পারি এমন |
| জ্ঞানদাস বঘৌলী ৬৯,১০৮,২৫৪ | সাধ্য নাই ১১০ |
| জ্যোৎস্মা-রাত্তে ৩ ২৭ | তোমার বীণার কত তার আছে |
| यून्न ७)२ | 98-96 |
| টমসন্ | তোমারে কি বারবার করেছিত্ব |
| রবী ন্দ্রনাথের স্ব দেশপ্রেম | অপমান ১৮০-১৮১ |
| সম্পর্কে '৬৭ | ত্যাগ ৭৭-৭৮, ২৫৯ |
| ট্ম্সন ফুাান্সিস্ ৩৪ | থেইদ্ ২৪৫ |
| हिनक (त्नाक्यांच) २२৮, ४०) | পিট্রনার্য ৮৩ |
| ট উইলিয়াম শেলী ৪০ | थि किमार्न २२० |
| ট্-নাইট ২৬৩ | দাও হে আমার ভয় ভেঙে দাও ১০৬ |
| টেনিস্ন ৩৫, ৪ ০, ৪৫, ৮১, ৮৮, | मा म् ৮२, ७ ०२ |
| ` ১৬৫, ২২৭, ৩৩৪ | नाम् |
| ডাকঘর ১২০-১২৯ | ও উৎদর্গের আবর্তন ৪৯ |
| ডারণর ৮৮ | षान ७৮, १२-५०, ১८४, २৫२ |
| ডি প্রোফাণ্ডিস্ ৩৫ | দাশু রার ১৬ |
| ডে জি এয়াণ্ড পপি | क्षि ७ २ १ |
| ডেভিডের গীতি ৩৩৩ | मिन- ८ শव ৮৫ |
| ডেমন্ অব্দি ওয়ারলড্, দি ৫১ | मीका २ ५, ७ २8 |
| তপোত্তক ২৩১, ২৩১, ২৩৮, ২৩৮ | मीपि ৮४ |
| তপোমৃতি ৫৭ | দীনবন্ধু মিুত্র ৩৯৪ |
| তাই তোমার আনন্দ আমার 'পব ১১৬ | দীনের সঙ্গী ৩২৬ |
| তাজমহল ১৪০, ১৫৬ | व्हे छिन्मा >8२ |
| তাদের দেশ ৭, ৩০৪-৪০৬ | छ्हे नात्री २०, ३३७-२०७ |
| ভিলোরমাগন্তব কাব্য ৫৯ | इहे शाबी 38 |
| তীর্থস্ লিল ৩৪৭ | ত্ই বিখা জমি ৩১৭ |
| ভূমি ২৯৫ | ত্রারে তোদার ভিড় ক'রে বায়া |
| ভূমি এবার আমার লহ হে নাথ | व्याट्ड ७८ |
| द०८-५७८ इत् | वृत्रस आभा ७३८, ७४८, ७४१ |

| 864 | | - | |
|---|---------------------|---|--|
| সংখ্যাতি ২০ চার | ৩২৩ | नामी | २৮२ |
| লু:ধ্যুতি ও দান | ৩২১ | নিউ ইয়াস ঈভ্ | 8 • |
| ত্ঃসময় দূর হ'তে কি ত নিস্মৃত্যুর | গৰ্জ ন | নিও প্লেটনিক্ ভক্ৰী | |
| भूब १८७ । स जासर् १४० | >99-59 6 | ও উৎসর্গের 🕏 | |
| দেবতা জেনে দূরে রই দাঁড় | | নিঝ রের স্বপ্নভ দ | ७६२, ७६२ |
| দেবভার গ্রাস | ৩১৭ | নিত্য তোমার পা | ब्रद्र कोष्ट् २)>-२)२ |
| দেবতাব বিদায় | ৮৩ | নিৰ্ভয় | ১৮০, ৩১৮ |
| দেবেক্সনাথ ঠাকুর, মহর্ষি | २७, २७ | নিক্লদেশ-যাতা | ৩১৬, ৩৪৩ |
| দোসর | २७८, २८१ | নিষ্কৃতি | >> 0 |
| দ্বিজেন্দ্রলাল রায় | | নিজ্ঞাণ | 85, 56 , 585 |
| ও তাজমহলের প্রশবি | 69¢ į | নিক্ল কামনা | 285, 55F |
| ধনে জনে আছি জড়ায়ে হ | | নৃতন বসন | ۶۹ <i>۲</i> |
| ช ม์ | दर १ , ७ , | নৈবেগ্য ১১-২ | ર, રશ, લગ, ૧૨, - > ૧૦૦ - ૨૦૦ - ૨૦૦૦ |
| ধর্ম-প্রচার | ૭ ૨৬ | יפננ 'נפנ 'פננ 'נפנ | 200, 286, 266, 200, 208, 209, |
| धुना-मन्तिव | ৩ ২৬ | , oct, | ৩৭৯, ৪১২, ৪২৪ |
| ধোকার টাটি | ह ३ ७ | নৈষ্টিক ব্রহ্মচারী | 8 • 9 |
| थ्यान | ೨೨೨ | নোবেল পুরকার | 200 |
| নগেন্দ্রনাথ গঙ্গোপাধ্যায় | 200, 876 | ন্তায়দ ও | २१, ७२8 |
| নটরাজ—ঋতুরঙ্গালা | くると | পউষের পাতা-ঝ | া তপোবনে ১৬৯ |
| ন টার পূজা ^{২ং} | ৬৭-১৭০, ৩৮৩ | প্ঞভূত ২৩, | ৩০, ৩৬, ২৮৪, ৩০৭, |
| नहीं | ೨ ∵• | • | ৩১৩, ৬৭৪, ৩৯ ০ |
| নন্দলাল বস্থ | वर ह | পট অব বেদিল্, | |
| নববৰ্ষ | :43 | পণব ক্ষা | 922 |
| নবৰ্ষা | >8-> € | পতিতা | ৩৩১, ৪০৩ |
| নববর্ষের আশীর্বাদ | 245 | পথ | > 2 8 |
| नव (वन | ৬৬১ | পথের পথিক ক | |
| नवीन | 9, 580-589 | পথের বাঁধন | 263, 262 |
| নবীন (বনবানী কাব্যের | ৰ একটি | পদ্ধবনি | 228, 200, 208-209 |
| বিভাগ) | \$22 | • | ৩২৯ |
| নবীনচন্দ্ৰ ২ | ৯৫০ ,৪६৫ , ১৯ | | त्र १, २२४ |
| নমস্কার | ২৬৮ | পরিশেষ | ১৯৩-২৯৫, ৩৩৭ ১৮৩ |
| নরহরি দাস | ೨৮ | * (* - * - * - * - * - * - * - * - * - | २५१-२ ५५ , ७२१ |
| নলিনীকান্ত সেন | 8 • • | পলাভকা | |
| নয়েস্, অ্যাল্ফ্রেড | 284 | | हाबादी २२२-२२७, ^{२६७} २७) |
| ना सानि कारत स्वित | | পঁচিশে বৈশাথ | |
| নানক | 33 | | ্গান, গার সেই ২০≰-২০৮ |
| নাষটা বেদিন সুচ্বে ন | प्रव 🐪 🤧 🤄 | ৯ পান | 4-2-4 |
| | | | |

| | | Exercise contraction | २ ৫ २ |
|-------------------------------|-------------------------------------|--|--------------------------|
| পাগ্ল | 82, 5.5 | প্রমথনাথ চৌধুরী প্রদান্তচন্দ্র মহলানবিশ | ۶२ ৪, २ ३७, |
| পাডি | >8P->¢₹ | व्यनाखाळा बरगानापन | ₹1 ৮ |
| পুন=চ | cc, २२७-२२१ | - | 9. |
| পুণ্যের মিহাব | ર ૄ, ૭ ૦૦ | প্রসাদ | ૭૨৬ |
| পুরস্কার | <i>a</i> t e | প্রাচীন ভারত | - |
| পুরাতন ভৃতা | 9 (0 | প্রার্থনা | ২৮ |
| প্জাবিণী | ७२२ | প্রায়শ্চিত্ত | ৯৭, ২২৮, ৩ ৭৮ |
| পূৰ্ণ মিলন | ७ २ ह | প্রিয়নাথ সেন | ₹७1, 8•9 |
| পূর্ণিমা | ৩৭৪ | প্রিন্সেদ্ মেলিন, দি | 49 |
| भूबवी ১, ७२, १४, | १२, १२०, १७७, | েপ্রেম | 85, 5 5 |
| ે ૪৬৯, ३२৪, ३৩०- | २ ७७, २७১, २२७ | প্রেমে প্রাণে গানে গ | |
| পোডোবাডি | २৮8 | পুলকে | 205-202 |
| भारताजा हेम् नम्हे | 60 | প্রেমের অভিষেক | 25₽ |
| भारम्ब है देखिया | >>8 | প্লেটনিক ডকটিন, নি | |
| প্রকৃতি-গাথা | 87, 98 | काइतमी २, ৯৬, | |
| প্রকৃতির প্রতিশোধ | 8२, २•२, ^{२०७} | १२°, २७१, १ | ১৬২, ৩০ •, ৩৫১, |
| প্রকৃতির প্রতিশোধ | , | | ७२०, ७८७, ८२२ |
| প্ত নৈবেন্তের মৃথি | কৈ, তলনায় | টা কি | 572-550 |
| আলোচনা | 3.5 | ফিয়ার্স এাও জুপ | |
| | (2) PC | স্কুল কোটানো | Ъ -8 |
| প্ৰছান্ত প্ৰতীক্ষা ৮৫, ১৬৮ | | ফ্যান্সি | 88 |
| | રહેલ. | বকুল-বনেব পাখী | ২ 85 |
| প্রদীপ | 382, 303 | বঙ্কিমচন্দ্ৰ | ৩৯৪, ৩৯৫, ৩৯৭ |
| প্রজোৎকুমার দেন | ১১০, ১৭৪, ৩৮১ | বঙ্গমাতা | ৩২৬ |
| প্ৰবাসী | \$3. <u>-</u> , \$10, | ব ক্সে তোমার বাজে | বাঁণী ১১৫ ় |
| প্রবাদের প্রেম | | বদল | २७১ |
| প্রবাহিণী ২২৯, | 208, 000, 00°, | বনবাণী | ২৮৪-২৯২, ৩২৮ |
| | , ৩৮২, ৩৮৯, ৩৯২ ৽ <i>৬</i> ৯-২৬৽ | | ೯ ೯೮ |
| প্রভাত | २४७, ७३४, ७८२ | | , ১७८, २ ७८ -८७८, |
| প্রভাত-উৎসব | \$00, 010, 00¢ | | ২৫৭, ২৮৯, ৩৩৪, |
| | | ું જુદર, | ora, oro, 82° |
| প্রভাতকুমার মুখো | -114714 | বলাকা কাব্যের না | |
| প্রভাতকুমার মৃথো | 기(덕)(기 - 조선도::1기 - 독 | चकाका २० न व त्र | \$## c-2# |
| অচলায়তন আ | • 110 11 1 | | 296-3 6 0 |
| প্ৰভাতসঙ্গীত ৪৬ | , ৫৫, ২৮৬, ৩৫৯, ৩৫ | . 10 | ともくしゅかく |
| * | | | >40 |
| প্রভাতী | 205, 200-20 | * | 28-5-3P4 |
| প্ৰভূ ছোমা লাগি' | चौबि जारिंग >॰ | y }0 | ** \ ** |

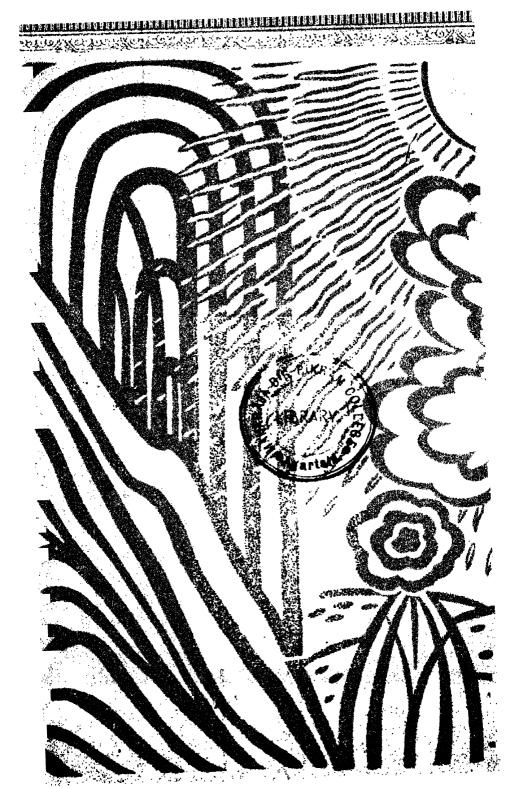
| 965 | | | |
|-------------------------|-------------------------|-------------------------|-----------------------|
| বলাকা ১৬ নম্বর | | বাসর খর | २४७ |
| 39 | * | বাহ্নদেব সার্বভৌম | ર ર |
| יי. אשר | 76-766 | বায়রণ | |
| " הנ | 3をくってもつ | ও নবীনতার জয়গান | >8.€ |
| 35 | 。 | विউটिकून्, नि | `.€8 |
| 3p- " | २०₡-३०৮ | বিক্রমোর্বশী | 20, 25 |
| रक " | 202-222 | বিচার | 30A-20P |
| 3. " | २०७-२०६ | বিচিত্রা | ०५ ५ |
| ر ده | २३३-२३३ | বিচিত্রিতা | 4. 2 |
| ৩২ . | >><-<>>0 | বিচ্ছেদ | २ २ १ |
| აა <u>.</u> | ३८५-५७६ | 1 1117 | ५-२৮२, ७१२ |
| ₩ | 594-592 | বিত্যাপতি | >98 |
| ં " | ५९२- २१७ | বিধুশেখর শাস্ত্রী | ₽a, 8>° |
| 9 | >9%>>99 | বিনয়েন্দ্রনাবায়ণ দিংহ | 28¢ |
| ଓ ବ | >9 9-200 | বিনিপয়সাব ভো জ | ~~ ~~ |
| ં <u>.</u> | র १ ८ | বিপদে মোরে রক্ষা করে | |
| ر - دو | 24.0 | বিবহিণী | २७५, २७> |
| 8• _ | 74.0 | বিশ্ব | 85, 80, 88 |
| 85 | > ₽• | বিশ্বদেব | 615 |
| 80 , | ント・- シ トン | विश्वरमान | (2 |
| 8¢ _ | ८४८ | বিশ্ব যথন নিদ্রা মগন | 209 |
| 8 🕻 💃 | . २३৫-२১৬ | বিশ্বের বিপুল বস্তুরাশি | 946-84¢ |
| 8·9 " | シ トミ | वित्रर्जन (नाउँक) २º | 18, ৩২৬, ৪ ০ ৪ |
| বৰ্ষশেষ | २२७, ७८६ | বিদর্জন নাটকের উৎসর্গ | |
| ব্র্যামক ল | ४५६ , ८८ | বিহারীলাল | २৮€ |
| বদস্ত | ७२१ | वृद्धानरवत्र उेलानम | ৬ |
| বস্তকুমার চট্টোপাধ্যায় | 859 | বেকস (সিন্ধুদেশের ভর | দ কৰি) ৩৩৬ |
| बमरखत्र मान | ২৬৫ | ্ৰক্স | _ |
| | ·e, २৮৮, ৩88 | ও রবীন্দ্রনাথের মৃত্ | र् ग्रथकीय |
| বৃহ্মিপুরাণ | ₹9 | ক বিতা | ¢ |
| | o, ১৪৮, ২ ৬৩ | বের্নস ১৪০, ১৫৩, ১ | |
| বাঙ্গালীর আশা ও নৈর | | | ७७३, ७४७ |
| Allahim miller de dera | \$# G | বেঠিক পথের পথিক | ₹8#-₹8≯ |
| বাৰ্ডাস | * 200 | , द्वनायमर्गम् | 292 |
| বার্ণসূ | ্ ২৩৪ | ং ক্রেবীণা | 8 • >- |
| বালিকা ব্যূ | · brankr) | त्वना तारी | 4 < 5 |
| 461-141 25 | \$ | • | |

| > | 3.05 | ₹7æ2 | |
|---------------------------------|----------------------|------------------------------------|-----------------------------|
| বৈতর্গী | ২৩১ ৩-৩৩ | মন্ত্র মরণ ৪১.৫: | 696 |
| বৈঞ্চব কবিতা | | মরণ-দোলা | 0, 44-49, 45, 394 |
| বোঝাপড়া | ર ૯ | মরণ-মিলন | e ২-e ৪, ৩ ৭ ৬ |
| বোধিচ্যাত্বতার | 36 <i>5</i> | শরণা শলন মরীচিকা | e e |
| (वादबाव्छक्षे | ২২৮, ৩৮৪ ২২৮, ৩৮৪ | ৰ্মাতিক। মহানি ৰ্বাণ্ডয় | 83 |
| | • | | ₹ ৮, ১৬৫ |
| ব্যঙ্গকে | F 2 | मञ् का २१৮- ২ १२ | ০, ২৮১, ৩২৮, ৩১০, ৩৫৩ |
| ব্ৰহ্মসঙ্গীত | २५, ७७२ | माहेरकल यधूरुपन | |
| ব্রাউনিং, রবার্ট ২৬, ৩ | | মাইকো কন্মোগ্রা | |
| 67, 778, 708, | | मार्क, (मन्हें | 4.9 |
| | ೨೨೩, ೨೨ १ | শাষের বুকে সকে | |
| <u>রামণ</u> | 8 • 8 | মার্চেন্ট অব্ ভে | |
| ক্ৰক্ষপ্লোৰ্ড | >55 | মাতাল মাতাল | ન ા |
| ব্লু কাৰ্ড | 98 | শাত্তাণ শাত্তান | ८६७ |
| ভক্ত করিছে প্রভুর চরণে | को वन | भारत्यास्य । | |
| সমর্শণ | ₹₩ | মান্স ভ্রমণ | 88 |
| ভব্যান (Vaughan) | ೨೪ | भागत जनः भागत जन्मती | ৩১৪ |
| ভঙ্গন পৃ জন সাধন আ রাধনা | 226-220 | | ३२, २৮৮, ७२७ , ७२ ৮, |
| ভাঙ্গা মন্দির | २७৮ | 71-1-11 | 826 |
| ভাত্মদিংহ ঠাকুরের পদাবর্গ | ী ৩৩৬, | শালবিকাগ্নিমিত্র: | |
| | ৩৭২ | মালবিকাগ্নিমিক্র | ` |
| ভাবনা নিয়ে মরিস্ কেন এ | ক্রে ১৮১ | | ার সেকাল 🏻 🧸 |
| ভাবী কাল | २७५ | মালবীয়জী, পণ্ডি | |
| ভাব | b ? | | 805 |
| ভারততীর্থ ১১ | o->>8, 0?6 | মালিক মছমান | জায়সী ৩৩২ |
| ভারতবর্ষে ইতিহাদের ধার | 1 090 | মালিনী | |
| ভাষা ও ছন্দ | ₹88 | | । মৃক্তি (তুলনায় |
| ভিউলিয়ামি, त्रि. है. | 4 9 | আলোচনা | • |
| ভীকতা | 9 | মিল্টি ন | ्र ⊌म्, २८७ |
| ভূদেৰ মুখোপাধ্যায় | 61 | भिन्रिक, नि | >8% |
| | 98 3 | শীরাবাঈ | Þ° |
| মঙ্গুল গীতি মদন সেখ | 86 | | २१, २२७-२२ ৮ , ७३२ |
| यनिमञ्जूषा | | | २७४-२७३, २७७, ७७० |
| मनत्क व्योग।त कोदाटक | | মৃত্যু ও অমৃত | ల ని |
| "मरूख" | | মৃত্যুর আহ্বান | २७ ১, २९৮, ७ ५।६ |
| ন্মুখ্য মন্থ্যাহিতা | | म् जूश्व | ২৯৪, ৩৩৭ |
| न र ाग्र ञ । | • | ा रक्काल | • |

| | | | २०, २१ |
|------------------------|--------------------------|------------------------------|------------------------|
| মৃত্যু মাধুরী | ₹ %-% \$ | র ঘূবং শ | ۱۶ ۲۰۰ |
| ঘৃত্যুর পরে | ৩৭৬, ৩৮ • | রখুবংশম্ | 6 |
| মৃত্যু সম্বন্ধে রবীজনা | থের ধারণা | ও ক্ষণিকার সেকাল | 8 • 6 |
| | २৯, ७१२-७३8 | রজনীকান্ত সেন | ૭૭૨ |
| মেষদৃত (প্ৰবন্ধ) | ₹ ¢ ₹ | রজ্জবন্ধী | ৩১৩-৩৩ ৮ |
| মেঘদূত ও ক্ষণিকার | | রবীজ্ঞকাব্য পরিক্রমণ | |
| ्रमना न्यध | d u | রবীম্রকাব্যের একটি প্র | |
| মেটার্লিঙ্ক | 98, ¢ 9, >•• | C | ೨೦№೦€ 8 |
| মেরিডিখ্ | (8, 5 68, 659 | রুথের রশি | 465 |
| মোহিতচক্র সেন | ₹ ৯, ৩৩, 8 ১, 8€, | রবীন্দ্র-পরিচয় | ۩8-8۩ |
| | 585, 8°9 | রবি বেন্ এ জ্ রা _ | |
| মোহিতচন্দ্ৰ সেন—ৰ | | (Rabbi Ben Ez | |
| ভীক্তা কবিতা | | রুমার্লী | 48, 509 |
| ম্যাথ্, সেন্ট্ | ro, 202 | वाङ्ग ३७, ১२১-১२ | |
| যতক্ষণ স্থির হরে ধা | कि २७१-४७७ | | 820 |
| য পাস্থান | 9 | রাজাও রাণী | ৩১৭ |
| ষ্মুনা পুলিনের ডিং | शिविणी 8२१ | রাজেশ্রলাল মিত্র | چ ە د |
| वाळा | ৪০, ৬৫, ২৩১ | রাত্রি | २७७, २७७ |
| যাত্ৰাশেৰ | ১৩ ৫-১৩৬, २७२ | রাত্তে ও প্রভাতে | 20 |
| शाबी >२ | , २८७, २८७, २४७, | রামানন্দ চট্টোপাধ্যায় | 8 • 9 |
| | २৯६, ७६२, ७११ | রিকলেক্শান্স্ অব্ অ | ালি চাইল্ড্- |
| যামিনীপ্রকাশ গছে | াপাধ্যাই ৮৯ | 5 5 | 88 |
| যুগান্তর | ₹৮ | बिहि है, मि | 58 |
| যুৱোপ-প্রবাসীর প | ত্র ৩৫৬ | রীস, আর্ণে ষ্ট | |
| মুদ্ধোপ-যাত্রীর ডায | ারী ৩৫৬ | রবীশ্রনাথের শিশু | দম্বন্ধীয় |
| যেতে নাহি দিব | <i>9</i> 59, 988 | কবিতা সম্পর্কে | ೨೩ |
| य मिन डेमिल डू | | • | >8 > |
| বিশ্বক্ষি দূর বি | | রূপ কুপক | 85, 8 6, 96 |
| যে দিন তুমি আপ | নি ছিলা একা | ন্ধণ ক লক্ষ্মীর পরীক্ষা | 6 4 |
| | २०४-२५५ | | 4, 44 |
| যেন শেৰ-গানে যে | ात्र मव ताशिकी भूदत | লংকেলো | 3 N |
| | 39 P. | লাক্ষপৎ রাম | 12, 60 |
| যৌৰন | 1, २ ३৫-२३ % | লিউক্, সেন্ট্ | |
| খৌরন-বেদন-বেদন | -बरम | লিপি - | ७७, २६७-२६७ |
| डेक्न जामान | विनश्चिक >४३ | নিশিকা | 239, 454 |
| বৌৰন-শ্বশ্ন | *85, 84 | লী, ভাৰ্নন্ | . >48 |
| रक्ष करते। | 88, ২৭২-২৭# | गा गा | 87,42 |

| 9 . <i>c</i> . | | | A . L |
|---|-------------------------------|--------------------------------|---------------------------------------|
| नीनार्मा ननी २०১, | | শেকসপীরার | 8•3 |
| | ₹8• | | 5, 8°, 8°, ¢7, ¢2, |
| লে অভেগ ্ৰ্দ্ | e 9 | _ | 36, 208, 28¢, 260 |
| লে হাণ্ট্ | ₹• | শেলীর Adonai | • |
| লেখন | ૨૧ ૧- ૨ ૧૧ | | २०, २১१, २७ ১, ८৮ ८ |
| লেজ অব্দি লাস্ট | • | শেষ খেয়া | १२-१७, ৮१, ७३० |
| লোকাশ্য | 85, 199 | শেষ দৃশ্য | 99 0 |
| লোটাদ্ ইটার | ৮৮ | শেষ বসন্ত | २७५ |
| শকুন্তলা (নাটক) | ١٥, ١٥, ١٣٠, | শেষ বৰ্ষণ | ২৩০ |
| | ५२२, २७८ | শেষ পূজারিণী | ૨૯ ১, ૨ ૯૨ |
| শঙ্করাচার্য | | শেষের কবিতা | ₹ ₩ } |
| ও সত্যের লক | | | . नव चा र्ह ১১२-১२० |
| | १-५८৮, ७२०, ४७२ | <u> যেতাখতর উপ</u> | |
| শরৎকাল (বিহারী | লাল রচিত) ২৮৫ | | ा शृ च्छ वि रि ष २१ |
| শরংচক্র চট্টোপাধ্য | ার | <u>জী</u> বি জ য় | 196 |
| ও গতিবাদ | 282 | <u>এ</u> ীবিজয় লন্দ্রী | ₹ ₽ 3 |
| শাজাহান | >8 २, >৫७->७ ० | এ মদ্রাগবদগীতা | ২৭ |
| শাহ লকণাবদান | . ৩০২ | শ্রীশচন্দ্র মজুদার | ७ ८२, ४०२ |
| শান্তা দেবী | 9 a, | া তি | 29 |
| শাস্তিদেব | ¢ | স্থারাম গণেশ | দেউশ্বর ২৬৬ |
| শাপমোচন | ca | সঙ্কলন | 50 |
| শারদোৎসব | ٠ ١٥٥, ١٥٥, ١٥٥ | শঙ্ক ল | 82, 60 |
| ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | > २ 8, >₹₹, 8>° | সঞ্চয় | ૱૭ |
| শিক্ষা | ર્ ૧- ૨ ৮, ૭૨ ૬ | সঞ্চন্ধিতা | ৪২, ৪৩, ৫৫, ৬০ |
| শিক্ষার হেরফের | ৩৬৮ | সঞ্চিতা | २२० |
| শিবাজী - | ৩৬২ | স তী | ૭૭૪, ૭૭૨ |
| শিবা জী-উৎসব | <i>২ ৬ ৬</i> | সতীশচক্র রায় | ৩৽৩ |
| निवा कीत मौका | ? & | সত্যেন্দ্ৰনাথ দ | § (°), > • • , 8 • b |
| * | e 9 | | 8°२, 8२४, 8२१ |
| শিলানিপি | | BY MENTALTH | હ |
| শিশিরভূমার মৈত | । ৩২-৩ ৩ , ৪১ | 10 101 | চলের প্রশক্তি ১৫৯ |
| শিক | | | ্ ১, ২৮৬ |
| শিন্ত ভোগানাথ | २२२- २२८, २७ ०, | , | কুলতা কি বল্ তে |
| ~ | ৩২০, ৩৫১ ২৩-৩৪ | চ্চৰ বালী | P 6 ¢ |
| শিশুলীলা | | | CAM Pid-pp |
| ভতকে ও ভ্যাগ | | · | २५०, ७२७, ७३० |
| मृबद्ध विदय े | | 4 4441 | |

| সবুক্ষের অভিযান ১৪৩ | স্বদেশ প্রেম (রবীন্দ্রনাথের) ৩৫৪-৩৭১ |
|--|---------------------------------------|
| | স্বার্থের সমাপ্তি ২৮ |
| A[41,14] | শ্বরণ ২৯, ৪১ |
| সম্দ্র ১৩৫, ১৭৬, ২৬৩ সম্দ্রেব প্রতি ৪৫, ১১০ | क्राम्यन् व्यागनिम्पित् / २८७ |
| मञ्जू (मर्वो ७८६, ८०६ | প্রোত ৪৬, ৩১৮, ১৪২, ৩৫৯ |
| ज्ञात्वा १७५ । | স্রোতের ফুল ৪২২ |
| मलामत्तर माम ७०० | হতভাগ্য ৪১ |
| সং অবু দি ওপন্রোড্, দি ১৭৭ | হতভাগ্যের গান ৩২২ |
| मार्गावका २४२-२४० | হাইল্যাণ্ড মেরী (Highland) |
| সাঙ্গ হয়েছে রণ | Mary) |
| সাজাহান ৩৯, ৩৬০, ৪৩২ | হাউণ্ভ অব্ হেভন্ ৩ হ |
| माविजी २८२-२६७ | হাডিঞ্জ, লর্ড ৪২৭ |
| त्रिशान २ ०६ | হাফিক্ত ৮০ |
| সীতারাম (উপন্তাস) ৩ ৯ ৪ | হার ৩২৩ |
| সীমার মাঝে অসাম তুমি ১১৬ | श्रतिष्त्र या ७३। २२०->२> |
| स्पृत 8७-8¢, ১১०, ১१¢, ७৮১ | হাস্তকে ৮০ |
| সুনীতিকুমার চড়ীেপাধ্যায় ৪২৭ | হাভী, এফ্ , ডব্লিউ ১৭৪ |
| স্থুৱদাসের প্রার্থনা ৩২৮ | হিমাজি ৫৭-৫৯, ৩১০ |
| স্থুৱেশ আইচ ৪০১ | हिमानग्र (१) |
| স্থরেশ সমাজপতি ৩৯৮ | ছিম্যামদ্ (মিদেদ্) . ১৭৭ |
| স্ফীকবি , ৫, ৩৩৩ | হীরেন্দ্রনাথ দত্ত ৩৯৫ |
| न्यकी माधक ७७२ | हिर ् डिर् ছ ট् ७२ १ |
| সৃষ্টিকর্তা ২৩৩, ৩৮৫ | छ्डेंऐस्रान ६, ১১৪, ১११ |
| সেকাল ৮-১১ | क्षमञ् व्यत्रभा ४०, १७ |
| সেক্সপীয়ার | হেগেল |
| ও নবীনতার জ্বগান ১৪৫ | ও রবীজ্ঞনাথের কল্পানাসাদৃশ্য ২৫ |
| সেণ্ট্অগাফিন্স ইভ্ ৮১ | হে প্রিয় আজি এ প্রাতে ১৬৫-১৬৬ |
| সেণ্ট্জন্ ১৩১ | হে ভুবন আমি যতক্ষণ ১৮৬-১৮৭ |
| দেণ্ট্ফ্রান্সিদ্ অফ্ এ্যাসিসি 🗢 🗢 | ক্ষেত্র |
| ক্ষেহগ্রাস ৩২৬, ৩৫৯ | হেমেন্দ্রপ্রসাদ ঘোষ ৩৯৬, ৩৯৮, ৪০০ |
| ক্ষেহময়ী ২৮৭ | হে মোর দেবতা ১১২ |
| দোনার ভরী ৪১, ৪২, ৪৫, ৬৬ , ১৩০, | ০০০ তাল বিষয় ক্ষাৰ্থ কৰিছে |
| २१२, २५४, ७६७, ७८७, ४२४ | হে রাজন্, তুমি আমারে ৬৭-৬৮ |
| च्छे २७ | হোলম্প, অলিভার ওরেওেল ৮০৫ |
| স্বৰ্গ হইন্তে বিদায় ৩০৪ | श्राम्राग्हिम मिनाकि ५२ |
| श्वरम्म ' *8> | क्षामिन्छन्-किः क्षाबिद्यक् देनिनत ४० |





AND COLOR TO THE TOTAL STATE OF THE STATE OF THE PROPERTY OF THE STATE OF THE STATE